

प्रकाशक—नागरीप्रचारिणी सभा, काशी

मुद्रक—शभुनाथ वाजपेयी, नागरी मुद्रण, काशी

प्रथम सस्करण, स० २०३२, ११०० प्रतियां

मूल्य ००-००११०-००

वक्तव्य

खोज का उनीसवाँ त्रैवार्षिक विवरण पाठको के सामने प्रस्तुत है। खोज का यह त्रैवार्षिक विवरण विक्रम सन् के क्रम से तैयार किया गया है। इसमें स० २००१ में २००३ तक (सन् १९४४ से १९४६ ई०) के खोजकार्य का उल्लेख किया गया है। यद्यपि उसका आकार बहुत बड़ा हो गया है, तथापि अनुसंधान की उपयोगिता की दृष्टि से संक्षेपिकरण नहीं किया गया है। यह दो खंडों में प्रकाशित किया जा रहा है। इन विवरणों को भूतपूर्व निरीक्षक प० विश्वनाथप्रसाद मिश्र ने तत्कालीन खोज अन्वेषकों, विशेषतः श्री दीलतराम जुयाल की सहायता से हिंदी में संपादित किया था। पूर्व विवरण के अनुसार ही इस विवरण में भी ग्रंथों और ग्रंथकारों का अनुक्रम हिंदी वर्णमाला के अनुसार हुआ है।

उत्तर प्रदेशीय राज्य शासन द्वारा दिए गए प्रथम १०,०००) रु० के अनुदान में चार त्रैवार्षिक विवरण (सन् १९२६—३७ ई०) छापे गए थे। उसके पश्चात् चार त्रैवार्षिक विवरणों (सन् १९२३—४६ ई०) के प्रकाशन के निमित्त राज्य शासन ने सन् १९५६ ई० में कृपापूर्वक ७,०००) का द्वितीय अनुदान दिया। यह आशा की गई थी कि इस द्वितीय अनुदान से कम से कम तीन त्रैवार्षिक विवरणों के प्रकाशन का कार्य तो संपन्न ही जायगा किंतु दो ही (सन् १९३८—४० तथा सन् १९४१—४३) त्रैवार्षिक विवरणों के प्रकाशन में प्राप्त अनुदान से अधिक व्यय हो गया। फलतः आगे के दो तैयार त्रैवार्षिक विवरणों के प्रकाशन का कार्य रुक गया। सन् १९५६ में ही उक्त दोनों त्रैवार्षिक विवरण प्रकाशन की असुविधा के कारण पाठकों के समुख न आ सके।

अनुमदितसुओं की आवश्यकताओं को दृष्टि में रखते हुए सभा ने उनके प्रकाशन के कई प्रयत्न किए किंतु द्रव्याभाव के कारण सफलता न मिली। अतः में केंद्रीय सरकार की महती कृपा से उसके शिक्षा और समाज कल्याण मंत्रालय की २६६ १९७४ की एफ ६—२।७४—एच (डी० आई०) (एल) सख्यक राजाज्ञा द्वारा १२,६७६) का अनुदान प्राप्त हुआ। इससे प्रस्तुत विवरण के प्रकाशन का कार्य प्रारंभ हुआ और यह इस रूप में विद्वत्समाज के समक्ष उपस्थित है। इसका प्रथम खंड पहले ही प्रकाशित हो चुका है। अब इसका द्वितीय खंड भी प्रकाशित करके हमें अपार हर्ष है। केंद्रीय सरकार की इस सामयिक कृपा के निमित्त हम उसके अत्यंत आभारी हैं। और आशा करते हैं कि वह समय समय पर आर्थिक सहायता द्वारा हमारे उत्साह का वर्द्धन करती रहेगी।

विजयादशमी,
वि०२०३२ वि० }

सुधाकर पांडेय
प्रधान मंत्री,
नागरिप्रचारिणी सभा,
वाराणसी

विषय सूची

परिशिष्ट २

१. रचनाकारों की कृतियों के उद्धरण और हस्तलेखों के विवरण	४०१-६१८
२. ग्रंथों की अनुक्रमणिका, परि० १, २, ३	१-१२
३. ग्रंथकारों के नामों की अनुक्रमणिका, परि० १, २	१३-२१
४. परिशिष्ट ४ (क)	२२-२६
५. परिशिष्ट ४ (ख)	३१-४६
६. परिशिष्ट ४ (ग)	४७-४९
७. परिशिष्ट ५	५०-४२

द्वितीय खंड

प्राचीन हस्तलिखित हिंदी ग्रंथों की खोज का

उन्नीसवाँ त्रैवार्षिक विवरण

संवत् २००१-२००३ वि०

संख्या १४३क. ज्ञान वारामासा, रचयिता—तुलसीदास, कागज—देशी, पत्र—७, आकार—७ × ३ $\frac{1}{2}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—७३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—दौलतराम पाडेय, स्थान व पोस्ट—साहिजादपुर, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री राम जी सहाइ ॥

चंत चिरंजीव न कोई जीव जम को ग्रास है ।
मूढ निहचं समुक्ति अंधं सपन सो जगजात है ।
विर्यं तृष्णा लोभ वंसी मोह माया जाल है ।
तात माता भ्रात वनिता भूठ सब परिवार है ।
जठर मे जिन प्रान राषे सो विसारे बावरे ।
देवि मृगद्वस्ना जो भूलो जया धोषो भाउरे ॥ १ ॥

अंत—सिर जटा अरु मीनं धारन गहत जे वन वास रे ।
वेद सास्त्र पुरान पढि नहि जात ओसन प्यास रे ।
तरो चाहै जीव जोतै त्याग और उपाउ रे ।
विस्वास करि कह दास तुलसी प्रेम सौगुन गाउ रे ।

इति श्रीज्ञानवारामासी श्रीतुलसीदास कृत सपूर्ण ।

विषय—ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या १४३ख. वाग्दमासी, रचयिता—तुलसीदास, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६ × ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—श्री प० अमरनाथ मिश्र, असवरतपुर, पो०—ओडना, जिला—जौनपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ वारामासि लिख्यते ॥

चंत चंरजीववी न कोई जीव जमको ग्रास है ॥
मूढ निहचं चंतु अंधे स्वाप्न सो जगवास है ॥
विर्यं तृष्णा लोभ फासी मोहमाया जाल है ॥
तात माता भूत वनिता भूठ सब परिवार है ॥
जेठ रम जीन प्रान राखेउ सो विसारे बावरे ॥
देवि मृगतृष्णा जो भूले वृथा धोषे घाव रे ॥
राम भजिले पये नर तन वानो अछा दाव रे ॥
अंसा अरवसर पाय भलैहि मूढ गोता पाव रे ॥
भाजन कर भागवन को मन आयो बैसाष रे ॥
घटत छिन छिन श्रीधि तेरी जायगो मिलि षाष रे ॥

अंत—मास फागुन धन रतन देव कंचन दान रे ॥
दान वृथा जात नाहिन पाप मोचन नाम रे ॥

भ्रमत तिरथन सकल ढिग करि जोग संजम सोय रे ॥
 जग्य जप तप व्रत ध्याने हरि नाम सम नहि होइ रे ॥
 वेद साहस्र पुरान पढि पढि जातन वो सन त्रास रे ॥
 तरा चाहै जीव जग को त्यागु आनी उपाव रे ॥
 विश्वास करि कहा "दास तुलसी" प्रेम हरिगुन गाव रे ॥१२॥
 श्री रामाय दीनदयाला ॥

विषय—भक्ति महिमा वर्णन ।

संख्या १४३ग. रामजन्म, रचयिता—तुलसीदास, कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—
 ३५, आकार— $७\frac{3}{4} \times ५\frac{1}{2}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४३३,
 खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सवत् १६२७, प्राप्तिस्थान—श्री राम-
 नरेश जी द्वे, ग्राम—गजहडा, डाकखाना—मुबारकपुर, जिला—आजमगढ ।

श्रादि— :०: :०: :०: :०:

ते । तेही पारलवन के दीन्ह सुताई ॥
 छन छन उपतन न्रीषं देही । कबहुना भारे बावुआ होइ सरेही ॥
 पांच मास के लवन भयेउ । तीर धनुही लै व...के गएऊ ॥
 मारवहु कीती तीर आमाना । तव उन्हु पोसा अधा दुनो प्राना ॥
 दसए वरष के लवन भएउ । पुछन के पांडीत घर गएऊ ॥
 वीछा पढत वरष दुइ चारी । सुंदरी वीअ वीअहीनी नारी ॥
 वीधी कै लीषा मेटी ना जाइ । कन्या वीवाही लवन लै आइ ॥
 बडे भाग एह कन्या होई । मात पिता के सेयजे होई ॥
 सुनी के वचन वीअ वेजारी । स्वामी के वचन लागु परारी ॥

श्रंत—

॥ चौपाई ॥

राम जन्म सुनी मन लाई । दुष दलीदर सभ जाए पराई ॥
 राम जन्म सुनी मैं कांना । ताकर पुत्र होय कल्याना ॥
 रामाजन्म जो नीती जोगाई । सो प्रानी भौसागर तारी जाई ॥
 राम नाम जो अनीत वानी । पढे सोइ जौ होए गुर ग्यानी ॥
 राम लषन दुनो बडा जोघा । भारी तालुका करी वहु क्रोधा ॥

॥ दोहा ॥

श्री राम जन्म कथा वीमल पढे सुनै मन लाए ।
 सो मनवच क्रम हरष ते भौसागर तरी जाए ॥
 दसरथ जन्म सुफल लीए राम पुत्र अस पाए ।
 "तुलसीदास" सरनागती राम के रूप लोभाए ॥

इति श्री पोथी राम जन्म कांडा संपुरन भाइला संपती सुभा संमत १६२७ ॥ मीती
 भदो सुदी चौथी मुकाम लहजर मीआ मीर छवनी दसषत ऋगरु राम के राम राम सब साधान रे ॥

विषय—रामचन्द्र जी के जन्म और विवाह तक की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ के आरभ का पत्र नहीं है । रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल
 सवत् १६२७ वि० है ।

ग्रथ की भाषा और काव्य से ऐसा विदित नहीं होता कि यह मुप्रसिद्ध गोस्वामी तुलसीदास

प्रस्तुत रचना निम्नलिखित अन्य रचनाओं के साथ एक हस्तलेख में है—

१. सात पतल— :०.
२. वदी मोचन—तुलसीदास
३. भरत मिलाप—तुलसीदासकृत

संख्या १४३घ. भरत कथा या भरत विलाप, रचयिता—तुलसीदास, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार— $9\frac{3}{4} \times 6\frac{1}{2}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२१४, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—प० देवनारायण पाडेय, स्थान व पोस्ट—सेवटा, जिला—आजमगढ़ ।

श्रादि— :०: :०: :०: :०:

तुं पर उसीसा वर कीन्ह ।
 राम के आगे भरत धर ल्यावे । सो पकरत अवधपुर पावै ॥
 भरतही देयो लोग सम धावे ।
 पूछही राम लपन कुसलाइ । रोइ रोइ पूछै राम कुसलाइ ॥
 कह भरत भेटेउ रघुराई ।
 राम लपन तुम भेटाहु की नही । नीच वचन कही समुझाई ॥
 तव भरत अस कहे बुझाई । राम लपन कह भेटाउ माई ॥
 मोसे प्रेम कीन्ह रघुनाथ । चरन कवल सुंदर जल जाता ॥
 मं रोइ परेउ राम के चरना । रघुपति प्रेम जाइ ना वरना ॥

श्रंत—रामचंद्र वन कीन्ह पशाना । राजा बसरथ बहुत पछताना ॥
 राम चंद्र छोडे असथाना । रोवै नगर सकल प्रधाना ॥
 रोवै सीया सती कुमारी । राम लपन वीनु अवध उजारी ॥
 रवी रवी कं कह पत्नी लीपावै । दूत हाथ नेइहर पठावै ॥
 जाहु दूत भरत के पासा । अवधपुरी के भइल नीरासा ॥
 वीप दूत वीद ताव भएउ । आतर वास जो जान सठी गएउ ॥
 जहाय भरत चतुरगुन रहेउ । जाइ तहा डंडवती कीएउ ॥

:०: :०: :०:

विषय—रामायण के आधार पर भरत की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अत्यंत जीर्णशीर्ण अवस्था में है । श्रादि श्रंत के पत्रे नष्ट हो गए हैं । हस्तलेख के पत्र उलटे सिले हुए हैं । रचनाकाल, लिपिकाल भी अप्राप्त है । रचयिता का नाम तुलसीदास है, जो, जहाँ तहाँ, बोहे, चौपाई, छंदों में प्रयुक्त हुआ है । रचना को पढ़ने से यह विश्वास नहीं होता कि ये प्रसिद्ध गो० तुलसीदास है । ये कोई दूसरे ही व्यक्ति ज्ञात होते हैं; रचना में कोई कवित्त नहीं है ।

संख्या १४३ड. भरत मिलाप, रचयिता—तुलसीदास, कागज—देशी, पत्र—१३, आकार— $8\frac{3}{4} \times 6$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६८, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—प० तामेश्वर मिश्र, ग्राम—डांगीपार, पोस्ट—भैसा बाजार, जिला—गोरखपुर ।

श्रादि—.....

कही नारद सुलोक सीघाई ॥
 केकड़ नीच भल वन आए । आधा रीषी के पालाए ॥
 सुनी के द्रीस्टी श्रीप के आगु हाय.....

केकई के मुष अञ्जीत बसइ । तेही सुषा के कही अगुध करइ ॥
अञ्जीत वीष भट भया जवही । पीर बथ मीक भए तवही ॥

॥ दोहा ॥

मगु महु केकइ मन दंछ आजु जो होइ ।
मन बीचारी कह राजा तुरीत देउ मे तोही ॥

॥ चौपाई ॥

सो मत नारद केकई के दीन्हा । केकई सो चित्त धरि लीन्हा ॥
वच बंध न्यीप मोही लेक । ऐ तन वचन मोही मागे दीन ॥
राज पाट सब वचन दीन्ह । केकइ मगी तुरीत तव लीन्ह ॥

॥ दोहा ॥

आरथ दरब न मगो राज पट क वासा ।
भरथा चतुर गुन राजा देहु राम लपन बनवासा ॥

अंत—कहो लोग प्रतीती जो जानी । एही वीधी भरथारह मनवानी ॥
भरथा कहे तीनु लोकही गई । तेकर पापा तुरत छबी जाई ॥
भरथा कथा अह सतभाउ । माहा मुनीना के दरसना पाऊ ॥

॥ दोहा ॥

नीस दीन पुजा दयउ । राम लषन मन लाए ।
“तुलसीदास” मन भीतरा भगती करे मन लाए ॥

श्री पोथी भरथमिलाप सापुरन भइली आगे जो देपा सुलीषा मम दुष न देते पंडीत जन
सो मीनती मोर टुटल अछर लेवे जोरि ॥

विषय—भरत मिलाप की कथा वर्णित है । इस रचना मे केकई की मति फेरने के लिये
नारद का उपयोग हुआ है ।

विशेष ज्ञातव्य—आरभ का पत्र लुप्त है । रचनाकाल और लिपिकाल दोनो अज्ञात है ।

संख्या १४३च, भरतमिलाप, रचयिता—तुलसीदास, कागज—आधुनिक, पत्र—
१७, आकार—७ $\frac{1}{2}$ × ५ $\frac{1}{2}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७०,
अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—श्री रामनरेश जी द्विवेदी, ग्राम—
गजहड़ा, पोस्ट—मुवारकपुर, जिला—आजमगढ ।

आदि—श्री राम जी सहाये श्री गनेस जी सहाए श्री गंगा जी सहाए ॥ श्री सरोसती जी
सहाय श्री पोथी भरत मीलाप लीप्यते ॥

आषर अरथ न जानो नही गुर कुल उपाए ।

राम चरित्र कछ भाषहु श्री गुर होइ सहाए ॥

सुमीरो सामी श्री गनेसा जीन्ह मोही वीद्या दीनऊ ।

श्री गोवींद के चरन मनाए । तव मै राम भरथ गुन गाए ॥

सुमीरो गनपती मन चीत लाई । जीन पर साध अछर सुधी पाई ॥

सुमीरो ब्रह्म बीसुन महिस । सीवा सकर सुमीरो मन लाई ॥

अंत—

॥ दोहा ॥

भरथ के हृदय सोच भाई । रामचरन ली लाई ॥

केकई के आ कलंक भाई ॥ कीरपा करो रघुराई ॥

राम भरत के बोधा सीलन्हि

:०: :०: :०:
तेही के जन्म आसरा हो ।
सुफल होत संसारा ॥

राम नाम जिनके घट ताकर कुसल तारी जाई ।

तुलसी दास भजु राम पद राम नाम ली लीन (? लाई) ॥

इति श्री भरथ मीलाप संमपुरन भईल सही जो परती देष सो लीषा पढीत जन से मीनती मोरी भुला आकछर लेवँ जोरी समाप्त ॥

विषय—राम और भरत का मिलाप वर्णन किया गया है ।

संख्या १४४. भ्रमरगीत, रचयिता—कवि तेज, कागज—देशी, पत्र—१४, आकार— $४\frac{1}{2} \times ४\frac{3}{8}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—११०, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—५० महेश प्रसाद मिश्र, ग्राम—लेदहावरा, पो०—अटरामपुर, जिला—इलाहाबाद ।

आदि..... ॥ १ ॥

सो कुबिजा वस हूँ गई देपि कै काली को नाथ्यो जे डारिके गोद है ।

तोको पठाए तँ आए इहा तुम ठाढे भयो हो महीना ज्यो लोदे है ।

(? कहे तेज) काहू को राज भए तुम भूले हो बावरे सो नहि भोदे है ।

ऊधो जू सांचु जहै उपयान है काका की भंसी भलीजे को तो देहै ॥ २ ॥

आपने चित्त मे जानत है सब काहू पठावत आवत तोहू ।

ठानो उपाधि न वरुत आदि है व्याधि करी कुबिजा अरु ओहू ।

ऐसे वियोग मे जोग अजोग है लोग कहै औ कहीँ फिर मोहू ।

होती वियोगिनी जोगिनी है कहू ऊधो जू भूतन के है पतँह ॥ ३ ॥

बूज को उजारि करि धारिका (? द्वारिका) वसाई जिन वार वार लेति तुम तिही को नाऊ है ।

आपु करं भोग जोग हमको पठाई देयो और पै न पाई कछू कुबिजा को दाउ है ।

तुम हो सदेसी तो सदेस कहि चले जाहु कहै "कवि तेज" थान भगवा को ठाऊ है ।

ऊधो तुम सांचु उपयान यह सुनो आइ डोल देत डोलिआ पै मारत न गाँऊ है ॥ ४ ॥

जानती है उनही को वपानती और न मानती है हम दूजे ।

बात बनी कुबिजा की भली विधि ताते सदेस लँ आवत भूजे ।

"तेज" कहै अति तेज करं वह टेढी सो सूधी कहा लगू हूजे ।

चाहिए भोग पठावति जोग है आँव की साधना आँवलि पूजे ॥ ५ ॥

अंत—चाहत वँ जोग हम भरी है वियोग विसरायो वह भोग जामे दधि दूध महियो ।

आपु करं राज लाग तनिको न लाज इहा जप तप साज हमही सो कहै महियो ।

तुम हो सुजान देप जात जँतो ठान तँसो कहियो निदान हूँ सकुचि मति रहियो ।

छोड़ी ब्रज वाम कीन्हो कुबिजा को काम ऊधो ऐसो घनस्याम सो प्रनाम जाइ कहियो ॥ ३३ ॥

केलि करी हरि जू यहू भाति सो दान लियो हमसो दधि दूधो ।

प्रीति की रीति विसारि कै "तेज" सदेस पठावत वेद विरूधो ।

प्राण पिआरे को छोडि कै काहू कियो तप है हम पूछती सूधो ।

जोग सिधावन आवत हो वृजबालन के घरं धालन ऊधो ॥ ३४ ॥

:०: :०: :०: —अपूर्ण

विषय—गोपी उद्धव सवाद वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—पुस्तक मे प्रथम छद और अंत मे ३४वें सत्या के पश्चात् के छद नहीं हैं । रचनाकाल और लिपिकाल भी अज्ञात हैं ।

संख्या १४५. राजनीति के दोहा, रचयिता—त्रिलोक सिंह, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—६ १/४ × ६ १/४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६, पूर्ण, जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथा लिप्यते राजनीत के दोहा ।

श्री गनपत विनऊ यहै और सरस्वती माय ।
 दोजे "सिंह त्रिलोक" कह उत्तम ग्रथ बनाय ॥
 प्रभु "त्रिलोक" कहं दीजिये मन जन के हित काम ।
 माता सम हितकारनी नीत ग्रथ सुषधाम ॥ २ ॥
 हित उपदेसै मित सो रुच सौ सुनै नरेस ।
 होय जहा अनुकूल विधि सपत करे प्रवेस ॥ ३ ॥
 सुभ उपदेस करे नहिं कोन काम वह मित ।
 कोन काम वह प्रभ कहा हित न सुनै दे चित्त ॥ ४ ॥
 बड़े ठोर पहुचै कहा फल कर मन अनुसार ।
 वासर कंठ महेस के करत तमीर अहार ॥ ५ ॥
 उपवन रचन किन पुनि ज्यौ माली सब काल ।
 येसो नृप सो होय जहा राज करे चिरकाल ॥
 वेद अंग न तग जप होम सो कर्म समाज ।
 मन वच आसिक वत जो वरनो प्रोहित राज ॥

अंत—विबध जतन रक्षा करो धरम समेत सरीर ।
 अमत धर्म तिहि धर्म ते ज्यौ गिर फिरना नीर ॥११५॥
 धर्मकाज धन दीजिये के भय होय विमुक्त ।
 कृपन राज को त्यागिये छिनकि न दीजे चित ॥११६॥

विषय—राजनीति वर्णित है ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है । पुष्पिका नहीं दी है । अंतिम दोहे की संख्या ११६ है । इसके पश्चात् कोई खंडित दोहा नहीं है । अत अनुमान से पता चलता है कि इतने ही दोहे ग्रथ में होंगे । इसलिये इसे पूर्ण मान लिया गया है ।

संख्या १४६. गीताभाषा, रचयिता—थेघनाथ, कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—६ × ६ ३/४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १५५७, लिपिकाल—स० १७२७ (चतुरदास कृत भागवत एकादश स्कंध के आधार पर), प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी-सभा (याज्ञिक सग्रह), वाराणसी ।

आदि—श्रीगणेशाय नमः । अथ श्री भगवतगीता भाषा लिप्यते ।

॥ चौपई ॥

सारद कहू बंदी करि जोर । फुनि सिमरौं तेतीस करोर ॥
 रामदास गुरु ध्याऊ पाइ । जा प्रसाद यह कवितु सिराइ ॥
 मूढिनि कौं है विष (व) ल्लरी । गुनियनि को अंभ्रति मंजरी ॥
 थेघनाथ अंभ्रत विस्तरै । विनती गुनी लोग सो करै ॥
 आगि माहि डारियँ स्वर्न । बुरे भले को लीजँ मर्म ॥
 तैसँ संत लेह तुम जानि । मैं जु कथा यह कही वपानि ॥
 पंद्रसँ सत्ताविनि आनु । गढु गोपाचल उत्तम ठानु ॥

मानसाहि तिहु दुर्ग निरिहु । जनु अमराति सोहे ईद ॥
 नीत पुन सों गुन आगरी । वसुधा राषन कों अवरौ ॥
 सबही राजनि माहि अति भलं । तौवर सत्य सल्लिज्या वलं ॥
 ता घर "भान" महाभरु तिसं । हथनापुर महि भीषम जिसे ॥
 पाप परहरं पुनहि गहे । निस दिन जगनु क्रशन कहु रहै ॥
 सब जीव प्रति पालं दया । मानु निरंदु करं तिहु मया ॥
 ग्यानी पुरुषनि मं परिधान । एकाहि सदा जस्वसी भानु ॥
 दयावत दाता गंभीर । निर्मल जनु गंगा कौ नीर ॥
 जौ ब्रह्मा गरुवं गुन जागु । तौगुन तंत जोग मनु लागु ॥
 जै रूप भंगद द्विड वनु लहै । जौ द्विड सरु जुधिस्थिर गहै ॥
 स्वाम धर्म यो पारे भानु । जा सम भयो न दूजौ आन ॥
 सबही विद्या आहि बहूत । "कीरत सिध" नृपति कं पूत ॥
 षट दरसन के जानं भव । मानं गुरु अरु ब्रह्मनु देव ॥
 समद समानि गहरता हियं । इक बृत पुत्र बहुत तिहु कियं ॥
 भले बुरे कौ जानं मर्म । भानु कुवर जनु दूजौ धर्म ॥
 इहि कलयुग मं है सब कोई । दिन दिन लोभ चौगनो होई ॥
 अनु धनु जमु गाडित तिन गयो । पैंव क्यौ हूं साथन भयो ॥
 इतौ विचार भान सब कियो । त्रिभुवन माहि बहुत जसु लियो ॥
 भान कुवर गुन लागहि जिते । मोपं वनें जाहि न तिते ॥
 जीभ अनेक जु प्राणी होई । याके जसहि वषानं सोई ।
 कं आइबलु होइब घने । वरनें गुन सोभा नहि तनें ॥
 कं सारद कौ दरमनु होई । प्रादि अति गुन बरनें सोई ॥
 "थेघू" इनमें एक लहै । ऊची वुधि करि चहु गुन कहै ॥

:o:

:o:

:o:

कहै भान मो भावै राम । जातं ज्यौ पावै विलाम ॥
 इहि संसार न कोऊ रह्यो । भान कुवर "थेघू" सो कह्यो ॥
 माता पिता पुत्र संसार । यहि सब दीसं माया जार ॥
 जाहि नाम ना कलजग रहै । जीवै सदा मुबो कौ कहै ॥
 कहा बहुत करि कीजं आनु । जो जानं गीता को ग्यानु ॥

:o:

:o:

:o:

इतनो वचनु कुवर जब कह्यो । घरीकु मनु घोषं परि रह्यो ॥
 सायर को बेरा करि तरं । कोऊ जिन उपहासहि करं ॥
 जौ मेरें चित गुरु के पाय । अरु जौ हियं वसं जदुराइ ॥
 तौ यह मोपं ह्वै तैसं । कह्यो क्रशन अर्जन को जैसं ॥
 सुनहि जे प्राणी गीता ज्ञान । तिन समानि दूजौ नहि आन ॥
 संजय लीने अंध बूलाई । ताको पूछनि लागे राई ॥
 धर्मवेत्र कुरु जंगल जहां । करौं पांडव मेले तहां ।
 कंसं गुरू कहा तहां होई । मोसो वरनि सुनावो सोई ॥

अत—अर्जनीवाच

तो प्रमाद अच्यत बर बीर । गयो मोहु जू हुतो सरीर ॥
 तेरी वचनु हियं सब धरी । भारथ करत न संका करौं ॥
 संज वचनु अंध सों कह्यो ।

:o:

:o:

:o:

विषय—गीता की भाषा टीका ।

रचनाकाल

पदसँ सत्तावनि आनु । गढ गोपाचल उत्तम ठानु ॥
मानसाहि तिहि दुर्गं निरिदु । जनु अमरावति सोहै इंद ॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथात मे पुष्पिका नही दी है । अतिम अश से स्पष्ट होता है कि थोडा सा अश लिखने से छूट गया है । परतु यह अश बहुत ही थोडा है, अत ग्रथ पूर्ण ही माना गया है । रचनाकाल सवत् १५५७ है और लिपिकाल सवत् १७२७ । लिपिकाल चतुरदास कृत एकादश स्कध (भागवत) के आधार पर है जो प्रस्तुत ग्रथ के साथ एक हस्तलेख मे था, परतु जिल्द टूट जाने के कारण ग्रथ स्वामी ने इन्हें दो अलग अलग जिल्दो मे बँधवा दिया । इस सबध मे ग्रथस्वामी श्री मयाशकर जी याज्ञिक ने ग्रथात मे निम्नलिखित टिप्पणी लिखी है ।—

“शेवनाथ कृत गीता अनुवाद का लिपिकाल स० १७२७ वि० मानना चाहिए, कारण कि चतुरदास कृत एकादश स्कध (भागवत) की प्रति जो इसी जिल्द मे थी उसका लिपिकाल १७२७ वि० है । दोनो के लिपिकार एक ही व्यक्ति हैं । देखो प्रति न० २७८५० । जिल्द टूट जाने से दोनो पुस्तकें अलग कर दी गई है ।”

संख्या १४७. अष्टकाल की लीला, रचयिता—दक्षसखी, कागज—देशी, पत्र—१८. आकार—६ इंच × ३ इंच इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८३६ वि०, प्राप्तिस्थान—प० दौलतराम पाडेय, स्थान व पोस्ट—साहिजादपुर, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री राधारमणो जयति ॥ अथ अष्टकाल की लीला लिष्यते ॥

॥ छप्पे ॥

जयति जयति राधारमन श्री चैतन्य कृपाला ।

जयति सखीगन वृ द जयति श्री भट्टगोपाला ।

जै वृ दावन चंद जयति जमुना पटरानी ।

जयति जयति गुरुदेव मंत्र पढत के दानी ।

जै जै वृज की रेनु जाहि शिवनारद जाचे ।

जयति रास रस कुंज जहा राधावर नाचे ॥ १ ॥

अंत—भई पूर्ण लीला अतिसुंदर संमत दससे आठ ठयौ हों ।

बर्ष तीस षटमास जु आमन कृष्ण द्वादसि यह ग्रंथ कह्यौ हों ।

“दक्षसखी” यह लीला गाई ।

पढत सुनत अतही सुषदाई ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

जे गामे सीखे सुने मन क्रम वचन समेत ।

श्री वृ दावन तिनको सदा वास निरंतर देत ॥ २५ ॥

इति श्री अष्टकाल की लीला समाप्ता ॥

विषय—राधाकृष्ण की अष्ट प्रहर लीला का वर्णन ।

रचनाकाल

भई पूर्ण लीला अति सुंदर संमत दस से आठ ठयौ हों ।

बर्ष तीस षट मास जु आमन कृष्ण द्वादसि यह ग्रंथ कह्यौ हों ॥

संख्या १४८. सूरजमल की कृपाण, रचयिता—दत्त कवि, कागज—बाँसी, पत्र—६, आकार—६ $\frac{३}{४}$ × ५ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा, (याज्ञिक संग्रह) काशी ।

आदि—जहें कासमीरी काबुली बलवकी औ बदखसानी,

खुरासानी लोहानी ईरानी इलमान ॥

जहें सूर सूरवंस सोमवंस जातवेद वंस,
वीर बलवान रान मान को घउरान ॥

जहें बकिखनी सु दल बल हाले छितिपाल भाचे,
सिंधु दल दल खांचे सांचे धमसान ॥

तहें हिम्मत निधान भूमि भार मधवान,
सिंह विक्रम सुजान वर वाही किरवान ॥ २ ॥

जहें बज्जत निसान सोर गज्जत दिसान,
सूर सज्जत सदान कूर तज्जत गुमान ॥

जहें छट्टत कमान गोला गोली किरवान,
धूमधार असमान छिप्यो भानु को विमान ॥

जहें होत भाज भाज घोर दुडुभी गराज,
तोप तरपै तराज गज घंटा घहरान ॥

जहां हिम्मत निधान.....

..... ॥ २ ॥

मध्य—

जहां ढाल की ढनक तेग तेग की पनक कोठि कुंड की छनक मिलि मन मननान ॥
जहां भमक भुसुंड कटि तटि कटि तुड फरकत भुजदंड भरकत विन प्रान ॥
जहां चरबी के कुंड मचै शोनित उमड पचै जुगनी के कुंड नचै प्रेत करि गान ॥
जहां हिम्मत निधान घिरि फिरि फिरि फिरि फिरि सोनित नित ॥५८॥

अंत—

॥ कवित्त ॥

अरजी आनंद के कंद वज्रचंद सी सुजान नंद कीरति निसानि सी दिसानि फहराति है ॥
कहै कवि दत्त दल दीरघ दरेर दवि दुज्जन जमाति दहि दरिन दुराति है ॥
विक्रम सो विक्रम तिविक्रम सी पाइ वर करन सौं करन की करनी हिराति है ।
बिष्व इंद्र गाजी केते दीन्है गज वाजी मोहि दीजे एक वाजी मेरी वाजी ठहराति है ॥१४॥
इति संपूर्ण ॥

विषय—इसमें भरतपुर नरेश सूरजमल (सुजान सिंह) की कृपाण का अोजपूर्ण भाषा में वर्णन है ।

संख्या १४९क. कृपाण नाम चंद्रिका, रचयिता—दयाराम भाई, स्थान—चाणोद तथा उभोई (गुजरात), कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—६।५५॥ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८५, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचना-काल—स० १८७० के लगभग, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भण्डार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, ह० व० स० ८४, पु० स० ७ ।

आदि—श्री गुरु गोपीजन बल्लभाय नमः ॥ अथ श्रीकृपाण नाम चंद्रिका लिख्यते ॥ दोहा ॥

बंदू श्री गुरु पद्य पद सद्य सकल कल्याण ॥

जाते जाते सबे जरी चिता के सतान ॥ १ ॥

॥ छंद रोला ॥

श्रीमद्गिरिवर धरन चरन पंकज कर वंदन ॥
 मंगल मोद निधान पाप सब ताप निकंदन ॥ १ ॥
 अरु वंदूं श्रीकृष्ण नाम परमानंद-सागर ॥
 नाम श्याम ते अधिक कृपाकर ओज उजागर ॥ २ ॥

मध्य—पृ० ६८

जीते माया काल लाल गोपाल नाम ते ।
 जीवन मुक्त ह्वे जाय वढे रति घनश्याम ते ॥ ११२ ॥
 कृष्ण नाम रस पिये पिये नहि मान पयोधर ।
 जन्म मरन मिटि जाय पाय जो प्रथम हतो घर ॥ ११३ ॥
 एक वेर नारायन नाम कहत तनुधारी ।
 त्रिशत कल्प किलमिश ते छूटे सद्य सुखारी ॥ ११४ ॥

अंत—

जो इह नाम प्रभाव भाव धरि हरि को गावे ।
 मनवांछित फल लहें सीध श्रीहरि पद पावे ॥ २३३ ॥
 दयाराम श्रीमद् बल्लभ सरनागत ब्राह्मण ॥
 तिन यह वनन कियो दियो पठवे को हरिजन ॥ २३४ ॥
 ॥ दोहा ॥

नाम महात्म घनश्याम को पठत सुनत सुनि पुन्य ॥
 प्रेम भक्ति श्रीकृष्ण की आसु लहें रति शून्य ॥ १ ॥
 दया या पर दया कर करि विहु इह वरदान ।
 प्रीति प्रतीती नाम निज सेवा राति गुनगान ॥ २ ॥ ॥ २३७ ॥

इति श्रीकृष्ण नाम चंद्रिका ग्रंथ कवि दयाराम विरचित समाप्त ॥ शुभं भवतु ॥ कल्याण-
 मस्तु ॥ श्रीः ॥

विषय—इसमें भगवान् के नाम का माहात्म्य वर्णित है ।

सख्या १४६ख. दयाराम सतसई (टीका सहित), रचयिता—दयाराम भाई (टीको-
 कार—वैष्णव बल्लभ दास द्विज), स्थान—डभोई (गुजरात), पत्र—११६, आकार—
 ६। x ५।। इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुदृष्ट)—५५६८, पूर्ण, रूप—साधा-
 रण, गद्य-पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८७२, लिपिकाल—स० १८७५, प्राप्ति-
 स्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० ५०, पु० स० ४ ।

आदि—श्री गुरु गोपिजन बल्लभाय नमः ॥ अथ दयाराम कृत शतसैया सटीक लिख्यते ।

॥ दोहा ॥

श्रीगुरु बल्लभदेव अरु श्रीविठ्ठल श्रीकृष्ण ।
 पद पंकज वंदन करो दुःख हर पूरन लक्षण ॥

अर्थ टीका ॥ प्रथम कवि जन मंगलाचरण करेछे, दयाराम कवी छे ते बल्लभी वैष्णव छे
 ते माटे प्रथम तीहांने प्रणाम करेछे, श्री गुरु हे श्री बल्लभाचार्य तदात्मज हे श्री विठ्ठल है श्री कृष्ण
 तमें चहारे एक स्वरूप छे माटे सर्वना चरण कमल ते साथे वंदन करंछु ते के हेवा चरण कमल छे
 दुःखमात्रना हरनार नें सर्व तृष्णाने पुराण कर्ता छे एहवा इत्यर्थः ।

मध्य पृ० १२२—अब संग वरनन सुसंग कुसग महिमा ॥दोहो॥
महिमा बडो सुसंग को मूरख लेहे ना कोय, होत मिलाप दकारकों कागसूं कागद होइ । १ ।

टीका—सत्संगनी महिमा मोटे छे परण कोइ सूर मूरख जाणता नथी ते जुवो के दकार वानवाचक छे पाटे सज्जन गए वो तीनों मिलाप थता मात्राभा कागजे कारदो ते वारद के कागल जहेवो उज्वल थं जाय तेरी त्ये सतसग जाणवो इति सुसंगार्थज्ञेयं ।

॥ दोहो ॥

योहि अघम के संगतें वडे छोट पन थाय ।

परसत निष्ट नकार सद यव सु यवन ह्वे जाय ॥ २ ॥ ॥टीका॥

अंत—दया सतसिया ग्रंथ यह बिरचित पर उपकार ।

सब सज्जम दूषन तजो ग्रहन कीजियो सार ॥१०॥

टीका—दयाराम कविनो रचेलो आ सतसैया ग्रंथ पर का उपकारने अरथे रच्यो छे माटे हे सकल सद पुरुषो दूषण सध लू तजो ने माह्यथी सारमात्र ग्रहण करज्यो इत्यर्थं ॥१०॥

दोहा—ययामती यह ग्रंथ को कीनो अर्थ प्रकास ॥

वैष्णव बल्लभदास द्विज करुनावल अविनास ॥३॥ अथ टीका कार बचन छे ॥

दया सतसी ग्रंथ समाप्तोय । सं० १८६५ ना वर्षे फाल्गुन मासे शुक्ल पक्षे तिथी ७ सप्तम्यां सौम्य वासरे दयाराम कृत सतसई ग्रंथस्य समाप्तिजाता लखकपाठक्योः शुभ भवतु ॥

विषय—भक्ति और नीति विषयक दोहे हैं । गुजराती भाषा में इसकी टीका है, जिसकी लिपि नागरी है । यह सतसई हिन्दी साहित्य में अपना विशेष स्थान रखती है । अन्य सतसईयों जहाँ शृंगार सबधी विषयों का उल्लेख करती है, वहाँ यह सतसई भक्ति, नीति, उपदेश आदि का बड़े सुंदर ढंग से प्रतिपादन करती है ।

संख्या १४६ग. श्री मद्भागवतानुक्रमणिका भाषा, रचयिता—दयाराम भाई, स्थान—डभोई (वड़ोदा, गुजरात), कागज—देशा, पत्र—१५, आकार—६। × ५॥ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—७३५, अपूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८७० के लगभग, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ८४, पु० स० ७ ।

आदि—श्री गुरु गोपीजन वल्लभाय नमः ॥ अथ श्री मद्भागवतानुक्रमणिका भाषा लिख्यते ॥ कवि दयाराम कृत ॥ दोहा ॥

श्रीगुरु श्रीवल्लभ प्रभू श्री विठ्ठल सहहीत ।

युग पद पंकज रज करो अभिवादन अगनीत ॥ १ ॥

कमल चरन कमलद वरन बद्ध कमलाकांत ।

मंगलमोद निधान सब कलुस कलेस कृतात ॥ २ ॥

राधावर वल्लभ सदा अष्टसखा कविभूप ।

नमन चरन तिनके कहे मेरे जीवन रूप ॥ ३ ॥

श्रुतीक स्मृति संदोह सब अपर रूप भगवत ।

द्वादशांग श्री भागवत प्रिय सत्तम सब संत ॥ ४ ॥

मध्य—पृ० १५

॥ दोहा ॥

अब नवम स्कंध कि सुनो अनुक्रमनी सब कोय ।

ईशान लीला एहि हूँ प्रकरन जाभे दौय ॥ १ ॥

॥ छंद रसावली ॥

सूर्य वंश प्रकरन मरयादा को धुर लहिये ।
 चंद्र वंस पुष्टी प्रकरन सो दुसरो कहिये ॥ १ ॥
 बार बार आध्याय दोहूं के जानी लीजें ;
 प्रथम बारको भानुवस अव सुनो भनीजें ॥ २ ॥
 नव पूरव वैवस्वत मनुदस पुत्र सुधन्या ।
 इक्ष्वाकू आदिक अरु एक भई हें कन्या ॥ ३ ॥
 नवम अवर कहे च्यार पुत्र भये नहि संताना ॥
 तीन पुत्र को वंस भयो वर नां तव खांन ॥ ३ ॥
 नृग नाभाग अरु नरिष्यत तीनों के नामा ॥
 अब आगें नृप सुनो कहत हें शुक शुभ धामां ॥ ५ ॥
 अंत—श्री नर्मदा तट चडिपुरि श्री शेष शाइ प्रभू जहाँ ।
 साठोदरे नागर सुजानी विप्र कवि वसियत वहाँ ।
 जन दयाराम जु नाम वैष्णव बल्लभी रचना रची ।
 श्री गुरु श्री गिरिवर धरन न चईत सी रसना नची ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

पुरन भई अनुक्रमनिका श्री भागवत पुरान ॥
 दयाराम के हिय बसो ओर करे जो गान ॥ १ ॥
 शक अठार अध्यायसि शुभ फागुन द्वितीया कृष्ण ।
 ग्रंथ समापति ताहि दिन पुरन करी प्रभु तृष्ण ॥ २ ॥

इति श्री भागवते महापुराणे दयाराम कृत भाषा निबंधे द्वादस स्कंधानुक्रमनिका संपूर्ण
 समाप्तोर्थ । शुभं भवतु ॥ कल्याणमस्तु ॥

विषय—श्रीमद्भागवत के बारह स्कंधों की अध्यायानुसार अनुक्रमणिका लिखी गई है ।
 यह श्रीभागवत पर बल्लभाचार्य कृत निबंध के आधार पर है ।

विशेष ज्ञातव्य—इस पुस्तक में अन्य पद कीर्तन भी हैं । मध्य भाग में यह ग्रंथ लिखा है ।

संख्या १४६४. श्रीकृष्ण अनन्य चद्रिका, रचयिता—दयाराम, स्थान—चाणोद तथा
 डभोई (गुजरात), पृष्ठ—२१ (पृ० १ से ६३ तथा ११७ से १२७ तक), आकार—६। × ५॥
 इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२६, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य,
 लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८७० के लगभग, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार,
 श्री विद्याविभाग, कांकरोली, हि० व० ८४, पु० स० ७ ।

आदि—॥ श्रीगुरु गोपीजन बल्लभाय नमः ॥ अथ अनन्य चद्रिका ग्रंथ लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

श्री गुरु श्री गिरिधर्न की बंदू चरन रजधाय ॥
 जातें अभिमत फल मिलें पाप ताप भजि जाय ॥ १ ॥
 प्रश्नोत्तर बध्यतिग्रही शिष्य गुरु सवाद ॥
 वरनूं धर्म अनन्य कछु पतीव्रता रसस्वाद ॥ २ ॥

॥ शिष्य के प्रश्न ॥

श्री गुरुदेव कृपाल तुम विनती मेरी एह ।
 प्रति उत्तर कुरु प्रश्न को छूटें मम संदेह ॥ ३ ॥

पंथ बहुत कल्याण के बरने वेद पुरान ।
बहुतक अप अपनों मते मुनिहू कीने गान ॥ ४ ॥

मध्य—पृ० ८४ ॥ शिष्य प्रश्न ॥

हे स्वामी कल्याणकर कृष्णाश्रय इक आहि ।
सबे ओर दुस्साध्य हें कलि मे सफलित नाहि ॥५२॥
आपुन तो यों कहत हो ओर सरावत आन ।
निके मोहि समुझाइये तिन मे लछन कान ॥५३॥

॥ श्री गुरु प्रतिउत्तर ॥

सुनिहे पुत्र प्रकास करि कहूँ बात जो आहि ।
श्री बल्लभ के वचन हें श्री कृष्णाश्रम माहि ॥५४॥
कलि मे धर्माचरण सब लोकठगन को हेतु ।
उचित कछु आचर्न कछु उदर भरन करि लेतु ॥५५॥
जो मारण अपवर्ग के भाखे वेद पुरान ।
कर्मरु ज्ञान उपासेना योगध्यान अरु आन ॥५६॥
ते सब नष्ट भये खलू ताको कारन अहे ॥
कलि के द्विज उपदेसकर अति खल नाहि सदेह ॥५७॥
शास्त्र अर्थ ते विरुद्धमत आपुन को इक ठानि ।
भये चलावत ताहि ते मोक्षहीन फल जानि ॥५८॥

अत—हें देस गुज्जंर नर्मदा तट चारु चडी ग्राम हें ।

ह्वां ज्ञाति नागर विप्र वैष्णव बत्हाभी दया राम हें ॥

बल श्री गुरु तिन ग्रंथ रचना करी सब सुखधाम हें ।

शुभधर्म पतिव्रत कहे अति प्रिये श्री घनस्याम हें ।

जु अनन्य टेकी भगवदी तिनको लगें प्रिय प्रानत ।

जो बहिरमुख ओकृष्ण सो तिनको अप्रिय अज्ञान ते ॥

तिन सोन मेरे काम कछु काम तो हरि हरि भक्त हें ।

सो तो प्रसन्न यह बात में मम मन्न जहाँ आसक्त हें ॥

इति श्रीकृष्ण अनन्य चंद्रिका कवि दयाराम कृत संपूरण समाप्त ॥ श्रीरस्तु ॥ कल्याण-
मस्तु ॥ श्री हरी ॥

विषय—वल्लभ संप्रदाय के सिद्धातानुसार भगवान् की अनन्य सेवा का वर्णन । इसी
को गीता के सिद्धात मे 'अनन्ययोग' कहा है । अनन्यता (अन्याश्रय से वचने) के उपाय एव उसकी
महिमा का वर्णन है ।

विशेष ज्ञातव्य—इस पुस्तक मे अन्य ग्रंथ भी लिखे है ।

संख्या १४६६. वस्तुवृद नाम दीपिका, रचयिता—दयाराम भाई, स्थान—डभोई
(गुजरात), पत्र—२६ (पृ० २३२ से २६० तक), आकार—६। × ५।। इच, पक्ति (प्रति-
पृष्ठ)—४४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२७६, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी,
रचनाकाल—स० १८७४ वि०, लिपिकाल—स० १८६५, प्राप्तस्थान—श्री. सरस्वतीभंडार,
श्री विद्याविभाग, काँकरोली, हि० व० स० ५०, पु० स० ४ ।

आदि—॥श्री गोपीजन बल्लभाय नमः । अथ श्री. वस्तु वृंद नाम दीपिका ग्रंथ कवि
दयारामकृत लिख्यते ॥दुहा॥

बद्ध श्री गुरुपद कमल सकल सिद्धि दातार ।

श्री महाप्रभु गोस्वामी श्री सह श्री नदकुमार ॥ १ ॥

सब कलेस जाते हरे हरे सुधी हिय आय ।
पुरन होइ अभिलाष सब अस पद गुरु हरिराय ॥ २ ॥

मध्य—पृ० १६० चतुर्दश महाभाया नाम ।

दुर्लया दुर्गा भद्रकाली विजया अरु वंणवी कुमुदा कहिये ।
श्रीर चडिका कृष्णा माधवी ह्वोर कन्याका लहिये ।
माया नारायनी इशानी पुनि शारदा नाम ।
सहित अंबिका कृष्ण दियो वर माया कुं सुख धाम ॥

चतुर्दश मन्वन्तर नाम । छद रोला ।

स्वायंभुव स्वारोचिष उत्तम तामस रवत ।
चाक्षुस रु श्राद्धदेव सुइवतत वैवस्वत ।
सार्वणि अरु दक्ष सार्वणि ब्रह्म सार्वणि ।
धर्म सार्वणि रुद्र सार्वणि नाम ले गणी ।
देव सावर्णी इन्द्र सावर्णी मनु दशच्यार ।
जिनके रक्षत हेतु एक हरिको ओतारा ॥४५॥

अंत—संमत अष्टादश पुनि चोवोतर नभमास ।

कृष्ण जयंती अष्टमी चद्रवार शुभरास । १६ ।

ग्रथ समापति ताहि दिन भइ इच्छा भगवत ।

सबको जय श्रीकृष्ण है जो देया मे चंत । १० ।

इति श्री मत्कृष्णजन कवि दयाराम विरचिताया वस्तु वृद दीपिका नाम ग्रथ समाप्तः ॥

श्रीरस्तु । कल्याणमस्तु । सवत् १८६५ नां वर्षे मासोत्तम अधिक प्रथम ज्येष्ठ मासे शुद्ध पक्षे
तिथौ चतुर्थ्यां गुरुवासरे अर्च्ये दभ वितिस्थ पीराणिक निरभयरामात्मजेन दाजो भाई सज्जकेन
लिखितं ।

विषय—इसमे १०८ स्तवक है श्रीर वस्तुओं के नामो का वर्णन है । ग्रथ कोष के ढग
का है । स्तवको मे विषयवार प्रत्येक वस्तु के नाम का संग्रह किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—इस पुस्तक की जिल्द मे दयाराम सतसई, नाम प्रभाव वत्तीसी, बुद्धिबल,
खल की कुछ क्रियायें—नामक रचनाएँ है ।

सख्या १५० सुखसागर पुराण, रचयिता—दयालदास, कागज—देशी, पत्र—२०,
आकार—६ १/४ × ५ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६२, अपूर्ण
(खडित), रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—काशी नागरी-
प्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि—.....अंसो तत्व अनूप ॥

निज अनभव करि जानीयो परमात्म निजरूप ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

तो सरूप में नहीं समाधि ॥ नहि सासत्र बाद विवाद ॥

ज्ञान अज्ञान कहो नही जाई ॥ बुधि विवेक तामें न समाई ॥

ईस्वर जीव बाद तहां नाहीं ॥ अन्व व्यतिरेक नहीं ता माही ॥

पंच कोश को लेस न तहा ॥ नही अविद्या विद्या जहां ॥

विघन षेद तहां नाही कहीये ॥ सुध सरूपी चेतन लहीये ॥

भाव अभाव भेद भ्रम नाहीं ॥ साधन सिध नहीं ता माही ॥

ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय नहीं तहां ॥ द्रष्टा दरसन दृश्य न जहां ॥

:०:

:०:

:०:

शिव भागवत तीसरें भाषा ॥ करत हुंकार वीर दक्ष साषा ॥

सुवपनं हुंकार जु दीना ॥ चक्रित ह्वं संकर मुनि चीन्हा ॥

इहां पंछी कैसे कर आयी ॥ पसु पंछी वन सबही उड़ायो ॥

:०:

:०:

:०:

॥ दोहा ॥

शंकर सौं कहुँ कीरनं कीनी कहा उपाय ॥

“लक्ष्मी दास” विनती करै सतगुरु मोहि बताय ॥

अंत—इति श्री सुषसागर पुराणे गुर तिव्य संवादे सप्तमो अध्याय ॥ ७ ॥ अथ शिष्य-
वचन ॥ छप्यं ॥

कौन धर्म कीयो व्यास तास सौं यह फल पायो ॥

नीयो गर्भ सुष वास कृपा करि विष्ण पठायो ॥

जोग जग्य तप दान कहो ईतनो कहा कीनो ॥

“जासो भनं दयाल” विष्ण अंसो सुत दीनो ॥

सतगुरु मोसो भाषिये ॥ वेद व्यास मुनि कौ कथा ॥

“लछिदास” विनती करै जथा होय बरनो तथा ॥

॥ अथ गुरुवचन चौपाई ॥

मुनं शिष तोहि सब समझाउं ॥ वेदव्यास की कथा सुनाउं ॥

वेदव्यास तप कीनी भारी ॥ कृपा करी तव कृष्ण मुरारी ॥

बोले हर मागो मुन व्यासा ॥ जो मागे सो देहुं हुलासा ॥

य मुन व्यास विष्ण के वना ॥ दरसन कियो षोल दोउ नैना ॥

अंसे

:०:

:०:

:०:

विषय—दयालदास और लछीदास (गुरु शिष्य) के सवाद के रूप में ज्ञानोपदेश वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—अथ खडित है । समस्त वीस पत्रे उपलब्ध हैं । रचयिता “दयाल-
दाम” है ।

संख्या ३५१क. शब्दलीला, रचयिता—दरिया साहब, कागज—देशी, पत्र—२,
आकार—८ × ५^३/_४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५१, पूर्ण, रूप—
प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री साधु निरजनदास कुटी औरोपुर, पो० भीमा-
पार बाजार, जिला—गाजीपुर ।

आदि—; सतनाम शब्द लीला प्रसाद

साहब तुम गती अगम अपार दया बहू कीन्हो जू ॥ १ ॥

अथम वंदि सत चन सीस साहब के नाम आइ ऊह लीला अगम अपार भेद वीरला केहु पाया ।

अगम पुंख सत व्रग है हो सोइ मीले हम आये ॥

हंसन्हि के सुख कारने होह दहीवो है पाये ॥ २ ॥

भलकत पदुम बहुत उजीआर वदन छवी सुंदर रेखा ॥

अविगति जोति अंध प्रगाशीत ग्यान अगम गमि पेखा ।

विरला जन कोइ चीन्हि के होसत चन सीर नाए ॥

रहे प्रेम लव लाए के हो नाम सजीवन पाए ॥ ३ ॥

बोए जींदा रूप-अजर मनी निरमल जोती अमान ।
कहेव स्रवंग अक्रुफ समन्हिते सुनो स्रवन दे ग्यान ॥

:०: :०: :०:

करे बीवेक वीचारी के हो न्नीमल घरी सो ध्यान ॥
खुलीत कमल गगन ऋरी लागी ऋलकत सेत नीसान ॥

अंत—कहें दरीआ सुनु सत सव्व इऊह वानी ॥
कहो छयाइऊह मुल अगम सहिदानौ ॥

:०: :०: :०:

धन धन साहव धन भगत जन धन है दाश तुम्हार ॥

कहें दरीआ दरशन को फल है दीस्टि माआ उजिआर ॥ ४ ॥ २ ॥

विषय—सत मतानुसार ज्ञानोपदेश ।

संख्या १५१ख. साखी, रचयिता—दरिया साहव, कागज—देशी, पत्र—४७,
आकार—८ x ५ $\frac{3}{4}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८४६, पूर्ण,
रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६३८ वि०, प्राप्तस्थान—श्री साधु
निरजनदास, कुटी-भैरोपुर, पो०-भीमापार बाजार, जिला-गाजीपुर ।

आदि—सत्यनाम

ग्रंथ साखी के भाखल दरिया साहव मुक्ति के दाता हंस उवारन नाम निसान ।

वेवा हावे किमती हैं ॥ सिपती कहा नहिं जाऐ ॥

जरा मरन ते रहित है ॥ सो गुन कहा बुझाऐ ॥

शाहिजदा साहव धन ॥ मति करो सभ दुर ॥

आशिक औ मासुक है ॥ मिलना हाल हजुर ॥

ताहि साहव से दर्श है ॥ परशि चरन लौ लिन्ह ॥

धेरे धोखा कोई मुढजन ॥ सो जिन सदा मलिन ॥

:०: :०: :०:

दरिया विल दर्पन करो ॥ परसत अंन अनुप ॥

अंन अंन मे दिशे ॥ देखी विमल एक रूप ॥

:०: :०: :०:

दोइत कहे अदोइत कहत है करे गगन की आस

डोरी लगी नैन मे पलक नहिं विश्वास

राम कृष्ण गुण अतित है ॥ अंत हुवा फिरि भंग

वुन्द परे चुला हुवा फुला माया अरंग

:०: :०: :०:

विज सें विज उतपती कीन्हा सो बीज सवके दीन

जीव जीव सभ जीव है ब्रह्म इनते भीन

नागरी ते आगरी भली नागरी सागरी संग

वुन्द परा यह सिन्धु मे कवन परिखे रंग

:०: :०: :०:

दरिया दर्पन दर्स है प्रसत सदा सनिप

अग्र प्रानि धन वुन्द है कवहिन होत अनिप

अंत—ऐता गजन गंजी के तवम जननी जू प्रेम ॥

सदा शोहागिनि पीअपहं छटीगा आतम नेम ७०६

भजन मइली सो जात है सजन जन की रीति
अध पातख जरी जायगा कर सतगुरु से प्रीति ॥७०७॥
करम पहार इअ्ह ना टरे टारेगा कोइ संत ॥
ग्यान छेनी सो काटि अँ इअ्ह सतगुरु का मंत ७०८
शाखी जमा ७०८ ॥ सपुरनं सन् १२८६ साल समत १६ शँ २८ ॥.....॥

:०:

:०:

:०:

विषय—सत मतानुसार ज्ञानोपदेश । द्वैत अद्वैत की व्याख्या एव एकेश्वरवाद का समर्थन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ पूर्ण है । समस्त सैंतालीस पत्रे है । रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल स० १६३८ वि० है । रचयिता “द्वारकधा निवासी” दरिया साहब है । प्रस्तुत ग्रथ “अमरसार” नामक ग्रथ के साथ एक हस्तलेख मे है । कदाचित् दरिया साहब के अठारह ग्रथो मे से ही यह भी एक ग्रंथ है । इसमे समस्त सात सौ अठारह सांखियाँ है ।

सख्या १५२. सुदामा चरित्र, रचयिता—दलजीत, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—
६ × ५ ३/४ इंच, पक्ति (प्रतिमृष्ट)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३०, खंडित, रूप—प्राचीन,
मद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६१८ वि०, प्राप्तस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी
सभा, वाराणसी ।

आदि—.....

अपर कही इतिहास वषानी ॥

दसमुषसुत करि तप भारी । पाइ अचल वर चलेउ सुरारी ॥
लंकहि आइ हेतु सव वृक्की । पिता पितामह गए सव जूक्की ॥
तव पल जात भयो सुर लोका । जीति सुरन्ह कीन्हैउ वस सोका ॥
देव दनज कर मरे न मारै । करि बहु जतन सकल सुर हारे ॥
गिरि कंदरन जाइ बहु काला । सह्यौ देव बहु विपति विसाला ॥
तव सुरपति विधि लोक सिधाए । करि अस्तुति बहु विनै सुनाए ॥
कह विधि सुर सव कुस पह जाह । मिटहि महा दुष दाहन दाह ॥
सुर सुरपति निज स्वार्थ हेतु । गयो अवध जह रघुकुल केतु ॥
कुस से आपनी विनै सुनाई । सुनि भूपाल वार नहि लाई ॥
गये तुरित सुरपति के साथहि । निसिचर वधि बसाइ सुरनाथहि ॥

अंत—दंपति प्रेम परस्पर वचना । कहि न जाय यह अनुभव रचना ॥
पाइ सुधन सुंदर सुख वासा । करहि विविध विधि भोग विलासा ॥

॥ छंद ॥

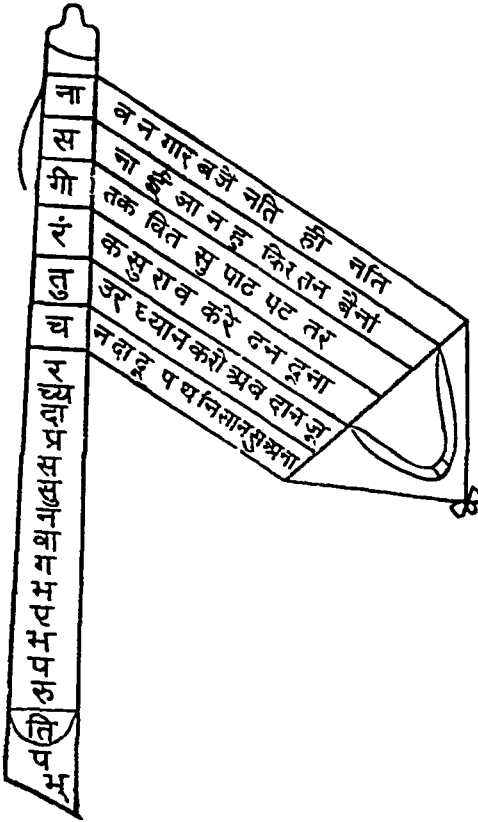
कर विविध भोग विलास दंपति लाभ लहि प्रभु सरन की ।
“दलजीत” परिहरि आस सव अवसर न जदुपतिचरन की ॥
दिज दीनता जदुपति कृपा सुमित्त सुजस जो गावही ।
सो करहि सुप बहु भाति दरिद्र भव नहि पावही ॥

॥ दोहा ॥

सेस सहस मुष सहस सो सहस गिरा गनराउ ।
बरनहि हरि गुन कल्पसत तदपि पार नहि पाउ ॥
सो जदुपति चरित उदार सुनत सुषद पावन परम ।
कहेउ मति अनुहारि निज वानी सुध होन हित ॥

इति श्री पोथी सुदामा चरित्र संपूर्णम् संवत् १६१८ कुआर पूर्णिमायां भृगुवासरे ।

अंत—



विषय—चित्रकाव्य वर्णन । इममे निम्नलिखित चित्रकाव्य है —

वृछ वध (मनहर छद), परबत वध २, स्वस्तिक वध, कदली वध, वृक्ष वध २, धनुष बंध, कपाट वध, सर्प वध २, ताला वध, चौपड वध, द्वार वध, कदली वध, कमल वध २, कमल वध २, जहाज वध और ध्वजा वध ।

विशेष ज्ञातव्य—खुले पत्र, चित्र बनाकर उसमे अक्षर लिखे है । लाल स्याही तथा काली स्याही से चित्र बनाए गए हैं ।

संख्या १५४ रागनिर्णय, रणयिता—दास, कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—
१० × ६ ३/४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७५, खडित, रूप—प्राचीन,
पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८३५ वि० सभवत, प्राप्तिस्थान—कुवर लक्ष्मण
प्रतापसिंह, ग्राम—साहीपुर नीलखा, पो०—हडिया, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

रागरूपमुरी ताल भंया

अरी जसोदा तेरो कान्ह हमी सो करै लगरई ।
वाट घाट मोही रोकत टोकत वाँह गहै वरीअइ ॥
पेलतु फगु उमग भरे पिचकारी लिये तन सारो भिगाई ।
'दास' कहै सबहो जी कं इन मोही सुधि करी पाई ॥ १ ॥
:०: :०: :०:

अंत—करन चौताला

मेरी विनै सुनीं जौ तू अभं वरदानो ।
निसवासर सोवत जागतहू विसरो जिनि महरानी ॥
अंतर वाहिर तुमहि निहारत रहौ सदा मनमानी ।
दासहि आस और नही दूजी सुनिए भौज निधानी ॥

इति दीपक पुत्र गारा जलधर भरन अरन करन वर्णनं रागनिर्णय वाइसमो प्रकासा ॥२२॥

काफी तेवरो

एरी गरब गहेली होतन जोवन गरब न कीजो ।
जैसे कुसुंभ रंग चटकीलो छनक छनक छन छोजे ॥
ज्यो तखिर की छाँह मध्य दिन तैसेही गुनि लीजौ ।
कहत 'दास' पिय के मिलवे विन कैसे कै जिय जीजै ॥ ३ ॥

—अपूर्ण

'इति नादारणवेहि श्री मदुपाध्याय जदुनंदन सूनुना मारिणक्येन कृतो रागरत्नः सप्तः ॥'

विषय—सगीत विषय वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—पुस्तक खडित है । आरभ मे सस्कृत ग्रथ 'राग रत्न' है, जिसका रचयिता
मारिणक है और जिसमे लिपिकाल स० १८३५ वि० दिया है । उसकी पुष्पिका इस प्रकार है —
प्रस्तुत पुस्तक मे रचनाकाल और लिपिकाल उसके खडित हो जाने के कारण अज्ञात है ।

रणयिता का नाम 'दास' है । अन्य वृत्त नहीं मिलता । इसमे अध्यायो के स्थान पर
'प्रकास' प्रयुक्त हुए हैं । विषय की दृष्टि से ग्रथ उत्तम है ।

संख्या १५५. ब्रज महात्म चद्रिका, रचयिता—दास, कागज—देशी, पत्र—७३,
आकार—७ ३/४ × ५ ३/४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८२१, अपूर्ण,
रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० ३८०५, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा
पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि—.....

नाक पीठ पै डीठि कं ईठ करौ सो ठौर ।

यह साधन वह सिद्धि है सर्व चलाचल और ॥ २ ॥ ६६ ॥

॥ कवित्त ॥

धर है विसोक एक रमा रानी जू की ओक और सर्व रोक सोक गिनि ऋरसाने में ।
काल के चलाए ते चलत चहुँघाँते जहाँ तहाँ रहैं धिरा सबही के धरसाने में ।

काहू कौन बाधा सुख की अगाधा राधा मानि माधव अराधा कहै दास सरसानैं मैं ।
तरनि किरनि सी प्रकासमानी वृषभानी कीरति वितानी राजधानी वरसानैं मैं ॥१५॥

मध्य—

उधौ

राजकाज अभिमानी राजधानी मथुरा तैं “दास” लाज काज साजि ब्रज कौं नवायौ हौं ।
कंसकूप अंध तामैं परधो महामद हरि ऐसे बधु प्रेम सिंधु मैं न्हायौ हौं ।
मागतु हो सषि मोहि दीजं सीष भीष आयौ सषिन सिषावन कौं सीषन कौं आयौ हौं ।
मेरी मोह भेंटन कौं अपनी समेटन कौं दैं कं स्याम भेंटन कौ भेंटन ठायौ हौं ॥१६॥

॥ दोहा ॥

ज्ञान रीति कहि प्रीति रहि ऊधौ हरि पं आइ ।

कहि न सके सहसा दसा रही अकलि अकुलाइ ॥१४४॥

अत—

॥ कवित्त ॥

लोक वेद रीति कही भेंटन अनीति कही भेंटन कौं परी प्रीति रीति वही वासकी ।
ब्रज अनुराग कह्यौ जगत विराग कह्यौ विरह सुहाग कह्यौ जंसी रोकी रासकी ।
अवतार गति कही एक हरि मति कही सतीपतिनी की वृति कृति कही दासकी ।
अर्थनि सौं भरी ग्रंथ कोठरी की कंची कही सूचीपत्र करि जो प्रकासैं आसैं आसकी ॥१७२

कृष्ण चंद्र चंद्रिका कौं कहै नहीं ह्या सक ।

ब्रज निसक है अक भरि लीनों स्यां कलक ॥३२६॥

इति श्री ब्रज महात्म चंद्रिकायामात्मनिवेदनो नाम षष्ठ प्रकासः ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

सिख मुख रव वसु सुधामिधि सवतसर आधार ।

कार्तिक कृष्ण चतुर्दसी ग्रथ लिप्यौ रविवार ॥ १ ॥

नौनि रामानुजं भाष्यकारं सदा येन कृतं ग्रंथं शतं भेदि पावंडं पथं भेदि मतं वेदवेदात् सारं ।
कर्ममति ज्ञानं जुतं भक्तिं अद्भुतं अमितं चित्तं वृत्तिं नित्यं हरिं गीतं गानं ।
शंभु शाकतं सौरिं गानेशलेशं विन्दुं वैष्णवं धर्मं कीरति वितानं ।
द्रविडं द्विजं कुलं वरं शकरं भयकरं धवलयाशं सकलं दलिं कलिं कलेसं ।
तत्त्व उपदेशं त्रयं लेसं उपदेशं करिं करयौं नरवेशं आवेशं शेषं ।
कुहरं कशमलं हरंतं करतं प्रफुल्लितं मनाजनं अरविंदं वतं अनायासं ।
बासं दिसं आसप्रदं वासकमलालयं तमनिसां नासं दिनकं (२) प्रकाशं ॥११॥

विषय—श्रीकृष्ण की कुछ कथाओं को संक्षेप में वर्णन कर ब्रजमाहात्म्य वर्णन किया है ।

ग्रंथ में निम्नलिखित छ प्रकाश है —

१. प्रथम प्रकाश	अनुकूल सकल्प	पत्र ६ से १३ तक
२. द्वितीय प्रकाश	गोपत्व वर्णन	पत्र १३ से २७ तक
३. तृतीय प्रकाश	प्रतिकूल त्याग प्रार्थना	पत्र २७ से ३७ तक
४. चतुर्थ प्रकाश	ब्रजवास विश्वास	पत्र ३७ से ४७ तक
५. पंचम प्रकाश	अनन्य साधन कार्य	पत्र ४७ से ७० तक
	अन्य साक्षात्कारानुसंधान योग	
६. षष्ठ प्रकाश	आत्म निवेदन	पत्र ७० से ८० तक

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख के आरम्भ के ७ पन्ने नहीं हैं । रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल सन् १८०५ दिया है ।

संख्या १५६. पंथ पारख्या, रचयिता—दास, कागज—देशी, पत्र—६, आकार— $३\frac{३}{४} \times २\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, अपूर्णा, रूप—नया, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—.....कोई नकरियो रिसि ॥ ४ ॥ वाणी अमृत बेलड़ी ।

बहुत किय विसतार ॥ कीरति दादू दास की ॥ चढ़ समंदा पार ॥५॥ दादू ॥ चौपई ॥ काष्ठ में ज्युं चदन सार पाहिन में पारसि निरधार ॥ दूध माहै घृत जैसे नानि त्युं दरसन में दादू का ज्ञान ॥५॥ दसं श्रौतार मांहि ज्युं कृष्ण ॥ तीन्यू देव मांहि ज्युं विष्णु ॥ सकल शास्त्र में गीता जानि ॥ त्युं दरसन में दादू का ज्ञान ॥६॥ कपिन माहि वडे हणवत ॥ ऋषिन मांहि ज्युं नारद संत ॥ तीरथ में ज्युं गंगा कही ॥ त्युं सतगुर में दादू सही ॥७॥ सतगुर कहै सति की बात ॥ जाते पावें हरि साष्यत ॥ डिभ पाषंड न उपरि भेय ॥ मन में सुमिरै एक अलेप ॥८॥

मध्य—दादू पथी तिसक नाम जीतै लोभ क्रोध अरु काम ॥
माया मोह करै सब दूरि पाचो इद्री रावै चूरं ॥२४॥
भिक्षा कारण हठ न कराई ॥ अण वध्या आवैं सो पाई ॥
लूपा सूंषा कवहु न कहै दादू पंथी इह विधि रहै ॥२६॥
छाजन भोजन इतना लेह काया ब्रतन चाहिये जे ॥
संचत करै न लोभी होइ दादू पथी कहिये सोइ ॥२७॥

अंत—दादू जी के नावपर ॥ वास पिक प्रशन ।
दास कहै अरण नहीं गुर गोविंद की आण ॥४४॥
दास कहै अरण नहीं रत है वीन ॥
पीता सण साई राह दादू जी के चरण की सरज्यो मीको पेह ॥४५॥
बेह सिरज्यो या चरण की सुनि साई अरदास ॥
मनसा वाचा करमना ॥ रहौं चरण के पासि ॥४६॥

इति श्री दास जी पंथ पारख्या सपूर्णा ॥

विषय—इस ग्रंथ में दादू पथियों के सिद्धांतों और नियमों का वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रथम पत्र लुप्त हो गया है । रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है ।

संख्या १५७ सूर्यकांड, रचयिता—दासराम, कागज—देशी, पत्र—३७, आकार— $६\frac{६}{१०} \times ५\frac{३}{१०}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—११३८, पूर्णा, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९११ वि०, प्राप्तिस्थान—पंडित भागवत तिवारी, ग्राम—कुरथा, पो०—पीरनगर (गोरा बाजार), जिला—गाजीपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ सूर्य काण्ड प्रारभ्यते ॥

सिधुरवदनहि सुमिरि करि बंदि गिरा गुर पाय ।

“दासराम” रविकाण्ड कृत कहि जयराम सहाय ॥

जो अव्यक्ता चिन्त्य है निरगुण गुणमय भार ।

जग समस्त घृत तेहि प्रणत ब्रह्म नत करतार ॥

गुणा गुणात्म तनोति जग समन त्रिविधि अघताप ।

जगत करण कारण हरण ब्रह्मांड मित प्रलाप ॥

गिरिजा प्रसन्न महेश सुनि जगदुत्पत्ति संहार ।

लगे कहन विस्तार सो श्रीशिव सुमति अगार ॥

॥ चौपाई ॥

ॐ अनादि अज अगुण गुनाल । परतेज पर ब्रह्म कृपाला ॥
 ते प्रभु रचित पंच संसारा । करहि हरहि जग बारम बारा ॥
 मध्य—निविधार सुष संपति आता । रहहि मुदित परजाजुत राजा ॥
 जब लगि पोष मास नहि आई । गुज रात अति दुषदाई ॥
 जब दस मास वीतिके जैहै । हरित निरस तव सस्त विकहै ? ।
 नहि तौ ता विच देस तिलगा । होइहि विनुकृत रुज रण रंगा ॥
 यह अधिकार सकल श्रुति गावा । श्रुति विमुखी कहूँ सुष नहि पावा ॥

॥ दोहा ॥

ताहि अब्द के अतर अन्य महग कहु होइ ।
 मास मार्ग की पउष मह बुध गावत सब कोइ ॥

मेघ-संक्रमन हिमकर वारा । ताहि वर्ष कर सुनु व्यवहारा ॥
 देस स्वस्थ नरपति जुत नीती । प्रजा समोद परसपर प्रीति ॥

अंत—तुम अनंत तुव गुण अमित कोउ नहि पावत थाह ।

हौ हौ मग्न भावाब्धि मह गहु रमापति बांह ॥

इति श्री “दासराम कृतो” मा महेश्वर सम्वादे सर्वगुणालंकृत वत्स रामभरण तृतीया-
 वस्थित सृजं काण्ड सम्पूर्ण । विक्रमाब्दी सम्वत् १९११ आश्विन शुक्ल त्रयोदश्या बुधवासे
 रामेश्वर कायस्थ लीषा ग्राम भदारी श्री गुरु के दया ते प्रणवे चयणपुरा मले अंगरेज के० ।

राशि चारि कुंभादि मे जापर गुर्भतिचार ।

पूर्वे नहि वक्त्री तदा लुग केज्य अस वार ।

विषय—उमा महेश्वर सवाद । जगत की उत्पत्ति तथा नाश का वर्णन । ग्रह, लग्न
 आदि का विचार तथा फलाफल । इसमें तीन खंड इस प्रकार है —

प्रथम खंड में १४ चौदह पत्ते ।

द्वितीय खंड में १६ सोलह पत्ते ।

तृतीय खंड में ७ सात पत्ते ।

संख्या १५८. नीति रत्नाकर, रचयिता—दिविजय सिंह, निवास स्थान—वलराम-
 पुर (गोडा), कागज—देगी, पत्र—२३४, आकार— $5\frac{3}{4} \times 4\frac{3}{4}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—
 १५, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७२९, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल
 —स० १९२० वि०, प्राप्तस्थान—श्री भगवतीप्रसाद सिंह, प्रधानाध्यापक—डी० ए० वी०
 स्कूल, वलरामपुर, गोडा ।

आदि—.....

नवारं वंशावतस अर्जुन सिंहात्मज दिग्विजय सिंह बहादुर विरचिते ग्रंथ “नीति रत्ना-
 कर” मंगलाचरण देश नगर राजवंश वर्नन प्रथम प्रकाश. १

अर्थ भूमिका वर्णन ॥ चौपाई ॥

सित दशमी कुवार बुधवासर । नभ दृग ग्रह शशि संवत् आषर ॥

ग्रंथ नीति रतनाकर कोन्हे । कवि कोविद मुनिजन मत लीन्हे ॥

काढे रतन मथन छीर जैसे । चौदह वृत्ति ग्रंथ महूँ तैसे ॥

कवि कोविद सो विनै हमारो । तजि दूषन भूषनहि सुधारो ॥

मध्य— ॥ दोहा ॥

धन्वंतरि सम धरापति न्याय औषधी सेइ ।

मनि प्रकाश करि नीति पथ नेक वर्दाह लषि लेइ ॥ १ ॥

मंजुल मंत्री मित्र मति धनु संगति गुन लेइ ।
विद्या कामदधेनुर्वा अर्थ कामना देइ ॥

:०: :०: :०:

नाम दिग्विजय सिंह प्रगट विजय भूप धरि जाम ।
पद कोमलता कवित हित आरोपित अभिराम ॥

:०: :०: :०:

श्रंत—ग्रथ नीति रतनाकरं पढ़ें सुनै जो कोय ।
रतन पदारथ को लहै चारु चातुरी होय ॥११॥
रतनाकर सो भैं प्रगट रतन चौदहो आय ।
त्यौं प्रकाश चौदह किये नृपति नीति ठहराय ॥१२॥
सवत् शशि दृग ग्रह शशी बुध हरि वासर वेश ।
पक्ष असित फागुन भलो कीन्हें पूर्ण नरेश ॥

इति श्री जनवार वंशावतंस श्रीमहाराज अर्जुन सिहात्मज श्रीमहाराज दिग्विजय सिंह
वहादुर विरचिते नीति रतनाकरे रसवर्णनं नाम सप्तदश. प्रकाशः १७ समाप्तम् ।

विषय—नीति तथा रस एव अलंकार वर्णन ।

रचनाकाल

संवत् शशि दृग ग्रह शशी बुध हरिवासर वेश ।
पक्ष असित फागुन भलो कीन्हें पूर्ण नरेश ॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ खडित है । समस्त दो सौ चौतीस पत्रे है । रचनाकाल सं०
१६२० वि० है । यह मुद्रित है, पर मुद्रणकाल का पता नहीं ।

सख्या १५६क. प्रह्लाद चरित्र, रचयिता—दुखहरण, कागज—देशी, पत्र—३८,
आकार—८ × ३ ३/४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१३, पूर्ण, रूप—
प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६३४ वि०, प्राप्तस्थान—श्रीयुत विद्याप्रसाद
राजाराम, स्थान व पोस्ट—मुहम्मदावाद गोहना, जिला—आजमगढ़ ।

आदि—राम १ श्री गनेस जी सहाय, श्री लिष्यते प्रह्लाद चरित्र

आरंभ

॥ चौपाई ॥

महा असुर हरनाकस राजा । काह कहो जस ताकर साजा ॥
ऐसो कांठन तपेसा कीन्हा । सकर होइ प्रसन्न वर दीन्हा ॥
राती देवय नहीं आतु तुम्हारी । नहि तुअ मरन अकास पताला ॥
बाहर भीतर होइ न काला ।
जं वंद रुधिर परै मही माही । तेतिक हरनाकस होइ जाही ॥
जस वर मागसी तस वर पाएसी । अवन्त होए सीस बोनाएसी ॥
सुर नर मुनी सब कहँ दुष देई । मारी डाटी सरबस हर लेई ॥

॥ दोहा ॥

लागे करन उपद्रो भा मन महँ हकार ।
अब को मारि सकँ मोहि अस को है बरिआर ॥

श्रंत—

॥ दोहा ॥

कवनी बड़ाई कागए ऐसे प्रभु के भाषी ।
“दुखहरन जन वंदही सीर पुहमी पर राषी ॥

॥ चौपाई ॥

चौथे प्रह्लाद काज अवतरे नरसीध रूप छेत्र सुलतानपुर पटन पुनीत है ।
माता चंद्रावती औ पीता हरी ब्रह्म रीषी गुरु अर्चीत तेज जाही के नमीत है ।
मारो हरनाकस असुर बलीबंड सुर जग्र मे भक्त के गाठे हरी भीत हैं ।
“जनदुखहरन” सुजस तीहुपुर भए सुर नर मुनी गावत जो गीत है ॥ १ ॥

इती श्री प्रह्लाद चरीत्र सपुरन प्रती जो देष्या सो लीष्या पंडीत जन कु वीनती मोरी
दुटल अछर लेव सब जोरी । श्री समत १६३४ मी० बंस ख वदी ६ वार बुध के ॥

विषय—प्रह्लाद की कथा वर्णित हुई है ।

संख्या १५६ख. प्रह्लाद चरित्र, रचयिता—जन दुखहरण, कागज—आधुनिक सफेद,
पत्र—१०, आकार—७ $\frac{3}{4}$ × ४ $\frac{1}{2}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुच्छेद)—
१६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सन् १२४० हि०, प्राप्तिस्थान—
काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी । (ग्रथदाता—प० स्वामीनाथ दुबे, ग्राम—दुर्बली,
पोस्ट—खखुद्द, जिला—गोरखपुर) ।

आदि—श्री गनेसाएनमह पोथी प्रह्लाद चरीत्र ॥

॥ दोहा ॥

उतर बीसा हरीनाकस असुर अगम अपार ।

ताको चरित्र सुनह कहो सहित बीस्तार ॥

श्री हरि चरन रेनु को आसा । जनदुषहरन कथा परगासा ॥

महा असुर हरीनाकस राजा । काह कहो जस ताकर साजा ॥

सीव को सेवा बहुत बीधी कीन्हां । तव सीव प्रसन्न होइ वर दीन्हा ॥

देव दइत नर सकही न मारी । राती देवम नहि अतु तुम्हारी ॥

नाही तुव मरन अकास पताला । बाहर भीतर होइ नाही काला ॥

तव जहा रुधीर परं महि माही । तेती हरीनाकस होइ जाही ॥

जस वर मागैसी तस वर पाएसी । हरषवंत होइ सीस उठाएसी ॥

सुर नर मुनी सभ कह दुष देई । मारी डाडी सरबस हरी लेई ॥

लागव करन उपद्रव मन मंह भया हकार ।

अब को मारी सकं मोही अस को है बरीआर ॥

अंत—धन्य धन्य भक्त वछल सुखदाई । जीन्ह एह जन की पैज पुराई ॥

दुस्ट अघरमी को छए कीन्हां । जन कह लेइ इन्द्रासन दीन्हा ॥

भारत जल थल माह उवारा । जन नीत भए नरसीध अवतारा ॥

कवनी बड़ाई करिए ऐसेहि प्रभु कह भाषी ।

दुषहरन संतन सुष पुहुमी सीस पर राषी ॥

॥ कवीत्य ॥

चौथे प्रह्लाद काज अवतरे नरसीध सुलतानपुर पाटन पुनीत है ।
माता चंद्रावती पीता हरी ब्रह्म रीषी गुरु अर्चीत है ।
तेज जाको जगत माह रहै मारेउ हरीनाकस असुर बली बडसुर जगत मो भगत को गाठे हरी भीत है ।
“जन दुषहरन” सुजस तीहु पुर भए सुर नर मुनी सब गावत गीत है ॥
उधरे चारी वेद लै सास्तर वो षट संध्या धरम अचार जी ।
नबो व्याकरण व ग्रह रासी वारह अठारह पुरान तीथी पद्मह सात वार जी ।

बीद्या चौदह सताइस नछत्र मूल निछत्र गंगा गीता गाइत्री चौबीस मंत्र सार जी ।
आपे रीषी साधु धर्म संघारे जुग जुग दुषहरन दास कारन अवतार जी ॥
सन् १२१४० साल

विषय—प्रह्लाद चरित्र का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल नहीं दिया है । लिपिकाल सन् १२४० (?) है ।

संख्या १५६ग. प्रह्लाद चरित्र, रचयिता—दुखहरनदास, कागज—देशी, पत्र—७,
आकार—१० $\frac{३}{४}$ × ४ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५८, पूर्ण,
रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—५० अवधनारायण लिपाठी, ग्राम—बल-
भरनपुर, पो०—मँहगाँव, जि०—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नमः । पोथी प्रह्लाद चरित्र

कथा दु कृत दुषहरनदास लिषा प्रह्लाद चरित्र ॥

॥ दोहा ॥

आपर अर्थ न जानौ नहि गुर ग्यान उपाइ ।

राम चरित कछु वरनौ श्री गुर होहु सहाई ॥

॥ चौपाई ॥

महा असुर हरिनाकुश राजा
काह कही जश ताकर आजा ।

शिव कि सेवा बहु विधि कीन्हा
तव शिव होई प्रसन्न वर दीन्हा ।

देव दैत नर सकहि न मारी
राति देवस नहि मृतु तुम्हारी ॥

अंत—

॥ चौपाई ॥

अग्या प्रभु के सिर पर लीन्हा ।

प्रह्लादाह इन्द्रासन दीन्हा ।

गिति नाद भौ वाजन वाजा ।

भा जन निर्मल पातक भाजा ।

:०: :०:

धन्य भक्त वत्सल सुषदाई ।

जेन्ह पह जनक पैज पुराई ।

दुष्ट अघरमी कं छै कीन्हा ।

जन कह लै इन्द्रासन दीन्हा ।

:०: :०:

॥ दोहा ॥

कवन चड़ाई करिये ऐसी प्रभु की भापि ।

“दुषहरन जन वंदिये” शिर पुहुमी मे रापि ॥

॥ कवित्त ॥

चौथे प्रह्लाद काज अवतारे नरसिंह रूप छत्र मुलतान रूप पाठन पुनीत है ।
माता चंद्रावती श्री पिता हरि ब्रह्म ऋषि गरु अमित तेजहीं कवन रीत है ।
भोरउ हरिनाकुश असुर बलीवंड सुर जक्त मे भक्त के गाड़े हरि भीत है ।
जन दुष हरन सुजस तिहु पुर भग्नौ सुर मुनि गावत जो गीत है ॥

विषय—प्रह्लाद चरित्र वर्णन ।

संख्या १६०. बोलार चरित्र, रचयिता—दुखीराम वरनवाल, निवासस्थान—गोठनी (सारन, विहार), कागज—देशी, पत्र—३८, आकार—८ × ५^३/_४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—५३२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी कैथी मिश्रित, रचना-काल—संवत् १८५३ वि०, लिपिकाल—स० १८५३ वि०, प्राप्तस्थान—प० रघुनंदन प्रसाद चौबे, ग्राम—तिलिया बडी, पोस्ट—सतराँव, जिला—गोरखपुर ।

आदि—श्री भवानी जी सहाइ ॥ श्री गनेस जी सहाइ ॥ श्री पोथी बोलार चरित्र ॥
मैं बिनबो कर जोरी कै श्री गुरु चरन तोहार ।

जनम जनम तुव महीमा गावहां एही संवसार ॥

परथम वरनो श्री गुरु चरना । मोही जनीत संसैं सभ हरना ॥

मम हीरदेए प्रभु पथ देषायो । पडोकृत सुजस बोसतारो ॥

जग जननी तुम्ह होहु सहाई । आपर अरथ मोही देहु मेराई ॥

सकल साधु के रेनु मँकारो । हरीमून कथा सुजह बोसतारो ॥

कवरो पडो आहैं भाई । कपट सनेह सदा चली आई ॥

पंडो कह जगदीस नेवाजा । पापी गैआन जुरजोधन राजा ॥

देषी सहाय सो गरभ भुलाना । आपुन काल सो नाही अनुमाना ॥

येक देवस सकुनी के बोलाई । सो भाइ लीन्ह सग लाई ॥

करन बरोन संग लीन्हा और असथामा वीर ।

सएल सगुनी सभ प्राए म्हाम्हा रनधीर ॥

मध्य—ठाढ भए कुरछत्र मकारा । सौय भाइ बोलार प्रचारा ॥

तवही द्रोन गुरुवान सधाना । जाकर सबद तिहुपुर जाना ॥

बीहसी द्रोन कहा प्रचारी । अब बालक करू हम सन भारी ॥

तव हसी द्रोन छाडा सर साता । दे आसीस चुँवी के माथा ॥

बीबीधी वान बोलार प्रचारा । के प्रनाम तव चरन पषारा ॥

अंत—पाँचो बंधु गोद के लीन्हा । बहुत असीस बोलारही दीन्हा ॥

हम आछत सुत तुम रन करहु । एह अन उचित कहा उर धरहु ॥

पेलहु जाइ तुम षाहु तमाला । पुनिएह रन मह करहु न पेला ॥

हमरो नाम हानि पुनि होई । आपु आछत बालक रन करई ॥

॥ दोहा ॥

जो देखा सो लीषा पडीत जन सो बिनती मोरी ।

दुटुल अछर लेव बटोरी ॥

इति श्री बोलार चरित्र दुषी राम वरनवार साकीन मोठनी परगने चोबारमी भादो बडी १४ रो बुध के पड़आर भेआ समत १८५३ सन् १२३ शाल मोकाम बलुआ कोठी नई ॥

विषय—नागकन्या से उत्पन्न भीमसेन के पुत्र बोलार का चरित्र वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल नहीं दिया है । लिपिकाल संवत् १८५३ है ।

संख्या १६१. निर्गुन नहछुर, रचयिता—डूलनदास, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—७^५/_४ × ६^३/_४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—स० १६२३ वि०, प्राप्तस्थान—श्रीयुक्त भोला-नाथ जी 'भोरेलाल' ज्योतिषी, ग्राम व पो०—धाता, जिला—फतेहपुर ।

आदि—श्री सतगुर साहेव ए नम नीरगुन नहछुर लीषते ॥

सगुन सुमगल एह वड़ एह वड़ कुसल छेम रे ।

नीत नव वढ़े अषडित चरन कंव दीढ़ प्रेम रे ॥

दुइ कर जोर मनावो सतगुर संत सांच दीन ।

सुफल मनोरम कीन्ह चुक छमा जनी जनी नहछुर प्रभु जगजीवन ॥

विनय मै चरन मनाए रे ॥

समरथ सत सीध दाएक होए सहाए रे ।

करहु क्रीपा पन वढ़े सत नेह रे ॥

श्रंत—

सुनी एह प्रीतमकार सवतीअ । हमें भलेउ सुषी तज रहै सवतीअ ॥

पीअ के वतीआ हीय मेरे जमी प्रीती ।

वेलहारी हरदुनो पतीअ ॥

सषा “डुलन” पीअ कार सव तीअ ॥

धुमेउ मंहर चुनी चुनी मोतीअ ।

सषा मोरे सजन के हार ए सबतीअ ।

नीरगेन नेह छुर संपुरन भए ॥

विषय—निरगुन ब्रह्म का नेह वर्णन ।

संख्या १६२. रामाश्वमेध, रचयिता—देवकृष्ण, कागज—देशी, पत्र—८७, आकार—

६३ × ५ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०४४, अपूर्ण, रूप—प्राचीन,

पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८२८ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय

(याज्ञिक सग्र), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि—श्री रामचंद्राय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ रामाश्वमेध लिख्यते ॥

॥ भाषा ॥ श्लोक

मंगलं भगवन् विष्णुः । मंगल गरुडध्वजं ॥

मंगलं पुंडरिकाख्य । मंगलायतनो हरिः ॥ १ ॥

श्री रामचद्र सुद्ध गुणान्वित भासा जनमौलितं ।

दीपं ज्ञान प्रकास सुज नयं आनंद दान शुभं ।

कलिकलमषमखिल मथनं सौख्यार्थं लाभप्रदं ।

देव कृष्ण निज सुमत्थो अनुरूप भाषां करोत् ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

गणपति सारद शोस शिव सिधाराम गुर मोर ।

इनके चरन सरोज जुग विनय करु करु जोर ॥

∴∴

∴∴

∴∴

मोरे मनमें अभिलाष महा शुभ चाहत प्राकृत ग्रंथ भनी ।

रघुवीर सुधाजस अकित ते जनपावन दावन सोक भयं ।

अस जानि जिये जु कृपा जु करो मतमद ज मोर भरोस नयं ॥

॥ दोहा ॥

सवत् अठारा स(त) वरष वहरि वीस त्रीयेपच ।

मैन मास ब्रधु इंदुपरिव रामा जनम तव मंच ॥

अतिसै अधम कठिन मै स्वामी । सव जग दीप बोध अनुगामी ॥

नही भरोस मोहि तोहि भरोसा । गति लिधि दोउ उर भयोउ हरोसा ॥

मैं अति दीन दीन तुम बंधु । मैं ओगुन गृह तुम गुन सिंधु ॥
 मैं अति पतित पतित तुम पावन । मैं दुषन तुम दोष निसावन ॥
 मैं कुघात तुम पारिस रूपा । मैं अतिरक भवन तुम भूपा ॥
 :०: :०: :०:

॥ दोहा ॥

ऐसे प्रभु कु छाडि करि "देव" भजहि तेह आन ।
 ता सम मुढ न अघ कोउ किकर मन तेह जान ॥
 :०: :०: :०:

कवि कीन जो परबध नाहिन सभा सतन आवरी ।
 तिन वृथा किय परिषेद तत्वु विचार कर नाहिन करी ।
 रस मधुर सगुन जुक्त बिनु जस राम भनित अपावनी ।
 गुन रहित सब गुन एक रामहि सजन सोहि मनभावनी ।
 एहि कीन दृढ हित जानि नीज एहि सभा सतन मै सुनी ॥
 सब ग्रथ सार सु राम जस गति हेत सब सुख को गुनी ।
 तिहि कहूं मति अनुस्वार बानी करन पावन मोहिंसो ।
 पुनि सजन आनद देन नर क्रत हेत सब जिय जानि सो ॥

॥ दोहा ॥

कहुं वरनि रघुपति सुजस पावन गग समान ।
 सब सुखदायक हरन अघ चहु फल दायन दान ॥
 इति श्री रामासुमेध प्रथम मगलाचरण स्तुति करुनारस वर्णननाथ रूपूर्ण ॥

॥ दोहा ॥

व्यात सान रिष शेष को कहु संवाद सुचार ।
 सुनतहि नासं मोह भ्रम कहु मोर मति सार ॥

॥ चौपाई ॥

एक वार रिष दोउ कर जोरी । बचन कहोउ मृदु अतिरस बोरी ॥
 सुनु शेष मन बिनती जोई । राषु नाहि तुमु सुन गोई ॥
 अंत—

॥ दोहा ॥

बहोरि कहेउ रिपु सुदनहि सुनु समद महिपाल ।
 चढोउ सेनि निज साजि सब एह सहसा करिकाल ॥

॥ चौपाई ॥

सुनि प्रभु वचन समंद सुत एका । दीन राजपुर चरि अभिषेका ॥
 बहोरि सेनि निज बहो विधि सा..... ॥
 :०: :०: :०: —अपूर्ण

विषय—रामाश्वमेध का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ खडित और जीर्ण शीर्ण अवस्था मे है । रचनाकाल स० १८२८ है । लिपिकाल ग्रथ के अंत से खडित होने के कारण अज्ञात रह गया ।

संख्या १६३क. हनुमत वीर रक्षा, रचयिता—देवीदत्त शुक्ल पंडित "धीर", निवास-स्थान—हसरजपुर (सोराव तहसील, इलाहाबाद), कागज—देशी, पत्र—४, आकार—१० १/२ × ४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६०७ वि०, लिपिकाल—स० १६०७ वि०, प्राप्तस्थान—प० छोटेलाल जी मिश्र, ग्राम—हसरजपुर, पो०—होलागढ, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री महाकाल्यै नमः ॥ हनुमते नमः ॥ छप्पय ॥

रक्त जलज सम नयन सुभग सिर मुकुट विराजत ।
 मेचक कुचित केश वेश श्रुति कुडल छाजत ।
 भ्रुकुटी कुटिल विशाल भाल उर माला सोहत ।
 चन्द्र वदन सुख सदन मदन सत कोटि लजावत ॥
 उर भुज विशाल भूषण सहित तडित वसन कटि पट लसै ।
 रघुवीर मूर्ति भनि धीर मम उर अंतर निचुदिन वसै ॥ १ ॥
 हेम पद्म छवि नव्य भव्य प्रद तुल्य उज्जकर ।
 वज्र श्रंग नख वक लंक निशक पक कर ।
 दोर दंड उहड दनुज दल दलन प्रचडन ।
 पिंग अचिछ अति स्वच्छ वक्ष विस्तीर्ण सुमडन ।
 लागूल कठिन जिहवा रदन सहित वदन भ्रुकुटी विकट ।
 श्री धीर भनय मारुत तनय भजे न आवत दुख निकट ॥ २ ॥

अंत—

अथ मैं गरीब तू गरीब को निवाज खास आस मोहि रावरी न जानौ छल छन्द को ।
 द श्री पुरानन मैं गावन विलंद यश भावन ऋषीरान के रूप जो अनन्द को ।
 व कोर मेरी ओर कृपा कै निहारो वेगि निज जन जानि कै विदारो दुख दद को ।
 रीर जू भनत मैं न काहू को गनत काहू तेरुई भरोस से दुलारे रघुनन्द को ।

॥ कुडलिया ॥

अग्नि कोण मह ओश नग तीरथ नृप अभिराम ।
 अमरावति सो लसत है हसराजपुर ग्राम ॥
 हंसराजपुर ग्राम हंसनिभ कोविद जामै ।
 धर्म नेम विद्याविवेक सरसीरुह तामै ॥
 देवीदत्त सुधीर वीर रक्षा एह कीन्हा ।
 होइ सो निरदुख भक्त पाठ जाँ चित दै लीन्हा ॥१५॥

॥ दोहा ॥

एक ऊन दश दून करि नभ अरु अग्नि मिलाय ।
 मार्ग शुल्क दशमी सुतिथि कियो विनय हर्षाय ॥१६॥

इति श्री देवीदत्तकृता हनुमत वीर रक्षा समाप्ता ॥

बिषय—हनुमान जी की स्तुति ।

रचनाकाल

एक ऊन दश दून करि नभ अरु अग्नि मिलाय ।
 मार्ग शुल्क दशमी सुतिथि कियो विनय हर्षाय ॥१६॥

संख्या १६३३. अलङ्कार दर्पण, रचयिता—प० देवीदत्त शुक्ल "पंडित", "धीर",
 यान—हसराजपुर (सोराव तहसील, जि०—डलाहाबाद), कागज—देशी, पत्र—२४,
 आकार—१० १/४ × ४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुपुष्टुपु)—४५६, खडित,
 प—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—संवत् १९१० वि०, लिपिकाल—१९१०
 व०, प्राप्तिस्थान—प० छोटेलाल जी मिश्र, ग्राम—हसराजपुर, पो०—होलागढ, जिला—
 लाहाबाद ।

भादि—श्री गुरु गणेशाभ्यां नमः ॥ श्री महाकाल्यं नमः ॥

भाले चन्द्रन्दधानङ्कुर मृग परशुभूति काक्षप्रशान्तम्
दृप्ताहि व्यूहरग्यडकुशमित बहुङ्कोटि पूषप्रभाढचम् ॥

:o:

:o:

:o:

॥ षट्पदी ॥

व्याघ्र अजिन करि वसन भूरि जीमूत श्याम तन ।
शोण नलिन दस नयन मयन मद लाजत प्रतिछन ।
कर कपाल करवाल भाल शशिबाल विराजत ।
दुष्ट दरत भय हरत करत पालन जन छाजत ॥
लोल ललित रसना दशन विकट प्रकट त्रयतापहर ।
सोइ पडित देवीदत्त को रचना करै सो सिद्धिकर ॥ ५ ॥

:o:

:o:

:o:

सुकुलनाथ विप्यात पढे श्रुति शास्त्र तन्त्रवर ।
सुत गगाधर तासु तरणि सम तेज जाहि कर ।
तासु भवानीचरण विदित दश चारि भुवन जस ।
ता सुत ठाकुरराम कियो तप बल हरिहर बस ।
पुनि रामदत्त ताके तनय श्रुति पुराण रस शास्त्रवित ।
पुनि ता सुत देवीदत्त भो ग्रंथ कियो चाहत विदित ॥ ६ ॥

:o:

:o:

:o:

शिवप्रसन्न नृप है तहाँ सो प्रोत्साहन कीन ।
अलंकार रचना करो जो अल्प श्रम लीन ॥११॥

:o:

:o:

:o:

नृप धानी होला नगर सोहत अति अभिराम ।
चारि वरण आश्रम तहाँ बिलसत आठौ याम ॥१७॥

:o:

:o:

:o:

कंज से मुरभि औ चप से अंग छवि पद्मिनी अमी सो वयन जानो ।
नाचिबो चारु अरु चाउरी गाइबो चित्रिणी चित्त की हारिणी मानो ।
पातुरी देह अरु आतुरी केलि मो सधिनी कर्कसा कूर सानो ।
पीन है देह तनु नाहि कारण कछू हस्तिनी कीर्ति तरु कान्ति षानो ॥४४॥

अंत—शास्त्र चमत्कृत चातुरी चद्रकला कर धार ।

हौ तयापि आज्ञा लिए कछु नृभाषा चार ॥११२॥

व्योम चंद्र नवभूमि मित सवत कार्तिक माह ।

शुक्ल सप्तमी मे कियो ग्रंथ पूर्ण नृप चाह ॥११३॥

इति श्री सकल सामंत चक्रवर्ति चूडामणि दिल्लीश्वराकब्बर साहदत्तप्रतिष्ठ चौधुरी
नरेंद्र शिवप्रसन्न सिंह प्रोत्साहित सुकुलीपनामक देवीदत्त विरचितेऽलंकार दम्पणेऽलंकार निरूपक-
स्तुनीधोलासस्समाप्तोयं ग्रंथः ॥ सम्बत् १९१० ॥ कालिकार्ये नमः ॥

॥ विषय—अलंकार वर्णन । इसमे तीन अध्याय (उल्लास) है ।

रचनाकाल

० १ ६ १

व्योम चंद्र नव भूमि मित सवत कार्तिक माह ।

शुक्ल सप्तमी मे कियो ग्रंथ पूर्ण नृप चाह ॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खडित है । दूसरे अध्याय के सब पत्रे लुप्त हो गए हैं ।

संख्या १६४. रचयिता—देवीदास, कागज—देशी, पत्र—३, आकार— $७\frac{1}{4} \times ६\frac{3}{4}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—कैथी, लिपिकाल—स० १९२३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री युत् भोलानाथ जी, उप० भोरेलाल, ज्योतिपी, ग्राम व पोस्ट—धाता, जिला—फतेहपुर ।

आदि—कजानाम साहेव देवीदास क लीष ॥ तेहराह जरती ॥ गुरह जरती ॥ भोहीबक सीषत ॥ चौगुन अरज अमद ॥ गुरजमंद ॥ कुमती दरमा अन है ॥ इमान कहसु ॥ अपनीहय अदोसर दील की सकत ॥ मेहरा भूप को दआ ॥

:०:

:०:

:०:

अंत—कुरवन जाने देवीदास अपनी काआ करखो कइ तरीष बंदगी कहे ।

एकनाम अलाह अलपरोज अषना चहो ॥

॥ समपुरन कजानाम ॥

विषय—ज्ञानोपदेश ।

संख्या १६५ सोमवज वजावली, रचयिता,—देवीदास, कागज—देशी, पत्र—८, आकार— $१०\frac{1}{2} \times ५\frac{3}{4}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८३१ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि—श्रीकृष्णाय नमः अथ सोमवंश की वंशावली वर्णनं

॥ दोहा ॥

गुर गनेस पग वंदि कं प्रणमि सारदा माइ ।
सोम वस वरनन करौं सवकौं सरस सुनाइ ॥ १ ॥
प्रथम देवि हरिवस कूँ श्री भागवत निहारि ।
निरपि भविष्य पुराँन कौ तव ए कहे विचारि ॥ २ ॥
श्री नारायण प्रथम ही जलसाई भगवान ।
तिनके इछा ऊपजी रच्यौ जगत उनमान ॥ ३ ॥
नारायण की नाभि तै उपज्यो कमल उदार ।
ता ऊपर ब्रह्मा भए च्यारि वदन आकार ॥ ४ ॥

॥ छदपाधरो ॥

तिनके मरीचि रिषिराइ हूव । तिनकेँ जु अत्रि भए सरस सूव ॥
भए अत्रिदेव के सोमदेव । भए सोमदेव के बृध अभव ॥ ५ ॥
तिनके पुरुरवा गुणनिर्धान । अजु भये आइ तिनके सुजान ॥
अजु के भये जु नृप नहुपराइ । ते सवनि इंद्र कौन बनाइ ॥ ६ ॥
अंत—भये छन्नपाल के धर्मपाल । ते दानि जानि अरु प्रजापाल ॥
भये धर्मपाल के रतन पूत । ते भाँति भाँति विधि विधि सपूत ॥ ८ ॥
कुलि जुगहि भाँक भयौ महादानि । गुनगीत राग कौं महार्जानि ॥
घोरे दिये सु कँऊ हजार । मुहरें दई सु कँई हजार ॥ ७ ॥

:०:

:०:

:०:

जापर रूपाल श्री नदलाल । या रतनपाल के रीछपाल ।
गुन गन अपार वरनै सु कौन । सवकौ सहाउ सब गुननि भौन ॥ ८ ॥
राजाधिराज करौ अटलराज । तौलौ विरचि सिव सुर समाज ॥
तिहिँ घर कुमार श्री कुँवरपाल । जिनिकेँ नपाल गोपाल पाल ॥ ९ ॥

जदु वंस सहित करियौ सुकेलि । दिन दिन प्रताप बढ़ियौ सुवेलि ॥
दोउ पिता पुत्र कौ यह असीस । देवी कहै सु जीऊ लष वरीस ॥८२॥

इति श्री देवीदास कृत सोमवंस की वंशावली समाप्तम् ॥१॥ लिखितं मिश्र कनही राम-
गढ़ भरथपुर मध्ये स्वात्मज पठनार्थं सवत् १८३१ मितौ फाल्गुन शुदि २ रविवासरै रामः
रामः ॥ रामः

विषय—सोमवश के राजाओं की वंशावली वर्णन की गई है । (रचयिता करौली के
राजा रतनपाल के आश्रित थे जो सोमवश के राजा थे) ।

वंशावली इस प्रकार है —

नारायण	सकु
ब्रह्मा	चित्ररथ
मरीचि	ससि विद
अत्रि	पृथुश्रवा
सोमदेव	उग्रसेन
वृध	धर्मराज
पुरुरवा	रुचिकराज
अजु	जयस्तभ
नहुष	विकुभ
जजाति (ययाति)	ऋथकराज
जदु	विकुति
क्रोष्ट	जुद्धदेव
परजानिवास	नीलदेव
सातिवास	दसअर्घ
अग्नितेज	व्योम

विकृति
 |
 भीमरत्थ
 |
 रतनरत्थ
 |
 सकुनि
 |
 करमसेनु
 |
 देवरात
 |
 देवछत्र
 |
 मधु
 |
 कुँवरराज
 |
 अनु
 |
 आपु
 |
 श्रुति
 |
 अंधकुभ
 |
 भगवान
 |
 विदरथ
 |
 हरदीकराई
 |
 देवमीढ
 |
 सूरसेन
 |
 वसुदेव
 |
 श्रीकृष्ण
 |
 प्रद्युम्न

अनिरुद्ध
 |
 वज्रनाभ
 |
 सुबाहु
 |
 सतसेन
 |
 रविसेन
 |
 विसाल
 |
 सुमन्न
 |
 सुखेन
 |
 त्रिसेन
 |
 श्रुतायु
 |
 सुचायु
 |
 छेमधर्म
 |
 रुचिकराई (इनके समय में कलियुग आया ।
 व्यास देवजी लोप हुए । अपने शिष्य
 वैशंपायन को सब पुराण दिए और
 कृष्ण धरा का वर्णन करने का उप-
 देश किया) ।
 |
 सुवृतराई
 |
 मुश्रम
 |
 सुमतिराई
 |
 दृढमेन
 |
 सुवल
 |
 सिवजीत

विश्वजीत

रिपुजीत

हैहयकुमार

धर्मपूत

कालजीत

सबलराइ

भूरिश्रवा

लोकजीत

कुत्तिभोज (साहनजीत बादशाही को जीतने वाले)

भद्रसेन

सुमत

धनेस

सुनाभि

दिनेस

छेमधर्म

छन्नधर्म

वेदधर्म

वीरसारि

समिहिजए

चद्रसेन

सहससेन

वीरबाहु

अक्रवाहु

भीमसेन

उग्रसेन

धर्ममूर्ति

देवदत्त

देवानीक

रुचि अपार

विश्वकेतु

विवस्वान

वीरबाहु

व्रजबाहु

अरिर्मर्द

अरिकलु

लोकेस

कुसविद

ससिविद

सग्रामजीत

जैदप्पराई

हैमंगद

अनंग

नद

विरचि
 |
 नद
 |
 सत्य
 |
 श्रीरग
 |
 रिपुमर्द
 |
 रवितेज (?)
 |
 भद्रसेन
 |
 नदराई (?)
 |
 वीरसेन
 |
 सिधुपाल
 |
 जगतपाल
 |
 नरपालदेव
 |
 सग्रामपाल
 |
 केतुपाल
 |
 भूमिपाल
 |
 तुछपाल
 |
 पाल
 |
 ब्रह्मपाल
 |
 जैदपाल
 |
 विजयपाल (बहुत प्रसिद्ध हुए)
 |
 तिहुनपाल

धर्मपाल
 |
 कुँवरपाल
 |
 अजैपाल
 |
 हरीपाल
 |
 साहनपाल
 |
 प्रथीपाल
 |
 राजपाल
 |
 तिल्लोकपाल
 |
 वापल्लदेव
 |
 आसल्लदेव
 |
 सहसदेव
 |
 घुल्लदेव
 |
 अरजुनदेव
 |
 विक्रमाजीत
 |
 अभयचद
 |
 पृथीराज
 |
 उदयचद
 |
 परतापसुद्र
 |
 चन्द्रसेन (अकबर इनके पास गए)
 |
 भारथीचद
 |
 गुपाल
 |
 द्वारिकादास

मुकुद
—
जगपाल
—
छत्रपाल
—

धर्मपाल
—
रतन
—
रीछपाल
—
कुँवरपाल

संख्या १६६. पहौप प्रकाश (पुष्प प्रकाश, रचयिता—देवेश्वर माथुर, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—७ $\frac{३}{४}$ × ५ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८३६ वि०, विपिकाल—स० १८३६ वि०, प्राप्तस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), क शी नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ पौहौप प्रकास पहौप सिंह प्रति प्रस्तूयते ॥

॥ सोरठा ॥

द्विपत दंत दुत्तिवांन सिंधुर सिंधुरवदन वर ।
उदै भयौ निसि भान सरद मेघ संरुचा समै ॥ १ ॥

॥ छप्पय ॥

सुंडाडंड उडंड उडित दुत्ति मोदिक मंडित ।
वलित ललित लघुचंद भ्रग मदमत्त घुमडित ॥
सिंधुर सिंधुर वदन रदन राजत छविता ।
सरद मेघ संरुचा सुसमय शोभित निशिकंता ॥
सुमिरत 'देवेश्वर' जोरि कर गुन अनत विघनन हरहु ।
मुप चरित पौहौप चाहत कह्यौ ग्रंथ सकल पूरन करहु ॥ २ ॥

००:

००:

००:

॥ दोहा ॥

विघ्न राज अष्टक कह्यौ पौहौप सिंह गुन हेत ।
विघनहरण हित सुष करण कारन काव्य सचेत ॥
ब्रज नरिद्र कौ कुवर प्रताप । ताकौ सिंह बहादुर आप ॥
पौहौप सिंह ताके परगास । तहित किय यह पौहौप प्रकास ॥
इति प्रथमोदल ॥ १ ॥ ॥

मध्य—छंद पारसी कौ नाम बँहैर तवील

बौहीत है आघ पल म्हाकी भुजं वांके विहारी की ।
पियारे सांमरे सुदर निकट सकट विदारी की ॥
अजायब माधुरी मूरति गरायब सांवरी सूरति ।
लटक वरनीन जानै तुज मुकट सुदर उदारी की ॥
वसत जुगराम कहलाए व कलघनस्याम वनि आए ।
अजव अथ कथकथा है नंद के नंदन कुमारी की ॥

००:

००:

००:

अथ प्रीत पावस

॥ दोहा ॥

सजनी सजनोरद निरधि हरधि नचत इत मोर ।
पीब पीब चात्रग रटं चितवत हरि की ओर ॥

॥ सर्वया ॥

सीतल मंद सुगंध समीर सरीर लगै धुनि बोल तुहोपि ।
 भूमि हरी जलदेषि भरी सुधि सरव हरी सुष की गति लोपि ।
 "देवेसुर" आन कहा कहिये चपला चमकै सुमनीं असि ओपि ।
 प्यारी हमारी गुहार लगौ लग आजु घटा घन घोरि कें कोपि ॥
 :०: :०: :०:

भंत—अथराजकुल काव्य प्रस्तूयते ॥ दोहा ॥

अरि कंस वंश भासतु भीयावदन स्यह भुवपाल ।
 हरषिराज ताकौ दयौ ब्रज कौ श्री नदलाल ॥

॥ छप्पे ॥

ब्रज ब्रजेस वदनेश देस दपिन दल दद्विय ।
 तिहि सुजान सुलतान थाण थाणौ थपि लछिय ।
 तिहि भनि अनुज प्रताप तापता वैरि आपदिय ।
 तिहि सुवहाडुर स्यंह सिद्धि परसिद्धि भोज विय ।
 तिहि कुमार कविन कौ कल्प तरु अद्विलवित धरि ध्यान ध्रुव ।
 भनि "देवेसुर" गढ़ वैरिपति पहुप स्यंह अवतार हुव ॥ १ ॥

अथ नग वर्णन

अति पुनीत रवनीक अरुनि सुषमा कौ सागर ।
 सर्व वरण विधि वेद यथा ध्रम परम उजागर ।
 आस पास वन वाग फलित कमलनि कमलाकर ।
 वापी कूप तडाग सरित सरल सति तरल तर ।
 कहि राजहंस कलइंस कुल दुर्ग दीह ब्रजयेस कौ ।
 भनि देवेसुर सुरपुर सम वैरिनग्र पहीपेस कौ ॥
 :०: :०: :०:

॥ दोहा ॥

ताही छिन उत्पनि क्रीय उनमनमतो उपाइ ।
 सिंह सुजान वैठ्यो हुतौ हुतौ परपाटी कौ प्यार ॥
 पिता पिता के नाम के द्वै स्कंद उधारि ।
 वेड हित करिकें करे पौहौप प्रकाश प्रकार ॥
 सिध सुजान सुभ गौर कुल राज स्यह कौ भाय ।
 कहौ क्यौ न विधि पूरवक देवेश्वर हौं जाय ॥
 ठाकुर ठहराई उतै इत अभ्यास उपाउ ।
 देवेसुर सत कविन कौ पौहौप स्यंह कै चाउ ॥
 उठ्यो सुमन अकुलाइ अति सुन्यौं सुजस जसवान ।
 ७० ३० ५० १०
 सतरि तीस पचास दश पायनि पति पति मान ॥
 :०: :०: :०:

॥ चौपाई ॥

इम सुजान मम आइ सुपाइव । गिरा गनेस ध्यान धरि धाइव ॥
 जूक्त उक्त तिन तै तव पाइव । यथा यथा परसंग रचाइव ॥

॥ दोहा ॥

द्विपन देवेसूर कियन जुरति जुगति सों साठि ।
चासुदेव वसुदेव सुत बरसगाठि कौं गाठि ॥

:०:

:०:

:०:

सिंह बहादुर कौ तनय दिल देवे सुर देत ।
पौहौप प्रकाश किय ता पठिबे के हेत ॥ १ ॥
दूजौ पद पद प्रथम पद हितु आकलं आदि ।
वरण वरण व्यौपाइकं कह्यौ सिंह भष साधि ॥ २ ॥
शुक्ल पक्ष तिथि ससि सरव अर्द्ध निसा शनिवार ।
६ ३ ८ १
खंड लोक वसु चंद है सवत तत्वविचार ॥
समझि भष करि भाषियौ भई होय जौ भूलि ।
पे जिनकं वृधि बोध है जिनकौ कह्यौ कबूलि ॥ ४ ॥
अर्जुन विपति सुथान कौ वासी परम सुजान ।
मौज सु मौजीराम की लिखनु भयो परमान ॥ ३५ ॥

॥ चौपाई ॥

ब्रज नरिंद्र कौ कवर प्रताप । ताकौ स्यंह बहावर आप ।
पौहौप स्यंध ताकं परगास । ताहित कीनी पौहौप प्रकाश ॥ ६ ॥
इति श्री अष्ट दल कवल पौहौप प्रकास सपूर्ण ॥ १ ॥

भजं सौ पुस्तक देषि कं तैसी लिप्यौ सवारि ।
कवि पंडित सुजान नर लीजौ चूक सुधारि ॥

शुभं संवत् १८३६ शा १७०४ वर्षे माघ शुदी ११ वृध वासरे लिषत मिश्र षुवराम गढ़
भरयपुर मध्ये गोपाल गढ़े शुभं ।

विषय—सारदा स्तुति, श्रीकृष्ण और श्री राधिका का गुण वर्णन, प्रीतपावस, वसत-
वर्णन, राजकुल वर्णन, नगरवर्णन आदि विषयो पर कविता की गई है ।

ग्रथ मे 'दल' नाम से आठ अध्याय है जिनके नाम नीचे दिए जाते हैं —

१. प्रथम दल—मंगलाचरण तथा आश्रयदाता का वर्णन	पत्र १ से २ तक
२. द्वितीय दल (पापुरी)—सारदा स्तुति	पत्र २ से ६ तक
३. तृतीय दल—श्रीकृष्ण गुण वर्णन	पत्र ६ से ८ तक
४. चतुर्थ दल—श्री राधा गुण वर्णन या मानमजरी	पत्र ८ से १० तक
५. पंचम दल—प्रीत पावस वर्णन	पत्र १० से ११ तक
६. षष्ठ दल—वसत वर्णन	पत्र ११ से १३ तक
७. सप्तम दल—राजकुल वर्णन तथा ग्रथ निर्माण कारण वर्णन	पत्र १३ से १५ तक
८. अष्टम दल—श्री कृष्ण विषयक काव्य	पत्र १५ से १६ तक

रचनाकाल

शुक्ल पक्ष तिथि ससि सख अर्द्ध निसा सनिवार ।

६ ३ ८ १

खंड लोके वसु चंद है संवत तत्व विचार ॥ ३ ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल, लिपिकाल एक ही स० १८३६ है ।

संख्या १६७ द्वारिकादास की बानी, रचयिता—द्वारिकादास “जन”, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—८ ६ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५७, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० वशिष्ठ उपाध्याय, स्थान ६ पोस्ट—चिरैयाकोट, जिला—आजमगढ़ ।

आदि— :०: :०: :०:

भूलि गै तन वन (? मन) की सुधिवाल ॥ ३ ॥

वजति रसमौहरि और सितार । झूमक पग घुघुरन की झनकार ॥

॥ दोहा ॥

झाझ मृदंग सो वासुडी कि वाजत येकै तार ।

रीझि रहत घनस्याम निरधि छवि निरुवारत है हार ॥

चलै सब चंचलता की चाल ॥ ४ ॥

छकी सब छवि में वृज वाला । मगन भई चितवनि बेहाला ॥

॥ दोहा ॥

द्वारिका दास आस सत गुरु की भागत है यह दान ।

स्यामा स्याम रहस लीला छवि रहै सदा उर ध्यान ॥

मिटै सब दुष दुरमति जजाल ॥ ५ ॥

मध्य—अथरेखतासब्द लिख्यते

मन के वहे से क्या भयौ जाके नाम है आधार ।

तकु नेक प्यारे गगन मे जह लैनि दिन श्रमृत भरै ।

त्रिकुटी महल के द्वार मे नित सत जह सुमिरण करै ॥ १ ॥

चित्त पैचु सूरति स्वांस को जह जोति वह झलकति अहै ।

धुनि सुनि अनाहद नाद की मन मगन होय देषत रहै ॥ २ ॥

गहि डोरि सोहग सरा की तव उठति रारंकार है ।

धिरकी धुली दिशि दाहिनी छवि लषत अपरंपार है ॥ ३ ॥

दल सहस को थक केवल है यह रूप पुषं विदेह को ।

लधि मितत सब जजाल आवागवन छटो देह को ॥ ४ ॥

जन द्वारिका मत दीन सतगुरु लीन करि निजु चरन मे ।

सतसंग भक्ति प्रसग मे मन रहै नित आनंद मे ॥ ५ ॥ ६ ॥ १ ॥

:०:

:०:

:०:

अद्धासब्द

सुति से नैना फेरि लगावो ।

नाभी मूल स्वास के मारग केवल कली विकसावो ॥ १ ॥

पवन डोरि गहि चढी अधर का विन रस नार

—अपूर्ण

:०:

:०:

:०:

विषय—भक्ति और विनयपूर्ण पदो का संग्रह ।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख खडित है । आरंभ मे पहला तथा अंत मे ग्यारहवें पत्र के पश्चात् के पत्रे नहीं है । रचनाकाल और लिपिकाल भी अप्राप्त है ।

संख्या १६८. सात स्वरूप के कीर्तन, रचयिता—गो० श्री द्वारकेश जी, स्थान—काँकरोली, कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—५ × ६। इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० ४३, पु० सं० ३७।

आदि—श्रीकृष्णाभ्या नमः ॥ अथ कीर्तन श्री जी सात स्वरूपन के प्रथम श्रीजी को राग विलावल ।

देखो हो मैं श्याम स्वरूप ।
वाम भुजा ऊंचे कर गिरधर दाहन भुज कट धरे अनूप ॥
बाध मुष्टि अगुष्ट दिखावत सनमुख दृष्ट सुहाये ।
चर्ण कमल दोऊ समधर कँ कुंज द्वार मन लाये ।
अति रहस्य कुंजन की लीला हिय मे स्मरन कीजिये ।
द्वारकेश मन वचन अगोचर चर्ण कमल रज लीजे ॥ १ ॥

मध्य—राग विलावल ।

देखो अद्भुत रूप सखी री सूरसुता के साथ ।
विवस्था देख सुदरता कटि कर व तन रहगे दोऊ हाथ ।
जाते चित्र गौर शाव रत्न उपमा कहन न आवे गाय ।
द्वारकेश प्रभु या विधि देखो मय तो कर लीयो जन्म सनाय ॥ ४ ॥

अंत—राग कानरो ।

बेरु बजात सुंदर वदन सुनत सभे आई तेह औसर ।

पूछत है छा दे कि उस दन धर्म छोड निज धर्म धर्म कौये है ।

अब उगौउ भये नंद नंदन द्वारकेश प्रभु हम सब जानत न्याय कहत मनमथ मन कदन ॥ ८ ॥

विषय—श्रीनाथ जी, मथुरेश जी, विठ्ठल नाथ जी, द्वारकाधीश जी, गोकुल चद्रमा जी, गोकुलनाथ जी, मदनमोहन जी, इन सात भगवत्स्वरूपो का वर्णन है। द्वारिकेश जी सप्रदाय के उद्भूट आचार्य थे। ये वल्लभाचार्य के वंशज थे। अत इनके रचित पदो मे साप्रदायिक सिद्धांतो का प्रामाणिक निरूपण होता है।

संख्या १६९. भविष्यदत्त कथा, रचयिता—धनपाल, स्थान—माएसर (? गुजरात), कागज—देशी, प्राचीन, पत्र—२, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि.....तिलउ दे संतर ।

तेण वहह तेण सहए सघइकज्जइ । यहु सिभंति अजु निखज्जइ ।
तांणि सुणो विसरुअए वुच्चइ । आय हो सरल सहाउण सुच्चइ ।
एहु महतु पुतु तव वष हो । सा मिउ धण हो पउर माहव हो ।
सहु जराणि ए गेह हो सीसारिउ । अछइ कढकदंतु भरो खारिउ ।

॥ घत्ता ॥

जइ रंजो...पहु निम्मल गुणो ह । जणणि वयण हिय वइ धरइ ।
तो पहरे विकस्य महा विसेण । अम्हह पडि परिहउ करइ ॥ १५ ॥

∴∴

∴∴

∴∴

अंत—

॥ घत्ता ॥

आत्तिगिउ लेवि राए नेह निरंतरेण । अद्धासएवु दिपु सुघसरोह गुणंतरेण ॥६॥

पुष्पु पुष्पु पहु दरिसइ गियलोय हो । अहो नवल्लु पडिवाइउ जोय हो ।
एहु सुघरावइ पुत्तु महं तउ । कमल हे तरणउ सुद्धु गुणवंत्तउ ॥
:०: :०: :०:

तोपि.री विभव अवहोएवि । थियरिण दुहिय हे वयणु पलाएवि ।
॥ घत्ता ॥

तहि काले सुमित्त.
:०: :०: :०:

—अपूर्ण

विषय—अपभ्रंश भाषा का काव्य है जिसमें भविष्यदत्त की कथा का वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खडित है । केवल सख्या ८ और ७२ के दो पत्रे उपलब्ध हैं । अपूर्ण होने से न तो रचनाकाल और लिपिकाल का ही पता चलता है और न रचयिता का ही, पर ग्रंथ “भविष्यदत्त कथा” के नाम से छप गया है । श्री निरीक्षक जी (प० विश्वनाथप्रसाद मिश्र) के यहाँ इसकी छपी प्रति है । ग्रंथ अपभ्रंश भाषा में है जो हिंदी का अति प्राचीन रूप है । इस दृष्टि से प्रस्तुत ग्रंथ महत्वपूर्ण है । छपी प्रति में रचयिता का नाम धनपाल है । राहुल साकृत्यायन कृत “हिंदी काव्यधारा” के पृष्ठ २६० पर धनपाल का उल्लेख है जिसके अनुसार वह सवत् १००० ई० में वर्तमान माएसर (गुजरात ?) देश का रहने वाला धाकड़ वैश्य था । गायकवाड़ औरिएटल सीरीअ से ग्रंथ छप गया है ।

संख्या १७०क. चेतावनी, रचयिता—धरनीदास, कागज—देशी, पत्र—७, आकार—
७ $\frac{1}{2}$ × ३ $\frac{1}{2}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन,
पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८४१, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीपचारिणी सभा,
वाराणसी, (ग्रंथदाता—प० वासुदेव तिवारी, ग्राम—भीरा, पो०—मुहम्मदाबाद, जिला—आजमगढ़) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री रामचंद्राय नमः ॥

ॐ जै जै उचारो धरनि ध्यान धारो ।
तजो मन वेकारो भजो प्रान प्यारो ॥
महाराज राजा भगति भाव काजा ।
जवहि गर्भ वासा कियो मानुषासा ॥
वनो माथ हाथा चन्द्रन पीहि साथ ।
लगे पेट गृवा अहुठ हाथ सिवा ॥
रकत मासु हडि त्वचा रोम गडि ।
नयन जिमि नाशा श्रवन इद्रि आशा ॥
बोम्कि अंत जेजा फूफेशा करेजा ।
कियो दसो द्वारा पवन प्रान धारा ॥
तहा प्रान प्यारा दियो आनि चारा ।
मलोमूत्र किडा अग्नि आच पीडा ॥
वघो अष्ट गाता अधोमुष भूलाता ।
भयो कष्ट भारी कहता पुकारि ॥
नरक ते निकारो मैं वंदा तिहारो ।
करो भक्ति पेसि कहो आजु जैसी ॥

अंत—

सुषदेव जयदेव सोभा सोहाई ।
रयदास रोना धना धिरताई ॥

अपर नाम अधम तजि पातिसाहि ।
 डुनि मे प्रगट प्रेम ताको शराहि ॥
 फकिरि करे सोइ साचो अकिदा ।
 मसाले रहेमा वजिदा फरिदा ॥
 निके नानि के चद्वभुज चित्त लाया ।
 भजि लोक लाजा तजि मोह माया ॥
 विराजो जहा ले भगत लोक माहि ।
 कहा ले कहो सत को अत नाहि ॥
 सकल सत दाया चेतावनि चेताया ।
 "धरनिदास" आया सरन राम राया ॥

इति श्री धरनिदास कृते चेतावनी पण्डते सुनते गुनते मोक्ष मुक्ति फल लभ्यते
 श्री नारायण गुरु गोविन्द के चर्णारविन्द पादका नमस्ते नमो नम सवत् १८४१ ॥ श्रीति
 श्रावण कृष्ण तृतीया या महर्मास पुस्तक समाप्तक ॥

विषय—ज्ञानोपदेश वर्णन ।

संख्या १७०ख. "निर्गुन लीला", रचयिता—धरनीदास, कागज—देशी, पत्र—३,
 आकार—९ $\frac{३}{४}$ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३, पूर्ण, रूप—
 प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—सवत् १९१० वि०, प्राप्तस्थान—५० भागवत
 तिवारी, ग्राम—कुरथा, पो०—पीरनगर (गोरा बाजार), जिला—गाजीपुर ।

आदि—श्री गणेशआए नम्ह श्री सोस्ते नम्ह श्री सुभ देवता नम्ह श्री हनुमान जीब
 सहाइ ।

करता राम कौ सोई जुग जुग दूजा अवर न कोइ ॥

॥ चौपाई ॥

घर एक जो सीरिजनी हारा । उतरे हरिजन सो बनिजारा ॥
 ता घर ब्रह्म बीस्न महेसा ॥ रज तम सत तीनिउ कर भेसा ॥

॥ चौपाई ॥

ताघर पाचव तत्व समानी ॥ गुरु परसाद भेद कछु जानी ॥
 धरती नीर अग्नी अव वाई ॥ पचए आइ अकास समानी ॥
 पाचव को परक्रीत पचीसा ॥ समुक्तं त्रीया करहि जगदीसा ॥

अंत—

भूए मुकुती समन्ह के होइ ॥ जीवन मुकुती संत जन जोइ ॥
 ऐसो सवद करो निरुवारा ॥ धरनी सो गुरुदेव हमारा ॥
 परम जान समुक्तं समुक्तावै ॥ धरनी सोइ परम पद पावै ॥

इति श्री निरगुन लीला संपूरन ॥

विषय—निर्गुण ब्रह्म का वर्णन और सतमतानुसार ज्ञानोपदेश ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ मे केवल तीन पत्रे है । रचयिता धरनीदास हैं । रचनाकाल
 ज्ञात नहीं । लिपिकाल स० १९१० वि० इससे समुक्त अन्य ग्रथ के आधार पर है ।

रचयिता के एक शिष्य, सरवेश्वर दास ने इस ग्रथ की प्रतिलिपि की है ;

संख्या १७१. धरमीनामा, रचयिता—धरमादास, कागज—देशी, पत्र—१४,
 आकार—४ $\frac{३}{४}$ × ३ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२२, खडित,
 रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८६६, प्राप्तस्थान—काशी नागरी-
 प्रचारिणी सभा, वाराणसी । (ग्रथदाता—५० रामचरण दुबे, ग्राम—वसगीत, पोस्ट—बडेसर,
 जिला—आजमगढ़) ।

आदि— :०:

:०:

:०:

:०:

माई बाप भाई सब देपहि घरी घरी छीपही वाही हो ।
 वरवस लं डोला बँटारेन्हो हेरही धुप न छाही हो ।
 गावन्ह की सब सषी सहेली सुनत मीलन उठी धाई हो ।
 दीन दास छाडी जाहु पीव धनी के फीरी पाछे हम आइव हो ।
 मन दस सीध बीस गज लुगा स्यामा करं न पावा हो ।
 नही दीन बीदा न लगन सो धावा वड़े अचानक आवा हो ।
 जो कछु वार अहै नँहर कर सो एकी नहीं कीन्हा हो ।
 चुरी हाथन तरकी कानन को सग भाति पठाइव हो ।
 देखी लोग अहै सासुर कर कवन वडपन पाईव हो ।
 ऐसी भाति बुझावो पीयके पीय वाते नहीं बुझा हो ।
 काहुक कहा सुना नही माने करे अपाना सुका हो ॥

मध्य—

नही आरती नही संध्या तरपन एक धरम वपानी हो ।
 नीरंकार नीर्गुन नीरमाभा पारब्रह्म पहीचानी हो ।
 नही अचवो नही भुप लगावै बीना नहाने षावो हो ।
 गंगाराम राम के पीछे धरमादास कहावो हो ।
 मटीका एक बना मँजुसा तामो बोलै तोता हो ।
 उस तोते को बोली पाती साहेव नाम न होता हो ।

:०:

:०:

:०:

श्रंत—

एक दीली एक वंग सजावे एक आगरा पभाना हो ।
 एक लका एक मानीक गावँ एक मारँ मुलताना हो ।
 काछी पटी सहर मानीकपुर तहा भया है धरमा हो ।
 आने वाव वठाया साहेव आया बीबीपुर मा हो ।
 राम एक धरी ग्यान आपने सीर मो दाग दगाया हो ।
 वीन्ह वीनु कोई वात न पुछै वडा परंधा पाआ हो ।
 है धासी का बेटा धरमा गंगाराम क चेला हो ।
 नाहे माई बाप कह षाएसी आपुही रहा अकेला हो ।
 जँसा धरच महीना तँसा बीना उजुर पहुचावँ हो ।

:०:

:०:

:०:

भला औ बुरा एक कै जाने सो मेरा दीलजोई हो ।
 षाक सवारी पाक की ताहै नाम धरावा धरमा हो ।
 गंगाराम गुरु डुआ दीआ है तव पावा कछु मरमा हो ।

इति श्री धरमीनामा कथा सपुरन जो देषा सो लीषा मम दोषी न दीयते संमत १८६६
 मीती भादो वदी ८ वार सुकँ (? शुक्र) वार कह पोथी लीषा रामदास काएथ मोकाम मजनाट-
 भंजन श्रीराम जी ।

विषय—ज्ञानोपदेश वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ का प्रथम पद नहीं है । रचनाकाल का उल्लेख नहीं । लिपिकाल
 सवत् १८६६ है ।

संख्या १७२क. महाभारत (भीष्मपर्व, द्रोणपर्व), रचयिता—धर्मदास, निवासस्थान—
मऊ ग्राम, ताल्लुका—डहार, जिला—रीवाँ, कागज—आधुनिक, पत्र—३४, आकार—६३ ×
६३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३०१, खडित, रूप—प्र.च.न,
पत्र, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६६४ वि०, लिपिकाल—स० १६५० वि०, प्राप्तिस्थान
—श्री जनार्दन प्रसाद जी एम० ए०, एल० टी०, ग्राम—कठौली, पोस्ट—मैजा रोड, जिला—इलाहा-
बाद ।

आदि.....

तेही पाछे रथ भीषम केरी । कौरी सब रहे जेहि घेरी ॥
तेही पाछे कुरव नरनाहा । आयुध लोन्हे पहिरि सनाहा ॥
रतन जडित रथ होइ उजियारा । देव सहित जनु सोह पहारा ॥

॥ दोहा ॥

कुरव केर महाबल सैन समुद्र उलथान ।
आपनी अनी जानि लघु पडुपुत्र अकुलान ॥५ ॥
:०: :०: :०:

“धर्मदास” एहि भातिन प्रथमो देवस सिरान ।

डेरा परे दुश्रौ दल घन धूमरे निशान ॥१५ ॥

इति श्री महाभारतये भीषम पर्व धर्मदास कृत प्रथमोध्याय ॥ १ ॥

अंत—

॥ दोहा ॥

भीषम कर स्वभाव सुनि धर्म सुनाई नीति ।
सब कह जानि परा अस मरन कीन परतीत ॥ २८ ॥
सबही कोन्ह प्रदक्षिण आई । टेकि चरन पुनि विदा कराई ॥ ;
भीषम कह राखे रखवारा । डेरन बहुरे सब भुआरा ॥
कौरव पंडव दल बिलगाने । वसन सनाह श्रोणितन साने ॥
कौरी करुणा करत सिधारे । हिय मह राम मौन मन मारे ॥

॥ दोहा ॥

छंडत सांस सेष सम द्रोण दया अकुलान ।
निशा बंठि मत ठानत कुरव कर्णहि आनि ॥२९ ॥
:०: :०: :०:

—अपूर्ण

बिषय—महाभारत के भीष्म और द्रोण पर्व के अनुवाद ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ आदि अंत से खडित है । रचनाकाल और लिपिकाल का पता नहीं चलता । जिस गाँव में यह विवरण लिया गया है वहाँ ग्रथ की और प्रतियाँ बतलायी गई हैं, पर बहुत प्रयत्न करने पर भी वे देखने को न मिली सकी । प्रस्तुत प्रति उन्हीं से नकल की गई है । नकल करने वाले ग्रथस्वामी के पिता श्री रूपनारायण जी शर्मा हैं ।

जब मैं (अन्वेषक) गाँव छोड़कर कुछ दूर आ गया तब प्रस्तुत ग्रथ स्वामी श्री जनार्दन प्रसाद शर्मा साइकिल दौड़ाते हुए मेरे पास आए और मुझे वह प्रति दिखाई जो गाँव में थी और मुझे देखने को न मिल सकी थी । उस प्रति को देखने से पता चला कि ग्रथ की रचना स० १६६४ वि० में हुई । पश्चात् ‘कर्ण पर्व’ की रचना रचयिता के पुत्र श्रीपति ने स० १७१९ में की जब धर्मदास वृद्धावस्था में पहुँच कर अशक्त हो गए थे । ग्रथ उस समय सरस्वती दृष्टि में देखा गया था । परंतु उससे कई बातों की जनाकारी मिलने की संभावना हुई । कवि परिचय में गग, दलपति एवं श्रीपति के नाम आए हैं । गग को प्रसिद्ध महाकवि कहा गया है । दलपति और

श्रोपति की फुटकर कविताएँ मिलती हैं, पर उनका वृत्त नहीं मिलता । ये सब रचयिता के ही पुत्र थे ।

इस प्रति में केवल 'भीष्म' और 'द्रोण' पर्व हैं जिनके आदि, मध्य और अंत के कुछ उद्धरण यहाँ दिए जाते हैं —

भीष्म पर्व

आदि—श्री गणेशायनमः । अथ महाभारत भीष्म पर्व धर्मदास कृत लिख्यते ॥

भीष्म पर्व केर परवेसा । डेरहि आए सब नरेसा
भीष्म के सिर बांधेउ पाटा । सौपेउ आनि रथन क ठाटा
चदन कुसुम आनि नरनाहा । प्रभव प्रभजन पूंजी बाहा
दस दिन कर वीरा नृप दीन्हा । आदर सो उठि भीष्म लीन्हा
राय के हृदय अनंद बढ़ावा । रथ चढि सख सरोख वजावा
वीरन सबन कहा समुझाई । स्वर्ग क द्वार नियर भँ आई
कर्णहि पाछे घाले राजा । भा दल दमक मारु आवाजा
है अनत ममस्त समूहा । महारथी चढि दिसन अरुहा
पूरब दिसा सैन भँ ठाढी । मानहु चली जलानिधि बाढी

॥ दोहा ॥

चारिहु अग साजि दल रन कर कीन अगोर ।
छुपे अकास मजीठी दान पितामह केर ।

मध्य—

वेधे दान विषम तन वीर परे मुरुछाई
भीष्म सिंह ससा सरिस संमुख सहा न जाइ
असमसान रन वाजे भारी । जे गंराछस करे फेकारी
जोगिनि रक्त पियै गिव लागी । गावहि भेद भाति अनुरागी
गिधिनि अत विहर लै पाहों । बँठी अधान स्वान गुरुराही
प्रेत पिसाच कहों कत वरनी । रुधिर की धार धोइ गे धरनी
देखु देखु कृष्ण कहा मुष मोरी । अर्जुन पंज झूठि भँ तोरी
मारु मारु भीष्म कहं आरत सैन तोहारि
बूढ़े कर बल देपहू करत भयान्नक मारि

अंत—

भरि भारत अरजुन तजि चारी । तेन्है समर नहि बधवेउ भारी
कीन्ह प्रदिछन विदा कराई । डेरन चले कर्न सिर नाई
भीष्म के तन पुनि भँ पीरा । मुँदि नैन दिढ धरे सरीरा
बोहि नसि भीष्म के उत्तजोगा । जो चित लाइ सुनै सब लोगा
तेन्ह जनु तीर्थ अठरहों कीन्हा । तेन्ह जनु दान असंपन दीना
तेन्ह जनु धर्म दया प्रतिपारी । तेन्ह पूरन जनु भए मुरारी
नवधा भक्ति भजन तँ पावा । भारत कथा चित्त जेन्ह लावा,
कोटि जग्य कृत कर्म कराए । सो फल भारत सुनतँ पाए
साथ पुरंदर निज हरि धामा । जहाँ देवता है अभिरामा
तीनि लोक जस गावहि सुर नर मुनि गंधर्व ।
धर्मदास एहि भातिन भाषा भीष्म पर्व ॥ २६४

इति श्री महाभारथे भीषम पर्व भीषम सरसेज्य परमो नाम दसमो अध्याय १० इति श्री कथा सपुरन जो प्रति देषा सो लिषा मम दोष न दीवते सवत् १९५० विक्रमी मिति एगहन बदी ४ सन १३०१ फसली व-सन १८६३ ईस्वी हस्ताक्षर वृज भगल सिंह कठौली ॥

आदि—श्री गणेशाय नमः । श्री कथा महाभारथ द्रोन पर्व लिख्यते ॥

जैहि दिन भारथ भीषम मारे । ताही देवस होतु भिनुसारे
विहरी रैन तिमिर गै फूटी । ललित लपट दिनएर कं छूटी
जागत चिंता उदधि अथाहा । भारी भं समान मन माहां
राजं सबही दोष बिलोई । अब सग्राम समर्थ न कोई
कुरवं करन समुक्ति भुज भारी । कठिन काल वंधु हितकारी
भंकर सरन हरन मन आवा । करन करन सबही गोहरावा

॥ दोहा ॥

वासुदेव देवन्ह कहं जैसे सदा सहाय
ऐसेह आजु करन रन नाहिन आन उपाय

॥ दोहा ॥

चेदिराज रन जुझे सहित सतग मतग
दारुन द्रोण दवानल जरहि जुझार पतग
जुरासिधु सुत मगह क राऊ । नृप सहदेव ताहि कर नाऊ
सो करि कोह तजत सर धावा । अतरहि द्रोण निपाति षसावा
दल चतुरंग भारि महि पारा । षलल षेत भय लाल अपारा

॥ दोहा ॥

बाए दहिने सन्मुख सब दर गये सिराइ
मानहु द्रोण धरिग रन मह पंठे धाई

अंत—

तेन्हकर तन महाकवि धर्मदास कविराज
चंद्रमान तेनके कुल बरनत लागत लाज
विस्तुं भक्त पुरुषन्ह चलि आई । जप तप नेम धर्म अधिकाई
पडित गुनकर पारव पारा । भाषा मह कवि रीति रसारा
मृथा वाद दोष कह डरऊ । तेहि बरे कवीत नहि करऊ
अपने कहे न फिरती होई । परमुख अस्तुति सोभा सोई
अपने मुख कर धान समाई । इन्द्रो कहै हरू होइ जाई
बिना कहै घटि जानै लोगा । उदै क आपर जीभि जमोगा
हरिहर देव हरिहि लं आया । चन्द्रमान तेन्ह के कुल जाया
तेन के वंस धर्म कर धामा । धर्मदास कविराज क नामा

॥ दोहा ॥

तासु तन कुल मंडन कवि सेषर कवि गंग
जेन्हके भाष बिलास कं बानी तरल तरग

इति श्री महाभारथे द्रोणपर्वनी द्रोण वधनो नाम पंचमो अध्याये ५ इति श्री द्रोण पर्व संपूर्ण जो प्रति देषा सो लिषा मम दोष न दीवते सम्बत १९५० विक्रमी मिति एगहन सुदी ११ सन १३०१ फसली वा सन १८६३ ईस्वी हस्ताक्षर वृज भगल सिंह साकीन कठौली जिला इलाहाबाद प्रगना खैरागढ़ डाकखाना मेजा रोड ।

॥ दोहा ॥

द्रोण पर्व एहि भातिन तीनि पहर दिन चारि
धर्मदास कवि वरना कुर पडव कं मारि
श्री नरसिंह कृपा भं जवहीं । वर्ष पचीस केर कवि तबहीं
संवत विक्रम भूपक भंऊ । सौरह सौ औ चौसठि गंऊ
जह लागि उगवं अथवं भानां । ताहि सलाम सकल सुभ नाना
महि वधेल विक्रम कं साके । उपमा सच्चु आहि नहि जाके
मउ नगर तसा देस उहारा । वासुदेव जहां भुम्य भुवारा
रितु वसत औ माधव मासा । पुन्य देवस तंह कीन्ह प्रगासा
भारथ सुने तवन फल होई । पछे वरनि कहा सब कोई

संख्या १७२ख. महाभारत (सभपर्व, वनपर्व और उद्योगपर्व), रचयिता—धर्मदास, निवासस्थान—ग्राम—देस, उहार—वधेलखड, जि०—मऊ, कागज—देशी, पत्र—२७६, आकार— $६\frac{1}{2} \times ६$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५८८, खडित (उद्योग पर्व के अंत में संख्या १०६ का पत्र नहीं है), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी और कंथी, रचना-काल—स० १७११ वि०, लिपिकाल—संवत् १८७७ वि०, प्राप्तिस्थान—ठा० रघुनाथ सिंह, ठा० शिववरन सिंह, ठा० जगवहादुर सिंह, ग्राम—समोगरा, पोस्ट—नैनी, जिला—इलाहाबाद ।

आ द—श्री राम ॥ पर्व दुसर ॥ २ ॥ श्री गनेसायनमः कथा समापवा ॥

॥ सौरठा ॥

बंदौ पवन कुमार फलवन पावक ग्यान घन ।

जासु हूदें आगार बसहि राम सीआ चापधर ॥ १ ॥

:o:

:o:

:o:

प्रथमहि बंदौ दिनमनि देवा । आदि सिस्टि जाकह जग सेवा ॥

जेकरे उदें राति दिन होई । त्रीभुवन का जग भजें सब कोई ॥

सध्या प्रातः पुनि कइ रासी । रिषि सब करहि वेद अभियासी ॥

:o:

:o:

:o:

धर्मदास कवि जेहि सब जाना । तेन कर तने गुनी सग्याना ॥

तेन महि एकहि श्रीपति नामा । गुनगन विद्याकर अभिरामा ॥

तेन हसि वचन कहा कर जोरी । तात सुनहु विनती एक मोरी ॥

कवरी पडव उपजंउ कैसे । दुनहुन दुसह वर भा कैसे ॥

॥ दोहा ॥

सो सब मोहि मुनाचहु जस जानतहहु तात ।

व्यास कहा जो भारथ पर्व इगारह औ सात ॥

:o:

:o:

:o:

॥ पवाँत ॥

संवत साह असोक कर भंउ । सत्रह सें इग्यारह गएउ ॥

वसुधा साहिजहा कं साके । उपमा रिपु वरिआर न ताके ॥

विध्य उपर इहा देस उहारा । सेगर साहि प्रताप भुआरा ॥

महासौंध ताकर जुवराजा । दान जुध्य कं जासी लाजा ॥

आसान देव कवि इक जाहा । कुसुम बिस्टी वरपहि सुर ताहा ॥

सो नरसिघनि सुआएसु दीन्ह । धर्मदास कवि तव एह कीन्ह ॥

पुन्य कथा यह पातप हरइ । नरनारी जेहि सुनतें तरइ ॥

॥ दोहा ॥

धर्मदास एहिभातिन्ह भारत सभा प्रसंग ।
तावे तन लोकमनी कविगन महँ जनु गग ॥ १८ ॥

मध्य—

वन पर्वात

छव हरिमोतिका

दुष हरब रमानेवास सो मुनि राधीका पति बोलेउ ।
मम अग जानेहु आपु सब को भग कबौ न बोलेउ ।
अब अजर अमरा अछेह वरदै दान हरी गवनेव घरे ।
मुनि हर्ष धर्मनेवास श्रीपतिदास वन भाषा करो ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

सव विवेक दिसि धन कै एक दिसि भारथ डोइ ।
तौली तूला तारहू वीबुधा हवौ न पूरन होई ॥ १ ॥

∴∴

∴∴

∴∴

अंत—

उद्योग पर्वात

आउध वाहन अंभर क्रीना । जे जस तेहि तैसे सब दोन्हा ॥
बालगुरेज वरनी नही जाइ । चमकै अत्र चपला की नाइ ॥

॥ दोहा ॥

धर्मदास एहि भातिन्ह साथहि वीर परोग ।
भीष्म पर्व आगै है इहा लगी भाउत जोग ॥ १ ॥

इति श्री महाभारथे उतजोग पर्वनीनाम कवि धर्मदास क्रीत वीर डेरन्ह वासनो नाम
षस्टमो अध्यायेह ॥ छंद ॥ ६ ॥ ६ ॥

मीति चैत्र सुदी ६ सवत् १८७७ की साल मा लीषा मोकाम लवएन तालुके अरइल प्रगने
इलाहाबाद ।

विषय—महाभारत (सभापर्व, वनपर्व और उद्योग पर्व) की कथा का वर्णन ।

रचनाकाल

संवत साह असीन कर भैऊ । सत्रह सै ग्यारह गएऊ ॥
वसुधा साहिजहा कै साके । उपमा रिपु बरिआर न ताकै ॥

संख्या १७२ग. महाभारत (उद्योग पर्व, भीष्म पर्व, द्रोण पर्व), रचयिता—धर्मदास,
स्थान—मऊ ग्राम, (देश, डहार, बघेलखड), कागज—देशी, पत्र—२८७, आकार—६ १/४ × ६
इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८६७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य,
लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६६४ वि०, लिपिकाल—स० १८८४ वि० (१८८८
वि० उद्योगपर्व), प्राप्तिस्थान—ठा० रघुनाथ सिंह, ठा० शिववरन सिंह, ठा० जगबहादुर सिंह,
ग्राम—समोगरा, पोस्ट—नैनी, जिला—इलाहाबाद ।

जुद्धि—उतजोग श्रीगणेशायन्ह ॥ श्री देवियान महा ॥ पोथी लीषा उतजोग
पार्व प्रति घामदास कै ।

कवि कह प्रथमहि व्यास बताही । जेहि सुमिरत उर सुमति समाही ॥
सुष समूद्र दुष दुसह के भजन । रुचिर रूप राजत मनरंजन ॥
अंबर लोहित सोहित ब्राहा । गज सुष मह सोभित ससि राहा ॥

पाक हेत दुइ कुंभ सुठाना । तीनि नएन भुज चारिअ जाना ॥
 पंचवदन सुत षट्मुष भाई । पुरुष अनाद आदि नहि पाई ॥
 वंदही पद इंद्रादिक देवा । पावहि सिध्य करहि जे सेवा ॥
 सकल मनोरथ दाएक धार्मदास पद ध्यान ।
 जे उर जय नीरतर पावै फल निर्वाण ॥

:०: :०: :०:

धार्मदास एहि भातिन्ह साधही वीर प्रयोग ।

भीषम पावै आगे अहही इहा लगे उतजोग ॥

इति श्री महाभारते उतजोग पार्वनी कवि धार्मदास क्रीति सिबिखास नो नाम षट्मो
 अध्याए ॥ ६ ॥ ६ ॥

उतजोग पार्व लीष धर्मदास क्रीत जो देषा सो लीषा मम दोष न दीअते पंडित जन सो
 बिनती मोरि वाचव अंछर जोरि कर टूटउ अंछर लेव वटोरि इहै बड़ाई बुधन की ॥ संवत १८८८
 के साल मीती माघ वदी सतमी वार मंगल के सपुरन भा दसषत सोउवकस सोमवंसी कइ ॥

:०: :०: :०:

मध्य—

भीष्मपर्व

एतना कहत गए चली ताहा । बंठे पाट पीतामह जाहा ॥
 कै दंडवत कीन्ह परनामा । देषि तेज जस निधि कर घामा ॥
 उठि कै मीले परसी हीअ लाए । आदर कै आगै वंठाए ॥
 दै आसीस पूछा सुभ काजा । कहां चले राजन्ह कए राजा ॥
 कुशल पूछि केसव सन चीत चरन चीत दीन्ह ।
 पुनि हसी कहा पीतामह कहा बीज नीप कीन्ह ॥

:०: :०: :०:

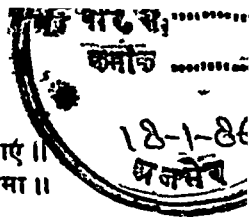
द्रोण पर्व

द्रोण पार्व एहि भातिन्ह तीनि पहर दीन चारि ।
 धार्मदास कवि वरना कुर पडव कइ मारि ॥
 श्री नरसिंह क्रीपा भई जवही । वार्ष पाचीस केर कवि तवही ॥
 संवत वीक्रम भूपक भएऊ । सोरह सए श्री चौसठी गएऊ ॥
 जहं लगि उगवै अथवही भाना । ताहि सलाम सकल सुठाना ॥
 महि वधेल वीक्रम कइ साके । उपर सानु आही नहि जाके ॥
 मऊ गाऊ श्री देस डहारा । वासुदेव तेहि भुम्या भुआरा ॥
 रीतु वसंत श्री माधव भासा । पुन्य देवस तेहि कीन्ह प्रकासा ॥
 भारथ सुनेही जवन फल होइ । पाछेहि वानी कहा रहा सोइ ॥

धार्मक तनए महाकवि धार्मदास कविराज ।

चाद्रभान तेन्ह के कुल वर्नत लागहि लाज ॥

आपन मइ नहि कहा बषाना । जगत विदित जसु जेहि सव जाना ॥
 बीस्न भाक्ति पुरुषन चलि आइ । जप तप नेम धार्म अधिकाई ॥
 पंडित गुन कर पारव पारा । भाषा मह कवि रीति रसारा ॥
 श्रीयावाद दोष कहं डरउ । तेहि बरे नर कवित्या ना करउ ॥
 आपने कहे न कीरती होइ । परमुष अस्तुती सोभा सोई ॥
 इंद्री कहइ हरू होइ जाइ । अपने मुष कर धान समाइ ॥
 बीना कहे घटि जानही लोगा । हीदै एक आपर जीभी जमोगा ॥



हरि हरदेव हरिहि लए लाए । चंद्रभान जेन्ह के कुल जाए ॥
तेन्ह के वस धर्म कर धामा । धर्मदास कविराजक नामा ॥

तासु तनए कुल मंडन कविसेषर कवि गग ।

जेन्ह के भाष वीलास कं दानी तरल तरग ॥

इति श्री महाभारते द्रोन पार्वनी कविसौ श्री धर्मदास श्रीती द्रोन वधनोनाम पंचमो
आध्याये ॥ ५ ॥ द्रोन पार्व संपुरन ॥

द्रोन पार्व सपुरन जो प्रति देषा सो लीषा मम दोस ना दीआते संबत १८८४ मीती
पुस वदि ७ रविवासरे प्रति उतारा सीउवकस सोमवसी ॥

विषय—महाभारत (उद्योग पर्व, भीष्म पर्व और द्रोण पर्व) की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—द्रोण पर्व मे रचनाकाल सवत् १६६४ उल्लिखित है, लिपिकाल
उद्योगपर्व छोडकर सवत् १८८४ है । उद्योग पर्व मे सवत् १८८८ दिया है ।

संख्या १७२घ. उद्योग पर्व (महाभारत), रचयिता—धर्मदास, कागज—देशी, पत्र—
४०, आकार—१२ १/२ × ६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—११००,
खडित, रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६३ वि०,
प्राप्तिस्थान—कुवर लक्ष्मण प्रताप सिंह, ग्राम—साहीपुर नालखा, पोस्ट—हडिया, जिला—
इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ पोथी उत्तजोग पर्वनि महाभारत ॥

॥ चौपाई ॥

कवि कह प्रथमहि प्रनवौ ताही । जेहि सुमिरत उर सुमति समाही ॥
सुष समुद्र द्रुष दुसह के भजन । रुचिर रूप राजत मन नदन ॥
अवर लोहित सौहित देहा । गजमुष मह सोभित ससिरेहा ॥

॥ दोहा ॥

.....भारथदाएक "धर्मदास" पद ध्यान ।

जो उर जर्प निरतर सो अब ही फल पाव ॥ १ ॥

घट घट भृगुति स्वाद सव लेई । आपनु मित्र नकं तेहि देई ॥
अजा अविद्या जाकर नामा । सचर अचर सव घट विलासा ॥
नारायनी विस्न के माया । जेइ निज काजे जग भयाया ॥

अंत—

आउध वाहन अंघर भीना । जेजे जस तेहि तंस दीना ॥
वालगुरे जव नीर्नहि...चमक अत्र चपला की नाइ ॥

॥ दोहा ॥

'धर्मदास' एहि भातिन्ह साधहि वीर प्रयोग ।

भीषमपर्व आ.....हा लगे उत्तजोग ॥ १६८ ॥

इति श्री महाभारते उद्यमपर्वनि कवि श्री धर्मदास कृती शीवीर प्र... ७८८०ऽध्याय ६ ॥
संबत १८६३ श्रावण मासे कृष्णपक्षे नवम्यां भृगुवासर पुस्तकं सं० ।

विषय—महाभारत उद्योगपर्व की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ के बीच बीच के कई पत्रे लुप्त है । रचनाकाल अविदित है ।
लिपिकाल सवत् १८६३ वि० दिया है ।

संख्या १७३. प्रबोध चंद्रोदय नाटक, रचयिता—धौकल मिश्र, कागज—देशी, पत्र—
१२४, आकार—६×५ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुपटुप्)—१६२७,
पूर्णा, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक
संग्रह ६५।५२ वस्ता), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ छर्प ॥

शकरनंदन इद्रुभाल गणपाल महामति ।
मुक्तिमाल गल चारु हारु ऋमकत उरि विरतृति ।
हरत विघन वर जाल हाल पूजित नवनिधि धर ।
तुंदि विशाल निहाल करत ध्यावत सब सुर नर ।
गजवदन रदन इक सुपसदन मदनदहन मूषकगवन ।
जय शिवानंद आनंद निधि अति अमद भारति भवन ॥ १ ॥
:०: :०: :०:

॥ वस वर्नन ॥ अनुगीत छंद ॥

भूपति भयौ जडु वस मै इक वदन स्पघ उदार ।
जल निधि सुता जिहि भुवनमे प्रगटी अमित विस्तार ।
भूपाल भूमि जिते सकल वंदत चरन अरविंद ।
नंदन बहुत जाकं भये पूजत सदा गोविंद ॥ ४ ॥
द्वै सुत उदार सुचारु ते सिरदार छवि जितमार ।
गुनभ्राम मडित जुद्ध पडित पडि शत्रु अपार ।
वय करि वड़े महाराज सूरज मल्ल उज्ज्वल रूप ।
जीती अनेकन वार संना म्लेछ बोरे कूप ॥ ५ ॥
तिनतें भये परताप लघु जिन कीभ लघु परताप ।
श्री रामचरण सरोज वंदत प्राप्ति पद दुरवाप ॥
तिनके वहादुर सिध राजा भये गुन गंभीर ।
गुणि जन समुद्र आनंद करह मुकर सरस रस धीर ॥ ६ ॥
सुत श्री वहादुर कै पहुप परसिद्ध विपुल स्वरूप ।
जगमगत जाकी तेज उज्वल लपत भ्रज्जत भूप ॥
श्री पुष्प के सुत तीन प्रगटे जे महा परवीन ।
महाराज श्री रणजीत स्यह प्रताप रक्षित पीन ॥ ७ ॥
सुंदर पुरंदर नंद मनु जिमि उदधि नंदन चंद ।
प्रगट्यौ कुसुम नंदन वडौ श्री तेजस्यंह अनंद ।
रघुवर चरण युग नित्य वदत लहत परमानंद ।
गावत सुनत निरमल चरित ध्यावत गुनन के वृद ॥ ८ ॥
तवही अनुज्ञा पाय धौकल मिश्र मति अनुसार ।
रचि वर्य भाषा के धरे सज्जन पढौ करि प्यार ॥ १० ॥

श्रंत—

॥ मोहिनी छंद ॥

विष्णु भक्ति उचरी तिहि वंन सुनाय ।
उठी पुत्र कछु चाहियं लेव सुभाय ॥ ६१ ॥
पुरुष उच्चर्यौ मात न यार्त और ।
भली कियो उपकार कहीं सिरमीर ॥ ६२ ॥
सांति अराति भए भूपति के आज ।
भौ कृतकृत्य विवेक लहे सुपसाज ॥ ६३ ॥

निरमल आनन्द पद में कियौ प्रवेस ।

यातं परं न कारिज और सुवेस ॥ ६४ ॥

श्री पुष्प नंदन तेज राजत इहु वस पवीप है ।

रघुवीर पद अरविद कौ हिय ध्यान और प्रतीप है ।

तिहि आनि मान सुछंद "धौकल मिश्र" रचित निसक है ।

परबोध चद्रोदय सु नाटक भयी घटम अक है ॥ ६५ ॥

विषय—सस्कृत के प्रबोध चद्रोदय नाटक का अनुवाद ।

संख्या १७४क. अनुरागलता, रचयिता—ध्रुवदास, स्थान—वृंदावन, कागज—देशी, पृष्ठ—२ (७८ से ८०), आकार—७ × ११ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४८, परिमण (अनु-पुष्प)—६०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६६० लगभग, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ८३, पु० स० ६।२० ।

आदि—अथ अनुरागलता लिख्यते ॥ दोहा ॥

॥ चौपाई ॥

प्रेम बीज उपजं मन माही । तब सब विषै वासना जाही ॥ १ ॥

जग तं भयो फिरं वंरागो । वृंदावन रस मे अनुरागो ॥ २ ॥

सो अनुराग परम सुखदाई । तिहि बिन ताहि न और सुहाई ॥ ३ ॥

नबल प्रेम रस अटव्यो जोई । धन्य वंराग ताहिको होई ॥ ४ ॥

निसप्रह होइ देह तें न्यारा । जहां मन लभ्यो सोइ इक प्यारा ॥ ५ ॥

ताही के रस धूमत डोलै । भरै नैन जल मुखहु न बोलै ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

तीन लोक कौ राज सुख देख्यो तुला चढाइ ।

निमेष प्रेम सुष गरुव अति तिहि आगं घटि जाइ ॥ ७ ॥

मध्य—पृ० ७६

॥ दोहा ॥

प्रेम रासि दोऊ रसिक वर विलसत नित्य विहार ।

ललितादिक नित लेतहें तिहि रस कौ सुखसार ॥ ३८ ॥

॥ चौपे ॥

नित्य किशोर रूप की रासी । विलसत प्रेम निकुंज विलासी ॥ ३९ ॥

ऐसैं दोऊ रस मे भीनें । चद चकोर नैन मन कीनें ॥ ४० ॥

एक प्राण हूं देह विहारी । तिनके बीच प्रेम अधिकारी ॥ ४१ ॥

सहजहि ताके रसबस प्यारे । एक सुभाउ दुहुन मनहारे ॥ ४२ ॥

तिहि रसकौ रस अद्भुत आही । ललितादिक दिन लेत है ताही ॥ ४३ ॥

अंत—

॥ दोहा ॥

परम सनेही जुगलवर जानत प्रीति की रीति ।

मन बच कं ध्रुव जिन भजे तेई गये जग जीति ॥ ६६ ॥

सत्तरि दोहा चौपई भई अनुरागलताहि ।

जो कोउ उर मे आनिहै फिरि है प्रेम लताहि ॥ ७० ॥

इति श्री अनुरागलता संपूर्णम् ।

विषय—हित संप्रदाय की सेवा सिद्धांत भावना के अनुसार भगवत्सवधी प्रेम का माहात्म्य और उन्नती प्राप्ति के उपाय के साथ श्री प्रभु के युगल स्वरूप का वर्णन किया गया है ।

संख्या १७४ख. आनंदाष्टक, रचयिता—ध्रुवदाम, निवामस्थान—वृंदावन, कागज—
देशी, पृष्ठ—१ (८१), आकार—७ × ११ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४८, परिमाण (अनु-
पुष्प)—१५, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—म० १९६० वि०
के लगभग, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भण्डार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ८३,
पु० सं० ६१२३ ।

आदि—अथ आनंदाष्टक लिख्यते ॥ दोहा ॥

सखी सब उडगन मनो अंकि वारि आनद ।
पिय चकोर ध्रुव छकि रहे निरखि कुवरि मुख चंद ॥ १ ॥
ऐसी अद्भुत समा बनी डकछत सुख की रासि ।
फूले फूल आनंद के नहज परस्पर हासि ॥ २ ॥
देखि लाल के लालवहि लालचंद ललचाइ ।
नवल कटाक्षित रंग रस पीवतहू न अघाइ ॥ ३ ॥
एकहि पंगुन प्रेम रम रूपरु सील मुमाड ।
अद्भुत जोरी बनी ध्रुव देखि बहत चित चाड ॥ ४ ॥
या रम के जे रसिक जन तिनकी कोन ममान ।
बिना मधुर रम माधुरी परसन नहि कछू आन ॥ ५ ॥
रसिक तवहि पहिचानिये जाके यह रस रीति ।
छिन छिन हिय मे कलकि रहै लाल लाडिली प्रीति ॥ ६ ॥

मध्य—

यह रस जिन समन्ध्यों नहीं ताकी ढिग जिन जाहु ।
तजि सतसंग सुधा रमहि सिधुसुतहि जिन खाहु ॥ ७ ॥
वृंदावन रम अति सरस कैम करो बखान ।
जिहि आगं बंकुठ को फीको लगत पयान ॥ ८ ॥

अंत—

यह अष्टक जो पढ़े ध्रुव मंध्या और सवार ।
ताके हिये प्रकानि रहे मिटे द्विगुण अधियार ॥ ९ ॥

इति श्री आनंदाष्टक संपूर्णम् । समाप्तः ॥

विषय—मुस्तक की मपूर्ण नकल दी गई है । इसमें हित मप्रदाय की सेवा मिद्धात
भावना के अनुसार भगवत्स्वरूपानंद का वर्णन है ।

संख्या १७४ग. प्रेमलता, रचयिता—ध्रुवदान, स्थान—वृंदावन, कागज—देशी,
पृष्ठ—२ (७६ मे ७८ तक), आकार—७ × ११ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४८ परिमाण—
(अनुपुष्प)—६०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—म० १९६०
के लगभग, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भण्डार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, ह० व० ८३,
पु० सं० ६१९६ ।

आदि— ॥ अथ प्रेमलता लिख्यते ॥ चौपई ॥

प्रथमहि सुभगुरु पद उर आनो । वात प्रेम को कछुक बखानो ॥ १ ॥
और कृपा रसिकनि की चाहो । तव या रम को सर अवगाहो ॥ २ ॥
लाल लाडिली जो उर आनि । तैसी मोषे जात बखानो ॥ ३ ॥
घटि बढि अक्षर जो कहूँ होई । लेहु बनाइ कृपा करि सोई ॥ ४ ॥
रसिक रसिकनी को जस जानो । और कछ जिय जिन उर आनो ॥ ५ ॥

कही प्रेम की गति ध्रुव यातें । सुनतहीं सरस होत हिय तातें ॥ ६ ॥
अरु रस रीति पथ पहिचानें । तब या रस के स्वादहि जानें ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

जिन नही समुझ्यौ प्रेम यह तिनसो कोन अलाप ।
दादुरह जल मे रहै जानें मीन मिलाप ॥ ८ ॥

मध्य—पृ० ७७

अद्भुत नित्य अभूत रस लाल लाडिली प्रेम ।
छिन छिन नख मनि चब्रिकनि सेवत है सुख नेम ॥ ३ ८ ॥

॥

॥ चौपाई ॥

प्रेममई रसमेन विनोदा । नव नव उपजत है दुहु कोदा ॥ ३६ ॥
तिहि विहार रस मगन विहारी । जानत नहीं कित छोस निसा री ॥ ४० ॥
जो कोऊ कोटिक भाति बखानें । बिन स्वादो या रसहि न जानें ॥ ४१ ॥
रहत है दिनहि प्रेम रस साई । तहा भान की नाहि समाई ॥ ४२ ॥
सुकुम प्रेम न मन मे आवें । स्थूल रूप सबही कौं भावें ॥ ४३ ॥
महामधुर रस सब ते न्यारौ । जिहि ठा दुहुनि अपनपो हारघौ ॥ ४४ ॥
तिनहु देखि आसक्त हू भूली । हूँ आसक्त सुख रस मे भूली ॥ ४५ ॥

॥ दोहा ॥

लाल लाडिली प्रेम तें सरस सखिनि कौ प्रेम ।
अटकी है निज प्रीतिरस परसत तिनहि न नेम ॥ ४६ ॥

अत—

ऐसी छवि ध्रुव नैननि माझ । रह्यौ निरतर भोररु साझ ॥ ६४ ॥
प्रेम वेलि वृदावन फूली । पिय तमाल असनि पर भूली ॥ ६५ ॥
देखि महा छवि सुधि बुधि भूली । सब सखियनि की जीवनि भूली ॥ ६६ ॥
तिनि सखियनि की कृपा मनाऊ । या रस की कनिका जो पाऊ ॥ ६७ ॥

॥ दोहा ॥

निसि दिन तौ जाचत रहो वृदावन रस रैन ।
छिन छिन दपति छवि छटा छाइ रहौ ध्रुव नैन ॥ ६८ ॥

इति श्री प्रेमलता सपूर्णम् समाप्त ॥

विषय—हित संप्रदाय के सेवा भावनानुसार भगवत्स्वरूप सबधी प्रेम तथा युगल स्वरूप की लीलाओं का वर्णन है ।

संख्या १७४घ भजनाष्टक, रचयिता—ध्रुवदास, स्थान—वृदावन, कागज—देशी, पृष्ठ—२ (८०-८१ तक), आकार—७ x ११ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६६० के लगभग, प्राप्तस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्याविभाग, काँकरोली, हि० व० ८३, पु० सं० ६।२१।

आदि—॥ अथ भजनाष्टक लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

ज्ञान सांत रस तें अधिक अद्भुत पवई दास ।
सखा भाव तातें अधिक जिनक प्रीति प्रकास ॥ १ ॥

और न कछु सुहाइ ध्रुव यह जाचत निसि भोर ।
 याही रस की चटपटी लगी रहौ हिय मोर ॥१६२॥
 दोहा कवितरु चौपई इकसत साठरु दोइ ।
 जुगल केलि हीरावली हिय गुन माला पोइ ॥१६३॥

इति श्री रस हीलावली संपूर्णम् ।

विषय—हित संप्रदाय के सेवा-भावनानुसार युगल स्वरूप का ऋतु विहार वर्णन ।

संख्या १७४छ. हित सिंगार लीला, रचयिता—ध्रुवदास, स्थान—वृंदावन, कागज—
 देसी, पृष्ठ—४ (२८ से ३२), आकार—७ × ११ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४८, परिमाण
 (अनुष्टुप्)—१२०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १६६०,
 प्राप्तस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० ८३, पु० सं० ६।६ ।

आदि—अथ हित सिंगार लीला लिख्यते ।

॥ दोहा ॥

सहज सुभग वृंदा विपिन मिथुन प्रेम रस ऐन ।
 सेवत सरद वसंत नित रति जुत कौटिक मन ॥ १ ॥
 फूली फूलनि की लता रही जमुन जल भूमि ।
 तैसीय अद्भुत ऋलमलै कंचन मनिमै भूमि ॥ २ ॥
 जलज थलज विगसत सहज नील पीत सित लाल ।
 हेम वेलि रही लपटिके सुंदर सुभग तमाल ॥ ३ ॥

मध्य—पृ० ३१

॥ कवित्त ॥

मधुर तें मधुर अनूप तें अनूप अति रसनि कौ रस सब सुखनि कौ सार री ।
 विलास को विलास निज प्रेम की है राज दसा राजे इक छत दिन विमल विहार री ।
 छिन छिन तूषित चकित रूपमाधुरी में भूले सोई रहे कछु आवैं न विचार री ॥
 अम हू को विरह कहत जहाँ डर आवैं ऐसे हें रंगिले ध्रुव तन सुकुवार री ॥६५॥

॥ दोहा ॥

दिन डूलह दिन डुलहिनी परम रसिक सुकुवार ।
 प्रथम समागम रहत दिन नवल निकुंज विहार ॥६६॥

॥ सोरठा ॥

कोक कलानि प्रवीन नव किशोर दंपति सदा ।
 सुरत सिंधु सुख लीन अति विचित्र नागर कुवार ॥६७॥

अंत—

॥ दोहा ॥

मन वच जो गावैं सुनें हित सो हित सिंगार ।
 तिहि उर ऋलकत रहैं विविपद अंबुज सुकुवार ॥८०॥
 यह रस जिनिके सुनत मन नाहिन होत हुलास ।
 सपने परस न कीजियै तजि ध्रुव तिनिकौ पास ॥८१॥
 अस्सी दोइ दोहा कवित हित सिंगार के कीन ।
 जाके उर मे वसै ध्रुव जुगल चरन ह्वै लीन ॥८२॥

इति श्री ध्रुवदास विरचितं हित सिंगार लीला संपूर्ण समाप्ता ॥

विषय—हित हरिवंश संप्रदाय की सेवा भावना के अनुसार श्रीकृष्ण और राधा के संयोग शृंगार का वर्णन ।

संख्या १७४ज. ब्रजलीला, रचयिता—ध्रुवदास, निवासस्थान—वृंदावन, कागज—
देसी, पृष्ठ—६ (५२ से ५८), आकार—७ × ११ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४८, प्रकाशित,
परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—
स० १६६० के लगभग, प्राप्तस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरली, हि०
ब० ८३, पु० स० ६।१२ ।

आदि—अथ ब्रजलीला लिख्यते

॥ चौपाई ॥

एक समे विहरत वन माही । कियो मनौ विवि द्रुम की छाही ॥ १ ॥
यह निज रस कीजै विस्तारा । रसिक जननि को अति हौं प्यारा ॥ २ ॥
नंदलाल बृषभान किशोरी । रसिकनि हित प्रगटी यह जोरी ॥ ३ ॥
नित्य केलि दिन ऐसेहि करिही । अति आनंद प्रेम रस ढरिहौं ॥ ४ ॥
रसनिधि लीला ब्रज प्रगटाई । रसिक जननि को अति सुखदाई ॥ ५ ॥

मध्य—पृ० ५५

॥ दोहा ॥

सहचरि मन आनंद बढ़घौ सुनत वचन अति चार ।
प्रेम भगन आनंद उर मिलवन नवकुमार ॥१०६॥

॥ चौपाई ॥

नंदगाऊं तेही छिन आई । मनमोहन को सैन जनाई ॥१०॥
सैन बूझि लालन उठि आये । ललिता देखि कछुक मुसिक्याये ॥११॥
बूझत सखी चतुर सब बातें । काहँ मोहन हो कृसि गातें ॥१२॥
तब मोहन मन की सब कही । ज्यो ज्यो पाछे ही गति भई ॥१३॥
ललिता एक किशोरी देखी । मनो रूप की सोबा पेखी ॥१४॥
कोन भाँति मुख की छवि कहिये । चितवत सखी चित्र ह्वँ रहियँ ॥१५॥

अंत—

॥ चौपै ॥

सखियनि जुत तव मतौ कराही । नित्य मिलहि हम वा बन माँही ॥८८॥
यह मत जब मन मे करि लीनों । निज सखियनि को अति सुख दीनों ॥८९॥
तबतें खेलत वा बन माँही । सुंदर सुभग सरोवर पाही ॥१९०॥
यह लीला ध्रुव जो नित गावे । प्रेम भक्ति सो दृढ़ करि पावे ॥१९१॥

॥ दोहा ॥

प्रथम नेह ऐसे भयो विना जतन अनियास ।

यह यस गावत सुनत ध्रुव होत जु प्रेम प्रकास ॥१९२॥

इति श्री ध्रुवदास विरचितं प्रथम समागम ब्रजलीला संपूर्ण ।

विषय—हित संप्रदाय की सेवा भावना के अनुसार श्रीकृष्ण और गोपियों की ब्रज वन-
लीला का वर्णन ।

संख्या १७४क. वैदक ज्ञान लीला, रचयिता—ध्रुवदास, स्थान—वृंदावन, कागज—
देसी, पृष्ठ—२ (८४ से ८६), आकार—७ X ११ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४८, परिमाण
(अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९६० के
लगभग, लिपिकाल—स० १७६१, प्राप्तस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग,
काँकरोली, हि० व० स० ८३, पु० स० ६१२४ ।

आदि—अथ वैदक लीला लिख्यते

॥ चौपै ॥

वैद एक पंडित अति भारी । ठाढ़ीं सबसो कहत पुकारी ॥ १ ॥
जँसौ रोग होइ है जाको । तँसौ ओषद दँहो ताको ॥ २ ॥
यह सुनि एक गयो तिहि नेरे । ऐसो बल ओषद को तेरे ॥ ३ ॥
मेरे बिथा बढी अति भारी । कहि मोसो कछु सोच विचारी ॥ ४ ॥
तेरे रोग कहा है भाई । ताको ओषद देउं बताई ॥ ५ ॥
पाप कर्म अधिक मे कीनें । महा दुखित तिहि रोग के लीनें ॥ ६ ॥
विषय विषम विष तन रह्यौ छाई । भव भुवग तें लेहु छुडाई ॥ ७ ॥

मध्य—मन लाग्यौ अति जूठ सो तजि सांचहि सुख मूल ।

छाडि सुधा के रस फलहि गही जाइ विष सूल ॥ २५ ॥

॥ चौपई ॥

ज्यौं ज्यौं तन अति जीरन भयो । त्यौं त्यौं रोग लोभ बल गह्यौ ॥ २६ ॥
अब तुम जतन करहु चित लाई । जातें कछु इक हियौ सिराई ॥ २७ ॥
तबही वैद तासो यो कही । करहु जतन दुख जँहै सही ॥ २८ ॥
इंद्रो निग्रह जो पथ करई । तिय इमली तें मन परहरई ॥ २९ ॥
लोभ खटाई मोह मिठाई । दधि क्रोध के निकट न जाई ॥ ३० ॥

अंत—

॥ दोहा ॥

नारदादि प्रहल्लाद ध्रुव कीनों यहै विचार ।
या जग मे या रोग कौ सिद्ध यहै उपचार ॥ ३८ ॥
अब तरिहैं केते तरे याही ओषद षाइ ।
तातें विलंब न कीजिय वैगिहि करहु उपाइ ॥ ३९ ॥
मनके समझन को कह्यौ अद्भुत वैदक ज्ञान ।
तन मन के सब रोग ध्रुव सुनतहि करे पयान ॥ ४० ॥

इति श्री ध्रुवदास विरचितायां वैदक ज्ञान लीला संपूर्ण ॥

संवत् १७८१ वर्ष अगहन मासे कृष्ण पक्षे अमावस्यायां श्रीमद् वृंदावन निजधामे
लिखितं । श्री हित जू के आश्रित प्रियादासेन हस्ताक्षरे पठनार्थ नामामिधान हरी भाइ जू नें
पोथी लिखाई लीला २२ ॥ इति श्री ॥

विषय—हित संप्रदाय के सिद्धांत सेवा भावना के अनुसार भगवद्‌ध्यान तथा प्रेम मे मन
लगाने के लिये वैद्यक निदान के आधार पर भवरोग की चिकित्सा और पथ्यापथ्य का वर्णन किया
गया है ।

संख्या १७५क. रूपमजरी, रचयिता—नददास जी, कागज—देसी, पत्र—१३,
आकार—७। X ५। इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०६, पूर्ण, रूप—
साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली,

आदि—॥ श्री गरुडेशाय नमः ॥ अथ रूपमंजरी लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

प्रथमहि प्रणकं प्रेममय परम जोति जो आहि ।
रूप उपावन रूप निधि निति कहत है ताहि ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

परम प्रेम मधुपति इकु आहि । नद जथामति वरनो ताहि ।
जाके सुनत गुनत मन सरस । सरस होइ वस्तुहि परसे ॥ २ ॥

मध्य—पृ० १३

॥ चौपाई ॥

कुंवरि कहति या सजन सयानी । सुपन की बातनि बयौं मुरझानी ॥
सखि कहै बलि या सुपन न होइ । सति आहि अरु सुनि लै जोइ ॥ १३३ ॥
तेरो रूप अनूप सुभाइक । जाग्यौ जात विरथ दिन नाइक ॥
तामैं इह इक देव मनायौ । सो बलि तो कह सपने आयौ ॥ १३४ ॥

अंत—

॥ दोहा ॥

जदपि अगम ते अगम अति निगम कहत हे जाहि ।
तदपि रंगीले प्रेम ते निपट निकट प्रभु आहि ॥ २७६ ॥
कथनी नाहिन पाइये करनी पूरा सोइ ।
वातन दीपग ना वरै वारै दीपग होइ ॥ २८० ॥

इति श्री रूपमंजरी समाप्त ॥

विषय—प्रेम कथानक काव्य है । इसमें रूपमंजरी की भक्ति का वर्णन है जो अंत में श्रीकृष्ण की नित्यलीला में सम्मिलित हो जाती है ।

विशेष ज्ञातव्य—लाल रेशमी जिल्द में रखी हुई पुस्तक है । इसमें 'रूपमंजरी' के अतिरिक्त "रसमंजरी", "विरह मंजरी" और "कोक मंजरी" नामक ग्रंथ भी हैं ।

संख्या १७५ख रसमंजरी, रचयिता—नददास जी, पृष्ठ—२२ (२५ से ४६ तक),
आकार—७। x ५। इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुपुष्प)—३२०, पूरा,
रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री दिद्या विभाग,
काँकरोली, हि० व० ६३, पु० सं० १ ।

आदि—॥ अथ रसमंजरी लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

नमो नमो आनन्दघन सुंदर नंदकुमार ।
रसमें रसकारन रसिक जन जाकों आधर ॥ १ ॥
रस मंजरी अनुसरी के नदमति अनुसार ।
बरनत बनिता भेद जह पैमसार विस्तार ॥ २ ॥

मध्य—पृ० ३४ ॥ अथ खडिता लक्षण ॥

प्रोतम अत रैन सब जागै ॥ अंग अंग रति चिह्नन पारंग ॥ भोर भये जाकं ग्रह आवैं ॥
सा बनिता खडिता कहावैं ॥ ६२ ॥ मुग्धा खडिता जथा ॥ पीय उरज अकन पहिचान ॥
कुंभनि चिह्न सेसकुल जानै ॥ नख छत छती चित्तं चकि रहै ॥ ते प्रोतम कट्टू पूछ्यौ चहै ॥ ६३ ॥
पीय हसि ताहि कठ लपटावैं ॥ सो मुग्धा खडिता वहावैं ॥

अंत—यह सुंदर बर रस मंजरी । नददास रसिकनि हित करी ।

करन आभरन करिहै जोई । परम प्रेम रस पहै सोई ॥ १६२ ॥

॥ दोहा ॥

जदपि अगम ते अगम अति निगम कहत हैं जाहि ।

तदपि रंगीले प्रेम ते निपट निकट पिय आहि ॥१६३॥

इति श्री रस मंजरी नंददास कृत संपूर्ण ॥

विषय—नायिका भेद वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—पुस्तक लाल रंग की रेखामी जिल्द में रखी हुई है । इसमें 'विरह मजरी' और 'रूप मजरी' भी लिखी है ।

संख्या १७५ग. स्याम सगाई, रचयिता—नंददास जी, पत्र—५ (२८ से ३२), आकार—७। x ६। इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—७०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६४२ के पूर्व, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० २४, पु० स० १ ।

आदि—अथ स्याम सगाई लिख्यते ॥ राग विलावल ॥

एक दिन राधे कुचरि नद घर खेलन आई ॥

चंचल ओर विचित्र देखि जसुमति मन भाई ॥

नद महरि ऐसे चरचो देखि रूप की रासि ॥

यह कन्या मेरे स्याम को गोविंद पुजये आस

कैं जोरी सोहनी ॥

मध्य—सखी कही समझाय कहो तो गोकुल जाऊ ॥

मन मोहन घन कहो तो वाकी लाऊ ॥

वह ढोटा अति सोहनी जो पठवैं वाकी माइ ॥

बडो गाडरू नंद को वेगि भली करि जाइ ॥ गाडरू चतुर हूँ ॥१५॥

अंत—सुनत सगाई स्याम ग्वाल सब अगन फूलें । नाचत गावत चले प्रेम रस में अनुकूलें ॥ जसुमति रानी ग्रह सज्यो चदन चोक पुराय ॥ बटत वधाई नद के नंददास बलि जाय ॥ कैं जोरी साहनी ॥२६८॥ इति नंददास जी कृत स्याम सगाई संपूर्ण ॥

विषय—श्रीकृष्ण की राधा जी के साथ सगाई हं, नंदा वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख के मध्य में यह पुस्तक लिखी हुई है । आदि अंत में अन्य ग्रंथ लिखे हैं । केसरी छीट की जिल्द में सिली हुई पुस्तक है ।

संख्या १७६. नजीर की रचनाएँ फुटकर एव सुदामा चरित्र, रचयिता—नजीर, कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—६ x ४^३ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०७, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता—प० हनुमान प्रसाद मिश्र, ग्राम—सोनई बडी, पो०—करछना, जिला—डलाहाबाद) ।

आदि—दुन्या अजब बाजार है कुछ जिस इहा की साथ ले ।

नेकी का दरजा नेक है बंद से बंदी की बात ले ।

आराम दे आराम ले आफात दे आफात ले ।

मेवा दिये मेवा मिले फल फूल दे फल पात ले ।

कलजुग नही करजुग है यह इहां दिन को दे श्री रात ले ।

क्या पूब सौदा नगद है इस हाथ दे इस हाथ ले ॥ १ ॥

॥ रोटियां ॥

रोटी की फिर ना किसी तदबीर से रकं ।
 तीरो सिनान षजर समसेर से रकं ।
 तसपीर से न सीहंन तासीर से रकं ।
 वोह सषस फिर न तीक न जजीर से रकं ।
 पंचे हुए जिसे लिये जाती हैं रोटियां ॥ ७ ॥

मध्य—॥ बया गुरु की ॥

सब धोके की टट्टी है ।

यह पेट अजब है दुन्या की यहा क्या क्या जिस इकट्ठी है ।

और माल किसी का भीठा है और चीज किसी की पट्टी है ।

कंही पकता है कही भुनता है पकवान मिठाई पट्टी है ।

जब देषा पूव तो आखिर को ना चूल्हा भाड़ न भट्ठी है ।

गुल सेर बबूला आबहवा और कीचड पानी मिट्टी है ।

हम देष चुके इस दुन्या को सब धोषे की सी टट्टी है ॥ १ ॥

:o:

:o:

:o:

अंत—सुदामा चरित्र

याद करै केशन मुरारी ॥ ५ ॥

औरत की बात सुन के सुदामा दिआ जवाब ।

तुम्हको है जर की चाह यह पानी का है हुबाब ।

जब इसत्री यह बोली कहा हमको हैगी ताब ।

जब हाल देषा आपका हमने निपट षराब ।

एक अर्ज की है जान के तकसीर हमारी ।

हरदम सुमादा याद करै केशन मुरारी ॥ ६ ॥

:o:

:o:

:o:

अब तो "नजीर" को बी मेरा एही ग्यान है ।

ऐ भगत मुक्त दीजे मुझे जोग ध्यान है ।

सुनते औ पड़ते इसको तो सबका कल्याण है ।

औ कृशन नाम लीजे तो यह आन वान है ।

बैकुठ धाम पावेंगे ये हर के पुजारी ।

हरदम सुदामा याद करै केशन मुरारी ॥

॥ सुदामा चरित्र संपूरन ॥

विषय—ज्ञानोपदेश और सुदामा की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाएँ सब खडित हैं । रचनाकाल, लिपिकाल के उल्लेख नहीं है । रचयिता का नाम नजीर है जो उर्दू साहित्य में प्रसिद्ध है ।

विशेष देखिए, दत्तलाल की वाराखडी का विवरण पत्र ।

संख्या १७७. चौबीस तीर्थकर की विनती, रचयिता—नथमल, कागज—देसी, पत्र—२, आकार—५ $\frac{1}{2}$ × ४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुपटुप्)—२७, पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—ग्रथ विनती लिप्यते ॥

ढालवदौ चौबीस जिनेस की मै ॥ वदौ चौबीसौ जिनेस ॥ काल अतीत विषै जे भर्ज ॥ प्रथमहि जिन निर्वाण ॥ सागर वदौ जिनवर दूसरो ॥ १ ॥ महासाथ जिनदेव ॥ बदौ में चतुरथ विमल जिनद ॥ नमौ सुधा मजिनद ॥ श्रीधर नमतामवरदधि तिरं ॥ २ ॥ बसनाथ भगवान ॥ चिमल प्रभु सुमिरत अति आनद बढ़े ॥ उधर जो जिनदेव ॥ प्रणमौ मै अगिनि नाथ चितलाय कै ॥ ३ ॥

मध्य—कणै जसोधर सेव ॥ पूजौ मै किस्न जिनेस्वर भाव सौ ॥ ज्ञान मती जी जिनराय ॥ वदत विसुधरत्त विमल सुमति करै ॥ ६ ॥ लडनाथ शिवकंत ॥ साति जगतबंध सुष उपजै ॥ राचौ बीसौ जिनेस ॥ काल अतीत विषै वह सिव गयो ॥ ७ ॥ तिनं न मीतिर काल ॥ मन बच तन करि उत्पम भासौ ॥ यह वीनती सुषकार ॥ जो नरनारी गावंहि तथ की ॥ तेसो पासो भव पावपार ॥ नथमल ज्यो सम्यक् निधरै ॥ ८ ॥

इति श्री चौबीस तीर्थकरां की वीनती संपूर्ण ॥

अत—जैनधर्म को जो कोई साधं कंद मूल सब त्यागं जी ॥

तरकारी हाथि कदे नहीं वीवतू पंस सदारस त्यागं जी ॥

कविन पंथ है जैन धर्म को जिसके मन को लागं जी ॥

देजे ते दलदल सब नासं जिहां पारसनाथ विराजं जी ॥ १ ॥

॥ इति जैन कवित्त ॥

विषय—इसमे जैन तीर्थकरो की स्तुति है ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्तलेख मे निम्नलिखित दो ग्रथ है :—

१ अठारह नाते की चौढाल्यो—लोहट कृत ।

२ चौबीस जैन तीर्थकर की वीनती—नथमल कृत ।

संख्या १७८. सारगधर वैद्यक, रचयिता—नैनकवेस्वर (नैन कवि ?), कागज—देशी, पत्र—३७, आकार—६ X ५ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६४७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८६० वि०, प्राप्ति-स्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः

कर अगुष्ठ के मूल ते देषहु नशा आकार ॥

जानहु शुष दुष जीव के पंडीत करहु वीचार ॥ १ ॥

मंडुक काक कुलींग गती पीत नाशा एही भाइ ॥

हम मयुर कपोत गती नाग जलौका वाइ ॥ २ ॥

तीतीर लवा वटेर गती साध मनीश नीपात ॥

चले षीन अरु शीत दुई नाश करं बहुवात ॥ ३ ॥

सप्त दीवस ज्वर वाई वश वासर ज्वर पीत को ॥

कफ ज्वर द्वादश जाई ज्वर परी पक्क जो होई तब ॥ ४ ॥

॥ चौपाई ॥

सोठी कटाई पुस्कर मूल ॥ ककरा शूगी कटु कचूर ॥

महु लेटी गीलोई अवर ॥ शाली जु पररणी हरद पीपरी ॥

मरीची कलीजी आही मान ॥ पीत पापरा पत्रज आन ॥

अगर घमासा कुट मीलाई ॥ लोचन वाला मू वी पाई ॥

गद अंगद तालु हिय जानि ॥ “नैन कवेस्वर” कहो बपानी ॥
अंत—पृ० २३ ॥ अथ नीगुंडी कल्प ॥

सनीवार पु.य.जो होई ॥ तब आनी जँ ॥ सीव पुजा की भवती से ॥ तब नीगुंडी आनी ॥
छाया सुषा खाइ जँ ॥ पाताल जत्र अनी दीजँ नीरोध न कीजँ ॥ ब्राह्मण कन्या नैवती जेवाई
जँ ऐक १ ॥ :०: :०: :०: गाई के छाछ सो दीजँ
पोंडरोग जाई ॥१६॥ सहत सो दीजँ ती राज रोग जाई ॥२०॥ गो बुध सो दीजँ पुष्ट होई ॥२२॥
सम्बत ११८६० समै नाम भाद्रपद सारगधर वैद्यक ॥०

विषय—वैद्यक ग्रथ है जिसमे रोग, उनके लक्षण और औषधो का वर्णन है ।

संख्या १७६. नरसीमेतानी माया, रचयिता—नरसी मेहता, कागज—देशी, पत्र—
३६, आकार—७ $\frac{3}{4}$ × ४ $\frac{3}{4}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप)—५६४,
पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकान—सवत् १८६३, प्राप्तिस्थान—श्री ओंकार
नाथ मिश्र, ग्राम—अर्का, पोस्ट—करारी, जिगा—डन्नाहावाद ।

आदि—श्री जानकीनाथाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

राग आसावरी

आवो गजानंद आनंद स्वामी, कथारंग मे आवो जी ।
लप लाभ सुधि बुधिना दाता गवरी पुत्र कहावो जी ॥
वक्र तुंड एक तुंड विराजँ णयन घुघुर घुमकावो जी ॥ १ ॥
सुरनर सिध मुनि जन ध्यावँ रग वच्छित फल पावँ जी ।
धूप दीप लँ पोहोपनी माला नित नित मोदक लावो जी ॥ २ ॥
तुम थकी सना सुहावणी लागँ मन माही आनंद आवो जी ।
कृपा करो गणपति अमृत पर नित गोविंद गुण गावो जी ॥ ३ ॥

अंत—राग रामगिरि

धन्य धन्य तु इम कहे श्री हरी नरसैया तुमारो भगत साचु ।
मेलि पुत्सातम सपी रूप थई रह्यो तेह नेहु तारे प्रेम राचु ॥
तुज थकी मुज थकी भेद न थी नागरा सामलो रे मारी वेद वाणी ।
अजी परतीत या नथी मारी तुजने हार आप्यो परतप भूपे ।
चौदे लोक मायतो समको नही ताप मायस एक रूपे ॥ ३ ॥
जारे मे मो कल्पु ठाडो पाणी मामेरु की धृते वीतरयो तु जने ।
ताहरो अषर गावेन सामलँ कुल सहित पवित्र थाये ।
भरण नर सैयो भीठु बोली सु रीकवो न्यारे कर जोडी ने कृपण समषाय ॥ ४ ॥ १०४ ॥

इति श्री नरसीमेता जीनी माला संपूर्ण. ॥ शुभ सभवतु कल्याणमस्तु ॥

॥ दोहा ॥

लिपी अवति के विषै विप्र तुला राम नाम ।
जो याकुं वाचँ सुणँ जिनकु जे श्री राम ॥
भसींग पठनार्थी पठँ ग्रथ करि प्रीति ।
आवँ समस्त अनेकवि... होय भक्ति की रीति ॥ २ ॥

संवत् १८६३ मिति अगहन सुदी ॥ १३ ॥ वार बुध ॥

विषय—भक्ति विषय वर्णन ।

संख्या १८०क. अवतार गीता या विजै अवतार गीता, रचयिता—नरहरदास बारहट, कागज—देशी, पत्र—३४५, आकार—११ $\frac{३}{४}$ × ७ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३१, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८०३५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १७६७ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी, (अथ स्वर्गीय श्रीलज्जाराम जी मेहता, वूंदी निवासी के पुस्तकालय से सभा को प्राप्त हुआ) ।

आदि—॥ ६० ॥ श्री महागणपतएन्मः ॥ श्री रामायन्मः ॥ श्री कृष्णायन्मः ॥ श्री शारदायन्मः ॥ श्री गुरुभ्योन्मः ॥ अथ साटक ॥ अथ बारहट जी श्री नरहरदास कृत विजै अवतार गीता लिख्यते ॥ स्त्री ॥

सुडाडंड प्रचंड मेकडसरा मुदगध गल्लस्थलं ।
सिद्धारुण तुंड मंडित मुषं भ्रंगस्य गुजारनं ॥
:०: :०: :०:

य प्रथम गुरदेव सेव सुक दंष्टं विद्याय प्राप्याभ्यहं ।
श्री मान् ऋक् सुदीक्षतं गिरिधर तस्य प्रसादे वर ॥
तं दृष्ट सतपंथ काव्य करणं विघ्नस्य हरण पर ।
श्री सुरसेव्य पदारविद विमलं सरणागत जाच्यह ॥ ३ ॥

॥ आर्ज्या ॥

गरापति गहर ग्यानं गुंन अपन । सरसति सुदति सुमति समपन ।
गुर परसाद पाइ गुर ग्यानं । भूत भाव जुग जुगति वषानं ॥

॥ छंद पद्यड़ी ॥

इक समय सेष सज्या समान । हरि सयन करत बल अप्रमान ।
धरि भुवन चतुर्दश उदर वास । सोभा सेपसज्या निवास ॥

अंत—

॥ दोहा ॥

सोरह सहस अरु आठ सै इकसठि उपर आनि ।
छंद अनुष्टुप कलि सकल पूरन ग्रंथ प्रमानं ॥
मौ जीई सुन्यौ पुरान मीहि क्रम सौई वरानं कीन ।
श्रीता पाठक हेत सौ पावै भक्त प्रवीन ॥

॥ कवित्त ॥

भगति पाल अनभंग रामगीता मानसर ।
निजसर्धा सौपान भाव मिलि नीर गहर भर ॥
तहां अर्थ तरन रत्न विवध नवरस जु विहंगम ।
अदभुत उकति तरग सकर बहुं छंद सुसगम ॥
डर नाहि दुष्ट अघ दुवन को सजरा ज्ञान सुसगरे ।
करि सरि विहार नरहर कहै हंस महं जामुठरे ॥

इति श्री चौईस अवतार चरित्रे ॥ बारहट नरहर दासेन विरचितं ॥ अथ अवतार गीता संपूर्ण ॥ संवत् १७६७ वर्षे मति माह वद ४ दिने भृगुवारे सूर्येदियात् गत जल घटी १७ ॥ समये मेघलग्न मध्यं लिपिकृता ॥ वाच्यमान ॥ चरनिद्यात् ॥ सकल पंडित सिरीमणि पंडित श्री विभा चंद्र जी तत् सिष्य श्री फलचंद्र जी भातृवाल चंद्रेण लिपिकृता ॥ चौधरी लूणापुत्र सुजा वाचनार्थ ॥ बीसलपुर वासतव्यां. श्रोरस्तुः ।

॥ दोहा ॥

पदरा गुणरा कु पुस्तिका लिप दीनी चित्त लगाय ।
सुगने सजन समांन कै लीज्यौ कंठ लगाइ ॥ १ ॥

मात पिता मोहन मदिल कौड वरस कायम ।
 पोथी वचणहार की दीर्घ जसदा इम ॥ २ ॥
 मन रंजण वाणी गमण उक्त जुक्त आसीस ।
 पोथी वंचणहार की जय राषी जगदीस ॥ ३ ॥
 ज्या लगमेर अडग है तांलग उगत सूर ।
 ज्यालग आ पोथी सदा रहिं ज्यो गुन भरपूर ॥ ४ ॥
 गोगन धरा विच मेरु गिर धरे सहेस , उरभार ।
 जुग च्यारौ चिरंजीव ज्यो पोथी वचणहार ॥ ५ ॥
 जो रस समझौ जीव में वानी वर विचार ।
 राजा हमेसे राषीयौ. पोथी सुं बहुप्यार ॥ श्री ॥

विषय—चौबीस अवतारो की कथाएँ वर्णन की गई है ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल उल्लिखित नहीं है । लिपिकाल सवत् १७६७ है । इस ग्रंथ की एक प्रति (सवत् १८५८ की) पहले भी खोज में मिल चुकी है, (खोज विवरण ६-२१०) । प्रस्तुत प्रति उससे बहुत पुरानी है । इसका प्रथम पत्र जीर्णवस्था में है ।

सख्या १८०ख. अवतार चरित, रचयिता—बारह नरहरदास, कागज—देशी, पत्र—
 ३३०, आकार—१२ $\frac{३}{४}$ x ८ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३१, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७२६३,
 खडित (केवल आदि का पत्रा नहीं), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सवत्
 १७३३ वि०, लिपिकाल—सवत् १८१२ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत रामचन्द्र टंडन एम० ए०,
 एल० एल० वी, १० न० साउथ रोड, इलाहाबाद ।

आदि—:०: :०: :०: :०:

संगीक लिचिनां : हीय विष्याद दुतिहीन. ज्यो विन नीरही मीन. १ ॥

चारजाति जे बारहट नरहर मति अनसार ।

मैं सागर परन लयौ कहन चरित अवतार ॥

:०: :०: - :०:

नरहर प्रभु बाराह भो अवनि उधारन हेत ।

निरमूलनि दिति जाति कुल देह सत्य भय सेत ॥

इति श्री प्रथम आदि थल ॥ कवि लघुता वरनो नाम ॥

अंत—सत्तरह सैं तैंतीस नियत सवत लेतरायन ।

रितु ग्रीषम आषाढ भास पष कृष्ण सपावन ॥

:०: :०: :०:

सोरैं सहसर आठ सैं इकसाठि ऊपर आन ।

छद अनुष्टुप करि सकल पूरन ग्रंथ प्रमान ॥ १ ॥

मैं जोइ सुन्यौ पुरान महं क्रम सोई वरनन कीन ।

श्रौता पाठक हेत सौं पावैं भक्ति प्रवीन ॥

इति श्री पौरुषेय भाषा श्री अवतार चरित्रे महा मुक्ति मारणे बारहट नरहर दासेन बिर-
 चित्तं । श्री श्री अवतार चरित्र ग्रंथ संपूरन ॥ शुभ भवत् ॥ कल्याणमस्तु ॥ लिखतं मिश्र
 किरपाराम सुमति डोंड ग्राम कोट मध्ये परगनं वनावडके ॥ लिपाइत जोसी जी श्री ५ बिरजलाल
 जी तस्य पुत्र चिरंजीव नंदलाल जी आत्महेत षटवर्ष्य मासोत्मासे मार्गश्रमासे कृष्ण पक्षे तिथौ
 त्रयोदसी १३ चंद्रवासरे संवत् १८१२

॥ इहा ॥

जब लगि मेरु अडिग है तव लगि ससि अरु सूर ।

जब लग यह पोथी सदा रह्यौ गुन भरपूर ॥

विषय—भागवत दशम स्कंध के अनुसार चौबीस अवतारों का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख का केवल प्रथम पत्र लुप्त है । रचनाकाल सवत् १७३३ वि० तथा लिपिकाल सवत् १८१२ वि० है ।

संख्या १८१. मनोरथ मुक्तावली, नवनीत कवि (मथुरा), पत्र—१४, आकार—
११ × ७ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४४, परिमाण (अनुष्टुप्)—७७०, पूर्ण, रूप—साधारण,
पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, कांकरोली, श्री विद्या विभाग, हि०
व० ५३, पु० स० ८ ।

आदि—॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री द्वारकेशोजयति ॥

॥ दोषेहा ॥

श्री गुरु चरण प्रणाम करि वक्रनुष्ट सिर नाय ।

विप्र बाल नवनीत उर सादर शेष मनाय ॥ १ ॥

अथ मनोरथ मुक्तावली प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥

श्री गोवर्द्धन धरण के चरण कमल की नाव ।

रे मन भवसागर उत्तरि वहरि न हूजो दाव ॥ १ ॥

मध्य—पृ० १५

॥ कवित्त ॥

आपु कुल बालक विचारौ नेक मन माहि नगन उधारी नारी पट कस लीजिये ।
कौन कहे बालक विचित्र गुन तेरे भीत कर कंस की अनीत छवि छीजिये ।
भोरे बलदाऊ भोरी मात है यशोदा दानी भोरे नदराय कौ उजागरनी कीजिये ।
टेर टेरे हरि बलिहारी हो विहारी लाल हा हा अरु वत्सन हमारे गेर दीजिये ॥ १४५ ॥

अंत—इति श्रीमत् द्वारिकानाथ पद पद्य परागानुरक्त गोस्वामी श्री बालकृष्ण लाल
हेत विरचितायां मनोरथ मुक्तावल्यां कवि नवनीत कृते अष्टम प्रकाश, हस्ताक्षर भ्रंरव दत्तेन श्री
मथुरा गी मध्ये गोविंद घाटे समाप्तोऽय ग्रंथः । लेखक पाठकयोः शुभं ।

विषय—श्रीकृष्ण की अनेक लीलाओं का वर्णन कवित्त, दोहा, सोरठा और चौपाइयों
में किया गया है ।

संख्या १८२. नवनीत नवसई, रचयिता—मुंशी नवनीतराय, कागज—देशी, पत्र—
८७, आकार—४। × ३।। इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२११,
अपूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८७७ वि०, प्राप्तिस्थान—
श्री सरस्वती भंडार, विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० स० ७१, पु० स० ५ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ नवनीत नवसई कृति नवनीत राइ मुंशी लिख्यते ॥
श्रीराधिका वर्णनं ॥

मेरी भव बाधा हरो श्री राधा सुभगात ॥

जोन्ह अथक जिद छाह ते ह्वै है सांभ प्रभात ॥

तजि तीरथि हरि राधिका मुखद्युति दृग अनुराग ॥

केस स्याम दृग ध्यान धरि लहि पल सांहि पराग ॥ २ ॥

मध्य—पृ० ७५

जरी उढोनी पीत पट वास छारि ज्यों अंग ।
 पहिरें हरिहर रूपधर विहरो निडर निसग ॥३५॥३८२॥
 कहा करौ तेरे विरह वीत्यों मोहि सरोर ।
 साखी है या वैन कै नैना धरत न धीर ॥३६॥३८४॥
 भोसो चतुराई करन महाभूट जिय जानि ।
 तीन लोक तुम लोक के बाजं दाहि निनानि ॥३७॥३८५॥

अत—जाकी छाई राति दिन दया मया मोहन प्रिया ।
 रोवति जागति राति दिन जपि स्यामा रामा रमा ॥११३॥१६१६॥
 सुरगुरु मुनि जन भक्त पुनि वरने भाति अनेक ।
 लखि तैं एकिउ कहि सकैं वानी स्यामा एकि ॥११४॥१६१७॥

नखसिख समाप्त ॥ अथग्रथ सपूर्ण कर्तव्या । सुपनदर्श श्री सूर लखि मनके सहृदिकास
 नवनीतिराइ मुनिसी लिखी नविसई भरी विलासा ॥१॥

शिवप्रसाद गिरिजा कृपा हरि राधा की प्रीति ।
 कीने नवसत दोहरा सूरि वंसि नवनीति ॥ २ ॥
 दिनकर निसि सुपने लसे नवनीति कृष्ण प्रसाद ।
 कीने नवसत दोहरा जीयके सहज सवाद ॥ ३ ॥

१ ८ ७ ७

संवत् सुरतर सिद्धि अरु दीप चक्र रवि जान ।
 तिथि तृतीया वैशाखा सुदि वारि सोम सुत जानि ॥ ४ ॥
 कृपा करें निदें नहीं दूषन रखें छिपाइ ।
 कवि जन सो बिनती करो हार्थ जोरि तिरि नाइ ॥५॥

विषय—नायक नायिकादि का वर्णन ।

अथ मे कवि ने “विहारी सतसई” के अनुकरण वा न. साँ दे. दे. श्रीर सोरठो मे राधा कृष्ण
 की लीलाओ को आलवन बनाते हुए सयोग वियोग शृंगार का वर्णन किया है ।

संख्या १८३ लीला प्रकाश, रचयिता—नवरगदास स्वामी, कागज—देशी, पत्र—
 ११३, आकार—६ १/६ × ६ ३/६ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (गन्तव्य)—
 १६७७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—धामी पथ (प्रनामी) का
 मंदिर विशुनपुरा, पोस्ट—भागलपुर, जिला—गोरखपुर ।

आदि—श्री किताब लीला प्रकाश ॥

प्रथम प्रनाम निज मूल स्वरूप । चिदानंद जो रूप अनूप ॥
 परम अखंड निज करौ प्रनाम । मम पिंड सदा सोयधाम ॥ १ ॥
 सो सतगुरु करि कृपा अनुनरयो । अपनो मूल बीज लैं मोमे धरयो ॥
 ते बीज भयो उदं अकर । तेज पुज प्रगटचौ सत सर ॥ २ ॥
 तिन किन्हौ मूल तिमिर को नाश । पिंड ब्रह्मांड में कियो प्रकाश ॥
 बोली आतम दिष्टि अपार । पोहोचौ छर अछर के पार ॥ ३ ॥
 जब गुन तत्व नहीं ए कोए । माया मोह अहकार न सोय ॥
 नाहीं प्रकृति पुरुष जीव ए तव । मल इक्ष्या उपजी नाही जव ॥ ४ ॥
 तब ए अर्षंड ब्रह्मपुर अनूप । अक्षर अक्षरति त रचूप ॥
 इहां सत चित्त आनंद रूप है सार । एस गुप्त हैं भेद अपार ॥ ५ ॥

अकथ कथा यहाँ की है । जेह वेद विव गुप्त कहो तैह ॥

ए गुप्त छमक्या लपी जी ने जाप । ते ब्रह्मपुर को भेद जो पाए ॥ ६ ॥

अंत—करी कृपा धनी जो मोही ते जाने धनी की धनी जी सोए ।

सुंदर साथ कहो मैं कौन । पार न पावो ग्रही मे मौन ॥७३॥

पांच सरूप अतर मे रही । लिला प्रकास कहो ते सही ॥

श्री देव चंद्र और श्री राज । सो वंटे मेरे सिरताजा ॥ ७४

श्री सुंदर श्री इंद्रावती । निज 'नवरंग' जुगल रंगरती ॥७५॥३०॥

जीला गोरपपुर पोस्ट भागलपुर अस्थान वीसुनपुरा श्री ५ महाराज वृजदास जी का एह ग्रंथ है लीला प्रकास है द० वलीराज दास ॥

विषय—धामी पथानुसार ब्रह्म के अवतारों की लीलाओं का वर्णन ।

संख्या १८४. कहरनामा (ककहरनामा), रचयिता—नवलदास, कागज—देशी, पत्र—६, अकार—७ १/४ × ६ ३/४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुपृष्) — ९५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—स० १९२३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत भोलानाथ जी (उप० भोरेलाल) ज्योतिपी, ग्राम व पोस्ट—धाता, जिला—फतेहपुर ।

आदि—श्री गनेसहाए नम ॥ श्री कहरनामा लीषते ॥ प्रभु जगजीवन समरथ सई ॥

भवन भवन वीसर मरे "दास नेवल" जेन्ह के एक चल ।

गावत कहर नाम रे मंदिर जोती जोतते ॥

नौरगुन फीरी रहे सुनी समझरे "दास नेवल" जो सुनंही मीलेजै ॥

फोरि नहीं आवा जाइ रे ॥

अंत—अस वेदर दीन्ही दुष दीन्ही देषत सव नरनरा रे ।

गुर साहेव समरथ का भंटी रही चरन लपटाइ रे ॥

वर वर प्रभु, चरन मनय "दास नवल" वर पइ रे ।

कहर नाम सपुरन समापत सुभ समत १९२३ सल महीन कुअर सुदी नोमी दीन अतवार मोकाम वेनु के छावनी वषतावर दास वंरागी के मकान प्रतएर भए है रूपन दास महत गरंथ के मालीक है ॥ संपुरन भए जगजीवन सहेव के प्रताप से लीप दखत वर दास वंरागी ॥

विषय—ककहरा रचकर जानोपदेश दिया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—त्रोधकृत 'भक्ति विनोद' और प्रस्तुत रचना एक ही हस्तलेख मे है ।

संख्या १८५ नागरीदास जी के कवित्त सग्रह, रचयिता—नागरीदास जी, पृष्ठ—२ से ७२ तक, अकार—८ ॥ × ६ ॥ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, अपूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८७३, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग काँकरोली, हि० व० स० ६४, पु० स० १२ ।

आदि—

एक जरीदार सेत ओढनी को ओढें दोऊ नृत्यत सुधंग गति मिलि ततकार मे ।

मुख नैन भूपन चिकुर कल काति पुली चांदनी सरद स्वच्छ सागर के वार मे ।

नागर मयंक मीन मानो मनिगन सिवार कंज काम धीवर गहे हें रूप जार मे ॥ ४ ॥

मध्य—पृ० ४७-४८

जमुना के बीच फैली झनमल छपाकर की पावत न पार तिहि सोभा के बखान की ।

बली जात मधु धार नवका विहार चाह कंधो प्रतिबिब यह ताके रतनान की ।

किधों दीपमालिका कौ उत्सव वरन ग्रह नागर प्रकास यह जोति सरसान कौ ।
किधो कोरिक अन्हत चद चार किधो चमकं चपल भयो चूर चपलान कौ ॥१७७॥

अत—इति श्री नागरी दास जी के कवित्त संपूर्ण ॥ सवत् १८७३ मे चंद्र सुदि ६ शुक्र-
वार श्री गोल मे लिखे देवाधि लडेंती लाल भट्ट नें लिखाये श्री गोस्वामी ब्रजपति जी महाराज नें
स्वार्थ परार्थ ॥ शुभम् ॥

॥ दोहा ॥

लिखि दीने हें कवित्त ये अपनी प्रति अनुसार ।
सोधि लीजियो रावरे श्री ब्रजपति अवतार ॥ १ ॥
कोरिक देत असीस हम ही ब्रजपति महाराज ।
लाल लहौ आनंद गहौ करौ सु अबिचल राज ॥ २ ॥

विषय—नागरीदास जी के बनाए हुए शरद, दिवाली, गोवर्द्धन पूजा, होरी, फागुन,
ग्रीष्म, गंगा जी, वर्षा, मान, बाल लीला प्रभृति विषयक कवित्त संग्रह ।

विशेष ज्ञातव्य—पुस्तक का प्रथम पृष्ठ नहीं है । अत मे कुछ पत्ते खाली छटे हुए हैं ।
अक्षर सुव्याच्य हैं ।

संख्या १८६. समं प्रबध सेवा सात समे की भावना, रचयिता—नागरीदास (हित
संप्रदाय), कागज—देशी, पत्र—२०१, आकार—४ ३/४ × ६ ३/४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७,
प रमाण (अनष्टुप्)—१४६५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स०
१८६३, प्राप्तस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह ५०७।५५ वस्ता), काशी नागरी-
प्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि—श्री राधा वल्लभोजयति ॥ श्री हितहरिवंशो चद्रो जयति ॥ अथ समं प्रबध
सेवा सात समं की भावना वाणी अनुसार लिष्यते ॥

तृपदाच्छिद

श्री हरिवश चद्र सुभनाम । सब सुष सिधु प्रेम रस धाम ।
जाम घटी विसरें नहीं यह जु परचो मोहि सहज सुभाव ॥
श्री हरिवश नाम रस चाव ।
नाम सुदृढ भवतरन को नाम रटत आई सवसोहि ।
देह सुबुद्धि कृपा करि मोहि ॥
पोइ सुगुन माला रचो ॥
नित्य सुकंठ जु पहरो तास । जस वरनो हरिवंश विलास ॥
श्री हरिवंशहि गायहो ॥ १ ॥

मध्य—राग मन भावती

जै जै श्री हरिवश कहौ मिलकें ।
सुंदर व्यास सुवन जन वल्लभ करि दरसन पायन चलिकें ॥ १ ॥
प्रेम पियाला परगट कीया पीया सत सगत मे रलि कें ।
चढी धुमारी महामधुर रस जुगल रूप नैननि मे ऋलकें ॥ २ ॥
करुणा करकें अभे पद दीयो कीये पावन या वत्कें ।
मेटी आनि कान व्रत संजम एक धर्म राधा वर कें ॥ ३ ॥
अगनित जग मे रंक जिवाए श्री राधा वल्लभ नाम अमृत फलकें ।
सरनाए अपनाए निज करि कृष्ण दास हित बलि बलि कें ॥ ४ ॥ ८५ ॥

इति श्री सने प्रबंध सेवा सात सने की भावना श्री वाणी अनुसार सपूर्ण संमत १८६३
भादो सुदी ८ ॥

विषय—हित सप्रदाय के अनुसार सात समय की सेवा की भावना ।

संख्या १८७. रामविहार, रचयिता—नाथ कवि, कागज—देशी, पत्र—७२, आकार—
६३ × ४३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१०, परिमाण (अनष्टुप्)—१५३०, पूर्ण, रूप—प्राचीन,
पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८६८ वि०, प्राप्तिस्थान—प० धुरवल जी पाठक,
ग्राम—सोनपाल, पोस्ट—मुवारकपुर, जिला—आजमगट ।

आदि—श्री गरुशाय नमः

॥ सोरठा ॥

गणपति गौरि मनाय सुमिरि हिये विच सारदा ।
सब मिलि होहु सहाय वरनौ रामविहार कछु ॥ १ ॥
कहि हौं सोइ सवाद जो गायो है सूत ने ।
सुन्यो सहित अल्हाद सौनकादि नैमिय विषै ॥ २ ॥
ग्राए राम विवाहि तवते अवध अनंद भल ।
सुखसागर अवगाहि छके नारि नर मुदित मन ॥ ३ ॥
एक समै रघुवीर सहित सिया वंगलें बैठि ।
निरपत पुरी गंभीर कहत जानकी सो हरषि ॥ ४ ॥
सुनु मिथिलेस कुमारि पुरी अवध एह सुभग ।
निर्मल सरजू वारि लेत हलोरा हरत मन ॥ ५ ॥
गुर वशिष्ट लै आय मान सरोवर सो नदी ।
रहेउ सुजस जग छाव वासीपटी यह गग हैं ॥ ६ ॥

मध्य—रनिवासन्ह अन्तान करावा । दियो दान जेहि जस मनभावा ॥
गई पट मदिल सब रनिवासा । भई सुचित तव कीन्हो वासा ॥
रघुवर भाइन्ह सहित नहाए । द्विजन तुरित गोदान कराए ॥
आए वेगि सुमंत नहाई । कियो दान बहु दिधि सुष पाई ॥
मषशाला की पूजा करहीं । जानी सकल मोद मन भरहीं ॥
आए डेरा राम सुजाना । विप्र जेवाय दियो बहु दाना ॥
करि भोजन तव चारों भाई । रनिवाँसन समेत सुष पाई ॥
वजी नौदनें हुपहर डरिगे । जात्रा ठाँव ठाँव सब परिगे ॥
करत कोलाहल दिन नव बीते । राति जाग्रन कियो सप्रीते ॥
भयो भोर टंग तव बोला । उठि सुमत कह वचन अमोला ॥
करहुँ सोच रघुवीर सुरता । सुनत वचन उठिकै भगवता ॥

अंत—

॥ दोहा ॥

अष्टोत्तर सत पाठ जो करे हई हरपाय ।
ताके हिय भीता सहित रामराय बस आय ॥ ८६ ॥
अष्टादश शत अठलठें संदत सुचि इपु मास ।
सुवल पक्ष हईजी गुरी वेला अमृत प्रकास ॥ ६० ॥
पूरण भी रघुवीर जम चूरण भवरुज केर ।
नाथ कृपाल दयाल बड़ सुमिरौ साँझ सवेर ॥ ६१ ॥

एहि विधि राम विहार की कथा कही कछु "नाथ" ।
 कविता रोचक नहि बनी गायो प्रभु गुनगाय ॥
 कहाँ सूत हरषाय सुन्यो सौनकादिक सब ।
 रामविहार सोहाय मगलमय रघुवीर जस ॥ २६४ ॥

इति श्री सुन (? सूत) सौनक सवादे राम विहारे प्रथम परिच्छेद परिपूर्णमस्तु शुभमस्तु ॥

विषय—रामचन्द्रजी ने स्त्री श्रीर भाइयो सहित जो जो आनद विहार किए उनका वर्णन ।

रचनाकाल

अष्टादशशत अठसठे संवत सुचि ईषुमास ।
 सुक्ल पक्ष द्वैजि गुरौ बेला अमृत प्रकास ॥ ६० ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल सवत् १८६८ है । लिपिकाल दिया नहीं । रचयिता का नाम नाथ कवि है । रचना दोहे, सोरठे श्रीर चौपाई छंदों में की गई है । भाषा अवधी है ।

पुष्पिका के अंत में प्रथम परिच्छेद की समाप्ति की सूचना है जिससे पता चलता है कि आगे भी कुछ परिच्छेद होंगे । ग्रंथ सूत शौनकादि ऋषियों के सवाद के रूप में है । यह किसी पुराण के आधार पर लिखा गया विदित होता है ।

पुष्पिका में लिपिकाल नहीं दिया है जिससे पता चलता है कि प्रस्तुत प्रति रचयिता के हाथ की ही लिखी गई होगी ।

संख्या १८८. कवित्त, रचयिता—कविनाथ, कागज—देशी, पत्र—२, आकार— $६\frac{१}{४} \times ६\frac{१}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३५, परिमाण (अनुष्टुप्)—४८, अपूर्ण (खंडित), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—पंडित विश्वनाथ दुबे, ग्राम—रेकवारे डीह, पो०—मऊ, जिला—आजमगढ़ ।

आदि—

सुन्दर मनोहर कविताई कलाप गुण नहि हिय मेरे एक लालसा अमोल है ।
 सुकहि दरसायो आततायी समान यह एते वज्र पापी मतवादी कुड गोल है ।
 नान्हक कबीर दरियादासी अतीत गए शीषा शठकोप जो अनेक पंथ टोल है ।
 वैरागी श्री अचारी शिवनारायनी समूह एते धर्म कर्म दूषक दयानदी पापमोल है ।
 अंसही नवीन श्री विचित्र पथ वाले यह कहैवा से आए एको बुझ ना परत है ।
 वेद और शास्त्र सब वर्णका व्यवस्था लिखी आश्रम सहित तामे एको ना करत है ।
 कहत वैरागी अचारी हम साध है पूछ कोई वर्ण आश्रम क्रोध से भरत है ।
 भनत 'कविनाथ' यह देखिए विचारि समै कौन शास्त्र आवै सभ अलग धरत है ॥

:०:

:०:

:०:

अंत—

आश्रमी सुसाधु को नमसकार बार बार सुनिके गृहस्थ पुनि आश्रम बिसारो ना ।
 ब्रह्मचर्यं गार्यहस्थ वानप्रस्थ आश्रम पं चौथा संन्यास एक आश्रम विचारो ना ।
 लखिके सभ आश्रम एक अनाश्रमी विचाराको करन साकारहेतु तिनिकोपुकारो ना ।
 भनै कविनाथ मोक्ष.....तुम दांत को विचारो ना ॥

:०:

:०:

:०:

विषय—कवीर आदि के मतो का खडन तथा वर्णाश्रम धर्म की पुष्टि का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ के केवल दो ही पत्रे उपलब्ध हैं । रचयिता कवि नाथ हैं । रचना-काल तथा लिपिकाल अज्ञात हैं ।

संख्या १८६क "सलोक महलानो" (?), रचयिता—नानक, कागज—देशी, पत्र—४, आकार— $७\frac{5}{8} \times ५\frac{5}{8}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुपट्टप)—६४, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री युत गोपालचंद्र सिंह जी एम० ए०, सिविल जज, सुलतानपुर, अवध ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ सतगुर प्रसादि ॥ सलोक महलानों ॥

गुन गोविंद गायो नहीं जनम अकारथ कीन ।
 कहू "नानिक" हरि भजि मना जिह विध जल को मीन ॥ १ ॥
 विषीअन सो काहे रचो निमष न होइ उदास ।
 कहू नानिक हरि भजन मा परें न जम की फोस ॥ २ ॥
 तरगापै यूँ ही गयो लयो जरा तन जीत ।
 कहो नानिक हरि भज मना अवध जात है बीत ॥ ३ ॥
 त्रिध भयो सूझे नहीं काल पहुँचो आन ।
 कहू नानिक नर वावरे क्यूँ न भजो भगवान ॥ ४ ॥
 धन दारा संपत सकल जिन अपनी कर मान ।
 इनमें कछ संगी नहीं नानिक साची जान ॥ ५ ॥
 पतत उधारन भँहरन हरि अनाथ को नाथ ।
 कहू नानिक हित जानि यो सदा वसत तुम साथ ॥ ६ ॥

अंत—

॥ दोहरा ॥

बल टूट्यौ बंधन परचौ रह्यौ न कछू उपाइ ॥
 कहो नानिक अच ओटहर गज ज्यूँ होउ सहाइ ॥ ५३ ॥
 राम नाम उर मै गहो जाके सम नही कोइ ॥
 जिह सुमरत सकट कटै दरस तिहारो होइ ॥
 वध सखा सभ तजि गए कोई न निभयो साथ ॥
 कहू नानिक इह विपति महि एक टेक रघनाथ ॥ ५ ॥
 नाम रह्यौ साधू रह्यौ रह्यौ गुर गोविंद ॥
 कहू नानिक यह जगत मो क्यूँ न भजो भगवंत ॥ ५६ ॥
 महल ॥१०॥

बल हूवा बंधन छूटे सभ कछ होत उपाइ ॥
 सभ कछ तुमरे हाथ है तुमही होत सहाइ ॥ ५७ ॥

(संभवतः अपूर्ण)..... इसके बाद अन्य ग्रंथ इसी से संयुक्त है ।

विषय—सत मतानुसार ज्ञानोपदेश ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ अपूर्ण प्रतीत होता है । इसके केवल चार पत्रे उपलब्ध हैं । अतः मे महल दस के पश्चात् केवल एक दोहा उद्धृत है । इससे विदित होता है कि अगला महल (ग्यारहवाँ) अपूर्ण है । रचनाकाल तथा लिपिकाल अज्ञात हैं । रचयिता "गुरु नानक" हैं ।

संख्या १८६ख. बद्धक (नानक जी ग्रंथ का मनु), रचयिता—नानक कवि, कागज—देशी, पत्र—७८, आकार— $६\frac{5}{8} \times ४\frac{5}{8}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुपट्टप)—३०४२, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—हिंदू साहित्यसम्मेलन, प्रयाग, इलाहाबाद ।

आदि—१ ॐ सति नाम करता पुरखु निरभउ निरबंरु अकालि मुरति अजु नीसै भंगुर प्रसाद ॥

गिरंथ वैद्य (नानक) नकाना जिआ गिरथा का मतु । नवल खास कलम ॥ सरब रोग का अउखधु नाम ॥ नाडी की परीखिआ लिखतं ॥

कर अगुट्ट जु मल ही वैखहु नस आकार ।

जानहु डुखु सुखु जीअ को पडित करहु बीचार ॥

:०:

:०:

:०:

भूष हीन मुष फीका रहे । उरण पीति कफे जुवर रहे ॥

'नानक कवि' जो कहिओ बषान । भारत लछन राते जान ॥ १ ॥

:०:

:०:

:०:

विरछ लगावण की विधि

१ यपर १ बट २ निम ३ कचूर ४ अंन ५ कंथ ६ बेल ७ तउ नरक न देपे ॥१॥ जवाइए की टिके पुणे लेणी आरास पाणी बीचि पंसा इकु सहतु पावणा चूरन महि पाइके ऊपरहु एहु पाणी पीणा दिने राती एते तरह धाणा नफा बहुत होइ ॥ ५ ॥

अत— जुलाव सनाय ॥

जगी हरउ । सौंफ ॥ पंसा पंसा भर ॥ चार पंसा सकरा ॥

॥ धातुपुष्ट ॥

तुक मलंगा अघेला भर शरकरा के रस साथ । अथवा दुध के साथ ॥ धातुपुष्ट ॥ नौग ३१ अत्रि २१ कपुररस २१ अदरष के रस ॥ निवु का रस खरल करणा गोली ७ ॥ पथ ॥ मूंग का दाल कनक की रोटी घौऊ । पटाई प्रहेज ।

:०:

:०:

:०:

—अपूर्ण

विषय—आयुर्वेद चिकित्सा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल और लिपिकाल का कोई उल्लेख नहीं । रचयिता का नाम नानक कवि है । पता नहीं, इनका सबध प्रसिद्ध सत नानक जी से है या नहीं । ग्रथ के आरभ में तथा आगे जहाँ तहाँ सतो की शैली अपनाई गई है, यथा —

॥

॥१ ॐ सति नाम करता पुरखु निरभउ निरबक अकालि मुरति अजु नीस भंगुर प्रसाद ॥

॥

गद्य में 'न' के लिए 'ण' लिखा मिलता है । ऐसा राजस्थानी और पंजाबी में होता है । अतः संभव है, सुप्रसिद्ध सत "नानक" ही ग्रथ के रचयिता हों । गद्य भी पुरानी खड़ी बोली का है । लिपिकार ने शब्दों को बहुत अधिक मात्रा में अशुद्ध लिखा है ।

संख्या १६० ककहरा, रचयिता—नामदेव, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—५ × ४^३/_४ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—११, परिमाण (अनुगुप्)—२२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—५० श्री कल्लू पाटे, ग्राम—गोराजू, पं०—पच्छिम संगीर, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गरुशाय नमः ।

कहत ककहरा एक संदेसा । गीरजा व्याहन चले महेसा ॥

खाख लगाय डमरु को लीन्हा । भाग धतुर पजाना कीन्हा ॥

गरे नाग शिर लीन्हे गंगा । भूपन भसन चढायो अंगा ॥

घर नहि दूसर भूत बराती । चले चवात बेल के पाती ॥

“नामदेव” इशर अस राजा । करत निहाल गाल के बाजा ॥
 चंद्र लिलाट जटा फन काढ़े । लोचन तीन लोक उजियारे ॥
 छाडि नगरि की लाष सोसऊ । वाहन बयल महेस मगाऊ ॥
 जतन कीन वे लोकी वानी । सोनो सींग मेढा दुइ आनी ॥
 झालर श्री गज मोतिन माला । धन्य बयल शिव शकर पाला ॥
 नाथ हाथ आपुँ पहिराइ । कंचन से पुर लेत मीठाई ॥
 टेकट पाव भँय अवन वानी । चले महादेव जग के दानी ॥
 ठाड़ भये इस्वर अस राजा । करत निहाल गले के बाजा ॥
 डूहका वँल लवाई वूकी । को जाने महिमा शिवजी की ॥
 ढाढोल फिरँ नहिँ डंका चले महाजोगी शिव शंकर ॥
 नारहर वेग वेग विन लछन । तहा तुलछन तहा हेवंचल ॥
 तहा पवर भँ शकर आए । नग्र के लोग देपन सब धाए ॥
 थान सूत कचन के नीके । माडव राचा हेवंचल जी के ॥
 धामधूम धवराहर ऊचा । देष सरूप नयन भर नीचा ॥
 नाहक व्याह हेमंचल कोन्हा । गौरा रूप डिगवर लीन्हा ॥

अंत—

पारवतीन से पवर जनाई । वरवाडर तर भाग चबाई ॥
 फासी दँ जिव सजौ भवानी । सषी सोच गौरा मुसकानी ॥
 उला देषी चली सहेली । पारवति नकाढ़ छाडो अकेली ॥
 बयल चढ़ा एक आवँ नगा । आठौ अंग सकल तन भंगा ॥
 भांग घतूर के षाष लगाये । काली नाग गरे लपटाये ॥
 मनसा सोच करँ नहिँ कोई । करम लिखा भर पावा सोई ॥
 जवँ वरात दुआरे आई । विचका वँल बाघ गुराई ॥
 रानक गिरिजा देषि तमासा । सपी सोच हेवान हुलासा ॥
 लालीत पाव हेवान पधारे । मोतीन चौक जहा वँठारे ॥
 वारे हीरा करँ नेवछावर । शंकर गौर फिरँ दुइ भावर ॥
 सोस मपति तुम देउ लुटाई । अचल कीन हेवंचल जाई ॥
 हरषे देव फूल वरसाइ । ब्रह्मा विपणु तमासे आई ॥
 ॥ इति शिव विवाह संपूरण ॥

:०८

:०:

:०:

—पूर्णा प्रतिलिपि

विषय—प्रत्येक अक्षर पर चौपाई रचकर शिव पार्वती विवाह वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल और लिपिकाल दोनों अज्ञात हैं । रचयिता का नाम भी स्पष्ट नहीं होता । एक स्थान पर नामदेव लिखा मिलता है जिससे वही रचयिता का नाम मान लिया गया है ।

संख्या १९१. रामाश्वमेध, रचयिता—नारायणदास, कागज—देशी, पत्र—२५८,
 आकार—१० $\frac{३}{४}$ × ६ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—६७७२, पूर्ण,
 रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७३९ वि०, लिपिकाल—स० १९१५
 वि०, प्राप्तस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा,
 वाराणसी ।

आदि—श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ अथ रामास्वमेद लिखते ॥

॥ दंडक ॥

कोमल नवल जलजात से अमल जग विमल विरागप्रद राग के हरन ये ।
तीरथ सिधारे कर्म ग्यान अनुसार तातं अमित्त सवारे जग तारन तरन ये ।
सचर अचर सुचि असुचि नरायन से साधहू असाध असरन की सरन ये ।
प्रपति विचारें नैन नंसक निहारे देत कविराजन के पार सेस आनद चरन ये ॥ १ ॥

॥ छप्पं ॥

वंदि परमं गुर चरन सर्वं गुरको सिर नावहु ।
रामानुज पद कमल चारु सतत उर लावहु ।
नीमि पराकुस दास बहुरिया मुनि मुनि कायक ।
राम मिश्र दगकल नाथ निज सुषदायक ।
श्रीसठारि पद वदि कं विस्वकसेन उदार मति ।
सेवहु जगदंबा चरन श्रीनिवास पद कमल रति ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

परमपरा निज गुर की वरनी आदि वनाथ ।
जिनको सरनागत पये भवसश्रत दुष जाय ॥ ३ ॥

:०:

:०:

:०:

अतरवेद के बीच नगीच वहुँ जमुना कौ प्रवाह सुहायी ।
पडित मडित भीर भली जह सर्व थली सुष सपति छायी ।
धूम व सिष्य मुनीसज के तप कौ थल शुद्ध सर्व मनभायी ।
देषत द्वेवपुरी सो लसं सुवसं इक उत्तिम नध इटायी ॥ ८ ॥
तापुर मे हरि मंदिर एक अनेक विवेकन कौ उपजाव ।
श्री नरसिघ वसं नृप आप लषं नर सौं प्रभू कौ पदु पाव ।
होहि तहा निगमागम अर्थ अनर्थन कौ कछु लेसु न आव ।
सत समाज विराजत ता थल श्री पतिराज कौ कूट कहाव ॥ ९ ॥

॥ दोहा ॥

तिहि समीप दुज मडली मायूर वस उदार ।
श्री वसिष्ठ गोती वसं रिगवेदी ज उदार ॥ १० ॥
उपजे तिहि के वंस मे लघुमति उगर नाम ।
श्री वंष्णव कुल सिष्य सौ भयो जानि सुषधाम ॥ ११ ॥
तिन श्री गुर निज करि कृपा हरि सन मजु प्रकास ।
भयो मान चित सोधि कं कहौ नारायन दास ॥ १२ ॥

॥ चौपाई ॥

एक बार तिहि मंदिर जाई । सुनी राम मुष कथा सुहाई ॥
सुनत भयो हिय हरष अपारा । भाषा करि बहु चरित उचारा ॥
गुग पंगु अनुतक अधमादी । कवित विवेक कहत कवि आदी ॥
सौ विचार कछु एक न राषा । रामचंद्र जसु पावन भाषा ॥
जष देवसरि धार सुहाई । मिलहि आनि जल नीच निकाई ॥
होहि सकल ते गंग समाना । धरहि सीत ता कहू बुधवाना ॥

:०:

:०:

:०:

॥ दोहा ॥

संबुड दसु दस सत गनौ अष्ट अधिक इकतीस ।
 नभ सित पछ एकादसी वारु वरनि रजनीस ॥ ५१ ॥

:०:

:०:

:०:

मध्य—

॥ त्रोटक छंद ॥

सुनि बैन कर्पिद्र सरोष भयौ । अरिमर्दन के पद सोस नयौ ।
 तन पर्भ विसाल कराल लसै । रन धाय चलौ धर धुध धसै ॥ ५२ ॥
 जनु काल बली निज रूप धरचौ । लषि चपक हू अनुमान करचौ ॥

:०:

:०:

:०:

॥ छप्पय ॥

सुरथ वचन सुनि कान कहत हनुमान हरषि हिय ।
 तुम प्रवीन नरनाह राम के भक्त प्रानप्रिय ।
 अबस होय प्रन सत्य तोर रन मोहि बाधु अब ।
 तदपि न मैं मन मैं डरौ धरौ धनुहाथ जब ।
 अतिसमरथ रघुवंस मनि प्रनत जानि मोचन करै ।
 लषि न सकै दुष वास के परब्रह्म सब तैं परै ॥ ६ ॥

:०:

:०:

:०:

॥ चौपही ॥

रन भंडल कपि वधन होई । सुनि आचर्ज करौ जिन कोई ॥
 सदा सुतंत्र एक रघुराया । तासु विवस सब विस्व निकाया ॥
 जिमि नट विवस दारु की ममा । तिहि विधि सबहि नचावत रामा ॥

:०:

:०:

:०:

अंत—

॥ डंडकु ॥

भवभय हारी पर उपकारी हरि लोकहि कौ दारिद विदारी सो-विहारी दिति दसु है ।
 कविन विचारी अधिकारी है वान सव कहत सुनत सुष देत सरबसु है ।
 ग्यान कौ समाज ग्यान माननु कौ साजु जोग जप कौ जिहाज सुधा सार कौ सरसु है ।
 चापड कौ चाव है नरायन कौ जीती दाड मेरे मन भाव सियाराम जू कौ जसु है ॥ ६१ ॥

इति श्री पद्म पुराणे पातालखंडे सेस वात्सायन संवादे नरायनदासे विरचिताया अरसठ
 कौ अध्याय ॥ ६८ ॥ इति श्री रामाश्वमेध जंग्य कथा संपूर्णम् ॥ श्री राम... पुस्तक
 पठनारथी मोतीराम पुजारी श्री गोपीनाथ जी के रूप वांसमध्ये समाप्त संमत ॥ १९१५ ॥
 जेठ बदी ॥ १० ॥ सोमवार लीपतं गोविंददास ॥ श्रीराम जी... ॥

विषय—पद्म पुराण के आधार पर रामाश्वमेध वर्णन ।

रचनाकाल

संबुड दसु दस सत गनौ अष्ट अधिक इकतीस ।
 नभसित पछ एकादसी वारु वरनि रजनीस ॥ ५१ ॥

:०:

:०:

:०:

संख्या १९२क. गोवर्द्धन लीला, रचयिता—दास-नारायण (ब्रजवायिधा), कागज—
 देशी, पृष्ठ—१३ (६६ से १०८), आकार—५। x ६। इंच, पक्ति, (प्रतिपृष्ठ)—२०, परि-
 माण (अनुपुष्प)—६०, पूर्ण, रूप—माध्याग्न, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८२८
 वि०, प्राप्तस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० २२, पु० सं० ४।

आदि—रागा बिलावल ॥

गोद वेठी गोपाल कहें तव ब्रजराज सों,
अही तात एक बात सुनो दे श्रवन हमारी ॥
भवन, माऊ हूँ गयो धरी जहाँ सोंध धनेरी,
मे हसि मांग्यो पाय पे मंया दे री मोय,
कर लकुटि लिये खीजि कह्यो रे यह बयो देऊ तोहि ॥ १ ॥

मध्य—

कान्हू गए हूँ पटपीत आनि जब घोरी बोली ।
लेहडो फेरि बछ के सन्मुख हो री ॥
छुव बछ अकुलायकें डाढ मेलिस महा आय ॥
भली भली खेली कहें हो कोन गोप की गाय ॥ २० ॥

श्रंत—

वृज वासी लोक देत ब्रजराज दुहाई ॥
जे जे शब्द उचारि हमारो देव कन्हाई ॥
दे अशीस घर कूँ चले ग्वाल गोप ब्रज नारि ॥
ब्रज जन गिरधर रूप ये हो वारचो तन मन डारि ॥
कहत ब्रज वासिया ॥ ४० ॥

इति गोवर्द्धन लीला संपूर्णम् ॥ ॥ ॥ लिखतं वनसीधर संवत् १८२८ के
आसोज सुदी १२ रवौ ॥

विषय—श्रीकृष्ण की गोवर्द्धन लीला का वर्णन ।

संख्या १६२४. स्वामिनी जी को व्याह, रचयिता—दाम नारायण, कागज—देशी,
पृष्ठ—६ (३२ से ३८), आकार—७। x ६। इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनु-
ष्टुप्)—१०५, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—श्री सरस्वती भंडार,
श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० २४, पु० सं० १ ।

आदि—अथ श्री स्वामिनी जी को व्याह लिख्यते ॥ राग बिलावल ॥

ब्रज वेद वदित वरसानो, वृषभान गोप तहा आनो ॥ १ ॥
ताकी राधा सचिर कुमारी, पिता मात हे प्रानपियारी ॥ २ ॥

मध्य—

तव हसि उठि ब्रज बाला, भले डहके नदलाला ॥ ६७ ॥
एक कहे कह्यो सुनि मेरो, एछूयो नरवेहे तेरे ॥ ६८ ॥
तेरी देह काति अति कारी, ये कंचन वरन कुवारी ॥ ६९ ॥

श्रंत—

वाढ्यो विविध विनोद अपारा ॥
कवि वरने कोन प्रकारा ॥ ११८ ॥
जहाँ रोस सारदा हारें ॥
तहाँ कवि जन कोन विचारे ॥ ११९ ॥
जाको श्रंत न कोउ पावें ॥
ताको दास नरायण गावें ॥
इति व्याह खेल संपूर्ण ॥

विषय—राधा जी के विवाह का वर्णन ।

संख्या १६३. नाम कुसुममाला, रचयिता—नारायण सिंह नृप, कागज—देशी, पत्र—
२३, आकार—१३। × ७ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२६०,
पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सवत् १७२० वि०, प्राप्तिस्थान—
श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० स० ६१, पु० स० ४ ।

आदि—श्री कृष्णाय नमः ॥ अथ नाम कुसुम माला लिख्यते ॥

॥ लील्हा छंद ॥

श्री नारायण मंगल कारक विघ्न अमंगल मूल विदारक ॥

बहु करुनाकर अतमत दायक दे प्रज्ञा प्रभु होइ सहायक ॥ १ ॥

अथ पिंगलोक्ति लील्हा छंद ॥ लहु गुरु अछर नेम न सधिग पय पयमता षट इस बडिग
लील्हा छंद सरस फल मडिग सुनखग राज वैरमन छंडिग ॥ २ ॥

मध्य—पृ० २०

अथ कूर्मनाम दोहा ॥

कमठ कूर्म कछप यहे अमर बतायो भाव ॥

प्रणम कूर्म बलवान जिहि धरा धरी दृढ़ राख ॥ १४ ॥

अथ जलौका नाम दोहा ॥

कहत जलौका नाम पुन यहे रक्तपा जान ॥

ग्रंथ गुल्म रस पान कर होत अंत सुखदान ॥ १५ ॥

अंत—अथ समान नाम दोहा ॥

सम साधारण तुल्य निभ प्रतीकास संकास ।

सहक सहस जु सदृष्य पुन यह समान नीकास ॥ ३० ॥

इति शूद्र वर्गः ॥ दोहा ॥

स्वर्ग वर्ग ते अंत लो शूद्र वर्ग इति जान ॥

नृप नारायण दास किय विस वर्ग अभिधान ॥ ३१ ॥

नृप विरचिते नाम कुसुम माला समाप्तम् ।

विषय—कोश विषयक ग्रंथ । इसकी रचना हलामुध, धनजय कोश, हेमचंद्र कोश,
अमर आदि ग्रंथों के आधार पर हुई है ।

संख्या १६४ माया को अंग, रचयिता—नित्यानंद, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—
८ १/२ × ६ १/२ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४४, अपूर्ण, रूप—जीर्ण
शीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८६८ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय,
नागरीप्रचारिणी मंडा (याज्ञिक मण्ड), काशी ।

आदि—

..... ॥ ज्यो ज्यो भागाप्रात स प्यास चौगुनी होय ॥७४॥
माया रस ज्यु ज्यु पीवै त्यू त्यू वाढ दुप ॥ नितानंद कहि किन पाया सुष ॥७५॥
मायारस ज्यु ज्यु पीवै त्यू त्यू वढे पियाम ॥ जनम जनम भटक पड़्या पहर गले . . . ॥७६॥
माया सुप संसार में नितानंद दिन चारि ॥ देषत ही चलि जाइगा फिर दुष वारंवार ॥७७॥
माया कासु नंद मत भूल ॥ इक छन सुष दिखलाइ कर मार मिलावै धूर ॥७८॥
यह सब माय मूग जल क ॥ झूठा चिलका देषकर हुवे जीव हैरान ॥७९॥
माया का सुप दुप भरया भोगे लो पछिताय ॥ हरि बिन . . . दुनिया से दिल लाय ॥८०॥
माया मोहे मूगध नर माहिय दिया विसार ॥ बाजीगर बाजी रची अंसा ज ॥८१॥

मध्य—

माया के हित तप करे सब जाहि वन माह ॥ माया के हृत दुप सहे साहिब से हित नाहि ॥१८॥
 ...के हित साधना माया के हित जाय ॥ माया से हित लग गया बिसर आप मे आप ॥१९॥
 माया के हृत धरम.....हृत दान ॥ नितानंद फल भोगवै फिर माया में श्रान ॥२०॥
 माया के हित व्रत करे माया सजय ध्यान ॥ मा.....लगै जग में श्रावन जान ॥२१॥
 माया के तीरथ बने माया के हित न्हाय ॥ नितानंद फल फल में मूरुप दि..... ॥२२॥
 मोटी माया प्रगट है कीनी घट के माह ॥ जित तित माया विस्तरी जितानंद कित जाह ॥२३॥

अंत—विष का अमृत नाम धरघा.. किन्हूं भोगी ॥
 ब्रह्मा विष्णु महेश लौ तपसी श्रर जोगी ॥७०॥
 माया दीन्ही श्रासिका हरिजन की दासी ॥
 बिलवै नहि आदरी जिभ जिअ विनासी ॥७१॥
 साकत के सिर पे रहे साधन के पाई ॥
 साकत सेती भंडरी सतन सुष (दा) ई ॥७२॥
 गुरु गुमानी दास जी मस्तक करि दीय ॥
 माया बीषै समुह सै पारागत कीय ॥७३॥

इति श्री निदानंद जी ऋत माया कौ अंग सपूर्णः सवत् १८६८ पौष सुदी ९ भौमवार सुभं
 मस्तु ११

विषय—इसमे सासारिक जीवो को माया जिस प्रकार घेरे हुए है, उसका वर्णन है ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ के आदि के ७३ पद लुप्त है । यह अत्यंत जीर्ण शीर्ण दशा मे है ।
 अक्षर भी यत्र तत्र मिट गए है और उनकी स्याही उड गई है ।

संख्या १९५. रस रत्नाकर, रचयिता—निरमल कवि, कागज—देशी, पत्र—१९,
 आकार—६ $\frac{३}{४}$ × ४ $\frac{६}{८}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९६,
 अपूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७७३ वि०, प्राप्तिस्थान
 —५० रामधारी जी चौबे, ग्राम—पैना, पोस्ट—बरहज, जिला—गोरखपुर ।

आदि—श्री गणेशायनेम. ॥

देवी पूजि श्वरसती पुजे गुर के पाए ।
 नमस्यकर कर योरी पु कहे महा कविराए ॥ १ ॥
 विविधी गर्थ बहु युगते आइरुवेद पुपाए ।
 भाषा चिकित्सा समुक्ति चित दोह छंद बनाइ ॥
 एहि विधी ते मन ललित भौ कलि के कविन्ह मनाइ ॥ ३ ॥
 नाम धरचौ एहि ग्रंथ को लोइ ॥
 नारि लछन सब दोष के जाते प्रगट होइ ॥
 सब(?त) सतरह सै तीहलरी समे मास कालीक ।
 वारयु भौम वषान तीथ तेरस मन देइ ठीक ॥
 गाउ चडे सवस कछुक दी(?व) स पक्ष अधियारे होइ ।
 रसरतनाकर नाम ही प्रगट कीयो नर लोइ ॥
 प्रारा आदि यु धालु कही सिद्ध श्रिया सब जानी ।
 एक ही एक यो रस विधि बानि पं जानि ॥
 सुरबानी ते प्रगट के रन(?नर) बानि भाषा श्रानी ॥
 निरनमल काएथ नाम कवि कृपालु सब जानु ।
 यनु वादो यो इही ग्रंथ मे ताते कही सुजान ।

॥ अथ नारि परिक्ष्या ॥

कर अगुठा जु मूल ही धमिनी जिव की साज ।
ताहि थिआदी जो दीजिय पंड भापत राज ॥

:o:

:o:

:o:

अंत—

॥ अथ मंद नवीश्वर औषधक नाउ ॥

कास्वाप्त छार दीरकत वीकार पीतराज रोग पंडु रोग मार्य कैं पीरा सर्व व्याधी नवारौ ।
चीची हासेर ॥ अरुसे की जर्री का वोकला पाउ ॥ अठैया जर्री पात समेत सेर ॥ अवराठा पव ४
जठामासी ठा १ वोही पानी पीसी घौड मह पकु करवैं घौड कर नास चीइ के पद्य नामयेलोउ वं
पंथ प्यावैं साठी का चाउर मलहम नाउ एकर नीका होइ दीन १४ मह ॥

इति श्री पंडित रत्नाकर वैद्य निरमल (?कवि) वीचीताया दुतीयोपान ॥ २ ।

:o:

:o:

:o:

अथ औषधवाल के पंट उष का सोटीटा ५ मधु टा ५ बरीआर के जर्री टा ५ धनिआ टा ५
जीरा टा २ गजर के जर्री ट ५ पोसता २३ सव ग्रस्ट वीप कैं देव मधु मेली पीआइव दीन ३
नीका होइ ॥

विषय—आयुर्वेद विषय का वरणन ।

अथ अध्यायो (सोपानो) मे लिखा गया है । दूसरे सोपान के आगे कुछ अश और लिखा
है जो बिना पुष्पिका दिए छोड़ दिया गया है । रचनाकाल सवत् १७७३ है । लिपिकाल नहीं
दिया है ।

रचनाकाल

सव(?)त सतरह सैं तीहतरी सम मास कातीक ।
वार यु भौम वपान तीथ तेरस मन देइ ठीक ॥

विशेष ज्ञातव्य—अथ अपूर्ण है । रचनाकाल सवत् १७७३ है ।

संख्या १६६. हरितालिका व्रत कथा, रचयिता—निर्मलदास, कागज—देशी,
पत्र—६, आकार— $८\frac{३}{४} \times ४\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—७५,
पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८३६ वि०, लिपिकाल—
स० १८३६ वि०, प्राप्तिस्थान—प० राम गिरोमन तिवारी, उपनाम 'दादू', ग्राम—बहादुरपुर,
पोस्ट—पच्छिम शरीरा, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गरुशाय नमः ॥ श्री शारदा सहाई ॥

अथ पूजामंत्र

सिवायै सर्वं भगव्यै शिवायै च नमोस्तुते ।

सिवायै च नमस्तुभ्यं शिवायै सततश्रमः ॥

:o:

:o:

:o:

॥ दोहा ॥

सम्बत ठारह सव क्षतीस भाद्र शुदी अरु बुद्ध ।

क्षठि विशाय भापा करौ शुमिरि राम अतिशुद्ध ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

वंदी रघुवर पद जलजाता । प्रणतारत भंजन सुखदाता ॥

शिव उर मानस भंजु मराला । शुमिरित जिन्है मिटै जगजाला ॥

ते पद चिनै करौ कर जोरी । जासी भनित होइ नहि धोरी ॥

गुर दयाल पद करौं प्रणामा । शुभिरत जिन्है पाव विश्रामा ॥

:०:

:०:

:०:

अत—

॥ छंद ॥

पति सग सहित सोहाग सुष भमलोक अंत सिधावइ ।
यह उमां तिव सम्वाद कहि नर नारि शुभगति पावइ ।
कह "दास निर्मल" जयामति कर जोरि विन सुनावई ।
रघुवीर पद रति होइ जेहि अस जानि तव गुण गावई ॥

॥ दोहा ॥

मो सम दीन न दीन कोउ तुम समान उपकारि ।
अस जिअ जानि चुश्वामि मोहि कृपा करहु त्रिपुरारि ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

प्रणतपाल यह वानि तव सुनहुँ स्वामि रघुवीर ।
महानंद जन जानि मोहि हरहु सकल भवभोर ॥१०॥

इति श्री भविष्यपुराणे उमामहेस्वर सम्वादे ॥ हरतालिका व्रत कथा निर्मलदास
विरन्चिते सुभ मस्तु सम्बत १८३६ षष्ठमी भृगुवारे च मूल च सोमनरुत्था । साधारणो समाप्तच
अस्वनीमास सुक्लयो ॥ मिद पोस्तिक जवाहिर मिश्र टेवा ग्रामे त्रिपटति ॥ शुभमरतु ॥

विषय—हरतालिका व्रत की कथा वर्णन की गई है ।

रचनाकाल

सम्बत ठारह सव क्षतीस भाद्र शुदि अरु बुद्ध ।
क्षठि विशाष भाषा करौं शुभिरि राम अति शुद्ध ॥ १ ॥

सख्या १६७ श्री महाप्रभु जी के स्वरूप चितन को पद, रचयिता—निश्चयदास,
कागज—देशी, पृष्ठ—१, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६४, परिमाण (अनुष्टुप्)—५०, पूर्ण, रूप—
पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, वांकरे.ली,
हि० व० ३६, पु० स० १६ ।

आदि—॥ श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ॥

अथ श्रीमदाचार्य महाप्रभु के स्वरूप को चितन पद ॥ राग ॥

श्री भद्रलभ अगाधि रूप ॥

बिन निज कृपा कोउ नाँह जाँनेँ ए आनद अपार स्वरूप ॥१॥

श्री गोपीजन भक्तवर्य जिनको सेवन के अर्थ विचार ॥

श्री जी करत ही तापात्मक परब्रह्म श्री महाप्रभु साकार ॥२॥

मध्य—

अरु श्री नाथ जगल रूप विशिष्ट साक्षात् श्री गोवर्धन पै ॥

आय विराजे शो जु विचारहु तापै श्री वल्लभ कराय धरत पै ॥१४॥

आप प्रगट ही सेवा स्वल्प करी हँ यातँ जु गुप्त निहारि ॥

अधिक कहा कहँनो अब श्री गोस्वामी जी हुँ यह उर धारि ॥१५॥

अंत—

ए ना भूतो न भविष्यति निश्चय हे अफलित अशं भवित ॥

ताहि तँ ब्रह्मा शिव शेष व्यास आदि अग्यात याके चरीत ॥३६॥

दंबी जन जूदनहि के चरण शरण रहि ईन कि आग्या पैं ॥
रसहू शदा तो अतारथ हो निश्चदास जू ओर कहाया पैं ॥

॥३७॥ १ ॥पूर्ण॥

विषय—श्री आचार्य जी महाप्रभु जी के स्वरूप का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—केवल एक पत्र क एक तरफ यह पुस्तक लिखी है और दूसरी तरफ श्री हरीराम जी कृत 'दान लीला' लिखी है ।

संख्य १६८. इद्रावत, रचयिता—नूर मुहम्मद, निवासस्थान—भादो (जि०—आजम-गढ़), कागज—त्रासी, पत्र—२०८, आकार—११ $\frac{३}{४}$ × ७ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३६६, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—शेख अब्दुल हमीद साहब, गाँव—चितारा, पोस्ट—सुरहन, जिला—आजमगढ़ ।

आदि—॥ विसमिल्लहि रहमाने रहीम ॥

धनि आप जग सिरजन हारा । जें अकाश विन छंभ संवारा ॥
दोऊ जग को आपुही राजा । राज दोऊ जग को तेह छाजा ॥
दीन्हा नैन पंथ पहचाना । दीन्हा रसना ताहि बखाना ॥
वात सुनी तिन श्रवनन दीना । दीन्हा बुध ज्ञान तेहि चीन्हा ॥
गगन के सोभा किन्ही तारा । धरती सोभा मुख संवरा ॥
आप गुपत औ परगट आप आदि औ अत ।
आप चुनै औ देखे लीन्ह मुख बुधवंत ॥

श्रंत—

भयो सपूरन आधी कहता । मानो ज्ञान समुंदर मे बहता ॥
तीन सहस चौपाई भई । देख आई फुलवारी नई ॥
तिन आगे जो सुख सो रहूं । तीन सहन चौपाई रहूं ॥
हूं अभी बहुतेरी दिन केरा । करत बहुत दिन के में हेरा ॥
विद्या ज्ञान बहुत जहा होई । अरथ छिपानी बूझी सोई ॥
नूर मुहम्मद यह कहता है प्रेम की बात ।
ई प्रेमरस जिहमह बुद्धि सोई दिन रात ॥

तमाम शुद जिल्द अब्वल किताब इद्रावत वतारीख २५ महरम लह राम रोज पंच सनबा ॥

विषय—सूफी प्रेम-कथा-काव्य ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अस्त व्यस्त अवस्था मे मिला है । रचनाकाल तथा लिपिकाल का पता नहीं चला । प्रस्तुत प्रति में ग्रथ का केवल प्रथम भाग है ।

संख्या १६९ वाराणसी विलास, रचयिता—पत्रोली देवकर्ण, निवासस्थान—उदयपुर, कागज—देशी, पृष्ठ—३११, आकार—११॥ × १० इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३६६५, पूर्ण, रूप—नया, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८०७ वि०, लिपिकाल—स० १८०८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भटार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० ५४, पु० स० २ ।

आदि—॥ श्री गरुपतये नमः ॥ श्री काशी विश्वेश्वराय नमः ॥ अथ वाराणसी विलास लिख्यते ॥ श्लोक ॥

तं मन्महे महेशानं महेशानं प्रिया भक्तं ॥ गणेशानं करि गणेशानान्तनमनामयं ॥१॥

॥ छप्पय ॥

सुंढा दड प्रचड रग मडित सिदूर वर ।
 भालचद जगवद शुभ्र तिरपुड तास तर ॥
 मनमय सुवन किरीट हेम सिर छत्र विराजित ।
 अलि गुजत मद लोभ लोल कुडल श्रुति राजत ॥
 भुज चारि चार भूषन कलित लवोदर असरन सरन ।
 नित देवकरन वदित चरन हरनदन आनंद करन ॥ २ ॥

मध्य—पृ० १३६ श्री विश्वेश्वराय नमः ॥ सोरठा ॥ दोहा ॥
 पैतीसै उल्लास मे नित प्रति को आचार ॥
 चारि बरन को कहन हें समस विशेष विचार ॥ १ ॥

अगस्त्युवाच ॥

॥ दोहा ॥

महाक्षेत्र अविमुक्त हे महा मुक्ति को दानि ॥
 क्षेत्रनिहू को क्षेत्र यह नगल मगल मानि ॥ २ ॥
 सकल मसानन मे प्रगट कहियतु 'महा मसान ।
 पीठनि मे वर पीठ यह ऊपर ऊपर मान ॥ ३ ॥
 जिनकी मति चाहै करहि तिनहि धर्म की रासि ।
 अर्थिन काज अर्थदा सिषिरथ परम प्रकासि ॥ ४ ॥
 कामिन कामद है सही सुकृतिन मोक्ष सरप ।
 जहां जहां सुनियतु तहा कथासु अमृत रूप ॥ ५ ॥

अंत—

॥ छप्पय ॥

ब्राह्मण माथुर एक जाति जाकी घर वारी ।
 हरजी मिश्रह नाम भक्त गणपति के भारी ॥
 तिनसुत उडव दास आहि जो चतुर सिरोमनि ।
 लछीराम तिन पुत्र देवबानी प्रवीन गनि ।
 जिन समन बियौ भाषाय मे उन असीम की शक्ति सो ।
 मुहि करचौ कवी तब मे रच्यौ यहै ग्रथ शिवभक्ति सो ॥ ६७ ॥
 श्री विक्रम तें वर्ष बीतिगे जबही इतने ।

७ ० ८ १

मुनि नभ बसु अर इन्दु जानि लीज्यौ चित तितने ।
 माधव शुक्लह पक्ष वार रजनीश वपानो ।
 मन्मथ तिथी बिहान सिद्धियोगहि मे जानो ।
 यह ग्रंथ पूर्ण किय ता समे सबन वृद्धिदायक अमल ।
 कहि देवकर्ण याके सुनें फूल नित निज चितकमल ॥ ६८ ॥

इति श्री मत्सकल भूमंडलाखंडलेश्वर श्री मन्महाराणा श्री जगत्सहामात्य पंचोली
 देवकर्ण बिरचिते श्री मत्काशी खंड श्लोकार्यानुकृति निबद्ध व्रज वाक् पटुती वाराणसी विलासे
 अनुक्रमणिकाखण्डानं नाम शततम उल्लासः ॥१००॥ श्लोक सं० २०१ सर्वप्रथा ग्रंथ संख्या
 २२००० सं० १८०८ वर्षे प्रथम आषाढ वद १२ बी लिखितं जोशी रूप जी ।

विषय—स्कंद पुराणातर्गत काशीखंड का द्वितीया पद्यानुवाद ।

विशेष ज्ञातव्य—चमड़े की जिल्द मे यह पुस्तक सुंदर लिपि मे लिखी हुई है ।

संख्या २००. पाराशरी जातक या उड्डुदाय प्रदीप, रचयिता—परमसुख देवज्ञ, कागज—
देशी, पत्र—८, आकार—१० $\frac{३}{४}$ × ४ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—
२५८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८६८ वि०, लिपिकाल—
सं० १९०१ वि०, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, बाराणसी। (दाता—प० सुगंधर
जी द्विवेदी, ग्राम—अजगरा, पो०—मदियारपार, जिला—आजमगट)।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

श्री गजास्यं नमस्कृत्य सिद्धिं बुद्धिं प्रदायकम् ।
पाराशरी जातकस्य भाषा च क्रियते मया ॥
क्षत्रान्वये विष्णुदासस्तेनाहं प्रार्थितं किल ।
पाराशरी जातकस्य भाषा कृत्वा ममार्थया ॥ २ ॥
गूढार्थात्प्रगटीकृत्य मशेषं सुखबोधकृत् ।
पाराशरी जातकस्य भाषा लिख्यतेऽधुना ॥ ३ ॥

सिद्धांत और उपनिषधनमे प्रतिपाद्य ब्रह्मा को श्रद्धांतत्करण रक्त ओष्ठ वीणा को धारन
करे एसा जो कोई तेज हय उसको उपासना करे हो ॥१॥ ऐसी मेरी मति हय उसकी बुद्धि से
पाराशर होरा को विचार करके उड्डुदाय प्रदीप नाम ग्रथ को करत हो । जोतिषिन के हृदय वास्ते
॥ २ ॥ और नक्षत्र दशा प्रकार कइके फल कहने का प्रकार कहत हो और भाव को अदले के जो
सब विचार हय हो सामान्य शस्त्र से बृहज्जातक से जानना ॥

अंत—और नवम स्थान का स्वामी दशम स्थान मे होय और दशम स्थान का स्वामी
नवम स्थान मे होय तो इसको राज योग कहय इस योग मे जीसका जन्म होय सो मनुष्य
विख्यात होय और सर्वत्र विजयवान होय ॥४१॥

पारामरी जातकस्य व्याख्यानं भासया कृतम् ॥ १ ॥ श्री विष्णुदासस्य मुदेयन् माघ
सुखेन च ॥ १ ॥

८ ६ ८ १

बसु रम गज चंद्रे विक्रमार्कस्य वर्षे शिव तिथि शित पुष्ये चाश्विने कृष्ण पक्षे । लिखित-
मिह हितार्थे विष्णुदासस्य पूर्वे तदनु जयपुराख्ये पत्तने ब्राह्मणानां ॥

इति परम शुष देवज्ञ कृतं पाराशरी जातकस्य देश भाषा व्याख्यानं समाप्तम् ॥ सम्बत्
१९०१ शाकाव्याः १७६६ मिति आषाढ कृष्ण पक्षे पञ्चम्याम् ॥

विषय—फलित ज्योतिष का वर्णन ।

रचनाकाल

८ ६ ८ १
बसु रम गज. चंद्रे विक्रमार्कस्य वर्षे ।
शिव तिथि शित पुष्ये चाश्विने कृष्ण पक्षे ॥
लिखित मिह हितार्थे विष्णु दासस्य पूर्वे ।
तदनु जयपुराख्ये पत्तने ब्राह्मणानां ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल सवत् १८६८ और लिपिकाल सवत् १९०१ है ।

संख्या २०१क. आत्मबोध टीका, रचयिता—मूलकार श्री शकगचार्य, टीकाकार—
परमानंद, कागज—देशी, पत्र—१८, आकार—७ × ४ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०,
परिमाण (अनुष्टुप्)—३२५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प०
महानंद पाडे वैद्य, ग्राम—पडित का पुरा (गढवा), पोस्ट—हडिया, जिला—इलाहाबाद ।

। आदि—श्री वासुदेवाय नमः ॥ आत्मबोधः ॥

यह भगवान् शंकराचार्य उत्तम अधिकारियों के लिये श्रुतिस्मृति सूत्र वेदांत के इन इन तीनों प्रस्थानों को बनाकर उसके देखने में संपूर्ण वेदांत के सिद्धांत का सग्रह असमर्थ मंद बुद्धियों पर अनुग्रह करिके आत्मबोध नामक ग्रंथ जिससे संपूर्ण वेदांत क सग्रह दफलाने के लिये प्रतिज्ञा करते हैं कृच्छ्र चांद्रायण नित्त नैमित्तिक उपासना आदि रूप तपो से जिनका पाप नष्ट हुआ है और जिनका हृदय शांत है और जिनका इहलोक परलोक के भोग में विराग है अंसे मुमुक्षु अर्थात् ससार का बंधन छूटने के वास्ते उपाय करने वालों के लिए यह आत्मबोध नामक ग्रंथ बनाया जाता है । १।

कदाचित् कोई कहे तप मत्र कर्मयोग आदि अनेक साधन मोक्ष के लिए हं तो आत्मज्ञान ही प्रधानता से मोक्ष के लिए बर्यो कहा जाता है इस पर कहते हैं कि तपमत्र आदि साधन परपरा से ज्ञान द्वारा मोक्ष को सिद्ध करते हैं ज्ञान तो उत्पन्न होता ही सब अज्ञान को नाश कर मुमुक्षुको उसके फल को पहुँचाई देता है । इसलिए दूसरे साधनों से ज्ञान ही को मोक्ष में प्रधान कहा है इसी को दृष्टांत से बूढ़ करते हैं जैसे पाक क्रिया में काट्ट जल पात्र आदि साधन रहते हुए भी अग्नि के बिना पाक नहीं सिद्ध हो सकता जैसे ज्ञान के बिना मोक्ष नहीं सिद्ध होगा । ३।

अंत—दिसादेशकाल इनकी अपेक्षा न करके दु खान्दिक नाश करने वाला सब जगह में व्यापक नित्य सुख स्वरूप अपने आत्मा रूप तीर्थ को सेवता है वह सबका जानने वाला सब जगह व्यापक श्री मुक्त हो जाता है । ६७।

इति श्री परमहंस परिव्राजकाचार्य गोविन्द भगवत्पूज्यपाद शिष्य श्री मच्छङ्कराचार्यं कृत आत्मबोध समाप्तः च पुनः आत्मबोध भाषा टीका समाप्त श्रीयुत् पंडित राम अचतार जी के सहायता से परम आनन्द जी के तिलक भया अ० शु० ३ श्रीमच्छकराचार्ययनमः ॥

विषय—वेदांत विषय वर्णन ।

सख्या २०१ख. तत्वबोध टीका, रचयिता—मूलकार—श्री शंकराचार्य जी, टीकाकार—परमानंद (सभवत), कागज—देशी, पत्र—७, आकार—७ × ४^१/_४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० महानंद पाडेय, ग्राम—पंडित का पुरा (गटवा), पो० हडिया, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—वासुदेवेंद्र योगीन्द्र गुरुको प्रणाम करिकं मुमुक्षु के हित के लिए तत्वबोध नामक ग्रंथ किया जाता है उन अधिकारियों के लिए कि जिनका चारों साधन सिद्ध हो चुका है उनके लिए मोक्ष साधन का उपकारी तत्व बोध विवेक को प्रकारों को कहूंगा । प्रश्न—चारों साधन कौन हैं उ०—नित्य श्री नित्य वस्तुओं का विवेक १ इस लोक परलोक के फल भोग में विराग २ सम आदि क्ष प्रकार के संपात ३ मोक्ष होने की इच्छा ४ प्र०—नित्य श्री अनित्य वस्तु किसके कहते हैं उ०—एक ब्रह्म वस्तु नित्य है उसमें भिन्न वस्तु सब अनित्य है उसी को नित्य श्री अनित्य वस्तुओं का विवेक कहते हैं ।

अंत—अथवा चांडाल के घर में ज्ञान के सम्पूर्ण प्राप्ति होने पर सब तरह की इच्छा को रहित वह मुक्ति ही है :—

इति श्री तत्वबोध भाषा टीका श्रीयुत् पंडित रामअचतार जी की सहाय से तिलक किहा गया संपूरणम् ॥

विषय—वेदांत विषय वर्णन ।

संख्या २०२क. परमानंद सागर, रचयिता—परमानंद दास, कागज—देशी, पृष्ठ—
१५४, आकार—१० × ८।। इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४३८६,
पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्रीविद्या
विभाग, काँकरोली, हि० व० ५७, पु० स० ३।

आदि—श्री गोपीजन बल्लभाय नमः । अथ परमानंद दास जी के पद लिख्यते ॥
मंगलाचरण । राग कान्हरो ।

चरण कमल बंदी जगदीस जे गोधन के सग घाए ।
जे पद कमल धूरि लपटाने कर गहि गोपिन उर लाए ॥ १ ॥
जे पद कमल युधिष्ठिर पूजित राजसूय मे चलि आए ।
जे पद कमल पतामह भीषम भारत मे देखन पाए ॥ २ ॥

मध्य—पृ० ७४

कान्ह अकेलेइ सोवत ।
सपने मे तेरो मुख देखत तब उठि मरग जोवति ॥ १ ॥
सीतल छाह कदव की तेरोई रूप विचारत ।
कवहू मोह ह्वै रहत ध्यान धरि कवहूक दृष्ट पसारत ॥ २ ॥
नव पल्लव सुमन कमल ल रचि रच सेज सवारति ।
परमानंद प्रभु तेरोई कारन अति संचित हरि आवत ॥ ३ ॥

अंत—राग बिलावल ।

माई री सावरो सो ग्वालबाल नंदगांड खेलें ।
देखत सुधि भूलि जात मोहनी सी मेले ॥ १ ॥
मृगछोना से नैन न उरते वन सिडारो ।
तवहीं मन करखि लेत गतिमत सब टारो ॥ २ ॥
भनभुन पाइन पेंजनी अरु ठुंमक ठुंमक डोलें ।
तोतरे से अमृत वचन भैया कहि बोले ॥ ३ ॥
एसी जो होय कवहू बहुरो वाल पंयें ।
निरखि निरखि नैन सुख हस हंस उर लेंयें ॥ ४ ॥
जसुमती को पूत भाग एसे सुत जायो ।
परमानंद बलिहारी निगम छंद गायो ॥ ५ ॥

विषय—पुष्टिमागीय मदिरो मे गाए डाने वाले पदो का सग्रह ।

संख्या २०२ख. परमानंद सागर, रचयिता—परमानंद दास जी, कागज—देशी,
पृष्ठ—१७४ (६ मे १८३) आकार—१०।। × ७।। इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३८, परिमाण
(अनुष्टुप्)—४०००, प्रपूर्ण, रूप—दीमक से जीर्ण शीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—
श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० ० ५७, पु० स० ४ ।

मध्य—पृ० ८५

चलि री मदन गोपाल । बलाव ।
तेरोई नांड लै लै वेन बजाव ।
इह सकेत बह्यो वन महियां ।
सघन कदव मनोहर छहियां ।
मिलत परमसुख अद्भुत लीला ।
परमानंद प्रभु भावन सीला ।

विषय—परमानन्द दास जी के बनाए हुए विरह के पद हैं, जो पुष्टिमागीय मंदिरों में अनोसर के वाद गाए जाते हैं।

संख्या २०३क. पद, रचयिता—विप्र परमन, स्थान—चाँवीली (आजमगढ़), कागज—देशी, पत्र—१ (खर्राकार), आकार—१४ $\frac{1}{2}$ × ८ $\frac{1}{2}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनष्टुपु)—२२ पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८८०—६० (लगभग), लिपिकाल—स० १८८०—६० (लगभग), प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता—प० जानकी चाँव, ग्राम—चाँवीली, पोस्ट—अहरौला, जिला—आजमगढ़)।

आदि—

॥ राम ॥

हरिहर प्यारे में तेरी बली जाऊ ।

दोउ भगवान दोउ प्रभु शाहेव जन जग रखवारे ॥

हरी विश्वनाथ जगनाथ गोशाइ दीन दरीद वीदारे ॥ हरि ॥

गीरीजापती श्रीपति शुरशाई भंरव हनु प्रति...रे ॥

रावनारी त्रिपुरारी कहावत निश्चर अमीत सघारे ॥ हरि ॥

“परशन वीप्र” कहत कर जोरे जिय की जरनी नीवारे ॥ हरि ॥

नरहरि प्यारे में तेरी बली जाऊ ।

जन प्रह्लाद भयो महिमडल श्रीपति नाम शुधारे ॥ नरहरि ॥

पीतई कहा कुल धर्म पढ़हु शूत शूत प्रति दिवम करारे ।

वाधी चढायेहु गीरोवर उपर गारी ते नीपटी पवारे ॥ ४ ॥

पंभ वाधी पीतु पङ्ग प्रहारे जन नरशीह उदर वीदारे ॥

परशन वीप्र कहत कर जोरे भय की जरती नीवारे ॥

भृगुपति प्यारे में तेरी बलि जाऊ ।

शुरन्ह शहाए धेनु हीत लागी शहशवाहु शघारे ।

अमीत वार छीति वीप्रन्ह दीन्हो बध करी अमीत मुप्रारे ॥

पाच वान प्रभु करनहि दीन्हो एक ते एक जुप्रारे ।

धनुषभग शुनि तेरहुति धाए काधे फरशु शुधारे ॥ ५ ॥

परशन वीप्र शीथील प्रभु भएउ नीरपत रूप अगारे ॥ ६ ॥

में तेरी बली जाऊ दशरथ प्यारे ।

दपतिमनु गवने वन माहीं तप वीधी आशन मारे ।

लागे चरन तपस्या जवही वीतेउ काल धनेरे ।

हरीहर वीधी शवतीन्ह जुत आए अस्तीत जानी नीवारे ।

पारब्रह्म श्री संजुत आए अस्तीत वचन पुकारे ।

पुष्ट भए तनु मनु सतहपा अभक पोली नीहारे ।

मनभावत वरदान दीयो प्रभु दपति भवन शीधारे ।

परशन वीप्र दीन जन जानो नीरपहु दोग रतनारे ॥

अंत—नरतन रतन शीरान जात मन शीताराम भजहु शुषदाई ।

शैव ब्रह्म शक्रादिक शुमीरत शनकादीक नीशि वाशर ध्याई ।

नर मतिमंद भजहु भगवानहि जीवन थोर दुराश दुराई ।

चौराशी अमीहो नर जवही जम जातना करत लै जाई ।

बंतरनी उत्तरं नही पंहीं विविध पंथ को करोही गहाई ।

जड़ चंतन्य जग....., वीवीध पंथ निगमागम गाई ।

भक्ति शुभम पंथ “परशन” गावत शीताराम शरन गोहराई ॥

मध्य—पृ० ६४

लला रे नैक हमारें आउ ।
जो मांगो सो देउं मनमोहन लं मुरली कल गाउ ।
मगल चारु करो गृह मेरे सग के सखा बुलाउ ।
करहु विनोद जुवति सुंदरि सो प्रेम पीयूष पिवाउ ।
बलि बलि जाउ मुखारविंद की तेउ त्रिभग दिखाउ ।
परमानद रसभरी सहचरी लं चली करत उपाउ ॥ २ ॥

अंत— राग मलार ॥

रेनि पपीह बोल्यो माई ।
नौंद गइ चिंता चित उपजी सुरति स्याम की आई ॥ १ ॥
सावन मास मेघ की बरखनि हो उठि आगन आई ।
गरजत गगन दामिनी चमकत ताते खरी डराई ।
राग मलार अलाप्यो काहू मुरली मधुर बजाई ।
विरहनि विकल दास परमानद धरनी परी मुरझाई ॥ ३ ॥

विषय—श्री पुष्टिमार्गीय मदिरो मे गाए जाने वाले परमानददास जी के बनाए कीर्तनो का सग्रह । इसमे भागवत दशम स्कंध की कृष्ण लीलाओ का वर्णन है । परमानद दास जी कृत पदो का इतना विशाल सग्रह अन्यत्र अप्राप्य हे ।

विशेष ज्ञातव्य—विद्या विभाग, काँकरोली मे इसका सपादन हो रहा है । विद्या विभाग, सरस्वती भंडार मे इसकी कई प्रतियाँ उपलब्ध है । सबसे प्राचीन जिसका अनुमान लगाया गया है स० १६६६ के लगभग की लिखी हुई है ।

संख्या २०२३. विरह के पद, रचयिता—परमानद दास, निवासस्थान—गोवर्द्धन, कागज—माधोपुरी, पृष्ठ—५५ (७ से ६१ तक), आकार—६। x ५। इंच, पक्ति (प्रति-पृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—७१५, अपूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६४२ के पूर्व, प्राप्तिस्थान—स० भ० विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० स० २०, पु० स० ४ ।

आदि—प्राप्त नहीं ।

मध्य—पृ० ३१

अहो तुम गोविंद सो कहियो जाई ।
बहुत दिवस प्यारे मनमोहन में नाहिन सुधि पाई ॥
नंद ग्राम तें अपनी दासिका मथुरा गुप्त पठाई ॥
सह्य पत्रिका लिखि मृगनैनी अपनी प्रीति जनाई ॥
चरन कमल गहि विनती कीवी बँठे जहां कन्हाई ॥
ताको कोन हाल नंद नंदन अपने संग खिलाई ॥
उहि तो तन मन तुमहि समर्प्यो चरन कमल लं लाई ॥
परमानंद प्राण आतुर हरि वारक देहु दिखाई ॥६७॥

अंत—जिन गोपालहि जान देहि ।

अब ब्रजनद बगदि आए हूं इह मन पछसा बोलेहि ॥
मोहन कान्ह मोहनी मथुरा मोहन लोग मोहनी नारि ॥
मोहन गति मोहन हरि लोला मोहन गतिल लोग मकारि ॥
वसुदेव पिता देवकी माता इह सभ प्रगत भई नरलोक ॥
परमानंद स्वामी कत आवे सुंदर स्याम विनासन लोक ॥ ६ ॥

जना रे नक हेमारे आव ।

जा मोगी सो देव मनमोहन लं मरणी कल गाव ।

मान बा० करो गहे सेरे सा के सखा बलाव ।

करहे विनीद जेवनि सेवारे सो प्रेम पणुप पिबाव ।

बलि बलि जाव सुखारोवद को तेव विधा विबाव ।

परमानव रसभरी सहबरी लं बली करत जपाव ॥ २ ॥

अत- रग मगर ॥

रेनि पणुहे बोवणी माई ।

नांद गइ विना विन जपणी सुरति स्वाम को आई ॥ १ ॥

सावन मास भेव को वरखनि हो उठि आगन आई ।

गारजल गगन दामिनी बसकल गाले खरी डरई ।

रग मगर अलायी काई मुरली मधुर बजाई ।

विरहेनि विफल दास परमानव धरनी पुरी मुरकाई ॥ ३ ॥

विषय- श्री पुष्टिमंगलय मदिरे म गाए जान बाल परमानवदास जी के बनाए कौतुंगे

हे । इंसम भागवत दशम स्कंध की कृष्ण लीलाओ का बयान हे । परमानव दास जी कब

का इतना विधाव सभहे अत्यव आयव हे ।

विधाप सावय- विधा विधा, कांकरोली म इंसका सपादन हो रहा हे । विधा विधा,

ती महर म इंसकी कइ भविष्य जपलखे हे । सवसे प्राचीन लिखिका अर्जमान जगिया गया हे

६६६ के लगभग की लिखी हेई हे ।

संख्या २०२६. फिर के पद, रचविना- परमानव दास, निवासस्थान- गीबडूंग,

माधुपुरी, पं०- ५५५ (७ से ६९ तक), आकार- ६।५ इंच, पत्रिका (प्रति-

- २६, परिमाण (अर्जुन)- ७९५, ५, अणु, रूप- साधारण, पत्र, लिपि- गारा,

काल- स० १०२६२ के पूर्व, प्राक्सथान- स० स० विधा विधा, कांकरोली, हि० ४०

। २० स० १० ।

आदि- प्राय नष्टे ।

सद्य-पं० ६१

अहे तुम गीवद सो कहियो जाई ।

बहिन विवस प्यारे मनमोहन मं नाहिन सुधि पाई ॥

नद धाम ले अपनी दासिका मधुरी गायत पठाई ॥

सहय पत्रिका लिखि माननी अपनी प्रति जनाई ॥

वरन कमल गहि विनली कौवी बंठे जहो काहेई ॥

नाकी कान होल नद नदन अपने संगे लिखाई ॥

उहि ली लन मन तुमहि समया वरन कमल लं जाई ॥

परमानव प्रग आवुर हेरि वारक देहे विखाई ॥ ७७ ॥

अत- जग गीपालि जान देहि ।

अव जगतव पाहि आदि हे इंस मन पणुसा बोवनि ॥

—नरन रनन श्रीरम जान मन श्रीराम अरु शीवदुई ।
 शीव अरु शक्तिरक श्रीराम शकबोरक नीश्री यारर शीवदुई ।
 नर मलिनद अरु अावानरु वीवन अरु उरमा उरदुई ।
 श्रीरामी अनीरु नर अरुही अम जानना करन नु अरुई ।
 शीवने नीरु पूरुई लिखए पव की करुने शीवदुई ।

परशन वीप वीन जन जानी नीरुई शीव रननारे ॥
 मनआवन वरवान वीपी प्रयु दपति अवन श्रीवारे ।
 पुव अए ननु मन मनरुपा अमक वीकी नरुने ।
 पारवुई श्री मवान आए अकीन ववन पुकरे ।
 हरुनेर वीपी शरुनेरु जन आए अकीन जानी नीवार ।
 लान वरन नरुपा अरुही वीवीव काल वनेरे ।
 दपतिमनु गवने वन मरुही नए वीपी आशन मारे ।

मं नेरे वनी जाऊ दशरथ पारे ।

परशन वीप श्रीपील प्रयु अएव नीरुवन रुए आगारे ॥ ३ ॥
 धनुपमम शीन नेरुहील धाए काले करुने शीवारे ॥ ५ ॥

पाव वान प्रयु करुनेरु वीवुई वीवुई एक नु एक वामारे ।
 श्रीराम वार वीरुने वीवुई वष करुने श्रीराम मरुआरे ॥
 श्रीरुने शीरुने वीरुने वीरुने शीवारे ।

श्रीरुपति पारे मं नेरे वनी जाऊ ।

परशन वीप कहिल करु वीरे अथ की वरुनी नीवार ॥
 वष वरुणी वीरु वरुने उव नरुशीरु उवर वीवारे ॥
 वरुणी वरुनेरु श्रीरुवर उपर गारे नु नीरुपुटी पवार ॥ ४ ॥

पीरुने कही कुन धम पडुई शीन मरुति लिखन करुने ।

जन मरुनेव अथी मरुनेमडल श्रीरुपति नाम शीवारे ॥ नरुनेरे ॥

नरुनेरे पारे मं नेरे वनी जाऊ ।

“परशन वीप” कहिल करु वीरे लिप की वरुनी नीवार ॥ हरुने ॥

रुवानारी लिपुटी कहीवम लिखरु श्रीराम मरुआरे ॥ हरुने ॥

गीरुनेरुपनी श्रीरुपति श्रीरुमाई श्रीरुव हनु मरुति...रे ॥

हरुने लिखनअथ अरुनाथ गीशरु वीन वरुने वीवार ॥ हरुने ॥

दरुव आगवान दरुव प्रयु आरुव जन जन ररुवार ॥

हरुनेरे पारे मं नेरे वनी जाऊ ।

॥ राम ॥

—श्रीरु

१, लिखने—श्रीरुमनाथ) ।

गीरुनेरुपनीरुपनी अथी, वीरुनेरुपनी (दाला—५० जानकी वीरु, श्रीरुम—वीरुनेली, पारु-
 ५०—६० (अरुमा), लिखिकाल—५० १५०—६० (अरुमा), श्रीरुनेरुपनी—
 ५ (अरुनेरुप) —१२१ पूरु, रुए—श्रीरुनेरु (वीरु), पूरु, लिखि—नीरुनेली, रुखनाकाल—
 —६५, पूरु—१ (वरीरुनेरु), श्रीरुमाई—१६५ × ८५ इंच, परुनेरु (पुनेरुनेरु)—१६,
 सधु १०३क. पूरु, रुखिनेरुपनी—लिप, परुनेरु, रुखनेरुपनी (श्रीरुमनाथ),

के वरु माए जाले हरे ।

लिख—परुमनाथ वरुने वी के वनाए हरे लिख के पूरु हरे, वीरुनेरुपनीरुपनी मरुनेरे मं

संख्या २०३७. पद, रचयिता—परमन (विष), स्थान—चौबौली (आजमगढ जि०),
 काज—देशी, पत्र—१ (खर्कौर), आकार— $१५ \frac{३}{४} \times ३ \frac{३}{४}$ इंच, पत्रिका (प्रतिपत्र)—
 २२, परिमाण (अर्द्ध) —१५, पृष्ठा, रूप—ग्राहीन, पत्र, लिपि—गंगादी, रचना—
 कान—सं० १२२०—२०१० तक, लिपिकाल—सं० १२२०—२०१० तक, प्राविस्धान—काशी गंगादीप्रचारिणी
 प्रचारिणी सभा, वाराणसी। (दावा—पं० जानकी बार्वा, ग्राम—चौबौली, पी०—अहरेली, जि०—
 आजमगढ) ।

विषय—श्री कृष्ण-जन्म-लीला-वर्णन ।

—पूरा प्रतिलिपि

परमपदा विचारि के जनपद देरी प्रभुनद के की दहिदेआ ॥
 देपल की पति रति जहे कतिदे प्रेम की देहादेआ ।
 सवलिष वरपरन शीत शीत विनती वलिष के मडआ ।
 नद के वीर देरी जनपद लगावह वीर लटी सेरी नैआ ।
 परमन अनल मनाई प्रब फल पावहि ।
 जू पहे मंगल गावहि गाई सुनावहि लना ।
 सुनिहक मन मर मीर वरुमंज लवाहि ।
 अगर धूम रंग छिदे लिम धन गावहि लना ।
 नर नाहिदे करि सज देरिदे शिर नावहि ।
 नगर अलि सर वधव वजावहि लना ।
 निगलहि मन वलि नर विदावहि ।
 काष गति वलि आवहि लना ।
 जामनि परम उठाहे अनद वडावही ।
 देवि वरन शिर गाई देरिदे वहेलावही लना ।
 वनरि गए देरि पर नौपरावहि ।
 रविनदन देरपाहि वरन शिर नावहि लना ।
 कनिगनि आइ निहारि देरिदे वर नावहि ।
 धन गारहि अलि वरसहे..... ।
 वसुदेव देरि देिप लाई जमन लद धावही ।
 वध कपद खूब कोठ अद न पावहि लना ।
 अरु रदंनि देरि जम नौ अवन शोहावहि ।
 आदा वहे लिखि आठो रतिनि राजहि रे लना ।
 बाल जोग वरुणामल पावो "परमन" शरन शिराम के ॥ १ ॥
 धरा संव मंडल मजारी पद गावह देरिनाम के ।
 विलगी धूप कर्पूर की बाली आरती करि शोषाम के ।
 करि स्नान सिद्धेसन बैठे वदन प्रथ लनाम के ।

आदि—छवि निरपह शालिग्राम के ।

संख्या २०३७. पद, रचयिता—परमन (विष), स्थान—चौबौली, जि०—आजमगढ जि०, काज—देशी, पत्र—१ (खर्कौर), आकार— $१५ \frac{३}{४} \times ३ \frac{३}{४}$ इंच, पत्रिका (प्रतिपत्र)—
 २२, परिमाण (अर्द्ध) —१५, पृष्ठा, रूप—ग्राहीन, पत्र, लिपि—गंगादी, रचना—
 कान—सं० १२२०—२०१० तक, लिपिकाल—सं० १२२०—२०१० तक, प्राविस्धान—काशी गंगादीप्रचारिणी
 प्रचारिणी सभा, वाराणसी। (दावा—पं० जानकी बार्वा, ग्राम—चौबौली, पी०—अहरेली, जि०—आजमगढ) ।

विषय—श्रीकृष्ण-जन्म-लीला-वर्णन ।

संकर के नाम से अर्पकर मसाल जात वार वार शीमरी मनमहि महरानी के ।
 रामयक्ति वाली जगजाली प्रथम आरत है स्वाराय विभारि परमारय महरानी के ।
 जटा जट नाम नहै छिंदत है तरुई छवि कौटिल अनाम सीमा आनपव वदन के ।
 आसन असन जप बासन के सेस अंग विमल विभूति छवि अजग प्रथम परसन के ॥११॥
 नटनी के पास जात सकल विनास वात मात विनासत जैसे दार घन पाइके ।
 गली लीक जात प्रलीकहि न श्री समाज कला कहैइ धनधाम-हूँ बँटाइ के ।

आदि—॥ ११ ॥

सख्या २०३६. कविता, रचयिता—परसन द्विज, स्थान—बौधली (वि० आबम-
 गाढ), काल—द्वैती, पद्य—१ (छंदीचर), आकार—१३६ X २६६ इंच, पंक्ति (प्रतिपद्य)—
 १२, परिमाण (अनुपम)—२, पंक्ति, रूप—प्रतीक, पद्य, विधि—नामही, रचनाकाल—सं०
 १८००-६० तक, विधिकाल—सं० १८२०-६० तक, प्रतिकस्थान—प० जानकी बाबू, ग्राम—
 बौधली, प्रांत—अहमदनगर, जिला—आजमगढ (देरलखेड, ना० प्र० सीमा के विषय प्राप्त हो गया) ।

विशेष आलोक्य—प्रस्तुत 'पद' छंदी सख्या ७८२ में है । इ० दे० गौ पदों के 'पद' एक दूसरे से
 विषय—राम वाल बौली, राम विवाह तथा सीताराम के लिये कौडशा का वर्णन ।

—पंक्ति प्रातिविधि

सीताराम अयोध्यावासी धूल शर्या कीनारे ।
 अतिर गुलाब उडवान लागे छिंदत रंग पौर्वकारे ।
 शोभिल ताल पपाडज दीना जगल डक नगारे ।
 शीताराम रंग रस शीत हरी मवी प्रतिहारे ।
 "परशम विष" कहल कर जोरे निरपह छीना रतनारे ॥ ३ ॥
 रीतिहारे प्यारे में तीर बलि जाव ।
 दीव, भावान दीव प्रथम शरिब दीव जन जग रपवारे ।
 विषवनाथ जयनाथ गीशाई दीन बरिह विवारे ।
 गीशापति श्रीपति शूरव हनु प्रतिहारे ।
 रावन अरि विघुरारि कहैवल नीयवर अशिल शेषारो ।
 "परशम विष" कहल कर जोरे गीरि गनेश महेश मनाई ॥ ११ ॥

कथादास जनक नम्र देहो निहूँ गुर बाजल विधेय बधाई ॥
 शीताराम भावना देही बंद पदहि तहे वैष शर्मबधाई ।
 नरपल रूप देव मीन हुरपहि दशरथ जनक विषय बहूँनाई ॥
 नम्र विनाम नीरन प्रतिहारे शकल लोक शम गपड अनाई ।
 .. गली कीन्ह जव रघुवर कोशलपति बहूँ बड़वा पाई ॥
 विष विव जावकन्ह हैकारो शकल वरु तव दीन बटाई ।
 वेद पुंरान शम भावहि रघुवर मगल शम शेषाबाई ।
 शेष हार अति शरीर शरि गीरि गनेश महेश मनाई ॥ ११ ॥

आति विमल ठौर सुवास जिहै जिहै विमल सेज विजाइ
 जिहै पहिप चंदन चार परमल पान धरै मगाइ ॥ छंद ॥

..... ।

नन मदन तिल तेल को पमल पान तिलाइ
 और कछु जो तिल बना धान सवन से होइ ॥ दोहा ॥

सया होली गुर उरव गहूँ पीपर पाइ
 पच गूँज सेया मठा अरु महुँलेठी मगइ ॥ दोहा ॥

पूध अमिप च महुँमिख मनि मसली स्याम
 मुँठी अमगध मोचरस लख धुँयो अमिपाम ॥ दोहा ॥

पिप दोरज लोहा कनक तावा देया जे होइ
 चारी धाल मिनाइ के पाल रसिक जन कइ ॥ दोहा ॥

अथ श्रीपद वचन

इति नवम पद ॥

सयासनी रोसनी मसबनी अरु जो देयाई
 सब मिष की मय और गुर मिष की मदी
 इतने जोबरी होइ और धोवन जो कामिन
 दीक दल सी होइ और जो विज की ममिन
 पर मारी सी रति किये पम दोष जिय जाियो
 जो मन चंचल बस नहीं इनसो केल न टाियो

मन मसंग वचन ।

आदि—..... ।

शाम-बालामशवारी, पान-जलालाज, जिला-जोनपुर ।

आकार—६० × ४० इंच, पृथि (प्रतिपद)—६, परिमाली (अनुपद)—१६३, अपूर्ण, सख्या २०४, कोकशासन, रक्षितवा—पमल (?), कामाज—दोहा, पद—८, लिखी जा रही थी, पर फिर उसे छोड़ दिया गया । उसमें सवाल १८८० दिया है ।

विशेष शाला—प्रस्तुत छंदों की सख्या ३ है । इसके आरंभ में किसी की जन्मपत्नी

विषय—इश्वर-भक्ति-वर्णन ।

—पूर्वो प्रतिनिधि

नरक त्यागि विवर्तना विह छोडि कएट छयाती ।
 दिन देयनि प्रम पीआस करि प्रम शोभर मन कम बनाती ।
 सनकादि सुनि प्रहेलाव नारद अवाहि प्रम जोष जानी ॥
 तुलसी सहित जो साधु जन शोभरेव कहिहै मनमाना ॥
 गिनका अवाभिल गीष गति तरे गएउ सभ नर यानी ।
 शेषिकारी बेवान कहि परमन मनु उर आनी ॥

एहै जन्म रतन सिराल नर मखि लेहै सारगपानी ।
 परशन अनन जो गइ तेहि विषयवरी कल करी ॥
 नारयनी वर शरी तब शर शरी मए बरवरी ।

शूल—कहिं गया असमान सख की धमक से ।
 लगी गान से आग सुदलि चमक से ॥
 सेस नाग और कमठ लगा चौड़ कापने ।
 हारे पलद सहज लगी समाध बठ पर आपने ॥५७॥
 गान का बस सुदलि को उर से ।
 बहा पीजारी धाप जल से सोर से ।

“पलद” जब सेरी कसठे हरे तब से कहे ठेकानो हरे ॥१२॥
 ये टकसार साव से थोड़े मौल न सेठे कहानो हरे ॥११॥
 पहवा कहे सध को बाले अठो कहे जवानो हरे ॥१०॥
 कसा सन समल से सीका हिसले वे पहिबानो हरे ॥९॥
 कहवा सेली कुलीया छेटी कहवा भया अकेला हरे ॥८॥
 कहवा बठो सगार बोल कहवा बोल बेला हरे ॥७॥
 कहवा बठो जगत जोगी कहवा लगी नारी हरे ॥६॥
 कहवा बठो सहज समाजो कहवा पवन अहारी हरे ॥५॥
 कहवा बोल सहज साहेग कहा सख को पानो हरे ॥४॥
 (क) हवा पर धूर है कहवा सुदल समानी हरे ॥३॥

शालि—.....

संख्या २०५, बानी, रचयिता—पण्डितदास, कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—
 ६ × ४ इंच, पत्रिका (प्रतिपत्र)—१०, प्रतिमास (अर्थात्)—१२२, उद्दिष्ट, रूप—शालि,
 पद्य, लिपि—गजरी, शालिस्थान—कोशी नगर(विशाली) सभा, बाराणसी । (दस्ता—
 प० हनुमानप्रसाद जी मिश्र, भाम-सोनडे बडी, प०-बरेली, जिला-उत्तराखण्ड) ।

शिखर के कारण रचनाकाज और लिपिकाज अभाव है ।
 विश्व शास्त्र—यथ खंडित तथा अर्थात् है । समस्त आठ पक्ष उपलब्ध है । उद्दिष्ट

विषय—कामशास्त्र विषयक रचना ।

::
 ::
 ::

परमल ले लोके उरल प्रम शालिमान नाम
 पति कट लपट एक पा कुलीय जय पर जान

प्रम शालिमान

आस कष कर वाम धर बंठावल प्रिय गीद
 पान पवावल प्रीत कर शालिमान आसोद
 सखिद शालिमान लखिन जयविज जय से मय पवावल ले नाम ॥
 सो शालिमान सुखिन कहि उपजल पक्ष हुलास (? उपजल)

॥ शालिमान आसोद दोहो ॥

कहवरी सुध बस लहे ले लीग आदि सुजान
 लहे सुया निमल बसन तन परम परमल गान
 सोरहे सिंगार संवार सुंदर गवन सोहे मराल
 बंठे सनमूष जाइ सनमूष सरस रूप रिमाल

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ उत्सव साजिका श्री प्रवर्षात्म जी कृत
 लिखते ॥ श्री कृतोपाय नाम ॥
 जन्मात्मी सनमी मुक्ता सुखिय विद्वरन करनी । उवनी आदमी होपसी करनी ।
 आदमी थोडो न होय नव थोड नवमी को उत्सव करनी । आदमी थप होड तो दसरे दिन थोडो होड तो उत्सव प्रथम दिन होय ।

सख्या २०७क. उत्सवसाजिका भाषा, रचयिता—श्री प्रवर्षात्म जी, स्थान—
 कांकरोली, कामाज—देवी, पक्ष—३६, आकार— १०×१० इंच, पत्रिका (अर्द्धपत्र)—२२,
 परिमाण (अर्द्धपत्र)—२४, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—गणरी, रचनाकाल—
 स ० १९२० के अनन्तर, प्राक्स्थान—श्री सत्त्वर्षी अहार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, दि०
 प ० स ० ३० ३ ।

दोहे में एक फौल का नामांतरलेख देया है ।
 विषय—३१ दोहे में राधा कृत्यो की शक्ति और अज्ञान के साथ साथ प्रत्येक

कवि श्री प्रह्लाप मजरी सुपूरी ॥ १ ॥ श्रीमत्सु श्रीरत्न ॥
 “प्रसन्निय” याकी अल लं लं प्रह्लाप के नाम ॥ ३२ ॥
 प्रह्लाप वंश धरि थप है कही प्रह्लाप की नाम ।
 कर्मम केतकी सुकट धरि आवत है बलवोर ॥ ३१ ॥
 पानावर की लखि वनी सोहेत स्वाम सरीर ।
 आज लाल है दयो सुखमयी की फौल ॥ ३० ॥
 अल—कहेत फिरत सब सुधीन में सोलिन लोचन सुल ।
 लसन राधिका कुवति पं करके वरी अन्प ॥ ४ ॥
 सोल वरन सोया अधिक मानौ मध की धूप ।
 कुंज प्रह्लाप वर माल धरि करत कुंज मध केलि ॥ ३ ॥
 फल रही जही विविध रति (? रिपु) वहीन लसन वन वेलि ।
 जब दुखहेतु नव रूप लखि लाल मध आधीन ॥ २ ॥
 बंधक वरन सरीर सुख नैन बधल द्रग सोन ।
 प्रह्लो माल गुलाब की आवत है नंदलाल ॥ १ ॥
 सोस सुकट कुंडल ललक संग सोहेत बजवाल ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ फौल मजरी लिखते ॥
 सध हे ३७५५६३), काशी नारायणवाटिणी समा, वाराणसी ।
 पक्ष—३, आकार— ७×५ इंच, पत्रिका (अर्द्धपत्र)—१०, परिमाण (अर्द्धपत्र)—३७,
 सख्या २०६, फौल मजरी या प्रह्लाप मजरी, रचयिता—प्रवर्षात्म, कामाज—देवी,
 लिखते—सव मदानेसार शानोपदेश ।

फलद वास की वानी समर्पण ॥
 दोरे फलद और दोष सब थोड सोहि सोरनाज है ॥ ५२ ॥
 गल मुक्ता लं सोस सोड गजराज ॥
 मगधर सोड सरप और सब कोड ॥
 सल सोड है कद और गूर लोड ॥
 दोरे फलद है अनहेद के पार लमासा सुब ॥ ५२ ॥
 अमर लोक के पार हैरी थोक सुब ॥

आदि—॥ श्री गणेशानन्दबलसमायः ॥ अथ श्री पुष्पोत्तम जी
 कृत वन यात्रा परिक्रमा लिखते ॥ राम कापी ॥

यह वन में मन आई रो ।

प्रथम नद्य विधात घाटहि जलम स्थल जहाँ जाई रो ।

श्री केशव राम मन्दिर आनि नौकी नही बरस सुख दाई रो ॥ १ ॥

कंस मारि विधाम किए जहाँ अज अकन श्रुति कौ रो ।

पुष्पोत्तम प्रथम कौ छवि निखलत रालि निवास सुख लीये रो ॥ २ ॥

मध्य—पृ० १६

नाके आना रामघाट है बिजल वन नही कौ रो ।

श्री वलदेव जी अपने अल सहित नही राम रमन सुख दीए रो ॥ १६० ॥

तब श्री यमुना जी यो कहे है गुमकी रास नही सोहे रो ।

राम लीला पति श्री ठाकुर जी है मूलि अकुंठे रास कौय सोहे रो ॥ १६१ ॥

अंत—यह परिक्रमा करी पूरन पाठ करन प्रथम जी भूये रो ।

पुष्पोत्तम प्रथम कौ छवि निखल कौ तब अर्जुन लीला भूये रो ॥

द्वैत श्री पुष्पोत्तम जी कृत वन यात्रा समाप्त ॥ मनी चंद्र बरि ६ मंगीवार सं० १९१६ ॥

विषय—रज चौराही कंस की परिक्रमा का वर्णन ।

सदमा २०७४ श्री शंकराष्टमि क गंगा, स्वधिया—श्री पुष्पोत्तम जी महीराज,

स्थान—काकरोली, पब—६, आकार—१० × ६ इंच, पत्रिका (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण

(अर्द्धपृष्ठ)—२२७, पृष्ठा, रूप—साधारण (प्रार्थन), गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—

सं० १९२५, लिपिकाल—सं० १९२५, प्रारथान—श्री सरस्वती अक्षर, श्री विद्या विधान,

काकरोली, हि० व० सं० २ ।

आदि—॥ श्री गणेशानन्दबलसमाय नमः ॥ श्री शंकरेभ्यो नमः ॥ श्री शंकरानन्द

जी के सिंगार लिखित है श्री काकरोली मध्य सवर्ष १९२६ वर्ष ।

विधिवार	श्रीमन्तक	वर्णन	पटका	ठाई बरल	आधरण	कडा	सिंगारी	उछव
भा. क्र. २	स्वतः- कुलही	कंसरी- बर्णा	बाल पटका	बाल ठाई	भारी	बाड़ी ३	श्री बाल जी	उत्सव बन्यादशी
भा. क्र. ६	स्वतः कु.	कंसरी	बाल प	बाल डा.	भारी	बाड़ी ३	श्री बाल जी	उत्सव श्री बनभयोजी
भा. क्र. १०	स्वतः कु.	कंसरी	बाल प.	बाल ठाई व	भारी सी.	बाड़ी २	श्री बाल जी	

मध्य—

का. व. ७	कंसरी	बाल	स्वतः	भारिकक	कंसरी	श्री	श्री नाथ जी	का. व. ७
का. व. ८	पतंगी	कंसरी	स्वतः डा.	सोना के	कंसरी	श्री	महीराज	का. व. ८
का. व. ९	कंसरी	कंसरी	कंसरी	कंसरी	कंसरी	श्री	महीराज	का. व. ९

श्रीं प्रेषात्मिणीं जीं महोदराल तथा श्रीं वल्लभ जीं के जाल जीं तथा मुखिया मंडिके श्रीं कंकरातेनी मध्य श्रीं हारिका नाथ जीं के अंगार मास १२ के काये सीं लिखे हैं । निं ३०८ कां-
रामसाकर बलभ रामायण पुस्तक हेमारी हैं श्रीं काकरीतेनी मध्य लिख्या है । सवर्ष १८६५ दान-

लिखार सुवल ७ शान्तिवारे संपूर्ण ॥
विषय—पुस्तिमार्गिय सेवा पड़लि के अगुसर वंरीय गेहे (फुठ) श्रीं हारिका, ग,
कंकरातेनी के सेवा अंगार का लिखवार दयोन । जीं उन समय के लिखवारिण्ड श्रीं प्रेषात्मिणी,
जीं महोदराल (समय १८६५ से १९०३) ने प्रस्तुत करायो ।

सख्या २०७३ उत्सव नियम आण, रचयिता—पुतरप बाम, १७७—१३, आगार—
६ × ५ ३/४ इंच, पत्थि (प्रसिद्ध)—३८, पत्रियाण (अरुद्ध)—६६, पुशे, ४१—मार्थारा,
गण, लिखि—गोपरी, रचयिताकाल—स० १७५०, यादियारण—श्रीं मरदरेती, ५३ ७, श्रीं विद्य-

आदि—॥ श्रीं गिरवामी श्रीं प्रेषात्मिणी जीं केन उत्सव नियम सहे सं है श्रीं सहे
मासा सं लिख्या हैं । जन्मदरम्ही सलमना लिखा न करती । सुप्रसिद्ध सन्मय दाय सलमनी हूँ. इ श्रीं
सलमनी लिखा कहिये । ताकी लिखेक जब लिखाठिका होय तब सूक्तरी करे । शिखारियी हूँ. इ
तब प्रहेली करे । जब लिखे दूया हूँ. तब वहे छोडि गेहे तबव नवमनी को उत्सव घरे ।

सख्या—पूठ १३
पृथ वरि ॥ श्रीं गेसाइं जीं को उत्सव नियम लिखि वरिइ क्षय होइ तीं प्रहेली नहेइ सूक्तरी
करती । अथप नयी सूक्त को दामाकारुतल नई दामा पाल । अतलस सुप्रवृद्ध परं अथ नहेइ सुक्तरी
पदका वंशुमी जाल जीं होइ तीं अहेमी सुनव । पीन दरिदरुई को जाल हे लिखा नाही इ नये
दीक बरव उलने पादेक । गुरावरक का नई आपरण नि शोध गीपी वलन न सेव देव जन्मवो वदा
कडका छोडि मीली को राजमाण आमी नाही सं सुकुमा क्षम वीठार रणर लिखक फरि सिंघा
वारि आमी करिये । नाम करि अनोसर वारिदर अथ प्रसादी लिखक १११५४ पर १ प्रसाव लोका ।

अन—अणकर का मीग पुसं आव जीं तथा पठित वरि १ पठिते खोन्नर सूक्त रेया १
परि छोडनी कह्या है । उत्सव हैं वडा है । समय प्राय पठिते न होइ । परं अदरदक । सनिं
या मीग को दीव नहीं । जाल तीं जरा कागामी नखभाषीन हैं । लोक तथा होइती । वीं
होइ तीं मली है । अथनी तीं पठीं नियम है । इलि प्रहेण नियम ॥ अथ नाल पय नय रधि
रेहेणिय पाविस । मयिणकरायोदेक वच न सुप्रसिद्धियेक वच ॥ १ ॥ काजी, देव, छोडि, पून,
देव, पब वड मथना को पानी जिल कुथ जरि छोडिये सूक्त न जाय ॥

विषय—पुस्तिमार्गिय सेवा कम सं वच अर के उत्सवो का पप्रभावेण नियम ।
सख्या २०७४ उत्सव सेवा अणानी (उत्सव नियम सहे), रचयिता—पुतरपालम,
कागाल—माथारुती, पब—६, आकार—५ ५/४ इंच, पत्थि (प्रसिद्ध)—६०, पत्रि-
माण (अरुद्ध)—१६२, पुशे, वच—माथारुण, गण, लिखि—गोपरी, यादियारण, न-
सदरती थडा, लिखि विधान, कंकरातेनी, तिं ३० स० १६, पु० स० ७ ।

आदि—॥ श्रीं ऊरुणाय नमः ॥ अथण वरि ८ जन्मदरम्ही सलमनी युक्ता सुप्रसिद्ध लिखा
न करती । सूक्ते लिख उत्सवो अथमो हूँ. इ तीं लिख उत्सव करती । अथमनी वंशु. न हूँ. इ तीं
नवमनी के लिख करती अथमो प्रहेल दीव गेहे संपूर्ण होय अोर सूक्ते लिख न होइ तीं उ दरेल लिख
करती ॥

सख्या—प्रदीपनी के लिख जीं रालि भटा होइ तीं रालि नही लिख को करती नही तीं रालि
को उत्सव करती नाकी लिखि ॥ पठिते सवल सविर सं लिखार तथा धाम सं काठ स नही

साहित्य की पूर्ण उन्नति की, ता पाठो पाठो गडगडकी मूढप वनाय वीर्य धारण की धरि मास-
 आठ बीबी आठ बीबी आठ करि पाठो ठाकरे पधरि करि साहित्यमास की पधारण
 न करि पास वडाइ बदन चीजा अधीर छीर किमाता धरि साहित्यमास के सब इनकी हो
 छी धूप दीप करी श्रीग पकवान तथा कलाहार समाधि श्रीग सराई बीबी धरि ।
 अतः—आवस्य पूर्णमास के दिन अथवा पूर्व की समाप्ति सखी पिछोडी नयो धरि पाठो
 न होइ ता सब लिखक मान करिये आनी नही राखी बाध पाठो गुल पापडी श्रीग समाधि ॥
 मव सपुत्र ॥

विषय—गुटिमार्गिय मरिरी में मनाए जान बाल उरखी का विधि सहित नियोग ।
 संख्या २०८. सिद्धिदान वनीसी, रचयिता—गुरुसीतम दास, कालज—दश्री, पत्र—
 'आकार—६४ × ६४ इंच, पृष्ठी (प्रति पृष्ठ)—३०, पत्रिमाला (अर्द्धपृष्ठी)—२०६,
 अतः, रूप—आधीन, पत्र, लिपि—मारी, प्रविष्टयान—कधी मारि, प्रवाहिन्यो सधा,
 लिपि । (अथवाता—श्री शिवमार्गिय लिपारी, श्रीग व पुरिड—वरदह, लिता—आजमाह) ।
 आदि—.....

सुन राजा मम बचन रसारे । कामदेव गणना हेमासे ॥
 पुष्टपावनी हेमाटी है माला । लके घर में जन्मव कला ॥
 बारह वर्ष पिता घर रहैव । माले पिता क्षाप दे कहैव ॥
 अथा श्रीग एक से कर्तव्य । तब उहे मोहि जाली कह दौहो ॥
 जाली गानि मोहि इहे वंसाई । बदरीहार बहो दिन जाई ॥
 निमेष एक आवे मम पास । कथे जोग यह मान उदास ॥
 बरवस मोहि रलिके बन जाई । के बदेरी मोहि उष चारुई ॥
 ॥ दौहो ॥

बरिस देवस मोहि पुरिठा केउ न करे उदास ।
 श्री कछि लिपि विद्या अजब अक फपाट ॥
 नृपति कहा जहाँ में ल जाऊ । आवस संग में रहैत लजाऊ ॥
 कर्मिनि सुंदर संग अजसादे । सल समुद्र पार को करे ॥
 नृपति करिष्ये संग अजसादे । सल समुद्र पार को करे ॥
 मध्य—
 नीला कह लयला के जानिस । धे नना सुनि गथे लिप आनीसि ॥
 ॥ दौहो ॥

"गुरुपीतिम" कवि गावा विजय चरित अर्पित ।
 पुरित सुमह कान दे कथा आर्ग बलि देरि ॥
 इति श्री विद्यासन वनीसी महेश श्रीकलिकमल चरिते गुरुसीतमदास चरिते अरुमा
 श्रीग—
 धे मृपति राधे मोर धर्मा । कुल जना वी नय को कर्मा ॥
 जलम मल आनने रया । तस असीस रया के भापा ॥
 महेश परम वृष जगिष्ये रया । कहि के वरय लिपि होए कया ॥
 ॥ दौहो ॥
 आहस ताही समथ देसी होहि धरि होय सब कोय ॥
 आहो मलय देरिबद सम श्रीग समा चल देव ।
 ॥ दौहो ॥

गण मही है ।
विपक्षय वयोन मं प्रकषयाम का नाम आया है और रत्नान विपय वयोन मं सिरी मी

वगत की विधियां दी हुई थी ।
है । इन्हें देखने से पता चलता है कि इनमें विप उतारने और धारण गादि मारने तथा मोना धारण

विशेष सात्वत—सर्पणुं यथ मं १२ से अधिक पर्वे वृ । जिनमें से कृपन दी पर्वे २२ मं
विषय—विप विचारण और रत्नान विपयक वर्णन ।
इति श्री रत्निक रसादन उरुण्ड विद्या रसादेन समाप्तम् ॥ श्रीमत्परु ॥

अत—
मार्गान कहें हैं किम होए ॥ अवयक होए ॥ काला धरिय की रस नामा सोहेना
उतिके अवयव आदि रस से बनावय सहर हैम होइहो ॥ सोहेना सिवाइ अवयव बायाइ
अमन के नामा आदि देव होय सोन होये । इरति मूति जगुन के गाण पोलाइ के आदि देव
निमूय करव वारह मास से निकारव नाम अवधि के तव औरर के आदि देव सोवरन होए ॥
सुइके धरा पोलाइ के मूडि होइहो आदि देव वारह महिना पर निकारव नामा अवधि के आदि
देव हैम सोना होए ॥

सोनि अवधि तव रूप होये ॥
साल देना साल देरी बनाव ॥ पुनि पल काराइ पुनि वरारीस छोरी का मूय सोनि आभा मूय
उतम रगा सेर मरी २१ मरवय की वरटी माटी यह मूनि अवधि के छोरी का पूय मरे

अथ सुकुटानि विद्यासोदे से लिखते ॥
इति श्री प्रवृत्तानि विरचिते विधि शय कृता समाप्तम् ॥ श्रीमत्परु ॥
दी मरे ॥ देसरी आकेवरी नाव विधि से मरे ॥
विसेषतः ॥ ऐसे चोके नमोनामि विधि होये । विवे विवर्नरि अरक पानी कपूर मीसो विविण
निविधि होए । सोनान कोय निदा संयन करे स विधि साडल सेहू चारीज सब सबथा के जालि
निहाइ काठ जरी निसे भाडिका धरिये विविध ए पाणे धीव मरीज पास साइ

आदि.....
व पाटे—वर्तिया चास, जाला—गोरखपुर ।
पल—२, आकार—२ १/२ इंच, पत्रिका (प्रतिपाठ)—११, परिमाण (अनेप)—६, खडिब, रूप—ग्राहीन, गंध, निधि—मोमरी, धारिकरथान—१० या ११ वर महिना विपरी, राम

संख्या २०६. विपक्षय तथा सुट रत्नान, रत्नयिता—प्रवृत्तान, वर्णन—इसी,
विशेष सात्वत—यथ खडिब है । आदि के ५० पर्वे तथा अत म ३१ के आने के पर्वे
होते हैं । रत्ननाकाल और लिपिकाल भी आना है ।
विषय—सुकृत यथ 'सिद्धेयान इतिविधा' का भाषानुवाद ।

—अर्पण
:०: :०: :०:
तानपन रथ मही सी कहे ।
से उपव देनाल वरता । अतहुर देव देरवता ॥
गोड उपर कथा देसाणुहि । मन सोहेनी के पाठ बलाणुहि ॥
पुनि रजा कहे मया जनाई । पुनी के राजा हिम लाई ॥

प्रथम कवि श्री परमेश्वर ने नमस्कार करे छे, पछे शरणाति ने पछे
 सनारह ने नमस्कार करे छे, ए तीनी तनसार छे ।
 अरु ए माल रूप मादे छे लिहिये गणोनिबारा छे ।
 तिये उपरान्त मालबारा कौडन छे ॥ १ ॥

टीका—

माल रूप माडैव मादे वद्या रस रक्षिज माल बारा ॥ १ ॥
 परमेश्वर प्रणम्य शर शानि प्रणमि शर प्रणमिबिजोतनशार ॥
 बरनी नानो प्रवसा ब गीता तन्मार्गदेवते ॥ १ ॥
 किये देव नमस्कर्य सब देव शिरामि ॥
 आदि—श्री कृष्णाय नमः ॥ अथ बेलरा पद्योत्तरा केल लिख्यते ॥

—सरस्वती मन्दार, विद्या विभामा, काकरोली, दि० व० सं० २१, पु० सं० १ ।
 शारदागण (अनन्दपुत्र) —२५३, अर्जुण, रूप, पद्म, विष्णु—नागरी, प्रविशारथी
 मायाह, मायाज—माद्युगरी, पद्म—५, आकार—८ × ३३ इंच, पत्रिका (प्रतिपत्र) —३०,
 सख्या २११. ब्रजरा (श्री कृष्णदेव रचितमणो वृत्त), रचयिता—पद्मवीरज, रथान—

पदक, श्री दे ।

विशेष साक्ष्य—इस पुस्तक में प्रस्तुत रचना के साथ 'फुटकर कविता' और 'बलदेव
 विषय—श्रीयमना जी का मादरस्य बलीन तथा स्तुति ।

इति श्री यमना नवरत्न सप्तम ॥
 लिखि नवधा विन यन सो पूरन होल प्रकास ॥ १३१ ॥
 श्री यमना नवरत्न जो पढे सदा सचिवास ।
 ॥ होल ॥

कविप्री प्रमान मान दीविया म आनाकानो कृष्णपदरानी यहै विनय बखानी सं ॥ १३० ॥
 पूरन सरति जन जानि क निकट निज दीविए निवास यहै आसन तही आनी सं ।
 गुन ती उदार जस प्राट पुरायोन सं बसति सुनीसन के उर वर बानी सं ।
 एही सूरत नया लिहिये तट आइ परयो आधिक अधिग दीन मूढ अभिमानी सं ।

अत—

तेज अथना के पूरन लोक विधिना के करे जात जयना के नेक नोत जयना के ते ॥ १३० ॥
 पूरन कहानी पदरानी को प्रभाव कही अथम असुद वेद पावल न जा केते ।
 सुन्दरन कोल अमरन को अमर होइ मरम न पावे कोऊ कोटि परिपाके ते ।
 जनम के पालक नाल दरसाल रूप जात होइ फर भवसगर विधा केते ।

सध—

बैज रजधानी विधि वेदन बखानी जायो कियो पदरानी ठकुरानी विषयन को ॥ १२९ ॥
 सुनिमन मानी जगपूरन प्रमानी सदा सिद्ध वरु दानी होइ दाहेक दुवन को ।
 सेवन सुदेश सेस बनिना दिवासन को पाव तन होइ छिन छोइ हूँ छवन को ।
 सबर तरेन छब अमर अथग जन साई छिबि अंग अंतराय वरु वन को ।

आदि—श्री कालिदास नमः ॥ कवि ॥

रानी, दि० व० सं० ३६, पु० सं० २३ ।

शारदागण (अनन्दपुत्र) —४४, पत्रिका (प्रतिपत्र) —४०, पृष्ठी, रूप—
 साधारण, पद्म, विष्णु—नागरी, प्रविशारथी मन्दार, श्री विद्या विभामा, काक—
 सख्या २१०. यमना नवरत्न, रचयिता—'पूरन' कवि, पृष्ठ—३ (२० से २२ तक),

अन्तर्दश बालीस अठ सवन फार्जिन जानि ।
 ऊँण पक्ष नवमी गुरु ग्रह कोषी मनमानि ॥ ५४ ॥
 क्रिया ग्रह जयनार सु नाम सु प्रमप्रकाश ।
 पठ कहे पालक सकल वडे प्रम ह्ये तसि ॥ ५५ ॥
 सुख सवाडे जय नार मारिन्हि कियो यह प्रम ।
 जरति सिद्ध हिय नरति क प्रम परन को प्रय ॥ ५६ ॥

॥ दीष्टि ॥

शत—

दक निरदक कदा करो नैह नगर को रीति ।
 फिर फिर बाही मारिये करे ज विन सी प्रीति ॥ २४ ॥
 सुक गयी बालीहि सब नीर झगिन अति आन ॥
 प्रान नही नारी चल अवतरन को यह बान ॥ २५ ॥
 इक यह सबन वरी करो न कहे भूल ।
 पारे को यह अट सु फिर देना हे भूल ॥ २६ ॥
 अरी अट हिय ह्यै नट छाप रह्यो बककुर ॥
 खजनिधि मन को ले गयी नका न लगी अवर ॥ २७ ॥

शत— वं ४ दीष्टि ॥

विन गणपति वृषि सारदा जगिन शिरतान ।
 मति सरी लेसी कियो सकल अथ सब काज ॥ १ ॥
 सुख अनद मान करन सदा प्रतापल ॥
 निवे कवि भवि लेह गुम खजनिधिरुप रसाल ॥ २ ॥

॥ दीष्टि ॥

शत— श्री गणेशाय नमः ॥ अथ प्रमप्रकाश ग्रह लिखये ॥

संख्या १२२क. प्रम प्रकाश, रचयिता—सवाडे प्रताप सिंह जी, स्थान—अजयपुर, पल—
 ५, आकार— २ x ६ ३/४ इंच, पत्रिका (प्रतिपत्र)—२२, परिमाण (अनुदैर्घ्य)—६ ३/४, पृष्ठा—
 १५, साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १९६८ वि०, प्राप्ति स्थान—श्री
 संस्वरी अडार, श्री विद्या विभाग, कांकोरीवा, वि० वं ६२, पृ० सं ० २१ ।

विषय—शिवमणी देरण सवधी वरुन कियो गया है ।

शत—

साई तट हुआ ॥ २५ ॥
 सु प्रयाग जी समान कर बलायी छे, अने विवली बेणी कहेला निव ॥
 अने कटि छे सु अति शीण छे अने सुपट छे, ने कसमणी जी रो नाम छे ।
 धर धर कहैला नैर निरि सु कसमणी जी रत्नन नैर रा ग्रम करिके बणीया छे ।
 पदमणिया नाम प्रियाग तणी परि विवल निवेणी शीण तट ॥ २५ ॥
 धर धर शीम सधर सुपीन पयोधर धण पीण कटि अति सुपट ॥
 विराल छे सुवाणी जीवन जगण विजा निया छे ॥ २६ ॥
 कहे जे वाणी लियकर अला पीया छे । अर स्तना ऊपर स्थानला
 शिवमणी जी रत्नन वसु देवीण कपाल करि बणीया छे वनवी
 अति श्यामला विराल ऊपला वनवाणी विजलाया जाण ॥ २४ ॥

शत—पृ० ४

संख्या २१२५, वीरगुप्त मजरी, रचयिता—सवाई श्री प्रताप सिंह जी, अजमेर,
 स्थान—जयपुर, पृष्ठ—२० (३३३ म ५२ तक), आकार—६ ३/४ × ६ इंच, पर्क (प्रतिपृष्ठ)—
 २६, परिमाण (अनुसूची)—२५० पृष्ठों, रूप—साधारण, पत्र, लिपि—गोरी, रचनाकाल—सं० १८५२, भाषा—संस्कृत—श्री सरस्वती अक्षर, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, डि० व० ६४,
 पृ० सं० २३३ ।

विषय—भद्रदेवि उल सकेत भय नीति शतक का द्वितीय अध्याय ।

कृति श्री मनहरि राजा विद्या राज महाराज राजेंद्र श्री सवाई प्रताप सिंह जी देव विरचित नीति
 मजरी संस्कृत ।
 कृति श्री मनहरि राजा विद्या राज महाराज राजेंद्र श्री सवाई प्रताप सिंह जी देव विरचित नीति-
 अजमेर के परमाणु यह करी प्रताप प्रतीत ॥ १०२ ॥
 नीति मजरी पढत ही प्रताप सिंह जी नीति ।

॥ दंडा ॥

करत उदरनी श्रा नद्य के अनल जगाम ।
 चंदन चर्चित गाल वसन बहु शक्ति जगाम ।
 महेशि फूल की माल रत्न के मण्डल जगाम ।
 ये नहि सोमा देव नेक दोषल जो जगाम ॥
 सवही सिंगार की सार यह बानी वरजल अमलकर ।
 लिहि सुनल सवन के मन हरल रीति रहल नैपति वर ॥ १०१ ॥

मन—छन्द ॥

दृष्टिमा की लल देहि क्षमा की मजन करो निज ।
 दया दिव सं धारि पाप सो राखि दूरि चित ।
 सत्य वचन मूख बोनि साध पदवी जिय धारि ।
 संत पुत्र की देव नखला अति विस्तारि ॥
 संत गुरु सं आपन गुण करि करि परिपालन करि ।
 करि दया कुंठित नर देवि के संत रीत यह अनसुखि ॥ ४६ ॥

मन्त्र—पं० ६ ॥ छन्द ॥

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ नीति मजरी लिखते ॥ छन्द ॥
 जाकी संदे बाहे बही मूर्ख विरक्त मन । शीर पुत्रय सो शीरि पुत्रय बहु बहल शीर धन ।
 संदे कर पर रीति करी कोइक शीरि । यह विचल गति देवि विचल जगो जगत न ठीरि ॥
 संत शक्ति राज पत्नी सुं धिक जार पुत्रय की परम धिक ।
 धिक काम याहि धिक याहि धिक अथ अजमेरि की सरल इक ॥ ११ ॥

संख्या २१२६, नीतिमजरी, रचयिता—सवाई प्रताप सिंह जी, उपनाम, अजमेर,
 स्थान—जयपुर, पत्र—६, आकार—६ ३/४ × ६ इंच, पर्क (प्रतिपृष्ठ)—२६, परिमाण
 (अनुसूची)—२५० पृष्ठों, रूप—साधारण, पत्र, लिपि—गोरी, रचनाकाल—सं० १८५२,
 भाषा—संस्कृत—श्री सरस्वती अक्षर, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, डि० व० ६४, पृ० सं० २११ ।

विषय—श्रीमद्विषयक दंडे शीर सोंठे लिखे है ।

श्रीमद्विषयक श्रुत संस्कृत ।
 कृति श्री मनहरि राजा विद्या राज महाराज राजेंद्र श्री सवाई प्रताप सिंह जी देव विरचित

आदि—अथ वैराग्य संजरी लिखते ॥ सारता ॥

सर्व विद्या सब फल पूरि रक्षो ब्रह्म धन ।

सदा एक रस बाल बदन वा परब्रह्म को ॥ १ ॥

॥ कुंडलिया ॥

पंडित मठरता अरे अणु अरे अविमान । जीव... या जगत् के मूरख महा अजान ।

मूरख महा अजान देखि के संकट सहिय । छठ प्रथम कविज काव्य रस फालो कहिये ॥

बृह्म अई तन मादि अष्टर बाली गुणु मंडित । अथने गुनको मादि सोन मादिबे के पंडित ॥ २ ॥

मध्य—१० ४२ दोहा ॥

सब संगति सुखदला विना कियेला अछ ।

जाग्यो नहि कहि तप किये यह फल होत प्रसन्न ॥ ४८ ॥

॥ कुंडलिया ॥

जैसे बचल बचला योही बचल योग ।

जैसे हो यह आय है क्या धन पवन प्रयोग ।

यही धन पवन प्रयोग तरल योही जवान तन ।

विनसत संगत न वार गान हूँ जाल आस कन ।

देखा कुसहरे दुख देहे धारित को पसे ।

साधल सब समाधि व्याधि सो छूटत जैसे ॥ ४९ ॥

अंत—

॥ दोहा ॥

करी अरथरी सनक पर साया मनी प्रताप ।

नील महल रस गौणवै वीतराग प्रभु आय ॥ १०१ ॥

आी राधा गौणव के बरन सरन विश्राम ।

बहु महल विन बहेल से अमपुर नगर मुकाम ॥ १०२ ॥

सबल अछदाश सनक बावना गुप्त बधु ।

मादी कृष्ण सुकला तीज प्रीत भुंज करि हेतु ॥ १०३ ॥

इति श्री मत्स्यपुराणविद्वत्साल राजानव श्री सवाई प्रताप सिंह जी देव विरचिते श्री वाराणसी संस्कृत संस्थान ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥

विषय—भर्तृहरि कृत सत्कृत मध्य 'वैराग्यशातक' का हिंदी पद्यानुवाद ।

संख्या २१२४. स्तंभे विद्वत्, रचयिता—सवाई प्रताप सिंह जी, (अमपुर), बंगाल—

देशी, पृष्ठ—५ (२ से १३), आकार—२५ × ६ १/२ इंच, पत्रिका (Kalyan)—२२, परिचय

(आनंद) —४२, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, विधि—गजरी, रचनाकाल—सं १८५०,

प्रतिष्ठा—श्री सत्कृत गीता, विद्या विभाग, कांकरोली, हिं ४० ६२, पुं सं २१२ ।

आदि—अथ स्तंभे विद्वत् मध्य लिखते ॥

दोहा—गन नायक बरदान है सारद ब्रह्म प्रकाश ।

राधे कृष्ण विद्वत् कहे पुरवी मन की आस ॥ १ ॥

कहे कहे कहिन कहे मय नै कहे न जाय ।

इसक कृष्ण अंक संगी हेतु हेतु लिखि हेतु ॥ २ ॥

मध्य—१०—१०

इसक आय आकल अरे करे दिलो के टुक ।

नयन नीक शीक आदि उठी हूँ करि हूँ करि ॥

विषय—भर्तृहरि कृत संस्कृत ग्रन्थ “शृंगार शतक” का हिंदी पद्यानुवाद ।

शृंगार मञ्जरी संग्रह ॥

इति श्री मन्मथराजाविद्यारण्य महाराज राजेश्वर श्री संवाद प्रताप सिंह जी देव विरचित
सुनत गानत वासत लिखत हेरत गानत की पीर ॥ १०२ ॥
इहे शृंगार की मञ्जरी पढत होत विन धीर ।
कार्ह के शृंगार वचि वदी वदी परतीति ॥ १०१ ॥
कार्ह के वंदन वचि कार्ह के वचि नीति ।
मेव वाके छल वल निरविह विविह कायर होत ॥ १०० ॥
महामत या प्रेम की जब निप करत उदीत ।
॥ दही ॥

शत—

प्रसपरता सम कर लस गरीरल प्रकास ॥ ९८ ॥
ब्रह्मकाल सम मुख लसन नीलम केसहि पास ॥
मृगनी कासिन विना लागत सब श्रधार ॥ ९७ ॥
दीप अगनि मनि ब्रह्मा जगमग जोति सुंदार ।
तीन लोक जोयो मदन नाहि करत निव होत ॥ ९६ ॥
कामनि हुकमी काम यह नून प्रगटत ।
मध्य—पृ० २७ ॥

जगमगत सल मदन से जात दीप जय जयति हेर ॥ १ ॥
हुति विदपन अखिल एक रस अर्धभूत अखिलकर ।
अपनी आत्म रूप प्रगट कर नाहि दिवावत ।
मदमोह अथान देव की निमर मसावत ।
जायो काम पतंग आ विन मयी व परसन ।
शब्द—बंद कलामय बालि कालि बह्मिनिन बरसन ।
आदि—अथ शृंगार मञ्जरी हेसनी लिखते ॥

हि० ब० ६२, पृ० सं० २१२ ।

रचनाकाल—सं० १८५२, प्राक्किरगन—श्री सरस्वती अखर, श्री विद्या विभाग, कांकरौली,
पृ०—२६, परिमाण (अर्द्ध) —२००, पृथी, रूप—सोठारंगी, पद्य, लिपि—नागरी,
(अपुत्र), कागज—इंग्ली, पृ०—१५ (१८ से ३२ तक), आकार—६ X ६ इंच, पृ० (प्रति-
संख्या २१२६. शृंगारमञ्जरी, रचयिता—संवाद श्री प्रताप सिंह जी ‘ब्रजनिधि’,

विशेष आलोक—इसमें पहले ‘प्रेम प्रकाश’ शीर्षक ग्रन्थ लिखा है ।
विषय—राधाकृष्ण प्रेम विषयक काव्य ।

इति श्री लाले-विद्यार ग्रन्थ संग्रहोत्तम ॥

सर्व अस्वस्व शोक प्रवासन शून्य वष ।
माष शून्य शिला सु तिथि दीनवार मन हेव ॥ ४४ ॥
शत— ॥ दही ॥

बहु आधा खलक से कीनी इतक कामल ।
विगर लकले छलपड शिर न लगी जगल ॥ १५ ॥

संख्या २१५. कविता, रचयिता—श्याम, कालज—देवी, पत्र—१ नरेंद्र शर्मा—
 कालज—देवी, पत्र—५, आकार— $4\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ इंच, पत्रिका (प्रतिपत्र)—३०, पृष्ठा—५६, अंगूठा—५७—
 कालज—देवी, पत्र—५, आकार— $4\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ इंच, पत्रिका (प्रतिपत्र)—३०, पृष्ठा—५६, अंगूठा—५७—
 कालज—देवी, पत्र—५, आकार— $4\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ इंच, पत्रिका (प्रतिपत्र)—३०, पृष्ठा—५६, अंगूठा—५७—

विषय—इसमें रावण श्याम सेवाद वर्णित है ।

१०॥ तो विषम पालनं आनि बाधयो तव रते पान मरि कं वार रवायो ॥ १०॥
 ममं के वचन मुनि उच हिय मं ययो चतुष्टी जिय मंडूटी चडाव ।
 हैरे कौऊ मूर सावत सेरुं सया मारिदयो मर नहि जान पाव ॥ ११॥
 एक रह्यद हिये मुकुट उचि जाहिं सया सब बरन सी सर्पि डाके ।
 बाहि की पूत यह सोच जिय मं कक सिंह होइ सेडकन कहे माके ॥ १२॥
 सुनत अपराध उतपाल छडेन की बहन की छिया अपन करैव ॥
 जान धीं देन अवली न मारयो करै परान तरन जिय लाव आव ॥ १३॥
 मूर किसीर जब बानिनदन कहुं कौन अब सोस सोसो पचाव ॥
 नक धरे धीर रणधीर दुषधीर मनि देहि तरवार कंसो बजाव ॥ १६॥

शत—

कहेन परधाल महाराल रावणो जली आस सी याम मार ॥ ६॥
 कुंस मार सेर अघोर सम लिनत है आपनो बल न जिय सो विचार ॥
 छाना की छोइ इडादि धर धर करे बरन नही धीठ नहि सक मान ॥ ८॥
 बापल बन बरन की जाति चधीर अलि रहो राजान सी बानि जान ॥
 सर सरन बाकरी भूजा दुषधीर की जो सी मूरि मूठ तं नहि देवा ॥ ७॥
 जो ली यह भंड अभिमान मद की भरिन यौव मं बक है दिये वृषा ॥
 पर जरी आनि उर बौस लोचन विकल पाकि भूज उठन मजनि निहरयो ॥ ६॥
 सुनत ही वचन मान फनग की फन चया सिंह पूठ सोचन मरोयो ।

मध्य—

धरि परि है अब रजिहं के बदन राम अवार पल उडयो ॥ ५॥
 हूँवे मम ताल के रावरे से लछिन धम की मूठ सिह फोरि जारो ॥
 ताल के ख न की मान पतिनी करी सब की सरण जाई सोस दीन ॥ ४॥
 होहि भूसा जली मण्ड कलि काहि नं बानि से बाप की बर लीन ॥
 का कक नक मोहि सक रघुवीर की दक सीहि मारि अवहो उजाल ॥ ३॥
 वाम कर की अलप शूरी अक मरि लक गठ बक छिन माहि डाई ॥
 बाल अरु न यह शूर पीछ रहै रोछ कलि लीन गठ सक आय ॥ २॥
 मूर अघोर नाग बलईन तं बनि कीयो इड भूसादि सवहो मवाय ।
 जाहि दे जाहि जब कोप लकेस कहुं अजन सेरुं बरयो काल तेरो ॥ १॥
 आव रघुवीर की सरण आद कहे मानि मनिमठ या वचन सेरो ।
 आदि— राजनी सति ॥ दडक ॥

संख्या २१३. श्याम रावण सेवाद (आनंमालिका), रचयिता—श्याम,
 कालज—देवी, पत्र—५, आकार— $4\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ इंच, पत्रिका (प्रतिपत्र)—३०, पृष्ठा—५६, अंगूठा—५७—
 कालज—देवी, पत्र—५, आकार— $4\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ इंच, पत्रिका (प्रतिपत्र)—३०, पृष्ठा—५६, अंगूठा—५७—
 कालज—देवी, पत्र—५, आकार— $4\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ इंच, पत्रिका (प्रतिपत्र)—३०, पृष्ठा—५६, अंगूठा—५७—

प्रथम सनद अपार के प्रश्न दान लीला गद्यपु ॥
 जो कहल सुनल अनंद चपल प्रम पद को पाद्यपु ॥
 शीघ्रमान सुला सुकुमारी । दधी गीरम वैचलिन हरी ।
 छिंदिय धरी अलर ध्याना । चली सुनीरल धी कावाला ॥
 जह सीरली कदम चंडी छहो । नह बंड ऊअर नर नरो ॥
 सपरी गुरोरी वलन आह । नव कोरन जो मुरली बजाह ।
 दधी बैचन बली बीज बाला । बीच आह नीले नदबाला ॥
 देह देह गुरोरी दधी दाना । गहो अचल रोचन फरहो ॥
 गुम छह गीमान गपारी । फरिहो कुच फचकी मारी ॥
 सब अषन लेव छानाई । मरुकी दधी देव नंदो ॥
 गुम बहिन कीहो । बुराई । छोईहो नह दरोई ॥

आहो—धी गनेसाए नमह ॥ धी पीयी दधी लीला ॥

संख्या २१६, दधिनीला, रचयिता—प्रयादास, कानन—धो, पल—६, भाकार—
 ६, पति (प्रतिपद)—७, परिमाण (प्रत्यय)—४२, पयो, रूप—प्रलीन, पय,
 विधि—गपारी, गानितरधान—दही साहित्य समलन, प्रयान, रजसाहोबाह ।

विषय—शान्तिपद्य ॥

हे हो हेरि गये पाप पराछल नपा ॥ धी गुर बरयो कमल प्रलापा ॥
 ल ला ले नैकी हेरि नामा ॥ देवे ऊँ हे अक्ष को दाना ॥
 ०: ०: ०:
 क्ष क्षा छिहे विष बंधन बाहिधे ॥ सल गुर बरन सरन होय रहिये ॥
 नाम मरु रस पिबो सुवाना ॥ जासे गभ बास नहि हेयि पयाना ॥
 बाराबडी शान गीन गावो ॥ सब सलन ऊँ सीसा नवाका ॥
 दोन प्रल दाल सुमाना ॥ नमस्कार कक गुरदेव प्रनामा ॥
 कति धी सुदाना जो की वारपरी शान गीनबल सुपुयो ॥ ३५ ॥ धी ॥

शत—

"प्रश्न जाल" गुरदेव लयायो ॥ लिखमालीस सब देरि गमायो ॥
 ०: ०: ०:
 उव नीच शानक करि देछो ॥ पुकाहि अहो सकल स लेवो ॥
 न ना निगम छोलि कर देछो ॥ बुजा और नहि कोई लेवो ॥
 सल दीप अह बहोडा ॥ माहि छोई रही नव पछा ॥
 ०: ०: ०:
 ब वा विरल निहैवे करि रयो ॥ सिखयावद सुठ सति जायो ॥
 सल सल नव होई प्रयाना ॥ ऊठ वचन सोई पाप समाया ॥
 ०: ०: ०:
 ध धा धट धट बीचन भाई ॥ जल धल स प्रभु रई समाई ॥
 ०: ०: ०:
 धन जीवन नन रग पलागा ॥ छिन स छार होई यह अंगा ॥

सुसुकाह सुप पर देन अचल चरु चवली आनीनी ।
 त्याम घटा घन घरी आह मनी वमकत वानीनी ॥

॥ छंद ॥

जव काणु कही अस बाता । तव गही फटी फारेसी ह्या ॥
 हेम माहि पिता घर घरी । अस बोल न बोल घरी ॥
 बर घडि दही घरी घटा । आने वातन ते नही घटा ॥
 मद्रकी सीर ते उतराह । कर बौहे कुअर कथाह ॥
 गही खाल दधी दौसी मानी । तरे देन उत घुवन लागी ॥
 दधी देन गजरी अकुलानी । प्रसु नेकु न चोतवनी मानी ॥
 एक भावन ते मनी जाह । गेहरी जाह एक खाल चोराह ॥
 तरे काण करे विचवानी । सुप अचल हे सुसुकाणी ॥

॥ चौपाई ॥

चरुराह न काव सुदरी जा जात आरु घर घरी ।
 मनी रही रस करुही कोडा रही मने घुमहु मनी ॥
 नय मुनी उपहास करी हे कवन इत उत कोजाण ।
 अब आपनी राण सुदरी दान हेमरी दौजाण ॥

॥ छंद ॥

जोडाही न नद दोहाह गजरी जान केव करी पाहरी ॥
 अब दोहाही वल यम तेरे कवन आह जोडाहरी ।
 सवन दोना दान मीकी घुम बहिन सरवरी करी ।
 चरु चवली दौठी लागरी देषा न घुसी गजरी ॥ १ ॥
 मुनी गजरी हेरि सुष वंगी । दीअ बक भए सुष नीना ॥
 घुम ससमी न बोलु सुरी । हेम हे मयुरी को गीआरी ॥
 जरे ठाकर कस सुआरी । सुधी सुनतही करीही सघारी ॥
 न हेम लाहे लवग सुपाटी । हेम गीरेस बेचन होरी ॥
 जव कस राह मुनी पहे । तव नद ही पकरी मगहे ॥
 सव गीअन लहे जोनाह । मीकुला घन दही लंटाह ॥
 घुम ही अपनी मदमाले । ताले करुह अटपटी बाले ॥
 करन अटपटी बाल सोहन घाल कण्ठ न लागीहे ।
 हेम न होहि गजरी जर घुमारे साजोहे ॥
 अब चोत वेरु बीबाह सोहन जोह अचल वाम को ।
 लाड कलक धराह मानी ती सुना वषमाण को ॥
 मुनी गजरी बचन रिमाला । दधी बोल नद के लागी ॥
 काहूँ मूठ कलक लागे । अपनी परलीक नसे ॥
 बीना दान जान नही पही । जी कोटिक दास विषही ॥
 हेम आदी बंध अवतारा हे । कोदन जी नाम हेमारा हे ॥
 हेम ही सव देन सघारा । बसुधा कर आर उतारा हे ॥
 पुनि करव गऊ प्रतीपाला । हे नाम हेमार गीपाला ॥
 सुषियन के सुष दही । खी सुजल से जस लही ॥
 हे वीर्यवन नाम हेमारा । का करीहे कस बेचारा ॥
 यसे बीया चरीव न लागे । हेमसे चरुराहन काव ॥

॥ छंद ॥

शब्द—शब्द वल चंद्रावली लिखित रचा प्रदान ॥
 आदि बलु विषय को लिखित होत वरुई छान ॥१२॥
 जोली विषय विर भांगल जोली प्रपठर आन ।
 केशव वल चंद्रावली लीला होइ प्रथम ॥१३॥
 कुंवर तवही दीनी काटी महिरसु पाइके ॥३५॥
 जब कुंवर सी माटी हरी सब सिधु जानिके ।
 गुम कल रहीं पानी ही म महो वृष पाइके ।
 मध्य—तब हंस कछो परी लीला कुंजलन साइके ।
 पद अलि मुनि सी विरलि जाइ वह हंसिणी कहि कल ॥३६॥

मध्य—पुं ० अ. हरिनी ल-दीहा ।
 नमस्तरसहि अम सी परी लष गुरु देउहे शन ॥
 विद्याखिल दान प्रगट प्रथम भवति शान पर्यविर ॥
 वडे गजबन सुवर रदन सुममालि सदन विरमहे ॥
 ॥ विनागी ॥

आदि—॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
 सुमिरल हो जाके चरित टरन विरन नि सेस ॥
 वरहि किखर नर अमर सकट हेरन गनेस ॥ १ ॥

संख्या २१७क. कृष्ण वल चंद्रावली, रचयिता—प्रवीण कवि, काल—३५, पं०—
 ११, आकार—८ × ६ १/२ इंच, पृष्ठा (प्रति पृष्ठ)—४६, पत्रमास (प्रसिद्ध)—७०, ६, १५,
 रूप—भाषारण, पद्य, लिपि—गोपी, प्रसिद्धि—गोपी, श्री मद्रवली ५२१, श्री विद्या विभाग,
 काँकरीली, हिं. वं. ६२, पुं. सं. ३११ ।

विषय—श्रीकृष्ण श्री गीर्वाण की दानलीला का वर्णन ।
 —प्रथम प्रलि की पूरा प्रतिनिधि

कहेनी राइ चरन गहोके काय अब धर जान दे ।
 ककन मूर्तिन माल मुकुटा कछुक आपन दान से ॥
 जब देन लगी सपी दाना । तब अलि कुंजलन काना ॥
 प्रथम मूर्ति साधि कं वसे । लीनी मूर्ति जागम जसे ॥
 कही जवनी अनीग बलाव । प्रथम बंनहे से चील बाल ॥
 तब राधु निकट बली आई । सुनी लीज बोली गीसाई ॥
 हेसही सब दान लोहोरी । अल चरन सरन बचारी ॥
 धनी जीवन जलम हेमारी । जब दरसन पावो लोहारी ॥
 अब जा वाहे सी लीज । प्रथम क्रीपा आपनी कोज ॥
 काइ बंठी बधारी डोलाव । फाँड बोरी पोली पोलाव ॥
 हरी देवी गवरी..... । हसी बालि सात पानी ॥
 बालि सात पानी मुंदर मानी रनी रस से रही ।
 कर केलि कलील कोणै सहस रग रस से रही ॥
 करु क्रीपा दरसन मोहन कवल लीजन राजही ।
 "दास प्रया" प्रथम सीमा कहल कलीमप जागही ॥

श्री शंकराचार्य जी का ऐतिहासिक चित्रण भी दिया है ।
विषय—शंकराचार्य के श्री शंकराचार्य मंगलान का श्री शंकर राय समर्थ राजाव का वर्णन

कल्याण नमः ॥

इति श्री शंकराचार्य विचित्र विचित्र वचन नाम दसमोऽध्यायः श्री सुख भवति । श्री
यहै सुख प्रथम कथीया अथो प्रथीम उच्यते ॥२५॥
रिखि विचित्र वसु सति संवत् द्वौ द्वौषा शिव सुद भवि ॥

शत—

पूजित ही सब अति प्रसिद्ध कहिली प्रथम रसना की नवाइय ।
श्री सुखिल न बात कछु कहैवे देवन की धन दे लज्जावाइय ।
नहि प्रथीम बायो विसर्षा या नहि कहै कौल बायो जगाइय ।
अति जगाइ गिरा के प्रसाद श्री शंकरजी के नरेय की गाइय ॥१२१॥

सप्त—पृ० १२

श्री शिव चरन प्रणाम करि, गणपति की सिर नाई ।
बानी की सुमिरन करी परम महा सुखवाइ ॥११॥
पूजन गिरा प्रसाद ले रचना रच्यो नवीन ।
द्वारावली नरेय की सोया सरस प्रवीन ॥२॥

विवास लिखते ॥

आदि—श्रीकल्याण नमः ॥ श्री गणेश्वर वरलयाय नमः ॥ श्री शंकराचार्य के विचित्र

संख्या २१७७. श्री शंकराचार्य के विचित्र विवास, रचिली—प्रवीन कथन,
काल—श्री, पृष्ठ—२८, आकार—८ × ८ इंच, पृष्ठांक—३०, परिमाण
(अर्धपत्र) ७२०, पृष्ठांक—३०, पृष्ठांक—३०, पृष्ठांक—३०, पृष्ठांक—३०, पृष्ठांक—३०

छटा में भाषान की चित्रण किया है ।
इस प्रकार संज्ञा कलाभूत है । वर्णों के लक्षण पहले देकर बाद में उदाहरण लिखे हैं ।

कथन, चतुर्दश म—द्विपद्यादि, पञ्चदश म—शुद्धसमाधि, सौलदेव म—गणोदि नाम कथन ।
दश कला भूत—द्वितीय विषयादि वर्ण कथन, तृतीय म—चतुर्विंश प्रतीपादि दशक
शतशतारि चतुर्विंशतशतारि वर्ण वर्ण, एकदश म—पञ्च विषयाक्षरारि पञ्चविंशतशतारि वर्ण वर्ण,
अष्टादशशतारि वर्ण वर्ण म—एकान्विशयाक्षरारि द्विविंशतशतारि वर्ण वर्ण, दशम म—द्वि-
द्विंशतशतारि वर्ण वर्ण, अष्टम म—सप्तदशशतारि पञ्चदशशतारि वर्ण वर्ण, अष्टम म—पञ्चदशशतारि
चतुर्विंशतारि पञ्चदशरि वर्ण वर्ण, पञ्चम म—सप्तशतारि नवाक्षरारि वर्ण वर्ण, पञ्चम म—दशशतारि
कला भूत म—छटा के नाम, द्वितीय म—गणो के नाम, तृतीय म—एकशतारि पञ्चदशरि वर्ण वर्ण, चतुर्थ म
श्री वाद म १ से १७ तक है । अथ म १६ कला भूत है, जो उत्तक प्रकरण विषय है । प्रथम
विषय—प्रवाल विषय वर्णन । पृष्ठ संख्या १ उच्यते है । प्रथम म १८ से २१ तक

वर्ण चंद्रावली समाप्ता ॥ श्री ॥

इति श्री कल्याण वर्ण चंद्रावली गणोदि नाम कथन नाम पञ्चमः कलाभूतः ॥ इति श्री

कल्याण वर्ण चंद्रावली लिखिते ले करयो समाप्त ॥२१॥
सेरे अंगिम सकल जाई यह निरधार ।
सकल सो देरि अब सेरे होई सहाइ ॥२०॥
सुनत गाव गजराज की विपनी देरी जो आइ ।

कब्र पीछे जब उभा दिन । तब तीरीया तीया हूँ तम मर ॥ ५ ॥
 दिन पाइ राह दीज थामत । ती उठे कब्र कू मरे उठत ॥
 भव—

पाछे मूय तीया हूँपली यथा न कात्या विज हूँ ॥२२॥
 सुनने पुकार धनी की काल गया दिन है ।
 दिन सुनी न दिनकी चलन मू पावे हूँ विकार ॥२१॥
 हूँकुम धनी की विष खनक किये पुकार ।
 पर दिन कछुप न कात्या दिन मू कछुपे ना मूँन ॥२०॥
 जी मीटा या थारीक दिन मी पाया मूँन ।
 सोवत न दीव संघन मू मूय उबार हूँली दिन ॥१९॥
 ना कछु कात्या राल मू ना कछु कात्या दिन ।
 होर हूँली तब : १८ ॥

भादि—.....

काशी । (दाता) —कुँवर सुँरुआ सिद्धे जी, कालाकाकर, अथय ।
 लिपिकाकल—सवले १८५३, ग्रामिकाकल—अथय भागा पुँरुतकाकल, कागातीप्रथापिठो मया,
 (१८) —२०, पतिरमागु (अनरुप) —१८५५, चलि, कप—ग्रामिका, पय, लिपि—कागाती,
 (१) प्राणनाथ, कागाज—इली, पय—५५३, अकार—१२३, १०३, २५, पिका (पति-
 संख्या १२६. अलीरास (धामी पय का मय), रथिवा—इयली थार मरुनामि

विषय—प्रज्ञाद-वर्तन-वर्णन ।

काएरुय ॥
 विनली मीरी अठर टट मिनाज जाती । सवले १८८० मीली अही सुँरी २ ॥ लिपि मगवान दाम
 यह कथा आधी प्रानवद वीहिन । यह प्रहेलाह वर्तन जी देया मी लिपि । पतिर जन मी
 समाधान जी एहि मम जावे । प्रम प्रसाद जी अलि वर पावे ॥
 कवह म दरस मगवाना । सकार जीम करहि धरि धामा ॥
 जहि के मया मू देही अनामा । मरुज वप कसे के जना ॥

भव—

वाहे गुँर ठीह और गुँर देरी । मलिम वहीन मिपयन वीःरी ॥
 जहि की आदि अत नहि जाती । ताकर नाज खेन दिन राली ॥
 ए अम कहे दीस सब तीरी । एहे वालक का जान मीरी ॥
 सुनि के राला उठा रिमाई । लिपि गुँर तन मीह यटाई ॥
 लिपि एहि सब हेम वावा । एके श्री राम नाम हे सावा ॥
 तब प्रज्ञाद कही कर जाती । विनली सुनहे गाल एके मीरी ॥
 राला गुँठा निकट बोलाई । का लिपि तीहि गुँर लिपाई ॥
 वहीन जन के एहे वीठवा । श्री राम नाम लिपि मीर म आवा ॥
 श्री राम नाम प्रज्ञाद जी लीहो । ताके लिपि वहीन हूँ देना ॥
 ॥ वीपाई ॥

भादि—श्री गणेशाय नमः ॥

श्रीविररव, याम-रुषरुई, पी०-सरोप अकिन, लिपि—इला—इलावाड ।
 प्राचीन, पय, लिपि—कागाती, लिपिकाकल—स० १८८० लि०, ग्रामिकाकल—कागाती मरुय प्रमा
 अकार—३१ × ३१३ कूब, पिका (प्रतिरुप) —५, पतिरमागु (अनरुप) —८०, १०५, कप—
 संख्या १२८. प्रज्ञाद वर्तन, प्राणनाथ वीहिन, कागाज—इली, पय—५५,

कारर किम्वरु जाति अनर । देव कुप नै एक वर ॥ ३ ॥
 नर उरि मरती मरती देन । देहि ठा आर वरै वर करी ॥
 ॥ वीरु ॥

कारर पुर लपस पुन वरपी नपी देी आर ॥ २ ॥
 वरिपुर म वरैली वरै सव सुप पड ।
 रनी लीपी लोक की मनी मनी पड ॥ १ ॥
 वनी वनी वीरि वनी कही वनड ।

॥ देही ॥

आ दे—शी गरीशाल नमः ॥ अर वरैली वरिहर लिखत ॥

(पात्रिक संघटे), कापी नगरुपचारिणी मया, कापी ।

संख्या २२०. वरैली वरिहर, रचयिता—शाननरु सीली, कागल—देही, पल—१३,
 आकार—२५ × ३३, पत्रिक (प्रविष्ट)—१८, परिसरु (अर्धपु)—२५६, पृष्ठी, रूप—
 प्राचीन, पत्र, लिपि—नगरी, लिपिकाल—स० १७६०, प्रविष्टयान—शरुभापु पुनकालरु

१४. क्यामल नामा वरुै लका वरीख नामा—पल ५०-५५ देक
१५. क्यामल नामा ठोटी—पल ५३-५३ देक
१६. किवाव मारकत मार—पल ५०-५३ देक
१७. वानी आवर की मनी भापु म तथा उमकी देहिलानी—३६-१-५ देक
१०. श्री राज जी का वडा मार—पल ३३-३२-३० देक
२. किवाव आठो मार—पल ३०-२-३३ देक
८. परिकमा—पल २३-३० देक
७. लिखतल—पल २१-२३ देक
- आर अरस अनीम सु—पल १८-२१ देक
६. वरुै नामा, देवामा, मजान की सुँरल, अरस अनीम की देक, मारकत मरैकारन, मीमन
 एव का अरु, देकी सुँरल का, नजी फिकरका, रडो की वन, नल नरु, जलकी देहिलान,
 देवसा पुँरमान—नारु देही नाम का, मरुैराज नाम का, खलसा देहिलाम का, मरुैर लिपि-
५. किवाव कुरान—पल १३-१-१८ देक
५. मनु—पल ६०-१-३१ देक
- प्रकरु—पल ७०-८२ देक
३. किवाव वीरु श्री कलम देहिलानी—पल विरु दे की प्रकरु, अवरी की प्रकरु,
 मीरु लीला, जग मया के प्रकरु, दया की प्रकरु, देवी की प्रकरु, जगन का
२. किवाव पद अरु आर वारीमानी—पल ३२-३६ देक
- वत की मार, पप पुँर मरवा दे वडा—पल ५६-३१ देक
१. किवाव वरुै—वरी जी का देहिल, मार वानी, वरुै वानी, देव वानी का वेवरी, मग-

रचयिता के नाम वीरु लिखे जात है ।

विषय—शमी सपदाय की रचयिता का सख है ।
 ॥ संवत् १८५३ ॥ के वरु वरि ५ मरी की ॥
 ॥ नरुैष नामा लमम ॥

पी क्यामल हुँ दे जाहिर दिन । मरुैम दे करु उमल रूसन ॥ ३ ॥ २५५३११ ॥
 एक सुँर उठाए कं दिर । देसरे नैरे सुँ कए म फिए ॥
 संव वरुै जलया अजलील । जाए उठया अरुसकील ॥ ५ ॥
 नर ली दरवाजा मू के मया । पाँ ली नका कुरै को न मया ॥

शानी सबी सिपवन सेरी नइ स्थाप की संबै ।
जपनी वी से सवन करिक मवन की संबै ॥३७॥
बनी बेगरी पर सुगन सिपव देसरी ।
नली कल भंडै वी करी पर परी संबै ॥३८॥

.....शाब.....

सख्या २२१क. मनमोहन लीला, रत्निलता प्रमदाय, ब्राज—देवी, मन—
आकार—७६ × ६३, पक्क (प्रतिष्ठा) —१८, पवित्राण (भक्ती) —४८, पर्वी,
कण—प्राचीन, पुष्प, लिपि—मार्गी कथी लिपि, प्रविधायन—मं० मं० मं० ५० मं० मं० मं० मं० मं०
(दाता—५० अक्षरसहाज वी श्रे, ग्राम—पुष्पा, पारे—समाय अर्को, विना—रजप्रदार्)

यकट हेलो है ।

के ग्य की नकल करने में अपना दाहिब का किम प्रकार निवदि करना बादिप, पर प्ररुन प्रीत में
स्वार की जगह सबब वदिव प्रयुक्त है। प्रति श्रद्ध जान पडती है । पर मरती ॥३९॥
इससे उस समय के प्रविठ कविदा की श्रद्धाश्रद्ध जेवन शनी के विगय में पना मनना । मं०-
प्ररुन प्रति महलर्ग्यु है । इसकी प्रलिलिपि दिदी के मुप्रविठ कीव सनाप न ती ।

अप्रप है । परु इसमें सदे है नही कि ये सब १७६० के ददिसे है ।

रत्निलता का नाम पुष्पिका के लेख के अनुसार प्राणनाथ मं० है । मं० मं० मं० मं० मं०
विश्व आनंद—रत्ननाथ उलिखित नही है । लिपिकान सब १८६० है ।

उपदेश कुछ नहीं ।

नपुंसक हंसी श्री । पूर्वीक पक्ष लडाई में नरक हो जावे है । कथा हेतुमन्त्रक है । मं०
लोगी की लडाई का बयान किया गया है । मूख और कुंमर एक श्री व श्री अननी व म
विषय—मूख (जदनी) और सुकुमार (सोकी) तथा व्यसनी (मरती) श्री नपुंसक
१७६० प्रति आता श्रुता १ रव लिखित विश्व लोकठरुयामव विश्व सीमनाथ उपदेश ॥
दति श्री कवि प्रमनाथ सोनी कुल ॥जदनी अवतर समाप्त ॥ सुमरने ॥ सदेने

मारे सोकी जदनी कते नही है आण ।
कवन रंजलि प्रयु दई मिदयी सकल सलग ॥४१॥

॥ दोहा ॥

जो प कहति हेमारी डार । तो इनकी वालन सो मारे ॥४१॥
अमल करे संवन को जाहि । नामदेन व ने न पाहि ॥४०॥
अमलन अमलन सो पो कहो । नामदेन की रंजलि सही ॥
१ परवन ते पय नदी बहेयो । रहेव लिनको मारे बहेयो ॥
२ परवन ते पय नदी व छौडी । सिमरे बहे परी नहि सोडी ॥४२॥
अमलन किथी विचार सुनकी । जाय जगन कह्ये जो फी ॥४८॥
अमल मारे नो निमि सब । तव हेम अमि सकं यो कव ॥

भत—॥ चौपाई ॥

नयो गंठ कालर पुर नंठ । शानि बरयो हे पाही ठाठ ॥४५॥
बरस ठसलक है के गण । तव सब फलिक डक ठारें बाण ॥
मनी करन को किथी विचार । तब लगी लनक सो बार ॥८॥
जोव कहो तो कहिठो बसिठ । गाही तो कहि कालहि नसिठ ॥

.....

अन—पृ० सं० ५६

लगा लिपन मन के दूध सवरे हेली जौन लिपे बाधा ॥
 श्री सहेन नदलाल हुनारे जसुदा जे के बारे ॥
 हिले श्री राधा गीपिन सबकी हे प्रानाम प्रिय प्यारे ॥
 उरि के स्माधार सुख सखिये सुनी रेन जे वंगे ॥
 हिल के स्माधार सुख बा हिन ना हिन देव नंगे ॥

मध्य—पृ० सं० २८

जय विरच जल जय नारायन जय महेस गनैसा ।
 जय सारद गुर जय जय देवा उर से करहि प्रवेश ॥

लिपले ॥

संख्या २२१७. प्रमथानार, रचयिता—प्रमदास, स्थान—विराजपुर, पल—२८
 पृक्ति (प्रतिपद)—२०, अयुषी, लय—पूरुजा, पद्य, लिपि—गोपरी, रचनाकाल—सं०
 १८२७ वि०, प्राक्किरस्थान—मठ गौनाथ चद जी, मुहूर्त, ११-५-७७२५२५ ।
 आदि—श्री गानस जे श्री सहेदेव जे श्री महदेव जे श्री पारवती गौरामहेश्वरानी जे श्री
 लजमी जे श्री राधा केलन जे श्री राधा रामचद जे । सदा सहेइ अथा प्रमथानार छद जलित

रचनाकाल और लिपिकाल का भी कोई पता नहीं ।
 विशुध शालम्ह—रचना आदि और अन म खडित हे । कवल तीन पदे उपलब्ध हे ।
 विषय—श्रीकृष्ण की गोदलीला और निज दरसन लीला का वर्णन ।
 इति श्री सनमोहन लीला प्रमदास वीरधील महदेव दरसन वरनी नाम प्रथमोऽध्याय ॥
 सहेइ कली के पावती सब दरसन सहेइ दीना ॥६०॥
 धन्य धन्य नर नारी सब सुफल नैन नीज कौन ।
 सुनी के सहेर प्रीआ की बात हेरहेर के पछीनने ॥
 अन—सब घर सब आदी अन हे जसुदा पुरीन पथने ।
 सहेइ अनोक बडे संकर जे अष्टोक प्रथ मतमानी ॥ ३ ॥
 एक सभ कलाम सीधेर पर नर तमाल की छोडे ।
 राधा कौन चद की लीला के धरन मनइ ॥ २ ॥
 गीत राम के पद गुर एकज लीनकी... लगाई ।
 पुनी वदी जलजाल से सीव परकाद के पाए ॥ १ ॥
 प्रथम लडली लाल के चरन कवल सीर नाए ।

॥ दोहा ॥

इति पंचरत्न गद लीला प्रमदास विरचित सुपुन ॥
 अथ लीला लीपले महदेव कौनन का
 हेसी के दीनो गद राधिका लीले मदन गोपाल ।
 से दासी ही कौनन सुसहेरी सुनीए दीनदयाला ॥
 कलदीही की बली राधिका फिर फिर चितवत पाडे ।
 इहे कौनन जे पुलन लागे सवा सग पुनि आडे ॥
 नदलाल बंधवान लडली सुनीए बोल हेमारी ।
 कृपा कदाउ हेरीए जन परे "प्रमदास" बलिहारी ॥

आदि—॥ अथ पंचरत्नो गेद लीला ॥

जय जय जय जय कर्मल दल लोचन कुंज सोचन सुखदाई ॥
जय गिदिद वज्रचन्द नन्दसुंदल आरतदेरयो कहैई ॥

सध—

तहाँ आन वंठी श्री राधा लला जानत जी की ॥
तव ललता जानी मन करी श्री फल दीर मगधो ॥

अंत—

.....
.....
.....
संवत कहे अठारो सीं की पंगलिस की साल ॥
मार्ग वही वार शनि को अई पूरन कथा रसाला ॥

कृति श्री पंचरत्न गेद लीला गेदन रूप वरनगी नाम प्रमदास विरचितायाम् पंचमोऽ-

ध्यायः ।

विषय—पढ़ैली लीला—अयो जी खल बालो सहित यमना के तीर पर गेद खलने गए,
बढ़ी राधा श्री श्री । राधा न गेद ले ली । आबान अयो न राधा से कहे कि तुमने गेद चुरी ली ।
राधा जी श्री कहने लगी कि वैसे तुम चोर हो वैसे ही मैंके समझते हो । प्रम बालोलाप होने
लगा । बाद में राधा जी ने गेद दे दी । खल बाल गेद खलने लगा । राधिको जी श्री सहैली,
ललितो सहित यमना की और चल दी ।

हंसरी लीला—चौर देरयो लीला का बयान ।

लीसरी लीला—राधा अयो विदेर और श्रीफल मंगन लीला ।

बाजी लीला—मान लीला ।

पांचवी लीला—आबान अयो का राधा जी को देखने के लिये गेदन का रूप बनाना ।

सध्या २२१३. नासकेल पुरान, रचियला—प्रमदास, नाम—विदेरजपुरा, पब—६४,

पति (पतिपद)—१३, पूयो, रूप—नया, पद्य, लिपि—गगरी, प्राणितस्थान—वा० रघुनंदन-

प्रसाद ल, सुदेरला—देदवारी, राज्य—छत्तरपुर ।

आदि—श्री गनेस ज सदा सहैइ अथा नासकेल पुरान लिख्ये

॥ दोहे ॥

प्रथम कद गानाइकहे गुर दूज सारइ कूस ।
कपा करत सी मात विसहे वरन कमल धर सीस ॥ १ ॥

सध—

..... प्राणी ।
ठहो करत सुनी यह प्राणी ॥
तव तप वीच सुनि निकला ।
पठव उरलहि उरल सुन सभसा ॥

अंत—

सुन सुनाई कोई । नासकेल विषयान यह ॥
मन बाठिल फल होइ । प्रमदास अंसो कहत ॥
कृति श्रीपद्यपुरयो नासकेल लिख्ये प्रमदास विरचितायाम् पण्डिसमोऽध्यायः ।
विषय—पद्य पुराय के आधार पर नासकेल कथा का बयान ।
विदेरज बालो—अम गय में विचल श्री विदे गए है ।

॥ १० ॥
 ॥ ११ ॥
 ॥ १२ ॥
 ॥ १३ ॥
 ॥ १४ ॥
 ॥ १५ ॥
 ॥ १६ ॥
 ॥ १७ ॥
 ॥ १८ ॥
 ॥ १९ ॥
 ॥ २० ॥

॥ २० ॥
 ॥ २१ ॥
 ॥ २२ ॥
 ॥ २३ ॥
 ॥ २४ ॥
 ॥ २५ ॥
 ॥ २६ ॥
 ॥ २७ ॥
 ॥ २८ ॥
 ॥ २९ ॥
 ॥ ३० ॥

॥ ३० ॥
 ॥ ३१ ॥
 ॥ ३२ ॥
 ॥ ३३ ॥
 ॥ ३४ ॥
 ॥ ३५ ॥
 ॥ ३६ ॥
 ॥ ३७ ॥
 ॥ ३८ ॥
 ॥ ३९ ॥
 ॥ ४० ॥
 ॥ ४१ ॥
 ॥ ४२ ॥
 ॥ ४३ ॥
 ॥ ४४ ॥
 ॥ ४५ ॥
 ॥ ४६ ॥
 ॥ ४७ ॥
 ॥ ४८ ॥
 ॥ ४९ ॥
 ॥ ५० ॥

॥ ५० ॥
 ॥ ५१ ॥
 ॥ ५२ ॥
 ॥ ५३ ॥
 ॥ ५४ ॥
 ॥ ५५ ॥
 ॥ ५६ ॥
 ॥ ५७ ॥
 ॥ ५८ ॥
 ॥ ५९ ॥
 ॥ ६० ॥

अन—आखराम की कर खजल पास छई है ।
मान खान कर आल हो मनखइय छरि यान ॥ ६ ॥
काली बाली विर हो रानो रानल धाम ।
पवनकुमार प्रसाद सी गाय रिकारन राम ॥ ७ ॥
अब शिव धूप न कहि सके महिमा सीताराम ।
इंद्रदेव सुर देव सुल नगर कवि आखराम ॥ ८ ॥

०: ०: ०:
रविवर सी रजा पाय पिसर नवाय खरन सी ॥ ८ ॥
कहेला है गाय खजन खजन खजन खजन रान ।
बाबुमीक न कहै सी संक्षेप खजन सी ॥ ७ ॥
हेमामन हेमम मान करी राम की कथा ।
०: ०: ०:
बिद्यू करी छिपाल खइ खाल खाल सी ॥ ९ ॥
बानी बचन बिसाल श्रीर सालर श्री... ।
सुम काल करन सिद्ध सिद्धि वृद्धि पछिसी ।
गणपति के यरण पूज लाल बदन देव सी ।

गुरुप्रसाद: हेरि ऊम ॥

ऊ ललल श्री सीतारामखइ परजहो परमलगाय नम: ॥ श्री हेरुमने नम: ॥ श्री
॥ छंद रेखता ॥
राम अहेन ॥ ताल ॥ ९ ॥

भारत: बालकांड भारत: ॥

आदि—श्री गणेशाय नम: ॥ अथ बालमीकी रामायण अर्चनारे ॥ आमास रामायण
सख्या २२२ख. आमास रामायण, रचयिता—भूमराम, काल—इसी, पत्र—३९,
आकार—११ $\frac{1}{2}$ × ४ $\frac{1}{2}$ इंच, पक्ति (अक्षर) —१०, परिमाण (अक्षर) —६७, अक्षर,
रूप—आचीन, पद्य, लिपि—गारो, रचनाकाल—सं १८५८ खि, लिपिकाल—सं १८६७
खि, प्रादित्थान—आध्यापक प्रबलकाल, काली नगरीप्रचारिणी संघा, काली । यह अथ
वैदो निवासी पं. लज्जाराम महेता के प्रबलकाल से उनके आनने से संघा की प्रदान किया ।

हेमा जान पडता है ।
फलस्वित्ति, रचयिता का परिचय और रचनाकाल श्री प्राप्त है । आगे खोजा जा हो अथ वृत्ति
काड का आरंभ छेकर शेष उपलब्ध है । पत्रवार उत्तर का नक की कथा अपूर्वक है ।
रचना राम दीगिनयो से रची गई है । बालकांड का समस्त अथ खलित है । अर्थात्
द्रष्टव्य है ।
ऐसा जान पडता है कि नगर, कवि भूमराम के यर अथ । रचयिता कालीवासी अथ और वारि के
रचयिता का नाम भूमराम है, पर फलस्वित्ति के अंत में नगर कवि की भी उल्लेख हुआ है ।
सर्व १८५८ खि ० है । लिपिकाल अथ के खलित हो जाने से अज्ञात है ।
विशेष शालय—अथ खलित है । आदि में पत्र सं ० ६ है और अंत में ३७ । रचनाकाल
अठारह से अठारवां विक्रम अथ मलमास ।
अथ एकदशति रिकूल नदन पास ॥ १० ॥

रचनाकाल

विषय—बालमीकी रामायण के अर्चनारे संक्षेप रामकथा का बर्णन ।

अज्ञानरत वद्वे लफा अयकर ॥

द्वित श्री कलकृतित समाप्तः अजानंद मदन पर जानकी नीक मानन ॥ ३११२२-
कल कृत्य लेहा ॥
अथ फल कृतित प्रत्यय ॥ दोहा ॥ पदांबु लालि विरुडि सिपुडि विरुडि ॥ पर मने अत्रय
द्वित श्री बालमीकीय श्रीमद्भागवतु अत्रुवादे गदवावतु रानावेयु उततर ३१३ मानन ॥

कह काह प्रणाम प्रम रन धरेन ॥
गाइ समलकडु सदा पडेन ।

रपुनाय चरिष वने निरेन ।
अन—हेनमान सहय थाप जडेन ।

नरुदे निज जन से ॥ ३ ॥
गुरे मननां धाठिन काम ।

रुमाडि मुनि मन से ।
पुवी दशरथ नवन राम ।

अमर करया ॥ २ ॥
वाये राधे माल लीक ।

निज माया ॥
जये रविषया वीडे लीक ।

रपुनाय विरन धरिये ॥ १ ॥
श्री गुरु नमिधु, श्री हेनमन मने समाडे ।

गणपति सत्वाति गाडे ।
राननी नीरठ नाल ॥ १ ॥

हेनमने मम ॥ अथ बालमीकीय अत्रुवादे गदवावतु ॥

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ श्री नीलारतनवराय नम ॥ श्री हेनमने मम ॥ श्री

निवासी के पुत्रकालय से अया को प्रणय दे माडे ।

श्रीमद्भागवतु पुत्रकालय, काशी गणेशाष्टावक्रियुडि था मा (पदे १२५० ननुप्रणाम नी गुरेवा ३११
परिभाषण (अनुष्टुप)—७६०, गुरी, रूप—भाषीन ११५, लीनि—गणेश, लीनि—गणेश, भाषीन—
धर्मर, कामल—द्वेषी, पद—३० आकार—१११५ × ८५ उच, पदक (प्रतिरुडि)—१०,
सख्या २२२१, गदवावतु रामायण (बालमीकीय रामायण के अर्जुनाय), चरिषा—

पवाकार रूप मे हे । यह अरुणु है, समस्त ३० पदे उपर्य दे ।

विशेष शातल्य—रचनाकाल सवते १२५२ अरु लीनिमान नम १२६० ? । रत्नमय

विषय—रामायणु की कथाया की मुञ्जनिना वरिण ।

श्री हेनमने मम ॥ अथ.....

द्वित श्री बालमीकीय श्रीमद्भागवतु कल कृतित समाप्त ॥ श्री राम नारणे मम ॥

“धर्मर” हेनमन धन युवन अर्जुनस राम ॥११२॥

प्रथम सम लवधी नर सल वधी राउधी कलिपन वास ।

पुलकिन मम मयन अदल शानि त्रियु अरु धोर ॥१११॥

जुष्टी रामायन कहल युवन कथा कर वार ।

बुळ ऊरुणु एकादशी रीत कुल नवन पास ॥१०॥

अठारहे धी अठारवाही दिग्म अक मजमास ।

बालमीकीय प्रसाद धी गाय गानि बोल ॥ ६ ॥

संस्कृत भाऊस दीव कहे इडप्रत्य क वोल ।

लीची बसल की पचीसी भवा शबनार ॥
 लीचन बसु मनी भव वरप भाव सुकल ससोवार ॥
 २ ६ १

रवनाकाल

विषय—सुकल भव वीचल पचीसी का दिदी अनवाद ।

१८२७ ससु नाम वृतीआ अवाडं मासे करणु पके..... ॥
 इति श्री वंस वंसवतंस ककीर सौष कारीने भाषा वीचल पचीसी सपुन ॥ सुम संभर ॥

उहे दौही बसु सीधी तव हेरखे बीकम लाल ॥
 सली सील के सीधी से कोवा सीचल वीचल ॥
 टुक टुक करि मसुकी गीधनी दीनी बादी ॥
 सीर नवाड सीचनम लगे बीकम उरयो कदी ॥

॥ दीहा ॥

भत—

:०: :०: :०:

प्रतिमंनुर नगर एक ॥ तदी सुदील प्रजा अपन बीदिक ।
 सुम भवा तहे गद्यप संन ॥ रजनील रत वसे सुचन ॥
 एक ससु गीरी कानन बादी ॥ ललन रही सीकार सीकार ॥
 तापस एक गीरी तव तरे ॥ लगी समधी लपुववा करे ॥
 गीप सुल रहिल तारी लखी उरे ॥ मन सहे कहे राल एहे हेरे ॥
 कुरे नगर आए गहे अपन ॥ गणु बीकल कल परे न सपने ॥
 देल प्राल सीदिसन वसे ॥ इकुम कोवा सेवक संन असे ॥
 गरीका नगर माहे को लवा ॥ आरी पलकी टकी मगावी ॥
 जीलनी सील आनी दे मादी ॥ होरा हेम देव गी वीही ॥

॥ बीपड ॥

लीची बसल की पचीसी भवा शबनार ।
 लीचन बसु मनी भव वरप भाव सुकल ससोवार ।
 २ ६ १
 जी रे भावन पठिके उठ काठ का सी वुल ॥
 लीरी रस वरन भय से चाहिल डूब न डूबे ।

॥ दीहा ॥

तव एहे कथा रसापन करू ॥ ठीकडे पडिल लीग सहेगी ॥ विन वसु वड जीव हेसगी ॥

आदि..... ।

१८२७ वि०, गणितरथान—सरज स्वयुकार, गाम—डेहेमा, पास्ट—डेहेमा, लिला—गान्जीपुर ।
 रूप—गान्जीन, पद्य, लिपि—गान्जी, रवनाकाल—सं० १७८२ वि०, लिपिकाल—सं०
 आकार—६ × ६ इंच, पत्रिका (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अक्षरपं)—१२१८, छद्म, संख्या २२३, वीचल पचीसी, रचयिता—फकीर सिंह, कामज—इंधा, पक्ष—८७,

विषय—राजपणु के लकाकाड और उतर काड की कथाया का वयान ।

देह मीहि विप्रवास नाम विकारि छंदे मर्ही ॥ २ ॥
 मीहि कर आपन दास गुर साहेब सुप्रदासि वृन्दे ।
 गुरदासि कही प्रथ आबि दास सिद्धे बसि विमल गान ॥
 गुर पर रज सिरे रवि अनसी यान प्रकास करि ।
 ॥ सौरठा ॥

आदि—श्री गणेशायनमः अथ लिख्यते अनसी प्रकास ॥

साहित्य संभलन, प्रयोग, उदाहरणदा ।
 रूप—प्रवीण, पद्य, लिपि—गंगादी, लिपिकाल—सं० १९५०, वि०, प्राक्किर्यान—हिंदी
 आकार—८ × ६ इंच, पत्ति (प्रतिपुच्छ)—१३, परिमाण (अनुच्छेद)—३१३, पृष्ठी, पत्र—५८,
 संख्या २२८, अनसी प्रकास, रचयिता—वदलीदास, काल—द्वैती, पत्र—५८,

तथा रीधा के प्रेम का वर्णन किया है ।

विषय—इयक (प्रेम) वर्णन । कवि ने काररसी मिश्रण दिदी यापा में सगवान केण

आत संपूर्ण श्रम ॥

इति श्री महारजाजी श्री उमैद सिंह जी सुत महारजाजी श्री बल्लभ सिंह जी कृति इत्येक
 बल्लभ वरन दंडेन विष्णु कही इत्येक की रीति । जी बलि समस्त अरथ लग बहो सी श्री ॥ १० ॥ १ ॥
 नही प्रमथा महैव कति दिवकी जानन हार । अलि आसिक ऊपर दिव सरखी प्यार ॥ १० ॥ १ ॥
 अख नैन महैव के कमल पल के रंग । देव आसक दिव दौप देह्य ऊमग आग श्रम ॥ ११ ॥

अंत—

ने कीर्ती महैव सब सुसंकिज ने आसन । वृही जीवन गुर हे ने सी लपट प्रान ॥ १० ॥ १ ॥
 अख लख महैव ही भरे जीवन मार । आसिक आप हरे से देवन की दौदार ॥ ११ ॥ १ ॥
 दिव जानी नही महैव महीना रविणी माफ । आसिक ने नकीर से आप करीन माफ ॥ १२ ॥ १ ॥
 जान लगी महैव सी अब कीर्त बरनी लाख । विन देव कल ना पर लिपिक कबर साल ॥ १३ ॥ १ ॥
 देखा मे महैव की गल विष बनी लाल । जट्ट द्रुपट हैप से विषरु सुखर वाल ॥ १४ ॥ १ ॥
 मेरा मन मखान है सुनिषी दिव भर मार । रसिक सिरोसन लखिले विस से सेरा प्यार ॥ १५ ॥ १ ॥

मध्य—पृ० ८—९

भरे दिव की वाल सब जानन हो बखारख । वृन्दे से ठाकर सीस प बपल सिष की लाल ॥ १६ ॥ १ ॥
 मेरा ने महैव है दिव भर से बखाल की वीनती सुनी नदनदन रीसुबार ॥ १७ ॥ १ ॥
 मरलीधारे अघर पर नमार निपट प्रवीन ॥ गुम पर बलि प सब सुरे तर उग सग सीन ॥ १८ ॥ १ ॥
 आदि— ॥ श्री गीर्षी जन बदनभाष नमः ॥ दही ॥

श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकोरी, हिं० ब० ७४, पृ० स० १० ।

रीता श्री बल्लभ सिंह जी, काल—द्वैती, पत्र—५८, आकार—४।५ × ६ इंच, पत्ति (प्रतिपुच्छ)—
 संख्या २२८, इत्येक आतक, रचयिता—श्री महारजाजी श्री उमैद सिंह जी सुत महै-

गया है ।

विषय—रीता श्री रानी लीलावती की विद्यामैलिक का वर्णन किया

परिणत सभापत हुआ ॥

श्री बनेगा ।

आगे साहेब इंदरदर आप परिवक इन्दरदर की आवा देनी ने दूसरी भाग

विषय—श्री गानापदेण किया गया है ।

तब रघुवरे विपदे भये नाम से सुरति मिले ॥ ४ ॥
दास फकीर भये आपने कहिन मोहि समझाई ।
जाति ठरे रघुवरे भई नाम दिव महे लेल ॥ ३ ॥
अनसी भकास लेखन किया "दास फकीर" के लेल ।
साई ने भई मगज सब रूप कहे धरे ॥ २ ॥
बोठ सुखल सुभ दसमी गेरे वासर को पूरे ।
वनडंस से पचवास भू सुगिरन आठो नाम ॥ १ ॥
विक्रम को साका लिया संवत याकी नाम ।

॥ दोहा ॥

मारकंडे वट किना रोहिया स महोदधी । इंदवदन करले पुनेल जन्म नहि विवले ॥ १ ॥
जानाथ मनीसिषा पदानाथ जनादन । कोटि जन्म अयो विद्या वेदपाठ धनाधन ॥ १ ॥
इति श्री अनसी भकास समुपनिश्रुत ॥ इतलीक ॥

मन थाके कारख सिद्धे भूटे आत्म मील ॥
चित को चिरना तीष मल को चिरना चित ॥
जया देहे पौषष थके है इंदो दचि नाम ॥
जा चित पावे संत गति ली मन होइ निरास ॥

॥ दोहा ॥

शत—

जग अरुस आसा सब लगी । यहै मने राण नाम ले लगी ॥ ३६० ॥
तेहि मग चलत वहुन सुष पावे । समन फांसि धान न आवे ॥
जहि मारग सब सग सिधारे । सुखिल भये रूप नगर उजारे ॥
नाते यहै मन लेई सकली । सल गेरे यान पथ रस बली ॥
है दुष सुख सुल अति आरी । यहै जग माया को फूलवारी ॥
विन गेरे यान गली को पावे । काल कठिन सम फांसि बकावे ॥
नहि सब हंस बरु यहै जारे । काल बधिक धारि धारि नल मारे ॥
साणि बले ले बहुरि न आये । नाम सेरुवरे सतगुर पावे ॥ ३६३ ॥

शत—

सुन बेल गल अथ हिल बानी । अथ लारन समझत सुषपाणी ॥
जीव फलारथ जहि विधि होई । सो उपदेश कहल हो साई ॥ २ ॥

॥ चौपाई ॥

अनसु बानी सो कहे जहि सिरे राणी बहि ॥ ४ ॥
कवि गति मति नहि रति सकु विन पाये कछु छाई ।
"दरिद्रदास" कहे दीजिए केवल नाम अघार ॥
साधारणिक मन सडर अति निडर करी करतार ।

॥ दोहा ॥

गैरे सहेन सुषदान नाम "जलानी" सुषसदन ।
शक्ति ज्ञान गानपति प्रक सवजल के सदा ॥ ३ ॥

संख्या २३०क. अर्नरंग विवर्धक रामायण, रचयिता—बनादास (अश्लेषा), काल—दश्या, पद्य—५०, आकार—१० × ५ इंच, पत्रिका (प्रतिपत्र)—१०, परिसाय (अर्नलप) १०५, पृष्ठा, खंडित, पद्य—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० २०वीं सदी का प्रारंभ, लिपिकाल—सं० १९२२ वि०, अश्वमेधकाल—सं० १९२० वि०, प्रसिद्धि—२३०क, प्रसिद्धि—२३०क, आकार—१० × ५ इंच, पत्रिका (प्रतिपत्र)—१०, परिसाय (अर्नलप) १०५, संख्या २३०ख. माला मूर्तिवती, रचयिता—बनादास (अश्लेषा), काल—दश्या, पद्य—५०, आकार—१० × ५ इंच, पत्रिका (प्रतिपत्र)—१०, परिसाय (अर्नलप) १०५, प्रसिद्धि—२३०ख, लिपिकाल—सं० १९२२ वि०।

श्री—श्री आनकीवरलक्ष्मी अर्पित ॥ अथ माला मूर्तिवती श्रवण विषये ॥
 कर्म बचन मन वक्षि गुरु त्रिय रघुवर पाय ॥
 संजाल आगत नाम गति हंसर नाहि सहाय ॥ १ ॥
 का कहियु गुन नाम की पाए सुचरि करीरि ॥
 बनादास पदक वदन नाप मलि अलि शोदि ॥ २ ॥
 की जानिउ सकर कडक रामनाम परमाव ॥
 बनादास अलि सरदा गवल पर न पाय ॥ ३ ॥
 निकन का सम सब नागिहै जब शुकै उर बाज ॥
 गावे हुंदरम नाम जपि निरि विन धरिये ॥ ४ ॥
 कृति सधन का लिखि रामनाम जपि लेवि ॥
 बनादास वादे कहे परम लख के पुत्र ॥ ५ ॥

श्री—श्री आनकीवरलक्ष्मी अर्पित ॥ अथ माला मूर्तिवती श्रवण विषये ॥
 अथ माला मूर्तिवती श्रवण विषये ॥ १ ॥
 अथ माला मूर्तिवती श्रवण विषये ॥ २ ॥
 अथ माला मूर्तिवती श्रवण विषये ॥ ३ ॥
 अथ माला मूर्तिवती श्रवण विषये ॥ ४ ॥
 अथ माला मूर्तिवती श्रवण विषये ॥ ५ ॥

श्रवण विषये ॥ अथ माला मूर्तिवती श्रवण विषये ॥ १ ॥
 अथ माला मूर्तिवती श्रवण विषये ॥ २ ॥
 अथ माला मूर्तिवती श्रवण विषये ॥ ३ ॥
 अथ माला मूर्तिवती श्रवण विषये ॥ ४ ॥
 अथ माला मूर्तिवती श्रवण विषये ॥ ५ ॥

युन पावो के कारन लगल नही ठकान ॥
 काम कोष मय लोभ है मोह वयो बलवान ॥ २३ ॥
 यारो गाँकल मति परी मारो चाहल काल ॥
 कोउ जगय है बचव नहि सजिल वसय लाल ॥ २४ ॥
 एक मरोसा एक बल एक आस विबाल ॥
 बनावस एक फि मति सो अनन्य है दास ॥ २५ ॥
 योही योही वीतिय रहो लीनक सो आय ॥
 बनवास अवहै मज करिहै राम सहैय ॥ २६ ॥
 यह संसार असार अलि गहिइ जान जो सर ॥
 जाति और बैरग गहि राम कृपा ते पर ॥ २७ ॥ ३३४ ॥
 इति श्री माता मुक्तबली श्रेय सरपुत्रन सुखमस्तु समल १६२० अर्चुद्विपु ३८३ ॥

००: ००: ००:

विषय—शक्ति लक्ष्मी शोभापदिका ॥

संख्या २३०ग. अज्ञानद्वार, रत्नमाला—बनावास (अध्याय), कालज—द्वी, पत्र—३७, आकार—१३ × ५ १/२ इंच, पत्रिका(प्रतिपत्र)—६, परिमाण (अर्चुद्विपु)—७६१, पूर्ण, रूप—शाश्वत, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं १९२६ वि०, शक्तिस्थान—श्री गणेशप्रसाद सिंह, प्रधानाध्यापक, डॉ० ए० वी० स्कूल, बलरामपुर, गौडा ॥
 आदि—अथ बनावास कुल अज्ञानद्वार श्रेय विद्यते ॥ श्री रामो जति ॥

॥ सारठा ॥

आदि अन्त मति होन नाम रूप गुन ते रहित ।
 सब विषय आनन्द धीन वार वार तेहि बहि ॥ १ ॥
 गुरु मूर्ति सूरित जाति रही ॥

नय विषय रूप अर्णव वयुध हरि को महिमा कहि पार लही ॥
 सरनागत पालक पद फकल ध्यान करत यवनाप दही ॥
 गुरु पद वेमय न सपन लहै सुषु अथ सागार म जाय नही ॥
 सति आनन चकार विषय विपिन न वार वारहि अवाहै चही ॥
 हरिपद सहज सहज के दाता अथ दुर्गती ठाव नही ॥
 वासु कृपा ब्रह्मण नसावन साक मोह जारि जाय सही ॥
 रतिव सिद्धि सम्मति को अदकार बरन धरि अति चारि कही ॥
 "दासवना" गति अवधि नईसति निरसिदिन पल लिन सरन गही ॥

॥ सुमिरन तुलसिदास पद पावन ॥

याही मास पठ सीत पूनय नीम सुवार ॥
 दस नौ सल समल अहै वयु नीसार ॥
 सन वारहै सै असी मं श्रेय होल निरमान ॥
 अवध धाम धामन परे को करि सकै वधान ॥

अज्ञानको द्वार यहै विचार करिके याही करि धोतर लहै परम विश्रामको ॥

शुभ—

द्वार अत्यन्त राम श्रेय परम पद अथ छिद्र एक रूप गाये ॥
 अथ अकटक कंदल निद्रिणा श्रेय नि.कलक निःप्रधुष पार कोन पाये ॥

बस कुमार की सब कथा साधा करी विचाल ॥ ५ ॥
 दोही आपस करी कथा श्री विरम सहिपाल ।
 सकल सुरसर नर देव पुनरि सरारि ॥
 श्रीगणपक ध्याइ हिय मंगल कज सरारि ।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री सीता रामाय नमः ॥

साहित्य (नीलवर्ण), (पुं०—देविप्रा खास, जिला—केलहाहाहा) ।
 खडि, रूप—प्रचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राकृतिकाल—सं० १२२२—सं० १२२३—
 आकार—११ × ६ इंच, पत्रिका (प्रतिपाठ)—११, प्रतिपाद्य (अनुप) —२२, पत्र—२२,

विषय—श्री और शान्तिपद्य ।

अगहन सुकल १४ दही समत १२२२ सा ॥

इति श्री "विज्ञान सूक्तवर्ण" प्रथम "कल महाराज वनादास ऊच्य सूर्यय सुअमरु सिनी

अथो प्रथम अवतार उर उर क सीतारवण ॥ २३ ॥

कालिक सिद्धि सुकवार्..... लिपि आरी परम ॥

अन अविनासी सब घट क प्रकास ॥

अंत—(अधर मिदकर अपठनीय ही गए है) ।

वारि वारि की कवर्ष न चाहै । "वनादास" चौरासी दाहै ॥

बाँधे बैलि वारि विसरार्थ । चौथे घर मा घट विजडा ॥

(अनुपठ)

तिरवनी के घट नहावै । वनादास ह्यविधा नसावै ॥

नीया तूयन फादी कहै । गुनीनील ह्यै कमन डावै ॥

अनहद माह सब विन राव । वनादास सुव की सुव बाव ॥

इथासदा हल सत नास । जब अहल प्रम पव पास ॥

हल नालिका अथ सदाही । "वनादास" अथसल नसाही ॥

एक एक क वरु इसरै सब सलन की गहै ॥

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री सूर्य अथ पाहिरा लिप्ये ।

रथान—श्री रामरक्षा लिपाठी "लिपिक" अथपक, फादरु ह्यैरकल, कजावादा ।
 २२०, पुं०, रूप—प्रचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १२२२—सं० १२२३—
 देगी, पत्र—२, आकार—१० × ६ इंच, पत्रिका (प्रतिपाठ)—२२, प्रतिपाद्य (अनुप) —
 सख्या २३०५. "विज्ञान सूक्तवर्ण", रचयिता—वनादास (अथप्रा), कागज—

सादी मास पठ सीत पुनप श्रीम सुवार ॥ दस नौसत संमन अहै वरु बीस नौसर ॥

रचनाकाल

विषय—ज्ञान-विज्ञान लिखण । प्रथम प्यारु अथप्रा । सं० ॥

परिकर—समाप्त सुअमरु रथीक २०० अनूप ॥

इति श्री वनादास ऊच्य सूर्यय सुअमरु सिनी "विज्ञान सिंधु" अथ लिखण नाम एकदास
 "वनादास" अथम अगीवर गुनीनील गहै । वरन विहलन वृद्धि मनहै न आए है ॥ २२२ ॥
 निराधार सवाधार नालिकार नालिकार नालिकार है निगम सी अति लिखि जायो है ॥

दया रू खर पाई वर विफल ललक वचन करी ॥ १२३ ॥
 आखिरे लोखे कुली पुण अमनीण धर्म सुमरी ॥
 लोखे पाहि साहे कहे काही काड सकल कथा वी सुक ॥ ३ ॥
 पुन ल रीत होव गेल वीही जाही कहे जास ॥
 सरथा मिल करेसि नपवर ॥ दिव्य वसोती हे देवा ॥
 नयन गाहि देखिबि कारि ॥ पुनलविचार अवा ॥
 ॥ गीत ॥ आरवधारि वधु ॥

पुन मील देखि वार्क लेणु नपल की राई ॥ ० ॥
 वरि हे खास करुण आशा पाडुण कळ करीडवा पाई ॥
 ॥ वरुणु पोठवध ॥
 कल्याण करुणु वीलई रावु पुण्य देखि वरुती क आस ॥
 पुन नक सम्यु खास मीन विचार घुलीराट पास ॥
 ॥ लीण पोठवध ॥

श्रीम सतिसे सगुण सुमी आसि मीलले करवमल ॥ १ ॥
 श्री दिरि घनीण पाडव बल जाई मरुण राणु रागुण ॥
 ॥ कुलीण पोठवध ॥
 हे मील बलरास दास यणुणु आशा देले जगुण ॥ १ ॥
 श्री करुणु कहे अर्जुन सुणी गीता सुयु सा ॥
 आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ नमी जगवने वरुदेवाय ॥ पिट वसः ॥

वारुणुसी ।

आकार—११ × ५ इंच, पत्रिका (प्रतिपद)—१५, परिमाण (अर्द्धपद)—१११२, पृष्ठी, संख्या २३२, गीता प्रथम—बलरास दास, कामाज—देवी, पत्र—२०

विषय—संस्कृत ग्रंथ दशकुमार चरित का हिंदी अनुवाद ।

—अध्याय खंडित

विरलीव पहे गिरा निकारी । कळी सगुण सु.....
 ०: ०: ०:
 निकट जाई साहे कियो प्रवसा । वाहेर लीण एक कुटी सुदेसा ॥
 जा विदेहे नप की रजधानी । मीन स्वर्ग सी विवध बधानी ॥
 फिरत मही जाई सु एक वारा । देवी मिथिला जाई उवारा ॥
 ॥ उपहार वसती ॥

वधुन वसावतस श्री महाराज कुमार चरिते अणुदेर वसती चरिते नाम सप्तमी उद्योगः ॥ ७ ॥
 इति सकला रीति जना की कीर्ति उपा सुधाभ्युदित प्रसन्नवद चरितकानवितमिन्न वकोर
 इति प्रनाम करि विनय अनेका । लयी कहेन मीव सविबेका ॥
 कही आपनी कथा उवारा ॥
 कळी सधु अब समय लुहारा ।
 गीत—
 वरुती वरुणु जगल के नप गीत विवास ॥ ३ ॥
 पाई इतिम वलदेव कवि कोणी ग्रंथ प्रकास ।

बोध कली जब मन में फूलें ॥ जन्म मनु का ऊपरा मूलें ॥
 विधि नवद कौ कथा न जानें ॥ पुत्र्य पाप को बान न मानें ॥ १ ॥
 देना ममता कौ तब त्यागें ॥ विगम नोद सौ सोयी जानें ॥
 मन को गगन मान करि सोखें ॥ टी सीहें देगी बौखें ॥ २ ॥
 श्रवणति ध्वनि से आस न करे ॥ जनमन अमन सौ न करे ॥
 सुरति निरति के परे विनसो ॥ अनभव सगार जाति प्रकासो ॥ ३ ॥
 श्रादि शून्य सम पावें ॥ जगू कारु देखें छिकि भावें ॥
 हिन हंद हितिया नहि जानें ॥ अहं अज अत्रिय पहिचानें ॥ ४ ॥
 निरकार गति सहैव समानें ॥ पाव पचीस करी न समानें ॥
 सब में बहि उरखें सब शेष ॥ कानक विना सुवन नहि शेष ॥ ५ ॥
 मध्य—जनपद परलं नही न पूंये ॥ श्रादि अत विन प्रगट बनये ॥
 नही देह गन कुंठो खलें ॥ निरु गगन सिद्धिलें फूलें ॥ ३ ॥
 विन विनवनि तव जावें त्यागो ॥ रोम रोम जपवें वंरोग ॥
 विना बाहे रहै नहि काहुं ॥ हंडें बाल सब जावें पाहुं ॥ ३ ॥
 मधुर मधुर ध्वनि अमन सु बरस ॥ बरुंभानी काहुं या गति बरस ॥
 सहैव समाधि नही बसि रहै ॥ श्रवणति गति कोउ विरला नहै ॥ ३ ॥

परब्रह्मो नाम शक्तिवत्परम् ॥

श्रादि—विवेक

(सधुदे), काशी ।

संख्या २३३. विवेक कली, रचयिता—वलिराम, काणज—देवी, पद—५, आकार—
 ८६ × ५ देव, पंक्ति (प्रतिपद्य) —६, परिमाण (अनुपद्य) —११३, रंग—२५, प्रबुं न,
 पद्य, लिपि—गोरी, शक्तिरचयान—शुभाभापा पुस्तकालय, गणप्रीप्रवाशिणी सभा (शक्ति

विषय—गीता का अनुवाद ।

मधन चतुरी बेवा सार उद्धर पाहिसि लवणी सुंजति शक्तिनी तिक अक्षति पहिसा ॥

माते कले विद्यार पुरिन बोलि लोके प्रसे गले ६१

मनीषर महोपाध सोमनाथ नाम नहिरे नमय मीहें "वलराम" जगनाथ ठाकुरे सुरदा
 कुंडल हार मण बक हेल त्र्यंज जीग शोण पुपर प्रकास निरमूख शशि मणो बलराम दास ६०
 नितासार ए सुंदरी पुठिला सुठिला लोकाकर बज पुत्र्य लिल गिरी विजय मी प्रभु जगनाथ मुकुट
 राम राधय लक्ष्मि शोण कह थाई श्री जगनाथ प्रसने गिला शारन पुहि आस्टादाश अद्या
 : ० : : ० : : ० :

आनरे आनरस श्री जगनाथ सेवि मणो बलरामदास ५७

५६ धृतिरट आनो सजए एही कहा वासुदेव आजए अर्जुन तीस होय सुगोविंदे पूर्य
 : ० : : ० : : ० :

सेवक शोण एही लू बरवारणी नहिा तहू अति प्रिस माते नहि जाणो ५०

शत—ज मोर गगत लोक ताकु कहि से मोर अत्यत प्रीति सुहू मोक्ष पाहुं मोहोर

नील गिरी जगनाथ प्रसने परम रत बजाणो ॥ १२५ ॥

प्रथम अद्या गीता प्रथमबल रामदास मणो ॥
 श्री हुरि उरे कथा न कहि पार नो होई आपणो ॥ १२५ ॥
 के बहै मध्यम करीणो सय वाहोनी जिवा कुंडला ॥

एक चाहे हेमन्त प्यारी चाहे तेहे नी हूँयो सूरत पूरी सेरी प्यारी बाबे यगो कृष करन ॥

अत—निछो विनवन तेरी प्यारी लीया हे मन सूरयो ॥
 तेरी अदा आल प्यारी कोई न आवै पूरणे ॥
 कोल महर सूनय प्यारी का कठ अब पुँसे ॥
 बाबेदार तेरा प्यारी किये हे सो बसे ॥ ३ ॥

सुपुटे रंग केनरि बसे बनी हे हूर ।
 लीग डेलायवी जायफल लीनी का घरी बूर ।
 बाबी बनय विष से सुवर रली कपूर ।
 देक महर की नजर से प्यारी आनि दिखायो नूर ।
 हेर दिल अजीब सेनी कहने की यगो बरूर ।
 फिदवी बाहेला प्यारी अब राखीये हूर ॥ १ ॥

दिल कत्या हे तुज से कही रहेनि हो हूर ॥
 प्यारी प्यारी अरनी सेरी सुनना हूर ।

सय—५० १२

सोने से लिपटना प्यारी जद मिदमार ब ॥ २ ॥

तेरुहे मन देखे निम रहेला न करार ॥
 प्यारी यगन प्यारी सेरी तुजे सेरी प्यार ब ॥ १ ॥

सु, आदि छलदीवार जे होहे दिखवार बे ।
 आदि—श्री हूँयोय मन ॥ रग सेरिठि गल प्रसी

संख्या २३४. रेखला तथा कौतुब (छडी बोली से), रचयिता—श्री० श्री बलराम जी, कागज—श्री, पृष्ठ—२६, आकार—६ ३/४ × ९ ३/४ इंच, पत्रिका (प्रतिपत्र)—२२, परिमाण (अनुसूच्य)—३१६, पूर्ण, पत्र, लिपि—गोरी, प्राविस्त्रयान—श्री सरस्वती खडर, श्री विद्या-विभाग, काकरोली, दि० व० ४२, ५० म० ४ ।

विषय—शुद्धशान्तिपदस्य वयान ।

सर्वाधिष्ठान बलीराम विरचित विवेक कवी ॥ समाप्त ॥

जो कोई हेमरी गति पाव ॥ चौरसी से फेरि न आव ॥१३॥

पट दशन से हेमही छल ॥ बनी रूप निहूँव विराल ॥

हेमही बरगी अर जोगी ॥ अनयोगी हेमही सब योगी ॥१२॥

हेमही कर्ता कारज कारन ॥ हेमही तरन रूप अर गारन ॥

निराकास हेमही आकास ॥ निरामास हेमही आमास ॥११॥

हेमही सिध साधक धरवारी ॥ नहि अवगार हेमही अवगारी ॥

हेमही मनकर हेमही साकर ॥ हेमही सेवक हेमही ठाकर ॥१०॥

हेमही बरनाश्रम आचारी ॥ हेमही नरव आसि रव विचारी ॥

अनक श्रम से हेमही पथा ॥ यहाँ के त्याँ हेम जल अल सथा ॥९॥

अत—हेमसुं सब सव से हेम एक ॥ हेम सो बरनर सव अनेक ॥

पुप सग जो लिल को बस ॥ दधि ते पिरन विनीय निकाल ॥३७॥

गंध पुष मदि करे विनास ॥ पापर मदि आनि को बस ॥

मिल ते तेल जलन विन गही ॥ घन को बस सवा दधि मही ॥३६॥

जो पाव सो फिर नहि आव ॥ जो आव पाव सो पाव ॥

श्रीगो ने किया है ।

विषय—बल्लभ रसिक ने गंगालक्ष्मण (राधाकृत्या) का बयान काव्य की विविध

इति वारहे वाट अठारहे पूडे भय संपूर्णालालः ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥
 गो कोऊ गोप ह पूडे पठावे ॥ गंगल रूप दरसन की पावे ॥ १०६ ॥
 भरी करी एक गो आठ । बल्लभ रसिकानि की जप पाठ ॥
 जब अखियनि अखिया लखि पाई ती वारहे वाट अठारहे पूडे ॥ १०८ ॥
 जब लीगि अखिया लखिया गही राखी पकति सब सेह ॥
 यारस यारस हीइ ती वारस वारस हीइ ॥ १०७ ॥
 बल्लभ रसिक लही करी सहिक करी जो कोइ ।

॥ दोहा ॥

श्री—

पुसुं लिलि गंगल लूँ छंड । एक अनेक परम सुख बंडे ॥ ७० ॥
 हे गुनि गंगल रूप रस पागे । इति सम कोऊ गहि सभा ॥ ६९ ॥
 हे मिलिया बोलिन को सुने । गंगल सुगंधि हे मिलि बने ॥ ६८ ॥
 एक अकली बोलिन जाने । बोलनि हो मे सब रस माने ॥ ६७ ॥
 सल कुहारे छंडन लगे । लिन मे तीन जरे अनरगे ।
 कुनवा उर हिय कय बखाने । सल ठोर मे आइ अमाने ॥ ६५ ॥
 सरस रसिक हिय करे खजाने । गाने उमगे रस सब जाने ॥ ६४ ॥
 श्रीरु सुनि अखियन के काम । नेकु न ठानी आठो जाम ॥ ६३ ॥
 सलन फलन रहै निरनर । मही खनन मही परनर ॥ ६२ ॥

मध्य—१०१-१३-१४

इत दोऊन के मरगहि जाने ती रसिक सरस की से किवाहि ॥ ५ ॥
 अथरम धरम गही अथरम पुसी कछिक रसिकना अहि ।
 मनमन वारी अखियनि वारी मनवारी की अखियनि वारी ॥ ४ ॥
 गंगल गंगल आसव की सानी ॥ ३ ॥
 बल्लभ रसिक सहवरी बानी ।
 प्यारी रूप घटा जमनि बरखी बानी अगि ॥ २ ॥
 रसिक अनया नयनिय हिय लिय की सुखदानि ।
 कुल परनि विहरनि लखी गंगल रूप धनसार ॥ १ ॥
 श्री गुरे बरतिय प्रताप ते गयी उरतिय अखियार ।
 आदि—॥ श्री राधा बल्लभा जयनि ॥

अहार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, डि० व० ११८, पु० सं० २०२ ।
 (अनन्त) — ८७, पु०, रूप—बाधारु, पहा, लिपि—गंगादी, गणितस्थान—श्री सरस्वती
 १० से १६), आकार—७४ × ४६ इंच, पत्रिका (प्रतिपुठ)—३६, परिमाण
 संख्या २३४, वारहे वाट अठारहे पूडे, रचयिता—बल्लभ रसिक, कानज—द्वीपी,

विषय—नादिकामंद का बयान ।

इति श्री बल्लभ जी कुल रेखला तथा कोलिन संपूर्ण ॥ श्री श्री ॥
 बल्लभ के संग करी सहवरी गंगाली बल ॥ ५ ॥
 संदल गंगाली अग प्यारी लाऊ सुंदर धरणी ॥

श्री गोपबद्धन धरन जय करन सरन जन मोद ।
 वं वाचन वंदिन सकल वं वा विपुन विनोद ॥ १ ॥
 श्री वल्लभ विदुल वंदन विषद विचारि ।
 वदत सुविद्या वंदि वन विनयन विकट विहारी ॥ २ ॥
 मकन के पद द्विध धरत जय को प्रीय करे होत ॥
 नम निन ऊलिनला ऊदित विदित जगत की पीत ॥ ३ ॥
 यह संसार असार सं सं हरि कानिन सुखसार ॥
 कहै न करन सब अवहं सी वडहै देवे कवर विसार ॥ ४ ॥

इह गीत के पद लिनकी टीका अर्थ लिखत ॥

श्रुति—श्रीकृष्णाय नमः ॥ श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ॥ अथ सूरदास जी की कृति

संख्या २३७. इति कंठ के पद याप टीका, रचयिता—सूरदास जी, टीकाकार—
 बालकृष्ण वृष्ण (याजनार), कानज—द्वारा, पं. ७९, आकार—८ × ७६, पंक्ति
 (प्रतिपद्य)—२८, परिमाण (अर्धपद्य)—१४२१, पं. १, पं. १, पं. १, पं. १, पं. १
 लिपि—गाम्भी, प्रविपरधन—श्री सरस्वती अक्षर, श्री विद्या विधाया, कांकरौली, हि. ७०

८८, १० सं १ ।

विषय—सीता जी द्वारा गीत में सहस्रवाह्य रावण के मारे जाने का वर्णन ।

—श्रुति

वही प्रकार निरंतर कापि रहि समर सूर वहीरा ।
 रघुवर बान अजल सहै पड़े है हीं हीं पतंग ॥
 इति श्री अर्धभूत रामायण जानकी विषय वहीरन दीन विरवाही वीथी वृष्यः
 विधि बानी सुनी कान हूँ राम दीर्घावर ।
 .. हीं लजही अमान जोरी पानी दीन करत ॥

—

॥ दोहा ॥

दीनवर विमल कुलीन सुकवि "वहीरन" नाम रत्न ।
 जनकपुत्रा आधीन कहैत लखि महिमा कछिक ॥

॥ सीता ॥

श्री गानेस गौर हिन चरन सारुहै जौन सिर नाइ ।
 जाग जननि की जस विमल कहै—म सब पाइ ॥

०० : ०० : ०० :

जागस्य समस्य होत है से विधिन वसुध होए जात ।
 जब प्या परत प्रयाग मग त पप पहार विनात ॥

सहाय, श्री सरस्वती लिन सहायः ॥

श्रुति—श्री गणेशाय नमः श्री अर्वाणि लिन सहायः श्री गंगा लिन सहायः श्री शंकर जी

महीदेव मिश्र, ग्राम—बदरग, पोट्ट—कसिया, जिला—गोरखपुर ।
 २०, छवि, रूप—गाम्भी (जीयुं श्रीयुं), पं. १, लिपि—गाम्भी, प्रविपरधन—१०
 पं. १, आकार—१३ × ६३, पंक्ति (प्रतिपद्य)—१०, परिमाण (अर्धपद्य)—
 संख्या २३६. अर्धभूत रामायण—वहीरन (हिन), कानज—आधीनक,

के उचित कोसलनाथ मर्मा के वंशवाम चक्र ॥ ११९४ ॥

सद्य—

जाहि तिसव रति राम तिस गति परम प्रिय मर्मा ।
जाहि तिसक प्रथम वीसर सु कोटि सर्व सम जानु ॥ १ ॥
जाहि संगल कोटि कछु जा मर्मा होइ देवाव ।
क्या करी रघुओर जा गति न मोहि भिजाव ॥ २ ॥
जाहि संगल कोटि कछु जा मर्मा होइ भिजान ॥
मन सब कम रघुओर जा करिया जिन पहिचान ॥ ३ ॥
जाहि संगल कोटि कछु जा मर्मा होइ प्रकास ।
जाहि संगल कोटि कछु जा मर्मा होइ प्रकास ॥ ४ ॥
जाहि संगल कोटि कछु जा मर्मा होइ प्रकास ॥ ५ ॥

आदि—

संख्या २३८. राम नाम ग्युण सार, रचयिता—विद्वज्जनायक, कान्हा—देशी, पद्य—२८,
आकार—६५ × २६ इंच, पंक्ति (प्रतिपद्य)—१०, पंक्ति (अन्तपद्य)—३० × ५, पंक्ति, रूप—
प्राचीन, पद्य, लिपि—गारो, लिपिकाल—सर्व १७६५, वि०, प्रालिखित—श्यामप्रा

(वृथ) । देवनागरी, ज० चतुर्वेदी, मर्मा ।

जा ने इन्हें यावनगर का माना है जो गलत है, य महोत्तमव काशी के ही य राजराजो-वर्षा
विशेष शान्तव—श्री जवाहर राजा श्री चतुर्वेदी निरानलिखित संवत् १६०५—
समझकर भगवान् श्रीकृष्ण की लीला, प्रथ, मादित्य आदि का प्रालिखित किया गया है ।
विषय—सूरदास जी के प्रसिद्ध कंड पदा की टीका की गई है । जिनमें पदा का भाव

पद संयुक्त ॥

प्रथम की निरूपण देलिया शान्तव भयो ॥ अथन शान्त वाही ॥ ४ ॥ इति श्री श्याम के द्वाइकंड के
शक्तिरु जा कावली सी कर्कसी राजन है । विद्वार करन ताके ली टेट रहो है । एके सूरदास
समान सुकम है, कति है जिनकी वंश १६ । पोन सा उजा उजा पवन रहन है । किव जिनके नापर
सुन कथि, ताकी जाला शर्मा, ताकी प्रिय इन्, ताकी वाहन रहनी, ताकी सर्व प्रिय, ताके कति
अन—कोकिला सी कोमल वचन है । जिनके ओर तिमिजा रान ताकी रि सुय, ताकी

सी मने देल श्री ठाऊर जी सी कहन है ।
ठाऊर जी सी कति के मिलायो वाहन है । श्री मुख कथा जा विष्य वदमा नाम अनेक प्रकार है ।

प्राकी अर्थ:—श्री स्वामिनी जी की मुख वदमा की वयोन सबो की उक्ति । श्री
ऊचन भयो सति सूर स्वाम तिन स्वाम स्वाम वचन उदार ॥ ४ ॥
सुनि कोठिक बकि विनवन सोहन मन से करन विचार ॥
मद्य प्रवाह रहन सूर की विनवन जाल विकार ॥ ३ ॥
मगिधर सिधिर रत्न देवा जैन. विविध कुर्यम सिंगार ।
विब आनार बीजत तिनहि मिल कोकिल सट उचार ॥ २ ॥
कीर कमठ अलि मंग ममथ धन अलकन है म विपार ॥
जामदे कनक लला ऊदयो विग सोनिन की हर ॥ १ ॥

सद्य—१० ३५ ॥ राम सारग ॥

{ ५३६ }

श्री आर्वा जी महिप्र जी श्री ठाकुर जी के साक्षात् संबधी हे ताही ते श्री ठाकुर जी क स्वल्प की मान डन कहे यानी मति सी हे ना हीते श्री यमना जी को जसा स्वल्प हेतो ते सोई आप लिखन कीये हे और प्रतिया हे किसे हे ताते या बात से कहे सोहे न करनी । और या ग्रथ को पाठ सी तो लिख ही करनी ॥ इति श्री बलभावाय विरचिते श्री यमनाटक की टीका श्री गसाई जी कुल भासा से संपूर्ण ॥

शत—

रुहित ही करन हे ।
 जे गणु तिन कतिक परम सीमित हे फिकि केसे हे महदेव और अरुमा औरहे देवता सब कोई जिनकी ऐसे जे श्री गणु प्रख्यातम तिन विवे तुम हेमारे मन कहे मिलया हे केसे हे पूरा प्रख्यातम अनव ॥ पाकी अर्थ ॥ श्री आर्वा जी महिप्र श्री यमना जी सो कहते हे । अही श्री यमना मख—पृ० ३१

हेम पर कथा करी ।
 पाकी अर्थ ॥ पाकी अर्थ श्री गसाई जी कहते हे । ऐसे जे श्री आर्वा जी महिप्र से हीयते ॥ १ ॥

विश्वविद्यालयसंघान्त वंशवन प्रिया ।

श्रीक कहते हे । यलीक ।
 शोठ यलीकन करि श्री यमना जी की रूतिल करत हे । ताकी टीका श्री गसाई जी करत हे तही आदि—अथ श्री यमनाटक की टीका भासा से लिखते ॥ श्री आर्वा जी महिप्र विभागा, कांकरली, हिं० व० सं० ४५, पु० सं० ७ ।
 स० १५८५ से १६४० के लगभग (अनुमान), प्राविस्थान—श्री सरस्वती अहार, श्री विद्या-परिमणु (अनुद्वेप)—२३४, पूरा, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—कालज—देशी, पृष्ठ—१६ (२६ से ३६), आकार—७ x ८ इंच, पत्ति (प्रतिपद)—३६, संख्या २३६क. श्री यमनाटक की टीका भाषा से, रचयिता—श्री गसाई विद्वलनाथ,

विषय—इसमें रामचंद्र जी की महिमा का वर्णन और उनका गणोगान किया गया है ।

इति श्री राम नाम गानसंगार गौडन दास कुल लिखते संख्ये १७६५ पाई १६७ ॥
 रघुनाथान्त
 रामान्त राम अथाय रामचंद्राय संघसे ।
 इहे पथी के लखे की अधिकांती हे सोई ॥२४२॥
 इहे लिखन और संघ से जे जे एसी होइ ।
 जोति बंधवति लमहेरति भान करन विम चाहि ॥२४१॥
 सोका मोहे की पौषणी भूम पौषणी आहि ।
 जो अयन जौय ना रके से भूम कहियो वन ॥२४०॥
 घटती बहती देवि के राए न मन (से) संन ।

शत—

नाथ किया करि दीक्षिण जाचल ही तिन लोहि ॥११७॥
 राम चरण गति राम रति राम सुमति हे सोहि ।
 राम लहेरे नाम की बड़ी भरोसी सोहि ॥११६॥
 वेद पुरान समति संघ अरनति हे सब कोहि ।
 देयति बहते अम अशी कनहे न निषयी आन ॥११५॥
 श्रीक पदारथ जौहि करि मन कंठी उपधान ।

विषय—श्री परमना जी की आठ खलीकी में श्री आचार्य जी महामय जी ने जति पाी ।
 काये । ताते या बात में सदेह न करनी ।

तेसो निरूपण हूँ किओ । और फल या स्तोत्र को इतनी निरूपण कीयो पाठको, और प्रतिना हूँ
 अत—ताते श्री परमना के स्वरूप को जान अनी याति है । ताते यह जोसो स्वरूप हूँतो
 ठाकरे पास आवत है यह जाननी ।

के आगे बात करे नाहि । ता याति श्री परमना जी सुवा, मोर, हंस इत्यादिक पक्षीन सो जिन कोर
 हूँ जब उनको एकान्त हूँ सो रमण को हूँ हूँ तब कोर बोलात नाही । गानादिक करे नाहि । काहूँ
 एक मुख्य नायिका हूँ हूँ सो अपनी प्रतिवत सखी जिनको जिनके जैसे अपन प्रति पास आवत न सखी,
 है । तेव पछी जब एकान्त ससे ठाकरे को रमण हूँत है तब बोलात नाहि । सो कोन याति जैसे
 परमना जी याति याति के बाद जिनके ऐसे जी सुवा मोर हंस इत्यादिक जे पछिन कोर आवत
 बंछेते नै मूलोक पघार । सो कोहो प्रयाजन, सब लोकन को पवित्र करिब के लिये सो कैसे हूँ श्री
 या खलीक को अर्थ—श्री आचार्य जी कहैत हूँ श्री परमना जी कैसे हूँ । जे ऊपा करि द्यापि

शुभ सुवन पाविनी मधिगता मनेव स्थनः ।
 प्रियाभि रवि सेविता शुक मयूर हंसोदिम ।
 तरंग सुव ककणः प्रकट सुकिका बालिका ।
 नीलव तट सुदरी नमल ऊरु सुव प्रिया ॥ ३ ॥

सद्य—पृ० ६ ॥ खलीक ॥

आचार्य जी पाठ थाप ।

को उधार न हूँतो, काहे नै उनको वेद में अधिकाए नाहि । ताते सबन के उधार के लिए श्री
 पाठ थाप । काहे नै श्री आचार्य जी के पाठ पढ़ल वेद सो सबन को उधार हूँतो स्त्री संहितिकन
 याको अर्थ श्री गुरुदेव जी करत है, ऐसे जे श्री आचार्य जी संपूर्ण विश्व के उधार के लिये

रूपधु सदा ताल चरणात्मयी विदुले ॥ १ ॥
 विश्वोद्धारायुं सेवा वीर भूत वं दावन प्रिया ।

॥ खलीक ॥

जी करत हूँ ।

महाप्रथम आठ खलीक करि श्री परमनाटक परमना जी की स्तुति करत है । ताकी टीका श्री गुरुदेव
 आदि—॥ श्री ऊरुगोप नमः ॥ अथ श्री परमनाटक लिखते टीका श्री आचार्य जी

श्री विश्वामित्राय, कांकरोली, हिं० व० ५६, पृ० स० १।२ ।
 २३५, पृ०, रूप—सधारण, गद्य, पद्य, लिपि—गणरी, प्रातिव र्यान—श्री सरस्वती उधार,
 देवी, पद्य—१२, आकार—७ × ५ १/२ इंच, पर्कि (प्रतिपठ)—२६, परिमाण (उपादेय)—
 संख्या २३६। परमनाटक श्री टीका, रचयिता—श्री गुरुदेव विद्वजनाथ जी, गानक—

पड़े थापा टीका श्री देविराज जी ऊत है जो सप्रदाय के एक अत्यंत विद्वान् आचार्य य ।
 श्रवणपाठनाचार्य प्रस्तुत अर्थ है । बालक में हिंदी टीका गुरुदेव जी ऊत नहै है । प्राप्ति है कि
 में है । उसकी टीका सञ्जय में हूँ श्री विद्वजनाथ जी ने की । जहाँ मञ्जय टीका का
 विषय—श्री परमना जी की स्तुति । श्री वल्लभाचार्य ऊत परमनाटक स्तोत्र मन्त्र

कृतिरुपमपद्ये । पावन शकरोमी प्रमृष्टदन्तेन रामः स पृष्ठ ॥ ११ ॥
नतिन नयननीरु शयद जलकीया शयदयति हि नत्वा दिव्य महिन्ममस्य ।

शक्ति—श्री गणेशाय नमः ॥

शक्त्यापाप पुत्रकलाप (याज्ञिक सभदे), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।
१२२, यूँ, रूप—अश्विन, यश, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३८ वि०, प्रतिवेक्षण—
पत्र—१२, आकार—११ ३/४ × ५ ३/४ इंच, पत्रिका (प्रतिपत्र)—८, परिमाण (अन्तर्पत्र)—
संख्या २४०. रामायण माहिन्य, रचयिता—विद्वान्श्री, काशी—३५१,

विश्व बाल्य—शारथ के तीन पक्ष उतके उपरी कोना पर चढ़े के ऊपर हूँ है ।

उतके पुत्र श्री विद्वलनाथ जी ने की है, जिसकी टीका प्रसृत विद्वी भाषानववाद है ।
शुद्ध, काम, मूल) का प्रतिपादन इस चरित्रकी श्रुत में किया है । उस श्रुत की संस्कृत टीका
विषय—श्री पृथिवीपति विद्वान्श्री अनेसर श्री वल्लभाचार्य जी ने चरित्र (धर्म,
संपूर्ण सं० ११११ श्री कल्याण नमः ॥

इति श्री वल्लभाचार्य विरचित चरित्रकी श्रुत ताकी टीका श्री गुरुदेव जी कृत भाषा
अनीभाषित संपूर्ण यद् ।
जी श्री गुरुदेव जी के दोऊ जने के कवच मिल है । ताने या श्रुत की निरन्तर पठ करनी । यह टीका
कृपा करके दीया दी है । ताते वैद्योव की याने अधिक भाव राखनी । काहे नो या सं श्री आचार्य
वैद्योव की धर्म है । ताते वैद्योव की विवक संपूर्ण रहनी । यह श्री गुरुदेव जी अपन वैद्योव की
सदेह कहर न राखनी । शीर अपन मन सं श्री आचार्य जी के कवच की दृष्ट विषय राखनी यह
अन—सदेह है ही आशु र भाव है । शीर विषय है ही आचार्य है ताते वैद्योव की
मेरे अकल की अपराध करे ती सं माही सही ।

कोई रतिव सका नहीं । श्री ठाकुर जी हूँ यह कहें । जी मेरी अपराध तो हूँ क्षमा कर । शीर
राना पास दुबसि रति भाव है । तिन मे रीस करि है । सो जलदया दुबसि विपति परी । सो
तो मरि केसु सिद्ध होय । यह कोई सदेह करे सोऊ न करे । काहे नो श्री आचार्य सं अमरीष
सदेह करे जी शीर देवान की अनारर अयो ; तब शीर देवता यकी आत्म करन सं विचन करे
चरणारविंद की सुनिमन अवन करनी । यह श्री आचार्य जी के मन सं सिद्ध है । तही कोई
पाकी श्रुत ॥ अनः अपनी जी आत्मा ही श्री ठाकुर जी की समर्पन करि गोकुलेवर के
स्वरूप अवन चरि न यदायमिति सं मतिः ॥ ४ ॥

अन. सर्वजना शयवदेगीकुलेवर पादयोः ।

सद्य—१० पं० ॥ ११ ॥

कुंठा होइ तेसी लीला श्री ठाकुर जी करे काहे न लीला के प्रति तो एक तुमही हो ।
कृपा वाद जी तिनकी जी लीला की समझ सो तुम्हारे हृदय सं अरी है । अथवा तुम्हारी वसी
आचार्य जी सी श्री गुरुदेव जी कहत है । जी तुम केस हो श्री वल्लभवर जी श्री पूर्ण पुत्रवधिस श्री
लीला या हृदयगाव सानर । निज जन कृपा दैटि वरि प्रम सहारस ॥ १ ॥ पाकी श्रुत ॥ श्री
धुं जी महिप्रमन की नमः..... पुनीकी की टीका कहत है ।..... वीरवर.....
शक्ति—श्री कल्याण नमः ॥ टीका लिखते :: श्री गुरु.....

दि० २० २१, पु० सं० १-११ ।
सं० १९६८ क अनन्तर, प्रतिवेक्षण—श्री सरस्वती अशार, श्री विशा विभाग, काँकरोली,
परिमाण (अन्तर्पत्र)—८०२, श्रुत, रूप—साधारण, यश, लिपि—नागरी, रचनकाल—
टीकाकार, काशी—३३, आकार, ३ × ५ इंच, पत्रिका (प्रतिपत्र)—२३,
संख्या २३६१. चरित्रकी टीका, रचयिता—गो० विद्वलनाथ जी (मूल संस्कृत

शुभ साहित्य संकलन प्रकलन सुनिष्ठ विज्ञान विज्ञान विज्ञान विज्ञान विज्ञान
 शुभ साहित्य संकलन प्रकलन सुनिष्ठ विज्ञान विज्ञान विज्ञान विज्ञान विज्ञान

॥ दशै ॥

नदि कलि जप तप योग विरगा ॥ कवल राम चरित प्रचरगा ॥
 देई परम गति कह सब कोई ॥ पति विवि शान जपाय न सोई ॥२३॥
 लाल गुम नलि सकल जपाई ॥ राम चरित रहै लव लाल ॥
 सो पुहरि सब साति सुधाई ॥ लख सप यह रमणी विहाई ॥२४॥
 कनक अवन श्री अरव मभारा ॥ लहे महिल रसिकस उचारा ॥
 लिनकर से लख विधि करिषऊ ॥ रमणी विहाई यथा नलि गावई ॥२५॥

शत—

बहि वहीन सोवाहि दिन रात्री ॥ करही बान अवन मन सात्री ॥
 गहूँ करी कबरा नहि करी ॥ देखा विनि निज रूप सवाही ॥५६॥
 कुँ देख बलावहि सीमा ॥ देखा देखावन दाल वतीसी ॥
 पति से पहिले भाजन करही ॥ पति न जाई वरिहद लव धरही ॥६०॥
 शीरन से देही देसी बनराव ॥ पतिहि देखि पावइ यमा ॥
 देउ सीस की पीर बलाव ॥ पति से मलगाव दबाव ॥६१॥
 कबहूँ कहै सुन पातम प्यारे ॥ पा वरु विजसल प्राण विपारे ॥
 अस कहि पद सेवा करवाव ॥ नवपियार करि सिंधु लगाव ॥६२॥

॥ चौपाई ॥

नारी कर सुखाव अर कहे सुनिष्ठ विज्ञान लाल ॥
 पति अगवान काज से बीनहि नयन सिन्धु ॥५८॥

॥ दशै ॥

शत—

सुनि शंकर विधि अवन लव मन महै करि अर्चमान ॥
 भाग विचारे दीन गुनि वादन लाल सुजान ॥८॥

॥ दशै ॥

शोनि विचारे विधि अरवि सुनिष्ठ ॥ पति वाटहूँ कहै आगव जाई ॥७॥
 लाल अरव काल रहै जाव ॥ या की वार मनज कसि पाव ॥
 हुन महै भाजन आदि जपाई ॥ करनहि करन काल बहूँ जाई ॥६॥
 निहा विवश दीस लहे लोई ॥ शय न दीस वहु देही लोई ॥
 बहूँ साहि रहै मध्यम जाई ॥ गी महै पूग विनाग पुनि होई ॥५॥
 ली महै लीश वस रलि जाई ॥ बीश बरस आनपहि वंही ॥
 मनज लीक ल मानस देही ॥ जिपहि मलाऊ पनु प्रिय जेही ॥४॥
 देहि मुख करे बड विरसारा ॥ गुनि मन महै विधि कोहै विचारा ॥
 ललित अर्चुन लव प्रमानी ॥ पल कोहै सलकोहि सुजाना ॥३॥
 शोनि वरिच अलि पावन ॥ प्रथम कोनि विधि रलि मनपावन ॥

॥ चौपाई ॥

सुनि पावन परम पतिव रमणन साहित्य सुनिष्ठ ॥
 सब पायाधि वरिच वरनहि सिन्धु रसिपि सुनिष्ठ ॥२॥

रन्ही गल अर माल गूँ रन्ही रन्ही पौव अर रान ल्यार ।
 रन्ही जाली अर पाली कुँल रन्ही इँट इँट रान ि पार ।
 रन्ही देल देल सम रन्ही रन्ही देल अर रान बार ।
 "कहे दास बोधी" मही सरन गली रानही रानही जीवनाकंन सरा ॥५०॥

अन—

कहे दास बोधी एक अलय के नाम बिग छुँटे ना जीव की प्रवर्षा ॥ २ ॥
 सी प्रहय परुँ जी नरदेव दानां सँव परगना अर जम काल कासा ।
 सादेन सब गीव जा एक नीरवान है और लही लोक से सकल दासा ।
 "क" काज एसा जीव काहे दीना रान से और नर घटी सब सँडी आसा ।
 कहे दास बोधी एहे पूव नीरवान की गान के सबद सुय पाइए जी ॥ १ ॥
 सीन सनिय अरगना उरधारी हेरकल होइ नाम ल लाइए जी ।
 मही प्रनीगान मद छोटी सुदान करी प्रम के सबन सी जाइए जी ।
 'क' काम श्री कोय का संग परीसँ जौए नाम गीवद का गाइए जी ।

कशाय नम राम राम ॥

आदि—श्री गुरोसाय नमः ॥ इली सी नवनीन वरगुँ कसलाया नमः राम श्री द्वि
 आनमगद) ।

प्रकारिणी, मग, वरगुँमी (प्रवर्षा) ५० विवमदिन विवारी, गम व पीर—वरदे, जला-
 अरुँ, देप—गवान, पद, निप—कधी और गारी निथिल, गानिद्वान—काशी गारु-
 १२, आकार—२३३ × ५ इव, पत्त (प्रतिपद)—१३, परिमाण (अरुँप)—१५६,
 संख्या २४२. अंनग, रचिनी—वृजनाथ या बोधीदास, कामज—दधी, पल—

विषय—श्री नीलकंठ महादेव की स्तुति की गई है ।

इति श्री वृजनाथरुँ निरुंय सुंके सुंथं श्री निरुंय विसेरुं नमः ।

श्री नील कंठहे अल जल थल विरुंय विसेरुं ॥ ६ ॥
 अरुं के ल देवनाथ सँल सीधिर विसेरुं ।
 प्रव कालि अरुं उपासी प्रल मंगल गापुं ।
 अरुं वसंत सुवकम चहुँ दीस प्रापे फल दाएकं ।
 महादेव सुदेव सुदपति सब दीप विसेरुं ॥ श्री नीलकंठ ॥ ८ ॥
 सब विधि जल विपक प्रान वसँ सुमल नेव सधिरुं ।
 मथल दधिलल सेस विगलिल सुमल सुह सुदेरुं ।
 ल आसन मासन पद आसन ॥ श्री नीलकंठ ॥ ७ ॥

आदि—

कसिया, जिला—गिरधर ।
 (जीर्ण), पद, निप—गारी, गानिद्वान—५० महादेव मिथ, गम—वटसरा, पीर—
 २ × ५ इव, पत्त (प्रतिपद)—८, परिमाण (अरुँप)—६, अरुँ, देप—गवान, पल—
 संख्या २४१. नीलकंठ स्तिल, रचिनी—वृजनाथ, कामज—दधी, पल—१, आकार

विषय—इसमें गीतवाणी गुलसीदास के ल रामचरितमानस का साहित्य वर्णित है ।

॥ श्री रामचरितमानस सहे राम ॥

सं ॥ १८२१ ॥ पौस मास केली पक्ष चतुर्थ्या भागवतसे लिखवा विषयवर पाडे ॥
 के ल रामायणी साहित्य सुंथुंम ॥ श्री रामचरितमानस ॥ श्रीरुँ ॥ सवते ॥ १६३८ ॥
 इति श्री रामायणी विदेरी विरिबल सकल अंन कर्ण विवर्षन मानसरोवरालय गुलसी-

सिपायी बडोस के अरुई सेटी । ऐसी ऐसी जालि करे सरवर सेटी ॥

सि बरजो की धर बाइ लंगा सिबाबल ॥

सि छोटी कानगी नहरनी हेजाम के थोर थोर मोलही एक उजी पर आबल ॥

नेन हौबे लोभी लोही धोर पर धाबल । से आबिक अपार हौबे जाल अलि मारल ॥

अमके नर आरि हे धी रहे सोना । ना सरवरि करे का रहे कोना ॥

सगरे संसार वसे हमरे दहीड । जिना लोही नेन करे कामड ॥

ने न हेव वषवर सोना हम हौबे मरद । उनही से बहि पादि करे दिबे मरद ॥

कोदि कोदि हौली सेरे अना बने । लोही मवार का मासे बोले ॥

राधे वी शुकसिनि लिये । हिये हूँ नरे सजी हिर पर हिये ॥

सुन बन धारी विव राधे गले ।

गवरी बचन सुनि बोले सोना जगती के । नाति जल चाहे सोके ॥

दीहरी के पहिरि मारि सेज ऊपर जाय । हमरा के पहिरि विदर एणे करे राय ॥

ठीक ठीक हमही गरी । पावक से ठीके ऊपर करि ॥

सुन सुन रे सोना के । पूछे सोके लोहीके ।

अमरन बनाव माला राधेन गले । माने आदर जस मीरे के मले ॥

उनही से करी सुपल रक के । पहिरि पोसाक जस देन कर के ॥

कहेन सोवणी लोही हेपल सेरी । बडे बडे माने बचन सेरी ॥

आदि—श्री सुप्रथिमसः ॥

गाम—बोली, पारद—भाटपार रानी, लिगा—गोरखपुर (रचना सभा के लिये प्राप्त हो गई है) ।

२२, पूर्ण, ऋण—प्राचीन, पद्य, लिपि—गाराटी, प्रातिपद्यन—श्री महेंद्र देवरायण गाराटी,

(खरकोर), आकार—१२ × २४ इंच, पृष्ठा (प्रतिपद्य)—३०, परिमाण (अनुपद्य)—

संख्या २२३, सोना लोही बाद, रचयिता—बोधलाल, कानज—देशी, पत्र—१

छोटी से हौबे के कारणे यही नाम रख दिया गया है ।

सोनी के साथ लिखी गई है । वहीव से आरिधिया है । ग्रथ का नाम नहीं दिया है । रचना अज्ञाना

रचनी रचना संगीतबिषय विचारों से युक्त है । कविता अज्ञाना छोटी से की गई है । प्रति कुछ असाव-

रचयिता का नाम बोधीवास है । अन्य परिचय नहीं मिलता । ये सब जान पड़ते हैं ।

नहीं है । लिपिकाल और रचनकाल भी अप्राम्य है ।

विशेष शान्त्य—हेरलख खडित है । पत्र संख्या ६ तथा संख्या १३ के पयबाब के पत्र

विषय—धन मदानसार अर्थिक और शान्तिपदेश प्रयोग ।

—अध्याय

:०:

:०:

:०:

“कहे दास बोधी” प्रथम नर ना ॥
नरक श्री सोरग का आस बोसरड के सुरत रघु राम रघुनाथ पाही ।
पाप श्री पुन्य का धूल सब डूरी के राम को धूल से आनन माही ।
“व” लोक श्री वेद की राह सब छोडी के बलव है प्रेम की पथ माही ।
“कहे दास बोधी” संत सबव जौ जानीए आनद धर होइया कोयो दाया ॥५२॥
अजर अवीकार आ देव जौ बस्य है होए से नही कोई संत पाप ।
बोहिले दूरत से बरतु जौ आबना सकल बीनसाए जौ सेष छाया ।
“व” नाम दे लगे पुन आए से जलन के और सब लगे से अम साया ।

पुनः त्रिं विस्तरं चीन की आगर ॥ अर्द्ध आन त्रिं व समय उजागर ॥
त्रिं प्रति अतुलित अवल उपागर ॥ पवन अकीरति त्रिं विधि प्रकार ॥
पुनः त्रिं हूं मूं अवरजा ॥ संहित रमन वन संहित समाजा ॥

॥ चौपाई ॥

सोहन अधिक न होइ त्रिं प्रगट सब आंग लिहि ॥७८॥
मध्य—बंसे स्वामी कोय लिहि विधि स्वान संहारहो ॥
अवल प्रम प्रभाव सुठि विधान बनन करौ ॥ २ ॥
सुनिय अब त्रिं लय अजविहर सजल कथा ॥
॥ श्री आगवन वचन ॥ सोरठा ॥
कथिय सकल रावर समहि की वका मंगल भवन ॥ १ ॥
प्रम प्रभावहि ताहि प्रति लसनय बरिन कोने कवन ॥
अति वरसलता जहो परम सबस्वर धूध ॥
अब वानक वर वंज विहर विस्तार सुनैय ॥
जासु अवन मुदभावदेव मूं अर्द्ध समाया ॥
अहो धरि रचना अनप अतिसर सुगाया ॥

आतिरः सावधानतया अचर्य श्री पुराणो प्रवृत्तिस प्रसन्नोत्सु ॥ श्रीमता वचन ॥ छंद छया ॥
वशास मक्योपासना प्रम प्रकाशिका श्रीकृत्यो चरित संवाद संवधिनी सुयुग्मा कथा प्रदीपते तत्र
शिव्या श्री आगवन वदिसातुना कना श्री आगवन सार प्रथे श्री वंजविहर नाम दुनिय सोपान
कल प्रदायिनी त्रिं प्रसाधकार कारिणी अज्ञानाधिकार विद्वंसनपरिधिणी ॥ श्री आकाशाय
सकल कल्याण कारिणी अतिमला आगवनी अति प्रवृत्तिनी वंदनाय आनोवृत्तिनी सुवर्ण
श्री मस्तक कलि कलय अलि चंपारिनी सहि अद्यतिसकादि वापठयानसिनी
आदि—श्री मया आगवने वृ..... ॥

आयुधायो पुस्तकालय, गान्धीप्रचारिणी समा (याज्ञिक समष्टि), काशी ।
२१९२, पूणे, रूप—ग्रन्थी, पण, लिपि—गान्धी लिपिकाल—सं० १८४२ वि०, प्राविस्थान—
पल—२१, आकार—१० ५/४ इंच, पत्रिका (प्रतिपत्र)—१०, परिमाण (अनूप)—
संख्या २४४, अजविहर (द्वितीय सोपान), रचयिता—अहो सोनेर, कागज—देशी,

छात्रकार पदो मूं है ।

विशेष आगत्य—प्रस्तुत रचना 'किसान सिपाही आगर' नामक रचना के साथ एक हो
विषय—सोना और लोहे का विवाद ।
इति सोना लोहा वाद समाप्तः ॥
सोना लोहा देव देहे हेमार ॥ १ ॥
गहर कति आये जहो जादो सरति । "वोषलाल" केल्यो जहो समल विचारि ।
राम मारे रावण के जाय । हस्ती के मस्तक पर आकृशा सो आ विना लोहे नहो जग निरवाहे ॥
निकर गहि लीन वादा निकर जौहि भिमसेन राय सरहोसे ॥
महिषासुर दानो जो मारे अघानी हेमरीके सोम से ।
हेमर्हि विषल गौरी गोय फिक करे । वज्र घटेराल डेवर होय के घरे ॥
हेमर्हि गोवी (?व) जो के होइ चकरपानी । बाधि लेन दानो अघर भिमसानी ॥
एतना वकवाद का करे सोसे ॥
लोहा कहे कोप वात । सुन सोना सोरि वात ॥

शत—

उत्पन्नं तु पञ्चमो लिल तद्विल सुख कारि । क्षीर नीर लालाटिक वर गारि ॥३॥
 तत्र प्रथम पथा ॥

एक पाद सो वाणि पय दूजो दूजो विल ।
 दूजोदह सो गान्धे पथ मूल अंतर मेलि ॥४॥
 छानीसो लपटाइ क लटकी रहे जो गारि ।
 बल्लिरि बोटिन कछो आलिनान सु विचारि ॥५॥

अंत—कविता रस आवाज के मई ज कछु इहि वार ॥
 नवरस मांस बडु प्यार करि वरनम किथा सिंगार ॥६॥
 हो सबको रस रीति के पदरजई निरधार ॥
 बरनन मूल परी कछु सो छामिया इहि वार ॥७॥
 संवत् सजहेस सुखा सरर वरष बछानि ।
 मावबसिल देनीया गुरी धाला सोअन मांसि ॥८॥

इति श्री कृष्णदास वंस संभव आवादेस प्रकसिते अंगार रस सिंधी इवसमास वर्णन नाम इवस कलोल संपूर्ण ॥
 इति श्री सिंगार सिंधु संपूर्ण ॥ संवत् १७७७ आषाढादि वर्ष याके १६४२ प्रवर्तमाने आपाठसिंधि १५ याके संपूर्ण ॥

विषय—इसमें इवस अथवा (कलोल) में अंगार रस का वर्णन है । अंगार रस का आरंभ रीति से विवचन से दाहरण किया गया है । कामधारव संवदी कलाश्री के अर्द्धप-
 नदी का भी वर्णन है ।

संख्या २४६. राम सावित्री, रचयिता—आवतदास, कामज—दूधा, पल—६,
 आकार—६ × ४ १/२ इंच, पत्रिका (प्रतिपत्र)—६, परिमाण (अर्द्धप)—१०१, बहिर्ब,
 क्षय—आशीन, पत्र, लिपि—गारुटी, लिपिकाल—सं १९२२ वि०, प्रोत्पत्त्या—१० रीध-
 ध्याम, ग्राम—कैला, पोट—जटारामपुर, जिला—इलाहाबाद ।
 आदि—श्री गणेशायनमः ॥ अथ राम सावित्री लिखते ॥

॥ दही ॥
 श्री मयारामणु वरुण अस्मद गुरु परजन ।
 श्री रामानज आदि इ बदी श्री गुरु संत ॥
 सावित्री श्री राम की पावित्री अति मूल ।
 विरची आवतदास सुनि मिद मूल अथ सुल ॥ २ ॥
 यस्या हे नारद सुनी वीनाधर हे ध्यास ।
 काहे वसिष्ठ हेतमल ले जग जिनि सुल प्रकस ॥ ३ ॥

॥ छंद ॥
 सय सानन सदा वेद जहि नीति प्रकार ।
 धर्म धारु र साधु हेत नीति नर वधु धार ॥
 ब्रह्ममास सिमपक्ष पुनवसु सोम गोमि जत ।
 ककट लगन सुमध्य देव सम राम अंप सुल ॥
 वरुण हे वरु राम अथ अरत अरत सुधुसम ।
 लक्ष्मणु अथ शर्वहन कलाविध सवस हेरत तम ॥ १ ॥

राम कथा जलनिधि अवागता ॥ गारद संश कि पावाहे आता ॥
 ही किमि कही बाल मलि रंक ॥ जलह कि सिधु पपील असक ॥
 छिमिहे सज्जन मीर छिठाई ॥ बाल बाल डब मावि सोहाई ॥
 पारस मणो सलसला प्रभावा ॥ कोन सज्जन सुंदर जस पावा ॥
 कही कथा रघुनाथक केशी ॥ सुनिहे जाहे सब तीरथ घरी ॥
 यद्यपि काव्य सुंद कळी माही ॥ तदपि राम महिमा ऐहे माही ॥
 आनिहेहे सज्जन मन विचल जाई ॥ राम बरिल पर वाहे सोहाई ॥
 काव्य दाय गणो शोष जाकराही ॥ राम हीन वध नहि जादरही ॥
 अहि सर बक मडक किमि तहे जाड मराल समाना ॥
 अस विचारि कीरति मन हेरयो ॥ कहिही जाहे विमलकी ररयो ॥
 नारदावि मूनि आहे न पावल ॥ मलि अर्कपर राम जस पावल ॥

आदि—श्री—अथ रामायण दीप लिखते ॥ ३ ॥
 एव कथन एव कमल जग प्रनवा चारघर ।
 सुनिहे करलल निजल वृष्टि विमलि विघर ॥ १ ॥
 निजला सहित महेसा पर वरदा सुजयाम ॥
 श्री. सं. पुं. जीव कहे देल अत कहि राम ॥ २ ॥
 जासु ऊप जल सुकहे हील निगम वाचाल ।
 धर्मा शील दुगम सुमिहर श्री राम ऊपल ॥ ३ ॥

सुलवानीपुंर (अध्याय) ।

संख्या २७२. दीप रामायण, रचयिता—भाषवदास (भावांस, अहमदा, राज-
 देवा, पद्य—१, आकार—११११३३ × ४३, पंक्ति (१), प्रसिध्दता—७, परिचय (अ-
 र्कप) —६२०, पं. पं. लघु—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १०२६ लि.
 प्राचिनस्थान—श्री. ठकुर जयराम सिधु, ग्राम—लिहिवा, पारद—महेसुंदर (सुंदरी), लिखि-

से पुस्तक पूर्ती हो जाती है ।

है । इसकी रचनी प्रति श्री मिश्री है जिसका केवल प्रथम पद्य ल खिल है । परन्तु दोनों को मिलाने
 विषय बालय—पुस्तक खिल है । बीच के पद्य, संख्या ३ से लेकर संख्या ५ तक नहीं

विषय—श्री रामचंद्र जी की लीलाओं और घटनाओं का विचित्र वयान ।

अथ १ लिपि हेरथ अक्षर पालावर दास ॥ श्रीअमरु ॥ रामऊपल ॥ रामऊपल ॥

इति श्री भाववदास जी कृत राम सावित्री सूर्यो ॥ सवत् १९१२ कार्तिक मासे
 सुनि धकई वार वहे श्रीराम सनेहा ॥ ४३ ॥
 विरवी भावल दास राम सावित्री श्रेया ।
 सब पाप मिटि जाई चारि फल सदेजहि पाव ॥
 यह श्रीराम चरित्र प्रथम सुनि जो गाव ।
 प्रजा बरु पुंर सहित हेरिप निज लोक सिधाय ॥
 अमल यथा लपदान धर्म विषय लखव ।
 अयल वध करि राम रावध पुनहे उपदेश ॥ ४२ ॥

अत—

सुख स्वर्ग मिल अक सुखी ।
 प्रयाग निवासो नरदे की है कुलम पद देयो ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अथ प्रयाग निवास महिमा ॥

कामद हिर धरि नरति हो प्रयाग शतक सुर धर ॥ २ ॥
 गाग यमना सरस्वती श्रीमाधव पद देयो ।
 सबल गद गति उद्वेग पद वंदन "आवतदास" ॥ १ ॥
 रामनिज पद रामपद सिध पद पदम सिवास ।
 ॥ दोहा ॥

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ तीर्थराज महिमा प्रयाग शतक भाषा लिखते ।

सुख्या २२८. प्रयाग शतक भाषा, रचयिता—आवतदास या आवतदास महिमा,
 (स्वान-प्रयाग), कागज—आदिनिक सकेद, पद्य—२८, आ. १२—८६, आ. ५६, पत्ति (प्रति-
 ट्ठ) —१२, परिभाषा (अर्थसूचि) —१५६, प्री, रूप—आशीर्वा, पद्य, लिपि—मागरी,
 मुद्रणकाल—सन् १९१६ ई. वि०, प्राचिनदान—५०, आवतदास लिपिठो, राम—बुडोपुर
 धीर, प्वाट-दोलगाढ, जिला—बजाहादा ।

१८९६ आद्य शीघ्रल चतुर्दश्यामकं वासते ॥ लिः आवाजी दौन पंडित रघुवर दास श्री
 इति श्री रामायण प्रकाश करण रामायण दौप समाप्तः श्रीमत्सु ॥ श्री सखे

राम उपासक चरणो यम कमल परग सुवास ॥
 रागि है पूरे रति कियो सुगम आवतदास ॥ ७३ ॥
 पदहि सुनहि जो मूम कति हैदय सुनिहि श्रीराम ॥
 सुर कुलम सुध सोल करि राम धाम परिनाम ॥ ७४ ॥

॥ दोहा ॥

श्री रघुनाथ सनीप कृपा हेतु अरपन किहेव ॥ ७२ ॥
 श्री रामायण दौप भाषा वध सु सरल पद ॥
 जोहि प्रिय रघुकुल कृष दौनवधे अक्षरण शरण ॥ ७१ ॥
 तेही "प्रसाद" की हैत बाल वंदि से पूरे रतिव ॥
 ॥ शीरठा ॥

अन—

रामधाम की पद्य रामायण दौपक रत्न ॥ १० ॥
 भाषा श्रुतिन से प्रथ करो सकेद पुरायो की ॥
 महिमा लघु उदार सुन कहेव सुनि जन समा ॥ ६ ॥
 रामायण सुवसार बालमीक सुनि आदि कुल ॥

॥ शीरठा ॥

अस विधति मम हैदर से चाहि यथा अवगाहे ॥
 कहेही कठ रघुनाथ जन पावन विधव समाहे ॥ ७ ॥
 अक्षयपुरी से जास्य दिशि पावन आसव वास ॥
 लहे वसि रघुवर की कथा रचल आवतदास ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

राज्य सचिवालय की ओर "समाप्त" ॥ ३६ ॥
 राज्य सचिवालय की ओर प्रकाश

—समाप्त

इति श्री विद्यारण्य स्वामी जीव ईश्वर सेवाई वंशज वरुणी नाम २५वीं विद्या ॥ १ ॥
 सब संकल्प विफल कृते मम चरन ॥ ३२ ॥
 सदन कदरा निरिह के अतिन ही रसक जान ।
 ०: ०: ०:
 वाक्क... ताहि देवि डरि जाल ॥ ४ ॥
 मन कृतन मूख जी रहै शयन चयात ।
 वीर रतन धन पाइके ली पुनि धायत नाहि ॥ ३ ॥
 मन कुविद्या कानन ही सुप पावै कइ नाहि ।
 वाहि पइ है यम मिहै मन पावै विद्याम ॥ २ ॥
 वीर करन जसु व रतन करन श्री नाम ।
 जय सचिवा मरु श्री दीन प्रथ सुधारि ॥ १ ॥
 रामानुज बदल गुरे चरन कमल उर धारि ।
 ॥ दीहा ॥

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

सख्या २४६. विद्यारण्य, रचयिता—समाप्तवदना, कानन—इश्री, पद्य—१२, आकार—७ १/२ × ४ १/२ इंच, पत्रिका (प्रतिपत्र)—८, परिमाण (अन्वय)—१६८, पत्रिका, रूप—प्रचीन, पद्य, लिपि,—गणरी, शक्तिस्थान—कशी गणरी प्रकाशित, भाषा, वर्णमाला ॥

गण ।

विशेष आलोक—पुस्तक में रचनाकाल का उल्लेख नहीं है । यह मूलतः १६१६ में प्रकाशित राज में वी० काशीदास मिश्र के लक्ष्मी विद्यास छापीलाने में संपादित ईश्वर पद्वली वार ६१११ विषय—श्यामराज का साहित्य वरीन ।

समाप्त शुकसखि

नामः पूवसे विद्याम :: ॥ ५ ॥

इति श्री तीर्थराज महिम्न प्रथमाशक्त समावतदास भाषा कृते प्रथम सचिवा वरीन ।
 प्रथम शतक पढ़े जी पढ़े सुनें भाषि विद्यास ।
 सब तीर्थ अस्मान फल पावै आगत दास ॥ १८ ॥
 निज पठिह अस्मान कं कति सुकसु उपवास ।
 प्रथम शतक सुखुनें मम वरुनी आगत दास ॥ १९ ॥
 तीर्थराज प्रथम में उहेलदास सुवास ।
 निजके दासन दास की दास आगत दास ॥ २० ॥

—समाप्त

कलह पटी कौरी बसन अधम गयी हेरि धाम ॥ ६ ॥
 तीर्थपति की हेरु दिग कवन मणि कहि काम ।
 तीर्थ वरुनी प्रथम कृतन पाप पहरि विद्यास ॥ ५ ॥
 आगत मखु प्रथम जी अथवा मज्जा जान ।
 प्रथम भाषि एक वृत्ति सब नाहि ताहि समाप्त ॥ ४ ॥
 प्रथम शुकसु वी तप तीर्थ प्रत दास ।

प्रशस्तिपत्रिका नामा, वास्वामिनी ।

—५३०, अर्थश्री, स्वयं—प्रशस्ति, पद्य, श्रुति—नामद्वय, प्रशस्तिरक्षण—श्री प्रशस्ति-
द्वय, पद्य—३३, आश्विन—५५, अर्थश्री (प्रशस्ति) (५५) ३३, पद्य—१०, प्रशस्तिपत्रिका (अर्थ-
संज्ञा २५१. श्रीमा महानन्द, रचयिता—महाबलदास, कालज—

विषय—रमल विषय वर्णन ।

इति श्री रमलशार संस्कृतं प्रिमि कमान सुवा १० सर्गावध सं १८२२ सर्ग १२५० ॥

वैशाखी कं हू वै कवि साइ ॥
विशानन्दन अह संभवत भाषित बाचल जाइ ॥
लिनसा कं हू वैवना हेम सी कवि उरदाहि ॥
आनं जं कवि हू गय भाषा कं जग माहि ॥
नाहि कहे जग जगतीही हू वैव पंडित साइ ॥
वेदशास्त्र कलि गुणन जव बाचू यह काइ ॥

अनं— ॥ दाहा ॥

गनायक अह सरवली संज उमा पव नाइ ।
सुप्रति वदि अछर धरि विमल वंदि सुहि वंडे ॥
सिधा राम पव राधि द्विय सब वैव सिर नाइ ॥
रमल शार भाषन प्रगट सब प्रिमि होय सहाइ ॥
चारि लीन हू एक गुनि यासे शुक निहादि ॥
दार लीन कारि शारि उलहू प्रदन विचारि ॥
सात बार पडि मव कहे रमल अभाव प्रदन ॥
अवस प्रीकल धरहु अत्मान ध्यान करि विदन ॥

॥ दाहा ॥

शाहि—श्रीगणेशाय नमः सर्व उ पावती वी सिद्धिदेव नमः अथ रमल ॥

संज्ञा २५०. रमलशार, रचयिता—महाबलदास, कालज—श्री, पद्य—५, आकार-
—५५ × ५५ इंच, पद्यिका (प्रशस्ति)—१२, प्रशस्तिपत्रिका—सं १८२२ वि०, प्रशस्तिरक्षण—श्री प० लक्ष्मी-
शकर वास्वामिनी, संस्कृत अमरी राज्य, मुम्बैनगर (अवध) ।

विषय—शक्ति शीर शान्तिप्रदायक वर्णन ।
विशेष ज्ञानप्रद—१५ शीर शीर अथ सं चरित है ।

अर्थ—

०० :
०० :
०० :
...
व्या ब्रह्मलौ नरन सं नहि ॥
वाय रतन निर्माल है मूरुप को न देवाव ।
परम वाय यह जाति कंस वहु "मावत दास" ॥ ३२ ॥
... कामदेव नाम के दास ।
राम नाम लिन कथनर अर्थ सिद्ध सब सुल ॥ ३२ ॥
एहि जग सुव रूप को मन विहंग मति सुल ।
जहे शक्ति धन साध मम सब दारि प्रिति जाइ ॥ ३७ ॥
वाय रतन संविभ करे यह सुन मन जाइ ।

संख्या २५२क. विद्यमण्डि मंगल, रविपदा—भावात् हिन्दुत्वस्य सत्य, काण्ड—२७
 पल—२१, आकार—२५ × ४५, पत्रिका (प्रतिपत्र)—१६, परिमाण (वर्गफुट)—२२४,
 पृष्ठी, रूप—नया, पत्र, लिपि—नागरी, भाषा—संस्कृत—भाषाशास्त्रात् प्रसक्तान्य, भाषाशास्त्रात् लिपि
 संस्था (पत्रिका संस्था), काशी ।

विशेष आदेश—अथ अर्थो है । संख्या ३८ के पत्रांत के पत्रे उपरान्त नही । २३३-
 काल शीत लिपिकाल भी आता है ।

विषय—गीता का साहित्य ग्रन्थ ।

—अर्थो

श्री गुरु मन्त्रं कुरु ॥ श्री गुरु गुरु ॥ श्री गुरु गुरु ॥ श्री गुरु गुरु ॥
 सब विदित कहेहि राय गुरु ॥ राजा राजा गुरु ॥ राजा गुरु ॥ राजा गुरु ॥
 योही सोच बहुत दिन करेक । सोचहि माहि सो राजा मरुके ॥
 ताहि बाध असुर से गुरुक । धर्मराज सब गुरुक ॥ ७ ॥
 धर्मराय योही गुरु करेक । गुरु के सोहे माहे मरुके ॥

शत—

अथानि भाषा कृते प्रथमाध्यायः ॥ १ ॥

कृते श्री परमहंस्यो महादेव उवाच ॥ गीता महादेव भाषाशास्त्रात् लिपिकाल

ॐ प्रथं गुणको गुणो ॥ काले गुण पवित्र तन होई ।
 सकल जीव गुणको जीव ॥ गुणको गुण पवित्र तन होई ॥
 सब बड़े सोहे ॥ गुणको गुण पवित्र तन होई ॥
 विषय संघ कुरु ॥ विषय संघ कुरु ॥ विषय संघ कुरु ॥
 ०: ०: ०:
 सकल सारको सार है सकल ज्ञान की ज्ञान ।
 सकल धर्म गुण कर्म है कर्मो भाषा भाषा ॥ २ ॥

॥ पाठ्यभाषा ॥

गुरु गीतव परमाणु करि गुरु गुरु ॥
 बदन कमल रज संत के धारो अपन सोस ॥ १ ॥
 गीता की महिमा कहेहि कहे प्रथम जो व्यास ।
 निकसी परमहंस्य से सबको पूरन आस ॥ २ ॥
 गीता बाबु जो गुन नानन देब ओह ।
 नयनन को बरसन करे मुक्ति मुक्ति कल होई ॥ ३ ॥
 सो कहे गुण को गुण करि गुणन भाषि ।
 लक्ष्मी सो बृकुठ सं गारायन अ भाषि ॥ ४ ॥
 उरन गिरी कलास जल तरो खर को धाम ।
 प्रणी करी तब संलजा सबको पूरन काम ॥ ५ ॥

॥ श्लो ॥

आदि—श्रीमते रामानुजाय नमः ॥ अथ गीता साहित्य परमहंस्यो ब्रह्मवास उवाच ॥

के कालोत्पन्न पर रत्नवती किरीटिन से पद धरि के कुमल तें बहिन काल तें उद्योतिष रूपी अँसि को निकालत मर्त्य सी वराहोत्सहित के मिस लै जल्यो रक्षा करै ॥
 इति श्री अहोत्तर विरचितनाथां सहिता वृत्तौ श्री महाराज कुमार अवल सहोदराया सायब कथन नाम अनेकमणिकार्यायः ॥ १०६ ॥ संपूर्णमं शंभुसखे सर्वत्र १८४८ वर्षी कृतौ ॥ आर्यो मतिषु केषु पक्षे द्वितीयार्था रत्नौ त्रयोवर्षे पुण्यां लिखित सीताराम सनहचने श्रीरवि ॥ गौतमिय रामाय केष्यिय वामना रत्नसहित ॥
 विषय—वराहोत्सहितौ नाम् कृत वृद्धसहितौ का भाषा गद्यानवाद ।
 विश्वश्रुतौ—अथ खलित है । कुल ३२८ पर्वो से २६३ पर्वे उपलब्ध है । रत्नना-
 काल का कोई पता नहीं । संभवतः आरभ्य से दिया रहै होगा । जो अध्याप्त है । लिपिकाल
 सर्वत्र १८४८ त्रि० है ।

संख्या २५४. अहोत्ती ज्योतिष (टीका), रत्नपिता—अहोत्ती (?), कागज—दोशी,
 पल—४, आकार—८५ इंच, पत्रिका (प्रतिपत्र)—११, परिमाण (अनुवर्ण)—
 २०, खलित, रूप—माथीन, गद्य, पद्य, लिपि—गार्गी, शक्तिरक्षण—१० रघुवराय द्विवेदी,
 भाषा—भूरेडोह, पोस्ट—सराय मसरोज, जिला—इलाहाबाद ।
 अदि—
 ०: ०: ०: ०: ०: ०:

आवती जमाना सधरी होइती है अहोत्ती पु विवता मति कर मति कर मती पुन साच कहू छि ॥२॥
 ॥ दोहा ॥
 , मासीर फल पीस मास विवती बीमक ।
 गाल वापरी बाल सजती जलहिर प्ययो गय ॥ ३ ॥
 पीस के सहोत्त विवती बीमक पुत्रव की पवन बाज : वादला होवती बार बासोल है
 सजती गध रही जाय ज ॥ ४ ॥
 ०: ०: ०: ०: ०: ०:

अन—व्यक्तिवारी संक्राति होइ ती ते संवाकनी नाम कही जाइ व्यापारी नाम धर्य
 पासु म माने वल धर्यो होइ वल धर्यो सीना पीली बरन संव सोहोती होइ लोक सुधी पावे ॥ ५ ॥
 इति श्रीकविर फल ॥
 शशीसर वारी संक्राति होइ ती तेहती नाम राखती कही जाइ लीस मास सहे गा
 सु पुनी

विषय—छोटी, वर्ण, वार, नखल और संक्राति आदि के संघटन से शंभुसखे फल कथन ।
 विश्वश्रुतौ—अथ खलित है । केवल पाँच पर्वे, संख्या २, ४, ६ और ५४ तथा एक
 विना संख्या के उपलब्ध है ।

संख्या २५५. नलीपाठ्यान, रत्नपिता—अरती मिश्र रामनाथ पंडित (मुद्दा भाष,
 आजमाना), कागज—दोशी, पल—८५, आकार—८५ इंच, पत्रिका (प्रतिपत्र)—१०,
 परिमाण (अनुवर्ण)—३६५, खलित रूप—माथीन (ज्योतिष शरीर), गद्य, पद्य, लिपि—गार्गी,
 शक्तिरक्षण—१० देवराज पंडित, भाषा—गौरी, पोस्ट—सराय, जिला—गार्गीपुर ।

विषय—श्री सुकुंठल नैपथ्य का हिंदी में पद्यानुवाद लिखा गया है ।

पृथः ॥

कृति श्री सरस्वती विषय रामनाथ पंडित लिखिते नवमी पद्यस्य रचनास्यः समाप्तः

शयो न द्विद्वै काले नृपति नव समाप्त जग शयते ।
शानी शानी जस वली नैववत्त नरनाते ॥ १ ॥

॥ दाहा ॥

सुखम कथा हिरे अस्मिताया । कश्चिद् कहे सोई हेम रा... ।
धुंध साहे विस्तार न कीन्हे । स्वल्प कथा नवन की लिखि दीन्हे । २

॥ दाहा ॥

विले वकमक छलित्या पयारकाम अ... १ गाल ।
नैन नीर वरपन नही नी नन जाति वरि जाल १२
हेत रहे दिन दिन रहे विपुव... हेरि नैरे ।
पहे अचरज जल नैन की सोवे सुकति हेरे १५
मन टुक छली वरहे पवली लाल ।
आपु आवाज न निकसली जाली कति जमाल १६
देखी जाणि नव सि... लि टापर महे नन नाम ।

पृथ—

नन की तेज विधाकर नपुव । जस राका सति लिखि मपुव ।

००: ००: ००:

छमसोल नन सम नृपति शयो न द्विद्वै जाते ।
दाता सुखस प्रताप जात कीरति ते अनाथाते ।

॥ दाहा ॥

सोम वस एक राजा मपुव । वीरसेनि नामा जगजपुव ।
जस सागर नागर सुख धामा । वीरसेनि राजा सुस नामा । १७

००: ००: ००:

राम नाथ पंडित नहे रहेई । राम कृपा ते वहे सुख नहेई । १४

००: ००: ००:

आजमानाठ के दलिन अहेई । सुहेत धाम विदित जग कहेई । ११
नाके दलिन महेदेवपारा । तापर राम दयाल कृपाला । १२

००: ००: ००:

नाहि विवाहिक किपुतेम आया । आरथ कथहि कष्टक नहे राया । ८
“उपाख्यान नल” की यह कीन्हे । नाम धुंध की कोइ धरि दीन्हे । ९

००: ००: ००:

है नल कथहि वपान । वेद द्यास महेत धाम । ६
सहेस किरतिन द्वे रवि वहुनपुव । गणपति कृपा परम जग पपुव । ६

००: ००: ००:

बाकहे... रती १६वीं कहे महे ११पुव । १२
बदे गणपति वरन पुनीता । विषम हेरन लिहे पुंर महे गीता ।
आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ १ वींपाई ।

द्वितीय भाग ॥ १ ॥ ...

जी देना ही लीला मम दीपन न दीपति समम १८२१ सीते लीला वही पकी लीला है

पठे विम नार धरन वन बालक मुरी ॥
सीतलक्ष्मीला सी मूरि ...
गाव भवती अवधर धामि धन से आरु लखिम राम ॥
जा नर गावही बाहे नाम । सीते कर हिपु धूकठ ही बाव ॥
... ॥ सीता ॥
पठे विम नार धरन वन बालक मुरी ॥

अन वषा ॥
राम ॥ बावन ॥ वठ ॥ राम । ठो ॥ मयध ॥ कुरे परनाम ॥
कागुन न गि रघु राम । सीता धरन ...
... ॥ सीता ॥
पठे विम नार धरन वन बालक मुरी ॥
... ॥
राम वर । गव । लखिम । धरती । सीता । राम ॥
वठ मास लीले लाल मग । राम लयन सी सीता सेम ॥

॥ वठ ॥

पठे विम नार धरन वन बालक मुरी ॥
... ॥
... ॥
... ॥
पठे विम नार धरन वन बालक मुरी ॥
... ॥
... ॥
... ॥
... ॥

बाहेमसीला ॥
... ॥
... ॥
... ॥
... ॥

लखवट सी आठ ॥
... ॥
... ॥
... ॥

श्री जगदम् कदम् बल माहि जासु विरवास ।
 एहे सल कवि कुल दोगिका कोन्ही भूष निवाहि ॥ १८ ॥
 देरी, सिव विराम अर्जुन ना सुन आरथ माहि ।
 छवपती ना सुन आर दाला सोल निवाहि ॥ १७ ॥
 प्रतापदिय ना लज्ज भा जगदल सुन माहि ।
 जनपालक धलक दुमन धामन कुल के सोल ॥ १६ ॥
 लके प्रथम कुमार भा नाम विरामजात ।
 लेख देवाकर रूपसिध सादग बाल गंधार ॥ १५ ॥
 प्रियापति ना सुन आर मही सुभट रनघोर ।
 गजपाल बहेमन सहिल सर्वन के वर काल ॥ १४ ॥
 सर्वसाल ना लज्ज भा जाचक करल निहेल ।
 दालि पालि गुन मालि हिल आलि धार यान गंधार ॥ १३ ॥
 ना सुन भू पुनि राह लिब महेसिभट , रनघोर ।
 कहे सिध ना सुन आर सुंदर सोलनिधान ॥ १२ ॥
 लसि लन वर उष्य . कुल जसो रब कथान ।
 लके सुन वर पुत्रिस राडसिध बसुधाम ॥ ११ ॥
 लके प्रथम कुमार भू यानसिध बाहि नाम ।
 नेहि सन्मेष खलहे देहे आलिहे रहे न रिष ॥ १० ॥
 लके सुन वर पुत्रि भू नाम सेवनी सिध ।
 छिंहि अमलिखा सो वसे देवरा गान्धाम ॥ ९ ॥
 प्रिया वंद के प्रथम सुन कर्दारु बाहि नाम ।
 गान्धाद को कहे सके सेस सादवा सोडे ॥ ८ ॥
 रविवरुजा पुनि हेरिप्रिया जमअनजा कहे सोडे ।
 जमाना लट पावन परम सुष समहे वसु आम ॥ ७ ॥
 बाह पदवा पाडे लिन कोन अमलिखा धाम ।
 लाहि सहदेव पुत्रि भू प्रीणीवद भू राव ॥
 अस गव के वर भू भू सालिवाहे नेहि नाव ।
 दोस धूम प्रगटन मही लिसि वासर चहु पास ॥
 धरे सिधर चहु फेरि जाहे सिधन कर निवास ।
 केदनी केतिक आदि वन चहुदिसि परिन वारि ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

सिस सीस गज सुख कर्न जर्न । निरिजाल गयोस स..... ॥
 उ..... विन । उर ध्यान धून केतव कविम ॥
 सुम कवन कुकुम काए वर । इष सुक मई सुष माल गार ॥

॥ दोटक छंद ॥

आदि.....अरनीब लिखते ॥

सौर मय वृष्य रस जानी । कुतुम सक्त मकरंद वधानी ॥
 दोगी द्विद्विक पुनि दंडी दंडी । एहि प्रकार भाषी कवि सौंडी ॥
 जगल जमल जगु दंड वधानी । जगु निरुपन निरुधि डी विरज जानी ॥
 मात्य कदिस अक कवि माना । दाम गुनवती नाम वधानी ॥
 हे कवि जग एहे सौर निरंदीरे । बाहेहे दंडव वरन मय बाँरे ॥
 सौर विन एहे मातव भांडी । विरंदे वरन वृष्य वधानी ॥

शत—

बाँरे कारज की साधना विरहे विरकलना दंडी ।
 सनि मात्य मं विरिह सी करव विसेया सौंडी ॥ २८४ ॥

॥ दंडी ॥

॥ अथ विसेया अलकार लटन ॥

कल के शीन तही तक्तिक पति सक्तहि ते दंडि सेव विरजयो ।
 आइ गडु ललना पलना दिगु ष वीजना तहे नाल बलायो ।
 प्रम अनव समुहे वदयो हेसि जाजनते निन वीछि छियायो ।
 माल खवारति लालन ही मय बाल रसाल मही छवि छियायो ॥ २४५ ॥

॥ सर्वथा ॥

अथ विरयीयाभाव अलकार मध्या आत्मसात्तिका के उदाहरन ॥

वरनन होहि विरिये जाहे उहे विरयीयाभाव ।
 प्रथमहि प्रथमि मल कविजन कीन प्रकास ॥ २८६ ॥

॥ अथ विरयीयाभाव लटन ॥

गवन कीन निज पति मयन अली छकेलति ताहि ।
 मंगु मल मयद वर लिहे महेवल जाहि ॥ २८७ ॥

॥ दंडी ॥

नवल सवनी लील लीजन विमाल जाके उरज माल मूय सीमित मयक ।
 आइ वृजवाल बाल वीन निरु शीन काल चलहे गीपाल बाल वृठे परजक ।
 प्रथम जवलि जाति प्रीतम सनेहे पुरे समुक्त कलस वड पाछे किम सक ।
 “मात्य” अनल भाषयो रघु निधान रंगी परतिहे विदाल कीनहे दंडी विरिय सक ॥ २८४ ॥

॥ वनाक्षरी लट ॥

मध्य—अथ भाव अभाव आत्मसात्तिका के उदाहरन ॥

हुन सीगी मरुप सया वीधिल कविन समाल ।
 सनि मात्य एहे परिहेरयो कहल सकल कविदाल ॥ २८८ ॥
 पूग वरियर आंधर मूलक नयन कील निज ।
 सनि मात्य एहे आनि सब दूषन कहल कविन ॥ २८९ ॥

॥ अथ कविन दूषन वर्नन ॥

प्रथमहि सनकविनी कही सी सब मयव मूम ॥ २९० ॥
 अरुन अलिख सिन पीन पुनि मिथिल नीन सु मूम ।
 सोरठ छपु दंडी सी सब समुसुहे विरत ॥ २९० ॥
 अलकार रस होवजाल भाव अनेक कविन ।
 दूषन मूषन गाएका समुसुहे चवुर सुजान ॥ २९१ ॥
 छद वीपाई जाति सब सबके वर्न प्रमान ।

श्री गानेश नमस्ते भवती मम सहिते । गुरे गीतद प नमस्ते ॥
 प्रथमी वृद्धी गुरे कृ पव । ज्ञानी उपदेश ज्ञानी की वृद्धी ॥

शादि—

संख्या २५८. ३ गये पुरान, रक्षयिता—श्रीम, कामाज—द्वैती, पक्ष—३१, आकार—
 ८१ \times ३३ इंच, पत्रिका (प्रतिपत्र)—१८, परिमाण (अर्धपत्र)—३३, पृष्ठी, रूप—श्रीचीन
 (जीर्णश्रीणी), पक्ष, लिपि—कृष्णी, रचनाकाल—सं० १५५० वि०, विनिष्काल—सं० १७७७
 वि०, प्राणस्थान—१० राम अनद विवादि, श्रीम—दरवृष्णपुर, पोट—भरवादि, लिखा—इलाहाबाद-

- १ अध्याय—कविन दीप वयान—पक्ष १ से ४ तक
- २ अध्याय—देवता, फलाफल, अँठ, सात्र, टोट लिक्कण आदि वयान—पक्ष ४ से ११ तक
- ३ अध्याय—हृदुराज, राजा, रानी वयान—पक्ष ११ से १९ तक
- ४ अध्याय—राजकुमार, पुरोहित, सेनापति और आदि वयान—पक्ष १९ से २७ तक
- ५ अध्याय—महन, भूदकरि वयान—पक्ष २७ से ३४ तक
- ६ अध्याय—अतिशयार्थिक, उपमा, किलकिल टार वयान—पक्ष ३४ से ४३ तक
- ७ अध्याय—नलजिह वयान—पक्ष ४३ से ४९ तक
- ८ अध्याय—महपद, नलजिह, सर्वश्रमा, सर्वश्रमण वसन, सर्व श्रुगार, अनराम और अध
- ९ अध्याय—वस्तुश्री के नाम वयान—पक्ष ४९ से ७३ तक ॥

शुभ से निम्नलिखित नौ अध्याय हैं —

विषय—प्राण, अँठ, सत्य, देहा, लिक्कण, आवर्त, सीत, कठिन, सुख, दुःख, ब्रह्म, ब्रह्म, वयु, अरुंराज, राजा, रानी, कुमार, पुरोहित, सेनापति, आदि, अतिशयार्थिक, उपमा अलंकार, किलकिल टार, किलकिल टार, नलजिह टार, नलजिह, श्रुगार, राजा अनराम और अध विधान आदि विषयों का वयान किया गया है ।

राम..... राम..... राम..... राम..... राम.....

जो प्रति देया सो लिपा और वृथ नहि मोहि ।
 लखेदर श्री सारदा विन करन सं जोहि ॥ १ ॥
 शंभु समान कौन है छेया पक्ष कह सोइ ।
 वृषवन सो एहे विन करि दोष न दोऊ कोइ ॥ २ ॥
 समल एक आठ सए नव सोल कहेइ ।
 श्रीमवार वी वषाविस अंक सहैना आइ ॥ ३ ॥

॥ दौहा ॥

इति श्री मम विविध विविध सन कविकुल दीपिकाया श्री मारय सिंह विरचितया शुभ
 समान संमगुहे सुमर । कवित उपम भूद गानाम देवता फलाफल अँठ सात्र वन देह अको
 आवर्त सीतिरे कठिन सुप दुष बचल वन हृदुराज श्री राजारानी राजकुमार शोहित सेनापति
 आदि क महन भूदवर्क जूक और अतिशयो उपमा अलंकार किलकिल टार वसन नलजिह आदि
 वनी केस नाक मुक्ता लीचन मूष पद नलजिह सर्व श्री श्रम वसन सर्व श्रुगार राज अनराम
 अध विधान नाम निधान और वर्तनी नाम नौमी अध्याय है जो प्रति देया सो लिपा मम दीप ना ॥

जो प्रति देया सो लिपा और वृथ नहि मोहि ।
 लखेदर श्री सारदा विन करन प्रनाम ।
 दाहि दाहि सापल पुन्है करहि छिहै मम धाम ॥ ६७ ॥
 ॥ दौहा ॥

कहे सीम पुनि चामो प्रसन दीनरथान ।
प्रल कल गही बख कोपल जन जाल ॥

०: ०: ०:
 बाळु सवरुं...धी जन सुरप के ने न सीव ॥
 मज अथ वनी पालहे जनी कोरु ह्रीरु यरीव ।
 वरु वय कोरी अवे करुड । रोड प्रीती कर मन नरु ॥
 कहे वरु कळु कथ सुभव । मरय कथ उवावे गऊ ॥
 तैरी कुल सीम वरीआरा । वरी वरु प्रसरा ॥
 मन मलगा वीर मन दीरु । तव तेनरु सय गावरु वीरु ॥
 गायल नीरलन पर वीरु । अनी प्रवड नीक सुवीरु ॥
 जनी के कपथ करन कुवेर । मरु मरुही कनी नेम प्रवड ॥
 नय अमर सय वरु कहे । वसुक इव देव नीम नरी ॥
 कवील नरुवी मं उतपनी । कसन नय कोन सी जनी ॥
 नसे कवी दीसन को वरी । जी कवी अपन गाव न नरु ॥
 प्रवलि कल सी पार प्रलठय देवी गग ॥
 वीर पठनी याली जेही के गारी यरणा ।
 तैरी सगल मनीक देरुनी । प्रलठक रुप अदीन यनी ॥
 नकर पुरय कहे वीवर । जकर मजन सय सभरा ॥
 सुवल नीळ देन वरुन सी दीरु । कनी गव करुव कोरु ॥
 अनी उरुही मं अनसन । मरुनी कोरु सन ॥
 तव वसुही जोगनी मन असे । जकरु कोरु वरुपुन म वसे ॥
 ०: ०: ०:
 पुहुमी धम प्रन एक देवा । वस वीग नीमल रू ॥
 जद्व भय कवी मर वीवर । तहे वसन हे काम सुअर ॥
 कवन नय कंती ठाऊ । कल देस काम सी गाऊ ॥
 सावन सुकुला सनीमी आरु । उवाव कथा "नीम" सुगाड ॥
 सवल पदहे सं पवास जव मरुव । दुसुप नम सवल जला गाव ॥
 कोसन वनी कळु गाव मरय कथ वीवर ॥
 जेहेरे कहे आंगा कनी रीपुन व परे परी ।
 कसे सजगी केहे जनी । सत्य ववन कहे सुमगी ॥
 सी सव 'सीमो' जेही समरुड । घाटे धम पाप छे आडे ॥
 कवन धप उरुससी कवडे । कसे जगी ही परी गगी ॥
 कोसन कस कोरी हेरु । कसे पडवन सीरु उवरी ॥
 तैरी पळु सवरे गम नरी । करु सहेन जग पर गरी ॥
 सोरुद आरु गास वरु दीरु । जी मं कथ अरुनन कोरु ।
 मध कथा उवावे पवा कुरुमी रउ ॥
 सुमीरे चामो गतपनी कुळु सुमनी गनी पऊ ।
 ०: ०: ०:
 सीगन हेरन सीव सकरु सीहे । तैरी नरु वरु सीनपरु सीहे ॥
 नवन मरुपन गतपनी देवा । सव सुमन के वरी पागा ॥

हैं श्री महेश्वर्य्य इति... सरन सुंदरन सुभवसु सुभरसु ॥ संवन १७७७
 संवन सुवनसरे मीती जठ वदी पवनिक पोथी उत्तर नरुन ए... म... जो हेष सो
 लीष मम वीष न दीव... १... १... १...

विषय—महाभारतार्वात जयवे कथा का वृत्तन किया गया है ।

रचनकाल

१५
५०

संवन पद्य हे सं पवसे जव भएव । ईसप नम संवन वली गयेव ॥
 संवन सुकुल सलीनी आइ । जगवे कथ 'सोम' सुनाइ ॥

विशेष सातव्य—शय पूणे हे, पर अत्यंत जगोचित्वा म । यह हे पवकार रूप मं लिखा
 गया है । रचनकाल संवत् १५५० वि० है और लिपिकाल संवत् १७७७ वि० ।

सख्या २५६. हेरि लीला सीलहे कला, रचयिता—श्रीम, कानज—इंगी, पद्य—१००,
 शकार—६५५ × ५५५ इंच, पत्रिका (प्रतिपद्य)—१७, परिमाण (अनुपद्य)—१७००, पूणे,
 रूप—गोत्री, पद्य, लिपि—गोत्री, रचनकाल—संवत् १५४१ वि०, लिपिकाल—संवत्

१७२६ वि०, प्रातिपद्यान—सप्तदश विही साहित्य संमेलन, ययाग ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री सरसु नमः ॥ श्री गुरुवर्कमलेभ्यो नमः ॥
 श्रीकृत्याय नमः सुभय गहे कतरौ ।

म पवय गोवरयो वासदेव नमस्सुतेः ॥ १ ॥

॥ पूरव जल ॥

प्रथम खलक पावे करी कीछी केल्या प्रथाम ।

बोहन रहील वायो बोष गार्स हेरी गूणो शम ॥ ६ ॥

॥ बोपडे ॥

सुष लीछी बोष वेली समन्य । यो नही गीधव गूणो गान ॥
 कथा शूणे नही को तरसुं कथाः । वक्ष नयोले कोटर कथा ॥ ६ ॥

दोबो कल नर मरला नहे । बालं चयोन मं नही येहे ॥
 हेरी कथा जे आदर नही । पुष ख्याणु वे कहिए सही ॥

पद्य—गीतरंग वसन वेरठी

अनद एक अशी नवीर वंदावन मी आर्य ।
 वष वजावे वलिनी हीणु छिदि नावे नार्य ॥ ३५ ॥
 वंदावन गोपी नाबेरि हीणु एधे रावे राम ।
 राम मधूर स्वर अलवैरि गाए हेरी बीलास ॥
 सुंदरी शवन व पाव नाहि रंग मरव वल्ले राम ॥ ३६ ॥
 पापन्य वं व वीनली नयुरि । सहे सामल वनः ।

शत—

सक वीरय वीवेक वीवार । सम्यक पाया पहीली स्यारः ॥
 सोल कला समरस ए कथा । सीहे स्वजन वयो मन यथा ॥ ३ ॥
 आसी मास नयो पुष्यमा । जाल्य करव ऊया वंदमा ॥
 सोल कला यानी हेरती कलक । एहे श्रीकृत्या कथा संकलक ॥ ७ ॥

गणनायक साहि काल दाय। केस छीरि वदी व्रम पया ॥
 लेव देवी अब नाम वुमार। अघुर जलिन मदिपवुर मार ॥
 सोम बुमिके कीवक मार। अरुण सुमिर कालवुर मार ॥
 राम बुमिर रघुन करे मार। मरुण काल मार ॥

॥ चौपाई ॥

नाम लेन गनेस की होल सब की नाम ॥
 विषम विनासन मयहेरन होल वृषी परनास ॥

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री पौषी चकरवहे लोचने ॥

राजराज सिंह जी, राम-जगजुट, पाट-मरुट, जाला-गजोपुर ।
 पूषी, रूप-शशीन, पव, ललिप-गारी, लिपिकाल-सवव १६०८, शोभनपान-२०
 १६, शकार-१९४ × ८ इव, पत्त (शक्तिपत्र) -२६, पतिशाय (मरुट) -१६४,
 संख्या २६०. बकवहे, रविपुत्रा-श्रीमसन, काजज-श्रीलिक मंडा मरुट, पव-

सबल १५ वदनी वीस। वद एक उपरय चालीस ॥
 उनस ऊनरायण वीशाय। रवे वसनः सकाय भूष ॥ ८ ॥
 पय मवदहन मास वडेसाय। तीथी सनमी अजआली पय ॥
 गव पीन पूष कपी गेवार। अणुज कणे शीम लान अपार ॥ ९ ॥

रचनाकाल

(कलाश्री) म हे ।

विषय—भागवत का विषय संक्षेप में प्रयोग किया गया है । प्रथम भाग है अष्टावक्र ।
 बाकी पूषी आदि अष्टावक्र प्रमाण लघुलि । एव पठनाथ ॥ श्रीरु ॥ ६ ॥

सबल १७२ वद अवन वद पवनी शोके वारणोपी वारणय । श्री लाली पीव
 पादश पुस्तक इटा लोचन लिपन मया । पदी श्रुमशुभ या मम दोषी न दोषते ॥ ३ ॥

००: ००: ००:

रमादा: शीम मवव । श्री कल्याणमरुट ।

इती श्री हेरी लीला सोल कला श्रीम वीरचिन्ते। सोल कला सकल संशुलिनि ॥ १० ॥

श्रीरु ॥ १६ ॥

इती भागवत रचनक्रमणी रमणी कला । शान्तिना प्रसादन । श्रीवनासन

बाह्यो लो प्रसादे कटी । की धी कथा सतीती हेरी ॥ १८ ॥

००: ००: ००:

हेरी लीला सोल कला नाम । वीर्यो मक कटी वीशाम ॥ १ ॥

सतीत्य समस्त वडेणुव लोणी । कथा अनोपम श्रीशो यणी ॥

अनय गणेशोशिन ईश केदार । गीत्यद रचनी मक सापार ॥ १० ॥

सोध्य शिव माधव मरुवनी । वदव श्री कदम यणी ॥

गडपीन पूष कपी गेवार । अणुज कणे शीम लान अपार ॥ ९ ॥

पय मवदहनः मास वडेसाय । तीथी सनमी अजआली पय ॥

उनस ऊनरायण वीशाय । रवे वसनः सकाय भूष ॥ ८ ॥
 सबल १५ वदनी वीस । वद एक उपरय चालीस ॥

भूकला ज्ञान नरेस हेरे हिय उपर पाप धरयो नब ।
 मूरति माधव को उर टांग रहेई हठिके नरनाथक सो जब ।
 भूत— ॥ सवैया ॥

अलि मलि मरु सुरेस गहि सोसम हेरे करहुँ ॥
 रचलि सु अदभुत रूप कृपा जापर अनेसरहुँ ।
 तेसे सुरपति सादरी रचल सु अदभुत रूप ॥
 बसे से सभार की रचना रचल अनाप ।
 ॥ कुंडलिया ॥

०: ०: ०:

 ॥ सोल जीवन गण सो सब कयो कहि जाल ॥

 जवनी तिहि खिणियाल की कहे सुकवि से सा ।
 ०: ०: ०:
 गुन पू ज ल हे अवतरयो गिबद चद सुवाल ॥
 अलि पुनीत गुणावली पुरी रचि र सब काल ।
 सुरीर सुकुल लयावली कौही मंथ प्रकास ॥
 नम वसु विषु वरष गणिए सुप्रद कारिण मास ।
 आदि.....

संख्या २६१. माधव विनास या माधवतिल काम कदला, रचयिता—श्रीम, काला—
 दश्या, पल—५७, आकार—६ १/२ × ७ इंच, पतिका (प्रतिफल)—१२, परिमाण (अर्ग-
 रूपा) १६७—१६७, बलि, रूप—माथीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८००
 वि० (संभव), प्राविस्थान—केरल अक्षयप्रवाण सिंह, ग्राम—साहिपुर (नीलवा), पाल-
 देविया वास, जिला—इलाहाबाद ।

विषय—महाभारत के अतर्गत चक्युह की लडाई का वर्णन ।

०: ०: ०:

वीरनी मरी दूटा अछर लेव सब जरी ॥ संवल १६०७ बंन सुदि २ सुकर बार के रास ॥
 रति श्री पायी चक्रवर्ते सुपुणु जा देवा सो लीया मम दोष न दियते ॥ पंडित जन सो
 श्रीमसेन कविला कहे दौण्डालीक सो जाय ॥
 चक्रवर्ते कथा जी सुन एक चीन जाय ।
 ॥ दोहा ॥

जा कल कोहे तीरथ केवारा । चक्रवर्ते सुने वेवहेरा ॥
 जाइ सुन मन है वै वीरारी । जन् दरसन अथ बल मुरारी ॥
 परसारी सुन जा मन चीन जाइ । सुनलहि कथा सीछ होय जाइ ॥
 गव धन माहे जा कहे वृकाइ । परु के रोग ली सब नसाइ ॥
 गर के रोग जा कहे होइ । सुनलहि कथा सुकल तेहि होइ ॥

भूत— ॥ चौपाई ॥

दोइ कर चरन सनागी मोहि सुमति मति है ।
 कंठ मारे निवासहि जग जननी जस लेहि ॥
 ॥ दोहा ॥

आपस की फँट हीरे में सारे हिरेबन टूट टूटती हैं जब रावन अनिल अति करे है ।
 धृतिगो पनाल बलि बधर है टूटती है रमा अतिमान विस धरे है ।
 टूटती शिशुपाल बसिदेव जं सी धीरे कर टूटती है महीषा दैत्य अरुस बरे है ।
 रामकर डूबन है टूटती क्या महीषा बाण टूटी पानसाही शिवराज संग बरे है ॥२६॥

शत—

अनी माई आसमान आसमान आनजा की आनल शिखारि के शूरि मय जाल है ।
 शोमन की शोनी शोनीराल कंठी शालि शूजा शारी शूमिआर के उवारेन की खाल है ।
 आबली समानि शूमि शानिनी की अरार शूमन अरलख अरल शूबाल है ।
 शिमी की अडार शूर असाई की अवन साते मंग भरे माल जयसिंह शूबपाल है ॥२॥

जयपुर के महाराज जयसिंह की प्रशंसा
 केते रज राजा मंग पार पानसाहेन सी पार पानसाहे मंग मंग के परने सी ॥१॥
 अब अवरालव पायी रामसिंह जं सी शोरी दिन दिन पं है करम के माने सी ।
 "शूमन" थी पायी जहीनार महसिंह जं सी आहजही पायी जयसिंह जग जाले सी ।
 अकबर आयी आबल के समय जं सी बहुरि जाल सिंह मही मरदाने सी ।
 आदि—जयपुर के महाराज रामसिंह की प्रशंसा ।

संख्या २६३. महिकावि शूमण के कुछ नवीन छंद, रचयिता—शूमण, कालज—
 आधुनिक खलदर, पद्य—१३, आकार—८ × ६ १/२ इंच, पंक्ति (प्रतिपद्य)—१७, परिमाण
 (अर्धपद्य)—११०, पंक्ति, रूप—शालीन, पद्य, लिपि—नागरी, शक्तिस्थान—शूमण
 उत्कललय (प्राधिक मसह), काशी नागरीप्रामाणिकी समा, वाराणसी ।

विषय—शूमण का योग किथा गया है ।

श्रीवचकस सीव सीमवसी कथ सामानि ॥
 वीरी सबत १८२२ ॥ कं मल समं नम माली अषट वही तेरसी १३ वरी वृष वरकी ली०
 देवी श्री शोमल पुरन सुंदरन समाल पंडील जन सी वीनली सोरी टूट अछर सब लई
 लन कर के राजा सुकेशु अण । एते राज जखल अण । लीककहे कोसके ॥
 :०: :०: :०:
 पानी के मही डूपानी अण । मही डूपानी के वीकाम देव अण ।
 माली के करु अण ॥ करु के महीपानी अण ॥ मही पानी के पानी अण ।
 राज वीकाम अण ॥ राज वीकामजाल अण ॥ वीकामजाल के माली अण ।

शत—

मालीसाव देई स्वामी कहै "शूमाल" कर जोरि ॥
 कर्मा करुई वुम सामी वीनली सुनई हेमादि ।
 दीन दशाल वुम बाल कहेड । अपने जन कहे डीहै सहेड ॥
 कौपा करुई वुम सांरापानी । नीरमल अछर कही वषानी ॥
 कलनामं पुनहे शंनरजानी । माली साव हे गडगामनी ॥
 सुमांरी गुर गोवई कर पाव । अगम अपार जही कर नाव ॥
 वानी अदी अलष करार । सुमांरी नाम होए नीतर ॥

श्री शोमल पुरन ॥ आदि—श्री शूमण पुरन ॥ श्री शोमल अणनहे ॥ श्री सावरी शूमनीअणनम ॥

—अपने

करे हुए करणो फिर करे करणो है नानमान ॥
मिनिवी यही है वान नहि ह्य मंत्र अज्ञान ॥

॥ करण रस लजन ॥

अकथ कथा है बाही विपल विधा है रही नकु न तथा है वीर पत्रिक वा पत्र क ॥३७॥
रथ के चढे लक ह्ये आयु डहे आया लगे रहिन है शोभावाय प्रान निम अय क ॥
बुन विन मं न डहन आवन न कहे हिर वरि क विडेन वन मण है अय क ॥
जवन गये है सयलं न नीद ननन सं नीवन है विन रंन वंन नन गय क ॥

॥ यथा ॥

सी प्रवास विद्य जानिषी जानन रसिक नरेम ॥ ३६ ॥
किहं काज के हेन सी गयी पीव परदेस ॥

॥ प्रवाल लजन ॥

गहि मथमा कहल है श्री है रसिक मुजान ॥ ३६ ॥
पति हिन कोन हिन फट अनहिन कोन मान ॥

॥ मथमा लजन ॥

रावरी सलीनी रूप देव न अथली सेरी पलीयली वं उथली प्यली अधिया ॥ ३७ ॥
प्रान आध प्रीतम मुजान गुम भरे गेहे वनी शोला शकर वीर वप रीयो ॥
रही धरि ध्यान सी विद्याल कहे न जाहि लाग लाग गीत आन आन क न सलीयो ॥
विनवन सीहं कीद वारी आन वीने डहे पवन लागे पन एकी यी जलियो ॥

—यथा

गही सी सब कहल है गारि उलयी नाम ॥ ३९ ॥
पिय के हिन सी हिन सवा अनहिन सी गहि काम ॥

॥ उलयी लजन ॥

सूरज ली परनाथ लहे सबही जय दीप ॥ ५ ॥
निनकी पुल प्रसिद्ध सी सूरज मलन सहीप ॥
मयरी राजधानी लहे कोनी राज सुदेस ॥ ४ ॥
प्रान मय लहि वय मं श्री वदेनस नरेस ॥
वज लीला कोनी प्रथम लीने सुव क सज ॥ ३ ॥
लहे लीनी अवनार प्रमं करे सब सुर काज ॥
जहकुल मं अवनार सी ली है परहे (२) पीर ॥ २ ॥
बाह्यादिक कोनी विनय शरीरविष क लीर ॥
ली विहिर करि कुल क वरण सरीरहे निन ॥ १ ॥
ए मन मयकर रसिक मूं ली चाहे सुव निन ॥

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सुमन प्रकाश लिख्यते ॥

गणेशोपनिषद्गी सथा (गौतम सधे), काशी ।
६१०, श्याम, रूप—प्रधान, पत्र, लिपि—गणेशी प्रतिक्रान—श्यामभाषा पुस्तकालय,
पत्र—५०, आकार—८ ५/४ × ५ इंच, पृष्ठा (प्रतिपत्र)—१८, पृष्ठासंख्या (अनुसूचक)—
संख्या ३६४. सुमनप्रकाश, रचयिता—श्रीमानाथ (मल्लभट्ट ?), प्रकाशक—श्रीमं,
कं आश्रित श् । प्रस्तुत कवित्त गणेश प्राल डी है । "गण" मं मं प्रकाशित श्री डी मुक है ।
विशेष शोध—रचनाकार श्रीर लिफकान नहीं विण है । रचयिता मयण है श्री निवासी

लक्ष्मी है असाध जब उभरि बाहर उठे सोर करे टरे गहरी ।
 पौव हो पौव बालिक रटे सोस लन की पठे कोकिलकुंठक सुनि मई बहरी ।
 सुनी है टरे जब मदन जोरयो धरयो विरह की नदी जहो बहल गहरी ।
 धरकें हियो और करके भुजा सोइ ललके नन अब कहेो ठहरी ।
 लक्ष्मी जो मनन अब स्थान गहरी हियो सोवरी देहे अजहै न लहरी ॥ १ ॥
 लक्ष्मी है सावन लव लाल सरवर सरे दामिनी दमकें इंद गहरी ।
 पौव परदेस सें सेज सुनी परी सुनल धनधारे जोवन लहरी ।
 जाल अहिर पर पौर जान गहरी भूलि कसे गयो विरह दहरी ।

आदि—वारेभासी.....
 प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

संख्या २३६. वारहेभासी, रचयिता—मान जी, कानज—दूशी, पव—५, आकार—
 ६ × ५ इंच, पत्रिका (प्रतिपत्र)—१०, परिमाण (अर्गट्रिप)—५०, पृष्ठी, रूप—शारीर,
 पद्य, लिपि—नागरी, शिल्पकाल—शार्दूभाषा पुस्तकालय (शालिक समूह), काशी नगरी-

काल भी अवाल है ।

विषय सामान्य—ग्रथ के दो पर्व सख्या १८ और २३ गहरी है । रचनाकाल और लिपि-
 विषय—शुभार विषय वर्णन ।

—अपूर्ण

माघ रत्न आयी यह सकल सवादिन की वन उपवन छा वाला.....

माघ मास यथा

रून विष विरघ दूरेइ दल दोरि है एक छन बस है विरह निधान की ।
 सोरे सोरे सब गले गले लाल लालि जाई सरस सवाव धन धाम की ।
 कसके विदेस कु गवन पूसै करियन है कसनी न सखी परे बयोई एक जाम की ।
 मजन रसाल बजराल विन जानि परे पौस नाहि आयो है जसूस यह काम को ॥ २० ॥

अन—

आयो यह वन विन वन ले चवुर विन विहू और चाह सो चलन पौन मंद मंद ।
 फले वन उपवन सतिना सरस फली सहज सुवाल फलि अलि अविद ।
 मजन मरल फले फलो है विहंग वू द फले अलि ग जरस कं पान मकरद ।
 फलि फिर खाल खाल बालगन फले फिरे गाइ गाइ गोऊल सें नद ॥ ३ ॥

वैल मास यथा

प्रथम वैल की आदि के विद्युराई विन आइ ।
 यही कसकी आदि सें कहियन सवादि सराहि ॥ १ ॥

आदि—अथ वारामारयो

प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

संख्या २६५. वारामासी, रचयिता—मजन, कानज—दूशी, पव—६, आकार—
 ५ इंच × ६ इंच, पत्रिका (प्रतिपत्र)—१२, परिमाण (अर्गट्रिप)—७२, लिपि, रूप—शारीर,
 पद्य, लिपि—नागरी, शिल्पकाल—शार्दूभाषा पुस्तकालय (शालिक समूह), काशी नगरी-

विषय सामान्य—ग्रथ अपूर्ण है । इसके अंत के कुछ पर्व नष्ट हो गए हैं ।

विषय—इसमें रस, गणिका मंद और काव्यांग आदि वर्णित है ।

कहेल स्वकीया सील स लकी पति वडेपग ॥ ४ ॥
 लजवती निधु दिन पति के अमरग ।

आदि—(१ स्वकीया) लजन दोहो

(दाता—प० प्रसिद्धिधर जी द्विवेदी, ग्राम—अजगरी, पोस्ट—मदिपार, जिला—अजमेर) ।
 पल—१९, आकार—६३ × ४३, पति (प्रतिपठ)—२६, परिमाण (अर्द्धप)—५०, पृष्ठी, खडल, रूप—ग्रामी, गद्य, लिपि—नागरी, शक्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, फल—१९, आकार—६३ × ४३, पति (प्रतिपठ)—५, परिमाण (अर्द्धप)—१४२, श्लोका, रचयिता—मदिराम, काल—३६,

विषय—गायिका शेर अलकार वणन ।

शेर कही गेय कथा है याल प्रसिद्ध वणन गयो । ली
 के लिये राखे आठो वील है सो पहल वलि गयो अथवा इनसे गायका शेर है सोल न कहे आठो
 किया गाल । १ ॥ प्रसिद्ध वं विधि सिद्ध है ए अजगरी मूळ कहैगे । कहै रजल के नाम
 है । लिखिक । नाम के याल और अथु आपु सील गीपाल जी गवार अथे राखे सो विधीग
 याल कर और गद्य ली गद्य सूचना अर्थ, पहली सूचना बाहिरे । पीछे उदाहरता इहा उलट सुनट
 दान वने । कथ वच्छ सो देखा नेरे नेल वे सिधु सुक गये । पर नेरे रिपुन को रानी रोई
 शन—मह अरुक्त अर्थ । उदाहरा के अर्थ यार्क शेर । उदाहरा से संघति वने । यार्क

विषय है ॥ २ ॥

और करिखे को बरु और हो ठार करे वह हो मध्याधारा है बीज जावक पति स सो लाल माल स
 होय मध्याधारा गायका, रंजि गुम जागे आलस हमारे आग से छाया । हमारी शेर । और
 अमगलि अलकार प्रकार । पहली शेर । कारन और जगो होय कारज और जग

मध्य—पृ—२१

लजन ये सुंदर है करतार जी कन्हिदर रतिबे रोवयो व अलकार विना सो मान पावे ।
 रीति सो । २ ॥ कविता केशी है वरन छद को चौथो बाटी । वरन जो अक्षर लक्षण जो लक्ष
 अंक १ एक २ प्रति क्षयो करी ३ थारे क्रम सो जो अक्षर ली क्रम वे कही हो अलकार
 कक कविल के प्रथम जानिये । पीछे एक के अंक जानिये ।

आदि—अथ कठामरन की टीका लिखने मदिराम जी कुन ॥

कंकरीली, हिं व० ६१, पृ० स० ७ ।

रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, शक्तिस्थान—श्री सरस्वती अक्षर, श्री विद्या विभाग,
 आकार—६३ × ४३, पति (प्रतिपठ)—२६, परिमाण (अर्द्धप)—५०, पृष्ठी, श्लोका,
 सख्या २६६, कठामरन टीका, रचयिता—मदिराम, काल—३६,

विषय—गायिका शेर की स्तुति ।

—पूरा प्रतिनिधि

०: ०: ०:
 दास महेकमनी सरन राख प्रथ कथका कहेल युकारी ॥ गीवद० ॥
 राम नाम मन विमल वारी धर वरनी ना जान विचारी ।
 वरन रंज परमल पद पकल अणु सीला वे नारी ॥ गीवद० ॥
 सेवही बेस सक कमलामन पनी गीरीरज कुमारी ।
 मन व्यापक हरी अलप गीवद नाम दीरजन स्वामी ॥ गीवद० ॥
 अभिगती मन महेन मरनी अर्गन अर्गन अर्गनामी ।

श्री पर प्रख श्रीज देव जनक आनंदमय । राधा देवी सी जगत सुक विजय देवकी ॥३८॥

शत—छंद मीरठ ॥

हैरि विन रूप क्या मम योवन । विफल सकल अंगारिनि जो जन ॥ ३ ॥
हैम मतिबल सखीजग वचननि । इहे वन आइ ठगी हैरि रचननि ।
श्याधरि विव चहिल च्यां दरसै । अग आग आसीविष परसै ॥
वचननि आगम जहिन सबाधानिह परिनाप प्रकरमनि राधा श्याधरि विव
मय—पृ० १७ अथ विप्रलया नामका वधते ॥

सुख हेतु लं निज हेतु सं गहे गवन कीजे यथार्थ ॥ १ ॥
इहे कथ्यु बालक श्रीव है वधमार्जुन निज सत्य लं ॥
नहु जपरि तिमराबलि निशा चहु और कजल भविनी ।
नव जलद भेदर गगन धनवन हंसन स्थामा भविनी ।

आदि—श्री राधा बलनाथ नमः ॥ अथ हैरिनील छंद ॥

—श्री सरस्वती अहार, श्री विद्या विभामा, कांकारोली, हिं० व० १०३६, ४, पुं० सं० ४ ।
पृथि, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, तिपिकाल—सं० १०३६ (सथवल), प्रातिपद्यना
१३, आकार—८। × ३। इष, पक्ति (प्रतिपद)—२०, पदिसाया (अर्द्धपद)—३०,
संख्या २७१. गीतगीतवद अथाप पद्यानुवाद, रचयिता—शारदाज संश्रुतनाथ, पद्य—

विषय—गीतिविषयक दंडे, कविता श्रृंर छप्य आदि का संग्रह ।
सर्व १८२६ एडि १ लीजल मयरा वान नीतिबलास संश्रुतसं ॥
दास वरयो देयो कौ सरयो प्रथ वार वार आप अल राखी क्या सी री रज मौल सी ॥३॥
नद आनंद खली दाले बजवासी सब देव नरेस सेवा प्रस अर बोल सी ।
सदन मौल राजा देव देवन नरेस बली सुलल है पवनो माहो मगल होबोर सी ।
आनद उभा सी उठरल उठहे लीधे गोपी संग माल बाल बालन के लील सी ॥

शत— ॥ कविता ॥

नाले मर्नल जगम यक्ष बल शीविल मन सं डरी ॥ १७ ॥
बुरे ध्याहे अर प्रीत ये जगक नर लिनसी करो ।
सुंदर नाम प्रसिध होय कर निरु जानो ।
गरी ते प्रसिध होय सी निरु मानो ।
माता ते प्रसिध होय की छटी कहीय ।
पुला नाम प्रसिध होय की पुल रहीय ।

॥ छंद ॥ १३ ॥

सुख संफल आनद सं सेवा रहै धर रिष ॥
जी नर अपन ते मौल होय प्रसिध ।

मय—पृ० ७ दोहा ॥

दावान विन वरयो धरे वृ देया बानी सेवा ॥ १ ॥
नदेव सकल वरयो न रहे देव रूप दीवु देवा ॥
सकल श्रेष्ठ सुख करयो देव द्यायु जल अल ।
श्री बलनाथ के वरयो जहि गोपीनाथ है विठल ।
संस आद है देव रहै वरयो न के वस है ।
श्री गोपी जन देव नाथ प्रथ सकल सिधकर ।

॥ छप्य ॥

आदि—श्री कल्याण नमः ॥ अथ नीति विनास लीजते ।

ककोर सिध मनकठ कहै कोर प्रेम अलि गुट ।
अंस हैम बाजिन विधी करि राघुव संवृष्ट ।

॥ दही ॥

ककोर सिध सेवन किया कथा वनावन अक ।
कवि कोविद मनकठ नही ता हिग वसं निरक ।

॥ दही ॥

बरया दिखि जल जलद देक बहै जाग सुम पाए ।
जाके कर जावकन को प्रति दिन बरषत आए ।

॥ दही ॥

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ वंदनाल पद्योसो कृत मनिकठ मिथ ॥

स्वामी, परसपुर, आदर-गजपुर) ।

सख्या २७३क. वंदनाल पद्योसो, रचयिता—मनिकठ मिथ, कानज—दही, पद्य—६७
आकार—१३६ \times ५६ इंच, पत्रिका (प्रतिपद्य)—१०, परिभाषा (अनुपद्य)—१२२, पद्य,
पुष्प, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—मराठी, रचनाकाल—सं १७८२, वि०, लिपिकाल—
सं १८८१, वि०, प्राविस्त्रयान—माराठी,प्राविस्त्रयानि स्या, काशी (इलाहाबाद) इवामद सर-

यह अथ नव विवृत अथ "धर्म सवादे" के साथ एक इस्तेखलेख में है ।

दिया है—

विशेष सातव्य—रचनाकाल, लिपिकाल उल्लिखित नहीं है । रचयिता का नाम श्री
सदिय है । अथ स्वामी श्री मायाशकर जी याज्ञिक ने सदिय अख्या में गोपाल की रचयिता
लिखा है । परन्तु मेरी समझ में "मनसा राम" रचयिता विदित होता है । यह नाम अथवा में

विषय—वैदिक अवतारों के अथ का वर्णन ।

निराकार सी रहै छि नीडा । प्रथम अवतारमन निदवै सरा ॥ ६८ ॥

'मनसा राम' परम पद पावै ॥ ६७ ॥

जायो संकट बोहरि न आवै । जे आवै तो हरिका दास कहवै ।

अथ—

इति श्री चौबीस अवतारों कीस संपूर्ण ।

निराकार सी रहै छि नीडा । प्रथम अवतारमन निदवै सरा ॥ ६८ ॥

मनसा राम परम पद पावै ॥ ६७ ॥

जायो संकट बोहरि न आवै । जे आवै तो हरिका दास कहवै ॥

अथ—

बानी पावै ज्ञान को वसै गाव कौ साहि ॥

विश्वानो वन में वसै धिर है सख साहि ।

धर्मदास गोपाल को हरि कहै कौ सरन होय ॥ ३ ॥

परलोक के हरि में कहै न पावै ठौर ।

जे जायोना दसरा जाकी मुक्ति न होई ॥ २ ॥

हरि गुरु दीव एक है या मति जायो दीय ।

पाहन सी पातस करो सुमरि सुमरि जादोगे ॥

धर्मदास गुरुदेव को मन अर्था सीस ।

आदि—चौबीस अवतारों कीस लिखते ॥

संख्या १७३८. देवान पृथ्वी, स्वर्गमा—मृगशिरा, शक्र—
१०६, शक्र—१०६, शक्र—१०६, शक्र—१०६, शक्र—१०६, शक्र—
१०६, शक्र—१०६, शक्र—१०६, शक्र—१०६, शक्र—१०६, शक्र—

लक्ष्मी वसु मंत्रि मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल
लक्ष्मी वसु मंत्रि मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल

स्वर्गात्म

दिव्य—मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल

----- सूर्यः । मस ।

ना सौर्य गुणक सौर्य गुणक सौर्य गुणक सौर्य गुणक सौर्य गुणक
श्री सूर्य १०९१ मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल

सुखिन्यां सोना मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल
अधोवस अत मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल

॥ शक्ति ॥

वसु क सो विजय की देवी कर्म की देवी ।
अधो वसु देवी मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल
गौरी वसु देवी मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल

॥ शक्ति ॥

मस मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल
समल की परधान मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल

कथनाक ॥

देवि श्री वसु मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल
द्वैक करि मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल

विश्व मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल
॥ शक्ति ॥

वसु देवी वसु देवी मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल
स्वामी सोल के मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल

॥ शक्ति ॥

अत—

लक्ष्मी वसु मंत्रि मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल
शक्ति मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल

॥ शक्ति ॥

शक्ति मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल
शक्ति मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल
शक्ति मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल
शक्ति मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल मण्डल

शुः ॥२५॥ समादीप ॥ १२६॥ सा ॥ १७५७ ॥ सां सिद्धं कृणु पद्मे वसुदेय्यां
 इति श्री वसवसंवाचनसु फकीरसिंहसिंहकारिणा आत्महरेर्लला वसुणियं स्व पठाधर्म ॥

कह्यौ महीपति कहूँ कौ कौन न भू प्रणाम ॥
 कौन जवाने वसि ते सिद्ध वसु प्रणाम ॥
 सिर नवाय सिर वन लगे विजय खरयो कफि ।
 दूक दूक करि वाहि नन दिव्यो सिधनी वाहि ॥
 सोलि शील के वसिरे ते कहिरे तेन वैन वैन ।
 उहरे दोहरे वसु सिधि वसुति देव विजय बाल ॥
 अगिजन भू लेली अघो कोडला नाम कोडार ।
 दोव विजय वसि परे कहे कहे वेवहार ॥

॥ दौहा ॥

शुन—

बहु धन दे उहरे कौहरे सिंहरो । जवन एक माति ते सोर ।।
 अवर कथा सो ते न वयो सो । कर आषा वपताल पयोसी ॥

०: ०: ०:
 फकीर सिंह को निरपि के अथय बजायो डक ॥

०: ०: ०:
 कवि कविद "मति कठमति" लहेवा वसु निसेक ।

०: ०: ०:
 सास दास देह अक भूद अनयहे वीति ॥

०: ०: ०:
 श्री फकीर सिंह सिद्धिये राज निजक को थार ।

०: ०: ०:
 अर्जय अघो वलमद सोहि । निज राज राजीव केलाज जाहि ॥

०: ०: ०:
 फकीर सिंह जो सो सिद्धिये प्रचोरि ॥
 विष्णु सिंह के पुन है करने दयो विचारि ।

१०: ०: ०:
 पाठय भू कलिकाल लखि गयो सो रघुपति सोर ।
 दूनी ते लहरी वसुति अघो वर वार ।
 लया लहरी विहित जग विदुसिहे जग जान ॥
 राजा कहेरि कौ अघे कृणु सिंह मरदान ।

०: ०: ०:
 राजा वीर दयाल आस सुंदर नन लयो काम ॥
 मरदाने लको अघो वायोशोहि सुष धाम ।

कुडलिया

वैश वंस सरोज धूषन अघे गाजन सोहि ॥
 लहो राजनीति प्रतीति द्विज पद प्रेम उर मे वाहि ।

०: ०: ०:
 स्थनीम लो मग आपनी नीज धर्म रत शोषकारि ॥ १ ॥

वैद विधि वारी चरणे नर चलन वेद विचारि ।
 वसु भू सिरोमनि पुर वसु आजव मय सुष सोल ॥
 गाधिपुत्र सरकार भू नगरो नगर विधान ।

अभि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गुरवे नमः ॥ श्री गुरे रहित हेरि गीता छंद ॥

विषय—प्रत्येक दोहे में एक पद्य (श्लोक) का नाम है और (१२) पद्यों का नाम है (१२)

सप्त १६३७ ॥ श्री गुरुदेव की शरण आना ॥

सप्त १६३८ ॥ श्री गुरुदेव की शरण आना ॥

सप्तम

श्री गुरुदेव की शरण आना ॥ श्री गुरुदेव की शरण आना ॥

॥ ३१ ॥

श्री गुरुदेव की शरण आना ॥ श्री गुरुदेव की शरण आना ॥

॥ ३० ॥

—सप्त

श्री गुरुदेव की शरण आना ॥ श्री गुरुदेव की शरण आना ॥

॥ ३ ॥

श्री गुरुदेव की शरण आना ॥ श्री गुरुदेव की शरण आना ॥

॥ २ ॥

श्री गुरुदेव की शरण आना ॥ श्री गुरुदेव की शरण आना ॥

॥ १ ॥

काण्ड	सप्तम	श्लोक	श्लोक
श्री गुरुदेव की शरण आना	श्री गुरुदेव की शरण आना	श्री गुरुदेव की शरण आना	श्री गुरुदेव की शरण आना
श्री गुरुदेव की शरण आना	श्री गुरुदेव की शरण आना	श्री गुरुदेव की शरण आना	श्री गुरुदेव की शरण आना
श्री गुरुदेव की शरण आना	श्री गुरुदेव की शरण आना	श्री गुरुदेव की शरण आना	श्री गुरुदेव की शरण आना

श्री गुरुदेव की शरण आना ॥ श्री गुरुदेव की शरण आना ॥

श्री गुरुदेव की शरण आना ॥ श्री गुरुदेव की शरण आना ॥

श्री गुरुदेव की शरण आना ॥ श्री गुरुदेव की शरण आना ॥

श्री गुरुदेव की शरण आना ॥ श्री गुरुदेव की शरण आना ॥

श्री गुरुदेव की शरण आना ॥ श्री गुरुदेव की शरण आना ॥

श्री गुरुदेव की शरण आना ॥ श्री गुरुदेव की शरण आना ॥

श्री गुरुदेव की शरण आना ॥ श्री गुरुदेव की शरण आना ॥

श्री गुरुदेव की शरण आना ॥ श्री गुरुदेव की शरण आना ॥

सती पलक में देम फीरे देवा पूव पृथ्विनक ।
 एक रीग गाल्य पलक में छया है जाल्य आनिक ॥ १ ॥
 देवा पूव पहिचानि के पूहि आग धर धर जरे ।
 एक नाग रीग के वीच में देवा सती कुलिया मरे ॥ ३ ॥
 देवा सुपन पृथ्विन के दौल वीच में माने कौया ।
 एक नाम रीग के वीच में मयै वृजख आंलिया ॥ ३ ॥
 एक लाल असी देवार देस रीग में मरे मरे गये ।
 कलमा पूहि नामा आपन को भिन्ध भिन्ध कर धरे गये ॥ ४ ॥
 कर कर उमल आपनी नाम करन भिन्ध दीया ।
 देवी सजिबु लटक कर अपना सजिब कपुस कौया ॥ ५ ॥

आदि—देवा गुरु की ॥ लिखते वंश सरमद ॥

इलाहाबाद) ।

संख्या २७६, वंश सरमद की, रचयिता—महेन्द्र आनिक (? सरमद), कागज—
 देवी, पल—५, आकार—६ × ४ ३/४ इंच, पत्तिका (प्रतियुक्त)—१०, परिमाण (अर्द्धप)—
 ३७, अर्द्ध, रूप—ग्राचीन, पहा, लिपि—नागरी, प्रतियुक्त—कधी नागरी प्रतियुक्त सती, लिखा—
 पारस्यी (दाला)—१० इर्द्धमान प्रसाद भिन्ध, ग्राम—सोनई बर्डी, पाट-कठना, लिखा—

विषय—भक्ति, उपदेश, नीति और व्रतवर्ती आदि विषय वर्णित है ।

कहते ५६ ॥

सती सब एक सपु छोजनर १७६ सती सप्त २७६ ॥ पहा १६५ ॥ आरती

अब काहे बहैरे मयै देरी सुनते गाहो ।
 बरसहि मूहि अघड के नीके जग माहो ॥
 वरी जोल के आन क सुष कबहू न सौं ।
 उधरी जाइ जखन ते सार धरनी रोहो ॥
 कही देवारी मानिए अब बोल धन कौं ।
 टके पसेरी अन करी सखनी सुष देहो ॥
 कलजा ते सतजा कोष सप्त कटक मरे ।
 पाहु बहल उठी गथा राम भले सखे ॥
 कौरया के गीपल जोल बरस आपनी ।
 कही मलक अनद अथा सप्त जरनी वृक्षनी ॥ १ ॥

अन—बोलावल

राम कही राम कही राम कही दावरे ।
 आभर न बरु मूहि पाओ भला दाऊ रे ॥
 जीनी लोका नरे देहरे लोका न भजने कौहो ।
 जनम सौरानी जाल जाहे को सी जाउ रे ॥
 कहल मलक दास छोडो देहो कति आस ।
 आनद मान होइके देरी गेन जाउ रे ॥ १ ॥

आदि—मरी

संख्या २७५, साही, रचयिता—मलकदास, इलाहाबाद लिखा, कागज—
 देवी, पल—१६५, आकार—१० × ६ ३/४ इंच, पत्तिका (प्रतियुक्त)—१२, परिमाण
 (अर्द्धप)—८७, अर्द्ध, रूप—ग्राचीन, पहा, लिपि—नागरी कधी प्रतियुक्त, प्रतियुक्त—
 दावा मयरी प्रसाद और महेन्द्र प्रसाद, स्थान व पाट-कठना, लिखा—इलाहाबाद ।

(५८२)

॥ दोहा ॥

कीर्त्तन मन में ज्ञान कछू श्रवणन सुनी पुरांन ॥
जनम अकारथ ही गयी वढि वढि अभिमान ॥

॥ सोरठा ॥

हरि सुं लावौ हेत गुंगा गहिला आंधरा ॥
भक्ति विना नर प्रेत चतुराई जेर जान दै ॥

॥ दोहा ॥

सव तजि भजि राधा रमनि जव लग घट मे प्रान ॥
मन बच कर्म करि द्विज कहें पावै पद निर्वान ॥

इति श्री रुक्मिणी मंगल संपूर्ण ॥

विषय—रुक्मिणी के विवाह की कथा का वर्णन है ।

रचनाकाल

सवत सत्रैसैं बरस गये गुणीसी वीति ॥
पोस सुदी तिथि पचमी सोमवार सप्रति ॥

संख्या २७८. गनगौर के ख्याल (गीत). रचयिता—महादास, कागज—देशी,
पत्र—३, आकार—६ $\frac{३}{४}$ × ५ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७,
अपूर्णा, रूप—साधारण, तद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १९२३, प्राप्तिस्थान—
श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० स० २२, पु० स० ८ ।

आदि—श्री द्वारकेशी जयति ॥ सवत् १९२३

अथ गन गौर के ख्याल लिखते ॥ राग लुर सारग ॥

लौयन हो लाग नाजी प्यारा मोया जी सलोना मारा स्याम ॥

आयो गोरल को दिन नीको तातें कीयो री सिगार ॥ १ ॥

सव ब्रज बनता बन बन आई सिर पर ऊमां धार ॥

चलो जमुना विसरात घाट पर मिलद र पेला ऐक सार ॥ २ ॥

मध्य—

गोरल सांवलडी मारे आज रहोनी मिजमान ॥

आगरा रो घाघरो दखणीरो चीर सिर बिदुली मुख पान ॥ १ ॥

केसरी यारा करोनी कसुंभा गाओनी मीठी तान ॥

राधा जु के महल पधारो ब्रजनिघ चतुर सुजान ॥ २ ॥

श्रंत—प्राप्त नहीं ।

...

विषय—चैत्र शुक्ल ३ को गनगौर नामक त्यौहार होता है । उस पर गाये जाने के पदों का संग्रह ।

संख्या २७९. निघट मदनोदई (ग्रथ बँधक), रचयिता—महाराज कवि, कागज—देशी,

आदि—श्री गरुडायनमः श्री रामचंद्रायनमः अथ लिप्यने निघट ॥

॥ दोहा ॥

छीर सिधु मे घाम जेहि पीत वमन भुज घानि ।
ताहि बटि "महाराज कवि" नाम बिति निर्धानि ॥
बंध वेद विद्या सुगम श्रीपद्य नाम निघट ।
ता हित जानन हार के फोहो नाम निघट ॥ २ ॥

अथ हर्ष नामगुन

कथेथ्या पथ्या अथ्यथ्या शिष्या कथेमी जानि ।
अत्र चेतकी हरित की अभया हरर वदानि ॥ ३ ॥
प्रमदा मोद विजया जया पूतज पूतन हीर ।
सुध रोहिनी हरितकी हेम जीवन मोह ॥ ४ ॥
हररी मात प्रकार की फल श्री पात्र मन्प ।
जीवन्ती फल सोरुं मम दिजया तुयक रूप ॥ ५ ॥
अत्र अत्र लाल फल रोहिनि जाने जान ।
भया पूतजा चेतकी अष्ट पच वंताप ॥ ६ ॥
वसत कालिंदी तीर मं जहाँ मध्य मय जोग ।
यात पित्त काफ तीनि को हरत उदर को रोग ॥

अत—अथ एलाइचि नाम गुन

एला लाइची निहकुटी त्रिभुटि चेलिग चेलि ।
तन सुगंध ससि कन्यका दाह पित्त यह रेलि ॥ ६ ॥

तावूल नाम गुन

तावूल अहिवेलि दल दुज युप मटन पान ।
हरत रोग तय दोष एक वंदस गुन श्रीमान ॥ ६ ॥

॥ अथ नारिअ नाम ॥

यानर मुप लागूल पुनि नारियेलि सुभ वाम ।
नारियर फहि विवि लोचनो राज ठोर दिधाम ॥ १०० ॥

अथ सुषारी नाम गुन

पुंभ..... :०: :०: :०:

—अपूरुं

विषय—श्रीपद्यो का नाम तथा गुण वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—अथ अत मे उचित है । तैयन ५ परे न न न ? ।

संख्या २८०. बाल चरित रचयिता—महापद्मान (पारसवार) नाम—...
पत्र—४, आकार—६ × ५, १/२ इंच, पत्रि (प्रतिपृष्ठ)—१८ परिक्रमा (प्रतापन) ...
पूरुं, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—...
आदि—श्री कृष्णाय नमः अथ बाल चरित लघुष्टे ॥

ब्रह्मा जेनो पार न पामरे वखाणो वेद मारे ।
हरि गुण गालाने ईछुरे पिछु नहीं धेद मा ॥ २ ॥
नंद जसोदा जी नुरे के मोटु भाग्य छे ।
श्री कृष्ण जी पुत्र न भावेरे नये नित्य पाग्यने ॥ ३ ॥
महा सुख सागर प्रगटचो रे भलो ब्रज वास मा ।
कोए जोनी वरसे वाधेरे प्रभु एक मास मा ॥ ४ ॥

श्रंत—

हुतो गोर जमा चालुरे वंकुठ थी ब्रजमुने वालुरे ।
जगत नेहु श्रंतर मा राखुरे आहिर डानु वोटु चाखुरे ॥ ३५ ॥
भूल लीला वीस्तारीरे गोकुल राख्यु नीर धारी रे ।
पवित्र बाल चरीत्र गाएरे महावदास भामरणे जायेरे ॥ ३६ ॥

लीखीतः ॥ व्यास लक्ष्मी शंकर ॥ सहरत्र अवदीत्र श्री कासी मधे बाल चरीत्र
संपुरणं ॥

विषय—कृष्ण की बाललीला का वर्णन ।

संख्या २८१क. रससिधु, रचयिता—महावदास वैष्णव, (गोकुल), कागज—देशी,
पत्र—२०, आकार—१०।५ × ६ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—
१०४०, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८३५, प्राप्तिस्थान—
श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० १०७, पु० स० ७।२ ।

आदि—॥श्री कृष्णाय नमः ॥ अथ रस सिधु ग्रंथ लिखियतु है ।

एक समे मोटा जी तथा महाव जी ये दोऊ भगवदी श्री गोकुल मे एकांत बैठे हते । तहां
महाव जी भाई ने मोटा जी से पूछी, अजी मोटा जी मोको एक बडोही संदेह उत्पन्न भयो है ।
जो श्री विठ्ठल कुमार श्री वल्लभ जी के दरशन करियतु हें । ओर श्री यमुना जी को जलपान
हू करियत हें । बडोही सुख होत है ।

मध्य—पृ० १८

ओर सब कहत हें जो वैष्णव मार्ग खाडे की धार हे एसें सब ही कहत हें । पर याके
भेद तो कछु जू देइ हें । सो एक चित्र ते सुनो, जैसे खाडे की धार एक तो शत कोस लांबी हे ओर
एक कोस ऊंची हे ओर दाकी धार अति तीखी हे । या प्रकार की खाडे की धार उतर करि
पेले पार गयो तब उहां महा सुख पावें । जहा सब सुख हें ।

श्रंत—यह तो मोटा जी की कृपा ते जान्यो मोटा जी भक्तशिरोमण हें । उनकी
कृपा मोपर बोहत हे । तातें श्री गोकुलपति मे जानो ॥ इति श्री गोकुल वासी महावदास
कृत रस सिधु ग्रंथ संपूर्ण संवत् १८३५ चैत्रादि मिति श्रावण सुदि ११ भौमवारे लिखत मोहनदास
सुत गोवर्धनदास कार बान मे लिखी है ।

विषय—प्रस्तुत ग्रंथ सवादात्मक है जिसमें वैष्णव धर्म (पुष्टि मार्ग) के सवध मे सैद्धांतिक
प्रश्नोत्तर है ।

संख्या २८१ख. रससिधु, रचयिता—महावदास वैष्णव, (गोकुल, मथुरा), कागज—
देशी, पत्र—५, आकार—१०।५ × ६।५ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—
२४०, अपूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री
विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० ११८, पु० स० ९ ।

आदि—॥श्री कृष्णाय नमः॥ श्री गोपीजन दललाय नमः॥

अथ रम सिधु ग्रथ लिखियत है । एक ममे मोटा जी तथा महाप्रणम ये दोऊ भगवदी श्री गोकुल मे एकात बैठे हुते तथा महावजी भाई ने मोटा जी मो पूछी अजी मोटा जी मोको गृह बने ही संवेह उत्पन्न भयो है । जो श्री घिठल कुमार श्री बल्लभ जी के दरगान बगिचहु है । श्रीर श्री यमुना जी को जलपान हू करियत है । बढी ही सुख होत है अति आनंद उपजन है परन्तु स्नेह उपजत नहीं याको कारण कहा सो मो पर कृपा करि ममसायक बहो ।

मध्य—पृष्ठ ५

अब अभिमान को कुटुब कहन हें । अभिमान तो राजा, प्रोध प्रधान, प्रतिष्ठा म्हां, निदा सी, लोभ आसन, दोष गादी, हठ म्हा, मद मत्सर दस बोय छल बनाविक ये पुत्र, अमन्य भाई, गर्व भूषण, मोह ग्रह, यह जानियो, दिवद्रूप गारियो उदंधी कोई नहीं चाहते प्राध बुरो । याने प्रोध चाडाल हे ताते चाहते बुरो । याते एमे को हृदय ने राजनी, मोटने बहनी जा मेने अन्य आसिरी कछु नहीं, प्रोध होय तथा आनंद न होय । जहा आनंद नहीं महा ठाकुर नहीं भगवदीन कोह बल्लभ सो आनंद सो हृदय कमल मे रहत है ।

अत—ताते श्री बल्लभाचार्य जी ने चिवेक धंयश्रय प्रथ मे बहे हें मो अब अदं इलोक कहत हें । प्रार्थना कार्य मात्रे पि तरत्याज्य त्र विवजंयेत् ॥ याको अर्थ—बायं मात्र बं विभं विपत्य पडेतो कहा करे सो कहत हें । जैसे ललिता जी श्री ठाकुर जी को प्यारे हे तेमे ही भगवदीहू श्री ठाकुर जी को बोहोत प्यारे हें ताते भगवदीय आगे दीनगा मयंदा बगिये । और भगवदी की सेवा करिये ।

विषय—पुण्ड्र सप्रदाय के भक्ति-विषयक उपदेश ।

संख्या २८२. कवि कुल तिलक प्रकाश, रचयिता—महापति या महीन (शयपुर, गढ अमेठी, मुलतानपुर), कागज—आधुनिक दादामी, पय—१०८, आगा—६५ × ६५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७, परिमाण (त्रयङ्गु) —२०४५, पृष्ठां, रूप—मना, पृष्ठां नि—नागरी, रचनाकाल—मवत् १८६६ वि०, प्राणिभान—उत्तम मदन, पं० अमेठी (२० पार्स० आर०), जिला—मुलतानपुर (शयध) ।

आदि—श्री चण्डिकाय नमः श्री गणेशाय नमः ॥

चारि भुजा अरु चंद्र तिलार लसै रद एव महा मुमनी को ।
 दै मुख मण्डल घदन वेप धेही उदार धेही जती को ।
 सेवत जाहि सदा सनवादिष प्रतीन जागि नरे निनती को ।
 आदि "महीपती" को सुगदायक लायक पूग है पारदनी को ॥ १ ॥
 सयत सत्रह तै मिले तापर टालठि होन् ।
 भादो मुदि दशमी गुरो दिदित छय तय कोह ॥ ७ ॥
 गढा अमेठी देस है रायपुरा मुष घान ।
 आश्रम चारि जसै जहां मद पदित म्हा जान ॥ ८ ॥
 सुललित ताही नगर मे दिजे "महीपति" जान ।
 तिन्ह बोनो मुष रामियर "दधिल तिलक प्रथम" ॥
 नयहू रस के पाय जै नाहि शन घटौर ।
 आगे ही कहि ही सय है रद मन जी रीर ॥ १० ॥

॥ अथ भृंगार रग निरूपनम् ॥

नदहू मे रमगज यह धारि रग रगि हेत ।
 स्वाम देवता स्वाम रंग जाने रग रगि ॥ १५ ॥

श्रुत—

काव्य करत कल्याण को काव्य सुपनि को देतु ।
 काव्य करत उपदेश को सकल सुभनि को हेतु ॥३५॥
 चरनन राधारमन को कहूँ कहूँ रघुनन्द ।
 “कविकुल तिलक प्रकास” पढि वाढे सदा अनन्द ॥
 चारि पदारथ देत है पढत याहि गोविन्द ।
 ज्यों दिनकर की किरन तें वढत जात अरविन्द ॥३७॥
 संकर सारद सेस हूँ सवत होत सहाइ ।
 “कवि कुल तिलक प्रकास” को पढ़े सबै चित लाय ॥
 “कविकुल तिलक प्रकास” को आदि श्रुत लो देखि ।
 ग्राह त्याग में जानिवो जानि अजान विसेषि ॥३९॥

इति श्री महीप (?ति) कृते कविकुल तिलक प्रकासे छंद भेद वरननो नाम उनवींशो
 लोकः ॥ शुभम्भूयात् ॥

विषय—नायिका भेद, रस, अलंकार, काव्यगुण दोष और पिगल आदि का वर्णन ।
 ग्रंथ में ‘लोक’ नाम से निम्नलिखित अध्याय हैं—

१. मगलाचरण, कवित्त और स्वकीया वर्णन	पत्र	१ से	६ तक
२. नायिका परिच्छेद	”	६ ”	११ ”
३. अष्टनायिका	”	११ ”	२१ ”
४. सयोग वियोग शृंगार तथा मान वर्णन	”	२१ ”	२७ ”
५. उत्तमादि सखी तथा दूती भेद वर्णन	”	२७ ”	२९ ”
६. नायक परीक्षादि	”	२९ ”	३३ ”
७. चित्रदर्शन और हाव वर्णन	”	३३ ”	३७ ”
८. स्थाईभाव कथन	”	३७ ”	३९ ”
९. अनुभाव वर्णन	”	३९ ”	४३ ”
१०. अनुभाव, सात्विकभाव, व्यभिचारी भाव वर्णन	”	४३ ”	५१ ”
११. सपूर्णरस वर्णन	”	५१ ”	५३ ”
१२. वृत्ति निरूपण	”	४३ ”	५४ ”
१३. रसनिरूपण	”	५४ ”	५७ ”
१४. समस्त रस निरूपण	”	५७ ”	५९ ”
१५. दोष (काव्यदोष) निरूपण	”	५९ ”	६६ ”
१६. गुण (काव्यगुण)	”	६६ ”	६९ ”
१७. अलंकार निरूपण	”	६९ ”	८३ ”
१८. रीति, वृत्ति लक्षण	”	८३ ”	९२ ”
१९. पिगल अतर्गत गत्यागण नियम वर्णन]	”	९२ ”	९३ ”
२०. मात्रिक छंद वर्णन	”	९३ ”	१०० ”
२१. वर्णवृत्त तथा ग्रथ समाप्ति	”	१०० ”	१०८ ”

रचनाकाल

संवत् सत्रह नै मिले तापर छासठि दीन्ह ।
 भादौ सुदि दशमी गुरी विदित ग्रंथ तव कीन्ह ॥

ग्रंथ में एक अध्याय गहनत है ।

संख्या २८३क. रम मारिणी, रचयिता—मातादीन मुकुन्द, धनगर, प्रतापगढ़, राजपूत—
 आधुनिक मफेद, पत्र—१०, आकार—१०.५ × ६.५ उंच, पांक्त (प्रतिपद्य) —१३, परिमाण
 (अनुष्टुप्)—१३०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, त्रिपि—नागरी, रचनासारा—म० १२०३
 वि०, मुद्रणकाल—म० १९२२ वि०, प्राप्तिस्थान—म० देवनाथ उपाध्याय, स्थान—गोमन्तक,
 पोस्ट—धम्मौर, जिला—मुलतानपुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ दोहा ॥

मदन कदन सुत गजवदन विघ्नहरन जनपान ।
 एकरदन गुनगन सदन पाहि बाल भाशिभाल ॥ १ ॥
 उदाहरन सछेप अति जाते घट्ट न छंघ ।
 बाल हेतु रम मारिणी भाया रची गुपय ॥ २ ॥
 ॥ अथ नवरत्ना ॥

रस शृंगार अरु हास्य कहि करण रौद्र पुनि चोर ।
 भयानको दीनतम लहि अद्भुत भातहि धोर ॥ ३ ॥

॥ उदाहरन ॥

लक्ष्मी लपि लोभी जोई हगत निगम को वेदि ।
 शोक करत मख पशुन्ह को शोधित छद्विन्ह देदि ॥ ४ ॥
 पुलकित रन लपि रावनाहि दधि चौराय अति झोत ।
 भ्लेछ रहि रजुत क्षिति दशन तो गहाय पट पीत ॥ ५ ॥
 रस प्रधान शृंगार है वहाँ भेद बटु तामु ।
 आलम्बन उद्दीपनी है विभाव हँ जागु ॥ ६ ॥
 :०: .०: :०:

॥ अभिलारिका लक्षण ॥

समय जोग्य भूपन किहे सदास चतुरता धाम ।
 जाय सहे टहि पिय मिलन आभिसारबा गु दाम ॥ ७ ॥

अत—

अथ विरह की दश अवस्था

अभिलाषा चिन्ता स्मरण गुन वीरिन उद्वेग ।
 अरु प्रलाप उन्माद रज जडता निघन अनेग ॥ ८ ॥
 निदक दुरजन जदपि हँ तदपि फार नहि सोय ।
 पशु पार शूकर चरन भय कृषी तजत नहि सोय ॥ ९ ॥

१

६

३

एक सहस्र नव सं त्रिजुत संघत मिति घदि जेरठ ।
 तेरसि तिथि शनि दिन रची रस सारिणी सुभेठ ॥ १० ॥
 माधो तारो दीन नर मुनो बुझल का देर ।
 सब प्रभुता को पद गयो हरयो अरज पग मेर ॥ ११ ॥
 एक एक अक्षर पडै एक एक तजि देय ।
 या दोहा मो नाम कुल देत पाम लपि लेय ॥ १२ ॥

इति रस सारिणी पूर्णमगात् ॥ आषाढ पीरामरथा तिथितेयं रस सारिणी सप्त
 दर्शनाभिन्न विबुध नाथूराम त्रिपाठिना सुभम् ॥ सम्पत् १९२२ ॥

विषय—नायिका भेद या लक्षण मे वर्णन किया गया है ।

रचनाराल

एक सहस्र नव सं त्रिजुत संघत मिति घदि जेरठ ।
 तेरसि तिथि शनि दिन रची रस सारिणी सुभेठ ॥ १० ॥

संख्या २८३ख, रस सारिणी, रचयिता—प० मातादीन शुक्ल, (अजगरा, प्रतापगढ), कागज—आधुनिक, पत्र—१९, आकार—९,५ × ६ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९०३ वि०, लिपिकाल—स० १९३१, प्राप्तिस्थान—प० सरस्वती प्रसाद उपाध्याय, ग्राम—सुदीकपुरा, पोस्ट—फूलपुर (तारडीह), जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

॥ दोहा ॥

मदन कदन सुत गज वदन विघ्न हरन जन पाल ।
एक रदन गुन गन सदन पाहि वाल शशि भाल ॥ १ ॥
उदाहरन संक्षेप अति जात वढ़े न ग्रथ ।
वाल हेतु रस सारिणी भाषा रची सुपन्थ ॥ २ ॥

(अथ नवरस)

रस शृंगार अरु हास्य कहि करुण रौद्र पुनि वीर ।
भयानको वीभत्स लहि अद्भुत शातहि धीर ॥ ३ ॥

अंत—

एक सहस्र नव सै त्रिजुत संवत् मिति वदि ज्येष्ठ ।
तेरसि तिथि शनि दिन रची रस सारिणी सुश्रेष्ठ ॥१०१॥
माधो तारो दीन नर सुनो कुशल का देर ।
सब प्रभुता को यह पद गन्यो ढरयो अरज पग नेर ॥१०२॥
एक एक अक्षर पढ़े एक एक तजि देय ।
या दोहा मो नाम कुल देश ग्राम लखि लेय ॥१०३॥

इति रस सारिणी पूर्तिमगात् ॥ आषाढ वदि १३ लिखितेयं रस सारिणी सकल दर्शनाभिन्न विबुधवर चरण सेवक नागर ब्राह्मण मुरलीधर सवत् १९३१ ॥

विषय—रस और नायिका भेद का संक्षेप से वर्णन किया गया है ।

रचनाकाल

एक सहस्र नव सै त्रिजुत संवत् मिति वदि ज्येष्ठ ।
तेरसि तिथि शनि दिन रची रस सारिणी सुश्रेष्ठ ॥

संख्या २८३ग. रामायण माला, रचयिता—प० मातादीन शुक्ल (अजगरा, प्रतापगढ), कागज—देशी, पत्र—३८, आकार—९,५ × ६ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८९६ वि०, प्रकाशनकाल—स० १९३१ वि०, प्राप्तिस्थान—प० सरस्वती प्रसाद उपाध्याय, ग्राम—सुदीकपुरा (तारडीह), पोस्ट—फूलपुर, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—॥ दोहा ॥

श्री गोपाल चरन सरन विघ्नहरन हिय आनि ।
हरि गुनगन वरनन करो होय सकल अघ हानि ॥

॥ चौपाई ॥

मधु शुचि ग्रह तिथि अदिति बलीना । दशरथ गृह नर तन हरि लीना ॥

॥ दोहा ॥

कौशल्या के रामसुत भरत केई जात ।
लछिमन अरु शत्रुघ्न द्वौ लही सुमित्रा मात ॥

रामचंद्र अरु सपन तें वाढी प्रीति अणार ।
भरत अवर गद्गधन तें पिठभाग अणुणार ॥

श्रुत—

जोजन चारि प्रयाग तें उत्तर अजार ग्राम ।
तासु वून है अवध तें दक्षिण जहें मम धाम ॥

मा	धो	ता	रो	दा	न	न	र	र	
सु	नो	कु	श	ल	का	दे	र		
स	व	प्र	भु	ता	को	प	ह	ग	धो
ढ	रचो	अ	र	ज	प	ग	ने	र	१

एक एक अक्षर पढ़े एक एक तजि देग ।
या दोहा मो नाम कुल देश ग्राम नजि लेय ॥
अद्वारह सं धामवें सचत मिति बसाः ।
रामायन माला रचो लघादशि मित पाठ ॥

इति श्री रामायन माला संपूर्णम् ॥

सम्बत् १६३१ ज्येष्ठ शुक्ल १५ ति० नागर वासरा सुन्तोषर ॥

विषय—राम चरित्र का संक्षेप में वर्णन ।

संख्या २८३४. राम गीताष्टक रचयिता—१० मातारंगी वून (उत्तर प्रयाग-गढ), कागज—प्राधुनिक, पत्र—११, आकार—६५ × ६ इंच पत्र (प्रिन्टिंग)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—६१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य विधि—गणनी, भाषा—१००० १८६६ वि० (लगभग), लिपिकाल—म० १६३१ वि०, प्राणिकाल—१००० वर्षों के अन्तर्गत् उपाध्याय, ग्राम—सुदीकपुरा (तारजीह), पॉन्ट-पुस्तक, जिगा-मालावाक ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ राम गीताष्टक लिख्यते ॥

॥ सोरठी रामे ॥

रघुवर अस कंसे बनि भाय ।

जव निज तन सु धरत जन तन धरि सो रूपनेहूँ नहि भाय ॥ १ ॥

सहन शील सतोष दया हरि भजन बली धृत भाय ।

कोह करुता द्रोह मोह तन पोहन ही मन भाय ॥ २ ॥

असमंजस सब भाति पाप धरि दाप ताप हित भाय ।

श्री रघुनाथ अनाथ नाथ विनु को हिय तपनि बुझाय ॥ ५ ॥

श्रुत—

अबहि तें अकुलात मं जमजातनी निअणर ।

फस्थो बक विनु मेह पाये पाल फुँदो आठ ॥ ६ ॥

उचित राम दम दान जप तप निगम आगम शाय ।

आपु सम तय लोक जानत नरुज नोय नभाय ॥ ७ ॥

अजहूँ भल है भजतु चित्त हं तजतु जन की भाय ।

दीन जानि स्वलीन बरिहै बचतु होसावराय ॥ ८ ॥

इति संबत् १६३१ ति० मा० मुरलीधर ।

विषय—राम की स्तुति की गई है ।

संख्या २८३ड. राम गीताष्टक, रचयिता—मातादीन गुक्ल, स्थान—अजगर; प्रताप-गढ, पत्र—७, आकार—१० $\frac{१}{१}$ × ६ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनु-पटुप्)—६१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६२२ वि०, प्राप्तिस्थान—प० देवनाथ उपाध्याय, स्थान—खेटकुरी, पोस्ट—धम्मीर, जिला—सुलतानपुर (अवध) ।

आदि—अथ राम गीताष्टक लिख्यते ॥

॥ सोरठी रागे ॥

रघुवर अस कैसे वनि आवैं ।

जब निज तन सुधरत जन तन धरि सो सपनेहुँ नहि भावैं ॥ १ ॥

सहन शील सतोष दया हरिभजन भलो श्रुति गावैं ।

कोहु क्लरता द्रोह मोह तन पोहन ही मन धावैं ॥ २ ॥

ठवर अवर दिशि गमन अवर दिशि कवन भवन पहुँचावैं ।

निज अचरन विपरीत देषि एह रीति भीनी सतावैं ॥ ३ ॥

नयन कोन मम और निरखि सुनि के निहोर अपनावैं ।

कोतुक तोर न थोर मोर हित अव प्रभु भोर न लावैं ॥ ४ ॥

असमजस सब भांति पाप करि दाप ताप तिहुँ तावैं ।

श्री रघुनाथ अनाथ नाथ विनु को हिय तपनि दुक्कावैं ॥ ५ ॥

विषयलीन मतिहीन दीन को विगरी कवन बनावैं ।

अगुन गीध गुह गज गनिका गति सुनि भरोस दूढ आवैं ॥ ६ ॥

श्रंत—

हे मन मरत नाहक धाय ।

दुख हरन सुख करन रघुवर चरन सरन विहाय ॥

उचित शम दम दान जप तप निगम आगम गाय ।

आपु सम सब लोक जानहु सहज शोक नशाय ॥ ७ ॥

अजहुँ भल है भजहु चित दै तजहुँ जग की वाय ।

दीन जानि स्वलीन करिहै कवहुँ कोशलराय ॥ ८ ॥

इति ॥ सम्बत् १६२२ आषाढ शुक्ल पौर्णमास्या लिखितेय रामगीता सकल दर्शनाभिज्ञ विद्वधवर नाथूराम त्रिपाठिना ॥ शुभमस्तु ॥

विषय—रामभक्ति वर्णन ।

संख्या २८४. अर्ध्यात्म रमायण (वाल तथा अयोध्या कांड), रचयिता—माधव दास (मन्नादास), कागज—बासी, पत्र—४३, आकार—१३ $\frac{३}{४}$ × ५ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुपटुप्)—१५०५, पूर्ण, रूप—जीर्णगीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति-स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—श्री सरस्वत्यै नमः श्री राम चरणाय नमः ॥ अथ रामायण लिख्यते ॥

॥ चौपाई ॥

सुत वरुणर्षणं ॥ केवल ब्रह्म अमृतपानं ॥ टेक ॥

नारद गये ब्रह्म लोक मझारी ॥

संका सहत फीन्हीं ब्रह्मा कूं फीन्हीं संतवन ॥

नमो देवाधि देव प्रभु भगवन ॥ १ ॥

तहाँ मारकंटे आदि मुनि....हन...हि जेमे ॥
 ताहा नारद कीनी जे जे पात्र ॥
 नमो श्रव समय घोबरहा ॥ २ ॥
 कहिन.....सी रुद्र ॥
 अयही तोहि बरु निरुग ॥
 अपने उनमान बरु मं पुत्र ॥
 रवान मु मोही त अति उ..... ॥ ३ ॥
 तव नारद यह बरुो विपानि ॥
 इकतो कहि मो हित तर जानि ॥
 पूज प्रभू कलिजुग के लोक धांति मोहि द्याप मोच ॥ ४ ॥

मध्य—

तो कीर्ज राघव भक्ति तुम्हारी ॥ लोक मरदंभन टालि मजारी ॥
 सनं सनं जीतं तन मन प्रान ॥ होइ एकदेक एनि नेरे रमान ॥ ३ ॥
 कदाचित भक्ति न करणी जाई ॥ तन मन प्रक मन्त दुग पाय ॥
 तोज ज्ञानी भक्त तुम्हारा ॥ तिमको लग परं हित जारा ॥ ३ ॥
 जे जन ग्यान विज्ञान मं अतर ॥ अक तेरा भक्ति हो बरु निरुग ॥
 तिनकी आइ करत जे नेवा ॥ ते मुलभ भक्ति हो पाई देवा ॥ ४ ॥
 जे तेरे दासन के दाम ॥ नेरहि निनि टिन धरन धाम ॥
 तो तिनको किकर करो मोहि तारक ॥ दामन के दान की परिचारक ॥ ४ ॥
 तो मोको रायत कंसो हीर ॥ जो मो उपजावत हो मोर ॥
 जो मोहि सुगावत हूँ समारी ॥ यह दोषो मोहि धरं मजारी ॥ ५ ॥
 यो कहि नारद दोनी रोय ॥ प्रेम पुत्रक आनन्दमय होय ॥
 ब्रह्मा पुत्र तुम्हारी हो तो ॥ राम मं मेरो दातो हूँ तेरो पातो ॥ ६ ॥

श्रत—

ता पाछं सीताराम जिमाये ॥ लघन महित धर्म संभाए ॥
 करि पूजा विधान पाछं बरुो धर्म ॥ नरदोषर मन बरुो एने मं ॥ ७ ॥
 पूरव राम तुहो तो एक ॥ नरु नही हो तो पू... ॥ ८ ॥
 पच अनेक ते पुनह आपतं सुटि उपाई ॥ लोक चतुंरा बंदि हमारु ॥ ८ ॥
 पुनह तीन लोक रच्या हेत श्रीतार ॥ आपने विमही -म ॥
 सुरमानुष त्रिज कूं द्य धर्म ॥ जो लोक दुख दो गला बरत ॥ ९ ॥
 उत्पति रच्या प्रलय देव ॥ नाग नृप बनि निरुग नर ॥
 सो माया सबकी प्रसन करत ॥ मोट बरि नरके गगत ही हर्म ॥ १० ॥
 वह माया तीतं भलं उरत ॥ तेरे न्या ही बरु न हर्म ॥
 उत्पति रच्या प्रलय निधान ॥ मुन अद्य के तेरे दान ॥ ११ ॥
 ते धनि जे तय बुमिगण बरुो ॥ मसार मसार दो के मही ॥
 तेरो समररा मेरो धन ॥ ह्य अर बरुो नो गगत नर ॥ १२ ॥
 इस प्रभाय भए हर्म बरि ॥ नो विरु नरके नर के बरि ॥
 धेते हम कहाए यह बरुि ॥ लगत के लुपति मेरे विधि ॥ १३ ॥
 अजौच्या कांड समारपित भयो ॥ मुनि राम निगारक बरि नरु ॥
 अध्यात्म रामायण निधि ॥ दागड पणत मोहिनी विधि ॥ १४ ॥
 नो विश्राम हुंता गदाकी ॥ पीपुो उर पाण इजामी ॥
 बालमोकि बी सिप्या रलोक सरुत ॥ इन उस दोड के विरु नर ॥ १५ ॥

पाप हंता दौड रामाङ्गण ॥ सीख गुणत करे पारायण ॥
श्री दामोदर को सिधि वर्षाणत ॥ मधवा दास कछु नहीं जाणत ॥१६॥
विषय—बालकाड और अयोध्याकाड तक रामचरित्र वर्णन ।

संख्या २८५. तत्व चिंतामणि, रचयिता—माधवदास, कागज—देशी, पत्र—४,
आकार—५ $\frac{१}{४}$ × ८ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—५५६०, अपूर्ण,
रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—सरस्वती भंडार, विद्या विभाग, काँकरोली,
हि० व० २६, पु० स० ५ ।

आदि—अथ तत्व चिंतामनी लिखते ॥

सत्य सद्द श्री गुर के उर धरि । हरि किन भजीये मन वचक्रम करि ॥ १ ॥
अपावन बुंदतें पावन वप भयो । ताको मरम कछु नहि लयो ॥ २ ॥
गरभ वाम मै किहि विधि होतो । गरवीत भयो बिसरि गयो सोतो ॥ ३ ॥
दीवी मुख अंचे हे पाय । तहा तू वदत ऐक चित लाय ॥ ४ ॥

मध्य—

धनि धनि भाग ब्रज नारि ॥ तिन संग रमत कृष्ण मुरारि ॥ ११ ॥
सुर नर नहि न पावत पार ॥ सो हरि खेलत नंद द्वार ॥ १२ ॥
विस्व करमा विधिकत भयो देषि देषि नंदनंद ॥
छुटरनिलनि किलकत हसत अवगति आनंद कद ॥ १३ ॥

अंत—

निस दिन गावत है हरिदास ॥
तुम न मानि करि ब्रज वास ॥ १८ ॥
ब्रजरज सुभग जिवनि मेर ॥
सरनै राखि नंदकिसोर ॥ १९ ॥
सब विधि कारन करन तुम जान राय जगदीस ॥
माधोदास वछित इहै चिन्हन चरन को सीस ॥

इतो श्री तनु चिंतामनी संपुरन शुभ ॥

विषय—भक्ति और ज्ञान विषयक वर्णन ।

संख्या २८६क. मुरली की लीला, रचयिता—माधवदास, कागज—देशी, पत्र—७,
आकार—५ $\frac{१}{४}$ × ८ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०, अपूर्ण,
रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग,
काँकरोली, हि० व० २६, पु० स० ५ ।

आदि—अथ मुरली की लीला लिखते ॥

श्री गुर गोमिद को सिर नाऊं ॥ तुम्हरी कृपा मुरली गुन गाऊं ॥ १ ॥
मुरली मोहन कुं अति प्यारी ॥ छिन न रहत गिरिधर तें न्यारी ॥ २ ॥
कबहुक कबहु कटि सोहै ॥ मुखि वैठी मोहन मन मोहै ॥ ३ ॥
अचल चल चल धीरज गहै ॥ प्रेम प्रवाह सवनि उर वहै ॥ ४ ॥
नदनंदन ऐसैं वस कीनै ॥ भए विभंगी अति रस भीनै ॥ ५ ॥

मध्य—

फुनि बुझन लग्यो पुत्री ममकाय ॥
सब अपनी परकरन सुनाय ॥ १०५ ॥

तब मैं कहा पाछली बात ॥
सिरधुनि धुनि नाइक पछितात ॥१०६॥
पुत्री जीय दुख अन जिनि धरो ॥
पति अपने को चितवन करो ॥१०७॥

श्रंत—

कुंडल मुकट पीतावर राज ॥ मुक्तमाल वंजती विराज ॥२०६
नाचत भए कृष्ण नटनागर ॥ सर्व भेद जानं गुनमागर ॥२०७
भावतो वर दीनी नदलाल ॥ परमानद लह्यो सब बाल ॥२०८
यह लीला जो मुनं सुनावं ॥ चितत फल निश्चं करि पावं ॥२०९
माघी दास जाय बलिहारी ॥ चरन दाम दीजं गिणघारी ॥२१०॥
इति श्री मुरली जु की लीला संपूरन समापता ॥

विषय—श्री कृष्ण का वन में मुरली बजाना, वहाँ गोपियों का ग्राना श्री गून्दी गुग लेना इत्यादि वर्णित है ।

संख्या २८६४. दशम स्कंध सक्षेप लीला, रचयिता—माधवदास, वागज—देशी, पत्र—१, आकार—१०३ × ७ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, अपूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्त स्थान—श्री मन्मथी भवन, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० १७, पु० न० ६ ।

आदि— ॥श्री गोपीजन बलभाय नमः ॥ अथ श्री भागवत में दशमस्कंध लीला सक्षेप जो माधवदास कृत सूचनिका पूर्वार्द्ध उत्तरार्द्ध की लिखित है ॥

जय जय जय श्री जगन्नाथ श्रुति नाथ मुरारी ॥
दिव्य दीव्य कर्म करि कलिमल अपहारी ॥ १ ॥
भूमि सहित ब्रह्मा इन्द्र की जब मुनी गृहारी ॥
तब जदुकुल अवतरे आय मधुपुरी मधुहारी ॥ २ ॥
जगन्निवास श्री वासुदेव देवकी गर्भ पास ॥
पुरब दिसा जानु उदित भानु तिहू लोक प्रपामा ॥ ३ ॥

मध्य—

सात वरय के बाल कृष्ण कर्म कीयो अधिपार्य ॥
नंद प्रबोधित चकित गोप गगं पचन मुनार्य ॥ ३ ॥
सक सुर अन्वियेक करघो देवन दृढभी दाजी ॥
गोरक्षा तें नाम भयो गोविंद सुर राजा ॥ ४ ॥
नद चरन तें आनिष् संकुठ दिजार्य ॥
रास विलास बियो हरि मनमप हरिरार्य ॥ ५ ॥

श्रंत—प्राप्त नहीं ।

विषय—श्रीमद्भागवत दशम स्कंध लीलाओं का सक्षेप में वर्णित ।

संख्या २८६५. नारायण लीला, रचयिता—गुनार्य श्री माधव दास की नारायण—देशी, पत्र—१७, आकार—५।। × ४२८, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्त स्थान—श्री मन्मथी भवन, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० ७२, पु० न० ६ ।

भादि—ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

जय जय जय श्री जगन्नाथ नारायण स्वामी ।
ब्रह्मादि कीटान्त जीव सर्वान्तर्जामी ॥ १ ॥
सच्चराचर वहिरावृता अभिन्नतर होई ॥
सर्वात्मा सर्वज्ञ नाम नारायण सोई ॥ २ ॥

मध्य—पृ० १७

हाथ न हरिके कर्म करि पायन प्रवक्षिणा दीजै ।
नयन निरखि श्री जगन्नाथ आत्मा समर्पण कीजै ॥३८॥
कोटि ग्रंथ को इहै अर्थ श्रुति स्मृति पुकारा ।
वासुदेव की भक्ति बिना प्राणी नाहि निस्तारा ॥३९॥
यह प्रह्लाद के वचन सुनत असुर उठयो रिसाई ॥
मारि मारि दुष्ट ब्राह्मण को जिन इह दुष्टि सिखाई ॥४०॥
विप्र कहै सुनु महाराज मिथ्या दोस न दीजै ।
याको यहै सुभाव जो भावें सो कीजै ॥४१॥
तब बोले हिरनकसिपु पुत्र तोहि इहै बुधि कौन सिखाई ॥
अंजलि जोरि प्रह्लाद कहै सुनो दंत्य के राई ॥४२॥

श्रंत—

प्रफुल्लित कमल लोचन विसाल भाल तिलक विराजै ।
चंदन -पन सकल गात्र वनमाला छाजै ॥६४॥
शंख चक्र गदा पद्म मुकुट कुंडल पीतांबर धारी ॥
नील सिंखर श्री ब्राजमान सेवक सुखकारी ॥६५॥
श्री जगन्नाथ को रूप देखि मन भयो उलासा ॥
श्री जगन्नाथ को दास गावें गुसाईं श्री माधव दासा ॥६६॥

इति श्री मद्भगवद चरित्र नारायण लीला गुसाईं श्री माधोदास कृत संपूर्ण ॥

विषय—श्री भगवान् के अवतारों की कथा पद्यों में वर्णित है । जिसमें भगवत्स्वरूप, उनके अवतार धारण का कारण, भक्तों की महिमा और भक्ति का वर्णन है ।

संख्या २८७ . दानलीला, रचयिता—माधवदास, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—
५ X ४ ॥ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५, पूर्ण, रूप—साधारण,
पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री त्रिद्या त्रिभाग, कांकरोली, हिं
व० सं० ३२, पु० सं० १४।५ ।

भादि—दान लीला लिख्यते ॥ राग बिलावल ॥

हमारो गोरस दान नदानत होई मोहन लाडिलें हो ।
कव के तुम दानी भये लाल कव तुम लीनो दान ॥
गाय चरावें नंद की तुम सुनो अनोखे कान्हू ॥ १ ॥ भो० ॥
हम दानी तिहूँ लोक के तुम च्यारों जग जुगुवार ॥
दान न छाडो आपनो तेरो गहनो राखो हार ॥ २ ॥
ग्वारि हठ छाड दें हो हमारें भमत फिर गुदार ॥

मध्य—

नेन चाचों चातुरी लाल बोलो साचे बोल ।
मेरो हर करोरिको तेरी सब गायन को मोल ॥ ३ ॥ भो० ॥

ये गइया तीहू लोक तारनी पुच्छे मन्त्रे नाम ॥
 दूध दही तिहू लोन में तेगे हार करे नाम ॥ १ ॥ श्री ०
 रतन जटित फोड़े दुरी लान हीन जगिया नाम ॥
 ताहि तू राग्यन कटत हे कमरा के कोटन नाम ॥ ५ ॥ श्री ० ॥
 ब्रह्मा तानो पूरियो धोर बनियो दंष्टि मोग ।
 सोहम ओटी कामरी जायो पार न पायो नाम ॥ ६ ॥ श्री ० ॥
 मोर पयवा निर धरे लान दम पणो पेट ।
 अधिकन करि होटा नद के गो लो पाति गार पण पेट ॥ ७ ॥ श्री ० ॥
 हम ब्रेटी दूषभान की तुम नद मार हे नाम ।
 प्रेम प्रीति रचि मान ने होटा जिन करे यमान ॥ ८ ॥ श्री ० ॥

श्रुत—

वृंदावन प्रीटा फगे धोन लीमे राम विनाम ।
 सुर नर मुनि जे जे परे जन नाये मायोदान ॥ ९ ॥ श्री ० ॥

इति श्री दानलीला संपूर्णम् ॥

विषय—श्रीकृष्ण की दानलीला का वर्णन ।

सख्या २८८. रामचंद्र जी की राम नामो, स्वयं—
 देशी, पत्र—१५, आकार—१० १/२ X ८ १/२, पत्रि (प्रतिपाठ)—४४, श्लोक—१४८५,
 १४८५, अपूर्ण, रूप—जीरांगीरी, पत्र, निधि—नाम, प्रतिपाठ—नाम, नाम, नाम, नाम
 नागरीप्रचारिणी मभा (याज्ञिक मंत्र), नामी ।

आदि—श्री रामचंद्र जी की नाम रासी गुरु तिताने गार कोन
 ओकार सु आप अनंत प्रतरजानी जीव अनंत,
 आप भगति वरदान अनंत अह प्रतापानि नयेर अण ॥ १ ॥
 श्रवण सुमित्र नवधूं जान पताय राम पद हनिजन .
 मुनिवर करमा नद तीय गुर देव हृष नम ॥ २ ॥
 हसा गमिण ब्रह्मारी हगान्द हग आरटा .
 देवर गुरु वरदाती निधनारी हुदो नम ॥ ३ ॥
 सभु गवरि मुत्तन वागुरा वरदाती नदो नम .
 सुधि दधि प्रमदस्तु ग्यान नागारा हुदो नम ॥ ४ ॥
 चत्र मूप वेद निभार ब्रह्म दिनार नामि नदो नम .
 बड जग जड दिनार निधि दिष्टा हुदो नम ॥ ५ ॥
 बल २ फंठ विनाल हार हृषगम नद निध वरदाती .
 विधि भस्त्रल मरि वाग मूप तिरुगति हुदो नम ॥ ६ ॥
 हसन ग्यास जेदेव पदि वरदाती नदो नम .
 अन वधि गुर विधि वधि नद हार वद हुदो नम ॥ ७ ॥

माध्य—

आप धालि धालि माता सभरीया आदि विना नदो नम ॥
 भरो लयमण हुदो नम आदि नदो नम ॥ १ ॥
 आवी पगे राम उचार धालि नाम वरदाती नम ॥
 लयमण धयण हराड मत देवी हुदो नम वरदाती नम ॥
 जाता पाहर वरारथ नामा ए वरदाती नम ॥ २ ॥

सास कांम तो राम सुधरसी साइक मेक वालि संघरसी
 वडा वडां सी देप वडाई मोटां सुं कीजं मित्राई ॥२५॥
 ए कपिराव काजि अपाणं उदधि उलधे सीता आणी ।
 अतारे गिरि जु पति आरति मेले राम सुग्रीव हराउ मंति ॥२६॥ ॥

अंत—

॥ दोहा ॥

रासो जस श्री रामरी वदं विदुष सुवेद ।
 करण कुं कवि जाणं किर्सुं सौरंभ कव सुभेद ॥ १ ॥
 नर मटुक जिमि नाचवें जंत्री जंत्र वजेव ।
 कहिया पै तिम मै कथे दासन द्वेषण देव ॥ २ ॥

॥ राग सोरठ ॥

गिरनारी भरथ पासव रघुनाथ वडाई ।
 ब्रधि कपि बलि सुग्रीव निवाजे के कंधाव कुराई ॥ १ ॥ टेक ॥
 मम बलहीण अलप साषा मिनि कट सलितन कुदाई ।
 राम प्रताप स्थंघ सौ जोजन उलंघत पलक न लाई ॥ २ ॥
 उह जलही पाथर तलि बूडत तिलक प्रमाण कुणाराई ।
 लिय श्री राम नाम गिरि डारत दधि सिर जात तराई ॥ २ ॥
 ऐंद्रजीत कुंभ दसाणण सुर ग्रहि वंधि वौडाई ।
 सकल संग्राम मृत के कपि सेना अमृत सींच जीवाई ॥

विषय—इस ग्रथ मे लका के सेतुवधन तक राम चरित्र वर्णित है। शेष भाग अप्राप्य हैं।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अंत मे खंडित है।

हस्तलेख मे निम्नलिखित चार ग्रथ हैं.—

- १ ओकशास्त्र भाषा—आनंद कवि कृत
 - २ सदैवच्छ सावन्ग्यारी वात
 - ३ ढोला मारु चौपाई—कुशल लाभ द्वारा सपादित
 - ४ रामचंद्र जी रो राम रासो—
- प्रथम तीन ग्रथ ही पूर्ण हैं।

संख्या २८६. भाषा कोप (हिंदी सस्कृत मे), रचयिता—माघवेदास भट्ट, कागज—
 देशी, पत्र—२३, आकार—४ × ७ $\frac{1}{2}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—४४, परिमाण (अणुष्टुप्)—
 ६३२, अपूर्ण, रूप—माधारण, गद्य, पद्य, लपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री मरुस्वती भंडार—
 श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० ६२, पु० म० २ ।

आदि—प्रणम्य द्वारिकानाथं भक्तानां सुख हेतवे । इयं विरच्यते भाषा माघवेन
 मनोहरा ॥ १ ॥

स्वतो भजामि	स्वर्ग
देयते शर्मा	देवता
अरचित्व या जगत	असुर
दैनान्मिलां	दैत्य
अनमद्वाता त्वाच	अपछरा
अस्मानव द्रुवं	आकाश

मध्य—पृ० २३

पीलस्त्य नाशकां	पोता
धर्मादव	आजा

दानव नाशन	दादा
भाविव्रानयमे	भानेज
भावं देहिमे	भाभी
वरयामिते	वर्हिनि
शार्वरंह	शालक
मोद्गोत	मोगा
सादरं मित्र	साड
जेम हिन्	जमाई

श्रंत—

अहो अये	अरघो करे
अयि पुनि	परि
अवं बहुरि	करी
अये अचार	करे
बहुरघो श्रंभो	मेते
श्रंग भो	मे ते
हांतनेयि	हां
निहार	॥ ए ॥

विषय—शब्दकोप गिणय । यह श्रमन्कोप की मंत्री पर है ।

सख्या २६०क. राग प्रवाण, रचयिता—गद्यमाधव मित्र, (श्रमंठी, गुणालपुर, अचध), कागज—आधुनिक गफोद, पत्र—७८, आकार—= X ५८ छ, पत्रि (प्रतिपुष्ट)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४८२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, निधि—नागरी, रचनाकार—शकाब्द १७८०, प्राप्तस्थान—इदन नदन, पो०—श्रमंठी (२० आ० आ०), जिला—गुणालपुर, अचध ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ दोहा ॥

श्री सत गुरपव पंकरु प्रनयो सहित सनेरु ।
 दास विने सुनि करि कृपा विसद विसल मति देरु ॥ १ ॥
 भवतारनि धारनि जगत मुखस धिरारनि मातु ।
 अधम उधारनि अपहरनि गुजस वेद पिप्यातु ॥ २ ॥
 :०: :०: :०:
 दिनकर कुल फटपाह ते पंहुल मोत प्रमिदि ।
 "नृप माधय छितिपाल जू" बिचो राग बी छुदि ॥ ४ ॥

॥ सोरठा ॥

विविध अमेठी देग अपद्य जूजा मय मे ।
 शीन्होपो दास नरेस रामनगर आधम कुलप ॥ ३ ॥
 गुरु पंचमी मधुमास तावे महर् भं श्रमी ।
 विरच्यो राग प्रवास पदु छवनि अरलोदि बं ॥ ६ ॥
 बुध जन तर्ज न धानि री मज्जाई सलेम बी ।
 बाव्य पयधम जनि भूतो देयि कुधारि है ॥ ७ ॥

अंत—राग देश ताल कच्ची होरी

सजि भानु तनै गुह होरी ।
मुनि क्रोध प्रगट की जोरी ।
निसि वीति समय जो होवै ।
दोऊ लै लै अग भिजोवै ॥
प्रथमहि जो माता षोवै ।
सो लपटि प्रीति सो तोरी ॥

जमन शोक विच होई है भूषित वा थल सोई ॥
तप्त पति शिर जोई उडि दिशा पूरि चहुँ बोरी ॥
तू देव सदा उपकारी सुनु हे मिथिलेश डुलारी ॥
यह दास विनै अति भारी "क्षितिपाल" क्षमो भुमधोरी ॥४४०॥

विषय—राग रागिनियो कासग्रह ।

रचनाकाल

गुर पंचमि मधुमास साके सत्रह सै असी ।
विरच्यो राग प्रकाश बहु ग्रंथनि अवलोकि कै ॥ ६ ॥

संख्या २६०ख. स्तुति (?), रचयिता—नृपति माधव, पत्र—१०, पक्ति (प्रति-
पृष्ठ)—१०, अपूर्णा, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—कु० हाकिम सिंह,
ग्राम—खजुराहा, तहसील—रामनगर, राज्य—छतरपूर ।

आदि—

गिरजा अति सोहन सुंदर सुष मय प्यारी ॥
मुँड माल गर चद्र भाल लपि गरल कंठ छविवारी ॥
सौस जटा अहि मुकटि विराजति निकल गंग जलधारी ॥
नंदी गन बांधवर सोभित भस्म अंग सुभकारी ॥
भाग धतूर अहार करन नित अवहर दोन दारी ॥
कह लग कहीं त्रिलोचन तुव गुन सारद की मति हारी ॥
माधव नृपति चरन सेवक लप अलवेली छवि भारी ॥ ६ ॥

मध्य—१२ सं० पृ०

.....वारध मै रैन दिन क्यो भटकत मतिमंद ॥
माधव नृपति सीप सुनि भनि श्री गोकुल चंद ॥३८॥

अंत—प्रभु दस अवतार धरे ।

मछ्छ रूप ह्वै वेद अवारे धर्म हि प्रगट करे ॥
कछ्छ रूप भूमि के भारहि आपुन लै निवरे ॥
सूकर रूप दसन धर धरनी जल ऊपर निसरे ॥
नरहर ह्वै हिरनाकुस..... ॥
..... ॥
..... ॥
..... ॥५६॥

विषय—भगवती, भगवान शंकर, भगवान् कृष्ण, भगवान् राम आदि देवी देवताओं की स्तुति की गई है ।

संख्या २६१. वनविहार माधुरी, रचयिता—माधुरीदास जयपुर, पत्र—४, आकार—
६ ३/४ x ७ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुपात)—१६२, पृष्ठां. ३२—साधारण,
पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काशी, वि. सं. २०
२४, पु. सं. ८ ।

आदि—अथ विहार माधुरी लील्यते ॥

। दोहा ॥

कृष्ण रूप चंतन्य की मदा मनानन केनि ॥
गिरि वन पुलिन निकुंज वन ह्रम टोनी वन देनि ॥
सदा एक रस रमिक बर विहृत मदा मुभाय ॥
पिया पिय के जोय मे पीय जनि पीज नमाय ॥

मध्य—

छांडी हुलस मान पर रुग ॥ वेहें बहू रस मे रंग ॥
देखो पिय विपिन की सोभा ॥ उपजन हे कछु मन अनिजोभा ॥
अरु सुरग वारिम सुमनाली ॥ बहू रस भरे परब एत पायी ॥
कहु गौर माकद रमान ॥ यहू जोजत मधुपन ही मान ॥३२॥

अंत—

॥ दोहा ॥

न विहार विहरहु सदा सना माधुरी बेली ॥
बन केली बेली रहिचि श्री वृंदावन की बेली ॥३०॥
जे गावे सुमरे सदा मन पछ दिपिन दिमान ॥
ते पावे सुख सहज मे धी वृंदावन वान ॥३१॥
जो लालच फोटिक मिले तोहू न चित तनचाय ॥
तजि वृंदावन माधुरी सपनेहु अनत न जाय ॥३२॥

इति श्री मदन मोहन द्वार वासी माधुरी दास जयपुर दिरचिता वन विहार माधुरी
संपुर्ण ॥ १११ ॥

विषय—भगवान् कृष्ण के वन विहार वा योगीश्वरी के वर्णन है ।

संख्या २६२क. मयोग बत्तीनी, रचयिता—मान रवि मा मणि मान पत्र—२,
आकार—१० x ४ ३/४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुपात)—२००, पृष्ठां.
रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकार—म. १०३१ वि. प्राप्ति—
सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काशी, वि. सं. २० २४, पु. सं. १३ ।

आदि—अथ मयोग बत्तीनी लिख्यते ॥ दोहा ॥

बुद्धि वचन परदादिनी सिद्ध वचन गुन नाम ।
सारद सौ गाननि सनरि हिर की पूजन नाम ॥ १ ॥
राग सुभाषित रसनि रस निरुपमा मेरु मुट ।
जे योगीसर जगती न लै ते हो मुट ॥ २ ॥

॥ अपराग दर्शन ॥

नाम बुरगम रागरत निरौ न रेव अहेर ।
बाटो रहि बिलत निरनि लानि दनि जोय हेर ॥ ३ ॥
॥ अथ राग महिमा दर्शन ॥

॥ सर्वथा ॥

सुखी धनवान ताको सुख हो निधान मान रसनि के रंग मन रस की मन्त्रणा ॥
बुख को बुराउ अरोसे धात हू बौ दयाल दिरौ बौ सत्य आहो बाहुक सत्यना ॥

भूचर गगनचार पशु पंछी चित्र के से होइ तार्क सुनै चूकै चितकी चगनता ॥
 पंचमोपवेद ताको अगम अपार भेद सुगुन कूं सुगम है ठगोले कूं ठगनता ॥ ४ ॥
 मध्य—पृ० २ प्रथम नायक वचन
 मेरो मन आतुर अधीर अति प्रानप्यारी मन में भुलायो जानुं धाय मिल्नु अबही ॥
 लांबी बांहि करिकै लगाय लेहु कठ २ चुवन अघर पान तृषा मोहि सबही ॥
 कर सौं मसकि कुच कुंभ की कठिनताई देखहुं कहत मान जक पर तवही ॥
 छिन एक जास्यो तो वरसं विहात सात तुम कहो राति प्रराति परं कवही ॥ ३० ॥

तदनंतर नायका के वचन सबैया ॥ ३१ ॥

जोइ तुम कही सोइ लिखी है करेजा वीचि मेरे वस नाहि प्यारे मोहि व्याही रली है ।
 जानत जगदीस कै यो जानत हमारो जीव पीउ तन वारि डारु और कहा चली है ।
 गए विहु जाम तिहुं याम जात कौन डेर हाथ अध हाथ मे यो बात आय मिली है ।
 इतनी अधीरताई छोरि देहु प्रानप्यारे तुम हो सुजान मान लोक लाज भली है ॥ ३१ ॥

श्रंत—

॥ सबैया ॥

आदि सुराग सुभाषित सुदर रूप अगूढ रगूढ बलीसी ।
 पंच संयोग कहे तदनंतर प्रीत की रीत बखान तीसी ।
 संवत चद्र समुद्र शिवाक्ष सयी युत वर्ष विचारत तीसी ।
 चंद्र सिता वसु छवि गिरापति मान रची र्यु संयोग बतीसी ॥ ७३ ॥

इति श्री मन्मान कवि विरचितायां संयोग द्वात्रिंशकायां नायक नायिका परस्पर संयोग नाम चतुर्थोन्मादः ॥ पं० केसरीचन्द्रेण लिपि कृतं ॥

विषय—संयोग श्रृंगार के भेदोपभेदो का वर्णन संक्षेप में किया गया है । ग्रथ की भाषा परिभाषित और टकसाली है ।

संख्या २६२ख कवि कोविद, रचयिता—मुनिमान जी, (वीकानेर), कागज—देशी, पत्र—११८, आकार—६,३ × ६,१ डूच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—६७६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७४५ वि०, प्राप्तिस्थान—प० सुरेन्द्रनाथ चौबे, ग्राम—लगडपुर, पो०—पीरनगर, जिला—गाजीपुर ।

आदि—श्री गरुजानभ अथ श्री कवि विनोद लीख्यते ।

उदित उदोत जगमग रह्यौं जानु कवि श्रंसे ही प्रताप आदि रिख्यव कहत है ।
 ताको प्रतिविब देखि भगवा न रूप रेख ताहिन मो पाप पेधि मंगल चहत हैं ।
 श्रंसे करो दया मोहि प्रथकरो टोहि टोहि धरो ध्यान तोहि उमगत हैं ।
 ॥ दोहो ॥

परम पुरुख परगट वहुति त्रिभुवन रवि सम वीर ।

रोग हरण सब सुख करण उदधि जमे गंभीर ॥

:०:

:०:

:०:

गुरु प्रमाद भाखा करी समुझ सकै सब कोइ ।

और बध रोग निदान सम रवि विनोद यहि होइ ॥

:०:

:०:

:०:

संवत सतरह सैय पैतालीश वैसाख जुबल पक्ष येमी दिन सोमवार दै भाख ।
 और ग्रथ सभ मथन करि भाषा कहौ बखान ॥

जाको गछवामी प्रगट वाचक सुमती मेर ।

ताको मिम “मुनिमान जी” वासी बैकानेर ॥

श्रुत--अथ पुरा पठ कथनं ।

शाश्व दान न दान वह दान अमय निर वहि ।
भोजन है तो मुख अधिक भेज निरग्या छांति ॥
रोग हरण ताने अधिक नोभ छाटा कं देह ।
वर्षे खुज समार मं परभव मुख का गेह ॥

इति श्री खरत स्य छ प वाधनाचार्यं श्री मुमति मेर गरित निधे "दुर्नामान जी" इत
कवि विनोद नाम भाषा मप्तम छट ममाप्त ।

बधेज का श्रौषध गौद किकर गी गाजर बीज गोप्रक्ष्म बीज बध तातमगदरा तत्र मय
सब मलेणो सम सम मिथी पुरगक पंसा १ श्रौषध न जने को जिदिधि टीम मे ८ तमेदी दिरी
मासे ४ गाडो कं मासे ३ धतूरा का तामरच रदया ३ नोक माने ३ जामननाम रती ४ मे ॥

विषय--ब्रंचक ग्रय रोग और श्रौषधियां का उगन ।

संख्या २६३. पाटे लीला, रचयिता-मानिा तागज-नरेड, पत्र-८ आरार-
४३ x ६३ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)-२८, परिमाण (अनुपृष्)-६६, अणुग, मय-जग प्र-
रण, पद्य, लिपि-नागरी, लिपिकान-गजन् १-११, प्राप्तिप्रान-श्री गणेशी मय,
श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० ब० ७, पु० न० ३ ।

आदि-प्राप्त नहीं . . .

मध्य-पृ० ४

परम प्रवीन पाक करि लीन्हो । अजगनी जी जय रोहो ॥३७॥
पनवारे की रचना परी । दहत पाति नूननि की छरी ॥३८॥
लीव पाच कागदी आनि । दूना बीमक छने मछाने ॥३९॥
पनवारो कीनो परस्यो मव । जीवो जगदीवन मेरे प्रम ॥४०॥

श्रुत--

पाटे पह्यो लो जगोदा जग्यो ।
जसोदा पह्यो लो पाटे माग्यो १९१
पाय प्रनाद मोद मन आग्यो ।
जीवन जन्म मुफ्त बनि माग्यो १९२
वार वार यह माया मारि ।
मानिक महनि गोद भनि लारि १९३
कहे मुने हरि तीता गादे ।
लो हरि नाम पामपद पाये १९४

स्माप्त ॥ संवत् १७११ वर्षे मार्गश्र मास गिते एते प्रसिद्धा दिने द्वावदशमे
समाप्त लीखत चखारज मात्र गोबुत दाम सोम जी ॥

विषय--श्रीहरार की पाटे लीला का उगन ।

संख्या २६४ रमना रविद-जिदिधि हरे कानुनि लोपय प्रार-
देशी, पत्र-४, आरार-१०३ x ६३ इच पक्ति २८-२८, परिमाण ६६-६६, अणुग, मय-जग प्र-
१०६, पूर्ण रूप-प्राचीन पत्र लिपि-नागरी लिपिकान-गजन् १-११, प्राप्तिप्रान-श्री गणेशी मय,
काशी नागरीप्रचारिणी मय वाशिंग्टो, वाशिंग्टो-२०००, अणुग, मय-जग प्र-
पोस्ट-वरदह, जिला-गान्धर) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ डाक चक्रम् ॥

कवित्त

भानु के भादि को आदि करो रजनीपति लं गनना करिये ।
हर नएन ३ के भाग सो शेष रहै एक पंथ चलै न धरै डरिए ।
भूमि भयानक है दुसरे तिसरे सब सिद्धि सदा कहिए ।
शिर शत्रु हू के रन खडन को मत गुप्त विचारि सदा रहिए ॥ १ ॥

:०:

:०:

:०:

रजनीपति आदि गनै भटभादि किए ग्रह शेष वचै नव एक न ग्राम मे शत्रु सिवान कही ।
नेत्रा २ पृ ८ वचै पुर मध्य रहै मुनि ७ राम ३ महीपंथ जात सही ।
वेदा ४ ग ६ वचै गृह मध्य रहै शर ५ शेष वचै निज सैन्य कही ।
एह "छत्रपती चौहान" भनै "वलिराम प्रताप" ते सिद्ध यही ॥ ६ ॥
जन्म पंचमे सप्तमे उदय अस्त स्वर जाहि ।
"मिहिर" कहे कवि काम सो संगम लीजै ताहि ॥

श्रंत—

॥ अथ क्षेत्र पाली ॥

पूरव ते मधुमास दई अपसव्य चतुष्ट दिशा ठहरानी ।
मघवा दिशि ते पुनि मारग मास चलै दहिने गुनवास बषानी ।
भूक्ति चतुर घटिका कहिए दहिने अरु पुरिट रहै मनमानी ।
नरमध्य हजार के बीच हराज लहै न हिए भय मानी ।
द्वादस १२ पत्र अजा १ दि लिपी अप सव्य जहा रवि भादि परै ।
कोनन पांच घरी को नेवास दिशा मे अढाइ घरी न टरै ।
एन्ह की गति सव्य सदा कहिए यह चारु विचारि के युद्ध करै ।
नर केहरि है परसैन्य के बीच परै गज यूथ हजार हरै ॥

इति समर सार समाप्तम् ॥ सं १६१२ आश्विन वदी ६ आजमगढ़े ली० ॥

विषय—युद्ध मे विजय पाने के निमित्त शुभाशुभ फल वर्णन ।

संख्या २६५. गंगा पुरान, रचयिता—मुकुद, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—
८ × ६ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२४, प्रपूर्ण, रूप—प्राचीन
(जीर्णशीर्ण), गद्य, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचा-
रिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गंगा पुरान लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

श्री गुरु चर्न शरोज रज शिर पर धारन कीन ॥
सिव मुकुंद वर गुन कहे सरस्वती वर दीन ॥ १ ॥

॥ चौपई ॥

तीन नैन उपवीत भूजंगा । सदाँ पार्वती तन के गंगा ॥
सशि लिलाट मांये में राजै । भागीरथी जटाम गाजै ॥ २ ॥

॥ सोरठा ॥

संकर दीन दयाल, बिनती मेरी मानिये ॥
निज्जन होज कपाल, आसख दीजे परम हित ॥ ३ ॥

॥ चौपई ॥

सुनहो नाथ एक बिनती मोरी ॥ स्तुति कवन मति करी तोरी ॥
में मतिमंद सर्व गुन हीना ॥ कैसे संकर गुनगन चीना ॥ ४ ॥

॥ नोन्टा ॥

सदा प्रतारथ रूप मो पर प्रन् र्हा वन् ।
मत समगुन वपुरां चयं सवन् गुन विमल ॥ १ ॥

२ मध्य—चीपाई : पचमया अध्याय उद्यानी । मन मुकुट वी गुनचर जानी ॥
पूरन वक्व आदि अयिनीमा । पार ग्रह परमेस्वर मीना ॥

कुडलिया

रथ शरीर या पुरप की ताकं दृष्टी वाज ॥
रथी विराजत अतमां चक्र मनोरथ नाज ॥
चक्र मनोरथ नाज वाज अति चक्रन जही ॥
जितही की मुय परं एवि तितकी तं जाही ॥
ग्यान रज्जु जो वांघि धीर जो धरत जाप हय ॥
फठिन पथ ततार भनं निरत जंकी रथ ॥ २ ॥

अत—श्रावण, वैशाख, कार्तिक, फाल्गुन, मागशिन ये मास मङ्गल है या वारं से मङ्गल के लीजें अथ सिध ग्रहिक कुम्भ ये लगन देवता पदगने कु अटो नद चार विचार गळी वी पाईं दोषहर पुर्वं कुं अटो अर्धं पर्व की पट्ट दो उत्तर कु अटो प्रात वी दो न पट्ट दक्षिण मङ्गल मध्यान परं की दोषहर दक्षिन कु सुभ है यात्रां मेने के जागने दीपीत श्रेष्ठ है । दिवा पट्टन गुरवार की श्रेष्ठ और न मिट्टी पचक हे सतविषा धनपटा पूर्वा भा० उत्तर भा० देवती इत नक्षत्रन में काण्टन सग्रह न करनी की ये पचक फंहीनाते है । अमृत योग दीतवान वी हत नक्षत्र होय थी अमृत सिद्धि योग है : अथ प्रेम ही वरु लोभ की नृगशिा दृष्ट वी अनुगाय दृष्टयति वी दृष्ट, सुक फूं रेवती शनीश्चर की रोहनी इन नक्षत्रन से अमृत गिदि योग उपजं वी जी प्रार मनुषीयो जानि इन चिन्हन ते समझनी उचित ॥

विषय—प्रस्तुत पथ नात भज्याया में विमल । —

- १ अध्याय—ईश्वर चरणा
- २ " —नरेन्द्र (गना प्रभात) गुण ।
- ३ " —धर्म पुर ते मण ।
- ४. " —पूर्यं जन्म वी रात ।
- ५. " —तानुन (मानव पदनि तथा निरम) ।
- ६. " —नायिका भेद (नक्षत्र) ।
- ७ " —ज्योतिष ।

सख्या २६६. विषय विहारी रूप उक्तयात्तर लोचने ॥ रंभा ॥
देव्या), कागज—देवी, पत्र—३० पत्राण—६५० रंभा वि (उत्तराणी)—५० रंभा म
(अनुष्टुप्)—३७१, पूर्ण. रूप—पेठ पत्र विधि—नक्षत्री म नक्षत्री—५० रंभा म
निषिक्तान—संख्या १६२२ नक्षत्रिया—५० नक्षत्री भगवत की विधि, ५० रंभा म
हि० व० २६, पु० न० ३१२ ।

आदि—अथ विनय विहारी रूप उक्तयात्तर लोचने ॥ रंभा ॥
मदन वदन सुत गजवदन वदन एह वृत्ति मोर ॥
प्रभु उद्यम वरनन वर है अक्षर सुभ छेरे ॥ ६ ॥

कवित्त

माघ सुभ मास शुध पक्ष पाचै सोमवार सवत गुणीस आठ उग्र काज कारी को ॥

मध्य—पृ० ११५

श्री गौरीपति महाराज शंभु बडे देवा ॥
आप आहार करत विजिया को देत जनन कूं मेवा ॥
सुर नर मुनि जिहँ ध्यान धरत हँ करत निरतर सेवा ॥
रूप अनूपम वरनि सकै को निगम न पावत शेवा ॥ ७ ॥

हिमतनया शंकर की प्यारी ॥
पीतम अर्द्ध अंग मधि राजत विडद धरत अति भारी ॥
जासु नाम जन जपत निरतर तन मन पावक हारी ॥
लहत सुरूप अनूप रिद्धि सिधि कहि पुरान श्रुति चारी ॥ ८ ॥

अंत—

में तो होरी खेलूगी सुख रग जोगी रग भीना सग ॥
जोग जुगत वनायकै सजनी पीतम प्रीत उमग ॥
जोगन नाचन चायकै डफ डरु वाजन चग ॥
रुप सजगी जोग अनोखा निरमल नीर दुगंग ॥

इति श्री रूपदेव्या विरचिते रूपमजरी ग्रथ संपूर्णम् ॥ श्री माजी महाराज रू६पुर
वाला लिखायतम् । अलवर मध्ये माघ कृष्ण ५ सवत् १९२८ ॥

विषय—स० १९०८ माघ, शु० ५ सोम को विनय भूप की रानी राणावत ने मंदिर
वनवाकर उसमे ठाकुर जी को पधराया, उसी का प्रस्तुत ग्रथ मे वर्णन है ।

विशेष ज्ञातव्य—लिपि सुंदर है । पुस्तक के आदि भाग मे 'रूप मजरी' नामक ग्रथ
लिखा गया है ।

संख्या २६७. भ्रमरगीत (प्रेमरस पुजनी लीला), रचयिता—मुकुददास, जनमुकुद
(नददास), पत्र—७, आकार—६॥ x ७ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२८, परिमाण (अनु-
ष्टुप्)—१२५, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती
भंडार, श्री विद्या विभाग, काकरोली, हि० व० स० २४, पु० स० ८ ।

आदि—उद्यो के उपदेश सुनो ब्रज नागरी ॥
रूप शील लावन्य सबै गुन आगरी ॥
प्रेम धजी रस से रूप नी उपजा रमा निरसपुज ॥
सुंदर स्याम विलासनी नव वृदावन कुज ॥ १ ॥

मध्य—चोर चीत ले गए, कोऊ कहे ऐ निठुर इन्हें पातक नही लागे ॥
पाप पुन्य के करन हार ऐइ आयें ।
इनके निर्वे रुममे नाहीन कोऊ चीत ।
पप्यावत प्रानन हरे पुतन वालि चरीत ॥ ३५ ॥

अंत—तरंगनी वारी जो ।

गोपी आपु दीखाय ऐक कीनी वनवारी ॥
ऊद्यो भए माइ वारी डारी व्यय मोह कचारी ॥

अपनी रूप देखाइ के लीनी बाँहोंगे दुगद ॥
जनमुकुद पावन भयो सो यह नीला गाय ॥८५॥ प्रमत्त पत्नी ॥

इति श्री मकददाम प्रती प्रेमरत्न पुजनी लीला मधुरग ॥३॥

विषय—गोपियों के प्रति उद्धव का उपदेश ।

विशेष ज्ञातव्य—पृष्ठ मर्यादों नहीं हुईं हैं । मर्यादों के अभाव में कवि ने कविता लिखा है ।

सख्या २६८ पिगल, रचयिता—सुमुद्रनाथ (समस्त) गायत्री—ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
आकार—१० × ८१/२ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (प्रतिपृष्ठ)—१०० श्लोक
द्वय—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—हिन्दी काली-संस्कृत-विद्यापीठ, काशी ।

आदि—.....अन्त गुरु तोपि अन्त नृप एव ॥३॥

अथ गण देवता नामानि

पुह बीजल सिहि आलोग अण नूने ।
अचद मारणाओ गण अट्ट इट्ट दओ उरु उरु दिने ष आदि ॥३॥
मगण रागण दुहु मन्त हो यगण भगण हो मन्त ।
उआशीण जत दुअउ गण अदमि भये अणि लिख ॥३॥
मगण रिद्धि थिरकज यगण मुह नप अदिउउ ।
रगण मरण सयलइ जगण रवल विरुण दिउउउ ।
तगण सुगण फल गहइ मगण नह मउ टाउ ।
भगण कहइ मगल अण केउ पिगल भामत ॥
जतकहुगह दोहइ मण्डगण गण होइ पठमणउ ।
तमु रिद्धि सिधि मधइ फुररुण राउल कुत तउ ॥३॥

॥ अथ माया मक्ती वस्तुव्यता ॥

वृत्त अक इक आदि प्रम भेद उद्वृत्त नम ॥
भेद वृत्त गुनि मत्त गण मत्त वरुन दग्ग ॥
:०: .०. .०

वर्ण वर्ण के अर्थ करि तामम गुरु नृप तान् ।
तासु मत्त गुरु वर्ण मिलि "लाल मुकुट" प्रवासु ॥

अत—॥ अथो लाल लक्षणम् ॥

तिणि तुरग मति अलतह छस चठनि छदि छत ।
एमुललाला उद्वह विदल हवण भक्ष ॥
जजा आजा अद्गगे सीते मंगलो ननी ।
सधा आसा पूरती सधा दुग्गा तो ननी ॥
राग आहारदी सावासा भामता के आवासा ।
जा सगेण हा दुहु सामन्दा ॥
एा चन्ता एजा उरुचाये तालो भमी रणो ।
जादिसे मोर दापा दिजे तो दुग्गा नृपरी ॥
:०: .०. .०

अज अविज अदनि अरुम लोने अण ।
वह एममरु नृपरिह दत्त इउ उरु उरु उरु ॥
:०: .०. .०

विषय—पिंगल विषय वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ खंडित है । केवल सख्या ५ से १७ तक के पत्रे उपलब्ध है ।

संख्या २६६. सतान कल्पलतिका, रचयिता—मुन्ना, कागज—आधुनिक, पत्र—४, आकार—१०^३ × ५^३ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—६४, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस (दाता—कृष्ण सेवक मिश्र, ग्राम—सहनूडीह, पोस्ट—वरदह, जिला—आजमगढ़) ।

आदि—श्री गरुडाय नमः अथ संतान कल्पलतिका (? लि) व्यते ॥

॥ दोहा ॥

प्रथमहि नारि पुरुष की लेइ परिछा दूकि ।
फिरि पीछे सहा युक्ति करि करं परं सी सुकि ॥
सेत सर्प या मूत्र मे दूनो देइ भिगोइ ।
तिसरे दिन जामे नही दोष जाहि मे होय ॥
वध्या सात प्रकार की सुनहु तासु कर नाम ।
ताकी विधि जो लिपत है करं साइ सिद्धि काम ॥ ३ ॥

॥ चौपाई ॥

वध्या प्रथम नाम है सिसिर । उदमा दूजे सुनिए तिसर ॥
यहै माली अनीली चौथी को । चर्चा दीप चई को टीको ॥
छटई क्रम सतई संतानी । साती नाम क्रम ते जानी ॥
लक्षण पृथक पृथक सकेरा । कहत उमा सो सुनहु निवेरा ॥
अंत—होई है सुपुत्र सुंदर जाहिर जहान मे ।
यह वात सत्य मानो आइ “मुन्ना” के मन मे ॥

:०:

:०:

:०:

वनवाय के सोहाग सोठि नारि पाय जब ।
इससे किए से वेगि तासु रोग जाई सब ।
तव सुद्ध होय चौथे दिन तव नहाइ कै ।
फिरि सो विलास करं मर्द संग जाइ कै ।
लोहवान कोटि आओ इलाज श्री जीज पुनरनवा ।
लेप वाटि लिंग लावं यह तीनों दवा ॥

:०:

:०:

:०:

—अपूर्ण

विषय—वध्या रोग की औषध आदि का वर्णन ।

संख्या ३००. मेघमाला, रचयिता—मुनि मेघराज, (स्थान—फगवाड़ा), कागज—देशी, पत्र—५३, आकार—८ × ६^३ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—७६५, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८१७ वि०, लिपिकाल—स० १९३६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री पं० रामनुदर पाडेय, ग्राम—पाडेपुर चक, पोस्ट—बस्त्रा, जिला—जौनपुर ।

आदि—श्री श्री गरुडाय नमः ॥ अथ श्री ऋडली मेघमाला लिप्यते ॥

॥ दोहा ॥

परम पुरुष घट घट रम्यो ज्योति रूप भगवान ।
सकल सिद्धि सुख देन प्रभु नमो मेघ घर ध्यान ॥ १ ॥

बाहन जाको हूँन मित श्री संग निच नीय ।
 शिवा भवानी शारदा मवल एक नहि दीय ॥ २ ॥
 चरण नमो युग तानु के श्रम पाणि वटाट ।
 तिस प्रसाद इम ग्रथ वो रचो मवल मुउटाट ॥ ३ ॥
 :०: :०: ०

॥ दोहा ॥

जोतिश ग्रंथ अपार मग जानत हुक जगदीप ।
 मानुष जन जानत नहीं ताते मो मनी दीम ॥ ६ ॥
 ॥ नोट ॥

जोतिश छनो अपार मूच आदि पन्नन जगत ।
 इह मह समाश्रचार काल दुःखार्ताहि जिधि नमुन ॥ ७ ॥
 ॥ दोहा ॥

जोतिश ग्रंथ नमुद्र है तापी तं इव वंद ।
 मेघमाल मेघाहि रची प्रगटाहि ज्यो जग नंद ॥
 ॥ चौपाई ॥

मेघ विचारत प्रथमे वाय । जंमे टकी वही वनाट ।
 काल सुकाल तनी यह वात । गुर वृषाते कर विख्यात ॥ १३ ॥
 कातिक आहि जु देषिए आनि मास जु शत ।
 नीम धरी इह समी की जानो मव विरगत ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

अथ कातिक फल ॥ दो० ॥

कातिक सुदि दुतिया दिने चउत रद्र जो मान ।
 पश्चिम दिशि वापर करत ती मेटत जगबाल ॥
 :०: :०: :०:

अथ मघमासफल ॥ डो० ॥

मघमासदी जो पंचमी घटा होत पर घोर ।
 वरपत वरवा माग मे चारि नाम जल घोर ॥ २५ ॥
 :०: :०: ०

अत—॥ इति ग्रंथ समाप्त लोतावती उट ॥

यह देम जलंधर सोभासुंदर नाम मुद्रावादी बहो ।
 शुभ दान पुन्य की वही डीर है मानो मुग्धुन जानि बहो ॥
 तामहि पंडित नर सोभं पधि भारी गीत व जल न नैररयो ।
 पर पर मंगल पार जुवोर्ता तामहि परत एह वरयो ॥ ४६ ॥

॥ दोहा ॥

सकल रिधिपर सोभ है पतावता एम पार ॥
 तहां मेघ कविता करी पाटी विर मनि पान ॥ ४७ ॥
 भूर मेल जो चौधनी वनवाटा मो गद ।
 चतुर सैन पर सोभ है लिट मनि उरत कर् ॥ ४८ ॥
 सब पविजन मो वीरवी कर मेर एव जेहि ।
 परो सुध इस प्रथ की वही मनि निरि मीर ॥ ४९ ॥
 :०: :०: ०

समुन परो इमवा शुद्धिपर । मेघ मनि दे. विरगत ॥
 काल सुवाताहि तनुवंधार । सब रूप दाने वही विरगत ॥

॥ चरपटछंद ॥

श्री जटमल मुनिस जी सब सब साधन राजा ।
परमानंद ससौ जहे गृथन गुन साजा ॥
सदानद भयो शिष्य ताहिते उपमा भारी ।
चौदह विद्या जुक्ति सुगुरु के अज्ञाकारी ॥६५॥

चौ० तामु शिष्य नारायण नाम, ताको शिष्य मुनरोचम, तिनकी दया भई मुझ पर ।
मुनि ससि वसु महि जान विक्रमदित संवत आषत ।
कातिक सुदी गुरुवार पंचमी तिथि सुभभाषत ॥

इति श्री मेघ माल मुनि मेघराज विरचिते . . . पंचमोध्याय भडली ग्रंथ समाप्तम सुभ
संवत् १९३९ ।

:०:

:०:

:०:

विरय--दिन, माम और वादलो को देखकर वर्षा का वर्णन ।

रचनाकाल

मुनि ससि वसु महि जान विक्रम दित संवत आषत ।
कातिक सुदी गुरुवार पंचमी तिथि सुभ भाषत ॥

विशेष ज्ञातव्य--ग्रथ पूर्ण है । केवल चौबीसवाँ पत्र लुप्त है ।

संख्या ३०१क. ऊपा चरित्र, रचयिता--मुरलीदास, कागज--देशी, पत्र--३३,
आकार--५ $\frac{1}{2}$ x ३ $\frac{1}{2}$ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)--६, परिमाण (अनुष्टुप्)--१६१, पूर्ण, रूप--
प्राचीन, पद्य, निधि--नागरी, लिपिकाल--संवत् १८८८, प्राप्तिस्थान--आर्यभाषा पुस्तकालय
(याज्ञिक मठ), नागरोप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि--श्री गणेशाय नमः ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ अथ ऊपाहरन लिख्यते ॥

सब संतन की आज्ञा पाऊ । सत मन सत गुरु को सिर नाऊ ॥ १ ॥
सारद मोहि बिसरि मति जाइ । भूले अक्षर देहु ब्रताइ ॥ २ ॥
जे जे कृष्ण हश्मणी राणी । रटत परद मुनी के मन मानी ॥ ३ ॥
ऊखा अनरद को संजोग । चित दे सुनो कटे जो रोग ॥ ४ ॥
बाणासुर प्रहेलाद को पंती । बल को सुत लोचन को नाती ॥ ५ ॥
जिनकी उतपति कुवरि भई जो । जिनके निमति अनग्र सुत आई जो ॥ ६ ॥
जनमत अग्र्य मदीए जनाई । असुर भुजा कापी अकवाई ॥ ७ ॥
एरे पडित चतुर विवेकी । लगन घडी जन मोती देखि ॥ ८ ॥

मध्य--

जीनसो अरस परस ह्वै बोले । अतर कमल किवारी पोले ॥२०२॥
राधावर एकननी कुत्रजावर । धरनीधर मुरलीधर गिरिधर ॥२०३॥
सदा रहित हमारे मस्तक पर । विप्रत सुबत वरनी उनमाना ॥
कपा करी कछू गुरु भगवाना ॥२०४॥

गुरु भगवान कृपाकरी दानी होत प्रकास ।

कृष्ण गुन ऊखा अनरद के वरनत मुरलीदास ॥२०५॥

इति श्री ऊखा चरित्र सपूर्ण ॥ शुभ भवत् ॥ हरि ॥

विषय--ऊपा अनिरुद्र की कथा का वर्णन है ।

विशेष ज्ञातव्य--प्रस्तुत ग्रथ चवभुज दाम कृत 'मृग कपोत की लीला' के साथ एक हस्त-
लेख मे है ।

मन्त्रा ३०१४ सुखदेव लीला, रत्नप्रिया—मन्त्रालय—दोनों १०—११,
 आकार—५३ × ८३ उच्च पक्ति (प्रतिपद्य) —= परिमाण (परमाणु) —= १०० मं १००
 प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राणिकान्त—प्राणिकान्त प्राणिकान्त (प्राणिकान्त प्राणिकान्त प्राणिकान्त)
 नागरीप्रचान्तिगी मन्त्रा, कारागरी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ श्री सुखदेव लीला मंत्रान्ते ॥
 सुमरि सुमरि गोविन्द नूमाह । सुखदेव के नाम पाई ॥
 गूर सतन मोह धर्या लई । मन्त्री लाल कल्या लई लई ॥
 समर शल्या दिनन गरिय । निर मोह दीनी सुखि प्रिये ॥
 गवरी नेहेन गणेश मनोज । सुख मान्दा धर्या पाइ ॥
 एक नमं नारद मुनी आह । पावननि उठि दानन पाह ॥
 दरसन परमन पुनन भये । जठे पुनी पाप हं लये ॥
 महादेव अस्नल कू धये । पावनी धर्य दयलये ॥
 तुमरे कंठ रह्या है रत्नायी । गवत यथा हम परगट लयी ॥

अंत—
 य लीला सुखदेव परवाना । तीये मुनं होय बनाना ॥
 चीत दे मुनं पीती दे गावं । जो नर बटु मोई बन पाना ॥
 श्रमर कया सुखदेव पी टनी भट्ट परगाम ।
 सीरीसन चीत्रते ताग गवन भपने मुरलीराम ॥
 असन गईयो ॥

इती श्री सुखदेव लीला संपूरन वाचं मुनं लीनं राम नाम पांधी वाचं मुनं हुण्दार्ह ॥

विषय—श्री सुखदेव मन्त्री लीला का प्रभाव ।

विशेष ज्ञातव्य—रत्नाग्राल उचितरिज लीला । लिपिपाल भी प्रभाव है । रत्नाग्राल-
 कृत 'करुणाभरण' प्रस्तुत ग्रंथ के नाम पर प्रभाव है । रत्नाग्राल 'रत्नाग्राल' (रत्नाग्राल)
 और गुरु महिमा (सुखदेव) नामक ग्रंथ भी लिखित है ।

प्रस्तुत ग्रंथ के साथ एक लीला नाम के लिखितरिज पर प्रभाव है —

- १ करुणाभरण नामक—रत्नाग्राल नाम
- २ श्याम मन्त्रा—नरगण नाम
- ३ गुरु महिमा—सुखदेव नाम

पहले ग्रंथ को छोड़ पीछे ग्रंथ ब्रह्म लीला नाम के ग्रंथ लिखे गये हैं । इनके लिखितरिज हैं लीला
 दिष्ट है ।

संख्या ३०२. श्याममन्त्री रत्नप्रिया—मन्त्रालय—दोनों दो—१०—११
 ५३ × ८३ उच्च, पक्ति (प्रतिपद्य) —= परिमाण (परमाणु) —= १०० मं १००
 पद्य, लिपि—नागरी, प्राणिकान्त—श्री गणेशाय नमः ॥ प्राणिकान्त प्राणिकान्त प्राणिकान्त प्राणिकान्त प्राणिकान्त
 व० २३, पु० सं० ६ ।

आदि—श्री गोपीजन दत्तभारते नमः ॥ राम दत्तभारते रत्नप्रिया ॥
 धर्यात धर्यो धर्यात धर्यो धर्यात धर्यो धर्यात ॥
 धर्यात धर्यो धर्यात धर्यो धर्यात धर्यो धर्यात ॥
 धर्यात धर्यो धर्यात धर्यो धर्यात धर्यो धर्यात ॥
 धर्यात धर्यो धर्यात धर्यो धर्यात धर्यो धर्यात ॥

नगर तमारो मनरह मारचो ॥

दर्शन विना दुःख पात्रं भुनत मोरली दास आयो मेरे चाईआ ॥ १ ॥

मध्य—

माह मनकी मनहि जाने मनहि मन करवट वही ॥

देखो री सखी हम मरे न जीव ॥

जैसी परी तेसी सहि कसन कस सीस धमके ॥

सीत भेल्यो सान के पेले दाख दिखाय आछे जहर दीयो हर जानके जरन भिटगर नीज कतज भइ ॥

कहाँ कहा वाते भइ भनत मुरलीदास बल जाज मनही मन करवट वही ॥ ८ ॥

अंत—हर आये मेरे मन भाये मुत्तियन चोक पुराइयां ॥

अठसठ तिरथ नाहे को सोझहि फल वारोमासी गांड्या ॥ १३ ॥

विषय—वियोग और सयोग शृंगार पूर्ण वारामासी ।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख में पृष्ठ मध्याएँ लगी हुई नहीं हैं । आदि में अन्य पद और अन्त में पत्रों में भी अन्य पद लिखे हैं । मध्य के पत्रों में यह वारामासी है । पुस्तक जल से भीगी हुई प्रतीत होती है ।

संख्या ३०३. भागवत भाषा पंचम स्कंध, रचयिता—मुरलीधर, कागज—देशी, पत्र—५५, आकार—१० $\frac{3}{4}$ × ६ $\frac{3}{4}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुपुष्प)—१५४०, खडित, रूप—प्राचीन (अत्यंत जर्जर), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी ।

आदि—श्री गणेश . . . मः ॥ अथ भागवत पंचम स्कंध भाषा लिप्यते श्री मुरलीधर कृत्य ॥

॥ छप्यै ॥

परम जोति पूरण प्रकास भूतल अकास गति ।

नित्य शुद्ध चैतन्य अधिक सूक्ष्म असेप मति ।

जलयल रह्यो समाइ लोक लोकनु कौ वासी ।

आदि अनत अगाध अखिल व्यापक अविनासी ।

नायक अखंड ब्रह्मंड कौ वहै जसोमति सुत भयो ।

सुमिरतु मुरलीधर जोरि कर प्रतिपालक जिनि पन लयो ॥ १ ॥

॥ सोरठा ॥

वरनो श्री सुकदेव करी वृष्टि जिनि अमृत की ।

परम भागवत भेव जगत क्रतारथ कौ कियो ॥ २ ॥

॥ सर्वैया ॥

जाहि चिरंचि समाधिनि साधि अगाध अनंत न भेद वतायो ।

जाके लिये सय सिद्ध प्रसिद्ध सब धरयो ध्यान नहीं मन आयो ।

जाकहु वेदहु सोधि रहे अनुमान हीं तें सुमिरचौ गुण गायो ।

सो मुरलीधर श्री सुकदेव परीछत कौ परतछि सुनायो ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

नवल सिंह नृप नै कही मुरलीधर कविराइ ।

स्कंध पांच यो भागवत भाषा देहु बनाइ ॥ ४ ॥

॥ पवित्र ॥

कविनि की कामना पुजायन की मुग्धन कामिनि के लानि काल कालकाल ।
मित्र कुमुदनि के विकामिदे की कल्पानिधि अग्निम तीरिनि की कालकाल ।
वीरनि मे महावीर नृपति नयनांगल रतिगन माधु माधु रति रति ।
ज्ञानिनु मे देपियनु पूरा ज्ञानमान पुनि मुनिनु की प्राणिनि की मुनिनु की प्र ।

मध्य—॥ कुटलिया पडरी ॥

हैं मात्यदान पहिली बदानि । पुनि कुनीय कालमादि कालनि ।
पुनि नील निवध ए कहन नाम । इ कह पुनु कालनि प्रम ॥१२॥
इहि भाति कहे नय पठ मानि । पुनि कहे सुनि कालि प्रमान ।
अर मेर अद्रि के प्राग पान । किनि कालि प्रम कालि प्रमान ॥१४॥
हे मरर पहिली पठ देपि । पुनि कुनीय मेर मरर निधि ।
पुनि तृतीय सुपारग कुमुद श्रीर । कालनि कालि निधि की प्रमान ॥
हैं अयत महम योजन प्रमान । प्रान पुन एव निधि के प्रमान ॥
तिनि ऊपर है क वृक्ष कालि । जिमि कालि निधि कालि कालि ॥

:०:

॥ छंद हीं नीत ॥

पंचम रवध लु कोड मुनिनि की निधि काल ।
तावी तनक नहि होनि याधा यथापनु की प्राण ।
जो पाठ यादी काल विनिनिन परम भन मुनि ।
इहलोक अर पराोक मे कालि कालि कालि ॥१५॥

अत—॥ अथ अथ काल्यमाह ॥ दोहा ॥

नयलमिह नृप नागन हि काल पाठ काल ।
रफंध पाच शी कालयन काली कालि कालि ॥१६॥
जो कोड या अर की कालिनि कालि कालि ।
ताको विधि कालि की काली परम कालि ॥१७॥

:०:

हरि... काल्यति कालि की काल कालि कालि ।
तनमान दान कालि कालि कालि कालि ।
तिनि हेत मुस्तीधु कालि की कालि कालि ।
पंचम रवध कालि कालि कालि कालि ॥१८॥

श्रीरस्तु... ती कालयन यदि क कालि कालि कालि कालि कालि कालि ।
बहादुरि शुभं भूयात् ॥

विषय—भागवत पत्रम कालि कालि कालि कालि ।

विशेष ज्ञातव्य—कालि कालि कालि कालि कालि कालि कालि कालि ।

६, ७, कालि कालि कालि कालि कालि कालि कालि कालि ।
परतु उन स्थान का कालि कालि कालि कालि कालि कालि ।

सत्या ३०४क कालि कालि कालि कालि कालि कालि कालि कालि ।

कालि—आधुनि, कालि—६० कालि कालि कालि कालि कालि कालि ।

(धनुष) —१०५६ पुन कालि कालि कालि कालि कालि कालि ।

दि०, विपिनाल—१०५६ दि०, कालि कालि कालि कालि कालि कालि ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ नल चरित्र लिप्यते ॥

॥ छडपय ॥

मुप मतंग उत्तग रग चर्चित सुरंगवर ।
सुड दड सिदूर भूरि पूरित प्रचंतु कर ।
जगमगात दुत्ति दसन रसन मधि वाना राजे ।
मुरलीधर शशिवाल भाल पर सदा विराजे ।
सवत सुरेश गधर्व गन गुन मडित पडित सरन ।
नवनिद्धि वृद्धि दायक वरद गननायक वदहु चरन ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

एक समे उरमे उठी कठिन विरह की लाय ।
जंतो ताहि वुक्काइये तेती वाढति जाय ॥ २ ॥
अकसमात सतसग तें खुनी कथा दे कान ।
वदुत नृपति की विपति चुन समुभन लागे प्रान ॥ ३ ॥
आपधि कौ करिवौ उंचित जसे दीरघ रोग ।
तेसही विपदा परें धीरज धरिवौ जोग ॥ ४ ॥

मध्य—

॥ छप्पय ॥

एक आपु कछु देहि और पे नाहि दिवावे ।
एक दिवावे दानु देन में नहि मनु लावे ।
एक दिवाहि देह वैन मृदु बोलि न जाने ।
“मुल्लिधर” इहि भाति दान गुन गनन वखाने ॥
कछु देहि दिवावेहि इते पर मधुर वचन मुप पर लसाहि ।
गुन सहित तीन ससार मे कहूं कहूँ सृपुरुष वसाहि ॥६८॥

॥ सबैया ॥

हेरत हूँ नहि हेरत हूँ हम बात कहें तुम बोलत नाहीं ।
भागत में मन रूपी करी चरचा मे लये छल की परछाहीं ।
पूछत हूँ नलराय तुमे तुम झूठ की बीथी कित्ती अवगाहीं ।
चंद ती रापत एकही अक अनेक कलंक वसे तुम मांही ॥६९॥

॥ तोमर ॥

यह चुनत नृप नलराय । लिय ललित नैन नवाय ।
सुरराज सौं यौं वैन । हूँनि कहि उठे सुपदेन ॥७०॥
हम हौंहि तौ तत्र दूत । तुम देहु शक्ति अमृत ।
लहि चहै मंदिर जाय । नहि नैक होय लपाय ॥७१॥

॥ दोहा ॥

तवें मुरन मिलि वर दियो तुम्हे लपे नहि कोय ।
हम चहुँन मे एक की दमयंती तीय होय ॥७२॥

:०:

:०:

:०:

अंत—वेद भूमि वसु सति लपो सवत माघ सुमांस ।

कृष्ण पक्ष कुज सप्तमी कीनी ग्रंथ प्रकास ॥८८॥

अथ कवि कुल वर्णनं ॥ दुमिल छंद ॥

विभ्र माथुर वंश भारद्वाज अगदयो आय ।

पिता दिनमणिया पढे ज्योतिष भए ज्योतिष राय ॥

पुत्र मेने पढी कविता भयो रघुवन्दान ।
 नाम मुरलीधर दियो उन कियो जगत प्रकान ॥८६॥
 दई करिके जीयिका उन गेहूँ दिरली ईन ।
 भयो श्रव उत्पात उनके वम विश्वायाम ॥
 ह्वै गयो है राज श्रारे गई गुन की चाह ।
 रहत वेठयो सदन रघुवर कर्त महज नियाह ॥८७॥

॥ सर्वथा ॥

जिनको जनम भरि बनज न करि आयो साह मन भायो संधानू ताकीको पर
 ह्वै सके न पच परपचहूँ न करि जान्यो नाभयो तिनहूँ सी रदाद मुषे बह्योन पर ।
 देवन श्राधयो कोऊ वृत्त नहि साधयो "मुरलीधर" रघुवर सोच एते पं रचै हरे ।
 ऐसे ऐसे कायर कपूतन के पेटन को पूत दशरथ के सपूत दिन को भरै ॥८९॥

॥ गीतिका ॥

पुरिया सदा तें बसत आए श्रागरे सुभ्रथान । टोला मथुरिया कोटि के छिन निवट तनयाफ न ॥
 श्रबलो वन्यो है वास ह्वाही कृपा रघुवर पाय । नल भीम जाकी वथा वरनी ह्ये ह्ये रट य ॥

:०:

:०:

पवित्रता सरीर मे सदा बनी रहे सुभाय । अनेक भोगभान पुत्र भिन्न के लहे बनिय ।
 बडे प्रभाव ठौर ठौर शम्भु को प्रसाद प्राय । नलेस भीमजा वथा पटे तुने कु चित लाय ॥८६॥

इति श्री मिश्र मुरलीधर विरचिते नलोपाध्याये नल दम्पती रघवेशाम्भुनो नाम सौ दशो
 विलासः ॥१६॥ समाप्तायद्यथश्च ॥ सवत् १९१० मिति माघ शुक्ला १२ गुरो लि० भोक्तानाय
 पठनार्थं बनस्याम ।

विषय—महाभारत के आधार पर नल चरित्र वर्णन ।

रचनाकाल

४ १ ८ १
 वेद भूमि वसु सति लयी सवत माघ सुमात ।
 कृष्णपक्ष कुज सप्तमी कीनी ग्रथ प्रकात ॥८८॥

सख्या ३०४ख रामचरित्र, रचयिता—मुरलीधर, कागज—आधुनिक गण्डे पत्र—
 ६२, आकार—१२ X ७ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३८, परिमाण (चतुष्टय)—१५५,
 पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—मभवन १=१८ त्रि० तिगिरान—
 सवत् १९०६, प्राप्तस्थान—भारती भवन (पुस्तकालय), ललाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ छप्पय छद ॥

विघ्न विनासन हेत जिगहे द्रष्टादिक ध्यावें ।
 जिनके गुन गन गनत शेष नहि पारहि पावें ॥
 शंकर सुत कुल कलश कठिन कर्मप कुल नाशें ।
 सेवक सतत जानि सुमति दै वृद्धि प्रसारें ॥
 सुमिरत "मुरलीधर" जोरि कर गनपति चिन्तौ चित धरें ।
 मुष चरित राम चाहत कह्यो सबल प्रथ पूरन दरें ॥ १ ॥

:०:

:०:

:०:

श्रवध पुरी के भूप भए दशरथ उदार मनि ।
 जोति लई दिशिचार जो क्षपनी भुजानगति ॥

जग के जिते नरेश रहै कर जोरे ठाढ़े ।
सिधु पारहु चार तेज ससि जिनके वाढ़े ।
जगमगत जग मे राज अति महादान षोडश दिये ।
“मुरलीधर” भूपन भूमि के कोटि जग्य जिन जग किये ॥ ३ ॥

मध्य—भुजग प्रयात छवेन

दसग्रीव के चित्त मे रोस वाढ्यो । बड़े जोर सौ अक्ष प्रत्यक्ष काढ्यो ॥
अब वा कपी कौ करी प्रानहीनो । इहा आय वान इतो जोर कौनी ॥७५॥
तब अक्ष सोहै लिये रक्ष आयो । हनुमान कौ बोल दाकौ सुनायो ॥
अरे मूढ तें क्यों कियो सोर भारी । रुहा जायगौ साग हेरी हमारी ॥७५॥
तही रक्ष दोरचौ लिये रक्ष सेना । हनुमान ठाढौ किये कूढ़ नना ॥
जही भाल कौ एक भाला चलायो । लियो हाथ सौ अंचि के सौ गिरायो ॥७७॥

∴:

∴:

∴:

॥ दोहा ॥

यह रावन कानन सुनी लियो अक्ष कौ मारि ।
तब चित्त चित्त मे करी लियो प्रहस्त पुकारि ॥८२॥

॥ छंद हरिगीतिका ॥

यह सुनी रावन सिधु पर रघुनाय आये सैन लै ।
मग वालि मारचौ सग अगद राज सुष सुग्रीव लै ।
कपि पुंज कीनो सोर भारी चहुँ अद्रिन आयकौ ।
लगूर दोरे फिरत दिसि दिसि रहे जहँ तहँ छायकौ ॥ २ ॥

अंत—॥ अथ कविवश वर्णन ॥

गगा जमुन के मधि गभीरां पुरीन कौ गाऊ है ।
वहु कोट उंचौ सुधर नीकौ परम उत्तम ठाऊ है ॥
शुभ सरोवर तट चिराजत सिद्ध दीरेश्वर थली ।
उन अधिप कौ धर्मज्ञ कीनी कृपा की भातिन भली ॥
माथुर बस जायकौ तहाँ सर्ज सदन सुहावने ।
मुनि ते लसत है निगम आगम गुनन ज्ञान बढावने ॥
उनही मे परमानंद प्रगटे पढ़ी विद्या जिन भली ।
गुनगन सुनत ही बोलि लीनौ आगरे अकवर वली ॥
चरचा भई दरवार के मधि रीझि कौ अकवर कह्यौ ।
हम कह्यौ तुमहि सतावधानी आन मे नहि गुन लह्यौ ॥
वकसीस कीनी बहुत उनकौ मिश्र की पदवी दई ।
उन वास अपने ग्राम राप्यौ चाकरि लाकरि लई ॥
उनके सनाभि कपूरचंद तिन वास अगलपुर कियो ।
टोला मथुरिया कालिदी तट सदन बसिबे को लियो ॥
वे बसे आय कुटुब के जुत लील गुन मति पानि हूँ ।
सबहीन जान्यौ सवन मान्यौ सवन सौ हित वांनि है ॥
तिनके तनय “पुरुषोत्तम” सु जिनकी सुनी कपिता अति भली ।
दिल्लीस के सेनापती की चाकरी तिनकौ फली ॥
वे मिले साहिजहा दली सौ मिली वकसीम प्यार मे ।
सोभा बड़ाई साहि जिनकी कविन के दरवार में ॥

तिनके भये सुत "प्रेमराजन" चाकरी चित्त मे धरी ।
मिलवी करे सज्जननहीं सौ जीवका महर्षे वरी ॥
तिनके सु "पृथ्वीराज" तिनने लह्यो गुन अरु ग्यान है ।
सबही सराहे सुधरता कौ परम बुद्धि निधान है ॥
तिनके तनय "दिनमणि" भए जिन ग्रथ ज्योतिष के पढे ।

..... ॥
तिनके सुतन मे भयो "मुरलीधर" कछुक गुनवान है ।
कवि कौविदन ने कृपा करिके लई कविता मानि है ॥ ४ ॥
दिल्लीस महम्मद साहि सौ मिलि चाकरीहू वरि लई ।
औरो अमीरन कृपा करि मन रौकि ऊँ चकमिन दई ॥
यह कथा अपनी कही मे अरु ग्रथ कौ कारन दह्यो ।
इक वार ममयो भयो ऐसो थिरन काहू कौ लह्यो ॥
पश्चिम दिशा ते प्रवल आयो शत्रु शौर दहाय कौ ।
उन दावि लीनो राज दिल्ली भर्ज नव नय पाय कौ ॥ ४६ ॥
उन किते मारे किते लूटे किते कीने वदि मे ।
केतेक अपने सग लीन फसे वाफो फदि मे ॥
वह गयो ह्वाहि दुवान के मधि राज औरे ह्वं गयो ।
सब मिटि गई गुन ग्यान चर्चा प्रपन जग सिगरो भयो ॥ ४७ ॥
तव चित्त आई हौहू चाकर चरित वरनी राम कौ ।
सभ कहु जौ कृपा करिहै तो सब ही काम कौ ॥

:०:

:०:

:०:

८ १ ८ १

वसु ससि वसु ससि मे लयो संवत कातिक मास ।
शुक्ल पक्ष एकादशी रवि भौ ग्रथ प्रकाश ॥ ६४ ॥

हरिगीता छप्पय

यह चरित्र..... जल है ॥ ६५ ॥

इति श्री मन्मूर्ति मिश्र मुरलीधर चिरचिते श्री रामचरित्रे श्री राम गुणानुवाद वर्णनो
नाम चत्वारिपतमः प्रभाव. ॥ ४० ॥ सगाप्तोय ग्रथ अ. . . संवत १९०९ वर्ष अशाट भासत
८ भौम वासरे लिपिल चौधे भोलानाथ पठनार्य पठित धनश्याम लालस्येदम् ॥ पोथी नाम चरित
की लिपी विचारि प्रचारि । भूल चूक करिहै क्षमा बुधजन सुधर निहारि ॥

श्री रामचद्राय नमो नम. ॥ श्रीरस्तु ॥

विषय—श्री रामचरित्र वर्णन किया गया है । ग्रथ मे निम्नलिखित ४० प्रभाव हैं —

१	प्रभाव—दशरथ यज्ञ वर्णन	पत्र १ नं २ तर
२	—दशरथ पुत्र जन्म	" " ४ "
३	—विश्वामित्र समागम	" ४ " ६ "
४	—विश्वामित्र यज्ञ रक्षा वर्णन	" " = "
५	—श्री राम जनकपुर आगमन	" = , ११ "
६	—दशरथ जनकपुर समागम	" ११ , १४ "
७	—चत्वारि राजकुमार विवाह वर्णन	" १५ , १७ "
८	—दशरथ विदा वर्णन	" १७ , १८ "
९	—दशरथ गयोध्या आगमन	" १८ , २० "

१०	," —सीताराम लक्ष्मण वन प्रस्थान वर्णन	," २० ,, २३ ,,
११	," —भरत समागम वर्णन	," २३ ,, २६ ,,
१२	," —अयोध्या कांड समाप्त	," २६ ,, २७ ,,
१३	," —श्री राम पंचवटी निवास	," २७ ,, २७ ,,
१४	," माल्यवान पर्वत समागम सुदरकांड प्रारंभ	," २८ ,, ३१ ,, पत्र ३२ तक
१५	," —श्री राम सिंधु आगमन वर्णन लक कांड प्रारंभ	," ३२ से ३३ तक
१६	," —सिंधु सेतु वधनाम	," ३३ ,, ३५ ,,
१७	," —रावण प्रति दूत सभापण	," ३५ ,, ३६ ,,
१८	," —लका अवरोध वर्णन	," ३६ ,, ३८ ,,
१९	," —रावणागद सवाद	," ३८ ,, ३९ ,,
२०	," —सेना द्वंद युद्ध वर्णन	," ३९ ,, ४१ ,,
२१	," —माया युद्ध वर्णन	," ४१ ,, ४३ ,,
२२	," —धूम्राक्षादि प्रहस्त वधनाम वर्णन	," ४३ ,, ४५ ,,
२३	," —रावण युद्ध वर्णन	," ४५ ,, ४६ ,,
२४	," —रावण कुभकर्ण सवाद	," ४६ ,, ४८ ,,
२५	," —कुभकर्ण वध वर्णन	," ४८ ,, ५० ,,
२६	," —रावण पुत्र युद्ध वर्णन	," ५० ,, ५२ ,,
२७	," —इंद्रजीत वध वर्णन	," ५२ ,, ५७ ,,
२८	," —रावण विरूपाक्ष वध	," ५७ ,, ६० ,,
२९	," —सीता आगमन वर्णन	," ६० ,, ६३ ,,
३०.	," —राम भरद्वाज आश्रम आगमन लकाकांड समाप्त	," ६३ ,, ६५ ,, ६६ ,,
३१	," —भरत आश्रम आगमन	६७ ,,
३२	," —राम राज्याभिषेक वर्णन	," ६८ ,, ६९ ,,
३३.	," —रामराज्य वर्णन	," ६९ ,, ७६ ,,
३४	," —सीता वालमीकि आश्रम आगमन	," ७६ ,, ७८ ,,
३५.	," —लवणामुर वध वर्णन	," ७८ ,, ८० ,,
३६.	," —शत्रुघ्न मूर्छा वर्णन	," ८० ,, ८२ ,,
३७.	," —लक्ष्मण मूर्छा वर्णन	," ८२ ,, ८५ ,,
३८	," —अश्वमेध यज्ञ वर्णन	," ८५ ,, ८८ ,,
३९	," —नृपवध वर्णन	," ८८ ,, ९० ,,
४०	," —राम गुणानुवाद तथा कविवश वर्णन एव माथुर चतु- र्वेदी वश वर्णन	," ९० ,, ९२ ,,

रचनाकाल

बसु ससि बसु ससि में लखी संवत कातिक मास ।

शुक्ल पक्ष एकादशी रवि भी ग्रंथ प्रकाश ॥६४॥

संख्या ३०५. वाराखंडी, रचयिता—मोकमदाम, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—७ $\frac{3}{4}$ X ५ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८३५ वि०, लिपिकाल—सं० १८४० वि०, प्राप्ति स्थान—हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, इलाहाबाद ।

आदि—ॐ श्री गणेशाय नमः ॥

सवत अठारे सँ पंतीसोतरा मगनिर वदी तिय दूज ।
सुभ दिन सुकरवार कीं लिपूं सुरसुती पूज ॥ १ ॥
सभरपुर बावन जग पधान ।
सुखवासी जोगीपुरा छडेल नगर सो थान ॥ २ ॥
प्रथमं सुमरीं सुरसुती फुरत देह निहार ॥
जननी जनपं दया कर रिध सोध की दातार ॥ ३ ॥

:०: :०: :०:

मध्य—अपनातो कोइ हे नही स्वारथ को ससार ।

“मोकमदास अपाहजी” सतगुर पार उतार ॥ १० ॥

:०: :०: :०:

सुर नर मुन धावे तुभे विह्या निगम विचार ।

“मुकमदास” अधीन हैं सतगुर पार उतार ॥ १४ ॥

“कके” करता ये सकलघर माही । दिन हरभगत मोकत हों नाही ॥
करो याद गोविंद गुन गावो । मानप जन्म पदारथ पावो ॥
सत सोइ चरनन नित ल्यावे । वस वंङुठ मुकत फल पावे ॥
मोहकम हर को भगत पियारी । जो सुमरे सोइ अधिकारी ॥ १६ ॥

“पवे” पोल कपट मन भाई । दुभधा दिल से देह वहाई ॥

अंत—छछे छत्रपति राजा है सोइ । जाकी सरवर करं न कोई ॥
हतो कछुवन ज्ञान वृध मम दइ विधाता । सुमरो गुर गनेस धन गुरसुती माता ॥
दीनदयाल दया कर भाई । तव यह वारापडी बनाई ॥ १९ ॥

॥ दोहरा ॥

भगतहेत वारापडी पडे सुनं चित लाय ।

सतगुर के परताप से कोट पाप मिट जाय ॥

डाडे राउ करं कछु हाय न आये । गहनत करं मजूरी पावे ॥

दुवधा दिल से दूर भगाये । जब सतगुर का दरगन पावे ॥

वारापडी सुनो मन लाइ । वाटे पुन्य पाप छो जाइ ॥

इति श्री वारापडी सपुरन सवत १८४० आतुन वदी १३ श्री सुभमस्तु ॥ राम ॥ राम ॥

विषय—‘क’ से लेकर ‘क्ष’ तक के प्रत्येक अक्षर पर रचिता रचकार भगवन्नृत्ति वा वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल सवत् १८३५ और लिपिकाल सवत १८४० है ।

प्रस्तुत रचना के साथ ‘सुभिमणी मंगल’ भी लिपिवद्ध है, जो अपूर्ण है ।

संख्या ३०६क. गणेश पुरान, रचयिता—मोतीनाथ, (नांवन्ता, पयाग). वागन—
देशी, पत्र—२३, आकार—८^३/_४ × ४^३/_४ इंच, पक्ति (प्रतिपाठ)—६, गणित (अक्षर)—
४१४, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सवत् १८३२ वि० शक १७३६
प्राप्तिस्थान—५० रामधन बिल्होवा द्विदेवी, गाम—दीया, पोस्ट—नन्दी जिला—नागदास ।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री सरस्वत्यै नमः ॥ श्री गुर चरणयो नमः ॥ श्री
सीतरामानुजाय नमः ॥

॥ दोहा ॥

येकरदन गजवदन कर पद वंदी प्र जोरि ।

करहु कृपा सिवन्दन वडं वृधि जेहि मोरि ॥ १ ॥

विधि वानी हरि इंद्रि खूषभछिज गिरि जातु ।
करहु कृपा जन जानि कै सकल जगत पीतुमातु ॥ २ ॥

श्रंत—

॥ दोहरा ॥

गननायेक की कथा येह संकृत मध्य विसाल ।
जथा वृधि भापा रची जटमति मोतीलाल ॥४८॥

॥ दोहा ॥

नाग नगर के प्रगणः नौवस्ता सुभ ग्राम ।
सुरसर के तट वसत न तथा है कवि को धाम ॥ ४ ६ ॥
पट जोजन है प्राग ते पछिम दिसि सो गाड ।
वसं विप्र बुद्धिमान तह नौवस्ता जेहि नाड ॥५०॥

इती श्री महाभारते श्री गरुड कथा संपूर्ण ॥ मार्ग वदी तियि पंचिमी पुष्परिक्ष भृगु-
वार । मारुत सुत की ध्यान करि कियो कथा विस्तार ॥५१॥ इति श्री महाभारते श्री गरुड कथा
संपूर्ण सुभमस्तु संदत् १८७२ साके १७३६ अपठ शुभल नउमथां रविवासरे क लिखितं यीद पोस्तकं
भवानी दीन उपाध्यायेन ॥

विषय—श्री गरुड कथा का वर्णन ।

संख्या ३०६४. गरुड पुरान, रचयिता—मोतीलाल, कागज—आधुनिक, पत्र—२४,
आकार—७ $\frac{1}{4}$ × ४ $\frac{3}{4}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६४, पूर्ण,
रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—शक सवत् १७६६, प्रोप्तिस्थान—प०
रामसरण मिश्र, ग्राम—तिल्हापुर, पोस्ट—तिल्हापुर, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गरुडेशाय नमः ॥ श्री भवानी जी सहाये नमः ॥ श्री पोथी गरुड पुराण
लिखते ॥

॥ दोहा ॥

एक दर (? रदन) गजवदन की पगु वंदी कर जोरि ।
कृपा करो सिवनंदना वृधी वहै जेहि मोरि ॥ १ ॥
व्यास आदि कवि पुंगवा नारद आदि मुनीस ।
जो कर ब्रह्म सेम गुरा सब कहनावड नीस ॥

॥ चौपाई श्री राज जुदुदीस्टल उवाच ॥

सुनो स्वामी तुम मदन गोपाला । उदा करो संतन प्रतिपाला ॥
विपति हमारी विलोकोड स्वामी । त्रीपा सीधु उर श्रंतरजामी ॥
छल कीनो जीराजोधन राजा । जीती लिहू मेरो राज समाजा ॥
आनुज सहित जुवती संघ लाई । वन नीकारि दीन्ह दुपदाई ॥
तेहिते प्रभु वीनवी करा जोरी । केहि विधि पावो राज ब्रह्मोरी ॥

श्रंत—नारी पुरुष करै व्रत कोई । सकल सिधि फल पावे सोई ॥
जो यहा कथा मुनाई जो गावे । श्रंतकाल सुरापुर पाहुचासै ॥

॥ दोहा ॥

गनपति की कथा एहा संमकीता मध्या वीसाल ।
जाथा विधि भापा राचेड जाडमति “मोती लाल” ॥

इति श्री गनेस पुरान की कथा संपूर्णम् ॥ श्राके गान्निजाहन ॥१७७६६॥ कुचन व महिना
श्रीस्न पछ ऐतवर दसमिका शंपूर्णम् ॥ जो प्रति देप सो प्रति लिपा मम दोप न देते ॥ पछिन
जान सो विनती मोरी ॥ टुट अछर बचेव जोरी ॥

विषय—गणेश कथा का बखान किया गया है ।

संख्या ३०७४. आनद लहरी रचयिता—मोहन कागज—देशी पृष्ठ—०५ (३०
से ६१), आकार—६ $\frac{३}{४}$ × ४ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुपृष्ठ)—१००,
पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिज्ञान—म० १००६, प्राप्तिग्रान—श्री
सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ७३, पु० म० ६ ।

श्रादि—अथ मोहन कृत आनद लहरी लिखित है । अथ चोपाई ॥

सहजें सुमिरो नित्त विहारी । व्यापक तोष पुरुष प्रो नारी ।
सवतें द्वारि सवन तें नेरो । लखे न कोऊ तहाँ उर नंगे ॥
आनद भगन कलोल विलासी । बिहरे सव ठाँ नेंह निवामी ॥
सव खेलनि मे खेले न्यारो । सकल जगत कर लोइन तारो ॥

मध्य—पृ० ५४

॥ छंद ॥

भावता सगही रहे यो सग छाऽहु सग ।
नाउ तो तवहीं मिटे जानाउ देखा अग ।
रूप तो तवहीं लखो जो बात पेपहु नन ।
चेन तो तवहीं लहो जो वन भूले चन ।
रीति तो तवही लखो जो रीति राखहु गोइ ।
सो प्रीति जाने मोहना जो मोहना ही होइ ॥५२॥

॥ दोहा ॥

जिय भूलें पिय भेटियें पिय भूलें जिय होइ ।
दोऊ भूले मोहना तो मोहन सव कोइ ॥५३॥

अंत—मनु श्री नन पैम हि गए । तिहि दोऊ न्यारे बंदए ।
मनुलें पहुचायो पियपासा । नन एक ले रहे निरामा ॥
ए वहि लोइन दिन ओ राती । एहन थपनो बाल सघाती ॥७१॥

॥ दोहरा ॥

मन पिय पें नेना अन्त । तेचहि सोचहि नाहि ।
पेम पथ रोके सबे । एयो बत हो लें जाहि ॥७२॥

इति श्री मोहन कृत आनद लहरी समाप्ता ॥

विषय—प्रेम (आनद) का आध्यात्मिक चेतन के दग पर दर्शन है श्रीग नराने भूना-
रातगंत अद्वैत भावना की विशेषता वर्णित है ।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख मे प्रथम 'मोहन दुगान' बाद मे प्रस्तुत रूप धीन सन मे
"कलोल केलि" रचना है ।

संख्या ३०७५. कलोल केलि, रचयिता—मोहन कागज—देशी पृष्ठ—१६ (६१
से ७६), आकार—६ $\frac{३}{४}$ × ४ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुपृष्ठ)—१००,
पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिज्ञान—म० १००६, प्राप्तिग्रान—श्री
सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ७३, पु० म० ६ ।

श्रादि—अथ मोहन कृत कल्लोल केलि लिखियत है ।

॥ चौपाई ॥

नमो प्रेम परमात्मा प्यारे । ससिज्यो सकल जगत उजियारे ॥
बढे घटे नहि कला तिहारी । राजित रेन द्योत उजियारी ॥
निहकलंक निरमल सुखदाई । सदा सुथिर अथवे न उगाई ॥
नही केत भ्रम रथ परछाही । बुधि वादरउ पार नहि जाई ॥
घट घट मे प्रतिबिब कलोल । ज्यो जलु डूले तउ नहि डोले ॥

मध्य—पृ० ७०

॥ कवित्त ॥

सर बासर सतन सरूप सनेह मन वाली बातें मोहनी सुभाइसी कछेरीये ।
जोवन प्रकास ज्योति नैन निज जगमगाति अंचर ही कुज सहचरी करि फेरिये ।
यहे नैम पैम परगट पाइवें को जगि चाहे जोई ऐसी ताहि वाति हित नेरीये ।
नेहर सजो हिये तबही इन लोइननु देह दीप राधे नाम स्याम धाम हेरीये ॥२३॥

॥ दोहरा ॥

पेम तिमर ओ दीपको इक रस सहज सुभाइ ।

जबही चाह्यो दीप तुम निमट रह्यो तर पाइ ॥२४॥

अंत—जबही मोहन प्रेम सो सहज भई पहचानि । अदला बदली होतहैं रसना लोइन कानि ॥५०॥

इति श्री मोहन कृत कल्लोल केलि समाप्ता ॥ श्रीरस्तु ॥ गोस्वामी श्री गिरिधर लाल जी सुत श्री ब्रजभूषण जी पठनार्थ ॥ तत्प्रतिपालित परमानन्देन लिखितमिदम् ॥ श्रीरस्तु ॥ संवत् १७८६ वर्ष चैत्र सुदि २ सोमे । कल्याण भूयात् ॥ श्री राइ श्री नथसल्ल जी की पोथी मेते उतारे अहमदाबाद मध्ये ।

विषय—प्रेम (आनंद) का, सयोग शृंगार की अद्वैत भावना रूप में, माहात्म्य प्रतिपादन किया गया है । अथ महत्वपूर्ण एव उपादेय है ।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख में प्रथम 'मोहन हुलास', फिर 'आनंद लहरी' और बाद में यह अथ लिखा है ।

गो० श्री ब्रजभूषण जी काँकरोली वालो का समय स० १७६५ से १८३३ तक है ।

संख्या ३०७ग. मोहन हुलास, रचयिता—मोहन, कागज—देशी, पृष्ठ—३७, आकार—६ $\frac{१}{४}$ × ४ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३००, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी लिपिकाल—स० १७८६, प्राप्तस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० ७३, पु० स० ६ ।

श्रादि—॥श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ॥ अथ मोहन कृत मोहन हुलास लिख्यते ॥

॥ चौपाई ॥

नमो रूप आतम नव नेही । सब घट प्रगटयो धरि हित देही ॥
दृष्टि अगोचर लट्यो न जाई । पूरन जहाँ तहाँ रह्यो समाई ॥
दारु अग्नि फूलन ज्यो वासा । त्यो जग लोइन लीन निवासा ॥
व्यापक जहाँ तहाँ आहि कलोल । अंजुल बजुल मुख नहि बोल ॥
मध्य—पृ० १७

॥ दोषक छंद ॥

आउ कहो सतभाज सहेली । जो तू चाहे प्रेम पहेली ॥
जिहि जिहि ठाहरि लागहि नैन । तहें तहें ठाँ सोई मूरति मेनां ।

! तोहि चारि चिन्हा रन रहई । उपजत हींजिय पिय दुगु जई ।
रहे न प्रीति रीति मन माही । प्रीत रूप आये नै जाही ।
प्यारे सो ऐसैं मिलि रहिये । हितके मनको भाया रहिये ।

॥ सौरठ ॥

भावता की भाति भाति भाति मे पाद्ये ।
लोइन सदा अमाति वाति निहारत रेन दिनु ॥६२॥

॥ दोहा ॥

अत—मति पातरु हित अम परी नाचें अन अन ताल ।
ता अक प्रेम सुभाइ जग खेलति अपुनें प्याज ॥१२६॥
नाउ गाउ सुमरन सुरति नाता पिय अनुहारि ।
रा भूली भूले नहीं मोहन बाल चिन्हारि ॥१३०॥

इति श्री मोहन कृत हुलास मोहन रूपूर्ण ॥ श्री हरि ॥

विषय—विविध छंदों में सयोग और वियोग शृंगार वा मज्जुद भाषा में प्रतिपादित किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्तलेख में मोहन कृत “अनद गहरी” अथ “रत्न रत्न” ग्रंथ भी हैं ।

संख्या ३०८. दत्तात्रेय लीला, रचयिता—मोहनदास नाग—३०६. पत्र—४,
आकार—७ १/२ × ५ १/२ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१७ परिभाषा (—न्यायम्)——२१. रंग मय
नया, पद्य, लिपि—नागरी, निष्काल—स० १८५३ ई०, प्राप्तस्थान—श्री साधा पुस्तकालय,
नागरीप्रचारणी सभा (या.नक सग्रह), काशी ।

आदि—कृष्णाय नमः ।

॥ चौपाई ॥

द्वारावती एकात निवासा । हरि कीं वृक्ष उद्यम दाना ॥ १ ॥
ज्ञान विचार विवेक सुनाओ । मेरे मन की तिमिर नगरी ॥ २ ॥
कौन पुरुष कंठी तेरी माया । वहाँ तप करि दिभुवन रागा ॥ ३ ॥
कंस यह प्राणी सुचि पाव । काल व्याल भय दूरि गमावें ॥ ४ ॥
श्री भगवान कहै निज ज्ञान । तत्प उपदेश सुनो ई दान ॥ ५ ॥
सकल चराचर मोमे देय । मोलें भिन्न वष्टु नहि लेये ॥ ६ ॥
भाव अनन्य करै मम सेवा । जाचें नहीं प्राण लोड देया ॥ ७ ॥

मध्य—

अंसे साध सो सग्रह जाना । जो दछु लहै सो मर्ति दाना ॥२५॥
कपोत एक सो बनहि मकारा । सग वपीतिनी नयो इह हारा ॥२५॥
दोउ मिलि प्रीति निरतर वाही । अघिक सनेह रुनि उपजो गारी ॥२६॥
तन सौं तन नैननि सौं नैना । मन सौं मन बंनति सौं बंन ॥२७॥
भोजन सेन करै एक साथ । वही न जग प्रेम की नाथ ॥२८॥
प्रथम प्रसूति इक पुत्र उपायो । ताकी देवि अघिक सुय दायो ॥२९॥
ज्यों ज्यों बोलें तोतली बानी । जमिन जनम सुफल शि मानी ॥३०॥
अंत—मन में करै जानि विस्तारा । जग तीजें धर करै विहारा ॥६६॥
अंस देवा ज्यों सरकारा । घरण समल से चित नहि टारा ॥६७॥

भुजंग ज्यों आश्रम न कराहीं । श्रंसी विधि मुनिवर अनुसरही ॥६८॥
 श्रंसं ज्ञान कह्यो नाना विधि । तव भर्ता कौ सीपी अपनी निधि ॥६९॥
 श्रंसं जानि तजे जदुराजा । करि हरि भजन सवारे काजा ॥७०॥
 जो यह लीला सुनै अरु गावै । ज्ञान वैराग भक्ति उपजावै ॥७१॥
 सेस महेस पार नहीं पावै । मोहन दास जथा मति गामै ॥७२॥

इति श्री एकादश स्कंधे भगवान् उद्धव संवादे दत्तात्रेय लीला संपूरण सुभंमस्तु श्री वासुदेवाय नमः संवत् १८९३ मिति असाढ सुदी १३ शौम वार वयानं सुभ स्थान लिखी सीताराम मिश्र पठनार्थं शुभ भुवात् श्री राम माधव जी वासुदेव भीषा भट्ट ॥

विषय—दत्तात्रेय लीला का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ 'नलदमयती चरित' के साथ एक ही हस्तलेख में है ।

सख्या ३०९ भाव चंद्रिका, रचयिता—मोहन मिश्र, निवासस्थान—चंद्रप्रभापुरे पत्तन, कागज—आधुनिक, पत्र—७९, आकार—६ × ५ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११२ परिमाण (अनुच्छुप्)—८६९, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स०, १८५१, लिपिकाल—स० १९१५, प्राप्तिस्थान—ठा० कामता प्रसाद सिंह जी, स्थान—विशानपुर पोस्ट—सेवटा, जिला—आजमगढ़ ।

श्रादि—श्री गनेसाय नमः ॥ लिख्यते गीत गोविंद कौ टीका ॥

भाल लसत सिद्धर पूर मंडल सति मडन ।
 सुडादंड प्रचंड चड दुष षड विहडन ।
 दारिद्र वन दावाग्नि दुरित करि चय पन्नानन ।
 भारतड प्रनते सु प्रफुल्लित पकज कानन ।
 कहि मोहन जो चाहत विमल बुद्धि सेव पद कमल रज ।
 न्रंभव सुखद जगदव सुत लवोदर हेरव भज ॥ १ ॥
 श्री जयदेव कवीस कृत देवगिरा गति गूढ ।
 कोपि विबुध भाषा कियो अर्थ विमोहन मूढ ॥ ३ ॥
 ताहि निरर्थ निज बुद्धि बल वर्नत सुषव सुछद ।
 "भाव चंद्रिका" नाम यह अर्थगीत सुपकंद ॥ ४ ॥
 मैं लघुमति रुचि अति प्रबल साधन परम असाधु ।
 भूल परं जह छद मैं छमिजी कवि अपराधु ॥ ५ ॥

१ ५ ८ १

इंद्रु वान वसु भूमि सुचि मास सुक्र तिथि श्रादि ।
 भाव चंद्रिका ता दिना श्रांभी सुप सादि ॥ ६ ॥

॥ विजय ॥

राज सिंघासन चंद्रप्रभा पुर पत्तन कौ जस सुंदर तीकी ।
 भूपति दै सनमान समेत तहां सुषवास प्रकास कवी की ।
 ताडिग जोजन अंतर दोय कहै ललितापुर सुंदर नीकी ।
 ता मधि सिंघ प्रबोधन हेत कियो नुभ गीत सुविद सटीकी ॥ ७ ॥
 रूप मनि मधुकर साहि कौ वंस कुमुद राकेस ।
 रामचंद्र की राज अब राजत जगत सुवेस ॥ ८ ॥
 ताकुल के प्रोहित प्रगट मिश्र कपूरे नाम ।
 तिनकी मानं सिंघ नृप गुरु ज्यों सुरपति धाम ॥ ९ ॥

तासु वंस मोहन भयी कुटिल महा मतिमंद ।
 भाव सुगीत गुविंद की वरनत भाषा छंद ॥१०॥
 गुरु पद पक्कज धार उर सकल कविन निर नाय ।
 वरनत गीत गुविंद की भाव अर्थ मुपदाय ॥११॥

अंत—कहत राधिका सुनहु न भाधव ही जु परी तुय चरना ।
 तुम विन मोहि सुधाधर चाहत रापहु अनरन सरना ।
 जग पर श्रवत सुधा की धारा भो पर अनिल बहावत ।
 जान स्वसा की सवत मोहि तिहियं हटकं तन तावत ॥ ६ ॥
 तुव वियोग येँ होत चित्त अन श्रागे तुर्नहि दिलोपत ।
 विलपत हसत विपाद करत बहु जलपत आनुनि मोपत ।
 ध्यानहि ध्यान मिलत कीडा हित मात सुलोचन लोचन ।
 जब तुम देत श्रलिंगन निर्भय तचन ताप त्रं मोचन ॥ ७ ॥
 :०: :०: ०.

॥ घनाक्षरी ॥

गए हो मधुर परी मिठास कीन चिंता कछू सकंरा समान फकरान के लगत है ।
 दाव तुमै देवै है भकोड हे अत्रत तुम अतक समान रही छोरीनीर गत है ।
 नूत करी रुदन अधर कामनी के तुम जावन पताल जो मिठाइन कौ मत है ।
 आदर तुमारौ कोड करे है न जो लग हौ तोली जयदेव जू पौ दानीया जगत है ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

वरनी श्री जयदेव नं स्वाधीना पति वाम ।
 "मोहन" द्वादस सर्ग यह पीतावर सुभ नाम ॥१२॥

इति श्री गीत गोविंद टीकाया समाप्त ॥ मिति जेठ सुदि ११ ॥ सवन् १८१५ ॥
 मुका वानपुर ॥ राम ॥

विषय—संस्कृत के प्रसिद्ध ग्रंथ गीत गोविंद का भाषा में पद्यानुवाद ।

रचनाकाल

१ ५ ८ १
 इड्डु वान वसु भूमि सुचि मात सुकृ तियि प्रादि ।
 भावचंद्रिका ता दिना आरभौ सुप सादि । ६४ ॥

संख्या ३१०क. फूलमजरी, रचयिता—मोहनलाल, स्थान—मुन्हेर (भगतपुर),
 कागज—देशी, पत्र—४, आकार—१२ × ६ इंच, पत्रि (प्रतिपृष्ठ)—१० परिमाण (८-
 ६डुव्)—८४, पूर्ण, प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१८६५ वि०, प्राप्तिस्थान—
 आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (भातिङ्क सरह) बानी ।

आदि—अथ फूल मजरी लिप्यते ॥

॥ दोहा ॥

कमल नैन कन्हर लला ॥ सुंदर शामल गत ॥
 वन तं आमल सुरभी लगि ॥ मंद मद मनदान ॥ १ ॥
 पीति पया भीनी भगा ॥ कर यगुभ रमात् ॥
 नगनि जटति कर मुरलिका ॥ वाजति मन्द रमात् ॥ २ ॥

ही न गई हरि संग अली ॥ मो मति की अति भूल ॥
 संग सुंदर करिके वरो ॥ आवत रस के भूल ॥ ३ ॥
 भवर विलवे केतगी ॥ लेत सुपरिमल बास ॥
 ऐसे मौहन लाल तें ॥ नित मिलि करत विलास ॥ ४ ॥
 न्हात सवें लपि सुदरी ॥ नैक न करचौ विलंब ॥
 चीर चीरि लंगर लला ॥ लेंके चढ्यौ कदंब ॥ ५ ॥
 मध्य—हूं तोहि पुछु हे भटु ॥ कौन से वर्त ते कीन्ह ॥
 ताते वर कान्हर लहे ॥ हमहूं ताकौ कीन्ह ॥ २३ ॥
 चक्र सुदर्शन धारि प्रभु ॥ मुर मारचौ तैहि काल ॥
 गीरधारचौ तारचौ डुरिद ॥ हत्यौ कंश नंदलाल ॥ २४ ॥
 रूपमंजरी हौ अली ॥ मौतें अधिक न और ॥
 सवें वासुना छाडि कै ॥ मोतन आयौ और ॥ २५ ॥
 लं गुलाब कर सुदरी ॥ मो सौं क्यों इठिलाथ ॥
 पानीहि की आगि धौ ॥ पांन शौ न सिराय ॥ २६ ॥
 अंत—सीस मुकुट कटि काछनी । पहरे पीत डुकूल ॥
 वनि मन तें आवत लला । कर वरना कौ फूल ॥ २८ ॥
 कंधा कामरि कर लुकट । चलत अटपटी चाल ॥
 कारामत वारौ गरे । वौरसरी की माल ॥ २९ ॥
 पाउर कौ वन देखि यह । फूहि रही फुलवार ॥
 छिनक यहाँ बँठयो भटु । अब आवै सुषकारि ॥ ३० ॥
 दाऊदी फुली विमल । अलि मिलि लेत सुवास ॥
 पीय प्यारी मिलि आजु ही । हिलि मिलि करौ विलास ॥ ३१ ॥
 पंडु वेद वसु चंडु ये । वसत कुम्हेर सुगाम ॥
 केसव सुत मौहन रची । फूल मंजरी नाम ॥ ३२ ॥
 येती श्री फुल मंजरी संपुरन ॥ प्रति प्रमान ॥

विषय—दोहो मे कृष्ण की प्रेमकथा और चीरहरण लीला का वर्णन है ।

संख्या ३१०ख. रगमजरी, रचयिता—मोहनलाल, निवासस्थान—गढ कुम्हेर
 (भरतपुर), पत्र—४, आकार—७ $\frac{१}{२}$ × ५ $\frac{१}{२}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनु-
 ष्टुप्)—४६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—संवत् १८३७, प्राप्ति-
 स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—अथ रग मजरी लिख्यते ॥

सीम झीट सारंग धरें मृगनद केसरि भाल ।
 पेलत प्याल व्रतंत कौ मडि मौहन सुरवाल ॥ १ ॥
 गो गोपी सवही सपा नंद नंदन जसुधा जु ।
 व्रंद व्रद आवत सवें करि केसरिया साज ॥ २ ॥
 सारी सोहै सोसनी वनी बाल सुभ रंग ।
 भूलत रंग हिडोरना मानी चढ्यौ अन्नग ॥ ३ ॥
 वीढ कसुमल चंदरी पेलन चाली तीज ।
 संग सपी नवजीवना सिर सोहति रति भीज ॥ ४ ॥
 वनी बाल ठाढी अटा घटा रही घहराइ ।
 गुडी उडावत कर गहै सिपतालू रंग लाइ ॥ ५ ॥

मध्य—अग अग अति जगमर्ग ससि द्रुति सरि होति होति ।

नीले भीने चीर मे जगमगाति मुष जोति ॥२६॥

जूथ जूथ आवत सर्व वरमाने की गोप ।

जगाली पहरं चुरी अति छवि छाजत बोप ॥३०॥

मुकट जटत हाटक मनी दधि सुत गुर उरयाल ।

सजें जु मरन दी तन वसन आवत मोहन लाल ॥३१॥

ठारं सं संतीस का गढ कुम्हेर सुम गाम ।

केसव सुत मोहन रची रंग मजरी नाम ॥३२॥

इति मोहन लाल कृती रंग मजरी सपूर्ण ॥ १ ॥ शुभ ॥

विषय—शुभार विषयक कविता कर उममे रगों के नामों वा उल्लेख किया गया है ।
रगों के नाम नीचे दिए जाते हैं —

वसती १	केसरिया २	कमूल ४	हवप्मी ८	जामनी १६
सोसनी	सोसनी	सिपतालू	पचरग	बदामी
सिपतालू	नारगी	नारगी	लहरिया	पिस्ती
गुलाबी	गुलाबी	गुलाबी	ऊदी	किरमिची
पचरग	लहरिया	अममानी	अममानी	प्याजी
ऊदी	ऊदी	कोच	कोच	स्याम
कोच	सिंदूरी	सिंदूरी	सिंदूरी	सेत
कासनी	कासनी	कासनी	कासनी	तूसी
बदामी	पिस्ती	प्याजी	लापी	लापी
किरमिची	किरमिची	स्याम	हरयाँ	हरयाँ
स्याम	सेत	सेत	अर्मावा	अर्मावा
तूसी	तूसी	तूसी	मूंगिया	मूंगिया
हरयाँ	अर्मावा	मासी	मासी	मागी
मूंगिया	मूंगिया	लीलो	लीलो	लीलो
लीलो	जगाली	जगाली	जगाली	जगाली
जुमरी	जुमरी	जुमदी	जुमदी	जुमदी

रचनाकाल

ठारं सं संतीस का गढ कुम्हेर सुम गाम ।

केसव सुत मोहन रची रंग मजरी नाम ॥३२॥

सटया ३११. भास्वति भापा टीका (ज्योतिष), रचयिता—यसोधर (?),

कागज—देशी, पत्र—७, आकार—१०^१/_४ × ४^१/_४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५४०, खडित, रूप—प्राचीन गद्य, लिपि—नागरी, प्राग्निपान—५० भारतीय मिश्र, ग्राम—बटसरा, पोस्ट—कसिया, जिला—गोग्रपुर ।

आदि—.....

जोख शे शात से ७ भागव जे शेष रहे से सूर्यादि नम्बतार पानव होइ ।

शेष जे अक रहे से आठ शय ८०० माह घटाई

देव तेकर नामा शुद्धि होइ शे शुद्धि अठोत्तर सये १०८ भागिए तां छया पाछ सेव कर जे रहे से साटी ६० गुणव अठोत्तर १०८ सये से भागव से चाला होइ तेकर नाम रवि प्रजा होइति ।

अब्द वृंद धरव सहस्र १००० गुणव तेहिमह दस घटाई देव पुनः जे अक रहे से दुइ ठहर धरव हेठ के अक दुइ सय चारि २४० से भागव जे भाग पाइ से उपर के अंक पर घइले आइव त ओहि अक मे घटाइ देव फेरी हेठे के अंक के भाग से जे सेष र से से साठी ६० से गुणव दुइ सय चालीस से भागव जे भाग पाइसे चाला होइ ॥

:०:

:०:

:०:

अंत—चंद्र स्फुट मह सूर्या स्फुट घटाइव पुनि पयतालीस ४५ घटाइव घटाइ देइ जे सेष रहे से पयतालिंस ४५ से भागव जे भाग पाइ से सात घटाइव.....

—अपूर्ण

विषय—ज्योतिषशास्त्र विषय का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ खडितावस्था मे है । आदि, अत और बीच के पत्ते नष्ट हो गए हैं ।

संख्या ३१२. द्रोपदी स्वयवर, रचयिता—रघुनदन, पृष्ठ—४२, आकार—८३ × ६ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—७५६, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १६८०, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ५६, पु० सं० ५ ।

आदि—श्री द्रोपदी स्वयंवर लिख्यते । रामु घनाश्री ॥ टेक ॥
सतीवती नंदन चरण वंदन करि सुपपाई ।
वहुरीं गणपति गवरि पति कर जोरी सिरु नाई ॥
आदि पर्व भारथ कथा द्रुपद सुता को व्याह ।
ताहि जयामति वचन रचि भाषा को नुवाहु ॥

मध्य—पृ० २३ टीका । चोपाई ।

नव अध्याइ कथा यह जानीं । द्रुपद सुता को व्याहु बखानीं । १ ।
करिहें जज्ञसंनि विनती अति । पानिग्रहन कीजें अर्जुन प्रति ।
तव राजा कहै तिहि काला । हम सब वीर वरे सो वाला ।
सुनि नृप द्रुपद अरुचि अति ह्वैहै । तव मुनि व्यास आइ समुझैहै ।

अंत—इति श्री भाषा भर्थे आदि पर्व रघुनंदन दास विरंचिते द्रोपदी स्वयंवरे इंद्रप्रस्थ आगमनो नाम एकादशो अध्याय ॥११॥ सोरठा ॥

करे चोपही छंद विविसत घटि पटु चारि पुनि ।
पढत सुनत आनंद द्रुपदसुता मंगल महा ॥

॥ सोरठ ॥

कथा जयामति सार पूरण कै दसमी विजय ।
शुक्ल पछि सुभ कुवार सोरह सँ असी हुते ॥ अध्याइ प्रमानं

विषय—द्रौपदी के स्वयवर का वर्णन ।

संख्या ३१३. रसिक मोहन, रचयिता—रघुनाथ वंदीजन (काशी), कागज—देशी, पत्र—५६, आकार—६३ × ६३ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३८०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्णशीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १७६६ वि०, प्राप्तिस्थान—म० देवीदयाल पाडेय, ग्राम—सोहवल, पोस्ट—ताडीघाट, जिला—गाजीपुर ।

आदि—..... ।

नव सकरता सरूपवान तेजवान ग्यानवान भाग्यवान गय के ॥
वेद विधि विहित सुकवि रघुनाथ कहै प्रतिपाल करता सकल पुन्य पथ के ॥
सबसो अजीत आपु सबको जितैआ आपु आपु सरवग्य आपु जनैआ अरुध के ॥
अंसे मसाराण के महीप वरिवंड जैसे काम पुरपोत्तम के राम दमरुध के ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

उन मोपै करि कैं क्रिया दीन्हे चौरा गाउँ ।
जाको जंबू दीप मे जगमगात है नाउ ॥ ८ ॥

:०: :०: :०:

कोऊ कथा सुनै कोऊ सुनावत भारथ आदि पुरान है जोऊ ॥
वेद पढै कोऊ व्याकरनै कोऊ जोतिप वैदिक साहित कोऊ ॥
पूजत हैं कोऊ श्री रघुनारायँह पूजत कोऊ सिवा सिव दोऊ ॥
मैं मन बीच विचारि लिप्यो है बनारस मे न विना रस कोऊ ॥

:०: :०: :०:

सवत् सत्रह सँ अधिक वरिस छानवे पाइ ।
भाघ सुकुल श्री पंचमी प्रगट भयो सुखदाइ ॥ ११ ॥
वरने उपमा आदि हे अलकार गहि रीति ।
अहो रसिक लषि रीभियो करि पढवे सो प्रीति ॥ १२ ॥

अत—॥ ३२१ ॥ हेत अलकार लछन ॥

हेत सहित जह वरनिअ हेतवान गहि रीति ।
हेत अलंकृत सुकवि सब तहा कहै गहि प्रीति ॥

:०: :०: :०:

॥ ३२२ ॥ अपर ॥

परम असक लकपति मेरी विनै सुनौ पूर पारावार को पहारनि भरो भयो ॥
आवत वसंत ज्यो ज्यो वन उपवन सब रघुनाथ हरो भयो फूलि कैं फरो भयो ॥
करिबे जो है सो अरु कीजै मत्र मत्रिन सो नगर वसंतन के वास को टरो भयो ॥
तीछन विपति के हरैया राम ताके आगे डवरायँ ईछन भभीछन ढरो भयो ॥ ३२३ ॥

इति श्री कवि रघुनाथ वदीजन कासीवासी विरचितं काव्य रसिधमोहने उपमादि
अलंकार वर्ननं सपूरन सभ मसु..... ॥ अपूर्ण ॥

:०: :०: :०:

विषय—अलंकारो का वर्णन ।

रचनाकाल

१७

६६

संवत् सत्रह सँ अधिक वरिस छानवे पाइ ।
भाघु सुकुल श्री पंचमी प्रगट भयो सुखदाइ ॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ खडित है । समस्त छप्पन पत्रे उपनवध है । देखने मे द्रप पत्रों
प्रतीत होता है ।

रचनाकाल सवत् १७६६ वि० है । लिपिकान अज्ञात है ।

संख्या ३१४. रसमजरी, रचयिता—रघुनाथ कवि, पृष्ठ—७४ (३५ से १०८ तक),
आकार—१३ × ७ १/२ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३००, अपूर्ण,
रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री मरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग,
कांकरोली, हि० व० ६१, पु० स० ५ ।

आदि—पृ० ३५ अथ मध्याधीरा ॥ १२ ॥

कमनीय कपोलनि जोवन जेव अनुपम रूपकि रास खरे ॥
बहुनाइक नागरि नामहि सो सबसो सवही विधि हो सुधरे ॥
कहियो गहि दीरघ सास घरी कति या तन भेद कहै न परे ।
निरखे हरजू नखतें सिखतौ ढरके नयना नयनवु भरे ॥ १३ ॥

मध्य—पृ० ४७ अन्य संभोग दुःखिता ॥

रमि रात रहै फितहु उमकैं अरुणोदय आन अचानक ह्वैं ॥
लखि जावक लीक ललाट लगी नख रेख कपोलनि रजित ह्वैं ॥
तिय लोहित लोचन कोननि तैं छलकी छवि यो युग ओननि ह्वैं ॥
इम तीय तरोननि के मुकता रहै दारिमवीज दल द्युति ह्वैं ॥ ३७ ॥

अंत—

अभिलाषा प्रथम दुतीय चित चिता करै तीसरी को सुमिरनु चीथे गुन गान है ।
पंचमी को उदवेग छठी को प्रलापु करै सातई अकेले उनमाद की को ठाम है ।
आठई को व्याधि अति नतुमि को है जडमति दसमि निधन तहां प्राण को पयान है ।
दसो ए अवस्य रघुनाथ विप्रलभ ही को लछन उदाहरन बरनौ विधान है ॥ १२१ ॥
विषय—नायिका भेद श्रीर रसो का वर्णन । मूल ग्रंथ संस्कृत श्लोको मे है ।

संख्या ३१५. ज्ञान ककहरा, रचयिता—रघुनाथ दास, 'रामसनेही', कागज—देशी,
पत्र—१६, आकार—७ × ४ १/२ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६१,
पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६२० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री
प० अमरनाथ मिश्र, ग्राम—असवरनपुर, पोस्ट—ओइना, जिला—जौनपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ श्री रघुनाथदास रामसनेही कृत ग्यान ककहरा
लिख्यते ॥ कुण्डल्या ॥

श्री गुरु देवा दास के चरण कमल धरि माथ ॥
ग्यान ककहरा ग्यानप्रद वरणत जन "रघुनाथ" ॥
वरणत जन रघुनाथ हाथ अपने नहि भाई ॥
राजनीति की रीति प्रीति प्रभु पद अधिकाई ॥
अधिकाई तव होइ न्द्रवं गव हरि ॥
गुरु संता बड़भागी नर सोई हो इंद्रपन्हु बुधिवता ॥
बुधिवंता दिन वेद पढे नहि लहै भेद फुर ॥
मुकुरु करै का तासु जासु नाहि नयन सुश्रीगुर ॥ १ ॥
ॐ नामा सौंघ गहै गावत वेद विसूरि ॥
नाम विना कोई कहै ताके मुख मे घूरि ॥
ताके मुख में घूरि भूरि भागी दिन गूठा ॥
सियाराम पद प्रेम नेम कह पावै मूठा ॥
सियाराम पद प्रेम मूल परमारथ को है ॥
पग मृग व्याध निपाद त्वस्थी अस्थी पद जो है ॥

जो है जन रघुनाथ कहै पुर अग्रध के वासी ॥
 कीन कुण्डल्या अधिक चरण विन ऊँ ना मामी ॥ २ ॥
 क का कमल केर दिनु सरिता पति गाल सुधा ममि भाई ॥
 मित्र भानु ब्रह्मा तने विश्व भरा जेहि माई ॥

:o

:o:

:o:

षपा छल के सग मे भला भी मारा जाय ॥
 जीभ उश्चरं कटक वचन सीस सो पनही पाय ॥
 सीस सो पनही पाइ जाइ धुन जब के साथे ॥
 जल धोरिया लेत देत धरि पाल के माथे ॥
 माथे परी जो मदन के धूट बुद्धि कृत पाप ॥
 मरे असुर रघुनाथ सब रावन के परताप ॥

रावन के परताप सेत सागर मे रखा ॥ तजि कुसग भजु राम नही तो होइ पग्या ॥
 गगागर भन कीजिए ।

अत—निदक निदं साधु का साधु सुनि हरपाइ ॥
 जिमि गारी समुरारि की सवकी सर्व सोहाइ ॥
 सवकी सर्व सोहाइ जेठर कुल सामुर शामू ॥
 बालक सारी सार तरुण बड ठानत हासु ॥
 दोन्हिनि सुवत सुता तीन तेहि हरि अघ विदक ॥
 कहत सत रघुनाथ नाथ नीके है निदक ॥

इति श्री रघुनाथ दास राम सनेही कृत ज्ञान-ककहरा समाप्तम् सवत् १९२० वि० . . . ।

विषय—सतमतानुसार ज्ञानोपदेश और भक्ति वर्णन ।

सख्या ३१६क. ग्वाल पहेली, रचयिता—रघुवर, पत्र—११, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—
 १८, पूर्ण, रूप—नया, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० ३८६०, प्राप्तस्थान—ज्ञाना
 जगन्नाथ प्रसाद खजानची, तहसील—राजनगर, राज्य—छतरपुर, जिला—भरौसी ।

आदि—॥ १ ॥

सिद्धि श्री महागनपत्येन्म श्री सरस्यतीःम ॥

लिप्यते ग्वाल पहेली । चौपही ॥

जं जं जं श्री नकं निवारन । जं जं जं दानव सघारन ॥

जं जं जं श्री अघम उघारन ॥ जं जं जं प्रह्लाद उघारन ॥

मध्य—॥ ११ ॥

यो ॥ अरु हौ सरन तिहारी आयो ॥

जैसे राषो तैसे रहे ॥ राम कलन की जूठन पंही ॥

रजनी तमं पायन पर रहे ॥ गंया प्रात चरादन जंही ॥

अत—॥ २१ ॥

मघेव है ॥ यह लीला मं छंसो वन है ॥

कलपद्रम की कलपद्रम है ॥

.

.

.

लीला गाइ इहै वस दीजं ॥ चरन की मधपुर कीजं ॥ इति श्री ग्वाल पहेली संपूर्ण
 समाप्त सुभं भवत् । माह सुदि अष्टमी ८ संवत् १८६० मः बढोही श्री श्री श्री श्री
 श्री श्री

विवय—श्रीकृष्ण एक दिन ग्वाल वालो सहित वन मे बलराम जी के साथ खेल रहे थे । उन्होंने एक पहेली बनाकर ग्वाल वालो से पूछी । एक ग्वाल ने पहेली का उत्तर कृष्ण जी से ही पूछा । कृष्ण ने इस अर्त पर उत्तर बताया कि वह किसी से न कहे । थोडी देर मे श्रीकृष्ण गाय इकट्ठी करने के लिये चले गए । तब सब ग्वाल वालो ने उस ग्वाल से पहेली का उत्तर पूछ लिया । कृष्ण के आने पर उत्तर कह सुनाया । कृष्ण ने दो चपतें उस ग्वाल को लगा दी । वह अपने माता पिता के पास रोता हुआ गया और समस्त कहानी कह सुनाई । माता यह सुनव उसी पर क्रोधित हुई और मारने दीडी । वह ग्वाल यशोदा के पास गया । यशोदा ने उसका मनाया और भोजन, कपडा दिया । इसी बीच श्रीकृष्ण आ गए । माता क्रोधित हुई, पर कृष्ण ने उस बाल को समझा ब्रुभाकर फिर अपना मित्र बना लिया ।

संख्या ३१६ख. द्रोपदी की स्तुति, रचयिता—श्री रघुवीर, पृष्ठ—७, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००, पूर्ण, रूप—नया, पद्य, लिपिकाल—सवत् १८६०, प्राप्तिस्थान—लाला जगन्नाथ प्रसाद, खजानची, तहसील—रामनगर, राज्य—छतरपुर ।

आदि—श्री गनेसाय नमः श्री सरस्वती नमः लिप्यते अस्तुत श्री द्रोपदी जू की ।

दत्त कतट नृपडार धर्मसुत सौ छल कीन्हों ॥

निस ब्रादी गौ हार रा सर्वस हर लिन्हों ॥ प्रथमहि

मध्य—इनि असमासुर मारो ॥ नहि विलव नहि कीन हीन धुय कौ यह भारी ॥ तहि विलव नहि कीन हीन जदिन ब्रदा ब्रत टारो ॥

तहि विलव नहि कीन तुम नरकासुर कुंडल दहन ।

गहत चीर दुसासनासु अच विलव कारन कवन ॥ ५ ॥

अंत—तत्र कमला कौ संग वेग आये आरत हर । अमर लग अमारतह सकल सभा लज्जन वदन । जै जंत श्री रघुवर भनै सुर मत जैन वर्षह सुमन ॥१८॥ सं० १८६० चैत्र वदि १४ कौलिवी पोथी महाराज कौमार श्री लल्ला कयोद सिध भू लिप्यते श्री दरजी टूडे ॥

विवय—चीरहरण के अवसर पर द्रोपदी द्वारा भगवान् श्रीकृष्ण की स्तुति करना ।

संख्या ३१७. कवित्त, रचयिता—रज्जव जी, कागज—देशी, पत्र—४४, आकार—३ ३/४ × २ ३/४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४४०, पूर्ण, रूप—नया, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी ।

आदि—अथ रजवजी के किवत लिपंतं ।

वैराग रमै विभौ अष्टं कुलय रस धरिये ॥ कल्प वृक्ष वराइ ॥ फल फल अमर सुभर यहि ॥ सपत समबहु सुधा सो ईसलता सुतलावहु ॥ पीवन कौ सु पीपूष कहीं मारग गुरु आवहु । नग्र पुरी बंकुठ विधि चिंतामणि पर दर चिठो रजव गुरु पुजा सजीव । नांव सरभर नागिणी ॥१॥ गुरु कौ दीजै कहा परम निधि जिनतै पाई ॥ भाव भगति भल भीष गिरा गोरख जी गाई ॥ सांझंच सील संतोष दिष्टदत्त दीरघ दीनां । जीव जड्या जग माहि काटिक्रम मुकंता कीना ॥ सकल अंग साईसह तकौ न मौज अंसी करै ॥ दाडू दीन दयाल विन ॥ रजव रीता कौ भरै ॥२॥ गुरु हंस मधु रिय पुनह चंबक ज्यू सारा । तन मन काटै सोधि कि रंचकं ज्यू पारा ॥ करै सुदाई क्रम नितह न्यारे जम धोवहि ॥ रज लागी पट प्राण रजक जिम कुसमल धोवहि । गुरु बंद रोगह हीरै मरजीवै ल्यावै सुधन ॥ जनरजव बल वलि सदां अिगी ज्यू पलटै सुतन ॥३॥

मध्य—पारिये कौ अंग ॥ गृहणत वेद बंदंग रोग ॥ नीरत सिरहारे ॥ सुधं तद्य नद्य मगरघात ॥ पवरि अह निस पनिवारै ॥ स्वान वरत अज कूर्पं । पन्यंग परमल गति जातं ॥

निस बाइस दिन स्थाल ॥ बोल सोई विघन वधान ॥ सहदेवन मम कोग बाल गमि ॥ मुन संकट माता थनहु ॥ रजव सोऊन सोए लग ॥ रोआगम जाएं घुएहु ॥१॥ रए दिघन नहि डुरहि । डुरनह चद प्रकाशा ॥ दामनि दमकन डुरह गोपि नहि उर की आमा ॥ छिपे भंड स्व चोल । गहन गति सब कोई जाएं । इंद्र गाज बड़नालि । बोल छूट नहि छाने ॥ जग जारं जमए मरण उगे बीज जो बोई से । सूरज वमन माहिली । फहौ कौन विधि गोईये ॥२॥

अंत—ब्रह्मा बाहन हंस ॥ बिसन के बाहन पगपति ।

संकर बाहन बैल । मूस पर चढे सुं गणपति ॥

कलस्थाम मोर सकति कं स्थघ विराजं ॥

है सूरज ठौ इद्र ॥ मसि रथ सारंग छार्जं ॥

सुरस बहन प्यारे पुहन ॥ तिनके काज न बीगरं ॥

श्राप चढ़ि असवार जो ॥ रजव ते डलेंवे मुष पड़े ॥२॥

इति श्री रजव जी के किचत सपूरण ॥६०॥

विषय—वैराग्य का उपदेश किया गया है ।

सख्या ३१८. पिगलनामार्णव, रचयिता—राजा रणधीर सिंह, (मगरामऊ देसाधि-पति), कागज—आधुनिक, पत्र—७०, आकार—६१^२/_४ × ६ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२३, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य-पद्य, लिपि—नागरी, रचनाराल—स० १८६४ वि०, मुद्रणकाल—सवत् १९२० वि०, प्राप्तस्थान—श्री नृसिंह नागयण मुद्रण, ग्राम—मीरजहांपुर, पोस्ट—मिडारा, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ पिगल नामार्णव ॥

॥ छर्प ॥

सुमुष एक रद कपिल चारु गज... प्रकासित ।

लम्बोदर अरु विकट विघ्ननासन सुविकासित ।

लसित विनायक धूम्रकेतु तिमि गणाध्यक्ष गनि ।

भालचंद्र गजवदन द्विदस इमि नाम सुमद भनि ।

कृत प्रथम अस्मरन लवन जो आरंभे दिद्या रने ।

जु विवाद प्रवेशे निर्गमे संकट विघ्नघनक घने ॥ १ ॥

००:

००:

००:

४ ६ ८ १

शम्भत श्रुति निधि वसु शशि अक रीति सनिवार ।

मार्गशीर्ष मुनि तियि असित भयो पंथ अघतार ॥ ४ ॥

००:

००:

००:

॥ दोहा ॥

जाहि संस्कृत ज्ञान नहि बयो करि जानं नाम ।

ता हित भाषा भै करी "जूद्धधीर" अभिराम ॥

अंत—॥ माला नाम रूपमाला छंद ॥

राजितोत्पलक गुनवती इमि कोस रीति प्रकास ।

दाम लज तिमि धीमतामपि पेयि करत प्रकास ॥

त्यागि जग आत्तार सार प्रकार आत्ता ध्याऊ ।

चित्तानन्द निरीह नित्यारूप माला ठाऊ ॥२१६॥

इति श्री श्री मन्महारी श्री शिरमौर वंशावतंस श्री महारणधीर सिंह द्विरचिते नामार्णव समाप्तम् ।

विषय—पिगल विषय का वर्णन । ग्रंथ चार 'तरंगों' में लिखा गया है ।

रचनाकाल

४ ६ ८ ९

शम्भुवत श्रुति निधि वसु शशि अंक रीति सनिवार ।

मार्गशीर्षे मुनि तिथि अस्ति भयो ग्रंथ अवतार ॥ ४ ॥

संख्या ३१६. नासकेतोपाख्यान, रचयिता—रनजीत, कागज—देशी, पत्र—३६, आकार—७ X ४ $\frac{1}{2}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६०, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० दौलतराम पाड्ये, स्थान व पोस्ट—सहिजादपुर, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—.....लागा तप ध्यान ।

परम पुरुष का धावनां हिरदे माही थानं ॥

॥ चौपई ॥

नारी का मन आसा रहै । काहू से मन की नहीं कहै ॥
रात दिनां चिंता मन मांही । छिन इक तिरिया भूलत नाहीं ॥
सब तन काम जगा दुषदाई । जैसे सूता सिंध जगाई ॥
उसा वासना बीज सि साहीं । हीनहार की यही दिसाही ॥
वही बीरज कर मांही लीन्हां । कवल फूल माही धर दीहा ॥

अंत—और रिषीस्वर बहु सतवादी ।
धर्मराय ढिग जिनकी गादी ॥
वारह सूरज की सम रूपा ।
वस्तर पहरें रतन अनूपा ॥
चतुर वेद के पढनें वारे ।
अरु मिहमां साव जानन हारे ॥
बहुत.....

—अपूर्णा

विषय—नासिकेत ऋषि का उपाख्यान वर्णन ।

संख्या ३२०. गगाष्टक (गंगा जी का झूलना), रचयिता—रमताराम, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—३ $\frac{1}{2}$ X ५ $\frac{1}{2}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०, पूर्ण, रूप—जीर्णशीर्ष, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी-प्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ श्री गंगा जी के झूलना ॥

जे गंगा जें सरस्वती जे से मंदाकिनि माहि ।

जे जें तूं अविनासिनी सुरनदी जे जे सुख दीप ॥ १ ॥

दर्शन करते जना से बड़ो दुख गावत गुन गीत अधना रहगे ॥

नहांत सबल व्याध जातंछिनवी ज च कुट्टी कलंकी हो जात चगे ॥

तौररि खर्द भलभाति तारे कौने सब दुष्ट है मानभगे ॥

यही वात लिख कर कहें दास रमताराम बिज मात जे मात-जे मात गगे ॥ २ ॥

मध्य—महाघोर सव्दं भू...भीत भमर अथाहं न थाहं पारावार सगे ॥

अप आरं प्रवाहं जलं वेसुमारं तरं तार तारं करत पाप पगे ॥

सकल कष्ट नार्थं विकट व्याधिकाट मह दुष्ट जन के हृद फाट जगे ॥
यही बात लि. ॥ ५ ॥

श्रुत—गंगा जु श्रष्टक पदंतं सुनत कटत पतिक होत पावन मुअगे ॥
न्यातं प्रभातं जपतं जितेद्र जिनदेत राज श्रटल हाक संगे ॥
घोरांधकार-नसतीम्न डाकं धजा धर्म की सुफहुरा तिरगं ॥ ८ ॥
यही बात लिखकर कहें दास रमताराम जे मात जे मात मातगगे ॥

इति श्री गंगा श्रष्टक सम्पूर्ण सम्पात ॥

विषय—गंगा जी की स्तुति की गई है ।

संख्या ३२१. वाराणसी, रचयिता—रमयोज, कागज—देगी, पत्र—४, आकार—
८ X ४ $\frac{1}{2}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५, पूर्ण, रूप—प्राचीन,
पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—आर्य भाषा पुस्तकानय (याज्ञिक मंत्र) नागरीप्रचारिणी
सभा, काशी ।

श्रादि—श्रीरगनेसय नमः

क क किसन गुपल को सुमरनी करी दीन राना ।
टेरी टेरी तो सौ कह्यः पवंगो सुप चैन ॥ १ ॥
पषा पेलन छडिये सुरवीर को कम ।
सायर सु सनमुष रहै पती रप भगवान ॥
गगा गुर की सीप सुनी छटि सकल जंजाल ।
वही सागर गुर के कहै उत्तरि जाहगे पार ॥
घघा धारिस भरियो सीर पं सघी पल ।
जासौ भाजी भगवंत को पानि पहुली वधौ पाली ॥

श्रुत—पषा पेत न छडीय सुरवीर को काम ।
सायर के सनमुष रहै पती रपंगे राम ॥
स सा सय मैं राम है जलयल जीय जोन ।
राचन वर रची गय मेह न वरो कोन ।
ह ह हरिके नम पै हाय उठाय कछ देहु ।
मये य संसार मैं जनम सुफल कर लेहु ॥

इति श्री रमयोज की वरपरी संपनु ॥

विषय—'क' से 'ह' तक के प्रत्येक अक्षर पर दोहा रचकर ज्ञानोपदेश दिया गया है ।

संख्या ३२२. बलदेवपट्टक, रचयिता—रसनिधि, पत्र—१ (पृष्ठ १६ से २०), आकार—
७। X ६। इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८, पूर्ण, रूप—माध्याग्न,
पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—श्री सन्ध्वती भण्डार, श्री विद्या विभाग, काशी, हि०
व० सं० ६४, पु० सं० ६।२ ।

श्रादि—श्री बलदेव जी को पटक् रसनिधि श्रुत

॥ दोहा ॥

श्री गरुपति को धाय के करो पटक बलदेव ।
रिद्धि सिद्धि दायक सखल विद्या उबर भरेव ॥ १ ॥

॥ कवित्त ॥

काम क्रोध लोभ मद मछरता मोह हूँ सों जगत् मे छाया रह्यो अधिक अंधेरी है ।
जप तप जज्ञ दान मंत्र जंत्र तंत्रन को कलिने मिटाइ दियो सरस वषेरो है ।
स्वारथ के साथी सुत सुजन सुबंधी रहे रसनिधि कोऊ काहू कोन कहूँ हेरो है ।
तासो बलदाऊ जी के चरन सरोरुह कौ गहि रे भरोसो होत कारिज सवेरो है ॥११६॥

मध्य—

जेहरि जराऊ पग नेवर टराऊ नख भूपन घराउ चंद छटा छछराऊ कौ ।
सूथन कुमाऊ अंग कंचुक घुमाऊ कटि पटु कालु माऊ जरी तोर सरसाऊ को ।
मोर के पखाऊ आछी कुलहे सजाऊ रसनिधि सुखदाऊ नखसिख लो सुहाऊ को ।
वारिज सराऊ भक्ति भाव के भराउ ऐसे भजि मन भाऊ धजबंध बलदाऊ को ॥११८॥

अंत—कैऊ कवि अष्टक करे कैऊ मतक अनेक ।

रसनिधि कौनो खटक यह अपनी बुद्धि विवेक ॥

छमा करो बलदेव प्रभु अब धारो सुपटवक ।

भक्ति रावरे चरण कौ दीजे मोहि भुजवक ॥१२१॥

विषय—श्री बलदेव जी की महिमा वर्णित है ।

विशेष ज्ञातव्य—इस पुस्तक में पृष्ठ १८ तक फुटकर कवित्त है । बाद में 'बलदेव पटक,
श्रीर 'यमुना नवरत्न' लिखे है । कवित्त सं० ११६ से १२१ तक है ।

संख्या ३२३. रसिक पच्चीसी (रसरसि पच्चीसी), रचयिता—रसरसि, कागज—
वाँसी, पत्र—६, आकार—८ $\frac{३}{४}$ × ७ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—
१७१, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी-
प्रचारिणी सभा (याज्ञिक मग्रह), काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्रीनते रामानुजाय नमः ॥

॥ कवित्त ॥

परम पवित्र तुम मित्र हो हमारे ऊधो

अंतर विथा की कथा मेरी सुन लीजिए ॥

वृज की वे बाला जपे मेरी जपमाला, बढ़ी

विरह की व्यथा तामें तन मन छोड़िये ॥

मेरी विसवास मेरी आस रसरामि मेरे

मिलिबे की प्यास जानि समाधान कीजिये ॥

प्रीति सों प्रतीति सों लिखी है रसरीति सों

पत्रिका हमारी प्रान प्यारिन कौ दीजिये ॥ १ ॥

मध्य—

उधो कहि को है जदुनाथ द्वारिका की नाथ

कौन बसुदेव कौन पूत सुखदाई है ।

कौन है निरजन अपिल अविनासी कौन

ब्रह्म हूँ कहावै कौन जाकी जोति छाई है ॥

इनसों हमारी कही कासों पहचानि जानि

याते रसरसि वातें मन में न भाई है ।

प्रीतम हमारी मोर मुकुट लकुट वारी

नंद कौ दुलारी स्याम सुंदर कन्हाई है ॥१४॥

श्रुत—

राघे जू रसिक महारसिक गुव्यद जू के,
 रस के सदसन मे भरी रनिकाई है ।
 रस ही के ऊतर रसीले कजवासीन के
 सुनि सुनि ऊधी हू रसिकताई छाई है ।
 रसिक सुजान महाजान श्री प्रताप भूप
 तिन की कृपा तें यह बात बनि आई है ।
 रसिक सभा मे रस रंग बरसायवे कौ
 रसिक पचोसी रसरसिहू बनाई है ॥२६॥

इति श्री मन्महाराजाधिराज राज राजेंद्र श्री सवाई प्रताप सिंह जो देवान्त रमरामि-
 विरचिताया रसिक पचोसी सपूर्ण ॥

विषय—उद्धव-गोपी-सवाद-दर्शन ।

सख्या ३२४. तुलसी भूषण, रचयिता—रमरूप, कागज—रंगी, पत्र—७९, आराम
 —७ X ६ ३/४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१९५५, प्रग, रूप—प्राचीन,
 पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८११ १७०, प्राप्तियान—काशी नागरी-
 प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशायनमः ॥ श्री रामाय नमः ॥ अथ तुलसी भूषण तीप्यते ।
 ॥ दोहरा ॥ छंद ॥

गुर गणेश गिरिधर सुमिरि गिरा गौरि गीरोस ।
 मति मागत "रसरूप कवि" राषि चरन पर सीस ॥ १ ॥
 श्री तुलसी निज मनित मे भूषण घरे दुराय ।
 ताहि प्रकासन की नई मेरे चित मे चाय ॥ २ ॥
 सो कविता सव गुन सहित है जग विदित सुभाय ।
 दीपक लं रस रूप ज्यों दिनकर दियो देषाय ॥ ३ ॥
 रामायन मे जो घरे अलकार के भेद ।
 ताहि जथामति वृत्ति कं रच्यौ प्रबंध अषेद ॥ ४ ॥
 औरनि लक्षण के लिए रामायन के लक्ष ।
 तुलसी भूषण अथ को या विधि कियो प्रसक्ष ॥ ५ ॥
 अलकार हैं भाति के तब्द अर्थ हैं नाम ।
 तिनके लक्षण लक्ष जुत बरनत मति अभिराम ॥ ६ ॥

मध्य—असभवालंकार लक्षण

॥ दोहा ॥

कहै असंभव होत जह विनु संभाषन काजू ।
 गिरि कर धरिहै गोपसुत को जानत हो काजू ॥६८॥
 जथा—घोर निसाचर विकट भट समर गनहि नहि काहू ।
 मारे सहित सहाय किमि पत भारीच. नुबाहू ॥६९॥

पुनः चौपाई

रावन नगर अल्प कपि दहई । सुनि यह पचन तत्य हो बहई ॥१००॥

श्रुत—

॥ दोहा ॥

सम्मत काव्यप्रकास कौ और कुचलयानंद ।
चंद्रालोक लताकलप चंद्रोदय सुभ कंद ॥
एकादस अरु एक सत मुप्य अलंकृत रूप ।
विविध भेद इनके धरे तुलसीदास अनूप ॥
दस वसु सत सबत हुतो अधिक और दस एक ।
कियो सुकवि रस रूप एह पूरण सहित विवेक ॥

इति श्री तुलसी भूषण ग्रंथे समस्ताभूषण भूषिते रसरूप कृतौ संपूर्ण समाप्तं सुभमस्तु श्रीरस्तु ॥

विषय—तुलसी कृत ग्रंथो से उदाहरण देकर शब्दालकार, अर्थालकार और चित्रालकार का वर्णन किया गया है ।

रचनाकाल

दस वसु सत संवत हुतो अधिक और दस एक ।

कियो सुकवि रसरूप एह पूरण सहित विवेक ॥

संख्या ३२५. पङ्क्तु भातंभट, रचयिता—रमसिधु (श्री कृष्ण लाल जी), स्थान—काशी, पत्र—४१, आकार—७ $\frac{1}{2}$ x ६ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२३०, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, पद्य, विधि—नागरा, रचनाकाल—स० १९३०, प्र.प्लि-स्थान—श्री सरस्वती भटार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ८८, पु० स० ४ ।

श्रादि—॥श्री द्वारिकेशो जयति ॥ श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ॥ अथ षट् ऋतु मार्तंडाष्ट्य ग्रंथो विरच्यते ॥ अथ मंगलाचरणा ॥ नमः ॥

श्री कृष्ण पादाजतल कुड कुमथड वायोः रुचये पदरुणं शश्वन्मामकं हृदयावुजम् ॥१॥

यः स्वीयानगात साधनान् निगणयन् नाना परालेधान्

परोन्यके नैव कृपा सुधा जलधरा सोरेण यत्सिचति ।

स्याम त्व निज सोभय पर वपुर्ध्यां नेन यद्गौरतात रायोतर शब्द मुधृत निज श्रीमन्मुकुदं भजे ॥

मध्य—पृ० ३९

॥ कवित्त ॥

साजे लाल मंदिर को चोक वो तिवारी सब लला विछवाई जु मखमल सुरंग हे ।
कहे “रससिधु” लाल गादी यो तकिया यह लाल हीं सीघासन सुखड वीसु रंग हे ।
पाट जाके आगे छोर छिछोटी चौकी लालहि हे—वस्तु धरे पाग जो सुरंग हे ।
लाल हें सीगार भारी कौये जो गोपाल लाल लाल जीहि आरती को वारत सुरंग हे ॥ ४ ॥

ता समे यह कीरतन भयो । लाल ही वागो लाल ही सुथन लाल ही पाग बनी गिरधारी ॥
ता पीछे बोळ जगे नित्य कीरति पोढे इति हेमन्त ऋतु ॥ वार्ता अष्टम ॥ ८ ॥ मितो चंद्र सुद
१ नयो संवत् १९२९ के वा दिन लाल छाया के सिगासदा । जेसी पिछवाई लाल छापा की नई
जाल बाडी । वा दीन सदा गुलाव की फूल मंडली होय हे सो दोनो ठिकाने भई ।

श्रुत—

॥ दोहा ॥

समे भई तव भोग की फिर मंदिर पधराय ।

पुन वारत हे आरती देखत मन न अघाय ॥१४९॥

येहे ग्रंथ वाचे सुने बढे जो वाके भाग ।

श्री प्रभुन के चरन मे रहे सदा अनुराग ॥१५०॥

संमत सुभ उज्जीस सय साल वीस मे कीन ।

मितो पूस वदि तीज को ग्रंथ जु यह रच दीन ॥१५१॥

लिखत दास वृष्णन. भोजी सुत लो जान ।

मुथरा नाम कहे सवी गुरु चरण धर ध्यान ॥

मिती फागुन वृद १० लीछ सुक्यो ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री देवदमन जी श्री द्वाग-
वती: नरेश: ॥ स्यामाप्यारी जी ॥ श्री प्यारी जी ॥

विषय—प्रस्तुत ग्रथ मे कार्णाम्थ गोपाल मंदिर के ठाकुर जी श्री गोपाल नान जी तथा
मुकुद राय जी के उत्सवों मे जो पङ्क्तु मवधी गर्नाम्थ (उत्सव) हूण, उनका पत्रिने यगन
किया है ।

सख्या ३२६क. रामपचाध्यायी, रचयिता—रंगानन्द, वागज—श्री, पत्र—१६.
आकार—६ × ६ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३०० पूरा
रूप—प्राचीन, पद्य, तिपि—नागरी, रचनाकाल—मन्व १८६६ वि० प्राणिधर्म—आरंभ.पा
पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी मभा (याज्ञिक मन्त्र), बनशी ।

आदि—श्री राधा रस मूर्धे नमः ॥ अथ रास पचाध्यायी लिख्यते ॥

॥ छर्प ॥

ललित मुकुट सिर टलक अलक मुकलित लघुराप्रत ॥

वक भ्रुवुटि दृग शरण करण कुटल मकराप्रत ॥

मुप भ्रु हास विकास विकास वेनुधुनि दल्यत सफीचन ॥

ब्रह्मरन्ध्र विहार यज दध विग्रह टिमोचन ॥

लीला प्रदित्त लालित्य तन र नीरद यदन ॥

वकट सहाइ सकट हरन नमी देव गिरिवरधरन ॥ १ ॥

॥ कवित्त ॥

मत्र द्वादशाक्षिर सुरूप रस मोद के,

अनूप द्वादस अरकध फीने छद सस्मृते ॥

नासक अबोध अग्यान अघकार,

वे प्रकाशक सुदोध ज्ञान अमल अहरष्टते ॥

कलिकाल तद्विक विषे लगति भक्षिक ते,

रक्षिक सदैव वचनःमृतमद्भुते गुजस्रष्टते ॥

करी छिति पाराइनि परी छिति ताराइनि

नाराइन रूप वादराइनि नमस्मृते ॥ २ ॥

मध्य—

नासावदन शुक् भाइ ॥ फल अघराई तल ललचार ॥

गुदना चिबुक छवि देत ॥ सति मे सिगार निषेत ॥ २७ ॥

छवि सीव प्रीव सुढार ॥ तहां हार माल चिगार ॥

भुज कर कंज की भुज नाल ॥ आगुरी नप सनि जान ॥ २८ ॥

जुग उरज कि टुक रूप ॥ तहां रोम जमुन अनूप ॥

त्रवली तरंग सरूप ॥ उरघर उदार अनूप ॥ २९ ॥

कटिन सो सुप देन ॥ मनो अग अनग दुदुभि नितब मुग्ग ॥

जुग जंग उर धरंम ॥ जनु यमल बंचन पम ॥ ३० ॥

अंत—

॥ कवित्त ॥

गाई चतुरानन बताई रिषी नारद को,

नारद ते ध्यात जू की जरनि तिराई है ॥

व्यास जू सो सो सुनी सुक मुनि,
शुकमनि जू ने रिसिक परी को त्रपा करि सुनाई है ॥
रसिक मुकुट मणि स्वामी श्री विठ्ठलेस,
तिनके चरन सेइ यहै निधि पाई है ॥
पंच प्रान रूपी पंच रशिकन के काज रस
आनंद बनाई यह पंच अध्याई है ॥५६॥

॥ दोहा ॥

श्री बल्लभ पद रज सुमिरि निज लघु मति अनुसार ।
पंच अध्याई कथा रचि कियो प्रेम विस्तार ॥६०॥
संवत् अष्टादश शतक बहुरि नवासी आनि ।
दीप मालिका कातिकी पूरन कथा प्रमान ॥६१॥

इति पंच अध्याई वर्नन पंचमोध्याय. ॥१५॥ सपूर्ण ॥ मितो कार्तिक वदी १५ संवत् १८८६ ॥

विषय—इसमें गोपियो और कृष्ण की अगारपूर्ण रासलीलाओं का वर्णन है ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ का अंतिम सोलहवाँ पत्र अद्वैतखंडित है । प्रस्तुत हस्तलेख रचयिता का ही लिखा हुआ विदित होता है, क्योंकि इसमें लिपिकार के नाम का उल्लेख नहीं है ।

संख्या ३२६ख. वारहमासी, रचयिता—रमानंद, कागज—दशी, पत्र—३, आकार— $१०\frac{३}{४} \times ७$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुपटुप्)—६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन; पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), काशी नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ वारहमासी रस आनंद की ॥

॥ दोहा ॥

चतुर चौप चित् चौगुनी चैत मास उपजत ।
रति वसंत मधि एकली चले छाडि कं कंत ॥ १ ॥

॥ कवित्त ॥

चैत में चतुर चित चोट दै अकेली छोडी बिथा के विछे हैं आनि अगिनित जाल से ।
भोजन भुलांनी देह जाति पिघलांनी यदि आवै दिलजानी करै बिरहा दिहाल से ।
फूल लागे सूल से दूकूल हू दवागिनी से भाल सो रसाल और भौर लागे काल से ।
धीर को न अत बीर पीर मेंमत हाय ऐसे ए वसंत चले कथ नंदलाल से ॥१॥

मध्य—

॥ कवित्त ॥

पेलन को होरी सजी सादी सहजादी राधा वैनी गूथि अंजन दै मंजन सुहायी है ।
सारी स्वंत ऊपर किनारी छंद चद को सो चोली में चतुर चुनि अतर मलायी है ।
अंकन भरत रीभे भीभे नवरंग लाल आनंद गुलाल रतिपाल घमड़ायी है ।
फूली अनुरागनि सौ पाए पीव या गुन सौ फागुन सुहागिनिनि भागिनि सौ आयो है ॥१२॥

॥ दोहा ॥

मति अनुसार विचारि मित कियो प्रेम विसतार ।
चुभे चुटीले जननि कं चित्त चौगुनी चार ॥ १ ॥
सब सुघरन सौ वीनती जीपे चक लपाइ ।
भो अधीन पर करि कृपा दीजो तहां बनाइ ॥ २ ॥

इति श्री रस आनंद की वारहमासी संपूर्णम् ॥ १ ॥

विषय—श्रीकृष्ण के मयुरा चले जाने पर गोपियों का विगृह-वर्णन।

संख्या ३२७. दानलीला, रचयिता—रसिक, कागज—द्रेजी, पत्र—६, आकार— $५\frac{1}{2} \times ३\frac{1}{2}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८, पूर्ण. रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८८८ वि०, प्राप्तिस्थान—प्रायंभापा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी।

आदि—दान लीला लिखते ॥

॥ राग बिलावल ॥

तुम नंद महिर के लाल मोहन जान दे ।

श्री गोवर्द्धन गिरि मिछरि तें हो मोहन दीनी टेर ।

अंतरग सो कहैत हे सब ग्वालिन राग्यो घेरी ।

मोहन जान दे ॥

तुम नंद महेरी के लाल रानी जसुमती प्राण आघार ।

मोहन जान दे ॥ १ ॥

ग्वालिनी रोकी ना रहे हो ग्वालन रह पची हारी ।

अहो गिरिधारी दोरी यो यह कह्यो न नान ग्वारि ॥

नागर दान दे वृषभान नृपती की बाल ॥ २ ॥

मध्य—ऐसे मे कोऊ आय हे देखें अद्भुत रीत ।

आजू सबे नंदलाल जू प्रगट जनापति प्रीति ॥

मोहन जान दे ॥ ३३ ॥

ब्रज वृंदावन गिरि नदी पशु पंछि जे संग ।

इनसो कहा दुराव हें श्रीराधा मेरो अग ॥

नागरि दान दे ॥ ३४ ॥

अंस भुजा धरि ले चले प्यारी चरन नीहोरी ।

निरखत लीला रसिक जू सो जहाँ दान की ठोर ॥

मोहन जान दे ॥ ३५ ॥

इति श्री दानलीला संपूर्ण ॥ समाप्त ॥ हरि ॥

विषय—दानलीला का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल स० १८८८ ई जंगल के ७१ में 'मानमाधुरी' के आघार पर है । ये दोनों ग्रंथ एक ही गुटके में हैं । इनमें पद्य ग्रंथ भी है जिन्में लिए कृपया देखिये चतुतभुज दास कृत 'मृग कपोत की गीता' का विवरण पत्र ।

रचयिता का नाम ग्रंथात में 'रसिक' दिया है । 'रसिक' नाम में कई चक्र पढ़ने मिन बुने हैं, पता नहीं प्रस्तुत 'रसिक' उनमें से कोई एक है या नहीं । मधुरा के प्रसिद्ध नाटिका श्रीजवाहरलाल जी चतुर्वेदी लिखते हैं कि ये प्रसिद्ध श्री हरिदास हैं जो अपनी छाप 'रसिक', 'रसिकराय' लिखा करते थे । उनकी ही यह दानलीला है ।

संख्या ३२८क. कीर्तन संग्रह, रचयिता—मट्टू जी महाराज, उपनाम 'गोविन्दराज', 'रसिकदास जी', (स्थान—गिरिराज), पत्र—३१ आकार— $५\frac{1}{2} \times ३\frac{1}{2}$ इंच पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६१५, पूर्ण. रूप—आधुनिक, पद्य लिपि—नागरी प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भट्टार, श्री विद्या विभाग, बाँसरोनी दि० २० १५, पु० २० ८ ।

आदि—श्री कृष्णाय नमः । श्री गोपीजन वल्लभाय नमः । अथ कीर्तन लिख्यते ।

॥ राग भैरव ॥

धन्य धन्य सूर महा भक्तराई ।
तिहारी महिमा अपार वरनो नही जाई ॥ १ ॥
हों तो अति बुद्धिहीन तुम हो सरसाई ।
रसिक दास नमन करत सीस चरण नाई ॥ २ ॥

मध्य—पृ० ३० ॥ सारंग ॥

जेमत है बलि मोहन दोऊ सखन सहित नानाविधि छाक ।
सखरी श्रोदनादि बहु विजन अनसखडी कीनो घृतपाक ॥ १ ॥
ओट्यो दूध ओर छे मेवा खरबूजा को भीठो साक ।
रसिकदास प्रभु कोर उछारत भारत हें ग्वालन को ताक ॥ २ ॥
अंत—(२३० कीर्तन लिखने के बाद)

॥ दोहा ॥

सूर सूर विन हीन गति होत दिवसचर जानि ।
ताते तुव प्रकास विन क्यो उघरे गुण गान ॥ १ ॥

इति श्री षष्टमान्हिकः ॥ लिखितं गिरधर ब्राह्मणेन श्री गोकुल जी मध्ये श्री युमुना जी तटे लिखितं पुस्तकं ॥

विषय—पुष्टिमार्गीय मदिरो मे गाये जाने वाले कीर्तनो का संग्रह ।

संख्या ३२८ख. कीर्तन समूह, रचयिता—रसिकदास (गोपिकालकार जी उपनाम मट्टू जी महाराज), स्थान—श्री गिरिराज, पत्र—४२, आकार—६ × ७।। इंच, पक्ति (प्रति-पृष्ठ—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१००८, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९१५, प्राप्तस्थान—श्री सरस्वती भटार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० स० ३८, पु० स० ८ ।

आदि—॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ श्री मद्गोपीजन वल्लभाय नमः ॥ अथ श्री रसिक रायाणा कीर्तन समूह लिख्यते ॥

॥ राग भैरव ॥

धन्य धन्य सूर महा भक्त राई ।
तिहारी महिमा अपार वरनी नहि जाई ॥ १ ॥
हों तो अति बुद्धिहीन तुम हो रसराई ।
रसिक दास नमन करत सीस चरन नाई ॥ २ ॥ १ ॥

मध्य—पृ० ३८ ॥ राग सारंग ॥

सुंदर छिया सघन नव वट की बैठे मंडल कर व्रजनाथ ॥
मध्य विराजत है बल मोहन ग्राम पास व्रज बालक साथ ॥ १ ॥
केडक ग्वाल परोसन लागे अरु वाढत ले अपने हाथ ॥
रसिकदाम प्रभु की ले आज्ञा जेवन लागे नाथ माथ ॥ २ ॥ १२ ॥ ६३ ॥

अंत—

॥ दोहा ॥

सूर सूर विन हीन गति होत दिवसचर जान ।
ताते तुव परकास विन क्यो उघरे गुणगान ॥ १ ॥

इति श्रीमद् गोस्वामिवर्य श्री द्वारकेशात्मज श्री मद्गोपिकालकाराणां विरचित पद्य-
मान्हिक समाप्ति मगमत् लिखित मिद दधीच व्यास भागीरथात्मजेन रामकृष्णेन श्री मिहात्मप्ये
मोदी की खिडक मे वाचे सीखे सुने सुनावे तिनकू असकृत दडवत् भगवत्समग्राम् श्रीगन्तु बन्ध्याला-
मस्तु संवत् १९१५ के चैत्र शुक्ल १ शुभ वासरे ॥

विषय—समयानुसार कीर्तन योग्य पदों का संग्रह ।

संख्या ३२६. कलि चरित्र, रचयिता—रमिकराय जी, कागज—देशी, पृष्ठ—३
(२३ से २५), आकार—८ × ६ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८६, परिमाण (अनुष्टुप्)—
१०३, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—श्री गग्गदती भटार, श्री
विद्या विभाग काँकरोली, हि० व० ६२, पु० स० ६१२ ।

आदि—॥श्री. ॥ अ. कलि चरित्र लिख्यते ॥

सेवत चरन कमल तेरे सब किंकर नर मुनि जानी ।
वेद पुरान मद्धि करुनानिधि तूही परम बपान ॥ १ ॥
तेरी कृपा सकल प्राणिनि केँ फलमख कुर्ताहि कृपानी ।
कलि चरित्र करिवेँ अब दीजे मोहि दया करिबानी ॥ १ ॥

मध्य—प० २४ अ-राज चरित्र ॥

पहिले नृपति मनोरथ करि करि दान विप्र कुल दीने ।
सेवन करि करि विप्र चरन को जनम सफल करि लीने ।
अबके नृप आगें ही अपने विप्रन गरे बटावें ।
रसिक राइ या कलि की महिमा मोपें कही न आवें ॥ १ ॥
जिही वस पहिलेँ नृप दुज जन दान अनेकन दीने ।
भूमिदान गज दान दान हय अन्नदान सुभ फीने ।
तिहीं वंस अब नृपति विप्र कुल मारि मारि बितलावें ।
रसिक राइ या कलि की महिमा मोपें कही न आवें ॥ १ ॥

अंत—करिये नाहि भरोसो छिनु भरि जे कदीम अपने हूँ ।
दूरि राखिये तिनसो बातें नाहि होत सपने हूँ ।
अनजाने अनपूछे निघरक नृपहि उवायें प्यावें ।
रसिक राइ या कलि की महिमा मोपें कही न आवें ॥२०॥

इति राज चरित्र ॥

विषय—ब्राह्मण क्षत्रिय पहले किस प्रकार रहते थे और अब दानियुग में किम तरह रहे
हैं, यह वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख में पहले “कृष्ण वृत्त चन्द्रावली” ग्रंथ लिखा और बाद में यह
ग्रंथ ।

संख्या ३३०. भाषा करुणानंद, रचयिता—रसिक लाल या रसिक मुजान (३ जान)
कागज—देशी, पत्र—४८, आकार—६ $\frac{३}{४}$ × ६ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण
(अनुष्टुप्)—८५५, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, रचनास्थान—स० १९२२
लिपिकाल—स० १८१७, प्राप्तस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (गान्धारी नगर) १०५५
वस्ता, नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि— ।। श्री हरि ॥ श्री राधावल्लभो जयति ॥

॥ दोहा ॥

श्रीकृष्ण चंद्र आनंद निधि पंडित जग सिरमोर ।
करुणानंद शुभ ग्रंथ रचि विशद कियौ सब ठौर ॥ १ ॥
ताकी भाषा करन कौ कौनी हे मन मोद ।
मैं तो अपने सीस को रसिकनि की धरि गोद ॥ २ ॥
यह प्रबंध अति गूढ है दुर्लभ जाकौ भाव ।
हैं तो लघुमति सौं अही कैसं बने बनाव ॥ ३ ॥
श्री गुरु पद के ध्यान तैं उपजी है चित चाह ।
तातैं विनती करत हौं जो कछु होय निवाह ॥ ४ ॥

॥ छप्पै ॥

दामोदर दर चरन हरन चित तिमर दया कर ।
दुर्घट भवनिधि तरन सरन जाचत सुरेस नर ।
विमल कमल कैं वरन सकल सुख संपति दाइक ।
रसिक शीस आभरण धरन शुंदर दुति लाइक ।
तिनकौ नित चित ध्यान धरि करुणानंद भाषा करन ।
जैसे बुधि उनमान मिति ताही विध्य कछु अनुसरत ॥ १ ॥

अंत—अर्थ चंद्रिका नाम सरस टीका सौं सोमित ।
यह करुणानंद ग्रंथ भयो रसरसि सुषद नित ।
राधा वल्लभ चरन कमल तट वृंदावन जहूँ ।
सदा स्याम रस त्रपित करयो हित कृष्ण दास तहूँ ।
व्योम जुगल इषु चंद १५२० जब संख्या गई वित्ति ।
कृष्ण जन्म अष्टमी सुदिन भयो ग्रंथ शुभ रीति ॥

॥ दोहा ॥

करुणानंद पूरण भयो श्री कृष्ण दास कृत चाद ।
अद्भुत अमल प्रबंध मह रसिकनि को आघार ॥ १ ॥

॥ छप्पै ॥

करुणानंद दुर्वोध मह अति कठिन संस्कृत ।
पंडित जग सिरमुकट प्रगट हित कृष्णचंद्र कृत ।
ताकी भाषा होइ कौन पै को ऐसो नर ।
विनु उनके अनुग्रहहि सकै नहि करि प्रथवी पर ॥
जैसी मो मति है कछु ताही के उनमान ।
भाषा करुणानंद की कौनी "रसिक" सुजान ॥ १ ॥

:०:

:०:

:०:

॥ दोहा ॥

भाषा करुणानंद की पूरन भई रसाल ।
हरिरस पुहुप सुगंध जुत रसिकन की उरमाल ॥
४ २ ७ १
निगम नेत्र सागर ससी १७२४ बीते वर्ष संकेत ।
पूरन तिथि गुरवार शुभ कातग पछ जु श्वेत ॥ २ ॥

ता दिन भाषा भई यह बूदावन के मान्द ।
पढहु रसिकवर दिमल मन नित्य प्रात अर सान्द ॥ ३ ॥

:०: :०: :०:

चंदु गंध भये सोरठा न१ मर्व तस्व द्विग वानि ।
अंकनि उलटी रीति सीं गनियो रनिक सुजानि ॥ ६ ॥

इति श्री रसिक लाल कृत भाषा करणानंद समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ श्रुत्याणमस्तु ॥
श्रीरस्तु लिखत इद पुस्तकं सवत् १८१७ वर्षे पोप मासे कृष्ण पक्षे स्तित्यो अष्टम्याया चर्द्धादिने
श्री गुरु प्रसादात् इंगरसि ॥ १ ॥

विषय—श्रीकृष्ण भक्ति-वर्णन ।

रचनाकाल

४ २ ७ १

निगम नेत्र सागर ससी १७२४ वीति वर्ष मकेत ।
पूरन तिथ गुरवार शुभ कातग पछ जु श्वेत ॥ २ ॥

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख का मध्य अंश छडित है । ३८ में नेकर ५२ मन्त्रा नर ने
पत्रे नहीं है । रचनाकाल सवत् १७२४ है और लिपिकाल सवत् १८१७ ।

सख्या ३३१क. कार्तिक माहात्म्य, रचयिता—राघोदान या राघवदान, (नवाव गज,
सोराव, इलाहाबाद), कागज—देशी, पत्र—४२, आकार—१३ $\frac{१}{४}$ × ५ $\frac{३}{४}$ च, पन्नि (प्रति-
पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३४२, पूर्णं, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी,
रचनाकाल—स० १८४८ वि०, प्राप्तिस्थान—१० महेशप्रनाद जी मिश्र, ग्राम—नेहावग,
पोस्ट—अटरामपुर, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

वदो अलप अनादि अज अघिगत विगत दिवार ।
भक्त हेतु धरि विविध तन करितव चरित अपार ॥
नारायण मम प्रणति प्रभु श्रीनर उत्तम नाम ।
मम हिय कज भुग इव वसहु सदा धनग्याम ॥

॥ दोहा ॥

१ ८ ४८

वर्ष हजार आठ सो अठतालिस प्रतमान ।
फोन्ह कथा अरंभ फो "राघोदास" प्रमान ॥

हिमरितु एगहन मास पुनीता । शुक्ल पक्ष तिथि गजरी अर्भाता ॥
सोमवारि शुभयुत अनुराधा । कथा अरंभन स्वह दिन नाथा ॥
निश्चित पद्यपुरान पुनीता । महिमा फातिफ वेद चिनीता ॥

अंत—

॥ छंद ॥

समरथ भगवाना सव जग जाना सलप अगोचर रचामी ।
त्रैलोक्य सवारन विपति विदारन समरथ अंतरजामी ।
अति अम अंध्यारी एह सतारी प्रभु सुमिरन छदिनाली ।
जेहि कृपा विराजी तेहि अम भाजी बतह न देपहि पाली ॥
लोला तनु धारी जन हितकारी अंत न जाने कोई ।
गुण अगम अपारा कृत विस्तारा सागर पाह न होई ॥

प्रभुगर्व प्रहारी भक्ति शेष सारदा गावै ।
 नित निगम बधाने करि गुणगानै सो उपमा नहि पावै ॥
 मम भगति उपाई रोहु सहाई जौ मोहि प्रिय प्रभु मानी ।
 कहि दीनदयाला अतिभल वाला "राघोदास" बधानी ॥

॥ तोरठा ॥

लछमी सग प्रभु जाय समाधान करि जलधिजा ।
 बोले प्रभु मुसकाइ चर दल वसहु पयोधिजा ॥

इति श्री पद्मपुराणे राघोदास कृते भाषा प्रबंध कार्तिक माहात्म्य संपूर्ण ॥ बतिसमोऽ-
 ध्याय ।

विषय—कार्तिक माहात्म्य वर्णन ।

रचनाकाल

वर्ष हजार आठ सो अठतालिस व्रतमान ।
 कौन्ह कथा आरंभ को राघोदास प्रमान ॥

संख्या ३३१ख. नागलीला, रचयिता—राघवदास, स्थान—नवावगज (सौराव
 तहसील, इलाहाबाद), कागज—देशी, पत्र—१, आकार— $5\frac{3}{4} \times 3\frac{1}{2}$ इंच, पक्ति (प्रति-
 पृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुच्छेद)—२६, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपि-
 काल—स० १८५३ वि०, प्राप्तस्थान—प० महेशप्रसाद जी मिश्र, ग्राम—लेदहवरा, पोस्ट-
 अटरामपुर, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—अथ नागलीला ॥ :०: ॥

कहि गयो नारद हमहि तव अब हिये मे सुधि आइगै ।
 सुनुकश जो देवकी के नंदन हो तही समुझाइगै ॥ १ ॥
 बसुदेव ताहि चोराइ राषा नन्द गोकुल गाँउ मे ।
 मारंगे तोहि प्रचारि नरहरि करु को धर हरि धाउ मे ॥ २ ॥
 ताते कहौ परचारिको अब धाउ गोकुल मे सही ।
 अब आनु नन्दाहि वेगि मम यह सुनत भल सबही कहौ ॥ ३ ॥
 सुनि नंद मुरभी छीर भयन लादि शकटनि भोग ए ।
 लं छीर मावण कंश भाषण नंद सो बोलत भए ॥ ४ ॥
 अब जाहु वेगि पताल नंदल फूल को देरी नही ।
 नहि बाधि गोपकुमार गोकुल देउ वेरी मे सही ॥ ५ ॥
 कहि भलो नाथ रजाइ शीश नवाइ गोकुल आइकै ।
 सुनि कान कंश राजाइ कर मे चले गेदा लाइकै ॥ ६ ॥
 अब सुनहु हेतु विचारि जब कान वनमाली भये ।
 एहि भाति वाल विनोद सहित समाज यमुना तट गए ॥ ७ ॥
 अब नाग लीला गाइहो हरि चरित सुनि सुख पाइहो ।
 बहु ब्रह्मवृंद गोपाल लीला करत इत उत धाइहो ॥ ८ ॥
 एक वार नंदकुमार सहित विहार जमुना मे गए ।
 सुनि चरित वाल गोपाल गोकुल विकल गृह गृह मे भए ॥ ९ ॥
 जह नाग नागिनि करति सेवा कृष्ण तेहि अबसर गए ।
 कह अरे वार कुमार काकर कहाँ ते आवत भए ॥ १० ॥

कह कोन मथुरा कश नागर जूत मोहागत भए ।
 विन द्रव्यं सब उपाइ नागिनि भागि जमुना मे गए ॥११॥
 कह भागु भागु कुमार हार हमार ले नागिनि भए ।
 नत नाग जाग धाइ लागे फिरि तो भागं ना वन ॥१२॥
 वह कान नागिनि सुनु सोहागिनि नाग तो नायं वन ।
 शिर हारि कश जोहारि गोकुल श्रवती भागं ना वन ॥१३॥
 होनिहार जो करतार को रपवार जो रायं नहीं ।
 कह जागु जागु कुमार शत्रु तुम्हार सोमानं नह ॥१४॥
 नागिनि जगाए नागराज उदार सो जागत भए ।
 फुकुकार छाडु गोपाल तेहि छन कृष्ण सांवर हंइ गए ॥१५॥
 विष चद्रिका ते रूण छूटो गरुड यो मुमिरत भये ।
 सुनि गरुड जह यस्वदा के नदन सपदि तेहि श्रवण गये ॥१६॥
 विनतेय रोष कृशान गुरु सम नाग तेहि श्रमर भये ।
 तब कदि के जस्वदा के नदन नागपर ऊपर गये ॥१७॥
 नृत्यं गो फणपर देखि नागिनि जोरि कर विरयं रही ।
 विनती सुनो जस्वदा के नदन विरद वदन हं रही ॥१८॥
 चोर पैचि उवारि ध्रुव प्रह्लाद पभा मे रही ।
 श्रमोप नृप प्रण राषि मम श्रहिवत श्रव राषो मही ॥१९॥
 सुनि विनं नागिनि नाग ददी छोर गंगुल श्राद्धी ।
 कह "दास राघव" नागलीला गाइ हरिपद पादही ॥२०॥

इति श्री राघोदासोपाध्यायेन कृत नाग लीला समाप्तम् ॥ १२५ ॥

—संपूर्णं प्रतिलिपि

विषय—कृष्ण की नागलीला का वर्णन ।

सख्या ३३११ रविमणी मगन, रचयिता—राघोदान, नागज—देवी, पद—१२,
 आकार—२३६ × ३६ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, पन्निमाग (अनुष्टुप्)—३१, शीर्षक,
 रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—म० १०४६ वि० प्रारंभ—१००—१०
 महेशप्रसाद मिश्र, ग्राम—लेदहावरा, पो०—अटगमपुर, जिगा—नाहावाड ।

श्रादि—श्री कृष्णाय नमः ॥

लक्ष्मीपति पद कमल हिये हृदि ध्याइये । सीताराम उदार चरण मन साइये ॥
 प्रथमि लीजे नाम परम सुधि पाइये । गणपति चरण मनाइ मुमगल साइये ॥
 लं शारद कर नाम सो विधिहि मनाइये । शुरनरमुनि गदा देवती जग जग पाइये ॥
 भूपति भीषमराज सो कुडिनपुर बसं । तनयातासु कुमारिती मोहति निदम ॥
 एकुमिनि नाम उदार सुधा छवि सागरि । कीरति परम उदार महागुरु सागरि ॥
 राज सभा एक वासर सो चलि आइअ । बंठे भीषम राय गोद बंठ इअ ॥
 ताहि समं एक विप्र तथा चलि आएउ । राजहि दीन समीन देखि मुग पाउउ ॥

॥ राजोवाच ॥

कुत ते आएहु विप्र कहहु कुत जावहु । राजहि दीन समीन देखि मुग पाउउ ॥
 भूप वचन सुनि विप्र वदन घर भावहु । पुरी द्वारवा नाम देद उन भावहु ॥
 जह दरसन हरि जोउ पदरि नहि छावहु ॥

श्रंत—तव हरि अरुन पराग मांग भरि दीन्हेऊ ।
 सुरमुनि 'राघोदास' सुजै जै कीन्हेऊ ॥
 नंद यशोमति दान पाइ द्विज हरषेऊ ।
 मंगल मोद सराहि सुमन सुर वरषेऊ ॥
 जो यह मंगल गावै गाइ सुनावै ।
 व्याह दान कल्याण परम फल पावै ॥
 • रकुमिनि रतन सुनै सुनि अरथ विचारै ।
 आयु तरं भवसागर कुल निस्तारै ॥
 ॥ छंद ॥

तरै संतत निरखि राघोदास हिय धरि रुंझई ।
 दुख रोग शोग अनेक सकट निमिषि मह सब रुंझई ॥
 यह कथा परम अपार पुन्या सुनै जो मन लाइ कै ।
 सो जायकै वैकुण्ठ लीजै विविध सुख जग पाइ कै ।
 संवत् गए दस अष्ट सद गुरुवार सावन पंचमी ।
 कीन्ही कथा आरंभ राघोदास हिय धरि लइ इमि ॥
 ऊंचास सवत् मास पावन नास सुनि सब पाप को ।
 वरना जो मंगलधाम पूरन काम रकुमिनिनाह को ॥
 इति श्री राघोदासोपाध्याय विरचिते रकुमिनि मंगल सपूगम् ॥
 विषय—रुक्मिणी विवाह की कथा का वर्णन ।

रचनाकाल

संवत् गए दस अष्ट सद गुरुवार सावन पंचमी ।
 कीन्ही कथा आरंभ "राघोदास" हिय धरि लइ इमि ॥
 ऊंचास सवत् मास पावन नास सुनि सब पाप को ।
 वरना जो मंगल धाम पूरन काम रकुमिनिनाह को ॥

संख्या ३३२. छप्पै रामायण, रचयिता—राजमती (?), कागज—आधुनिक
 नीला, पत्र—८, आकार—६ $\frac{३}{४}$ × ४ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—
 १०४, अपूर्ण (केवल प्रथम पत्र नहीं है), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सन्
 १२५६ साल (? फसली), प्राप्तस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (ग्रथदाता—
 १० स्वामीनाथ जी दुवे, ग्राम—दुवौली, पोस्ट—खुखुदू, जिला—देवरिया) ।

आदि—:०:

:०:

:०:

देवी लोचन जल मोचीत ।
 पंछी सो मन मह शभी त देवती उर शोचीत ।
 दुष्ट दमन करुनायेतन राषी लेहु सरनापना ।
 क्रीपा करहु श्री रामचंद्र मम हरहु शोक संतापना ॥ २ ॥
 उठे ततछन मेघ व्रीश्टी जल अनल बतानो ।
 नीकसे भुअंगम डशेड शुधी व्याधा वीकलानो ।
 नीकसेड करते तीर जाये शचानही मारी ।
 अस्तुती करत कपोत नाथ प्रनतारत हारी ।
 शो प्रभु वेगी दअराल होऐ जीमी कपोत रीपुदापना ।
 क्रीपा करहु श्री रामचंद्र मम हरहु शोक संतापना ॥ ३ ॥

जं जं मीन वराह कमठ नरहरि श्री बावन ।
 प्रशराम श्रीराम श्रीस्न जनहीत पलवान्न ।
 जग्रनाथ कलफो नगामी दगबोध बहु धारन ।
 अमीत रूप अगनीत चरीरु श्रीत नाम उदारन ।
 शूर रजन शजन शुपत शीयानाथ श्रीर चापना ।
 क्रीपा करहु श्री रामचद्र मम हरहु शोक सतापना ॥ ४ ॥

अंत—छुटेव वदी शम वीवध फोटी तेतीग हृपीके ।
 अस्तुति करत वनाए पुहुप जं माना द्रपीके ।
 शोभु आए श्रीत वीवीपी भाती अस्तुति श्री रागा ।
 पाए रजाए शो चले देव शव नीज नीज धामा ।
 वीदा फीए शवही प्रभु देव जंती वर जापना ।
 क्रीपा करहु श्री रामचद्र मम हरहु शोक सतापना ॥ २० ॥
 रामचरीरु अयगाह शोधु फोड पार न पार ।
 शोप सारदा नोगम नेती कही नीज मूष गावं ।
 शोभु उमा सन भारद्वाज शो जागचलीक मुनी ।
 काक भशुडी शो गरुड मानसीक कही तुलसी गुनी ।
 कहै शुनं रती राम पद ऐक "राजमती" आपना ।
 क्रीपा करहु श्री रामचद्र मम हरहु शोक सतापना ॥ २१ ॥

इति श्री पोथी छपे रामयेन संपुरन शमापत जो प्रती देपा शो लीपा मम दोष न दीक्षते-
 मी० अग्रहन शुदी ११ रोज वहिफे शन १२५६ शाके ।

विषय—सक्षेप मे रामचरित्र वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ मे केवल प्रथम पत्र नही है । ममस्त रचना मे ३१ छापे हैं ।

संख्या ३३३. बाहु विलास, रचयिता—महाराज राज गिह, कागज—त्रेणी, पत्र—६,
 आकार—१० १/४ × ७ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुपृष्ठ)—३६०, पूर्ण,
 रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७४० (के पूरे अनुमान). तिथि-
 काल—स० १८२७, प्राप्तस्थान—श्री मरुवती भञ्ज, श्री विद्या विभाग, राँचरानी, हि०
 व० स० ५१, पु० स० ५ ।

आदि—॥ श्री गणाधिपतये नमः ॥ अथ बाहु विलास निरयते ॥

॥ दोहा ॥

श्री गोपाल सहाय ह्वै राधाकर रस पूज ।
 केलि कुतूहल रास रस फीनों कुज निवृज ॥ १ ॥
 ब्रह्मादिक सुरगन तिते तिहि नहि पायत पार ।
 सो या इन गाहन सर्ग पूज में परत विहार ॥ २ ॥

मध्य—पृ० ११

॥ दोहा ॥

मारि वान मूरछित विचो सं भाग्यो रथ नृत ।
 जरासंधि विठ्ठल भयो जहुवल गरिज मधून ॥ १४६ ॥
 तिहि समये हरि तब तहां धरी सेन पर अंग ।
 कसि कसि वान कमान के चक्र गदा वर दंग ॥ १४७ ॥

श्रंत—

॥ दोहा ॥

रन विलास ब्रजराज के को कहिवे सामथ ।
 मति परमान चाहत कह्यी छंद भाव रस अथ ॥ १ ॥
 पोथी बाहु विलास की संपूरन सुभ जानि ।
 लंही सुकवि सुधारि कं महाचित्त हित मानि ॥ २ ॥

इति श्री बाहुविलास म्हाराजा धिराज श्री राजसिध जी कृत संपूर्ण । मित्ती मागशिर
 शुक्ल १४ सवत् १८२७ वाचं पढै गुनं ताही कौ परसराम कौ नमस्कार परसरामेण लिखित ।
 श्रीकृष्ण गढ मध्ये । लिखायित मोदी जी श्री महाराम जी श्री गुसाई जी श्री निवेदनार्थ ॥
 तैला द्रक्षे ज्जलाद्रक्षे द्रक्षे तिसथिल वंधनात् । मूर्खहस्ते न दातव्य एव वदति पुस्तकं ॥
 विषय—यादवो मे साथ जरासध के युद्धं का वर्णन ।

सध्या ३३४. वल्लभकुल विस्तार कल्पवृक्ष (वल्लभीय वश वृक्ष), रचयिता—गगा-
 राम सुत राजाराम, निवास स्थान—राजनगर (अहमदाबाद), कागज—देशी, पृष्ठ—१,
 आकार—१८ × २० इंच, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य—पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—
 स० १७७६, लिपिकाल—स० १७७६, प्राप्तस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग,
 काँकरोली, हि० व० ६०, पु० स० ७ ।

आदि—श्री हरिः ॥ भावै रकरितं मह मँग दशा माकलि मासं चित्तं प्रेम्णा कंदलितं
 मनोरथमयै । शाखा शतै संप्रता । लोत्यैः पल्लवितं मुदा कुसुमितं प्रत्या—या पुष्पितं लीलाभिः
 फलित भजे ब्रजवनी शृंगार कल्पद्रुम ॥ १ ॥ श्री ॥ संवत् १७७६ कार्तिक शुदि १ ताँई श्रीमद्
 वल्लभ कुल विस्तार कल्पवृक्ष लिख्यो है ।

मध्य—नोट :—पुस्तक के मध्य भाग मे वृक्ष की शाखा प्रशाखा बनाकर उनमे श्री
 वल्लभाचार्य जी के वशजो के नाम लिखे गये हैं ।

श्रंत—श्री हरिः ॥

श्री मद् वल्लभ वंस वर कल्पवृक्ष विस्तार ।
 जे कुसुमित पुष्पित फलित पुरुषोत्तमहि विचार ॥ १ ॥
 श्री वल्लभ प्रागट्य तें वल्लभ कुल अनुमान ।
 दो सह सठ ताली वपु षुट्टि प्रकाश भान ॥ २ ॥
 तामे अब आरोग्य हें सुभग भीन वह रूप ।
 जिनको जसु विख्यात जग जिनके त्रस्य अनूप ॥ ३ ॥
 श्री गिरिधर के वस मे वपु तत्तर आरोग्य ।
 गाल कृष्ण जी के कुर्लाहि तो स्वरूप स्तुति योग्य ॥ ४ ॥
 श्री रघुनाथ जी दौय वपु श्री यदुनाथ जी सात ।
 श्री घनश्याम जी . . . यरा वल्लभ कुल विख्यात ॥ ५ ॥
 संवत सत्रह सो वरष अठहतर लो लेख ।
 अब दिन दिन दूनो बढ़ो वल्लभ वंस विशेष ॥ ६ ॥
 रहो सदा प्रफुलित यह कल्प वृक्ष जग माँहि ।
 भगवदीयन सिर झुकि रहो यही वृक्ष की छाह ॥ ७ ॥
 यह कुल को श्रोतार भूझ जगत उधारन काज ।
 जिनके सरनाहि तें बढ़े ब्रजपति भक्ति समाज ॥ ८ ॥
 श्रीमद् वल्लभ कुल सदा पद पंकज विसराम ।
 गुज्जर गंगादास सुत सेवक राजाराम ॥ ९ ॥

राजनगर शुभ देश मध्य मारंग पुर निज वास ।
 प्रेम भक्ति सों खोजि करि कीनो वृद्धि विकाम ॥१०॥
 बल्लभ कुल परताप बल रहे सदा यह आ... ।
 ...मन के चरन रति तिनसो द्रढ विश्वास ॥११॥
 श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

विषय—प्रस्तुत वंश वृक्ष में श्री वरनभाचार्य में लेकर म० १७७६ तक की उनकी वंश-परंपरा का वर्णन किया गया है ।

संख्या ३३५. राग रत्नाकर रचयिता—गद्यवृत्त या वृत्त कवि कागज—देगी पत्र—१८ आकार—१० × ८ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२४, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आरंभाया पुनवानय, नागरी-प्रचारिणी सभा (याज्ञिक मंत्र), काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ राग रत्नाकर लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

करि प्रनाम शारद सुमिरि जाकी जोति अनूप ।
 हंस चढी बना चर्ज साती स्वर शुद्ध रूप ॥ १ ॥
 देस मुनागर चाल मैं गढ उनियारी नाम ॥
 राजत राव नरेश जहि भीमस्यध गुनधाम ॥ २ ॥

॥ छप्पय ॥

कूरम कुल अति प्रबल पहुमि फोरति विस्तारिय ॥
 तरुवस अवतंस धर्म पालक जस धारिय ॥
 दान मान सन्मान भानमुत जिमि जगु रजन ॥
 समर मगा कर खग दुग दुजन दल मजन ॥
 दिन रनि भाक्ति बजरज की भीम स्यंध मन मानिय ॥
 इहि हेतु कह्यो कवि कृपन सों रन सगीत यपानिय ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

श्री ब्रजपति सुरराय कैं चरन कवल सिर नाय ॥
 कहीं रीति सगीत तैं राग रूप दरसाय ॥ ४ ॥
 राग प्रेम की छानि हैं राग रंग बी मूल ॥
 राग रंग तैं होत हैं मकल देव अनुबूल ॥ ५ ॥

मध्य—॥ अथ देसाय लक्षण ॥

॥ दोहा ॥

दिन वसंत पहले पहर सपूर्ण देसाधि ॥
 रिषभ हीन गंधार गृह बोज किय यी भाधि ॥७७॥

॥ सवईया ॥

कुंदन ते कमनीय फलेवर बेशारि चंदन पंक सुहाव ॥
 वादन तैं मन जोर भरघो कर नादन तैं तन रोम उबाव ॥
 धीर महा रस धीर छबपी भुददंड प्रचंड प्रखंड बजाव ॥
 राग देसाय अरूप दन्वी यह मस्त दरप नबे मन भाव ॥७६॥

श्रंत—॥ अथ तुरक टोडी लक्षण ॥

॥ दोहा ॥

मधि म ग्रह मपधनि सरिग संपूर्ण सुरतान ।
दिवस दूसरे पहर मै तुरक टोडिका गान ॥

॥ सर्वथा ॥

तन भूखन राज जराय जरे मुख चंद की ज्योति अमंद वनी ॥
पट केसरियां पिस वाज हरी पग लाल इजार सुगंध सनी ॥
धन जीवन जोर मरोर छकी मदिरा रस पीवत मत्त घनी ॥
यह टोडी तुरककन की तिय कौं सब साजन सौं कविराज मनी ॥१३५॥

॥ अथ पंचम राग लक्षण ॥

॥ दोहा ॥

पट सुर पंच महीन हूँ पिजि ग्रह अभिराम ।
प्रात समय गावत शुनी पंचम याकी नाम ॥१३६॥

॥ सर्वथा ॥

उमगै तन जीवन जोति जगं मुख चंद्रहु की दुति मंद करे ॥
अति सोहत वागी गुलाल सु मोतिन माल विसाल गरे ॥
सब साज सिंगार विराज रह्यो बवि सौं कर कंज कौ फूल धरे ॥
यह पंचम श्रंग अनंग वक्यो लखि कै तरुनी मन मोद भरे ॥१३७॥
विषय—राग रागिनियो का वर्णन किया गया है ।

संख्या ३३६. श्रौपधी सग्रह कल्पवल्ली, रचयिता—राधाकृष्ण द्विवेदी, कागज—देशी,
पत्र—४०, आकार—१० × ६^३/_४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—
१२३५, रूप—प्राचीन, गद्य, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—आशुतोष पुस्तकालय (सस्था-
पक, प० वृ दावन द्विवेदी), ग्राम—चांदोपारा, पो०—जलालपुर, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ नाडी परीक्षा ॥

॥ दोहा ॥

'भुखे प्यासे सैनयुत तेल लगावै कोइ ।
'जवै न्हावै तुरत ही नाडी ज्ञान न होइ ॥
हाथ अगूठा निकटही नाडी जीवन मूल ।
तार्त पंडित जीव को जानै सुष ड्रुप सूल ॥
नर को कर पद दाहिनी तिय को कर पद वाम ।
तहां वंद जन निरपि कै नारी को परमान ॥
आदि श्रंत अथ मध्य ते वात पित्त कफ जान ।
अम ते नाडी तीनि विधि एह नाडी को ज्ञान ॥
सांप जाँक गति सम चलै नाडी वात्त वखान ।
चपल काग भेदुक लवा गत तव पित्त ब्रथान ॥
मौर कवतर पडकुली राजहंस तमचूर ।
एन्ह की गति नाडी निरखि कफ जानी यह भूर ॥

श्रंत—अथ गोस्तव सीतला विधिः ॥

गौ के स्तन मे एक तरह का छाला होना है बांही छाने वा पानी नम्नर के मोरु पर छं
कं श्रादमी के बाहु पर चमडे के भीतर पट्टुचाव ती एक फर्फदरी मे परत है दिन तौनि के बादि
शरानीक होत है फेरि बांही मनुष्य के कब्रह सीतला नही निकरती है उमरि भरि निभय रहे ।

:०:

:०:

:०:

मुनीश्वरंश्चकं पुरस्मरं: कृतादनेक शाम्नाद्दृगुज मम्मतान् ।

महोपधी नाहि मया समुधृता विराजते सग्रह कल्पवल्नरी ॥ २ ॥

इति श्री मद्धि (? वे) द वशोद्भव राधेकृष्ण पठित विरचिता श्रौपथि सग्रह बन्प कम्पनी
समाप्रिय फाणीदियम् सवत् १८६० श्रमाढ सुबल द्वितीया गुरुवामरे ॥

विषय—ब्रह्मक विषय का वर्णन ।

सख्या ३३७क. पिगल, रचयिता—रामकवि, वागज—देवी, पत्र—८, धारा—
८३ × ४३ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, पारमाण (अनुष्टुप्)—१८०, अपूर्ण. रूप—३३, ३, ३,
पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—आयभापा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी मन्ना (साहित्य
सग्रह), काशी ।

श्रादि—..... कंज ॥

साज सर्व भूपन सिय नख ली चंदर श्रोदि चलतु रम पीज ॥

पीतम के लागहु उर हसि कं मानहि रानि मकल तज दीज ॥

बीतत पी जोवन छिन २ ही रयो ससि ज्योति अस्तिन पप छोर्ज ॥

॥ दमिला ॥

सगन रचि आठहि आठ कबोस फणीम यहै चहु पाद धरो ॥

वरणा चतुर्विस लहौ सुकरा कवि राम सु द्वादश तेर दरो ॥

वन में श्रु च्यार मिलावहु श्रक निसक सर्व युत माहि भरो ॥

दुजराम भनं सुपधाम सदा श्रमला दुमला हम छद बरो ॥

यथा । करिकं प्रति श्रोध सुरेस जवं घन सी यज मडल छाय लयो ॥

तडिता तडिडिात लयं जतपात चलं बहु वात मु सोर भयो ॥

नर नार गऊ सव ध्याकुल देखि तवं इक रयाम उपाय टयो ॥

चट सी कसिकं कटि पं पट को पट दं गिरिराज उटाय लयो ॥

मध्य—

मराल । मुदित अचभे मे भरे यज के गोपी ग्वाल ।

चूर करयो पग सी जवं सकटामुर नदलात ॥ ६ ॥

मदकल । गुण सागर नागर सदा धागर गुण गभीर ।

वेद उजागर बाहु बल राजे श्री रघुवीर ॥ १० ॥

पयोध । धोलत छवि यज में फिरं धोलत बंन रंगाल ।

लोलत सग सपान के डोलत मदन गुपाल ॥ ११ ॥

चल । बाल लाल तन लखि फह्यो टपकं धम बी धारि ।

नव सनेह के लेहु बिन मोती करत अपार ॥ १२ ॥

श्रंत—

॥ उंठक छट ॥

षट अक्षर कलि मे रच्यो अत जगण गटा धान ॥

चतुर करयो मधुभार ए छद बादीरवर जन ॥ १५ ॥

राम विप्र उरधाम धम तेई गम् भवानि ।
वर कन्या यजमान को सदा करो बरयान ॥३७॥

इति श्री दुजराम कृत मंगल माखोचार संपूर्णम् ॥

विषय—इसमें शिव पार्वती विवाह का दोहो में वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्तलेख में निम्नलिखित रचनाएँ मरिचिनी हैं --

- १ पातरि (रामचंद्र जी के विवाह का)—राम वधि
- २ मंगल माखोच्चार ।
- ३ सम्कृतरचना ।

सख्या ३३८ ग्वारनी भगडा (दान गीना), रचयिता—गम जगम नाग—३७
पत्र—४, आकार—७ १/४ × ५ ३/४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (द्रव्य—)
७१, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—गोथरी, लिपिकार—ग० १८३६ वि० प्र० वि० धन—
हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, इलाहाबाद ।

आदि—६० श्री गणेशाय नमः ॥

अजब महबूब गोकल मे ॥ किया घर नद का रोशन ॥
घरे सिर मुकुट कचन का ॥ जडाऊ रतन मन कुदन ॥
रचा सुब केर परितवर ॥ सुभेदम सुद विद्वान्धन ॥
अजायब नोजवा सुदर ॥ पिलार्थ जुःफ परि घानन ॥
सकेरं गोप के लरका ॥ लई सब धन आगे धर ॥
अनूपम वास की मुरली ॥ वजावत हो मधुर तानन ॥
फिरत हो कुज कुजन मं ॥ पहर गल माल फलन बी ॥
घरं सिर मोर के पपवा ॥ चरावो धाएर गार्थन ॥
गये जब साकरी धीरन ॥ करत गुल गरत हर बन बी ॥
लपी जब ग्वारनी सगरी ॥ करत पग नेधर बनानन ॥
सहेली सहस के भंवर ॥ लपी जब राधवा हरनं ॥
डगर को घेर हस बोले ॥ चुकावो दान दध भागिन ॥
गई हो वेच दध सब दीन ॥ दगा दे दे पीयारी तुम ॥
अगर तुम आज पाइ हो ॥ न जंहो पीदीयं दानन ॥

:०:

:०:

:०:

अत—सुनो री रूप गरबीली छवीनी ग्वारनी सुंदर ॥
करत हो स्याम रग निदा सराहत रंग हो जरदन ॥
अगर जो केस तुम कारे न होंके को युमं वृमान ॥
अग जो मोल कौड़ी तुम विन पुतलिया न तुम सोहन ॥
विना कारे तिल न सोइत तनक नैनन दिये बजर ॥
रही हो मोही सब ज्वानन न सोहै पीर केसर की विना दिये मरक के पंरा ॥
न पार्वं बीजली सोभा विना घन स्याम घन दामिन ॥

:०:

:०:

:०:

भरी जब नैन सँ धंली परा दकरी नगद दरगन बी ।
करी जब ग्वारनी रुगसद बले जब संग परंकाधन ॥

कहत जब दान दधिलीला मगन होय रामकृष्णाजी ॥
फरजा रोज का मतिली वसं वृज नद का मोहन ॥ १ ॥

इती ग्वारनी ऋगड़ा समाप्त शुभमस्तु ।

विषय—कृष्ण की दधि लीला का वर्णन ।

संख्या ३३६. विनं पच्चीसी, रचयिता—रामकृष्ण, कागज—आधुनिक, पत्र—६, आकार—६ ३/४ × ६ ३/४ पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६३४ वि०, प्राप्तिस्थान—प० जगदीश प्रसाद जी शर्मा राजगुरु, स्थान व पोस्ट—फूलपुर, जिला—डलाहाबाद ।

आदि—कवित्त वीनं पच्चीसी लिपते द्रोपती सुता को है ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री सरस्वति जी सहार्ई श्री राम ॥

द्रोपती सुता को गही ल्यावो सभके बीच नीच रंगी सुसासन कुमति मन में भरी । - भिबम करन द्रौन मोन गहि रहे देपत पंचत वसन लाज काहु न उर धरी । दीनन के नाथ ब्रोजनाथ द्वारिका के नाथ अमर बढ़वो पुकारां जब हे हरी । नंद के दुलारे “रामकृष्ण” दृग तारे सुनु पीत पटवारे देर भरी देर क्यों करी ॥ १ ॥

अत—

राधी है प्रतिज्ञा रंदास कविरहु की नामदेव काज छान छाई दुध पिहरी । रूपती सनातन रसीले काज हुडी पट सुरानद जीव जब देव बानी उच्चरी । रसिक मुरारी मस्त हाथीको कोयो है सिष्य क्रीसन दास लीला टारी जोगी टारी न टरी । नंद के दुलारे “रामकृष्ण” द्रौग तारे सुनु पीत पटवारे देर भरी देर क्यों करी ॥ २ ॥

॥ दोहा ॥

वीनंये पचीसी प्रेम सौ पढें सुनं नीसी भोर ।

राम क्रीसन तिन्ह पर कृपा करीह जुगल किसोर ॥ २६ ॥

इती श्री राम क्रीसन क्रीत वीनंये पचीसी समापत लीपते रमेश्वर सुनार... लाये अगाराज सकी फुलवारी ।

विषय—द्रोपदी का चरित्र वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है । प्रस्तुत रचना गंगादास के “शब्दो” के साथ एक हस्तलेख में है । दोनों की नकल किसी रमेश्वर सुनार ने की है, अतः शब्दो के लिपिकाल के आधार पर इसका भी लिपिकाल स० १६४३ माना जाना उचित है ।

संख्या ३४०. लक्ष्मी चरित्र, रचयिता—रामकृष्ण (सभवतः), कागज—देशी, पत्र—८, आकार—७ × ५ ३/४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य—लिपि नागरी—लिपिकाल—सन् १२६५ साल, प्राप्तिस्थान—प० वामुदेव तिवारी, ग्राम—भीरा, पो०—मुहम्मदाबाद गोहना, जिला—आजमगढ़ (अथ का० ना० प्र० सभा के लिये प्राप्त हो गया है) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः लीपते लछीमी चरीत्र ॥

कहै नराएन वाल कन्हाइ । सुनु लछीमी मोही बहो चुम्माई ॥

तुम्हं सौ मैं कछु पुछो वीधाना । आपन अंत कहो परमाना ॥

कहा रहेहु तुम्हं केही वीधी माहा । कैसे नीस्तार करो नर नाहा ॥

सत्य वात आपन तुम्हं करहु । केही के प्रीह बेही बीधी तुम्हं करहु ॥
 सुनी के लछिमी चीत बीहसानी । बहा बचन मनु माग्गपानी ॥
 जुग जुग तुंअ चरनन्ही की दामा । करहु दया चीत पुच्छहु प्रामा ॥
 लछ करन मोही भाषेहु नाउ । सेवा कर जर ही तुम्ह ठाउ ॥
 मैं भीआ तुआ पती ही प्रभु मोरा । चरन कंचल नेवो कर जोग ॥
 सुनु बीआ जो तुम्ह को भावं । तुंहु अस गुंनवनी जो पावं ॥
 मयेउ समुद्र रतन सब पानी । तौ तु भी आ मीली मनमानी ॥

अंत—

॥ दोहा ॥

सांमी अग्या न मान बंठा आलस माही ।
 सो नर सुनहु नराएन गदा नरक मो जाही ॥

अब ते लप्य श्री सुमीरं नीता । जा पर फीरीपा ददी मो गंता ॥
 ता घर लपीए पुरुष मनीआरा । तामो हेतु मनु जगत पीद्वाना ॥
 लपी अम पुरुष सदा मन लावं । देग देग वं नय बोज आवं ॥
 ता घर आनद जांहा लपी माता । होए नेक बुधी रूप बंधिता ॥
 नीच अधर्म जाहा फोड़ आवं । देयो देराए बीत नाही पावं ॥

॥ दोहा ॥

जानी बुझी संग्रह करं गुंन श्री दोष बीचारी ।
 जो पाले एह घरत सुभ ता घर वास हमारो ॥

इति श्री लछिमी चरीत्र संपुरन ॥ मीः अग्रहन ददी अमाचरया १५ सन १२६५ मास ॥
 ॥ जं श्री लक्ष्मी जी की ॥

विषय—लक्ष्मीचरित्र वर्णन ।

”

संख्या ३४१. कवित्त, रचयिता—रामगरीब चौबे, वागज—गाधनिय नरेंद्र, ६७—
 २, आकार—६३ × ५३ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप)—२० पंक्तियों
 रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिबाल—सं० १६१७ दि०, प्राप्तिस्थान—पं० अ-
 भाल श्रीभा, एम० ए०, एल० टी०, प्रधानाध्यापक, ब्राह्मण हाई स्कूल, गोरखपुर ।

आदि—कवित्त कृत राम गरीब चौबे ॥

कारन कला के कामना के फरणा के धाम पूरण प्रभा के घो दया के घो मजा के है ।
 हाके हरिनाके अचलाके मन काके रूप भूप सुपमा के घो उमा के आरता के है ।
 छाके सुरमा के कूमि काके ते कामाके सोह जाके धोर ताके परे टाके मेन टाके है ।
 छाके जसुदा के छोहरा के बालला के प्रेम लचल चलारे नैन शक्ति राशिबा के है ॥ १ ॥
 कंजके कलाके हरिनाके है हलाके दूग टैपत टोनाके लिपमाके गुन जाके है ।
 सोधे है सुधा के ताके मोह मविरा के छाके वजन चलारे उपमाके अ टाके है ।
 गगा जनप्या के है कृपाके ए दिमाके दोड मानो मनसा के मोन राते लिपिमा के है ।
 कामके कजाके छोरि लेत है हया के मेरे जान है उपाके नैन जाने राशिबा के है ॥ २ ॥

अंत—मसाला सब बहु भाति लगाय घो पर दरार सुपना करारि ।

जेहि हेतु सो राजत साधुन मध्य तरति उत्तर दोसि रक्षण ।

जन्म बुधा जग बीतत है अय राम के नाम मो छीत मंगल ।

सत संगति सो सुभ ग्यान भयो एम बरखद होत बदाय के पावे ॥ ४ ॥

निश्चं दरंघ्न भो मिलायो ग्यान धंभ हूको भंड कर्म धारा पाछे परम अपारा है ।
कलिदारु फारा को पनारा को विचार भयो गहि गिरि सिधु जुनि धीचत न हारा है ।
“गरीबजू” निहारा रेनु भूर को भूर निहारा सकर को दारा सोतो अघम उधारा है ।
लहरि निकारा दंत बाहू को फिनारा करि गंगाजी को धारा पाप काटवे को आरा है ॥६॥
राम ॥ राम ॥ राम ॥

विषय—भक्ति, शृंगार और सामाजिक विषयक कवित्तों का संग्रह ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल का कोई पता नहीं चलता । लिपिकाल स० १९१७ और स० १९१९ के बीच है । ग्रंथ में महाराज जसवत सिंह कृत भापा भूपण और ईश्वर कवि कृत एक अलंकार ग्रंथ भी लिपिवद्ध हैं, जिनमें लिपिकाल क्रमशः स० १९१७ और स० १९१९ दिए हैं । अत्र इन्हीं के आशय पर प्रस्तुत ग्रंथ के लिपिकाल का उपर्युक्त सवत् दिया है । रचयिता का नाम रामगरीब चौबे है । उपनाम “गरीबजू” है । अन्य विवरण नहीं मिलता । प्रस्तुत हस्तलेख में निम्नलिखित रचनाएँ और हैं—१ रसरूपण—अधूरा, रचयिता—अज्ञात । २. अनेकार्थ मजरी—नददाम कृत, ३ भापा भूपण—महाराज जसवत सिंह, ४ अलंकार ग्रंथ—ईश्वर कवि ।

संख्या ३४२. राम तैतीसी, रचयिता—रामगुलाम, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—६ $\frac{३}{४}$ × ४ $\frac{१}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुच्छेप)—६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८८३, प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।

आदि—श्री गनेसाए नमः ॥

॥ दोहा ॥

फका कमल जोनि विनती करी सुनि कमलापति कान ।
कोसलेस ग्रहि प्रगट भए कौसलेआ भगवान ॥ १ ॥
पपा षेद पीन गा पै आ लषी षवरी षलन की पाइ ।
सानुज सेन सुवाहु चधी मष राषी रघुराइ ॥ २ ॥
ग गा गौतम घरनी श्राव गती गुर रष पाइ श्रीपाल ।
दई सुगती पद रज परसी प्रभु नतपाल दयाल ॥ ३ ॥
घ घा घर घर सोचत नारि नर जानी भीम धनु घोर ।
जनक नगर पहुचत भए दसरथ राज किसोर ॥ ४ ॥
न ना नरपति नाना नमीत मुप रंगभूमि गत धीर ।
दली पीनाक श्रीगुपती गरव व्याही सीय रघुवीर ॥ ५ ॥
च चा चरचा चहुदीसी चली रही श्रवधपुरी प्रतीधाम ।
करं राम को तीलक न्रीप पुरही सब मन काम ॥ ६ ॥
छ छा छनो गयो न्रीप नारी मीस दैव रहीआ पछतात ।
भरत तलक प्रभु वन गवन पुरष भार सुनी वात ॥ ७ ॥
ज जा जनक सुता सौमीनी चुत गे वन रथ चढी राम ।
वीनपत प्रीआ परीवार पुर जानी वीघाता वाम ॥ ८ ॥
ऋभा ऋरना ऋरत सुवारी वन श्रीग विहग सुप देत ।
मुनी आएसु प्रभु गीरी वसे सीता लपन समेत ॥ ९ ॥
टटा टटकीली लै तुलसी कासी श्रावन माल वनाइ ।
पहीरावती रघुतीलक कहू देषी आपु वलि जाइ ॥ १० ॥
ठ ठा ठगे वीहंग श्रीग राम छवी पलक न प्रेरत नैन ।
वार वार हेरत प्रभुही मानत तनु धर मैन ॥ ११ ॥

डडा डरत न लयी धनुवान कर जदपि धरे रघुनद ।
 श्रीग श्रीग वधु वीलोकी गती पावत प्रभु धानद ॥१२॥
 ड डा ढोटा दसरथ भूप के जोटा जंगल विलोकि ।
 तन धन मन कर वारने की न रहे पल रोकि ॥१३॥
 तनक सोच नृप तन तज्यो श्रकनि मातु कर्तृति ।
 पीतु क्ति करि सानुज भरत गे वन त्यागि बिभूति ॥१४॥
 यथा थिरता जहत न भरत मन कैसेहु लपि रघुनाथ ।
 दई पावरी दशानीधी फिरे नाड पद भाप ॥१५॥
 ददा दीन प्रती पूजत पाडुकनी भरत कर्त यतनेम ।
 पालत पुर परिवार सब बढत राम पद प्रेम ॥१६॥
 घघा धनुधर सर धरतुन धरवधी वीर धरनधीर ।
 दडक वन श्रघ हरी वगे पचवटी रघुवीर ॥१७॥
 पपा पावन वन पावनी सरि पावन भूमी वीभाग ।
 पावन दरसन राम के पावत मुनी यदु भाग ॥१८॥
 फफा फीरत वीपीन श्रावत भड सुपनया मरि तीर ।
 मोही जंगल कुमार लयी स्यामल गौर सरीर ॥१९॥
 बवा वाम वाम मन जानि तेहि करी कृष्ण श्रीपाल ।
 वधे चतुरदस सहम पल वरपि समर गर जाल ॥२०॥
 भभा भगीनी मूष सुनी राम गुन श्रर पर दूषन घात ।
 भारीचही मीली लकपती हरी सीमा पछीतात ॥२१॥
 ममा माश्रा श्रीग हती प्रभु फीरे थल न वीलोकी मोष ।
 सानुज सोचत सोचवस पहत कहा वीधी वीध ॥२२॥
 यया यह मही यह गीरी यह सारीत यह वानन कम्नीष ।
 यह वसत यह मरत मम सकल दुपद यीनु मोष ॥२३॥
 ररा राधव विकल विहग लयी घाएल परेउ श्रचेत ।
 रावनकर सीम हरन कही गएउ वीर हरी बेत ॥२४॥
 लला लपन राम दुदत सीगही यधी पबंध दोउ वीर ।
 करी सवरी गती माएतिहि मीले हरन भय भीर ॥२५॥
 ववा वाही कौन चीतव सख जेही गती सारंग पानी ।
 दइ राज सुप्रीव फह वाली महायन भानी ॥२६॥
 ससा सापाश्रीग सीम सोध हीत वीदा कीए सुप्रीव ।
 हरी-मुदरी हनुमंत लं तरेउ मिष्टु पलसीष ॥२७॥
 हाहा हनी पवनसुत सीपिका करी मुरता परीतोष ।
 ली लंकीनी वीलोकी गढ सीमा मीले मंतोष ॥२८॥
 श्रमा श्राएउ रावन वाग कपी पाएउ फल भट मारि ।
 लंक जारि वहरे वहरी मुदीत परानी नीहारि ॥२९॥
 इई इहा सींधु करी सेतु प्रभु उतरी घेरी गदलंब ।
 ससुत सर्वधु ससेन रोषु दली सीम लाई बंध ॥३०॥
 उऊ उहाँ भरत जननी वीपल तपन राम वीपानी ।
 चढी वीमान प्रभ सपन जत पृचे धार न लागी ॥३१॥
 एए एई भरत सीर पर धरं मम पादरी मप्रोषी ।
 राम देवावत कपीन्हु वरं नीज मूष गावत लीनी ॥३२॥

श्री श्री श्रीसमेत सींघासनासीन भए श्रीराम ।
मुदित देव नर नाग मुनी बरनत राम गुलाम ॥३३॥

इति श्री राम तैत्तिरी दोहा सपुरन ॥ सवत् १८८३ अषाढ ददी ॥ ६ ॥ ब्रह्मरपती के
लीपा दसपत लछीमन दास का ।

—पूरण प्रतिलिपि

विषय—“क” से लेकर “ह” तक एव “अ” से लेकर “ऐ” तक के प्रत्येक अक्षर पर दोहा
रचकर सक्षेपे मे रामचरित्त वर्णन किया गया है ।

संख्या ३४३. कवित्त, रचयिता—रामचंद्र, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—
१० $\frac{३}{४}$ × ४ $\frac{३}{४}$, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७, अपूर्ण (सभवतः),
रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी
(ग्रथदाता—ढेरातर के महाराज, स्थान व पोस्ट—माडा, जि०—इलाहाबाद ।

आदि—श्री रामाय नमः ॥

कवहू मनिमानिक कनिक दुकूल वर कवहू येकांत वास वसि घाम सहीये ।
कवहू तुरंगन चढि किकरन सग लीये कवहू पयादे पाय सीस वोभ वहीये ।
कवहू अनेक विधि भोजन स्वछंद कीजे कवहू विमन मूठी येक चने हून लहीये ।
साहिबी सरस पार पायीये न “रामचंद्र” जाही विधि राषे राम ताही विधि रहीये ॥ १ ॥
देष निज नयन पांडुस्वता और अंधस्वता अंध ज्यी निसक और अंध कौन कहीये ।
देष दसकंध लघु बंधु भेल विभीषन जाको जस गांये भव सिंधु पार लहीये ।
देष बली बालि एक वानही ते प्रान तजे देष भानुनंद स्वप्रोवहि धीर गहीये ।
साहिबी सरस पार पायीये न रामचंद्र जाही विधि राषे राम ताही विधि रहीये ॥ २ ॥
राति द्योवस विषय पतित अजाबेल अंत जम किकरन घेरि निज पद गहीये ।
ग्राह गहत गजराज लाज तजि टेरयो स्वनि पगपति त्यागि धायो चक्र गहीये ।
बीच प्रभु देय के ठगन कूर कर्म कीनी करुना स्वनत कान प्रान जाके दहीये ।
साहिबी सरस पार पायीये न “रामचंद्र” जाही विधि राषे राम ताही विधि रहीये ॥ ३ ॥
देष मात ध्रुव की स्वनीति सतवंती रानी रानिन में मुषीय जाको जस कहा कहीये ।
देष सौति स्वरुचि अजस अधिकारनि कौ पुत्र के विछोह वनत न दव महीये ।
देष प्रथु नृपति प्रकास जाको जगमोभ देष वेरा चकवे ऋषिन श्राप सहीये ।
साहिबी सरस पार पायीये न “रामचंद्र” जाही विधि राषे राम ताही विधि रहीये ॥ ४ ॥
अंत-निबल को सबल सबल को निबल करे हरे रोग व्याधि जोषे नाम नेम गहिये ।
मेर को उथप के करत राइ मेर सम सुरन को रापि असुरन प्रान दहिये ।
एक ही कटाक्ष मे उतपति क्षय चौदः लोक बोक काकी तक सुप संपति को चहिये ।
साहिबी सरस पार पायीये न “रामचंद्र” जाही विधि राषे राम ताही विधि रहीये ॥ ५ ॥
द्रोण के तनय को विसाल वी अति तेज गभ में न आन हीनी प्ररीछत रषहीये ।
तात की तरास ते प्रगट प्रह्लाद राधो होलिका जराय दे के जगि जे जे कहिये ।
डूसासन चीर ऐचि हारि परयो सभा माक द्रोपता मुदित भई नाम टेर गहिये ।
साहिबी सरस पार पायीये न “रामचंद्र” जाही विधि राषे राम ताहि विधि रहीये ॥ ६ ॥
कर्ता न कोऊ कर्ता हें एक जगदीस ईसन के ईस सीस रापि राह वहिये ।
तुछ आन देव जाकी करीये न आसा कोय कोय न सहाय जब जम कंठ गहिये ।
कौन केती आव छिन भंगर मरीर तामें काम प्रोध धारि किम मर्पता सहिये ।
साहिबी सरस पार पायीये न “रामचंद्र” जाहि विधि राषे राम ताहि विधि रहीये ॥ ७ ॥

भारथ के मध्य वड पारथ से बलवान जू जुद्ध को करत जहां दुजर मे रहिये ।
 श्रीरें मट श्रमित गरद होत पगान तें श्रीणि की सग्नि माना रंग राति बरिये ।
 ऐसे घर धौकल में राये टोटही के अउ ऐमी अर वीन जाको मग्नाई गर्हिये ।
 साहिबी सरस पार पाइये न "रामचद्र" जाही घियि राये राम ताहि रिधि गर्हिये ॥ ८ ॥

—पूरा प्रतिनिधि

विषय—राम का विरद बरण किया गया है ।

सख्या ३४४क. सभाजीत, रचयिता—रामदया (मन्जन), नागज—उगी, पत्र—
 ११, आकार—६ x ४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुत्पु)—१३६, अक्षर
 रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—१० मित्रगुमार अम्भा, धाराशायना,
 (मन्त्री धर्म सभ प्रचारक), ग्राम—श्रीभरणी, पो०—अहमदनगर राजा, जि०—महाराष्ट्र ।

॥ दोहा ॥

एकदत्त सुत कत हर हरा हरन दुप सोर (? ग) ।
 मोरि बुद्धि अज्ञान सिमु बुद्ध करन तिहि योग ॥ १ ॥
 "रामदया" जावत तिन्ह चरन कमल बरि नेह ।
 कोविद के मन सपन को वाक अर्थ पद्य देखे ॥ २ ॥
 सकल ग्रथ को अर्थ लं मह बुद्धि को धाम ।
 "रामदया" संग्रह कियो सभाजीत धरि नाम ॥ ३ ॥
 सभाजीत जाते कियो "रामदया" चित लाई ।
 मुख्य पठित होइ जेहि कोन्हे कठ सुभाइ ॥ ४ ॥

अंत—छुधा सक्ति भोजन सम काम सक्ति तिहि धाम ।
 वडे पुन्य के जानि फल दानसक्ति जच दाम ॥ ६ ॥
 श्रुति कल मय सम सस्त्र बल पुत्र समफल लतियाम ।
 मनसा वाचा कर्मना दान भोग

∴∴

∴∴

∴∴

—पूरा

विषय—ज्ञान, उपदेश, राजनीति, धर्म, दर्शन वाक्य आदि अनेक विषयों का वर्णन कर

मनुष्य को सभायोग्य वाक्पटु बनाने का प्रयत्न किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ का प्रथम पत्र सख्या ११ के परमाणुद्वारा बना है ।

सख्या ३४४ख. सभाजीत, रचयिता—रामदया, नागज—उगी, पत्र—१० पत्राङ्क—
 ६ x ४ १/२ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुत्पु)—२२५ अक्षर, पद्य—प्राचीन,
 पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—कूबर नक्षत्रण प्रताप मिश्र ग्राम—नागपुर (मैसूर)
 पो०—हडिया रास, जिला—शलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

एक दंत सुत कत हर विहरा हरन दुप सोर ।
 मोरि बुद्धि अज्ञान सिमु बुद्ध करन तिहि योग ॥
 "रामदया" जावत तिन्ह चरन कमल बरि नेह ।
 कोविद के मनसपन को वाक अर्थ ग्रिध देखे ॥ २ ॥
 सकल ग्रथ को अर्थ लं मह बुद्धि को धाम ।
 "रामदया" संग्रह कियो सभाजीत धरि नाम ॥

सभाजीत जाते कियो "रामदया" चित लाइ ।
 मूरख पंडित होइ जे कीन्है कंठ सुभाइ ॥
 सभाजीत एहि ग्रंथ को नाम धरौ यहि रीति ।
 समै समै के अर्थ कहि लेइ सभा सभ जीति ॥ ५ ॥
 मयि कै नाना ग्रंथ को लही जहा जो उक्ति ।
 सो सभ भाषा मे धरौ कही अनुक्ता जुक्ति ॥
 बुद्धि ग्यान चैतावनी धीरज धर्म सुदेस ।
 नैति अनेति सबै कही भूपनि को उपदेश ॥ ७ ॥

अंत—संत एक हरिचंद नृप रावौ श्रुतिपर सेत ।
 सुरपुर गे नर नारिहि सुकर स्वान सभेत ॥

इति श्री सभाजीत संपुरन सुभमस्तु मंगलमस्तु समै नाम भादौ कुरन पछे अभवरय मंगल
 बासरे समत १८८५ पोथी लीष जगसीघ गहरवार जो प्रति देपा सी लीष मम दोष न दीअते ।

विषय—ज्ञानोपदेश, राजनीति, धर्म, दर्शन, काव्य आदि अनेक विषयो का वर्णन कर
 मनुष्य को वाक्पटु बनाने का प्रयत्न किया गया है ।

संख्या ३४४ग. वेदसामुद्रिक, रचयिता—रामदया, कागज—देशी, पत्र—४४,
 आकार— $7\frac{3}{4} \times 4\frac{1}{2}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२०,
 खडित (केवल प्रथम पत्र खडित है), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—
 प० महावीर प्रसाद मिश्र, ग्राम व पोस्ट—डस्माइल गज, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—.....करि नेह ॥ १ ॥
 लक्षण जेते असुम सुभ सामुद्रिक के गूढ ।
 रामदया कीन्है प्रगट पहीचाने सठ मूढ ॥ २ ॥
 "रामदया" भाषा कीयो सामुद्रिक ए जानि ।
 बुरे भले नर नारि के लियो अंग पहिचानि ॥ ३ ॥

॥ अथ पूर्व लक्षण ॥

वावन अंगुल मनुज वपु नृपति पुत्र जो होइ ।
 आदर जग दिन दिन बढे भिछुता जाइ न सोइ ॥ १ ॥
 अष्ट दहाई अंगुल नापि लेहु नर देह ।
 कूर कुटिल कपटी महा भूलि न कीजं नेह ॥ २ ॥
 नवे अंगुला अधम नर मधिमा सो लगे लेषि ।
 होइ एक सय आठ को उत्तम मनुज विसेषि ॥ ३ ॥

अंत—नैन रूपकी नीद की अलशाने सब अंग ।
 रोम भरी तरुनी रहै सकल अलक्षण संग ॥ २ ॥

इति समजीता राम दया कृत वेद समुद्रीका समाप्त सुभमस्तु सिद्धिरस्तु ॥.....

विषय—सामुद्रिक शास्त्र का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—पुस्तक का प्रथम पत्र लुप्त है ।

संख्या ३४५. रुक्मिणी व्याह, रचयिता—रामदास, कागज—देशी, पृष्ठ—१५,
 आकार— $4\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०२, पूर्ण,
 रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग,
 कांकरोली, हि० वं० ४२, पु० सं० १५ ।

आदि—राग सामेरी ॥

श्री विठ्ठल पद कमल बल श्रवण मयन चल ह्रीन ।
प्रबल तेल तामस हरन मरन वरन उन्नीन ॥ १ ॥
दिशि दछन दछन सदा लछन सर्वे प्रमान ।
विदमं देस सुदेम रुचि मुचि रचिर रचनदिवि जान ॥ २ ॥

मध्य—संघवी रागें ॥

कृष्ण चले कचन पुरी अति आतुर ऐठार् ।
मानहु किरि पर केशरी धरघो धामते धार् ॥ ३ ॥
सेना सब आइ तहा जहा चलगाम मधोन ।
हरि हरनाकिहि न गए म्लो नृपति दहूमोन ॥ ४ ॥

अंत—ध्यान धरे जो होई जो होई चनुमुंज रूप ।
कलिमल प्रबल न परमिहे दरमिहें जुगन रक्षुप ॥ ६ ॥
श्री गिरिधर लाल प्रताप ते मूल भए जु प्रियाल :
राम मदमति सुमति भई गावत गीत रमाल ॥

गाज श्री द्वारि ॥ इति रामदास कृत श्री रक्षमणी व्याह संपूरणं ॥

विषय—रुक्मिणी जी के विवाह मयधी पद्य निघंटे है ।

संख्या ३४६. गंगा जी का व्यावला, रचयिता—गमजाग, रागज—देगी, पृष्ठ—
१६, आकार—५३ × ५३ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अक्षर) —१०८
पूर्ण, रूप—जीर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—श्री मन्वन्ती नगर, प्रा. वि. सं. वि. सं. म.
कांकरोली, हि० व० ४३ पु० म० ६ ।

आदि—श्री गंगा जी को व्यावलो लिखते ॥

कठ सरस्वती सुमरि प्रेम आनद मनाऊ ।
मात पिता दडोत सीन सीव बुधनाऊ ।
आन बुधि परगट रुइ गुरु गनेस मनाय ।
गंगा व्याह सुनो रे साधो सुनत पाप कटि जाय ॥ १ ॥
सुमरि भगीरथी, बनते जवु चतयो निपट गंगा रे प्रायो ।

मध्य—इंद्र करे छिरबाव पवन जहा देत धरारी ।
जुर तेंतीसी कोटि आनि पगति बेंठारी ।
छतीस भोजन दत्तीस ध्यजन देवन पति आनद ।
आप परीसे श्री रघुनदन ते ते आदत गग ॥३५॥
सुमरि भगीरथी० ।

अंत—सुमरि भागीरथी ॥

डोला ते ऊतरी पार जबे महलन मे आई,
श्री रामचंद्र जी के चरन पमल पे सबही तिरै बंभुठ ॥३६॥
सुमरि भागीरथी ॥

अथ श्री गंगा जी माहा पटरानी जी को व्यावलो संपूरण ॥

विषय—गंगा जी की महिमा और व्यावला पदोंन ।

संख्या ३४७क. गोवर्धन लीला, रचयिता—रामदाम वरसानिया, कागज—देशी, पत्र—७ (पृष्ठ ६० से ७५ तक), आकार—४।।। × ५।।। इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८२, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकार—स० १८२७, प्राप्तस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरली, हि० व० ३२, पु० स० १७।३ ।

आदि—॥ श्री हरि. ॥ श्री गोवर्धन लीला लिप्यते ॥

बलि देते सुरराज को पूजा करते गोप ॥ सुत सुलखिनो नंद को तवते घोषे श्रोप ॥ १ ॥ सात बरस को सावरो खेलत बाबा नंद कोद ॥ मतो महोछे को करघोसो गोपन के मन मोद ॥ २ ॥ हरि बोले तुतराय के बूझ बाबा नंद ॥ घर घर गोरस नितिये कछू गोपन बहुत अनंद ॥ ३ ॥

मध्य—पृ० ६८

कोड सकूचे कोड हसे कोड रहे मुख मोरि ।
नंद मनसुखा सो बह्यो सब ग्वालनि लावो घेरि ॥ ५ ॥
यहे मतो मैया सुन्यो मन मे रही सु सकाय ।
जाय कहें ब्रज राज सँ सब ग्वालन देहि मुकराइ ॥ ६ ॥
ग्वार दिए मुकराय के कहा छोड कहा लेहि ।
तरहन के उपर दिये उपर के तरहन देहि ॥ ७ ॥

श्रंत—दीन जानि दया करि हरि करसो ठोकि पीठि । राजु करो सुरलोक को ब्रज पर अमृत दीठि ॥ इद्र चरयो अमरावती अमृत को मुख छाडि । नद नंदिनी सुर कुं चलें इद्र करयो रथ जोरि ॥ नंदो सुर सुख होत हे वरसानो सुख रासि. रामदास वरसानिया बसी राधा मोहन के पास ॥ ५३ ॥ इति श्री गोवर्द्धन लीला संपूर्णम् सं० १८२७ आ० व० १० ।

विषय—श्री कृष्ण के गोवर्द्धन पर्वत धारण करने का वर्णन ।

संख्या ३४७ख. गोवर्द्धन लीला, रचयिता—रामदाम वरसानिया (वरसाना, मथुरा), कागज—देशी, पत्र—३४, आकार—६ $\frac{३}{४}$ × ४ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५७, अपूर्ण (दो पत्रे खंडित), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, (याज्ञिक सग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ गोरघन लीला लिप्यते ॥

बलि देते सुरराज को पूजा करते गोप ।
सुत सुलखनो नद को तारत गोपन श्रोप ॥ १ ॥
मतो महोछे को कियो सब गोपन के मनमोद ।
सात बरस को सांमरो खेलत बाबा नंद की गोद ॥ २ ॥
हरि बोले तुतलाइ के बूझ बाबा नंद ।
घर घर गोरस संचिये हो गोपन के आनंद ॥ ३ ॥
नंद कह्यो पुचकारि के सुनि दामोदर सोइ ।
हम सुरपति को पूजा करे ह्या महामहोछी होइ ॥ ४ ॥
बाबा जो गोपन को यह रीति है मेरे है यह टेक ।
इंद्र न पूजा पूजिये गो ग्राह्य गिरवर सेव ॥ ५ ॥

श्रंत—मनमूप सुरपति स्याम के घाइ धरे है पाइ ।

कावारि बाबा नंद को नित पानी ढीऊ आइ ॥ ६२ ॥

जान्यो दीन दया करी कर सी ठोकी पीठि ।

राज करो सुरलोक को वृज पे अमृत डीठि ॥ ६३ ॥

इंद्र चले इंद्रावती गोपन की यह रीति ।
 लोक लोक जसु गाइयें गोपालन की जीति ॥६८॥
 अमर चले अमरावती अमृत की मूष छोड़ि ।
 नद नदीसुर की चने इंद्र ज्यो रच जोड़ि ॥६९॥
 नदी सुर सुष पाइयें वरमान मुषराज ।
 रामदास वरमानिया बनि राघामोहन पाम ॥६९॥

इति श्री सात भोग की गोरधन लीला संपूर्ण ॥ १ ॥

विषय—श्रीकृष्ण की गोवर्द्धन लीला का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ में दो पत्रे, मट्टा ९ और १० नहीं हैं । रचनाराज की रचिता काल भी अज्ञात हैं ।

सख्या ३४७७. गोवर्द्धन लीला, रचयिता—रामदास वरमानिया निजराज—
 बरसाना (जिला—मथुरा), जागज—देवी, पत्र—८, आकार—४ १/४ × ३ १/४, रच पत्र (प्रति-
 पृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—७०, गति, रूप—प्राचीन, पद्य, विधि—संगीत, प्राचीन
 स्थान—नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि.....

ज राज के जसुमति पहिरायो हार ॥ ५ ॥
 कीरति के पालागि करि श्री वृषभान के लागु पाय ।
 श्री राधा के पालागि करि पायो भगति पदारथ प्राप्त ॥१०४॥
 काहू वागे भावते काहू दीजे जानि । रामदास के पासरी र राधागे दीनी जानी ॥१०६॥
 गाय विलाय सावरो ते पीतावर हाय ।
 और ध्योरी को जंगरा श्री दागा के माय ॥
 गाय विलावत सावरो पेलनी गगाऊ । गोधनु वदं चवगुनी चरि नदी सुर गाऊ ॥१०८॥
 खिरक खिरक गाय निगारिये नेवर बांधे जहि पाह ।
 बालराम कहुो गोपालसु वृषभान की जाय विलाय ॥१०९॥
 ढिग छडे वृषभान के धाय छरे ते पाह ।
 कीरति साज्यो शरितो गोपाल हमारे प्राप्त ॥११०॥
 अत—सुरपति समुष त्याग के धारि छरे ते पाह ।
 कावरि बाबा नद के नित पानी दो प्राप्त ॥१११॥
 दीन जानि दया करी कर मुं ठोबी पीठि ।
 राज करी सुरलोक को या वृज पर अमृत दीठि ॥११२॥
 इंद्र चलो इंद्रावती गोपान की यह रीति ।
 लोक लोक जसु गाविये गोपालन की जीति ॥११३॥
 अमर चले अमरावती अमृत की मूष छोड़ि ।
 त्यो नंद नदीसुर की चने ज्यो नद चने रच जोड़ि ॥
 नदी सर सुष पाइये वरमान मुषराजि ।
 रादमास वरमानिया बनि राघा मोहन पासि ॥११४॥

॥ इति श्री गोवर्द्धन लीला संपूर्ण ॥

विषय—गोवर्द्धन लीला का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ में प्रथम पत्र नहीं है । रचनाराज की रचिता काल भी अज्ञात हैं ।

संख्या ३४७घ. राधाविलास, रचयिता—रामदास बरसानिया, स्थान—बरसाना (जिला—मथुरा), कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—८ $\frac{१}{२}$ × ४ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८२, पूर्ण, रूप—नया, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—श्री राधा कृष्णाभ्यां नमः श्री राधाविलास लिख्यते ॥

सोई राधे जिनि हरि आराधे सोई राधे वृंदावन साधे ॥ १ ॥

सोई राधा वेदन गई सोई राधा वृषभान के आई ॥ २ ॥

सोई राधा हरि वसि कीयी सोई-राधा अघरामृत पीयो ॥ ३ ॥

सोई राधा जाहि नारद गावै नित वृंदावन देखन आवै ॥ ४ ॥

प्रथम समागम की कहू वतीयां ताहि सुनत सीतल होई छतीयां ॥ ५ ॥

भक्ति अनन्य रसिक जौ पाऊ तौ श्री कुंज विहारौ कौ जस गाऊं ॥ ६ ॥

एक दिवस ब्रह्मभान लाडिली वैठी नंद कुमार चाडिली ॥ ७ ॥

ठाढा ओर अटा कौं गाहै नित उठ नंद भवन तन चाहै ॥ ८ ॥

अति आतुर दरसन की ठानी मनमोहन तव हिय की जानी ॥ ९ ॥

बछरा बगदावन कौ धायौ पीतांबर फरत इत आयौ ॥ १० ॥

आनि ओर अटा तन चाहै मानो मनमथ कोटिक गाहै ॥ ११ ॥

मध्य—कांटौ काठि चुकटीयां लीजै फोरै पीसि औषधी दीजै ॥

मनही मन उसास लेइ अंतर नारी देखि कहा कहै धनंतर ॥ २ ॥

रोग होइ तौ वैद बुलाऊं महगे मोल के मूलि मंगाऊं ॥ ३ ॥

प्रेम विरह बिख घोरचौ माई में घूंट चारि आंखि पी आई ॥ ४ ॥

खरकै करक करेजे मांहि व्यावरि पीर कहा जानै बाहि ॥ ५ ॥

आदि अंत की सब कोऊ कहे प्रेम की बात हीये में रहै ॥ ६ ॥

हेत जानि में तोहि सुनाई बरसाने लीला यह गई ॥ ७ ॥

अंत—कहत विरंचि सृष्टि हम कीनी वांछि वांछि गोपनि को दीनी ॥ १९३ ॥

धृग जीवन धृग जन्म हमारौ हमनै एक काज राधिका को न सवारौ ॥ १९४ ॥

सृष्टि मांहि सनकादिक आये तिन अपने गोविंद गुन गये ॥ १९५ ॥

शंकर पार्यंती सब आई ब्रज गोपीन की लीला गई ॥ १९६ ॥

रामदास कौ हीयी सुख पावै वसि बरसाने लीला गावै ॥ १९७ ॥

इति श्री राधा विलास संपूर्ण शुभम् श्री कृष्णाय नमः ॥ ६ ॥ ६ ॥

विवय—इसमें श्रीकृष्ण और राधा की लीलाएँ वर्णित हैं ।

संख्या ३४८. रामहोरी रहस्य, रचयिता—रामनाथ 'प्रधान', निवासस्थान—प्रयाग, कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—८, आकार—१० $\frac{१}{२}$ × ६ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२७, परिमाण (अनुष्टुप्)—२७०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—संवत् १९१२, मुद्रणकाल—संवत् १९१६ वि०, प्राप्तिस्थान—पंडित महावीरप्रसाद मिश्र, ग्राम व पोस्ट—इस्माइल गंज, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ राम होरी रहस्य ग्रंथ लिख्यते

॥ छंद चौपाया ॥

जय गणेश गिरजा महेश जय जय भारथी भवानी ।

जय मियराम भरत रिपुसूदन लखन लाल सुखदानी ॥ १ ॥

श्री गुरदेव केमरी नदन जग बंदन मव जानं ।
मं प्रनऊं तिनके पद पकज जे प्रधान के प्रानं ॥ २ ॥
जैसर नाम महीप सुता मव परम मुदरी घामा ।
सीय स्वयवर महु सब आई बमी जनक के घामा ॥ ३ ॥
अनुज सहित जब राजमहल को गमने अचधविहारी ।
चौथी चार करन हित मिगरी जरि आई मुकुमारी ॥ ४ ॥
देवि देवि डूल्ह की सुखमा सुखमा अचल धारी ।
चकित छकित रहिँ गई रंगीली एक टक नैन निहारी ॥ ५ ॥

:०:

:०:

:०:

जस जिय जाकी मति मनया की तम ताकी मति पाकी ।
नृपनि सुता की भोज मजाकी रही न अत्र कष्ट वाकी ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

लखन लाल सबको लखे अनुजन मजन ममाज ।

रघुनंदन को नहि लखे जे रघुकुल मिरताज ॥ ४ ॥

इति श्री रामनाथ प्रधान विरचितं राम होरी रहस्य ग्रंथ चतुर्थोऽध्याय ॥ ४ ॥

कहत सुनत हरिजस जिनके द्विग प्रांगुन की नर लागी ।

बीसबिसे तिनके तुम जानी येइ राम अनुरागी ॥ ३६ ॥

बोनइस सं द्वादस संघत मे प्राग द्विघेनी पाहीं ।

साधु रजायसु पाय नाय सिर रच्यो ग्रंथ मन माहो ॥ ३७ ॥

माघ अमावस महँ अरभ करि राम जनम तिथि बाँही ।

मिथिला होरी रहस राम को पूरन भो मुद माहो ॥ ३८ ॥

॥ दोहा ॥

बय अं छपन घरस की भोगत विषय मिरान ।

वरन्थी होरी रहस यह रामनाथ परधान ॥ ६ ॥

इति श्री रामनाथ प्रधान विरचिते रामहोरी रहस्य ग्रंथ षष्ठोऽध्याय ६ ॥ इति श्री

रामहोरी रहस्य संपूरणम् य. पोथी सहर बनारस दिवाकर छापाखाना मे शिवचरन के इहाँ

रामहोरी रहस्य ग्रंथ छपा साकीन मोहल्ले भदंती कालीनहल के पास बबलम खगेशदास इन्द्र

भक्त श्री छापने वाले माता दयाल कारीगर य. पोथी जिनको लेना हो सो चाँदनी चौक बुँज गली

के पछिम फाटक के सामने रामचरन के दुषगन पर मिलंगी सो जानब संमत १९१६ मितो बाबुन

वदी ४ वार सुक्रवार के समाप्तम् शुभम् ॥

विषय—मिथिला मे श्री रामचंद्र जी का होरी उगय मनाने का दर्शन ।

रचनाकाल

बोनइस सं द्वादस संघत् मे 'प्राग द्विघेनी' माँही ।

साधु रजायसु पाय नाय सिर रच्यो ग्रंथ मनमाहो ॥ ३७ ॥

माघ अमावस महँ अरभ करि राम जनम तिथि बाँही ।

मिथिला होरी रहस राम को पूरन भो मुद माहो ॥ ३८ ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल सत्त् १९१० और छापे का मसख १९१६ ई । इह

शिवचरन के यहाँ भदंती, काली महन, बनारस के पास दिवाकर फाटकमे मे १९११ । इन्द्र

मे लिखने वाले कृष्ण भक्त खगेश दास थे और छापने वाले थे माता दयाल कारीगर । इन्द्र

विश्रैता रामचरन थे जिनकी दुगान चाँदनी चौक मे बुँज गली के पछिम फाटक के पास री ।

संख्या ३४६क. काशी वर्णन (?), रचयिता—राम प्रगास गिरि, निवासस्थान—
हुरहुरी (जौनपुर), कागज—देशी, पत्र—२, आकार—६ × ३ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—
१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—५७, अपूर्ण (खडित), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी,
प्राप्तिस्थान—श्री रामनरेश गिरि, ग्राम—हुरहुरी, पो०—केराकत, जिला—जौनपुर ।

आदि—श्री कृष्णः

जै जै जय जयति शिभु गौरि सुषदाइ री ।

असी वनयोर्मध्य पंचकोश वेद कहत ता मध्य विश्वनाथ सुंदरि मठ झाइरी
कंचन की भूम्य सोह निरखत शव देव मोह करत कल्लोल देव पुरिमध्य आइरी
राजत विराजित तह देव शकल शेव करत पूजत हरगौरि पद सुरसरि अन्हाइरी
पुरी मध्य दंडपारिण वास लीन्ह योग पानि करत है प्रकाश योग संतन्ह सुषदाइरी
ताहि प्राचि दिशा वास भरो अलवेला लियो करत न कोतवाली शिभु आयसु वरपाइरी
जाको जस नित्य अनित्यता कह तस देत देउ करत है सुनेति निम मारग कलाइ री
पुरी मध्य वास लीन्ह मातु अन्नपूर्णाजि पुरी पंचकोश तहां रीद्धि शीघि झाइ री
“राम प्रगास गौर” चरण कमल करत आस देहु कृष्ण भती सत सतत सुषदाइरी । ८ ।

अंत—वेद शून्य करके अंतर शप्त लिंग अवर

आप वसे काशि मध्य येह वेद सत्य गायो है

॥ पुनः रत्न रूप शिभु कीन्ह विमल वेद भनत

वास काशी आप लीन्ह मनु जी कहायो है

ताके अनंत एकत्रिस रूप लिंग लीयो

वसे है प्रतंत जुक्त पंचम को समझायो है

ताके अनंत सत सतगुनी सतगुन ताहि के

गुने दस सहस कहायो है

तेहिते सुवेद अधिके सहसदश गुनि पुनि

दस संख्या लिंग वेद वुध गायो है

ताहि गुनि गुन बहुरि दशगुन करी

लक्षिते करोरि सतलिंग कासी आयो है

पुनी ताहि राम गुनी गुन वस चेत होइ

ये नो उदृष्ट कोठी लिंग कासी छायो है

“रामहू प्रगासगौर” आस हरि चरनन

अंजनी सुअन पद पंकज सो भायो है ॥ ८ ॥

विषय—काशी के बाबा विश्वनाथ एव शिव लिंग का माहात्म्य वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अपूर्ण तथा खडित है । केवल दो ही पत्रे उपलब्ध हैं । रचनाकाल
श्रीर लिपिकाल भी अज्ञात हैं ।

संख्या ३४६ख. नासकेत पुराण, रचयिता—रामप्रगास गिरि, स्थान—हुरहुरी (केराकत,
जौनपुर), कागज—देशी, पत्र—६२, आकार—६ $\frac{३}{४}$ × ४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४,
परिमाण (अनुष्टुप्)—२७७८, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—
१८८३ वि०, लिपिकार—१८८३ वि० (?), प्राप्तिस्थान—श्री रामनरेश गोसाई, हुरहुरी,
केराकत, जौनपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री हनुमताय नमः ॥ शोरठा ॥

मन्त गान पद कंज ॥ वदौ धरनी सीश धरि

करण शकल अघगंज ॥ बुध्य देन सुंदर विशदः ॥ शोरठा ॥

विधी पद शुभ जलजात ॥ वदी हृदय प्रेम जुन ॥
मिटै मव उतपात ॥ अघ अघ गुन मव हूंगे बरि
:०: :०: :०:

॥ चौपाई ॥

शत चरण वदी धरि शिशा ॥ जाके कृपा हुं॥ह अघ घांजा ॥
सो प्रभु होहु सहाय दयाला ॥ जात्रे उर हरि भक्ति विमाना ॥
:०: :०: :०:

अक्षर युक्त मत्र मोही देह ॥ शय मिली नाच विनय मुनि नेह ॥
जेहिते नाथ कही एह हेतु ॥ शुनत नगाहि महा अघ जेनु ॥
कहिहो शोइ इतिहास वधाना ॥ जा भूत नीनव सो मृदु धाना ॥
कहेउ सुनाय रिपिन्ह के पाया ॥ सोइ मत्र जीय विदुर प्रयागा ॥
जो शुकदेव कृपा करि बरना ॥ राज परिधीत का अघहरना ॥
सो इतिहास कहव मं भाइ ॥ जो तुम्ह कृपा करज मुग्गार ॥
भाया कृत परबध बनावो ॥ जेही त मुमुभी जाये मुग्ग पावो ॥
एक इतिहास सुनग अती पावन ॥ नागकेतु कर चरित गोत्रावन ॥

॥ दोहा ॥

सो इतिहास कही शुभग पावन परम पुनीत ।
“रामप्रगाशगौर” अरापद रामचरण नवनोद ।

॥ चौपाई ॥

शबत् अठारह सय तीरासी ॥ भाद्रमाम शुभ मुपद शुगामी ॥
शुक्ल तीज तीथ तेहि दीन भाई ॥ रिख त्रयोदश ध्रुन जन गाइ ॥
ता दीन चन्द्र सुभग शूचीवारा ॥ हरिहर जन तेही दीन भनुशाग ॥
द्वारपर अत जनमेजय राजा ॥ गग नोकट गये साहित गमाजा ॥
:०: :०: :०:

एक समय.....नृपाला ॥ भय उदाल तपतेज जिमाना ॥
अह सुधन उदालक नामा ॥ भयेउ महा तेज तप धामा ॥
अंत— ॥ शोरठा ॥

पथ कथा इतिहास सुनत न पथ दुख व्यापही ॥
हरिहर गुरुपद आस रामप्रगाशगौर प्रेम जुन ॥

॥ चौपाई ॥

धर्म सुपथ पथ मारग पावा ॥ तत मुनि वही देखि जन पावा ॥
निरमलि कोमलि सो पथि भाइ ॥ अति रमनीय वेद जग गाई ॥
धर्म पथि तहवा चलि जाई ॥ मह वृक्षधन तेहि पदमाही ॥
पुण्य गंध वासित सुपकारी ॥ त्रिषिष्य भाति तह अत वधानी ॥
वापी कूप तहाग सोहावन ॥ तेहि मह नीतल धारि मुपादा ॥
वधि अरु क्षीर नहीं तह भाई ॥ भक्ष्य भोक्ष्य बल सो पद पाई ॥
अति विशाल रथपावहि शोई ॥ अति नर नारि शिखर धर होई ॥
धर्म मइ कह वेहपथ ताता ॥ देखेउ दोषं मुट्ट देहि जाना ॥
॥ दोहा ॥

विल्ल अनुशास दान देहि हरप महित देखि सोइ ।
पावही रवर्ग धोहार धर रतीत शरत समशोब ॥ १०६ ॥
..... अपूर्त ।

विषय—नासिकेत पुराण की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—अथ अपूर्णं हे । अत के कुछ पत्रे लुप्त है । समस्त वासठ पत्रे उपलब्ध है । रचनाकाल स० १८८३ वि० हे ।

सख्या ३४६ग. पदावली, रचयिता—“राम प्रगाश गिरि”, निवासस्थान—जौनपुर, कागज—देशी, पत्र—१, आकार— $८\frac{३}{४} \times ४$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनु-पुष्प)—१८, अपूर्ण (खडित), रूप—प्राचीन, (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—श्री रामनरेश गिरि, हुरहुरी, पो०—केराकत, जिला—जौनपुर ।

आदि—कृष्ण ॥

सतगुर वारि विआहल अमर सेदुर पावल हो
 बरह बरिस सेवन कइली तव जीतो लषावल हो
 जोती लपत परकाश हीये भरि छावल हो
 इगला पिगला सोहागिनी डहर देपावल हो
 सो शप डोलना चढ़ाइ शर्षीन्ह वैठावल हो
 तुरीआ तत्व विवेक कहार लगावल हो
 सूरति पथपर चढत गगन सुद्धि पावल हो
 सतगुरु कृपा विलोचन त्रिकुटी नहि पावल हो
 तोह मह करीला नहान सकल अघ दावन हो
 अघ जरि गयेउ समूह तन सकल पावन हो
 नयन निमल सुप पाइ निरपि पथ छावन हो
 तेहि आगे महल सोहावन परम हस पावल हो
 दरस करत अघतून तुल सलभ जरावल हो
 तेही आगे शब्द वीधेक उद्धंगती पावल हो
 तह मंदील परम सोभाय कोटि रवि क्षावल हो
 तेहि आगे मयदान धेनु दरशावल हो
 तेन्ह दीयो अमृत पान अमर पद पावल हो
 तेहि आगे पथ रूप क्लामति पावल हो
 गोफा लहर अनुपन मन ठहराव हो
 तव सतगुर की सूरति शब्द जोहरावल हो
 तव निर्मल भौन एन द्वार क्षवि पावल हो
 भुलमुल लहरत अनूप देषि क्षवि पावल हो
 तह करी सूरति सोहाग भीतर दरशावली हो
 निरप म आपद सेज हरप उर छावल हो
 येहि विधि अमर सोहाग पीया पद पावल हो
 मिल लीड पीया पद रूप नहर विसरावल हो
 क्षटल नहर नात बहुरि नहीं आवन हो
 मोहि लागि शब्द सुहोश सैआ मनभावन हो
 येह मंगल परम अनूप जव नर कोइ गावल हो
 सोइ नर नारी सुधन्य ब्रह्म पद पावल हो
 “रामप्रगाश” गिरास सतगुर पद भावल हो
 अक्षय अव्यक्त अनूप ब्रह्म पद पावल हो

१६ श्री कृष्णाय ।

विषय—ज्ञानोपदेश और ईश्वर भक्ति वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अपूर्ण और अर्द्धित है । केवल एक ही पत्र लक्ष्य है ।

सख्या ३५०. अर्जुन गीता, रचयिता—राम प्रसाद (नटनापुरी मन्मथ) रचना—
देशी, पत्र—२८, आकार—८ x ५ इंच, पत्रिक (प्रतिपृष्ठ)—१६ पत्र मात्र (८८ पृष्ठ)—
४३२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, निधि—फारसी, रचनामान—न० १६१२ वि० वि० १—
स० १६१३ वि०, प्राप्तस्थान—श्रीयत् गोपाचन्द्र मिश्र जी, पन्ना, वि० वि० १, पन्ना, पूर्ण (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः

॥ तोरठा ॥

प्रथमहि करहूँ प्रनाम गनपति पद गौरी मुद्रन
शुमिरो सोइ नित नाम मगलायतन गुन ५८न
नोल नयन तन स्याम राम रनिष राधा २८न
प्रनवो पद सुखदाम आसू चरित अमृत अवन
पुन बिनवो बलराम करयो सखल मर घर नयो
जपूँ सो जग अभिराम नाम मवल सनमी हदन
सुमिरो सारद नाम जाते चेतन तिरमुद्रन
:०: :०: :०:

राधा कृष्ण कमल पद नाऊँ आरत हवन मरन निर नाउँ
मगन ध्यान सुर मुनिवर जाकी प्रपुलित गात नदा छवि राधा
प्रभु सुखधाम रयम तन सोभा निरछि नयन त्रिभुवन मन सभा
सादर सोइ सरूप सुखरासी जमुमति नद सखल दखानी
दरस परम आसा सब पूरी सोजत लाई लहूँ मुद्र अंगी
:०: :०: :०:

जगत विदित सो अरजुन गीता जाने प्रगट मुद्रिन मोर्षता
संसकिरत मह वरनेव सोई
वरनो सोइ सुंदर इतिहासा भाखा माहू राउ हरि आसा
उनइस से द्वादस सुभ सवत बहू जयामत सो रग ममत
लछना पुरी अचिर अति विमला प्रगट प्रभाव जहाँ पर ममता
तहाँ सुखद यह सुरस प्रकासा "रामप्रसाद" दान हर रामा
सो जयमार प्राम लो लाया भावा तहू निज धाम मोहासा
अरजुन प्रश्न करो जह भानते सत बुझाए हृण बेव माने

अंत—संपूर्ण सवाद यह अर्जुन कृष्ण मगर
वेदवत इनको दमत ममभी हिरदे विषा
चली सो मारग चेत अभिमत पल सावह सुख
निज परिवार समेत दीहो जगमुद मगन लो
दिवत वरख गनि लेहू नय मास वरख हर ह
चौपाई तेती सबइ समन न एहो जन
मास वरख चौगुनी हर तेती दोहा मेट
पंच अधिक तहू तोरठा परम भाव हो रोग

ग्रथ श्री अर्जुन गीता भाखा हृत राम प्रसाद संपूर्ण सुममल्य विधा १६१३ ई० संवत् १६१३ समाप्त बद्धत बीर सता बदा रामप्रसाद ।

विषय—कृष्णार्जुन संवाद वर्णन ।

संख्या ३५१. तत्र सामुद्रिक, रचयिता—रामफल, कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—
४८, आकार—६ $\frac{१}{२}$ × ६ $\frac{१}{२}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२३, परिमाण (अनुष्टुप्)—७५६,
पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, मुद्रणकाल—स० १९१७ वि०, प्राप्तिस्थान—प०
रघु उपाध्याय, ग्राम—विंय्या, पोस्ट—फूँनपुर, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री शास्त्री यदुनाथे जयति ग्रथ सामुद्रिक ॥

इस ग्रथ को देखने से संपूर्ण जन्म का हवाल मालूम होगा आयु ज्ञान होगा जितना वर्ष
जीवन होगा सो ज्ञान होवेगा जीतना इसका पुत्र होगा किवा नपुंसक होगा वध्या होगा सो सब हाल
लिखा ज्ञान होगा जीतने स्त्री सो भोग है सो हाल मालूम होगा राजा होने का चिह्न प्रजा होने का
चिह्न धनी होने का चिह्न पंडित होने का चिह्न मूर्ख होने का चिह्न साधु होने का चिह्न चोर होने
का चिह्न लक्षण शुखी पापी पुन्य मन होने का सब हाल मालूम होने के वास्ते नाना प्रकार के
संपूर्ण चिह्न का हवाल लिखा जो है सो जानने के वास्ते बड़ा पारश्रम करके यह ग्रंथ संग्रह हो गयो
है इह ग्रंथ बड़ा दुर्लभ है सो संपूर्ण प्राणियों के ज्ञान होने के वास्ते प्रगट हुआ है ।

अत—

॥ श्लोक ॥

इदं सामुद्रिक शास्त्रं विष्णुना परिभाषितं ।

श्रुत्वा घृत्वा च शोकान् जहति पंडिता ॥११३॥

अर्थ श्री महादेव जी श्री पार्वती जी सो कहे है कि गिरिजानंदिनी प्रिये यह सामुद्रिक शास्त्र
तो श्री विष्णु भगवान् जी श्री ब्रह्मा जी सो कहे है यह सामुद्रिक शास्त्र को यदि कोई प्राणी श्रवण
करे याके अर्थ को धारण करे याको पढ़े पढावे तो यह सामुद्रिक शास्त्र के जानने सो वा प्राणी
बुद्धिमान पंडित हे कि संपूर्ण संसार के मध्ये नाना प्रकार का चिन्ता को त्याग करके शुखी होगा
संपूर्ण कामना को पावेगा ।

इति श्री तत्र सामुद्रे हरगौरी संवादे संपूर्ण स्त्री पुरुष लक्षण शुभाशुभ कथनम् ।

शहर बनारस केदार प्रभाकर तंत्र सामुद्रिक की पोथी छपी गोपाल चौबे के छापखाने
मे छपी साकीन मोहले सोनारपुरा बाकलम हरनाम सिंह छापने वाले रामफल जिसको यह पोथी
लेना होय सो चादनी चौक मे बीहारी चौबे के दुकान से मिलेगी सवत् १९१७ मोः वैशाख वदी ५
वार मंगर के समाप्त ॥

विषय—सामुद्रिकशास्त्र का वर्णन ।

संख्या ३५२. पद्मपुराण (रामचंद्र अश्वमेध), रचयिता, , रामवकस, कागज—देशी,
पत्र—३२७, आकार—१० $\frac{३}{४}$ × ६ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—
५४३६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकार—स० १९३२ वि०, प्राप्तिस्थान—
प० रामरुचि पाडेय, ग्राम—वोदरी, पो०—लेवरुआ, जिला—जौनपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री गुर चरण कमलेश्यो नमः

॥ सौरठा ॥

बुध्य विहारी चारी भुज गननायक गजवर वदन ॥

सीथ्य कारी भं हारी वंदी सीव सुत विघ्नहर ॥

वंदी साधु सुर मुनि सुजम वीग सीत कमल समान ॥

“अश्वमेध” की सुभकथा सादर करी वपान ॥

व्याम कहा मुनि राज सो मुनिए निर्मल बुधी ॥

वत्सायन अहिनाथ को सुभ संवाद प्रबुधी ॥

॥ बत्मायनो वाच ॥

सेपा सेप कथा विधी नाना ॥ जक्त गर्ग गो विधिषी जिगाना ॥
 भुगतीप गती प्रकाम विदेका ॥ महन्त्यष्टन ग्टरी धनेषा ॥
 नाना राज धिचिद्र कहानी ॥ सुयवम भव नृप गुनषानी ॥
 तहा राम गुन ग्राम अपारा ॥ मुनी मवन तीमुष दिग्गया ॥
 नाय तवानन ससी खवत श्रमीय राम गुन भर्ग ॥
 मुनत सकल कत्यानमय फरत दुरीत क्ट दुरी ॥ दोहा ॥
 लोकातर हरी कथा मुनाई ॥ हन्यित ह्रीदाग बहो शरीगई ॥
 गदगद स्वर हर्षित भी गाता ॥ बहन नगे पुनि राम मुयाता ॥
 पवनतर्न गुन धाम उरधरी मम वानी दिमन ॥
 विदित सी नदिग्राम भरत वाम मुखर मुषद ॥

इति श्री पद्मपुराने पाताल पड़े सेप वात्सायन सवादे श्री मद्भाम चक्रवर्तुने नदिग्राम श्रगमनो नाम प्रथमो अध्याय ॥ १ ॥

नदिग्राम जाइ कपि राजा ॥ देखतु भरत मयेत गमाजा ॥
 कृततन गत वीरह वस देपी ॥ भारत मुत भी दिन विनेषी ॥
 प्रभु आगमन सनेस श्रमिय सोच निजतन विमल ॥
 वीले भरतनरेस कपीतन मरीन न मोहि प्रीय ॥

श्रत—सीया राम है मेध्य वृत्त कथा मुने नर नारी ॥
 विभो विलास धनेस राम लहि लहि है पत्नचारी ॥
 फल चारी लहिहै नारी नर सीय राम कृत गुन गार्व ॥
 तिहु काल कुसल विलास जस लहि जस रहै छमा पर छाड र्व ॥
 कहिहै जो एह रघवर कथा सुनिहै जो फोड मन लाड र्व ॥
 भव विभो भोग विलास करि वसीहै ते हरीपुत्र जाड र्व ॥

इति श्री पद्मपुराणे पाताल पड़े सेप वात्सायन सवादे श्री मद्भामचक्रवर्तुने रामचन्द्र अश्वमेध संपुरन सुभ मस्तु समत १६३२ मीती श्रगहन माते सुरत पट्टे कपुरन ॥

विषय—रामचरित्र वर्णन । अथ ६६ अध्यायो मे है । महा नदिग्राम परमना नाम, पुरी दर्शन, शेष वात्सायन सवाद । रामनो प्रतिनाम, चारनोपनि रचुत राम विचर सर्वधर्मो रूपोनाम, शत्रुघ्न शिक्षा नाम, है मोचन, कामाक्षीदेवता कृतन रामपुरी, राम कथा निवेदन, चामन आश्रम है गमन, ब्राह्मण नमागम, स्तनप्रीय शशीधरनाम नारी मम मन्त्रस सन्यासी दर्शन, नीलगिरि वर्णन, राजपुत्र विजय, पुत्रान रिजत, मन्त्राङ्ग विनायक राम कृतन विजय, मनुष्य सुवाहु भूप परस्पर जीर्गी नाम, मत्त राजागत नयनना मन्त्रना उरि शक्ति कथन, अरव्य को पारद, राम चरीत कथनो नाम जामपे तव नानि राम विजय देव कृत रामागमन, हय प्रस्थान, मृत्ति वर्णन, अथ नरुगजाय मुग्ध विनायक कृतन अथ निरीक्षण, भरतवाक्य रजकपान कथन, गमादग्ना कृतन उरि शक्ति कथनो रामो विदेपी, मरन, हनुमतनो नाम, लव मूर्छा, दानुन मूर्छा, गीत जितन पदमे हते राम मन्त्र ।

सख्या ३५३. भागदत्त भाषा (सामन्वय) सन्निहित—
 देशी, पत्र—१४०, आकार—१४ × ६ इंच, पत्तिका (प्रतिरूपा)—
 —३३२५, छद्मि, रूप—प्राचीन, पट्ट, लिपि—नागरी,
 लिपिकाल—संवत् १२६१-७० तक्ष, प्राणिकथा—१० मन्त्रोपर विदेपी कृत-शशीधर
 पोस्ट, भंसा बाजार, जिला—गोरखपुर ।

आदि—.....

दुपहर कर बाल गोविंद नेवाज बुडहट गैलहि वढाव भीके दसषत सँ पत्र हीय गैलली अनूपादि जस पत्र कर रीति है ० हम सिंहवली आम पाँछम तट अगोरत तवन पूर्वे कथा मह राम-पैलावन कर नर्द चार्ता जे जयादत्त अकुलाय गैलहि मगत दिपवत दि १०० वा २०० वा ३०० वा लाय अनेक जाल बिआता पछि सवित रुक्का चमार झोरीन देनामीरओऐले वलिवत सुगंध मूद्रा वाव मगावल १०) भगवान भारती धर्मपुर मेजल शत्रु वर्ग करमना करै बालन्ह कर रास भैल मन आनंद भैल त्रिपाराम के जरिके सिद्ध अनूप राम कर लडिके नीक आगे गुप्त मे रामपैलावन तमसुक ८४ कर निकासि दिहल मुप्ता १४) मारफति भवनराम के तेसे भवनराम के परपरा वासी सुद्ध मन जानि मन मानल जे भवन उमराव कर सकोच छाडि पत्र लिपावल नीक नीक कहत करतमूल वात भारय पाठ करना मी० जे० सु ३ करन एतना वृतांत राधारमण १८७० ॥

चरण धरहु सुनि श्रवण मुरारी । सत्य वचन सम जगत न भारी ॥ १ ॥
जे जथ मोहि शरण जग आवा । भजौ ताहि तम विधिहि सुनावा ॥
घृष्ट वचन नेहि एह सति वानी । तजहु पितहि मातहि सुपदानी ॥
सरबस तजि हम सब पद सेवा । वचन सत्य हित आनद भेवा ॥

श्रंत—

लपि मुख विश्व कंपत न जानी । हरिनिज मायहि निज उर आनी ॥
पुनि जमुदा निज नैन निहारा । किलकत हसत गोद सुकुमारा ॥३७॥

॥ दोहा ॥

“रामवछ” हरि सिसु चरित जो जग नर तन पाय ।
सुनै गुनै मानै मनै तेहि पर स्याम सहाय ॥
सो नंद भवन नंद नंदन पर ब्रह्मा राजतु पृथुक ।
लीला आनंद कंद करत स्याम जीवन जनन्ह ॥

इति श्री भागवते महापुराणे दश स्कंधे भाषा रामवछ कृते अनभजन तृणावर्तं वधे किञ्चि-
द्विश्व दर्शने परम कल्याण दायके सप्तमोध्यायः गोपीजन बलभाय कृष्णाय नमः १८६१ ॥

वसुमय उदक अरुनि कर जोई । मृदुल तजत पटि गृह जनछिति कोई ॥

॥ दोहा ॥

वशिचक धनु रूप कुंभ भनु मीन सुअज वृषु जोरि ।

१ २ ३ ४ ५

कातिक गुण प्रथमहि लपो आठ मास श्रुति भोरि ॥

:०:

:०:

:०:

—अपूर्णा

विषय—भागवत दशम स्कंध का अनुवाद ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ खडित और जीर्ण अवस्था मे है । आदि अत के पत्रों के अतिरिक्त मध्य से भी कितने ही पत्रे लुप्त हो गए हैं ।

संख्या ३५४क. हनुमान जयति, रचयिता—रामरतन लघुदास, कागज—देशी, पत्र—
५, आकार—६ X ४ ३/४ इंच, पन्क्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुवृत्तुर्)—७२, पूर्ण, रूप—
प्राचीन, पद्य, निधि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक सग्रह), काशी
नागरीप्रचारिणी मन्ना, बाराणसी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ हनुमान जयति लिप्यने ।

॥ दोहा ॥

जयति अमंगल नामिनी मंगल दायक मोघ ।
मज्जन करि याकी पढं कष्ट बदी ना होय ॥ १ ॥
सेवक रक्षा करन कं लिये गदा निज हाय ।
सकट सीक निवारि फौ देन अमं कपिनाय ॥ २ ॥
मास्तनदन वीर फौ श्री रघुवीर उपाय ।
या विचारि मरन भयो "रामरतन लघुदान" ॥ ३ ॥
भक्ति ज्ञान वैराग्य बल धीर दयानिधि मोघ ।
जासु कृपा तं जीव को राम चरण रति होय ॥ ४ ॥

श्रंत—

पाप त्रय ताप ग्रह दूरि होय वृश्चिकी प्रेत पिमाच नहि निबट आर्य ।
मृत हरि डंकिनी नाटकी चेटकी कष्टि अर मुष्टि टिनमं नगात्रं ॥
करं अस्नान अरुनोदय प्रातही सीस दे तिलक या जयति श्यावं ।
कष्ट सकट हरं सुप सपति करं मिथ्य मकाज लघुदान भावं ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

मंगल हनुमत पूजियं नित उठि जयति पदाय ।
रामरतन लघुदाश कहि मन याछित फल पाय ॥ २८ ॥
सब देवन के मध्य मं दीग्य पवनविमान ।
ताहि भजी चिता तजी सदा महायक तोर ॥ २९ ॥
रहत सदां निज दास पर पवनपुत्र धनुषदात ।
प्रणतपाल धल दल दलन जं जं मंगल मून ॥ ३० ॥
हरियाणी एक देश है गाव विद्यामी नाम ।
गौड विप्र राजत तहाँ अतिपावन मी ठाम ॥ ३१ ॥
भरद्वाज कुल गौड द्विज मनो राम वृष्ट तात ।
श्रीधर्यां नाच गुर मिले मयाराम विद्यान ॥ ३२ ॥
मया राम महाराज को रामरतन लघुदान ।
जश गावत हनुमत को मंगल करन प्रयाग ॥ ३३ ॥

इति श्री रामरतन लघुदाश कृत हनुमान जयति संपूर्णम् शुभमस्तु ।

विषय—हनुमान् जी की विरदायनी का वर्णन ।

सख्या ३५४४ कृष्णाष्टानाष्टक, रचयिता—रामरतन लघुदान शर्मा—देवी,
पत्र—५, आकार—७ × ५ ३/४ इंच, पत्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (पत्रपुत्र)—१००,
पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—छर्वं भाग्य पुस्तकालय, जयपुर; २०१३
सभा (याज्ञिक सग्रह) काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री राम जी ॥

श्री राधा श्री कृष्ण श्री श्री विहार श्री नाम ।
श्री दायक श्री प्रातकर श्री समूह श्री धाम ॥ १ ॥
श्री यनिता श्री सात श्री श्री भूधरा सह राय ।
श्री लदि श्री गायन ली श्री इन बुज्ज खान ॥ २ ॥

देवि सयी छवि नंद नंदन की ।

मृदुल मनोहर स्याम विलोकत मंद भई वृत्ति चंद्र मदन की ॥

मोर मुकुट मकराकृत कुंडल अलक विराजत पौरि चदन की ॥

मृकुटी वक्र कुरंग विलोचन सुक नासा अंभोज वदन की ॥

लटकन लटकी रह्यो अधरन पर धांति लसति है मुक्त रदन की ॥

अमल कपोल चिबुक अति सुंदर थी वसंधवत रूप सदन की ॥

विविधि माल शीवत्स भृगूपद भुज प्रलव त्रय ताप कदन की ॥

वाजू कंकण वाक मुद्रिका कवल हस्त नय ज्योति हदन की ॥

लकुटी लाल वासुरी भ्राजत त्रिवली रुचिर वनी सुपदन की ॥

कटि किकरी पीत पट छाजत चमकत तडित जथा जलदन की ॥ जुगल जघ र० ॥

रामरतन तजि लाज भट्ट मैं हीन चहीं रज कंज पदन की ॥ ३ ॥

मध्य—

॥ पद ॥

देयो री या कुँवर कन्हैया ।

मनमथ कौटि मनोहर मूरति याहि न लोचति को जग मैया ।

नील जलद सम स्याम सुभग तन द्रग मुष कर पद फज लजैया ॥

दमकि रही नय पांति रमाधर मणि भूषण प्रति अंग सुहैया ॥

केसरि तिलक मुकुट अलकावलि फूमक नांक बुलाक हलैया ॥

भृकुटी चाप कुरंग विलोचन हसि हेरत मन मोल करैया ॥

कंध दुसाल पीत पट काछै कर मुरली वर तान गवैया ॥

रामरतन पग धरत धरणि पर ताल सहत संगति नचैया ॥१०॥

॥ दोहा ॥

श्रीन सहित श्रीवन विषै गोपी गन माहि ॥

श्री हरि को छवि श्री प्रिया श्री मुष गान कराहि ॥११॥

अंत—

॥ दोहा ॥

श्री निवास अष्टक पढै श्री अनुराग समेत ।

श्री वाणी कीरति लहै श्री घनस्याम समेत ॥२१॥

जुगल उपासिक नारि नर जे न लहै रस आन ॥

जिनको सरवस ध्यान यह विमुष सुनै नहि कान ॥२२॥

श्री स्वामी सर्वज्ञ श्री मयाराम महाराज ।

श्री गुर करण तै कह्यौ श्रीपति सभा समाज ॥२३॥

इति श्रीकृष्ण ध्यानाष्टक संपूर्णम् ॥ शुभमस्तु ॥

विषय—पद और दोहो मे राधाकृष्ण की युगल उपासना का वर्णन ।

सख्या ३५५. भागवत (एकादश स्कंध), रचयिता—रामरसिक, कागज—देशी, पत्र—८८; आकार—६ $\frac{3}{8}$ × ५ $\frac{1}{8}$. डच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—२२२८, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८४० वि०, प्राप्तिस्यान—प० रामरक्षा त्रिपाठी "निर्भोक्त", अध्यापक, फार्स हाईस्कूल, फैजावाद ।

आदि—.....तजानी ॥

बल निधान यह निज उर आनी ॥

यदु कुल दुमह भूमि वताई ॥ गयो भारु नग यो तव ताई ॥

मम आश्रित इन कहूँ जगनाथी ॥ श्रीगुरु ने कृष्ण भगवत ॥
 ताते वेणु अन्नल मम नागे ॥ धरतु अग्नि सुमुख मरुतानी ॥
 सहृदि ताहि शक्ति यहै पावे ॥ ना पाठे निजगम निजगते ॥
 मलय संघ यहूँ निज उर धरिषे ॥ जिप्र आरु कुर पारुग कर्षिषे ॥
 मो यदुयंश प्रयन अति नागे ॥ निज कृप करु मरुत मरुतानी ॥

:०. .० .०

॥ दोहा ॥

तरुन हेतु तम नरुन कहूँ मति शिखरि गुण धाम ॥
 चलत भए निज धाम तप परगपारुन धनरुधाम ॥

:०. :० .०.

॥ दोहा ॥

“रामरसिक” प्रभु मलैखिन मेटि मयन मनि मायु ॥
 विप्र चवन मेटे नहौँ मानी नीयो मोरु छायु ॥

इति श्री भागवते महापुराणे श्रीमन्नोपाध्याय नाम प्रथमोऽध्याय ॥ श्री कृष्ण उवाच ॥

अत—अर्जुन निज प्रिय हरि कथा ताभु दिन्तु धरि दान
 कृष्ण यदुक्ति सुगीत धरि म . . नु शान प्रधीन
 मरे जे यक गात्र निज केरे । नही न काम त्रिया विन बेर ।
 या विधि वेद सुनीशन गाए । प्रम ह्रीने अर्जुन बरवाए ।
 श्री हरि तजी द्वारिका जवहौ । योही मन पद्यानिधि कह्यौ ।
 छोडि एक श्री कृष्ण निधाना । नहूँ नम्रिहित श्री धनदाना ।

:०. .० :०

॥ दोहा ॥

सकलाश्रय मम जे गुन माये सुमिरं कोर ।
 लहै भक्ति भगवत यो परब्रह्म मनि होर ।
 श्री शुक नृप मयाट धर दासक नय दायन ।
 “रामरसिक” भाषा विषयो दास दुदि धनुमान ।

इति श्री भागवते महापुराणे एकादशोऽध्यायः ॥ श्री कृष्ण उवाच ॥ श्री कृष्ण उवाच ॥ ३१ ॥ सपूरुषं भूतेकादश स्वधीय ॥ ३० १८४० ॥

विषय—भागवत एकादश अध्याय का समाप्ति ॥

सख्या ३५६. पद्य त्रिधातु—प्रतिभा—रामरसिक मम परब्रह्म मनि होर ।
 आकार—६ x ४३ इति. धरि (प्रतिभा) —१२. परब्रह्म मनि होर ।
 रूप—प्राचीन. पद्य. विधि—नागरी. विधान—३० १८४० ॥
 दास, कुटी—सेमरवर (मन्तु बोलना) धरि—धरि मनि होर ।
 से संबंधित है ।

आदि—गुरुये नमः ॥ दया गुरु श्री कृष्ण कृष्ण लीले ॥ रामरसिक उवाच ॥ श्री कृष्ण उवाच ॥
 आदि अंत ॥

॥ गुर अस्तुती मुपबंद प्रथम ॥

॥ सायी ॥

साहेव दीन दयाल गुर सो पर और न कोए ।
सरन आए जम सो बचै आनागवन न होए ॥ १ ॥
दया करन ऐगुन हरन तारन तरन उदार ।
असरन नरन वंदी चरन तुम दिनु नहि निस्तार ॥ २ ॥
देपि अधमता आपनी परवस जम के हाथ ।
वसित कहेउ साहेव सरन भी भए हारि सनाथ ॥ ३ ॥
प्रभु सब लाएक पारपी हो भूमिक अज्ञान ।
लोहा कनक पारस करै साहेव सरन समान ॥ ४ ॥
वंदी चरन सब दुखहरन प्रभु प्रसाद सुख भूरि ।
दया करी दुप सब हरी सखित सुलभा दूरि ॥ ५ ॥
वहे ब्रहाए जात थे भीसागर के मांह ।
दया बरी परपाय सब मरनाए गहि दांह ॥ ६ ॥

अत—सत सव्द टकसार

॥ सायी ॥

मानुष जन्म नल (? नर) पायक चुके अवकी घात ।
जाए परो तो चक्र मे महे घनेरी लात ॥ १ ॥
जिन्हू चेता तिन्हू चेता मानुष केरी दांव ।
नहि ती डुरमत फेर मे सहे घनेरी घाव ॥ २ ॥

॥ छद ॥

जेहि हेत सुर नर मुनि जना बहु जोय जप रट लावहीं ।
नहि वोर छोर बेकार पावहि अगम कहि कहि गावहीं ।
सो आद अंत जे सुजन जन पारप करहि परपावहीं ।
समगा फांस मिटाए अनय असक सोई पद पावहीं ॥ १ ॥

एती आद अंत परप विलास वरनन ग्रंथ राम रहस्य दास कृत संपुरन ॥ दमपत रांमदरस
के प्रति देपा सो लिपा मम दोस न दिएते ॥ पढै गुनै जो सुजन जन माहेव विनती मोरि ॥ अछर
वंदी काम मांतरा ॥ लीज बुध्यतै जोरि ॥ संमत १८७८ के साल ॥ सुभ अस्थान भाग नगर ॥
भीती सावन बदी ॥ ५ ॥ पंचमी ॥ बार मंगलवार ॥ संपुरन ॥ विवेकसार ही ॥ परप
विचार है ॥ मुक्ति का द्वार है ॥ चरन गुरदेव का ॥

विषय—सत मतानुसार ज्ञानोपदेश वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल नहीं दिया है । लिपिकाल मवत् १८७८ है ।

प्रस्तुत रचना निम्नलिखित रचनाओं के साथ एक ही हस्तलेख मे है —

१. अर दाल मत्ता साखी चौरासी अग की—पत्र खडित हो गए हैं ।
२. बचन बीजक—कवीर—पत्र खडित हो गए हैं ।
३. रेखता—कवीर
४. ज्ञान कहानी—कवीर
५. परख विलास—राम रहस्य दास
६. नमस्त सार मानुष विचार—
७. पंचकोश—
८. फुटकर सवैया

- ६ ग्रह वैराग्य बोध
- १० भैरवतावनी—नाचदान
- ११ ज्ञान उपदेश चैतान्यनी श्रावण—विमला
- १२ ब्रह्म निरूपण—श्रीवार्ता
- १३ परमहंस मध्या विधि—
- १४ मंगल मत्त महिमा—
- १५ मन्त्र की रचना—श्रीवार्ता
- १६ वन व्याख्यान—
- १७ मुमिग्न भेष क—श्रीवार्ता
- १८ यकौत्तरी चौका गी—
- १९ जपमाली मुमिग्न—
- २० पुटकर मुमिग्न रह—
- २१ बदगी का श्रम—रुद्र का श्रम—श्रावण ।

हस्तनेत्र के आदि के पत्रे नाटकीय रूप में । मध्य श्रम श्रम कर्म के अन्तर्गत ।
 इसमें मन्त्रों की भी रचनाएं निम्नलिखित हैं ।

सख्या ३५७ जगन् विनायक, स्वयंभूत—नाचानाम विधि—श्रीवार्ता—
 आकार—१४ × ११ अक्ष, पन्ति (प्रतिपद्युष्ट)—२२ पन्तिना (प्रतिपद्युष्ट) २२
 रूप—प्राचीन, पद्य, निधि—नाचारी रत्नाराम—२२ १२ २३ विधि—श्रीवार्ता—
 पुस्तकालय, नागरीप्रज्ञाविगी मना (व्याजिन मन्त्र) श्रावण ।

श्रादि—श्री बाल हरणों जथात श्री गणेशाय नमः प्रथम पुस्तक विनायक विनायक
 सिंह कृत कावचन में ॥

॥ गणेशोक्ति ॥

सोहत मुकुट सीस कुडल श्रवण सोहै मुरली अल धुनि मोहै ननुप्र की ॥
 लोचन रसाल बक भुवुटी विसाल सोहै सोहै वनमाल नै माण नै वन की ॥
 रूप मन मोहन न चित्त में विसारों दास नृधर दल पद कनिष्ठ ॥ ६७ ॥
 जगत निवास कीर्ज सुमति प्रकाश मेरे उर म हृदय में विसार वनन की ॥ १ ॥

॥ गणेशोक्ति ॥

नागरि नवेली अलवेली मलवेली भाति तग मधियान लिय दीन ही मन्त्र में ॥
 निकसे तहा हूँ श्रानि जर्व मन मोहन जी परम प्रचीन दल वीर्य ही बसति ॥
 मुरली वज्र कें चलै गए नेह वीज यं कें हितं कें हितं कें हितं कें हितं कें हितं ॥
 निरखं छवीली वज्र छंल की टचीली छदि हूँ गर्द दशों तो हदि कर्त कियान ॥ २ ॥

मध्य—

सपी की वचन सपी सौ सरद रिनु विहार ॥ परम मित्राय ॥ पितृ कृत्याय ॥ राम कृत्याय ॥
 सुनी दीन वानी प्रेम सानी उर दया श्रानो त्यागा को स्मरण तिने कें स्मरण ॥
 वन उपवन में जमुना के पुलिन में राधा मन में नै कृत्य मन्त्र ॥ १ ॥
 चल्थी नहि जात मोपै जानी जहाँ लंफे चलै तिथये न दिन न के दिवसो स्मरण ॥
 फह्यो तव कान्हु चडि चलौ मेरे वध पर यो कति कसेप हीय कसे हति सुण ॥ २ ॥

अन्त—

॥ राम मोरुट ॥

नरवर नाथ छत्रसिंह सुत राम सिंह रश्मि रचनायो रूप मन का विधि ॥ १ ॥
 गावें जो गवायें सुनै प्रेम में मगन होय तावे उर नाथा स्मरणोहन की दया ॥ २ ॥

संवत् अठारह सौ बरस छतीस पुनि सुदि तिथी पाचें गुरुवार माघ मास है ॥
रसिक हुलास कर सुमति प्रकाश कर नवल प्रगट कियो जुगल विलास है ॥१०१॥

इति श्री मन्महाराराजाधिराज महीपति जग इन्द्र बहादुर महाराजा रामसिंह जी कृत जुगल
विलास संपूर्णम् ॥ अथ रागन की गिनती के कवित्त ॥

गौरी माझ दोइ कन्हरी मे तीन ईमन मे सात हैं सरस कान्हरे मे दो लपाने हैं ॥
साहने मे एक प्यारी सोरठ मे तेरह भपाल माझ एक पूरवी मे पांच जाने हैं ॥
वृ दावनी सारंग मे एक पुनि सारंग मे चौदह कहे हैं जगला मे तीन आने हैं ॥
सोरठ मलार चारि सुद्धहि मलार एक अंसे ही मलार माझ तीन दरसाने हैं ॥ १ ॥
वागेसरी कान्हरे मे दोइ स्याम माझ दोइ टोडी हूं मे दोय भंरो मांझ दो सुहाने हैं ॥
बरवा केदारो जंजवंती जेते गुजरौ विलावल धनासिरी मे एक एक ठाने हैं ॥
याही रीति हंस किंकिनी मे गौर सारंग में ललित विभास हू मे एक एक ल्याने हैं ॥
परज मे तीन और हमीरहू में तीन और अडाने माझ तीन नीकी भांति पहिचाने हैं ॥ २ ॥
रामकली मांझ चारि गाएँ हें सुहाई भांति गौडहि मलार दोय सुप सरसाने हैं ॥
कहे हैं पभायच मे सात सो सुहाने हिए दिये रहे कान तें तरंग मे लुभाने हैं ॥
राधेकृष्ण नाम के उपासी सुपरासी सदा गावें श्री गवावें सदा प्रेम रस माने हैं ॥
जुगल विलास मे कवित्त सत एक एक पांच तीस राग मे बनाइ के बपाने हैं ॥ ३ ॥

इति रागन की गिनती संपूर्णम् ॥

विषय—इसमे राधा कृष्ण की लीला विभिन्न रागो मे दर्शात है ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्तलेख मे निम्नलिखित ग्रथ सकलित है —

१ पद (नित्य पद), २ कृष्णाश्रय की भाषा टीका, ३ नवरत्न की भाषा टीका,
४ पद (होली तथा स्याल), ५ जुगल विलाम—राजाराम सिंह कृत ।

सख्या ३५८क. गनक आह्लादिका, रचयिता—रामहित “जन”, कागज—देशी,
पत्र—४, आकार—११ $\frac{३}{४}$ × ५ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६,
अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा,
वाराणसी (ग्रयदाता—५० शिवमोहन तिवारी, ग्रा व पोस्ट—बरहद, थाना—जिला—आजमगढ़) ।

आदि—श्री गरणेशाय नमः ॥ अथ पोथी ज्योतिष गनक ॥ आह्लादिका जनरामहित
कृतम् लिप्यते ॥

॥ दोहा ॥

ज्योतिष पति कुल कमल पद वदि सुमिरि द्विजरज ।

रचत गनक आह्लादिका बाल बुद्धि के काज ॥ १ ॥

॥ अथ प्रथम नक्षत्र नामानि ॥

अश्वनि ॥ भरणी ॥ कृतिका ॥ रोहिणी ॥ मृगशीरा ॥ आद्रा ॥ पुनरवसु ॥
पुष्य ॥ श्लेषा ॥ मघा ॥ पूर्वा ॥ उत्रा ॥ हस्त ॥ चित्रा ॥ स्वाति ॥ विशाखा ॥ अनु-
राधा ॥ ज्येष्ठा ॥ मूल ॥ पूर्वाषाढ़ ॥ उत्राषाढ़ ॥ अमजित ॥ श्रवण ॥ धनिष्ठा ॥
सतभिखा ॥ पूर भाद्रपद ॥ उत्रभाद्रपद ॥ रेवती ॥ इति ॥ २८ ॥

∴

∴

∴

अंत—

॥ अथ नाडी फलम् ॥

चडी पहली मे परं पुरुष न तजौ आप ।

ती पति के कहू श्रेष्ठ है द्विजी लपहु सुभाय ॥ ३० ॥

दूजी नाटी मे परं कन्या नदन प्रीति ।
तो कन्या बहु श्रेष्ठ है नेत्र न जाना जान ॥३१॥
कन्या चर को नपत जो तीर्ती नाटी पाठ ।
तो दुनो ते प्रीति अनि मुज्जामनो मोहमद ॥३२॥

॥ इति नाटी कवम् ॥

॥ अथ विषोय नीन प्रती विचार ॥

वर कन्या माता पिता मरो जानिये जानु ।
नीचे वरते कन्या का मुनदायक ननु जान ॥३३॥
जो कन्याते पात्रये घर जाये मुभ न ।
है अलीन मो नीन

:०: .०: ०
—दृष्टान्त

विषय—कवित ज्योतिष वा वेगंन ।

संख्या ३५८४. गनक प्रत्यादिता, नचदिता—गामिन्य (—) नचदिता—देव ।
पत्र—७८, आकार—८, ६, ९. दच, पक्ति (प्रतिश्रु) —३०, शिवा, (—) —
१७५५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, विधि—नागरी, ज्ञानागत—सं. १८८८३८, विधि—
सं. १८८७ वि०, प्राप्तिप्रान—शकुन गमामन मित, शान—नचदिता, पत्र—३१०, विधि—
मुलतानपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नम अथ पोची जोतिष गनक अज्ञादिषा जगगम निच इ-म
लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

ज्योतिष पति कुल कमलपद यदि मुमनि टिज गज ।
रचत गनक अज्ञादिषा बाल बुद्धि से बाल ॥ १ ॥

॥ अथ प्रथम नक्षत्र नामानि ॥

अश्लनी १, भरणी २, कीर्तिषा ३, रोहिणी ४, मृगशिरा ५, आर्द्रा ६, मूल ७, पुष्य ८, श्रवणा ९, धनिष्ठा १०, पूर्वा ११, उत्रा १२, हस्त २१३, चित्रा १४, स्वाती १५, विशाखा १६, मृगशिरा १७, ज्येष्ठा १८, मूल १९, पूर्वाषाढा २०, उत्तराषाढा २१, अश्लेषा २२, श्रवणा २३, धनिष्ठा २४, सतभिषा २५, पूर्वभाद्रपद २६, उत्तरभाद्रपद २७, रेवती २८ इति नक्षत्र नामानि ।

अत—अथ गद्या धरिये को विचार

सूर्य प्रेक्ष तें पट भले धनकल पट मुम जानि ।
घाठ अमुम मुम चारि है बला धरिह विचारि ॥३३॥

इति गद्या धरिये को विचार

१ ८ ८ ३४
एक घाठ पुनि घाठ दे गायक शक्ति धरे ।
सयत मुम परिचानिये पद पूर जय देह ॥३३॥
मार्गशीर्ष मुनत ३ मुनिधि दुःखान्त गमय ।
अथगणक अज्ञादिषा शोरी मति कवित ॥३४॥

इति श्री जनरामहिर विरचितायाम् गणक अज्ञादिषाया जगगम विनोद ही लखनपुर विद्यापीठ
नक्षत्र रपादि पद्यवा पंच दे सद्गमा सूरज उपरनी नाम गद्यमो विनोद ॥ १ ॥ इति गणक कवित ३६ ।

विषय—फलित ज्योतिष का वर्णन ।

ग्रथ नौ अध्यायो (विश्रामो) मे लिखा गया है ।

रचनाकाल

एक आठ पुनि आठ दे तापर चारि धरेहु ।

सवत् शुभ पहिचानिए ग्रथ पूर कृत थेहु ॥१३६॥

मार्गशीर्ष शुक्ल ३ सुतिथि बुधवासर सुखरूप ।

ग्रंथ गणक अल्लादिका कीनी मति अनुरूप ॥१३७॥

संख्या ३५८८. चानक, रचयिता—रामहित सिंह सिंहेल, निवासस्थान—चित्तविसाँव (आजमगढ), कागज—देशी, पत्र—६, आकार—१३ $\frac{३}{४}$ × ५ $\frac{१}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकार—स० १९३६, प्राप्तिस्थान—प० रामनद जी द्विवेदी, ग्राम—पीडरी, पोस्ट—काभा, जिला—आजमगढ ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ पोथी चानक लिख्यते ॥

अथ लक्षण संत को छंद मत्तगयंद

चित्त उदार सदा नहि वास न आस जहा न महान सदाँ है ।

लोभ न छोभ न राग न द्रोह अजाच असग छमा सु गहा है ।

काठहु की परनारि छुवै नहि रामहितीस सनेह लहा है ।

भाव अभाव समान निरंतर कोमल चित्त न लाज वहा है ॥ १ ॥

गावत राम चरित्र सदा द्विग नेह सुनीर विराजत जाके ।

कंठ सुमाल लसै तुलसी हरिवेप लिये श्रुति को मत ताके ।

भोजन शुद्ध विचार समेत समर्पण कै हरि के निति वाके ।

“रामहितीस” सु जूठन खात सुलक्षण संत कहैं गुण याके ॥ २ ॥

श्रंत—

कादर लक्षण

बहु आयुध धरि चले विदित नट को सिगार करि ।

निरषि निरषि रिपुसेन हृदय हहरे विखाद भरि ॥

धकधकानि बडूक तीर जब सरसरान सुनि ।

चमचमानि करवाल निरषि तव घुसन लाग गुनि ॥

कहू आयुध छुड़ गयो तन तुरित डारि हथियार सब ।

इति बदत रामहित पहुँचि घर निज सूरता बखान तव ॥३४॥

अचानक ग्रंथ लिखित्वा नंदन सिंह वसित्वा फतेपुर समत १९१६ मिति कातिक वदी ६ ॥

विषय—निम्नलिखित लोगो के लक्षण वर्णन किए गए हैं —

१ सत, २ पडित ३ जोगी, ४ मूर्ख, ५ पाखडी, ६ जानी, ७ रामदास, ८ उत्तम गृहस्थ, ९ नीच गृहस्थ, १० चतुर, ११ लोभी, १२ अघर्मी, १३ पचसद, १४ निगूँ त्याग, १५ उपदेश सत, १६ अघर्मी गृहस्थ, १७ शूर वीर, १८ कादर ।

संख्या ३५८८. भागवत विलासिका, रचयिता—रामहित सिंह, स्थान—चित्त विसाँव, कागज—देशी, पत्र—६३, आकार—१३ × ५ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनु-ष्टुप्)—१३२३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८८१ वि०, लिपिकाल—स० १८८३ प्राप्तिस्थान—प० रामानद जी द्विवेदी, ग्राम—पीडरी, पोस्ट—काभा, जिला—आजमगढ ।

प्रादि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ भागवत त्रिनामिना त्रिपदे ॥

॥ मोगटा ॥

मंगलमय गणेशाय शान्ति मंगलमय मदा ।
नाथ जुगल पद भागवत मंगलाचरण्य ही ॥ १ ॥
मंगल विधि गुरुदेव मंगलमय गिरिजा रमन ।
चरण कमल रज मेघ अरे नमस्ति मुमति मति ॥ २ ॥
फागुन मुदि गुरवार मपनमी दिशि दुपहर पर ।
कलि जय चारि हजार उरुय नवगत पर्वीय तर ॥
वश्य जानि परमान प्रय प्राग्मन विद्यो तव ॥
महम येक मत घाठ पशामी मउनु नू उरु ॥
निमित्त नाम ग्यान शुभ देम मुमानउ दिदिन पर ।
श्री भागवत त्रिनामिना प्र मुनग प्राग्म वर ॥ ११ ॥

अत—

॥ चौपाई ॥

चद्रपुरीते इन्द्रपुरी गनि । योनिनीही प्रमान वदियर भरि ॥
जाविधि मूरज गति ही गार्ड । चद्रादिष पर दृमि भगुनाई ॥ ४९८ ॥
ज्योतिष चक्र माथ मन उगरी । भ्रमत माथ मारी मग तिरी ॥
रवि रथ जुगल दठ के मारी । नैवनीय नाथ घाठ मरु जारी ॥
जोजन विदित जानि एह लीज । अपर क्या पर नर त्रिप दीज ॥

॥ छंद छर्प ॥

पावन भरत मुण्ड छेत्र अर्यावर्तहि दिय ।
इत फासी उत अरुध माय दिय जग कृपा दिय ।
इत सुरसरि सुपुनीत अति तमज्जन जलपान वर दू घटी नहि करि ॥
प्राग मुचित दिभाम दिय द्वात्र घन तिहेत पर ।
अरे "रामहित" पाय यह निद्रि नाम षो जमन पर ।
पिता राम गति बियो पुत्र हिन विविधि जपन जिह ।
मातु इद्रजात्री मु यिप्र गुर पिनर पूजि निह ।
जच्यो तेरो जना नाम करि कृपा तोहि दिय ।
ता घघन निरमुक्त हेनु नहि वरु उपाय बिह ।
अरे मद पछिनायगो जात मुभग अदगर टरो ।
मातु पिता उदार हित नाम मुजा नहि हिय अरो ॥ ८८ ॥

॥ दोहा ॥

कह्यो रामहित मतिनरिस लीला श्री भगवान ।
कलि मे विदित विरोध जो बरुणीहार वरदान ॥ ८९ ॥

इति श्री जनरामहित विरचितताया ॥ नाना शक्तिदेव उपासकनी ॥
विलासिकायां नाना सवाद पत्पुन्य समाप्त ॥ शुभमस्तु गिरिजाय ॥ अठ १८८ ॥
जेठ सुदी ऐश्वर्या ॥ देवदत्तिय चामरे ॥ त्रिपिना त्रिजगत्तिय शोभाय वन्दे ॥ श्री
भागवत ॥

विषय—भागवत ने अन्तर्गत मंगल मोगटा ॥

मउनु

फागुन मुदि गुरवार मपनमी दिशि दुपहर पर ।
कलि जय चारि हजार उरुय नवगत पर्वीय तर ॥

बरप जानि परमान ग्रंथ प्रारंभ कियो तब ।
सहस येक सत आठ एकासी संवत् रह जब ॥
निमिच नाम अस्थान शुभ देस सुमालव विदित वर ।
श्री भागवत विलासिका ग्रंथ सुभग प्रारंभ कर ॥११॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल सवत् १८८१ तथा लिपिकाल सवत् १८८३ है ।

प्रस्तुत ग्रंथ की रचना निमिच स्थान (मालवा श्वालियर) में हुई । रचयिता ने बहुत से ग्रंथों की रचनाएँ कीं जिनमें से कुछ के नाम इस प्रकार हैं —

१ नासकेत	५ रत्नद्योत
२ चानक	६ साठिका
३ भक्तमाल	७ सामुद्रिक
४ भक्त नदिका	

संख्या ३५६. भगवत गीता, रचयिता—रामानुजदास, कागज—देशी, पत्र—४५, आकार—१३ $\frac{1}{2}$ × ७ $\frac{1}{2}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६५४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९३४ वि० प्राप्तिस्थान—प० अठिका प्रसाद दुबे स्थान व पोस्ट—कडा, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्रीभते रामानुजाय नमः ॥

तत्पादांभोरुहं वंदे येन सर्वमिदं ततं ।
ब्रह्मादिस्तंभपर्यंतं यत्कृपा परिपालितं ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

गुण अनंत कल्याण कहाई । सब विभूति निरवधिक सदाई ॥
सब सुख पूर्ण निरंतर योई । दिव्य रूप नित यौवन सोई ॥

॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥

निज सुत सैन्य अपूर्ण विचारी । पांडु सैन्य पूर्ण मन धारी ॥
संजय मम सुत पांडव योई । धर्मभूमि कुरुक्षेत्र मे सोई ॥
मम सुत पांडव करत यो आही । मोसन वही भेद सब ताही ॥

अत—योगेश्वर श्रीकृष्ण यह पार्थ धनुद्धर योइ ।

तहा विभूति विजै सदा निश्चै जानहु सोइ ॥७८॥

इति श्री रामानुज भाष्यानुसार जयराम ॥ रामानुजदास विरचित दोहा गीतार्थ अष्टादशोध्यायः-॥१८॥ इति श्री भगवद्गीता संपूर्ण ॥ सुभमस्तु ॥

विषय—भगवद् गीता का अनुवाद ।

संख्या ३६०. सत विलास रचयिता—रामावतार दास निवासस्थान—दौस्तपुर (अयोध्या) पत्र—७०, आकार—१० $\frac{1}{2}$ × ६ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १९२५ वि०, लिपिकाल—स० १९२८ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री रामचरण शुक्ल, गवर्नमेंट माडल नार्मल स्कूल, इलाहाबाद ।

आदि—श्री परमेश्वराय नमः ॥ अथ सत विलास मंगल नमस्कारत्मक वर्णनम् ॥

॥ अग्नि पन धरी ॥

जल थल अनल अषाम श्री अग्नि पन पने मूर धर वट नरिण कर ॥
केते गुर अगुर नभग जन्वर केने केने धनघर कर अषर उषर ॥
पल मे पगार पन वीच मे मगटे नरे जमे नट नागर एव क देव अषर ॥
श्रीमे अह्य अनल अषर वट मउन वा वरत त्रिधादि दान राम अषर ॥ १ ॥

॥ अत्र अत्र राम वर्नन ॥

अवध पुगी ते दिगि अग्नि गुरु दीगि शीगि दोग्गुग राम नीकी प्रार नगर हो ॥
तहा वंस वम मे मुग्रम राम अवनार नन भट प्रगट अषर के उषर ॥
सम्बत प्रमान वान ५ त्रिति प्रह कद्रमा मे १६२४ धन मरवदिन रिती हे कति अषर ॥
छमिते सकल चूक मूक को कदित नाय जानि जानि नाना धानि मार क अषर ॥

इति श्री सत विलास आनंद नेपाम राम अवतार दाय विरचिते प्रायना ध्यान नाम प्रकाश
प्रकाश समाप्त अथ द्वितीय प्रकाश सोछा वर्नन ॥

अत—

फटु वाषय को तेज न ताहि वह जेनको उ आरि हेमा अषर ॥
नहा लोम की फार लग तेनरी जिनदे उर नाय कद्रम अषर ॥
अवतार अन्नित्त लय जग जो तेनके उर मे नरि नरे अषर ॥
सबरी तन भांत गह तिनकी जेनके भन राम अषर ॥ १ ॥

इति श्री सत विलास आनंद नेपाम राम अवतार दाय विरचिते मात वर्नन नाम प्रकाश
प्रकाश समाप्त ॥

॥ दोहा ॥

वगु विवि प्रह नमि को अषर १६१८ गुण प्रविष्टा भाग ॥
लिवी अथ सुय पथ को तानि दुष दगा विदगा ॥

विवय—प्रायना, शिक्षा, तीर्थ और गतिना अर्थात् यज्ञ ।

रचनावाल

५ २ ६ १

संबत प्रमान वान विवि प्रह नद भागे पनमन कचित विज्ञो कति अषर ॥
छमितो सकल चूक मूक को कदित नाय जानि जानि नाना धानि मार के अषर ॥

सत्या ३६१. मुगिदानोत्तम नाम— (विवि १ । उषर १) अषर १ । १ । १ ।
कद्रप्रताप मिह, नयान—भागा, रामज — गार्धिन पद— १, गार्धिन— १, १, १ ।
पक्ति (प्रतिपुष्ट)— १, परिमाण (परिपुष्ट)— १, १ । १ । १ । १ । १ । १ ।
विवि—नागरी, प्राणियथा— ३, ३, ३ के मर्गात् अषर १ । १ । १ । १ । १ । १ ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ श्री महादेवाय नम—विद्विष्टे—मुगिदानोत्तम
राम अषर ॥

॥ उत्तर वाक्य ॥

॥ तारादी राज पथ नाम मणकोपासना ॥

॥ अषर ॥

श्री गुर अवन मरौप अरत प... अषर ॥
अवन सकल सुष्ठ अवन अरत अषर ॥

धनगन दंपति लोक भूरि संपति रस बागं ।
पुत्र प्रपौत्र प्रसूति भूति गज त्यंदन लागं ॥
दातारं श्ररथादिफल करतार गुन पुजवइ ।
हरतारं सरवापदं भरतारं हरिकुंजवइ ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

गननायक वारन वदन कारन मुद सतार ।
प्रनमउं सकरनंदनहिं जड नदिनि सुकुमार ॥ १ ॥

॥ चौपई ॥

रजे प्रजा रघुपति पति पाई । रमा वसी ग्रिह दिनहि बोलाई ॥
बीज एक लव ता बहु वारा । कर खडांत तेगहु न भुझारा ॥
प्रजा प्रसन्न परम पति पाई । धन लखि जिमि वरहा समुदाई ॥

अंत—

॥ दोहा ॥

कंपित जत फल भूरि द्रुम जनु प्रचड लहि वात ।
कोउ उत्पाटित निपति कोउ तजत सिखरि को नात ॥ २८८४ ॥

:०:

:०:

:०:

सुमिरि ह्रिदय रघुनाथ हनुमान अजनि तनय ।

जात भए मन साथ लका राच्छस धानि किल ॥ ३५१ ॥

राम सांद्र घनस्थाय तनुसिय सउदामिनि जानि ।

चातक रुद्र प्रताप इव चाहत प्रेम सुपानि ॥ २८८५ ॥

इति श्री सुसिद्धान्तोत्तमे राम खडे श्री महाराज रुद्रप्रताप सिंह चिरचित्ते किर्किधा पथे
मनसा हनुमल्लका गमनं नामाष्टादशाधिक शततमो विश्रामः समाप्तः ॥ १११८ ॥

॥ इति किर्किधा पथः समाप्तः ॥

॥ इति किर्किधा काडः ॥

विषय—श्री रामचरित्र वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत रचना विशाल है । इसकी प्रति खडित है । केवल किर्किधा काड और उत्तर काड के अश वचं हैं । विषय अनुक्रमणिका की सूची से पता चलता है कि बालकाड से उत्तर काड तक के सात काड समग्र थे । प्रत्येक काड में निम्नलिखित प्रकार से पृष्ठ थे—

१. बालकाड (मिथिलापथ)—४५६ पृष्ठ
२. अयोध्याकाड (कोशलपथ)—३६३ पृष्ठ
३. अरण्यकाड (अटवीपथ)—२३२ पृष्ठ
४. किर्किधाकाड (किर्किधापथ)—१३१६ पृष्ठ
५. सुदरकाड (दूतपथ)—३०८ पृष्ठ
६. लकाकाड (युद्ध पथ)—५३२ पृष्ठ
७. उत्तरकाड (राजपथ)—४६३ पृष्ठ

संख्या ३६२. ज्ञानोपदेश (?), रचयिता—रूप कागज—देशी, पत्र—६, आकार—
६.१ x ४.२ इंच पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—८८, खडित, रूप—
प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचांगिणी सभा, वाराणसी (दाता—
श्री महंत ईश्वरशरण भारती, ग्राम—बाँसी, पोस्ट—भाटपार, जिला—गोरखपुर) ।

आदि—..... बहो मन मे ।

करम धरम बात सबे लगे "रज" बाकी बही बही बहा बन बन के लगे ।
कहा बुझ कोन गुर जान पयो जान नाहि एउ मझी म मरु एउ न म म ।
क्रियन कहो क्रियन कहो एरे मन क्रियन नाम बाहु ने न धाम जगन बा । एउ के । १६ ॥

॥ दोहा ॥

पोजि पोजि सबही धरमो धरनि न पायो पोर ।
पर पाला ते हई के मया जगन मे दा । ॥ १७ ॥

॥ नोटा ॥

पालोक तेरा वृत्र धरनि मेन मरु धरम हो ।
मलक पार जन दुव पोषन पायो जग नि । ॥ १८ ॥

॥ अंगन ॥

पिरफनि पात पुधारा न गुण्या जानने ।
पुनी न हई कपाट न बहाहि मानने ।
पट चरहि नहि पोजि प्रापु मन देण ।
परीहा पटक अटक नहि जानन कुन नेनि निपे । ॥ १९ ॥

:०:

०

०

अत—

॥ धरनि ॥

आकत करीये नेन हिय मे त्रिवारी कोन जगना मजन नाउ बन बन बा ।
आइ दरपन "रप" नाइ सब घट माहि भमबन भवर जगजाजग रज बा ।
आंक सम आरि आरि आरि मझी मरु जनि ईहे नाकी जग बाउ एगो मझी मरु बा ।
आरि रज राज सविचारी कोन मिनिमिली गो मझी मायो पुपन देवा बा । १७७७७ ॥ १६ ॥

॥ दोहा ॥

देर टार हरि भजन मे परो न धरम दा ।
देही घाल बले गुनी होन मन धरना । ॥

॥ नोटा ॥

टूटे भी को फान राम राम मनिगन बन ।
टहल करो गत धाम धनुगल धारे धर मझ । ॥

॥ आरत ॥

टेरि टेरि चटवार बहा नहि मारनि ।
टीम टाम जग देपि टेह एगु टारनि ॥

॥ परिहा ॥

टनक बात पनिरुह माणु गुर देने ॥
टोक टाक नहि बनिष पध वृ देने ॥

॥ करि ॥

टुक टुक हजे जय राम के भजन बीच टूटे भी पात जगना लेने बा ।
टैनी टैक टड रामहरि के भजन

:०:

:०:

विषय—आपोरदेम धरनि ।

विशेष ज्ञातव्य—पधम पध आरि एही मझी मे पा

संख्या २६३. रूपमजरी, रचयिता—रूप, कागज—देशी, पृष्ठ—१२३, आकार—
६ x ८ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुपट्टुपु)—७६१, पूर्ण, रूप—श्रेष्ठ, पद्य,
लिपि—नागरी, रचनाकाल—१९०८, लिपिकाल—मदत् १९२८, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती
भंडार, श्री विद्या विभा, काँकरोली, हि० व० स० २६, पु० स० ३ ।

आदि—॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ रूपमजरी ग्रंथ लिख्यते “राग भैरव” गणपति
मोर्ष कृपाकरी ॥ बुधिदाता लंबोदर ॥

वहिये सुरनर मुनिहिँ ध्यान धरी ॥

गज आनन जनम मुददाता रिद्धि सिद्धि निधि द्वार खरी ।

रूप निरखि गीरी नंदन की होत सदा आनद घरी ॥ १ ॥

मध्य—मन हरि लीनों नद किशोर ।

चितवन की नित चाह चखन कूँ जँसँ चंद चकोर ॥

नटवर वैष विशेष छवीली सीस मुकट वर जोर ।

रूप अनूप पियारे ऊपर वारों काम किरोर ॥ १६१ ॥

अंत—

॥ दोहा ॥

रूप मंजरी नाम यह रच्यो ग्रंथ रस रीति ।

श्री राधा गोविंद पद दायक मजुल प्रीति ॥ ३२६ ॥

संवत विन्म नृपति कीँ वसु व्योमाकजु रूप ।

पौस मास सितपक्ष तिथि षटी सूर अनूप ॥ ३३० ॥

इति श्री रूप मंजरी संपूर्णम् ।

विषय—भक्ति-विषयक पद-संग्रह ।

विशेष ज्ञातव्य—सुंदर लिपि है । राग के नाम लाल स्याही से लिखे हैं तथा चारों तरफ
हाशिया लाल हैं, पीली और काली स्याही से छाँडे हुए हैं ।

संख्या ३६४. गिरवरसमाँ, रचयिता—रूपराम, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—
७ १/४ x ६ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुपट्टुपु)—९०, पूर्ण, रूप—सुंदर, पद्य,
लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी, प्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह),
काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः । अथ गिरवर समाँ लिख्यते ।

वरस सात केँ स्याम सिरोमनि ॥ पेलत घर घर डोलें ॥

माथें मुकट पीत पट कटि मैं ॥ पाय पैजनी बोलें ॥

लोचन नील कमल से सोहैं मोहैं अलि अवली सी ॥

जो वृज वधू निहारत विनकूँ सो रहि जात छली सी ॥

कानन लसत भूमिका प्रभु केँ नाक बुलाक-सुमोती ॥

मनो सुधानिधि वदन जात प्रभु राछीक राध्यों गोती ॥

चारि कपोल गोल गुदकारेँ और सुंदर सी ठोडी ॥

परत घाय केँ होड़ा होड़ी सवकी दिठि निगीठी ॥

मध्य—कृष्ण जाय बैठे गिरि ऊपर नंद संग वृजवासी ॥

पूजन लगे मेरु संग स्यामिहैं गंध फूल सुपरासी ॥

जब मोहन जू सगरे वृज कीँ धृतपक भोग लगायों ॥

आनि और ज्यों वृजरानी कीँ अपनी वचन सुनायों ॥

सब वृजवासी रहे चक्रत हैं बड़ी अचंबो मान्यो ॥

रंदास कहरे ब्रह्मं ब्रह्म कहत हो स्वामी बुजि प्रकृत कहाँ जाई ।
 बुजि प्रकृत्य के तिन गुनह साधन दियो बताई ।
 कविर कहो जिनकुं साध कहत हो स्वामी सोई काल वस भूल्या ।
 ब्रह्म ज्ञान ध्यान विना त्रिगुण नदि मे बुड्या ।
 रंदास कह त्रिगुण विना कछु भेद क्यु पायिये जो कोपी गुन कुधाव ।
 सहज सुभाव वंकुठ कितरनी भक्त वीज पद पाव ।

अंत—गुर भुल तो सिप समझान सिप भुल गुर तारें ।
 कह रंदास सुनो गुर भायी एक एक के सारे ।
 ब्रह्म छाड़ियो कर्म छाड़ियो छाड़ियो चतुरा वानी ।
 आत्म राम करो पंचाना कहत कविर विवारी ।
 निर्गुणह सो पिता हमारा सरगुण हम हितारी ।
 काकूं नदूं क्यकुं बंदूं दोड पला भारी ।
 धन्य कविर धन्य रंदासा गाव से सोयी ।
 गरुड़ चढि गोपाल पधारे सुध भक्त मेरे दोऊ ।

॥ येता कविर रंदास क संवादा संपुर्ण भंमस्त ॥

विषय—कवीर रंदास मवाद । निर्गुण और मगुण रूप पर वाद विवाद ।

संख्या ३६७. पद गुटका, सग्रहकर्ता—लक्ष्मीदास, कागज—देशी, पत्र—१२,
 आकार—५ × ३, १/२ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—७६, पूर्ण, रूप—
 प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६०५ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्य
 सम्मेलन, प्रयाग ।

आदि—

पोथी तूं पोति पांडे साजन हमारा कित है ॥ १ ॥
 कोई सही सदेशा त्पारव मोहि भीठी बात सुनारव ।
 मेरा साजन कब धरि उनही सो मेरा चित है ॥ १ ॥
 सुनि सुनि सजन की वतियां मेरे परी कलेजे घतियां ।
 मोहि नौद न आवं सारी रतिया मेरी यही निगोड़ी गति है ॥ २ ॥
 दादर मोर कोकलैं वोलैं चपला चहुंदिशि डोलैं ।
 “वपना” की दर्शन दीजं मेरा येहि सदेशा नित्य है ॥ ३ ॥ १ ॥

अंत—लक्ष्मीदास गुरुदेव साँ सुखी भये सब कोइ ।
 बंध्या के बधन कटे मुक्ति सहज ही होइ ॥ १ ॥
 गुटका पद जो चित्त दे ताकं सब सुप होइ ।
 लक्ष्मीदास हरिकौ मिलं जामे मरे न कोइ ॥ २ ॥
 जे आया जगत में करि अपना कल्याण ।
 संत समागम कीजिए नित्य प्रति भजि भगवान ॥ ३ ॥
 संतन की सेवा करं हरि सुमर चित लाइ ।
 “लक्ष्मीनाथ” ताकी मिलं वंकुठा को जाइ ॥ ४ ॥

॥ श्री रामचंद्राय नमः श्री ॥

विषय—भक्ति विषयक पदों का सग्रह । सग्रह में निम्नलिखित मंतों के पद हैं—
 १. वखना जी, २. दादू जी, ३. मूदरदाम, ४. मूरदाम और ५. लक्ष्मीदाम ।
 प्रस्तुत पद गुटका 'रामरक्षा कवच' के साथ एक हस्तलेख में है ।

मदया ३६८ वाग्दमाया, रचयिता—
 ७१० X ८३ ३४, पक्ति (प्रतिपद्य) — १८, परिमाण (अनुप्रास) — १८, अक्षर
 मय—प्राचीन, पत्र, विवि—तामरी, विविमान—१० १८८/१० प्रतिपद्य—१८
 यत्रि पाटय, बांदरी, पां०—त्रयम्प्रा, विना—जीनपुर ।

आदि—श्री गनेगायनमह

॥ कथा यत्प्रमाण कं ॥

चढ़े अमाह मुग्धी के माया जेहि छोटी देह तो बरं दीमला
 दुग्धी मुग्धी प्रीह छाप न आउ गने परदेम अमान प्राह
 आएन्ह मदिन छोउनबासं निस निस छो मरुह दुपारी
 चीरई छुनु छुन छोना लावा सुद बर अरुह नरि पादा
 या उशरगुंत बीज छिननादे या निधंत दम पाहुन धरुं
 भाक पूज के गने धिदेमा बराहि नामे बरुह मदेमा
 करहि फोनाहन खरई देमा भयरा बरहि मेनामा

:०:

:०:

०

॥ दोहा ॥

बीर धीवीर भरोगा ताहा मता यहै उनाम .
 फान्हा भवर भं चेतमह . नदर अटा के पाग .
 भादौ चढ़े माम अयनाहा योगह समुद्र दुहर ही माहा
 गरले बीरह समुद्र भा मोही बटि मने पीय पामर नारी

:०:

०

०

॥ दोहा ॥

आपन जाहु फान्हा घर नेहन औचग नारी .
 लीया न जीसं पुराय गीना होह बीधाना माफि .

:०:

०

:०:

अत—फागुन गुन भावी सुरजा माया
 मं दगाधी जन बरं बेनामा
 परके पराय पुराय नरि होह
 जय गनी पुराय भा नही मोही
 नीरदं जगति जो बागु दहीग
 दरं नएन धीजं मोहि पांग
 गोपिन सो तय बहा दुनाई
 गुण गनेह रंनो रंउ धार
 गौरह माग गोपी बरं पादा
 शभं गदा मर दुग मदा
 दिन दिन पाह रीन भं रनिदा
 धीर धीवीग बेनिव दुह रनिदा

॥ दोहा ॥

सछन बेरि मवारी रं रामदेर नरुदा
 हनीयत बेरी मज्जातो होह मयारी बरा

॥ चौपाई ॥

चैतिमाशा निकाशे नी लाशा
 पुहु वावले वहै वताशा...
 :०: :०: :०:

विषय—विद्योगिनी नायिका का वारहमासा वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अपूर्ण है । केवल चार पत्रे उपलब्ध हैं । रचनाकाल अज्ञात है ।
 लिपिकाल सं० १८६५ वि० है ।

संख्या ३६६क. लक्ष्मी चरित, रचयिता—लखनसेनि (?), कागज—देशी, पत्र—
 १४, आकार—७ × ६.६ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२५,
 पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, निधि—नागरी, लिपिकाल—सं० १९३४, प्राप्तस्थान—काशी
 नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (ग्रथदाता—प० स्वामीनाथ दुबे, ग्राम—डुवौली, पोस्ट—खुखुद,
 जिला—गोरखपुर ।)

आदि—श्री कृष्णाए नमः ॥ श्री गोपाल चरित्र ॥

ईस पुराण मे लक्ष्मी वीष्ण का सवाद नेती अनेती का प्रमाण वीचार लीखा है :

वंदौ आदी जोती मैं तोही । सुमीरत ग्यान बुद्धी दे मोही ॥

ध्यासदेव सुखदेव को वीने करो कर जोरी ।

ग्यान देव प्रवीन हो तासे वीनती मोर ॥

श्री गणेशाय नमः श्री पोथी लक्ष्मी चरीत्र

॥ चौपाई ॥

कहै नारायण वाल कन्हई । सुनु लक्ष्मी मैं कहो बुझाई ॥

मैं तुमसो कछू पुछो आना । आपन अर्थ कहो परीमाना ॥

काहा रहो तुम केहीन पाहां । कस वीस्तार करो जग माहा ॥

सत्त वात आपन सभ कहहु । केही के गृह तुम अति सूख लहहु ॥

सुनी लक्ष्मी त्व मन वीहसानी । कहो वात तोही सागं पानी ॥

जो मोही पूर्व तपेस्या साधी । ताके गृह मैं रहौ अवाधी ॥

जुग जुग मोही अरन त्व वासा । तुम दयाल चीत पुरवहु आसा ॥

तुम नारायण सामी गोसाई । सभे तनु जानौ रघुराई ॥

अंत—मुल मंत्र सभ जो वीधी हीना । सो उचारी नाम तूअ लीन्हा ॥

रा कृष्ण कह लक्ष्मी वानी । सुमीरो वीन प्रीती सारंग पानी ॥

॥ दोहा ॥

लक्ष्मी चरीत्र नरायण जो सो को मेटेपार ।

कवीता सभ जग कीन्हा लखन सेनी प्रीतीहार ॥

लक्ष्मी कह नारायण सुनो जगत वेवहार ।

तेही कारन नर दुप सुप भुंजत हे संसार ॥

कर्म भोग के कारण होए दलीद्र रूप ।

धरम कर्म से जो रहे सो धनवंत भुप ॥

इति श्री लक्ष्मी चरित्र कथा संपूर्ण सुभ सम्त १९३४ समे नाम कुंआर भासे सुकल पक्षे
 सतमी ॥ ४ ॥ दः लाल जीव लाल, ग्राम राजतपार खास "पंडीत जनसो वीनती मोर टुटल अक्षर
 पढव जोरी ॥

विवध—श्रीलक्ष्मी जी का चरित्र वर्णन ।

त्रिमेष ज्ञानध्व—प्रभुत्व शक्तिवत् प्रभुत्व शक्तिवत् । प्रभुत्व शक्तिवत् प्रभुत्व शक्तिवत् ।
श्रीर दूमग 'गारात्र चरित्र' या 'श्रीर दूमग' ।

मंग्या ३६६४ लक्ष्मी चरित्र, शक्तिवत्—शक्तिवत्, शक्तिवत्—शक्तिवत्, शक्तिवत्—शक्तिवत् ।
श्रीर दूमग—३६६४ × ६६६४, शक्ति (शक्तिवत्)—शक्ति (शक्तिवत्) ।
श्रीर दूमग—श्रीर दूमग, शक्तिवत्—शक्तिवत्, शक्तिवत्—शक्तिवत् ।
श्रीर दूमग—श्रीर दूमग, शक्तिवत्—शक्तिवत्, शक्तिवत्—शक्तिवत् ।

श्रीर दूमग—

॥ श्रीर दूमग ॥

कहे नराएन वाच कर्णद । मुनी लक्ष्मी मे कहे दुमग ॥
मे तोही मो बहू पूछो यवाना । धरना धन कहे परमाना ॥
कहा रहे तुम रहू बोधी माहा । .. नाच कहे नराएन ॥
मत्त वचन आपन मय कहए । केही के धीरो तुम परीक्षण ॥
मुनी लक्ष्मी धीत नां बोधमाना । यना जवन मुतु मागमना ॥
जो मे पुरवील नपेमा गापी । ती मे छाए जवन मुतु छापी ॥
जुग जुग मोही जवन तुम आया । तोहणे दया कीर पराना ॥
लछ कर्णी प्रभु नावेड नाछ । मेरा रणे रहा मुतु ठाठ ॥
मे श्रीपीत तुम ठाठ मोरी । जवन दमन मेरा रहू बोधी ॥

श्रत—लछमी नराएन मुनीरो नीनी । मनया धाव मन के पीपी ॥
मुन जामी जहा बोधी दीन्या । मो उचान नाम मुग बोधी ॥
श्री कृष्ण लक्ष्मी परे याना । ना हीनद मधीवत्त ही जनी ॥

॥ दोहा ॥

लछमी नराएन के खनीर मो की नरे पा ।
कयोता नय जग बांधू लखन मेर परीवार ॥

इती श्री श्री पीपी लछमी चरित्र समाप्त पती मो देना मो पीपी सम दाम ॥
पडीत जन सो घीनती मोरी दुष्टर छटर नय बोधी ॥ समय पर नामानी लछमी हटा
ता०: १५ आतीन रोज मुखान १२०५ साल मगत १६२५ मगत दरी ।

विवध—लक्ष्मी चरित्र शक्तिवत् शक्तिवत् ।

सट्या ३७०. शक्तिवत् (शक्तिवत्) शक्तिवत्—शक्तिवत्, शक्तिवत्—शक्तिवत् ।
६६, शक्तिवत्—६६ × ६६, शक्ति (शक्तिवत्)—शक्ति (शक्तिवत्) ।
श्रीर दूमग—श्रीर दूमग, शक्तिवत्—शक्तिवत्, शक्तिवत्—शक्तिवत् ।
श्रीर दूमग—श्रीर दूमग, शक्तिवत्—शक्तिवत्, शक्तिवत्—शक्तिवत् ।

श्रीर दूमग—श्रीर दूमग, शक्तिवत्—शक्तिवत्, शक्तिवत्—शक्तिवत् ।
श्रीर दूमग—श्रीर दूमग, शक्तिवत्—शक्तिवत्, शक्तिवत्—शक्तिवत् ।

॥ दोहा ॥

जं जं लखन नरन मरणी शक्तिवत् ।
श्रीर दूमग मोरी लछ छटर मोरी दे देवत ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

बादसाही जे "वीराहिमसाही" । राज करहि महिमडल माही ॥
आपुन महाबली पुहमी धावै । जउनपुर मह छत्र चलावै ॥
संवत चौदह सइ एकासी । लपनसेनी कवि कथा प्रगासी ॥
गुनी जन सब अपीर भंड । वैजलदास राइ पह गएउ ॥

॥ दोहा ॥

बैजलदास मन हरपीत ताही मरावै जीव ।
लपनसेनी कवि भाषा कथा बैरठ जे कीव ॥ २ ॥
लपन सेनी कवि कथा प्रगासी । मआमोह त्रीभुवन वासी ॥
लपनसेनी कवि विष्णु श्री राधा । मआ मोह त्रीभुवन बांधा ॥
सब जीवन्ह मह तोहार निवास । जैसे रहै फल मह वास ॥
उतपति प्रलं जाहि के हाथा । दुष सुष लीषा सबन के माथा ॥
एक तंतु होइ सर्व सीधावै । पीरि ही रिवानी दास सुष पावै ॥

॥ दोहा ॥

जी परमेसरहि धावै प्रम समती नर पाउ ।
वनोवास पडवन कर तुव प्रसाद गुन गाउ ॥ ३ ॥
कैसे मेरवउ अछर कै पाती । सरवार राजा कइ जाती ॥
हसन पति होइ छन छन वाका । मह बेलाभ भए नीह लंका ॥
अछर सुनत सुन्य सुधी काढा । अश्रीत बोल वचन सी वाढा ॥

॥ दोहा ॥

नगहि चहि नगसरी पडीत रहै सीरधुनी ।
छल बैल सब होवै लपनसेनी कवि गुनी ॥ ४ ॥
डीलेस्वर अनुकाराम । तेजरासी कुल राजा धर्म ॥
तासु तनै जे लपन कुमार । दुरजन द्रवन सीध करीवार ॥

॥ दोहा ॥

कठे बसै सुरसती हीरद बैसहि गनेस ।
लपन सेनी तहवे बसे धन्य धन्य सो देस ॥ ५ ॥
लपनसेनी कवि जनमे आइ । बड़ बड कविता गए लजाइ ॥
गए धर्म श्री सतजुग राजा । देवीपुर गए बली के काजा ॥
गए श्रीती घनसेनी नरेसा । भोजपुर गए देव गनेसा ॥
जंदेव चल सर्ग की वाटा । श्री गए घघ सुरपति भाटा ॥
नगर नरिद्र जो गए उनारी । वीद्यापति कइ गइ लचारी ॥
अंत्रित कुंड नग्र जे यहाइ । श्रीधनी कुंड नग्र अरब गहइ ॥
तेन्ह पापीन्ह कह षौंज उठाऊ । जे नहि लीन जन्म भरि नाऊ ॥

॥ दोहा ॥

तेहि पापी तह रापीए जेइ हरिनाम न लीन ।
अछर तीनीसा जीव करि भ्रम होइ दीन दीन्ह ॥
जन परिजन छडि सो देसा । जहव उपमवन बसै नरेसा ॥
भोडु महंथ जे लागे काना । काज छाडि जे अकाजै जाना ॥

कपटी लोग सब से धरमायी । दोट दट्ट बहिं चीं जेईं-परी ।
 कुजन बांधे सुधन भरई । धाएर सा एर दह भगई ॥
 घदन काटि बरिन जे पाया । छोट काटि एहु कहर बारा ॥
 कौकिल हम मजागई मारी । सुनी जगत बहनिं प्रीतिपारी ॥

॥ दोहा ॥

गारीय पय उपरिय पार्य नमकर जाव नार ।
 लपनमेनी तावने हम बाडी जे दाहा जारिार ॥

॥ बादाई ॥

चीमा नगर जगत परमाया । रामाज नर मन्थ कौरा ॥
 जं जं कहि जया पछट चटाट । पाय मज छरनी लरपरइ ॥
 प्रीथीमी थट नदन नमनाहा । दुमर उपर्याः लजे लरा ॥
 चारी पानी घोगामी भंन । मानेउ हरे मया व नीर ॥
 जेकर पुत्र जे पुरनमाला । छरिदै हीर कपडन मया ॥

॥ दोहा ॥

माठी गाठ बांधी चर पुनमम जे ठार ।
 कौतुक फोन मुग्ध पनी छेईंछा बधा नैरार ॥

मध्य—

॥ चौपाई ॥

भीषम पीता छटे मगैठ । नेग मी जुपी न जगत बो ॥
 चीमठि कोटि रथ जोमी पधान । मय नय दाहि मेव छरारा ॥
 टाटर पावर मेत ननाहा । नैर दुग्धम जावेत नारा ॥
 सेत चवर बांधे सब छत्रनू धाड । नीर नमूह रनु नारी नारा ॥

॥ दोहा ॥

भीषम मनसा छम भाष छोपी का टनाट धानी ।
 प्रति दह दटक छेईंछेईं पानी परव नारी ॥

.९.

.९.

.

धत—

॥ चौपाई ॥

वामन भाट जो बेही प्रसोसा । मोह से प्रीया हीन लखीसा ॥
 जं जं सबद नए मय ठाड । बगनिं मिये हारिणी नार ॥
 पुवन पुनी पुनी मौली बुती मा । भीमनिं होपदिह नरनरिं नारा ॥

॥ दोहा ॥

लपनमेनि बदि भावा पानी बधा निरारी ।
 कहत सुनत सुध पार्य पारनि पर नैरारी ॥
 जो धंराठ पय बह मरनिं बडे नानारी ।
 सब परम मुकुनी भाला बह प्रानि हनिं नारा ॥

इति धी हरि चरिते बधा धंराठ पं धनमेनिम नारा ॥ १ ॥ नीर २३ ॥ १ ॥
 रामपुरन जो प्राती देवा सो लीवा मग होन न देरिने । एरीन नर न होरनी नारा ॥ १ ॥ १ ॥
 बांचे हा जोरी ॥ लेखक बं सबसोर माप बरब मोरी पारनू मुरी ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥
 मा लीवा ॥

विषय—महाभारत के विराट् पर्व की कथा का वर्णन ।

रचनाकाल

संवत् चौदह सइ एकासी । लपनसेनी कवि कथा प्रगसी ॥

संख्या ३७१. श्रीकृष्ण चरित्र, रचयिता—लछिमन दास, कागज—देशी, पत्र—१९८, आकार—६, ३/४ × ४ १/२ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८६५ वि०, लिपिकाल—स० १८७६ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदी नाहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री शरस्वती जू नमः ॥ श्री परम गुरुभे नमः ॥ अथ श्री हीरा के जन लछिमन दास कृत श्री कृष्ण चरित्र ॥ छंद ॥ १

बदना कर जोर गनपति करत ही तुम्हरी सही ।
बुद्धि के अधिकार अति मरजादना वेदन कही ॥ १ ॥
सुरसुती की सुमिर कँ फिर मागवँ जोई चही ।
कठ बैठी आनि कँ कछू कृष्ण गूण चाहत कही ॥ २ ॥
पर्म पूरे भागतँ गुर मिलँ "होरालाल" जू ।
"लछन" चही परताप उनकँ जनम लीला गाइ जू ॥ ३ ॥
नंद जू कँ भयी बालक जात अवगति ना लपी ।
जवहिते उर परम आनद सुनी सो तुम सब सपी ॥ ४ ॥
येक दिन ग्रह आपनँ मैं सहजही पलका परी ।
आनि कँ जह जानि कौनँ, सावरो मूरति धरी ॥ ५ ॥
मुकट मोरन पंथ की अति सोस पँ सुकुमार री ।
तिलक केसर चार सोभा दियँ देपी भाल री ॥ ६ ॥
होति भृकुटी कुटिल जवही मुरकि कँ हसि जात है ।
धरी अधरन मोहि दीसँ वीन बैरिन वाजि है ॥ ७ ॥
अज्ञौ अंजन द्रगन मैं भरि सँन नैननि की चलै ।
कहाँ कहाँ सो मन सपी सुन श्रवन मैं मुश्ती हलै ॥ ८ ॥

अत—सुनँ जो मनु लाइ चितु दँ कथा कृष्ण चरित्र की ।
पायहँ पद अभय निर्मल हानि है सत्र की ॥ १२ ॥
हीरालाल प्रताप ही तँ जयामति लछमन कही ।
सोध सुर्जन लीजियोँ तुम दोष ना दीजौ सही ॥
आठद समद (? संवत्) बीतँ वरप पँसठ के विपँ ।
मास सावनि सुदी चउदस वार ती सुकँ लिपँ ॥ ५३ ॥

॥ दोहा ॥

कृष्ण चरित्र लीला कथा पांचर श्रध्याउ ।
"लछनदास" प्रगटी जगत तिनिके नाम बताउ ॥ ५४ ॥
जनम बाल बुद्धि कही लछन दास सबोध ।
पलमोचन अमहरन पंडी मिलनी सोध ॥ ५५ ॥
कृष्ण चरित्र की कथा यह समुक्ती येक विचार ।
लछन पपीलका सिध की किहि विधि पावँ पार ॥ ५६ ॥

॥ भैरवी चढी ॥

प्रि० भयो न मेरो आज लौ सपनिहु कहू चबाय ।
ब्रजनारी बुलियान अक्कैसिक कहिहाँ हाय ॥२६॥
जग जीवन को काम का खोय धोय कुल कान ।
धिक धिक ऐसे जन्म जो होय सभा अपिमान ॥२७॥

श्रंत—राग पट् “आरती”

समा० अद्भुत कौतुक आज भयो री ।
विलसत भेलि कपोल मुदित मन सेजसिधु महं चंद चकोरी ।
मूढु मुसक्यान पान अधरामृत छलकत छबी साँवरी गोरी ।
ललित किशोरी उदै अनूपम कुंज गगन रवि शसि की जोरी ॥५३॥

विषय—कृष्ण की राजपौरिया लीला का वर्णन है ।

विशेष ज्ञातव्य—इसमे अलग अलग कागज चिपका कर एक लवा पत्र बना दिया है जिसके एक ही ओर लिखा गया है ।

संख्या ३७३क. अगद पैज, रचयिता—कवि लाल, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—
६ × ४^१/_४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५४, खडित, रूप—प्राचीन,
पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता—पं०
सिद्ध नारायण जी, ग्राम—डुहरी, पोस्ट—सिरसा, जिला—इलाहाबाद) ।

आदि—.....

...ऐसो वालि तौ न मारी गाल काहे के लवार जती करत लवारी है ।
जतीन.....सकल वोही मेरे द्विग आइकै करत विष्टारी है ।
जानि कै कुपथी इन्है पित्त.....उदाश संग बंधुवर नारी है ।
जातधान सारी सभा वाजत है तारी एकता रक.....बड़े धनुधारी है ।

∴∴

∴∴

∴∴

॥ छंद ॥

बोले विहंसि जुवराजै । सुनु जातुधान समाजै ।
हम सभा मधि पन कोपै । प्रन करत निज पद रोपै ॥
मम चरन जी सठ टारै । फिरै राम हम सिय हारै ॥
सुनि लंकईश उमंडै । फरके सकल भुजदंडै ॥

॥ दंडक ॥

सुमिरि अंगद रामचद पद वंदन करि वीर श्री उदंड शो सभा मे पद रोपे है ।
मंडि महि मंडल अष (?ड) ल अषंड सोर महावीर वड वीर धीर सब कोपे है ।
एहो कवि लाल बोले रावन वचै न वीर प्रवल प्रचड भुज दंड धीर धोपे है ।
काल ते कराले धाय सुभट विशाले धरै आयुध कराले तेहि काले सब तोपे है ॥

श्रंत—

॥ सोरठा ॥

लाजवंत फिरा वीर सुनि कपि वचन ।
जिमि दिनकर रंकैस सौंधु सुता छवि देपि हत ।

॥ छपै ॥

चकृत चवडि चकपकेव जवकि जकजकेव वीर सब ।
भन्ति भीर तजि डगत लंक डगमगत नग्र सब ।

गगन सींधु सकुलित सब सुर दुंदुभी सब्द करि ।
धरत धरनि धरि धीर कोल गुजरनि अरूड अरि ।
कवि लाल वीर बल वालिभुत सभामध्य बल भाषि कै ।
मरदि मान लकेस को चल्थी राम उर राषि कै ॥३२॥

॥ दोहा ॥

पवरि पवरि गढ लक की जहा जात जुवराज ।
तहाँ वास बसि देखि सब भभरि भागु तजि काजु ॥

॥ छंद ॥

कपि आइ उतरे द्वारे । जहाँ महाँ भट बल भारे ॥
सब जानि दुर घट वीरें । आयी महा रन धीरें ॥
रघुवीर के पद बंदें । कपि भालु सकल अनंदें ॥
प्रभु कुशल बुझन लागें । कवि लाल पद अनुरागे ॥

॥ दोहा ॥

सकल कथा गढ लंक की अंगद दिहेव सुनाय ।
रामचंद सुनि हरषे धन्य धन्य तु भाय ॥

॥ इति श्री पोथी अंगद पैज स्मपुरणं ॥

विषय—लका मे जाकर अंगद के दौत्य कार्यों का वर्णन । रचना वीर रस की है ।

संख्या ३७३ख. हनुमत् पंज—रचयिता—कवि लाल, कागज—आधुनिक सफेद,
पत्र—११, आकार— $5\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—
१८१, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—कुँवर ब्रजराज सिंह जी,
स्थान—साहीपुर, पोस्ट—हडिया, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—

॥ दोहा ॥

प्रथम भाल "कविलाल" धरि गुरु पद पकज पंक ।
वरणौ हनुमत पैज वर जात वीर गढ लंक ॥

॥ छप्पै ॥

चरण चंद उदित उदंड खल खड खंड करि ।
अति प्रचड भुज दंड चड आखड डंड धरि ॥
सुड मुड वंदन भुसुड छज्ज लम्बोदर ।
एकदत सुर संत. कत आनंद संत कर ॥
सेवत तोहि "कविलाल" भनि अष्टसिद्धि वरदायकं ।
हनुमत पैज वरना चहौं कि देहु बुद्धि गरणायक ॥

॥ दोहा ॥

फटिक शिला सुदर सुभग छाय रहे भगवान ।
सिया शोच मोचन चहौं बोले कृपा निधान ॥ २ ॥

॥ दडक ॥

बीते धन मास जात निर्मल अकास जातु धान कुल नास हेतु शरद सुहायो है ।
जानकी की सोचें विकल शोच मोचें एक पोचें मेरी शोचना भुलायो है ।

सारंग चढाइवे मारिबे को घायो जन जानि राख्यो भाप्यो "कविलाल" फणिएपति को पठायो है ।
पाए परी राजं चूक परी महाराजं संग सहित समाजं रामचंद्र पँह आयो हैं ॥

अंत—

॥ दोहा ॥

कठिन लंक गढ़ लकपति कठिन निशाचर वीर ।
केहि प्रकार जारेउ नगर कहहु तात रनधीर ॥७६॥

॥ दडक ॥

बोले कर जोरि परे पायन बहोरि नाथ लाघे हम लंक राम नाम की दपट सो ।
वागन उजारयो रक्षकन कंह मारयो अक्षकुमार को संहारयो मातु सीय की तण तेज सो ॥

विषय—हनुमान का लका जाना, लका दहन करना और सीता की सुधि लेकर वापस
आना आदि वर्णन ।

संख्या ३७४. मानवत्तीसी, रचयिता—लाल कवि, पत्र—५, आकार—१० × ४॥
इच्च, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य,
लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—श्री सरस्वती भटार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व०७२,
पु० सं० १२ ।

आदि—॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ मानवत्तीसी ॥ दोहरा ॥

एक समे रति कुंज मे बेटे नंदकिसोर ।
प्यारी विरह विथा विकल कहत ओर की ओर ॥ १ ॥
तिहि ओसर ललिता तबे पठइ सिय समुझाइ ।
प्यारी को ले आउ अब वा विनु कछु न सुहाइ ॥ २ ॥

॥ कवित्त ॥

प्रिय के वचन ललिता जी सो ।

जाचे सुरराजहि न जाचत अनंत जाइ यहै टक टक पेन छाडत तमीहरा ॥
राखे परवाहि एक नीरद के नीरही की स्वाति बूंद है तत रसत ज्यो टटीहरा ॥
छोस निसि सुरति सँभारें रहे कवि लाल गाजें जब मीत तबही पुकार ही हरा ॥
ओरो तो अनेकन विवेक मे प्रवीन लीन मेरे जान रच्यो एक पछी मे पपीहरा ॥ १ ॥

मध्य—पृ० ५-६

प्रिया जू के वचन प्रिय सो ।

तुम तो बनही बन डोलत हो मनु खोलत हो जित ही तितही ।
हम तो यह भे उन आगे लख्यो करती नहिं प्रीति हित ही ।
जिनके चित लोभ लगेई फिरे अघरासव हेत ऋखें नित ही ।
तिनसों निज नेहु कहाँ निबहे सुकरोरि करोर सुहे मितही ॥१६॥

प्रिय के वचन प्रिया जी सो ।

हम तो तुम छाडिन जाँतन ओर कहें निरखे अपने चख सो ।
विचकी सब श्वारि गंवारिनि की सुनि के चित नाँ घरिबो विख सो ।
जिये जानति एन बडे ब्रह्म नेह चढे रसु तो हमही रुख सो ।
परि प्रीति मे प्यारी प्रतीति नहीं निज छाँह हूँते उपजे दुख सो ॥१७॥

अंत—ललिता जू को विनय दंपति सो ।

आखें सियसेनी सुख नेह सरसांनी मन मोज उलहांनी उर आए प्रान अवही ।

दंपति मिले जु ललचाइ के बढाइ मनु एती चतुराई जिय जानी नहीं...हीं ॥
रावरे गुननि की न कांठि छूटे काहू पास छोस नास पाम हम रह्यो करें जबहीं ।
सीखे उपचार गति मति निके पाए पार प्यारे के मनाएँ मनी भाई यहे सबहीं ॥३२॥

॥ दोहा ॥

इहिं विधि मानू मनाइ के दंपति रति रसलीन ।
करत केलि कुजनि ललित कलित काम परवीन ॥ १ ॥

इति श्री कवि लाल कृता मानवत्तीसी समाप्ता ॥

विषय—राधा के मान का वर्णन है ।

संख्या ३७५ सौंदर्य लहरी (टीका), रचयिता—द्विज लाल (?), कागज—देशी,
पत्र—७, आकार—५ $\frac{3}{4}$ × ३ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२,
खण्डित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० अनिरुद्ध नारायण तिवारी,
ग्राम—सकरापार, पोस्ट—रामपुर कारखाना, जिला—गोरखपुर ।

श्रादि—.....त. कतिचिदरुणामेव भवतीम् ।
विरचि प्रेयस्थास्तरल तर शृंगार लहरी ।
गभीराभिर्वाग्भि विदधति सता रजनममी ॥१६॥

॥ दोहा ॥

अरुण रूप कविजन भजे वानी सरस सिंगार ।
कवि हृदि पद्य प्रकाश कौं तरुन सूर अवतार ॥१७॥

॥ सर्वथा ॥

कविता हृदि पद्य प्रकाशन कौं रविभोरन के सम रूप भये ।
जन वदन सो तुम ध्यान धरे प्रति छोस अलौकिक रूप नये ।
जलजातन के सुत की तनया तनरंजन काज सिंगार दये ।
तिनसों युत भारती हे जिनके मुख साधुन के मन रज लये ॥

श्रत—

॥ दोहा ॥

महामाये परब्रह्म त्रिय पंडित कम सोम ।
विधि घरुनी वानी येही तेहि कहत हें सोय ॥१००॥
पुन आगम विद कहत हरि घरुनी रमा बनाय ।
बहोर कहत हर कीनी त्रिया पारवती मन भाय ॥१००॥
श्रम सों पाइए पार कूं महिमा पार न पाय ।
एसे तुम सर्वोपरि स्त्री वे विश्व अमाय ॥१००॥

॥ कवित्त ॥

परब्रह्म की पटराणी पंडित कहत तुम विधि की घरुनी वानी एसो ही कहत हे ।
बहोरौ बुध हरि की घरुनी येही रमारानी सोही तुमरे भी दिन के हेते ही रहत हे ।

विषय—भगवती की स्तुति की गई है ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ के अत्र केवल ७ पत्रे ही रह गए हैं । जिनकी सख्या १७, २३,
२७, ७६, ८४, १०२ और १०४ है ।

संख्या ३७६. पद्मिनी चरित्र (गोरा वादल रणजय), रचयिता—लालचंद (लवधोदय), स्थान—वर्धनपुर (? वर्दवान), कागज—देशी, पत्र—२७, आकार—१३ $\frac{३}{४}$ × ५ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, पारमाण (अनुच्छेप)—१४८५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७०७ वि०, लिपिकाल—मवत् १७५७ वि० (संभवत), प्राप्तिस्थान—आर्यभपा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी ।

आदि—श्री शान्तिनाथ जी ॥ गणेशाय नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥

॥ दुहा ॥

श्री आदीश्वर	प्रथम	जिन	॥ जगपति	ज्योति	स्वरूप	॥
निरभय	पद	वासी	नमुं	॥ अकल	अनत	अनुप ॥ १ ॥
चरण	कमल	चितस्यु	नमु	॥ चौबीसमे	जिण	चद ॥
सुखदाईक	सेवक	भरणा	॥ साचो	श्रुरतरु		चद ॥ २ ॥
श्रु प्रसन	सारद	सामिणी	॥ होज्यो	मात	हजूरि	॥
बुध	दोज्यो	मुजन	वहोत	॥ प्रगट	वचन	पंहर ॥ ३ ॥
गोरा	वादल	अति	गुंशी	॥ श्रुर	सुभट	सिरताज ॥
तास	प्रसाद	थकी	कडं	॥ सती	चरित	सिरताज ॥ ४ ॥
जाता	दाता	ज्ञानधन	॥ ज्ञानराज		गुरराज	॥
गुर	गुण	गोतम	सारिपो	॥ चरित	रचु	सिरताज ॥ ५ ॥
गोरा	वादल	अतिगुंशी	॥ श्रुर	सुभट	सिरताज	॥
चित्रकूट	कौधो	चरित	॥ सामि	धर्म	साधार	॥ ६ ॥
सरस	कथान	वरस	सहित	॥ वीर	श्रुगार	विसेपि ॥
कहिसिडं	कवित	कलोल	सुं	॥ पूरव	वथा	संपेपि ॥ ७ ॥
पदमिणि	पाल्यो	सीलन्नत	॥ वादल	गोरा	वीर	॥
सील	वीर	गावत	सदा	॥ पाद	मिले	घृत वीर ॥ ८ ॥

मध्य—

॥ दुहा ॥

जिडं	जिडं	दासी	नवनवी	। सजि	आई	श्रुगार ॥
देपि	देपि	चित	चमकीयो	। आलम	भोजन	वार ॥ २३ ॥
रूप	अनोपम	रत्न	सम	। उवा	पदमणि	कं माह ॥
वार	वार	विह्वल	थको	। इम	जपं	आलम सार ॥ २४ ॥
एक	नहिं	हम	धरिइसि	। कैसी	हम	पति साह ॥
याकं	एतो	पदमनी	। सी	देपत	उपजं	दाह ॥ २५ ॥
वार	वार	भवकीं	किसुं	। राघव	बोलं	एम ॥
ए	दासी	पदमणि	तणी	। आप	पधारं	केम ॥ २६ ॥
चुप	ह्वं	के	देपौ	चरित	। विचली	मकरो वात ॥
सहिस	दोई	सहेलियां	। रहे	संगि	दिनराति	॥ २७ ॥

अत—तसु श्रुत आग्रह करि सवत सतरं सतोतरे चंद्री धूमिमशनि वारि ॥ नवरस सहित सरस सबध नवो रच्यो रे निज बुधि ने अनुसारि ॥ १४ ॥ श्री जिनमाणि कसूरि प्रगटा वाचक विनय समुद्र तामु सीस वर वप तीजगमं जाणीयरे श्री हर्ष सील उदुइ ॥ १५ ॥

तामु विनय चवद विद्या सागसरे बानी

सरम विलास श्री जगनामी पाठक श्री ग्यान समुद्र जी रे प्ररगचतेग प्रकाश ॥ १६ ॥ साधु सिरोमणि सकल विद्या गुण शोभतारे वाचक श्री ग्यानदास तास प्रसादें सील तणा गुण संयुव्यारे लवधोदय हित काज ॥ १७ ॥ सामि धरम ने सीलतणां मुण सामल्यारे पुगं मन की आस ॥ उछो अधिको कहिउ कवि चातुरी रे । मिछा दुकद तास ॥ १८ ॥

इति श्री पद्मनि चरित्र ढालभाप कधे श्री गोरा वादल रिणं जय प्रावणो नाम तुतीय पड समाप्तौ समाप्तामिद ॥ नवधिने वलि अष्ट महासिधि सप जंरं ॥ दुरमिटं दुपदद ॥ लवधि— उदं कहै पुत्र कलत्र सुष सपदारे ॥ सोल सफल शुषकद ॥१६॥ दुहा सोरठा—सोल अधिक सं आठ ॥ कवित दुहा गाथा मिल्या । सुणो सगुर मुष पाठ । ढाल सरस गुणपाल ॥२०॥

सुणो सगुर मुष पाठ । ढाल सरस गुणपाल ॥२०॥ सवत १७५७ । वरपे मीती ओसोज वदि ७ ॥ सोमे लपोलत । दधन पुर नगरे । वरार गढे । मुष्टदसे ॥ श्री पुज्य श्री कल्याण सागर सुरिजी तत् शिष्य श्री ऋषि श्री शिवचद जी तत् शिष्य ऋषि श्री छीतरजी तत् शिष्य ऋषि पडगा वाचनास्य ॥ श्री पुज्य श्री भीमसागर सुरि राक्षी रचुदता ॥ अग्नि पुष्टी कटि ग्रीवा । उर्ध्वदिष्टिरधौमुष । कटि न लपते शारद्व ॥ जतनेन परि पालयती ॥१॥ शुभ भूयात ॥ कल्याणमस्तु ॥ श्री रस्तु ॥ ठावकुर जसंघ जी राजे ॥

विषय—इस ग्रथ मे पद्मिनी की कथा का वर्णन है । जायसी कृत 'पद्मवत' तथा जटमल कृत "गोरा वादल री वात" मे भी पद्मिनी की कथा वर्णित है ।

१ जायसी कृत पद्मवत मे रत्नसेन हीरामल द्वारा पद्मिनी का रूपलावण्य सुनकर भ्रंशित होता है और जटमल भाटो द्वारा पद्मिनी का रूप लावण्य सुनाकर रत्नसेन को भ्रंशित करता है । परंतु प्रस्तुत ग्रथ मे इसका तीसरा ही कारण बतलाया गया है । रत्नसेन अपनी अनक रानियों मे से पटरानी परभावती पर विशेष प्रेम रखता था । एक दिन उस रानी ने भोजन बनाया जो राजा को अप्रिय लगा, इसी पर उसने ताना दिया कि यदि मेरा बनाया भोजन अस्वाद्दु होता है तो आप नयी पद्मिनी बयो नही लाते । इसी पर राजा क्रोधित होकर उठ गया और पद्मिनी की खोज मे समुद्र किनारे गया । वहाँ एक आँधल मिला जिसने उसे सिंघल द्वीप पहुँचा दिया । जटमल ने यही कथा दूसरे प्रकार से कही है । उसमे योगी चित्तौर मे ही मिलता है जो अपने योग बल से राजा को सिंघल द्वीप पहुँचा देता है । इसी प्रकार अन्य घटनाओं मे भी अंतर है ।

संख्या ३७७क. भागवत, रचयिता—जनलालच, कागज—देशी, पत्र—३५६, आकार—८ १/२ × ५ १/२. इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०५०१, अपूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तिस्थान—श्री मुन्नी स्वर्णकार, ग्राम—पाली, पो०—बहादुर गज, जिला—गाजीपुर ।

आदि—.....

भाजी पाय आथर हो जा ॥

राजा वंश के दीन्हे खाश छोडी अभीमान ॥ कही शुखदेव भावशे भागवत कथा पुरान ॥

पलटी राजा कीन्ह तव शोवा	चरन गहै शामी सुखदेवा
बोले रीखे भए सब काजा	शमाधान भए वंशा राजा
मैं हरी कथा शुनावौ तोही	जेही शनत पाप खडन होही
जीन्ह हरी कवरो दल सघारा	पडव दलकर भए कडहारा
जननी गर्भ हम होते जहीआ	जीन्ह हरी जन्म उधारीन्ही तहीआ
तेही गोपाल के कथा शुनावौ	बदौ चरन वार जनी लावौ
आदी अंत तुह जानहु	कीशनु चरन कर भव
"जान लालच" ग्रीपआ	.. गावही रीखी शुखदेव

अंत—जो मैं कहेउ शो करहु उपाई

...रूप अवतेजेउ गोपाला

...अपने जनी लावहु धोखा

भीतर काठ लै धरहु भुझारा

वचन हमारी सुनहु मन लाई

बोध रूप अब जन्म हमारा

दउरा एक उठावहु चोखा

तहवा लावहु दर्ज केवारा

छव माश मती खोलै कोई वीशु चरीत देखहु कश होई
 भगती भाव करहु मन लाई तुम कह परशन होव सब ठाई ।
 अपने मन मह करहु हुलाशा हम नीज आही परशोतीम वाशा
 कलजुग केर भइल पंशारा बौध रूप अब जन्म हमारा
 —अपूर्णा

विषय—भागवत पुराण के दशम स्कंध का पद्यानुवाद ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अपूर्णा है । प्रथम चार पत्रे लुप्त है । शेष तीन सौ उनसठ पत्रे उपलब्ध है । ग्रथ के आदि अंतर अंत के अग्र नष्ट हो गए है ।

संख्या ३७७७। भागवत, रचयिता—जनलालच, कागज—देशी, पत्र—३८, आकार— $६\frac{१}{२} \times ६\frac{१}{२}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—४६४, खंडित रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—वैथी, लिपिकाल—संवत् १८८४ वि०, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (दाता—प० शिवपूजन द्विवेदी, ग्राम—मवकापुर, पो०—मरहद, जिला—गागीपुर) ।

आदि—श्री गणेश जी सहाइ श्री शिरोशती जी सहाइ श्री हनोमान जी सहाइ श्री सकल देवतासहाइ श्री पोथी भागवत ।

॥ चौपाई ॥

प्रथम पीतामह खीस्टी उपजाई । तुह परसाद गननाथ गोसाइ ।
 शकर सुमीरी दडवत कीन्हा । असम चढ़ाए चीतवनी कीन्हा ।
 जटा मकुट सीव सदा अवीनासी । तुम्ह परसाद पाएउ अवीनासी ।
 उतपती प्रलै तुम्है ते होइ । गढे सवारे हरीहर सोइ ।

॥ दोहा ॥

तीहु लोक कै ठाकुर जेही वीधी गोकुल आव ।
 चरन सरन जन लालच गुन गोवींद कै गाव ।

॥ दोहा ॥

अंबीत कथा भागवत जीन्ह प्रगटी ससार ।
 चरन सरन जन लालच कइसै भौ वीसतार ।

॥ चौपाई ॥

सतजुग त्राता दवापर गएऊ । कलीजुग कै प्रवेस कछु भएऊ ।
 तेही की आदी पराछीत राऊ । प्रीथीमी पावन देखी डेराऊ ।
 तीन्ह कली बहुत धरम उपराजा । कवही के गए अखेटक राजा ।
 वीखा लागु तह अंबु न पावा । रीखी अंगीरा के आसरम जावा ।

अत—

॥ दोहा ॥

इहै कथा जन लालच कहै रीखै समुभाए ।
 कोटी जनम कै हत्या कहत सुनत छै जाए ।

इती श्री हरी चरीत्रे दशम कंधे श्री भागवते महा पुराने जमलए आरजनु विमोछमो नाम दशमो अध्याय १० जो देखा सो लीखा मम दोस न दीयते संमत १८८४ मीती माघ सुदी १० रोज शनीचर... ।

विषय—भागवत पुराण दशम स्कंध का पद्यानुवाद ।

संख्या ३७८ देवकी चरित्र, रचयिता—बाबा लालसा राम (सभवत), स्थान—
डडैला (जिला—गोरखपुर), कागज—देशी, पत्र—४, आकार—१० $\frac{३}{४}$ × ४ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति
(प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुपट्टु)—७४, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी
प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (ग्रथदाता—श्री पुजारी गोरख नाथ
बाबा, दृगपुरा कुटी, जिला—गोरखपुर) ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ श्री देवकी चरित्र ॥

देवकी हुती देवक कं वारी । अति सुबुधि सुदरी कुमारी ॥
प्रभु कर गुन निसुवासर गावही । सति सुलछनी मातहि भावहि ॥
जब सो भई सो जोग सअानी । राजा पास गई चली रानी ।
करि विचार आपुस मह दोड । बोली कं लोग कुटुव सभ कोड ॥
वसुदेव से करि दीन वीआहा । भयो मंगलचार उछाहा ॥
कंस असुर देवकी कर भाई । जेई पीतही वेरी पहिराई ॥
तेई जब नभवानी सुनी पावा । तव देवकी कं मारं धावा ॥

॥ दोहा ॥

श्रीआ जनि कं वसुदेव कहो ताहि समुझाइ ।

लघु भगीनी जो मारीऐ ताकर पाप न जाइ ॥१८१॥

००:

००:

००:

अंत—लाए पुत्रीहि के दुत जाई । देवी कंस नृप रहो ठकाई ॥
होतेउ लीषा वार...रा । जो बालक होत शत्रु हमारा ॥
कह कारन यह जनमी वारी । सो मैं पूछव...री ॥
अरती धोबी वेगि बोलाई । पाटा पर पटका बहु जाई ॥
पुनी पाछे मैं करव वीचारा । जेहि विधि जाइहि वैंरी मारा ॥
दुतन्ह धोबी वेगी बोलावा । पाटा पर पुत्रीहि पटकावा ॥
तैसेही वीजुरी होइ सो वारी । चमकि घोबी कं वाह उपारी ॥

॥ दोहा ॥

ठनकि कहेसी परचारी कं अरे मूढ ते कंस ।

अरि तो रहै गोकुल मह जे तोर करी वीधस ॥

एह कहिके पुनी सरग लीधारी । कंस के जीव उपजा दुख भारी ॥
जेहि कारन मैं भंनेन्ह मारा । सो तौ वाचे दुस्ट हमारा ॥
नारद मुनि कंस वेगि बोलावा । ताकह सब वीतत सुनावा ॥
तीन्ह तब बात कही परचारी । केहि कारन तुम पुत्री मारी ॥
वैंरी तोरे है गोकुल माही । जेही से तुम्ह वाचवहु नाही ॥
सुनी के कंस बहुत डर पाई । पहिले पूतना नारी पठाई ॥
तेइ पापीनी कुच मह/वीषि लायो । नंद भवन गइ हरिषि... ॥

००:

००:

००:

—अपूर्ण

विषय—भगवान् श्रीकृष्ण की माता देवकी के चरित्र का वर्णन किया गया है । इस चरित्र की एक विशेषता यह है कि जब श्रीकृष्ण (आठवाँ गर्भ) गर्भ में थे तो एक दिन देवकी जमुना स्नान करने गईं । कंस द्वारा सात पुत्रों के नष्ट हो जाने के कारण और आठवें गर्भ के भी नष्ट होने की आशका से वह रोने लगी । जमुना के उस पार यशोदा भी उसी समय स्नान कर रही थीं । देवकी का विलाप सुनकर वह उसके पास चली आई और रोने का कारण पूछा । देवकी ने अपना सारा

वृत्तांत उममे कह दिया । यशोदा के भी गर्भ था । दोनों ने यह अनुमान लगा लिया कि उनके प्रभव एक ही साथ होंगे । अतः यशोदा ने अपने गिशु देवकी को देने और देवकी के गिशु को स्वयं लेने का वचन दिया जिसमें देवकी के गिशु की प्राण रक्षा हो जाय । यशोदा को इसमें जो बलिदान करना पड़ा उसका कोई उदाहरण नहीं ।

अतः मे यही तय हुआ । आगे की कथा भागवत के ही अनुसार है ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अपूर्ण है । अतः के पत्रे नहीं है । केवल ४ पत्रे उपलब्ध हुए हैं । रचनाकाल और लिपिकाल भी अज्ञात है ।

संख्या ३७६. कवित्त मवैया सग्रह, रचयिता—लालू भट्ट, उपनाम “प्रवीन”, (स्थान—काँकरोली), पत्र—१४, आकार—६ × ५। डच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुप्यु) —३३६, पूर्ण, रूप—माधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० ७७, पृ० म० ४ ।

आदि— ॥ श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ॥

॥ कवित्त ॥

चंद्रिका की लटक चटक लाल चीरा की सुछाजत छवीलो छोगा आछी छवि छाई है ।
नैना की नचनि हाइ भाइ की रचनि तऊ मानते वचनि एसी अति चतुराई है ।
हरे मन हरे वागे भूखन जराइन के लाल गिरिधारी जू की ललित लुनाई है ।
सरस सुहाई मन भाई है ‘प्रवीन’ नोखी आजु की निकाई पे निकाईओ बिकाई है ॥ १ ॥

मध्य—पृ० १६

आयो धनधोर मोर सोर कुंज कुंजनि मे विलसे त्रिविध पौन गति तिहिं बार की ।
ललित लतानि लपटाने है प्रवीन अलि भूमि भई भोग जोग विपिन बिहार की ॥
रंगरस बाहे दोऊ कोतिग करत ठाढे गरे धरि बांह छांह कदंब के डार की ।
मोहि रह्यो मेह नेह घूंदनि विराजे ज्यो ज्यो मुरली में बाजे धुनि मधुर मलार की ॥ ५६ ॥

अंत—

॥ चरन गुप्त बंध ॥

आजु बने सिरपर धरे सुभग सोसनी पाग ।

वागो मनु नूतन सुघन भटत हृदय सराग ।-

कुमुद मुदित रिक्कवार दृग चित चकोर आनंद ।

देखन चलि चंचल नयनि गिरिधर आनन चंद ॥ २५ ॥

विषय—श्रीकृष्ण भक्ति और वल्लभाचार्य तथा दैन्य विषयक कवित्त सबैयो का सग्रह ।

विशेष ज्ञातव्य—इस पुस्तक के मध्य के (पृ० स० ६-१०-११) तीन पत्रे खाली हैं । पृ० स० १२ नहीं है । सं० ३१ से ४० तब के कवित्त भी नहीं हैं । पृष्ठ २७ पर चरण गुप्त बंध, कामधेनु मवैया और कमलबध आदि चित्रकाव्य भी दिया गया है ।

संख्या ३८०. बहला कथा, रचयिता—लोना (?), कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—६.३ × ३.९, डच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुप्यु) —१२४, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १७०३ वि०, प्राप्तस्थान—प० बटे-श्वर तिवारी, ग्राम—त्रमुका, पो०—नवली, जिला—गाजीपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ।

सरमे ज्यागते भिष्म वृद्ध कुरु पितामह भयज्ञा राज युधिष्ठिर पुष्ट

लजजा कहुदेव बाहुला क समादः ॥

जहि सुन ले सब हरइ विष्यादा ॥

॥ भिषम उवाच ॥

एकवित्त जौ पुछेसि, मोहि । धर्मवत कही मइ तोहि ।
जेकर परसे होइ के दारा । बहुरा सुनले सेइ भुअरा ।
जे फल गंगा कँले असनान । फपिला दिहे विप्र के दान ।
तवहुन बहुला होइ समना । सब बन इतिहास पुरान ।
मथुरा नगर सोहावन नदी जमुना के प्लरा ।
वन अठारह रहा वसा चद्रउ जवर वीए ।
कुरी छतीसउ करइ नेवासा । वासि वर्ण करइ सुख वासा ।
वनिअ लोग नग समाइ । चरि लाख एक वस्तु विकाइ ।

अंत—

॥ व्याघ्रउवाच ॥

धन माता धन पि (ता ?) तोहारा । धन सदेवस जोहि लिहेहु अरवतारा ।
धन से भुमि जाहि कर वासा । धन से राजा जहु करहु नेवासा ।
गइहु एक आइहु भं दुना । गयउ पाप मोर तोहरे पुना ।
तवहि मुक्त माघ देउ भएउ । चढिय वेवान सर्ग पुर गउ ।
बहुना पलटि वछरुआ संग आइ । सगरे नग जे करे वधाइ ।
बहुला सत्य सुनेइ जे ताकर पातष जाइ ।
नारी पीव अछ सदा होइ । जौ ब्रत कर मन लोइ ।

इति श्री बहुला कथा समाप्त । सुभ भस्तु सवत् १७०३ ॥ समए भाद्र पदे दसम्यां
तिथौ शनिवासरे ॥

विषय—व्याघ्र बहुला कथा का पद्यात्मक वर्णन ।

सख्या ३८१. अठारह नाते को चोढाल्यो रचयिता—लोहट (जैन), कागज—देशी,
पत्र—७, आकार—५ $\frac{1}{2}$ × ४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६५,
पूरण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय नागरीप्रचारिणी सभा,
(याज्ञिक सग्रह), काशी ।

आदि—ताकौ चोढाल्लौ लिष्यते ॥

॥ राग सोरठ ॥

मान बल बपाया जी ॥ ऊचं कुलि अया जी ॥
गुरु ग्यान लह्या विनु सजम को लहै जी ॥
ते नाता लागा जी अदूषण लागा जी ॥
सो नाता अवारा व्योरी वरराऊ जी ॥ १ ॥
मुअरा पुर वासी जी बेस्या दुषरासी जी ॥
तिहि कै गर्ल वासी विलासी ह्वै लया जी ॥
जुग जोड़ जाया जी ॥ जल मारु बहाया जी ॥
आया सूरीपुर पाया सेठ नै जी ॥ २ ॥

मध्य—

काम महा ॥ कामा करी षाडे परचौ जी ॥ रावण राज विरास ॥
हरिहर इद बिटंबिया जी ॥ कीचक ह्वौ वनास ॥ २ ॥
कामण ॥ सेव सुदरण सिव गयो जी ॥ सील तरण परसादि ॥
षोडश सुदरि उद्धरी जी ॥ नारद पाई छं वादि ॥ ३ ॥

कामण ॥ इण विधि नरनारी घणां जी ॥ जिनकी अंत न पार ॥
सोलवंत जे उद्धरया जी ॥ आन कल्या ससार ॥ ४ ॥

अंत—

रेशणी० ॥ घोर वीतप आधरचौ जी ॥ पट रिनु वारामस ॥
सहै परीस्या बीस ह्वै जी ॥ परिगह रहत उदास ॥ ८ ॥
रेशणी० ॥ थलतद्र कै सगतिस्वा जी ॥ लीयौ संजम लार ॥
तिम ए तीनी उद्धरया जी ॥ कीनी पाप प्रहार ॥ ९ ॥
रेशणी० ॥ किभे कलव पूरण किया जी ॥ पायो मोक्ष सुथान ॥
चौढाल्यौ नात तरणौ जी ॥ "लोहट" किथी वषान ॥ १० ॥

रेशणी ॥ १ ॥ इति श्री अठारानाता कौ चौढाल्यौ सपूर्ण ॥

विषय—जैन धर्म विषयक ग्रथ ।

सख्या ३८२. दानलीला, रचयिता—वशीधर, कागज—देशी, पत्र—७, आकार—
७ १/२ × ६ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०५, पूर्ण, रूप—नया,
पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक
संग्रह), काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ दान लीला लिप्यते ॥

द्वारकेसपद कपिल "वंशीधर" धरि ध्यान ॥
श्री वल्लभ जिह हेत तै करै भक्ति कौ दान ॥ १ ॥
श्री गोवर्द्धन सिषर पर श्री वृजराज कुमार ॥
वृज जन संग अनंद सौ लीला करत अपार ॥ २ ॥
तामै कीरति नंदिनी तासौ परम सनेह ॥
सदा वसत वृंदा विपिन एक प्राण द्वै देह ॥ ३ ॥
करी दान लीला विविध वृज भक्तन के हेत ॥
वंसी जन स गाइकै जन्म सुफल कर लेत ॥ ४ ॥

श्री ठाकुर जी के वचन सषा सौं ॥

अहो सुवल सीदाम सबै सषा सुनौ एक वात ॥
नित नित वृज की ग्वालिनी दान चुरायौ जात ॥ ५ ॥
सावधान रहियौ सबै रोकि वैठियौ गैल ॥
जबै कहा है जायगी ग्वाल छबीली छैल ॥ ६ ॥
॥ भक्त वावा भक्त सौ दोहा ॥
वरसाने ते ग्वालिनी चली सकल उहि गैल ॥
जहा साकरी पोरि मै बैठे गिरधर छैल ॥ ७ ॥

मध्य—श्री ठाकुर जी कौ वचन ग्वालिनी सौं

॥ दोहा ॥

घूघट मुष तै डारि कै हसि हसि बोलत बोल ॥
अधर सदर दरसाय कै मोकी लीजै मोल ॥ १५ ॥

॥ सबैया ॥

कंचन केसरि पौरि करी पर तो तन की समता नहि पावै ॥
तेरी य चाल समान है गजराज भराल ती हासी आवै ॥

तेरेई लोचन हूँ दुप भोचन पजन कजन की चित लावँ ॥
तो मुप चद निहारि कँ प्यारी चद लजाय कँ गात छिपावँ ॥१६॥

अत—

॥ सर्वया ॥

या गोरस कौ रस लीजँ अवं गिरधारी जू छाड़िये दान कौ दायी ॥
आगे निज कुज में धारियँ जहाँ सब वातन कौ सुप पाओ ॥
लोक की रीति है और कछू तिनतँ यह प्रीति की रीति छिपाओ ॥
यौ मिस दान कँ याही समँ नित कुज में आय कँ ताप मिटाओ ॥३२॥

॥ दोहा ॥

प्यारी गोरस दान दँ भँटे गिरधर पीय ॥
यह लीला नित प्रीति सौँ वशीधर कौ जीय ॥३३॥

इति श्री दान लीला संपूर्ण ॥

विषय—इसमे कृष्ण का गोपियो से गोरस दान माँगने का वरण है ।

सख्या ३८३ अशौच विचार भाषा तथा मुडन नखच्छेद निर्णय, रचयिता—वत्साभट,
कागज—देशी, पृष्ठ—१५, आकार—८ × ४^३/_४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण
(अनुष्टुप्)—१८३, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८७०,
प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० ६६, पु० स० ६११ ।

आदि—॥श्री कृष्णाय नम ॥ अशौच विचार ताहा तीन महीना ताई गर्भ उदर मे ते
निकसे जो गर्भपात कहावे । चौथे महीना ते छठे मास ताई ताप कहावे । सातवें मास ते प्रसव
कहावे । पड़ेले तीन महीना पात भए सात पीढी भीतर गोत्रीन को स्नान ते शुद्धि ॥ माता को
तीन दिन सूतक ॥

मध्य—पृ० ८

नाल छेद पाछे जो मरे तो सपूर्ण वृद्ध सूतक होइ । दश दिन ते पाछें नामकरण ते पहले
बालक मरे तो भूमि मध्ये खनि गाडे । अग्न न देई । ज्ञाति सय स्नान ते शुद्ध नामकरण ते पाछे
दंत जन्म ते पहले बालक मरे तो दाह अथवा खनन करे । जो दाह करे तो ज्ञान को एक रात्रि सूतक
जो खनन करे तो स्नान ते शुद्धि । सूतक नहीं । स्मशान गमन करे न करे इछा दंत जनन ते पाछें
तीनि वर्ष पर्यंत जो मुडन कीयो होइ तो दाह करे वा खनन करे, खनन करे तो एक दिन दाह करे तो
तीनि दिन सूतक होइ ।

अंत—आत्मनो मुडन चैव वर्षे वर्षार्धमेव चेति वचनात् । ओर व्ययं केश छेदन न करे
वृथा छिन्नतिय. केशान तथाह ब्रह्म घातिन मिति माहाभारते दान धर्म वचनात् । काम्य विषय
मिद मिति निर्णय सि० मुडनं पिडदानच प्रेत कर्मच सर्वश. । न जीवत्पितृक. कुर्यात् गुविणो
पति रेव च । यह दक्ष को वचन है । इति वयन निर्णय । इति (त्रिगृह) तिथरा गोवर्द्धन भट्टा-
त्मज वत्साभट कृतो निर्णय । सूतक विद्रीय मुडन वद्धिम ॥ शुभ भवतु ॥

विषय—धर्मशास्त्रानुसार सूतक, पिड, मुडन और नखच्छेद आदि का निर्णय । इस
निर्णय का मूल आधार निर्भयराभ भट्ट कृत 'अशौच निर्णय' ग्रंथ है जो सस्कृत में है ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ में आगे ब्रजराय जी और गंगा बेटा जी के भ.गडे के घाल लिखे हैं ।

सख्या ३८४. विरह अग, रचयिता—वाजिद, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—५^३/_४ ×
४ इंच, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—
स० १८५६ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), नागरीप्रचारिणी सभा,
काशी ।

आदि—अथ वाजीद कृत विरह अंग वर्णन ॥

॥ अरिल्ल ॥

सूर कमल वाजीदनु सुपनं में लहें ।
जरेँ छाँस अरु रँनि कराही ते लहे ।
अपनी ही सब पोट दोस कहा रामु है ।
हरिहो नीच उच सौं वध्यो कहीं किहि कामु है ॥ १ ॥
वाजीद विरह वेहद कहीं कहा तुम्ह सौं ।
सर कमान की प्रीति करी पिय मुम्हसी ॥
पहलं अपनी ओर तीर लौं तांनई ।
हरिहां पाछं डारत दूरि दुनी सब जानई ॥ २ ॥

अंत—पथर पं की रेप रँनि दन धोवरे ।
तेरे हाथी छाले परे कै सीस गिहि रोवरे ।
जाको जोन सुभाव क जाईगा जीवसौ ।
हरिहां वाजीद नीम न मीठी होइ क सोधि गुर धीव सौ ॥ १७ ॥
दो फल अजब अनूप क लाडू जहर के ।
ये ते नर बोधे स्वारथ कहि कहुर के ।
अम्रत फल रढैगा वाजीद राढ फौ ॥
हरिहा कुत्ते का वही सुभाव गहैगा हाड कौं ॥ १८ ॥

द्विषय—ज्ञानोपदेश वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—अथ में ममन्त १८ अरिल्ल छद है । समाप्त की पुष्पिका नहीं दी गई है । रचनाकाल ज्ञात नहीं । लिपिकाल महाराज जसवत सिंह के “भापा भूपण” के आधार पर स० १८५६ है । दोनों अथ एक ही हस्तलेख में है ।

सख्या ३८५. कवितावली भक्त विलास, रचयिता—वासदेव शुक्ल, स्थान—मिठने पुर (मुलतानपुर, अवध), कागज—देशी, पत्र—२६, आकार—९ × ५ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुच्छुप्)—६१८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १९५२ वि०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर दीपनारायण सिंह, ग्राम—महमूदपुर, पो०—सेमरी महमूदपुर, जिला—मुलतानपुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः

अस्तुति गणेश जी की लिप्यते

बुद्धि के सदन गज वदन रदन एक भाल मे विभूति उर मोतिन को माल है ॥
जग को कृपाल बाल गौरी को गणेश सम जाहि जन जांचं ताहि देत करि ख्याल है ॥
दोन पं दयाल देव होत है तो बार बार कलि को कराल दुप काटिबे को काल है ॥
ऐसे जाल माल ताल तन को तयार राख्यो कहै “वासदेव” मेरो याही तो सवाल है ॥ १ ॥

॥ अस्तुति शिदजी की ॥

मुडन को भाल चंद्रभाल वो कपाल कर पेन्हे गजपाल अरु व्याल लसै अंग जू ॥
गरमे गरल तन शोभित विभूति भूरि करे दुप दूरि जाहि जटा वसे गंग जू ॥
भूतप्रेत जोगनी जमात मुख जीव जाको कहै “वामुदेव” द्विज काली अरधङ्ग जू ॥
चांडर चवात दांत बेल के दवाये पात खात है धतूर घोंटि घोटि पियं भङ्ग जू ॥ २ ॥

अंत—अथ पावस ऋतु वर्णन

धुरवान धारे धहरात धन धोरि आयो दामिनि 'दमकि नभ चटकि चटा रहे ॥
 तारे तर कारे कारे कलक उछाहू कीनो भारे भारे बुद लं कपोलन पै धारे ॥
 छहर छहर छटकि वारि परत उरोजन पं "वासदेव" आये वंरी पावस हमारे ॥
 मोरन सम्हारं शोर अधिक उचारं चहु झिल्ली भनकारं निसि दादुर पुकारे ॥७१॥
 वीप है बलाती धरि पापी को फसाती कोऊ शोर को मचाती यह मोरी मोर घाती ॥
 सुनिकं सकाती सूनी सेज न सोहाती सखि भागि जाती आगन नभ दामिनि दमकाती ॥
 धमकाती धनपीरु चात्रिक चकाती चहुं दासदेव कुहुकहर कोकिला सुनाती ॥
 गिरि जाती छाती बचि जाती यह पावस मे दावस दरेरे दोऊ मन मदमाती ॥७२॥

इति

अथ कवितावली भक्त विलास सम्पूर्णं शुभम्

हस्ताक्षर दाऊ रजवन वार ग्राम सरैया तारीख ३१ अक्टूबर स० १८९५

विषय—देवताओं की स्तुति की गई है ।

सख्या ३८६. युगल सुधा या कृष्ण सुधा, रचयिता—विद्यारण्य तीर्थ, "देव", निवास-
 स्थान—काशी (सम्भवत), कागज—आधुनिक सफेद, पत्र—१४५, आकार— $5\frac{3}{4} \times 9\frac{1}{2}$
 इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—५, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४०५, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य,
 लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८९८ वि०, लिपिकाल—स० १८९८ वि०, प्राप्तिस्थान—
 प० तामेश्वर प्रसाद मिश्र, ग्राम—डाँगीपार, पो०—भँसा बाजार, जिला—गोरखपुर ।

आदि—.....

.....कहि गिरिहि पुजायो ॥२॥

धूप दीप नैवेद्य विविध विधि मंगल ध्वज फहरायो ।

गिरि सरूप आपुह बनि बैठो सष मृदग वजायो ॥३॥

इद्र कोपि मेघन से बोले वोरहु वार दिठायो ।

"देव" देवकी अग्यां सुनि कं मेघन हू सिर नायो ॥४३१॥

धन गरजि गरजि बरसत हैं । मनहु ब्रजहि गरसत हैं ॥

चहुं विसि चपला चम चम चमकोहि । मूसरधार परत महि धमकहि ॥

भइ अधियारी अपने हाथ पसारे नहि दरसत हैं ॥१॥

बछरू माय गोप सब कांपहि । एक एक तन को टापहि ।

ब्राहि ब्राहि कहि हरिमुष देषहि छाया को तरसत हैं ॥२॥

प्रवल इद्र कोदड विसारा । तब प्रभु नष पर गिरिवर धारा ॥

छप्पन पहर चरिसी धन भागे इद्र नाक धरसत हैं ॥३॥

प्रभु त्रिभुवन पति मैं हौं जडमति । सब अपराध छमहु मेरे अति ॥

"देव" देव हँसि सकट काटे इंद्रहु पद "प्रसंत" ॥४॥३२॥

शत—

॥ रेखता ॥

दिल सो गई न सेषी तौ मूंड क्या मुडाया ।

हैवानही बना है इनसान क्या कहाया ॥१॥

कंठी गले मो बाँधी छापा तिलक लगाया ।

यह तौ सभी नकल है इनका असल न पाया ॥२॥

सोहवत मिली न उसकी जिसने असल कमाया ।
सोहवत मिली चटोरी अथवा रतन गंवाया ॥ ३ ॥
तू सोच बात ऐसी को तू कहीं सो आया ।
क्यों कर जहाँ अजूवा किम देव ने बनाया ॥३००॥

॥ वसंत ॥

मंगल नाम रूप जग मंगल गुनगान मंगल धाम ।
मंगल चरित साधु जन मंगल जगहित कारक पूरन काम ॥
मंगल श्री वसुदेव देवकी नद जसोदा गोकुल ग्राम ।
मंगल जमुना मंगल हू के मंगल सुदर स्यामा स्याम ॥३०१॥

॥ होरी ॥

जा दिन वजत बधाई । (श्री राम जनम की ।)
ता दिन कृष्ण सुधा पूरन भइ संतन की प्रभुताई ॥ १ ॥

८ ६ ८१

संवत आठ अंक अष्टादश ॥१८६८॥ वार परो बुध आई ।
राम स्याम मे भेद नहीं कछु असमति गुरुन्ह सिपाई ॥ १ ॥
श्री मत् काशिराज के प्यारे मान वृद्धि अति पाई ।
बाबू राम प्रसन्न सिंह के यह रुचि हेतु बनाई ॥ ३ ॥
जो रस कहत शेष श्रुति सारद बडदे बहु सकुचाई ।
सो रस ढीठ होइ क कहनो यह केवल बन राई ॥ ४ ॥ ३०२ ॥

इति विद्यारण्य तीर्थ कृता युगल सुध ॥ छ ॥ इद पुस्तक लिखित हनुमत्पुत्रेण वनवारि
त्रिपाठिना रामनगरे सम्बत् ॥१८६८॥ माघ धवल पौर्णमास्याम् ॥

विषय—राधा कृष्ण की लीलाओं का वर्णन ।

रचनाकाल

जा दिन वजत बधाइ (श्री राम जनम की) ॥
ता दिन "कृष्ण सुधा" पूरन भइ संतन की प्रभुताई ॥ १ ॥

८ ६ ८१

संवत आठ अंक अष्टादश ॥१८६८॥ वार परो बुध आई ।
राम स्याम मे भेद नहीं कछु असमति गुरुन्ह सिपाई ॥ २ ॥

विशेष ज्ञातव्य—आरभ के २० पत्रे नष्ट हो गए हैं । रचनाकाल और लिपिकाल एक ही सबत् १८६८ है ।

सख्या ३८७. भाषा भक्त चद्रिका, रचयिता—विश्वनाथ सिंह, कागज—देशी, पत्र—
६, आकार—६ ३/४ × ६ ३/४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६,
खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८६४ वि०, लिपिकाल—
स० १९०५ वि०, प्राप्तिस्थान—ददन सदन, पोस्ट—अमेठी (ई० आई० आर), जिला—सुलतान-
पुर (अवध) ।

आदि;—.....अब जोरन है ।

नितभेदत अदपंतरित है यक आस गहे तन प्रान रहे ।

करनासम नैननि नीर बहे ॥६४॥

बहु सोच बढ़े तब जाँहि चली । वनभामा विलोकहि कुंजगली ।
फिर हर्ष विषाद दोऊ उपजे । सब पीछिल प्यालहि को जु भजे ॥६५॥

॥ कुडलिया ॥

फागुन मास लगै जबै हरि बिनु कष्टु न सुहाइ ।
काँम मनो धनुवाँन गहि बधत विरहिनी आइ ।
बधत विरहिनी आइ और जग सुष उपराजन ।
हँसि हँसि दै दै गारि नारि नर जोरि समाजन ॥
करत गाँन सविधानँ आँन वरनै बहु कागुन ।
हमहि छोडि सब लोग सुषी दरसै सुभ फांगुन ॥६६॥

॥ त्रिसंगी ॥

लागत मधुमासै काँम जु आसै रहत उदासै सब गोपी ।
तिय पतिहि निहारै करत सिंगारै भाग सवारै दुति बोपी ।
फूली वन बेली सुभग चमेली लपि अलबेली सुष सरसै ।
हरि हँ न सहायक इत रति नायक बहु दुषदायक सर बरसै ॥६७॥

अत—

॥ सुवरन ॥

उन कीन्हो तपै बहु जन्मै चही । समता कौ लहै मुनि देवो नहीं ।
मन मेरे बसै नहि नेको जुदाँ । वृजवासी सब प्रिय मोको सदाँ ॥२६॥

॥ दोहा ॥

उद्धव सुनि प्रभु मुष वचन परे प्रेम के पंथ ।
कृष्ण कृपाते ह्वै गयो भक्त चंद्रिका ग्रंथ ॥२७॥
वेद ४ अंक ६ वसु ८ इंद्रु १ के कीलक अब्द विचार ।
धन के रवि सित पक्ष में काँम तिथी ससिवार ॥२८॥

॥ रूपमाला ॥

यहि ग्रंथ को जग में कोऊ जु पढै गुनँ मन लाइ ।
प्रभु भक्ति प्रेम बढ़े नितै सुष देहिँ श्री जदुराइ ॥
हरि चरित्र . . . नहिँ सुनत, हैं नर मूढ जे मतिमंद ।
परिनाम में पछितात है अरु परत है भव फंद ॥६२२॥

इति श्री विश्वनाथे सिध कृत भाषा भक्त चंद्रिकाया ऊधो गोपी सवाद वर्ननो नाम च-
तुर्वसमोप्रकासः ॥१४॥ संवत् १६०५ लिखितं मथुरा ॥

विषय—गोपी उद्धव सवाद वर्णन । रचना मे चौदह अध्याय (प्रकाश) हैं ।

रचनाकाल

वेद अंक वसु इंद्रु के कीलक अब्द विचार ।
धन के रवि सितपक्ष में काम तिथी ससिवार ॥२८॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खडित है । सत्या १ से ६५ तक के पत्रे नहीं हैं । रचनाकाल
संवत् १८६४ वि० है और लिपिकाल संवत् १६०५ वि० ।

संख्या ३८८. महाभारत (स्वर्गारोहण पर्व), रचयिता—विष्णु कवि, कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—५ ३/४ × ५ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुप्लुप्)—२६३, खडित, रूप—प्राचीन (जीर्ण जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी प्राप्तिस्थान—काशी नागरी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी (गद्यदाता—५० राम शिरोमन उप० 'दादू'), ग्राम—बहादुरपुर, पो०—पच्छिम मरीरा, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—.....

सुनत बात रही यौ विलवाइ । पचा भीटे कंठ लगाई ॥
 विष्टुरत बहुतु मित तनु कीयो । दुष को पयु हिये गहवरघो ॥७०॥
 दुषु करिपय हियो भरि लीयो । राउ विसूरि कारनु कीयो ॥
 कहै कन्हु सुनि पंथा (? पंडु) कुमूर (कुमार) । और अपूर्व कलि व्योहर (? व्योहार) ॥७१॥
 गगनी पुतछु जलु जाइ । मामु धार सो धूरि उडाइ ॥
 अतह प्राणी प्यास मराइ । चलत पंथु पंथी चली जाइ ॥७२॥
 कलि मह गंग छोडे धारा । गहिरै ठौर उठैगी छारा ॥
 ए पचे कहिये जगदीस । पहिले वंभनु देइ असीस ॥७३॥

मध्य—

॥ अस्तोकु ॥

धानी जनम मूम स्याछ ॥ जहानवी जरादंण (? जनार्दन) ।
 घन मधेसु वास्तव्य जकारा पंच दुलभं ॥
 जननि माइ सो जू तिजि चलै । गंग अन्हाइ वस्तर लै चलै ।
 जौ घन परिघनु तिजौ न जाइ । पडै चले तिनहि छुटकाइ ॥१०२॥
 मनघरि रुड चले जगदीस । आगौ वभन दंहि असीस ॥
 कर जोरी विनवहि अरु सेवा । हम को पेटू भारहिगे देवा ॥

॥ वस्तु बंधु ॥

गौ रुदंती आरन्य तनु दंतन घराइ ।
 रुदती भ्रिग जुथानं अहो राजा दधपालकः ॥१०६॥
 रोवहि गौवन पडहि घसू । रोवहि पपी भ्रिग निरजासू ॥
 रोवहि रोम थवाघ भूपार । काहे छाडि चले भोवला ॥१०७॥

अंत—

आनंदु जस्टल भयो । हरि हरि करत पापु सब गयो ॥३०४॥
 आए तहा जुधिस्टलु राइ । कंचनपुरी जू उत्तम ठाऊ ॥
 सुगारोहिनि मनु दी सुनौ । नासै पापु "विश्व कवि" भनौ ॥३०५॥
 वरसु द्यौनु हरि वसु सुनाइ । दंहि कोरि विप्रन्ह कह गाइ ॥
 सो फलु होइ "विश्व कवि" भनै । पडै चरितु मनु दै सुनै ॥
 जो फलु होइ गये हरिद्वार । जो फलु होइ परसै के तार ॥
 गया पेत जी पिंड भराइ । सुर्ज पवु कुरपेतह जाइ ॥३०६॥
 सो फलु होइ "विश्व कवि" भनै । पडै चारितु मनु दै सुनै ॥

:०:

:०:

:०:

—अपूर्ण

विषय—महाभारत स्वर्गारोहण पर्व का हिंदी में पद्यबद्ध अनुवाद ।

संख्या ३८६. भाषा महावाक्य विवरण, रचयिता—विष्णुदत्त, कागज—देशी, पत्र—५०, आकार— $5\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४७५, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—कुंवर लक्ष्मण प्रताप सिंह, ग्राम—साहीपुर (नौलखा), पो०—हडिया खास, जिला—डलाहावाद ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

वैदो पुरुष पुरान अज अपंड अद्वैत जेहि ।
गावत वेद पुरान परम धाम व्यापक अचल ॥ १ ॥
बंदो सतगुर पाइ आठो जाम प्रकाश मय ।
जाको दरशन पाइ मिटत अविद्या वध सब ॥ २ ॥
बंदो श्री शंकर चरन जो शंकर अवतार ।
प्रगट कियो वेदांत मत सकल वेद को सार ॥ ३ ॥
जाहिर तीन्यौ लोक मैं चित्रगुप्त को वंश ।
ताहू मैं अविष्ट को बुध जन करत प्रसंश ॥ ४ ॥
दाता सुमति सुशील तहू प्रगट्यौ मोहन लाल ।
धर्म पंथ मे प्री पद यह श्रुति को मतसार ॥
ताते द्वादश वाक्य को संतत करै विचार ॥

अंत—सवते पर परमातमा व्यापक ब्रह्म अपार ।
सोहं पद जाने विना भ्रमत फिरे संसार ॥

॥ चौपाई ॥

अगुन सगुन हूँ ब्रह्म बषाना । सोहं जोति रूप भगवाना . . .
:०: :००: :०: —अपूर्ण

विषेय—तत्त्वमसि आदि द्वादश महावाक्यो पर भाष्य ।

संख्या ३९०. दुर्गाशतक, रचयिता—विष्णुदत्त महापात्र, कागज—देशी, पत्र—३२, आकार— $7 \times 4\frac{3}{8}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४३२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सवत् १९१७ वि० (सम्वत्), लिपिकाल—स० १९१७ वि०, प्राप्तस्थान—ठा० जयगोपाल सिंह ताल्लुकदार—रामपुर, तहसील—कादीपुर, जिला—मुलतानपुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ दुर्गाशतक लिप्यते ॥

हीरन के वामा जगिमणि रहे मंदिर में धूप दीप वास आस पास बगरे रहें ।
भोतिन की झालरें जडाड भूपकि रही चहूँ बोर तासवावलन के वितान पसरे रहें ।
सेवें देवमंडल मुनीस शीश पानि जोरे विहुम परजक से रतन जडे रहें ।
बैठी तहाँ देवी विन्ध्यवासिनी सरोज चरन अगरे मुकुट दिगीसन के लटके परे रहें ॥ १ ॥
कनकौ के मंदिर सिंहासन रुचिरता में बैठी जगदम्बा गान दिन्नर करे रहें ।
नाचें देवतानि की बधूटी भूरि भाव भरि बाजत मृदंग ताल नौबति करे रहें ।
शंकर रमेस बेस चवर डोलावें दोऊ छल लीन्हे करे मैं निशाकर षडे रहें ।
सासन को जीवें पाकसासन हमेसँ जासु आसन के नीचे पंकजासन परे रहें ॥ २ ॥

॥ अथ ध्यान महाकाली को ॥

मुंड की माल बलाक लसे असि बिज्जुछटा चमकं कर फेरी ।
चाप मनो पुरहूत की चाप सँताप हरेँ सिगरे जन कैरी ।

पुरी दया रस के वरपै हरपै सितिकंठ हिये बिच हेरी ।
गर्जिज के बैरिन को तरजै वह काली घटा सुपदाइनि मेरी ॥ ३ ॥

॥ अथ महालक्ष्मी को ध्यान ॥

अम्बर अनूप अंग सोहै अंगरागन सो पंकज अभीति कर पकज धरे रहै ।
शीश मै किरोट भाल बेदी लाल हीरा जडी माल मुकुतान के बिराजत गरे रहै ।
नूपुर पगन जगमंगित जवाहिर सौ नाना अमरन के प्रकास पसरै रहै ।
चारो फलदानी महारानी महालक्ष्मी जू आठी जाम धामिनि के संपति भरे रहै ॥ ४ ॥

अंत—

सुरथ महीप को मनोरथ सकल पूज्यो आरत समाधि सो विमल ज्ञान पाई है ।
देवन के काज रक्तबीज को निपात कीन्हो दीन्हो सुरराज को अचल प्रभुताई है ।
जद्यपि चराचर को पालन करत तँही जद्यपि सकल शिष्टि तेरोई बनाई है ।
मेरो दुप दारुण मिटायो जगदम्ब ताते रावरे प्रभाव की प्रतीत मोहि आई है ।

इति श्री मद्गुर्गा शतके पुन्य स्तोत्रे महापात्र विष्णुदत्त कृती वागादि वननं नाम दशम
दशकं ॥१०॥ सम्बत् १९१७ चैत्र शुक्ल पंचम्या भौम दोसरान्वितायां शायंकाले समाप्तम् ॥

विषय—दुर्गा की स्तुति और माहात्म्य का वर्णन । अथ दश अध्यायो मे है जिनको
“दशक” कहा गया है । प्रत्येक ‘दशक’ मे दस कवित्त सवैये है ।

संख्या ३६१. नव नागरी के पद, रचयिता—विष्णुदास, कागज—माधोपुरी, पत्र—
३, आकार—६ × ५ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२, पूर्ण, रूप—
साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—स० भ० विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व०
१२, पु० स० ५ ।

आदि—श्री कृष्णाय नमः ॥ राग विलावल ॥ १

श्री नव नागरी प्यारी तूँ वृंदावन की रानी ॥
श्री राधा लाडिली प्यारी तेरी कीरति जति बखानी ॥ टेक ॥
जगत में जगमग रह्यो जसु ब्रिनु कृपा क्यों बृम्भिये ॥
अभिमान अंधालोक कलमठ तिन तहां नही सूम्भिये ॥
करि कृपा परम उदार यह मोहि बारवार सुनाईये ॥
बलि जाऊँ श्री ब्रह्मान नंदनी सुजसु तुम्हारो गाइये ॥ १ ॥

मध्य—श्री नव नागरी प्यारी तेरें पगु नूपुर जनकार ।
तेसीय माधुरी चरन विहार ॥ टेक ॥
माधुरी चरन विहार यह गति राजहसहिँ अरपीये ॥
जघन सघन उरोज भारी देख कटि डरपीये ॥
प्रथमनि किंकिनी धुनि व्रतनि प्रतिनीमी बनी ॥

अंत—एहो मिलि करि विविधि विहार भामिनि एतो गहर, न कीजिये ॥ -
बलि विष्णुदास विचित्र भामिनि लोचननि सुख दीजिये ॥ ६ ॥

इति नव नागरी संपूर्ण ॥ शुभं ॥

विषय—इसमे राधा जी का वर्णन किया गया है । नवरात्र मे ये पद गाए जाते हैं ।
संख्या ३६२. भक्ति प्रकाशिका टीका, म० रचयिता—विष्णु पुरी, कागज—देशी,
पत्र—७७, आकार—११ १/२ × ५ १/२ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—
२३१०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरी-
प्रचारिणी मठा, वागारसी ।

आदि—श्री मते समानुजो जयति ॥

॥ सौरठा ॥

बंदों मन वच काय श्रीरघुवर पद कजवर ।
संतत जन सुषदाय षल षडन मडन अवनि ॥ १ ॥
श्री रघुवंस कुमार तेहि सम को करुणायतन ।
जासु कृपा अनुसार भवावरचि पावहि सुमति ॥ २ ॥
बंदों युगपद रनु जनकसुता जगजननि के ।
जिमि सुषप्रद सुरधेनु तिमि संतन कह देत सुष ।

॥ दोहा ॥

श्रीपति राज सुजान प्रभु करुणाकर गुण वृद्ध ।
बंदों पद रज विसद तेहि मिटइ मोह भवकद ॥ ४ ॥

:०:

:०:

:०:

प्रथमहु तो कपटी मतिमदा । परसत पद मिटिगो दुष ददा ॥
तासु अनुग्रह धरि निज सीसा । बुधि अनुमान मोहि जस दीसा ॥
भाषा रचऊ सुजन हित लागी । ज कोऊ हरिगुण रस अनुरागी ॥
विष्णुपुरी संग्रह भल कीन्हा । नाम भक्ति रत्नावली दीन्हा ॥
तासु अरथ कछु बुधि अनुसार । रचऊ सुभाषा करि विस्तारा ॥
समुक्त सुनत सुलभ सब काहू । रुचि विनु श्रवण सुन सुषताहू ॥
भनित भदेस वस्तु भलि बरनी । कृपण भक्ति महिमा भवहरनी ॥
ताहि हेसु करि संत सुजाना । सुनिहँ सतत करि सनमाना ॥

:०:

:०:

:०:

विष्णुपुरी के मित्र वर माधवदास प्रवीन ।
तिनभागी मनिमुक्ति की माला रतन नवीन ॥ ७ ॥
तब श्री भगवत भक्ति की रतनावली बनाइ ।
श्री पुरुषोत्तम क्षेत्र मँहु उनको दई पठाइ ॥ ८ ॥

:०:

:०:

:०:

अति उत्तम मम लोक सो लहै सु विनहि प्रयास ।
परमषेम कल्याणमय सदा सुषद सुभवास ॥ ११६ ॥

इति श्री भक्ति रत्नावल्यां भाषानिवद्धे भक्ति प्रकासिका नाम टीका प्रथम विरचनं ॥ १ ॥

अंत—.....त , सेवा नहिकरहि सोइ अनरथ कर मूल ।
वरणत सो विधि वचन करि भगत मिटै सब सुल ॥

॥ चौपाई ॥

...तव पद पकज रुरा । अखिल लोक सुषप्रद गुण पूरा ॥
जौलौं तेहि आश्रित नहि होई । तौलौं...हैं भय सोई ॥

:०:

:०:

:०:

...रति ज्ञान युत भक्ति अनूपा । योगीजन जेहिम.....

:०:

:०:

:०:

—अपूर्ण

विषय—सस्कृत ग्रथ भक्ति रत्नावली की टीका ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अपूर्ण है । अत मे सख्या ७७ के पश्चात् के पत्रे नहीं हैं । रचना-
काल और लिपिकाल का कोई पता नहीं ।

सख्या ३६३. वृज की बाल लीला, रचयिता—वीर भगत, कागज—देशी, पत्र—८, आकार— $८\frac{३}{४} \times ५\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८४८ वि०, प्राप्तस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ वृज की बाललीला लिखते ॥

अति सुंदर वृजराज कुवार । मात तात के प्रान आधार ।
 आनंद मगन सकल परवार । व्रज भक्तन की प्रीत अपार ॥
 लीला ललित विनोद विशाल । गावें सुनै भाग तिहि भाल ॥
 अद्भुत बालपेल नदलाल । नवल कौसोर जसैं रीत रसाल ॥
 जो जन या रस को अनुरागी । परम धन्य तेही बढभागी ॥
 वृज हुलास कहिबे कैं लागी । यह लीला अति मधुर सुभासी ॥
 कहत सुनत उपजत सुखहासी ।

अत—कीयो परस्पर रासविलास । पायो सुख मन भयो हुलास ॥
 रसमे भीजें च्यारो जाँमे । भोर भए आये घनरयाम ॥
 तो बुढिया सुनै पुत विललइ । उठिकें आइ उघारें द्वार ॥
 मात पुत मिलि करें लराइ । हरि की बात भलें वनि आइ ॥
 यो हरि वृज मे घर घर घेलें । भूजा कठ गोपिन कैं मेलें ॥
 हरि की बात सब उनि जानी । रहे मुड भारि वेही अभिमानी ॥
 कहत सुनत सब सुखदाइ । वीर भगति यह लीला गाइ ॥

इति श्री बाल लीला संपूर्ण लिखत गंगा विष्णु भरतपुर मध्ये मोती कार्तिक वदि ११ रवि स० १८४८ ॥

विषय—श्री कृष्ण की बाललीला का वर्णन ।

सख्या ३६४क. व्रजविलास, रचयिता—वीरभद्र, कागज—देशी, पत्र—८, आकार— $७\frac{३}{४} \times ५\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४४, पूर्ण, रूप—पुराना (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—अथ व्रज विलास लिप्यते ।

अति सुंदर व्रज राजकुमारा ॥ तात मात के प्रान अधारा ॥
 आनंद मगन सकल परिवारा ॥ व्रज वासीन सु प्रीति अपारा ॥
 लीला ललित विनोद विसाला ॥ गामे सुनै भागि जे नाला ॥
 अद्भुति बाल करी नद लाला ॥ नव किसोर रस रीति रसाला ॥
 जो जन या रस के अनुरागी ॥ परम धन्य तेई बड़ भागी ॥
 मो मति महा मोह ते जागी ॥ व्रज विलास कहिबे कु लागी ॥
 यह लीला अति प्रेम विलासी ॥ कहैत सुनत उपजति हासी ॥
 लाइ लईतो कुमर कन्हैया ॥ पेलत आगन देपति मैया ॥
 बदन चंद चंचल अति नैना ॥ अलप लई मधुरे मे वना ॥
 नासा कैं मोती अति सोहै ॥ कानन कुंडिल अति मन मोहै ॥
 लटक रही लट धूर्धरिवारी ॥ चपल भौह विच विदुका न्यारी ॥
 कर पोहीची जगमग जड़ाऊ ॥ देपि सराहत हैं बलदाऊ ॥

मध्य—बोहौरि कही मा पोलि किवारी ॥ में तो भीजतु ठाडो द्वारी ॥
 बिजि बोली घर जाउ नंद के ॥ जानतिहु गुन बढ छद के ॥
 याते सुन में तु कौन फहावें ॥ चख्यो हमारे द्वारे आवें ॥
 कहा भयो री जननी तोकु ॥ बयो पँहँचानाति ना है मोकु ॥
 वह मेरे घर काहे कु आवें ॥ मोते डुरचो डुरिही धावें ॥
 ये रे लगर ढोट कन्हाही ॥ तँ सब ब्रज की लाज गमाई ॥

अंत—जानी गोप स्या(म) अच आयी ॥ अरवराय गहैबँ कु धायी ॥
 कठिनी कपाट सु लोहु जडायी ॥ पचि हारचौ परि नैक न डिगायौ ॥
 माय माय कहि पुत्र पुकार ॥ कौन सुन कोहि धार उधार ॥
 यह विधि वीते चारो याम ॥ भोर रुयँ घर आये स्याम ॥
 बुढिया सुन पुत्र विललाय ॥ उठि किवार उधारचौ जाय ॥
 मारचौ मुड मारि अभिमानी ॥ हरि की वात भली करि जानी ॥
 रस में लीन कौये ब्रजवासी ॥ यह लीला अति प्रेम विलासी ॥
 वीरभद्र मनमोद प्रकासी ॥ गावें सुन मुक्ति है जासी ॥

॥ दोहा ॥

ब्रज विलास बलमद्र ऋति ॥ सदां रही ब्रजमाहि ॥

गामत सुनत सुष ऊपजँ ॥ लाल हसँ मनमाहि ॥

इति श्री ब्रज विलास संपूरणं शुभम् ।

विषय—इसमे कृष्ण चद्र की लीलाओं का वर्णन है ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्तलेख में निम्नलिखित रचनाएँ सगृहीत हैं —

- १ जोग लीला—उदयकृत
- २ ब्रजविलास—वीरभद्रकृत
- ३ वासुरी—सूरदास जी कृत
- ४ ब्रजलीला—हरिदास
- ५ सनेह लीला—रसिकराय
- ६ परतीत परीक्षा—बालकृष्ण

संख्या ३९४ख. ब्रजविहार (ब्रजविलास), रचयिता—वीरभद्र, कागज—देशी,
 पत्र—३ (पुस्तक के मध्य में), आकार—४। × ६।। इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४६, परिमाण
 (अनुष्णुप)—१२०, रूप—सधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—श्री सरस्वती भडार
 श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ७, पु० स० ३ ।

आदि—

अति सुंदर ब्रजराज कुमार, तात मात के प्रान आधार ॥ १ ॥
 आनंद भगन सकल परिवार, ब्रज भगतनि कें प्रीति अपार ॥ २ ॥
 लीला ललित बिनोद विसाल, गावें सुनै भाग जिहि भाल ॥ ३ ॥

मध्य—

माइ कहे सुनि पूत प्यारे । तँ तो साचे बचन उचारे ॥८४॥
 कौनो मेरो रूप कन्हाई । इहा जिनि आवन दीजो माई ॥८५॥
 यों कहि सोयो जाय अटारी । मोको कान्ह दीयो दुख भारी ॥८६॥
 घर मे आवन को मकुलायो । मे तो इटनि मारि भजायो ॥८७॥

श्रंत—

मात पूत मिलि करे लराई । हरि की बात भली बनाई ॥४३॥
 यों हरि गोपिन के सुखदाई । ब्रज मे करत बिहार सदाई ॥४४॥
 नव किसोर सुदर सुखरासी । रस मे लीन कीये ब्रजवासी ॥४५॥
 यह लीला अति प्रेम विलासी ॥ वीरभद्र मन मोद प्रकासी ॥४६॥

विषय—श्रीकृष्ण की बाललीला का वर्णन ।

संख्या ३६४१ चंद्रावली लीला (ब्रज विलास), रचयिता—वीरभद्र (श्री गोकुल नाथ जी के शिष्य), कागज—देशी, पत्र—५, आकार—५। x ८। इच्च, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१३१, अपूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७०० के पूर्व, प्राप्तस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० स० २६, पु० स० ५।३ ।

आदि—लीला चंद्रावली की लिखते ॥

अति सुदर ब्रजराज कुंवार ॥ तात मात के प्रान अघार ॥ १ ॥
 आनद भगन सकल परिवार ॥ ब्रज लोगनि कं प्रीति अपार ॥ २ ॥
 लीला ललित विनोद विसाल ॥ गावँ सुनँ भाग तिहि भाल ॥ ३ ॥
 जो जन या रस के अनुरागी ॥ परमधनि तेइ बड भागी ॥ ४ ॥
 मो मति महा मोहतँ जागी ॥ बाल केलि कहिवँ को लागी ॥ ५ ॥

मध्य—

बहुरि कह्यो मा खोलि किवार ॥ हुं भोजत हुं ठाढो द्वार ॥६१॥
 बहुरि कहै घर जाहु नदके ॥ जाने तुव गुन छद बंद के ॥६२॥
 कहा भयो री माता तोकु ॥ क्यो पहिचानति नाही मोकुं ॥६३॥
 इहां नद सुत कवहु नावँ ॥ मोतँ डरपि डुरि ही धावँ ॥६४॥
 रे रे लंगर ढोठ कन्हाई ॥ तँ ब्रज की सब लाज गमाई ॥ ६५ ॥

श्रंत—

नवलकिसोर सुंदर सुख रासी ॥ रस मे भोजि रहे ब्रजवासी ॥१४४॥
 यह लीला अति प्रेम प्रकासी ॥ वीरभद्र जन जानि प्रकासी ॥१४५॥
 इति श्री चंद्रावती जु की लीला संपूरन समापता ।

विषय—श्रीकृष्ण की चंद्रावली लीला का वर्णन ।

संख्या ३६६. अश्वमेध, रचयिता—वीरभान चौहान, कागज—देशी, पत्र—२३२, आकार—५ ६ इच्च, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—५२२६, अपूर्ण, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—श्री लाल बहादुर सिंह, शिवपुर, पो०-जफराबाद (जौनपुर) ।

आदि—..... ।

एहि विधी दीज अघिकारी शोध न लिन्ह दीजन्ह कर नाही
 जो कोई न्नीप न्नीप मद पावँ तोहि न्नीप कि वशव वस्तु कहावँ
 न्नीपदि द्वदि रिठल लागे व्याश रिखँ कहिए हम आगे
 दिज की शंख्या कहौ बुझाई केतिक दान बुझौ रीपी राई
 एहि विधी अस्व फहै रीपी ग्यानी शो हम सब तुम्ह कहहु बपानी

॥ दोहा ॥

पंडित और कुलिन तन रिष कहै रोषी पाही
लख सहस्र दीज चाहीऐ जग्य अरभन माहीं

:०: :०: :०:

अस्व रतन त्रीप राखही वै त्रीप कीरनी शमान
सक्ती होई तौ आनिऐ कहू "वीरभान चौहान"

इती श्री हरी चरित्रे दशम शकधे अस्वमेध कै जंमुनी भारथे भाषा क्रीत नाम प्रथमो
अध्याए ॥

जंमुनी कथा चलाई आगे तब कछु भीम कहन कहें लागे
मैं आनब बल जोरी तुरगा करीही जुध ताही त्रीप संगे

:०: :०: :०:

॥ दोहा ॥

वीरभान चौहान कही हम आवहि त्रीप काम
जौ तुम्हते रथ लिजिए तौ नाहि सग्राम
...भाषाक्रीत चतुर्थी अध्याए जंमुनी बीरचीते ॥ ४ ॥

:०: :०: :०:

वीरभान चौहान कही कीज उठा पग्रान
भीम सबेग दुहु जना मुछीत जेहि मैदान

:०: :०: :०:

अंत—..... ।

॥ दोहा ॥

अचल रूप ऐही भाती है चलत चिन्हें जौ कोई
भौसागर उतरन चहै सीला पुजं जौ सोई

॥ चौपाइ ॥

शीला काध कै चलै -जौ -कोई
शालिग्राम देहि दिज दाना
पूजा ध्यान सिला जो करं
गंगा सागर ध्यावैं सोई
श्रीभुवन भार लीन्ह जनु सोई
दीन्हो सात दीप परिवाना
अरु जौ अस्तुति चितन्ह धरं
तुरित उधार ताहिकर होई

:०: :०: :०:

नाराएन सम बंधु नही क्रीस्न कथा सम आन
तुलसीसर समान नही कहि "वीरभान चौहान"
तहा वसत है आप प्रभु तुलसि मंजुर माहि
है तीन्हको महीमा अधीक पत्रते सुजत ताही
नारद पारथ कह समुक्तावैं हरिकि भगती केर गुन गावैं
श्रीस्त्वुधी चंदनपुर माहा लव कुलिंद कह वधें मनमाहा
प्रजा पीनी जेतने वादे सही शवकर डंड की वो पर वेसही ।

:०: :०: :०:

..... ।

विषय—श्री कृष्ण चरित्र श्रीर पाडवो के अश्वमेध यज्ञ का वर्णन किया गया है ।

चंद्रहाम राज मदन मन्त्री शालिग्राम माहात्म्य	(५८) अध्याय
बालक बधनो नाम	(५०) अध्याय
सीता वन गमन	(२७) अध्याय
रामचंद्र का भ्रातृ मिलन	(२६) अध्याय
लौहरी राक्षस बधनो नाम	(३०) अध्याय
विपमाली वर्णन	(५२) अध्याय
अयोध्या वर्णन	(२५) अध्याय
प्रद्युम्न मनीपुर पति युद्धवर्णन	(२४) अध्याय
राक्षस स्त्री वर्णन	(२२) अध्याय
त्रिया राज्य अश्व गमन	(२१) अध्याय
अर्जुन ताम्रकेतु मग्नम	(४३) अध्याय
हरी चतुर्गुण युद्ध	(३०) अध्याय
लोकुण रामचंद्र युद्ध	

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अपूर्ण है । समस्त दो सौ बत्तीस पत्रे उपलब्ध हैं । रचनाकाल तथा लिपिकाल अज्ञात है ।

संख्या ३६६. यमकालकार सतसैया या वृ द विनोद, रचयिता—वृ दकवि, स्थान—भेडता (राजस्थान), कागज—देशी, पत्र—४६, आकार—६१^३/_४ × ५१^२/_४ इंच, पक्ति (प्रति-पृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०२६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति-स्थान—श्रीयत् गोपाल चंद्र सिंह जी एम० ए०, सिविल जज, सुलतानपुर (स्थायी पता—मोहल्ला नजीरावाद, कोठी न० ११७, लखनऊ) ।

आदि—श्री गणाधिपतये नमः ॥ अथ यमकालंकार लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

श्री सरस्वति कौं नमत नर सरस्वत कोमल कँन ।
गनपति कृपा कटाक्षतं गनपति सुभफल दैन ॥ १ ॥
केशव कवि वरने यमक अद्ययेत सद्ययेत ।
सुपकर दुष्कर भेद सब वरने वृद सहेत ॥ २ ॥
विन्न अंतर इकसे सबद अद्ययेत सो जानि ।
अंतर सौं इकसे सबद सव्ययेत पहिचानि ॥ ३ ॥

॥ अथ अद्ययेत यमक ॥

॥ अथ आदि यमक ॥

संकर संकर सत कौं मन वंछित कौं देत ।
मन क्रम वच करि कीजिय ताही सौं हिय हेत ॥ ४ ॥
नरहरि नरहरि श्रीर की करत आस वेकाज ।
संत सुदामा रंक तै राव कियो महाराज ॥ ५ ॥

॥ अथ सद्ययेत यमक ॥

॥ प्रथमपदयः ॥

सुरभित वन कीनी सुग्भि कीमल मलय समीर ।
तहां सुरत सुप लेत हैं नित राधावलबीर ॥ २७ ॥

॥ अथ २ ॥ षः यः ॥

कुंजन कूजत कोकिला अलि गुंजत अलिमाल ।
 चलि बलि हिलिमिलि लेहु सुष तहा रसिक नदलाल ॥२८॥
 अंत—हरि चरित्र समर्थ भले पावं नाही पेद ।
 सोई जमक दोहांन कौ नौकं जानं भेद ॥१३॥
 गुंन रस सुष अमृत वरस वरससुकुल नभमास ।
 दूज सुकवि कवि वृंद ए दोहा किए प्रकास ॥१४॥
 आगरनगर नरन कौ नगर मेरते वास ।

जमक सतसयाकौ घरचौ नाम सुवृंद विनोद ॥१६॥

इति श्री षोडस ज्ञातीय पुष्करना कवि वृंदावन विरचितायां यमकालकार सतसया
 संपूर्ण ॥ लिखितं जोसी सूरतराम ऊदरामेण वाचनार्थं राजे श्री अमृतराव ॥

विषय—यमकालकार के अव्यपेत और व्यपेत नामक दो भेदों और उनके भिन्न भिन्न
 प्रयोगों का वर्णन किया गया है ।

रचनाकाल

गुन रस सुष अमृत वरस वरस सुकुल नभ मास ।
 दूज सुकवि कवि वृंद ए दोहा किए प्रकास ॥१४॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल का उल्लेख है, पर ठीक ठीक समय, मे नहीं आता । लिपि-
 काल भी नहीं दिया है । जिस हस्तलेख में प्रस्तुत रचना है उसमें अन्य दो रचनाएँ 'नखशिख'
 बलभद्रमिश्र कृत और 'मानमजरी' नददास कृत भी हैं । मानमजरी अपूर्ण है ।

संख्या ३६७ सरसरस, रचयिता—वृजनाथ त्रिविक्रम सुत, स्थान—भरोच, पत्र—१२,
 आकार—६॥ × ६ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३८, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५६, अपूर्ण,
 रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग,
 कांकरोली, हि० व० ६२, पु० स० ६ ।

आदि—॥ श्री गणेशायनमः ॥ अथ सरस रस लिख्यते ॥

गुर गनपति गोपाल के चरन कमल चित्तु लाइ ।
 भाषत हो अब सरसरस रसिकन को सुखदाइ ॥१॥
 राजत है दिल्ली तखत नो रस साहि नरेस ।
 लियो निराजी जोर तै राजी करि सब देस ॥२॥

मध्य—पृ० १२

मुग्धा ॥ चलन चलन सब कहत है लखत नऊढा वाम ॥
 पूछति अपनी सखिनि सो कित जैहै घनस्याम ॥७६॥
 मध्या ॥ भोर पयानो कीजिये वात इही पिय राति ॥
 रनि घटत तन घटत है प्रात होत पियराति ॥७७॥

अंत—सूछा ।

बिरह दहै अति दुखित है बोलति नाहिन धन ।
 देके दरसु जिवाइ लै अघजल डारं नैन ॥५०॥
 दसम भेद जो बिरह को सो मति काहू होइ ।
 नाइक के अरि को वहै तिय की सोतिन सोइ ॥३५१॥

विषय—नायिका भेद वर्णन ।

संख्या ३६८ १ विचित्रालंकार (द्वयर्थक कवित्त), २ चतुर्विध पत्नी, रचयिता—
वेणीमाधव भट्ट "प्रवीन" कवि, पत्र—१०, आकार—४^३/_४ × ४^३/_४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६,
परिमाण (अनुष्टुप्)—१२०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं०
१७५० (लगभग), लिपिकाल—सं० १७६८, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या
विभाग, काँकरोली, हि० व० सं० २३५, पु० सं० ६ ।

आदि—॥ श्री गणेशाय नमः ॥ छपे ॥

सिद्धि वृद्धि जुग जुवति परम सुंदर अनूप अति ॥
रिद्धि वृद्धि संग. लिये सुखद सहचरी सुगति मति ॥
ल छ लाम सुत प्रगट मिष्ट मोदक भर निसदिन ।
सेवत सुर तेतीस रहत आनदित छिन छिन ।
फल देत सकल मन कामना कल्प वृक्ष राजे सुधर ।
सब सुख "प्रवीन" मंगल करन सुलबोदर उर ध्यान धर ॥ १ ॥

मध्य—पृ० ६

घूँघट के कोट कोर राजत कगूरे तहां भोर पवरे तन की भोर अधिकारी है ।
अलके निसान भोहें कररी कमान सांघें नेनन के वानन की अनी अनियारी है ।
नृपति मवासी रूप राजत प्रवीन तहां खोलत न क्यों हूं मुख मोन की किवारी है ।
नेकु न लगाव अब कीजिये जतन कौन प्यारी तेरे मान को ये चिकट गढ भारी है ॥१३॥

अथ पत्नी लिख्यते ॥

वरनो प्रेम प्रवास को सुनि उपजे सुख अंग ।
होत उछाह सनेह को मिलने की जु उमंग ॥ १ ॥
पत्नी चार प्रकार की रची सुधर के हेत ॥
प्रीति रीति जानी परे वाँचत ही सुख देत ॥ २ ॥
पिता गुरु आता नृपति श्रेष्ठ परम पहिचानि ॥
लिखि पत्नी इहि भाति सो प्रीति रीति उर आनि ॥ ३ ॥
सिद्धि श्री सर्वोपमा लाइक परम निधान ॥
गुन गंभीर उदार मति तुमसे ओर न आन ॥ ४ ॥
उपमा जेती जगत में लिखिये कहा बखान ॥
कृपा द्रष्टि जेसी सदा करियो सेवक जान ॥ ५ ॥
इहां कुशल हे रावरी सदा कुशल की चाह ॥
समाचार के सुनत ही जिय मे होइ उछाह ॥ ६ ॥

अंत—प्रीतम तुम जियकी सवे जानत हो निज रीति ॥

पत्नी मे लिखीये कहा सवे आपुकी प्रीति ॥ ७ ॥

प्रीतम प्राण सुजान तुम विनु कछु न सुहात ।

हे दीजे दरसन आनि लिखत न वनत न और कछु ॥ ८ ॥

भट्टवेणीमाधव विरचितायां चतुर्विध पत्नी चित्रालंकार द्वयं कवित्त संपूर्ण शुभं भवत्
सं० १७६८ पौष सुदि १५ शनी लिखतं उदपुर मध्ये भट्ट वृजभूषण जी पठनार्थ ॥ श्रीरस्तु ॥

विषय—प्रथम १३ कवित्त प्रीति विषयक है । बाद मे पत्र लेखन शैली चार प्रकार से
वर्णन की गई है :—

- १ गुरु पिता प्रभृतिन को—
 २ मित्र को—
 ३ नायिका की नायिका के प्रति—
 ४ नायिका की पत्नी नायक के प्रति—

सख्या ३६६. पदावली (? रावण विषयक कथा), रचयिता—जन वैकुण्ठ, कागज—
 देशी, पत्र—५, आकार—८ $\frac{३}{४}$ × ३ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—
 ६०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणा सभा,
 वाराणसी (ग्रथदाता—प० वासुदेव तिवारी, ग्राम—भीरा, पोस्ट—मुहम्मदाबाद, जिला—
 आजमगढ़) ।

श्रादि— :०: :०: :०: :०:

“जन वैकुण्ठ उपेन्द्र सामी सुनो कुभकरन सो समतले ४१७
 राग सारंग ताल ३

कुभ करन त्रिप कह सिर नाइ ।

मम निद्रा बाधत है पुरजन निजंन ठाम सदन छो वनाई ॥ ध्रु ॥

सुनि दसकंधर विसकर्मा ते कह श्रालय बहु भाति वनाइ ।

कलास अकार उतग व्याम वीस्तिर्न कीन्ह जोजन समताइ ॥ १ ॥

फटिक धंभ कचन वैदुर्ज रतन मनि पचित गेह ललितार्ई ।

मेरु गूहा सम कुभकरन तह निद्रा बसि सतत सुषसाई (? सुषदाई) ॥ २ ॥

रिषि मुनि देव दइत अहिगन गधर्व जक्ष दसमीलि सताइ ।

“जन वैकुण्ठ उपेन्द्र सामी” सुनो गुनि तव इत कुबेर पठाई ॥ ३ ॥ १८ ॥

श्रंत— ॥ राग विलावल ताल ३ ॥

हिमवत विपिन दसानन जाई ।

परम सरूप सकल विधि कन्या करत महातप ध्यान लगाई ॥ ध्रु० ॥

रावन विहसि कही केहि कारन तप करी नाम कहा केहि जाइ ।

विहस्पति तनय कुसध्वज कन्या वेदवती मम नाम सुनाइ ॥ १ ॥

मम कारन पितु ढिग श्रालय सुर असुर जछ वर भट समुदाइ ।

विस्नु हेतु दुहिता सुनि निसि सवेस तात कह सुम रिसाई ॥ २ ॥

तात मनोरथ विस्नु जानि तप करति सुने रावन विहसाइ ।

विमान ते उत्तरि जाइ ढिग ह्वै कह प्रोअ होहि मम बहु सुषदाइ ॥ ३ ॥

काम वान पीडित रावन परसत कर वीअ नहि दीन्ह छुआइ ।

कुपित तापसी तृअ धर्षन कर फल पैहो जो पाप चित आई ॥ ४ ॥

गहत सरूप बलात निरषि कह मम सक नहिन हतो दनुराइ ।

तुअ बध निबिति श्रवनि श्रवतरिहो कहि वेदवती अनल समाई ॥ ५ ॥

कृत जुग वेदवती तप वरते महि उत्पती.....

:०:

:०:

:०:

..... ललसाई ॥ ६ ॥ २६ ॥

॥ राग सारंग ताल १ ॥

रावन दल सोर घोर पवन प्रलय ताइ ।

सुनि धुनि अर्जुन अमात्य हय गरथ बहु पयदाति सभर विधि सनधभये विहसत दनुराइ ॥ ध्रु ॥

अर्जुन सनु जुधि हमारि कह सुधि नृप धनुकधारी लरत उभय कटक तहा सुनि सोनि परिसाइ ।

क्रीडा तजि गदागहे दानव सठअर्तु लहे हनत धाइ हाक ब्रास दनुज बहु पराइ ॥ १ ॥

—अपूर्ण

विषय—रावण सवधी कथाओं का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ छडित है । आरभ के १६ पत्रे नहीं है । १७वे पत्रे के पश्चात् के दो पत्रे और २१वें पत्रे के आगे के ३ पत्रे भी लुप्त हो गए हैं ।

रचना माहित्यिक ह । परंतु खडित होने के कारण विषय ठीक ठीक ज्ञात नहीं होता । जितने पद वर्णमान ह उनमें रावण का तपस्या का वर्णन, उसके द्वारा कुबेर का पराभव, पुष्पक यान का छोना जाना, कुम्भकरण के सोने के लिये विशाल भवन का निर्माण कराया जाना, कुस-ध्वज राजा की पुत्री वेदवती के साथ उमके तपस्या करने रावण का बलात्कार करना और वेदवती का रावण को श्राप देकर अग्नि में प्रविष्ट होना आदि कथाओं का वर्णन है ।

संख्या ४००. वृ दावन वर्णन, रचयिता—व्यास जी, पत्र—४, (पृ० ८६ से ९३ तक), आकार—७ × ११ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४८, परिमाण (अनुपृष्प)—२४०, पूर्ण, रूप—माधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १७८१, प्राप्ति स्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकराली, हि० व० ८३, पु० म० ९।२५ ।

आदि—श्री राधा बल्लभो जयति ॥ अथ व्यासजू के पद लिख्यते ॥ वृ दावन वर्णन ॥
॥ राग सारंग ॥

होहि मन वृ दावन की स्वन ।

जो गात तोको देहैं ऐसी सो गति लहै न आन ।

वेगि विसरि है कामिनि कूकरि सुनत स्याम गुनगान ।

ब्रजवासिनि की जूठनि जैवत वेगि मिले भगवान ।

जहाँ कलपतरु कामधेनु की वृ द विराजत जान ।

वाजत जहाँ स्याम स्यामा की सुरत समर निसान ।

सदा सनातन राधा-धन की प्रलं पसत नहि पान ।

तौरथ और सकल तवही लागि जौं ससि अरु भान ।

मध्य—मोहि वृ दावन राजा सो काजु ।

माला मुद्रा स्याम बंदनी तिलक हमारें साजु ।

जमुना जल पावन सु हमारे भोजन ब्रज की नाजु ।

कुंज केलि कौतिक नैननि सुख राधाधव को राजु ।

निसि दिनु दहदिसि सेवा मेवा ताल पखावज बाजु ।

नृत्तत नट नागर भावत अति व्यासहि साधु समाजु ॥३१॥

अंत—धनि कलपतरु बंसीवट धनि वर विहार रह्यौ छाई ।

धनि जमुना जाकी जल अचवत होति सदा अघवाई ।

धनि रास की धरनि जिहि तूं रचि कें सदा नचाई ।

धनि सखी ललितादिक निसिदिनु निरपत केलि सुहाई ।

धनि अननि व्यास की रसना जिहि रस कीच मचाई ॥३९॥

विषय—भगवद्भक्ति की महिमा का वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—पृष्ठ ८६ से १५१ तक प्रस्तुत ग्रथ लिखा है । इसके साथ निम्नलिखित ग्रथ भी हैं :—

१ वधार्थ जन्म समय की

२ माधुनि के मृतुति के पद

३. अमाधुनिकां सरूप वर्णन

४. साधारण पद
 ५ किशोर जू सिंगार पद
 ६ रास पचाध्यायी
 ७ साखी:

अत मे "मिती स० १७८१ पोस वदि ८ वृ दावन" लिखा है ।

संख्या ४०१क विनय (करुणा) के पद, रचयिता—ब्रजदूल्ह, कागज—देशी, पत्र—१२, आकार—१२ × ८ ३/४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०, खडित रूत—पुराना (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभ.पा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ करुणा के पद लिख्यते ॥

अधम अगाधि अधिक अपराधी अधजनमधि दिक्काल ॥
 क्रियाहीन गुणहीन दीन जन करत सकल प्रतिपाल ॥
 जप तप ध्यान ज्ञान व्रत सजम जानत नहि निकाल ॥
 ब्रज दूल्है करुणाकरि केशव भेदत भव भ्रम जाल ॥ १ ॥
 पद ईमन ॥ मैं तुम्हरो दृढ़ भक्त कहाऊँ ॥
 फलदाता दृढ़देव असखित तुम सम मन मैं येक न लाऊ ॥
 दृढ़ विश्वास आस एक तुम्हरो राति दिवस तुम्हरे गुन गाऊ ॥
 तुम्हरे द्वार परचो श्री माधव द्वार द्वार द्यो लीग हुआऊ ॥
 तुमसे स्वामी पाय कृपानिधि कौन देव कौ नाम कौ नाम धराऊ ॥
 मेरे एक टेक करुणानिधि तुम तजि और देव नहि ध्याऊ ॥
 जो कछु देहु लेहु मन राजी नाहि देहु तोहू सुख पाऊ ॥
 तुम्हरो होय सुनौ ब्रज दूल्है जग पतितन द्यो सीस नवाऊ ॥ २ ॥

मध्य—॥ (राग) सोरठ ॥

कृष्ण भक्ति भव सिंधु तिरावें ॥
 भक्ति प्रबल अथ ताप मिटावें विना कष्ट बं कुंठ पठावें ॥
 शम दम जप तप सकल तिरावें द्यो द्यो तिरे महा दुप पावें ॥
 भ्रम विन हरि पद भक्ति मिलावें शिव विरच जो पद नित धावें ॥
 पूजो क्यों न देव जो भावें कृष्ण भक्ति विन पुनि भव आवें ॥
 जो नर उर हरि भक्ति बसावें ताकूं तजि हरि अंत न जावें ॥
 भक्ति विराग ज्ञान उपजावें वेद पुरान शास्त्र सब गावें ॥
 ब्रज दूल्है प्रभु-भक्ति सुहावें भक्ति हाथ हरि आप विकावें ॥ ३ ॥
 अत—रुण कृष्ण डोलत तुतले बोलत मृदु भुसकनि मैं रोना ॥
 देषि देषि सुर नर मुनि जन सब तन मन सुरति भुलौना ॥
 जो निरपे हित चित करि नित नित फिर फिर जनम न हौना ॥
 कृपा करौ ब्रज दूल्है ऊपर श्री जसुमति के (छौना) ॥ ३ ॥
 पद..... (आगे पत्र खडित है)

विषय—कृष्ण भक्ति विषयक पद रचना ।

संख्या ४०१ख. बारहखडी (भक्तपत्रिका), रचयिता—ब्रजदूल्ह, कागज—देशी, पत्र—७; आकार—६ ३/४ × ५ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—३८ खडित (केवल पत्र संख्या २ नहीं है), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकान—न० १६२६, प्राप्तिस्थान—आर्यभ.पा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री भक्तपत्रिका लिप्यते ॥

॥ दोहा ॥

मे वरनत वारापरी कृष्ण कृपा के हेत ।
 "ब्रजदूह" कीज कृपा प्रभुपद भक्ति समेत ॥ १ ॥
 कका कमलापति करुणानिधे केशव कृष्ण कृपाल ।
 करो कृपा मो कुटिल पं जानि कठिन कलिकाल ॥ २ ॥
 पया पवर लेहु अरु दास की परचौ प्रवल भववीच ।
 काम क्रोध ग्राम कुमति में परचौ कर्म कृत कीच ॥ ३ ॥
 गगा गर्व हरचो गिरवर धरचौ गज की सुनी पुकार ।
 अहो नाथ अति दुपित मैं करौ प्रवल भवपार ॥ ४ ॥

:०:

:०:

:०:

अंत—ज्ञाना ज्ञानदहु निज चरन की शरन परे की लाज ।
 त्यारी मुहिं भवमिधु ते ब्रजदूह महाराज ॥३७॥
 यह वरना वारापरी प्रेम भक्ति को पानि ।
 जो गावे सीपे सुने मिले कृष्ण पद ज्ञान ॥३८॥

इति श्री भक्त पत्रिकाया ब्रजदूह कृत सम्पूर्णम् ॥

विषय—'क' से लेकर 'ज्ञ' तक के प्रत्येक अक्षर पर दोहा रचकर कृष्ण भक्ति वर्णन की गई है ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ में केवल पत्र सप्त्या २ नहीं हैं । रचनाकाल अज्ञात है । लिपिकाल हमारे ग्रथ, 'सुदामा की वाराखड़ी' के आधार पर सवत् १९२६ है । दोनों ग्रथ एक ही हस्तलेख में हैं ।

संख्या ४०२क. दानलीला, रचयिता—गो० श्री ब्रजभूषण जी "दास", स्थान—काँकरोली, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—४ × ३॥ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७६५ से १८३३ के बीच, लिपिकाल—स० १८४८, प्राप्तस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० ३१, पु० स० ६ ।

आदि—॥ श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ॥ राग गौरी अथवा विलावल ॥ दान ।

अहो प्यारी मनिन जटित की एंडुरी और रतन जटित की माट ॥

दधि ले चली चंद्रावली अहो मोहन रोवयो घाट हो ॥ १ ॥

ब्रह्मान लडेती दान दे ॥ १ ॥

अहो प्यारे सवे सयाने साथ के और तुमही सयाने कान्ह ॥

लिख्यो दिखाओ रावरो तुम किहि पुर लीनो दान हो ॥ नंदराय लला घर जान दे ॥ २ ॥

मध्य—अहो प्यारे गुजराती डाकोतीया लेत गहन मे दान हो ।

जो उनमे हो लाडिले ब्रह्मान बवा राखे मान हो । नंदराय ० ॥ १२ ॥

अहो प्यारी जनम जनम की हो कहो तुम सुनहु सभग सब साथ ।

असुभ लगन ते सुम करो जोपे नेकु दिखावहु हाय हो ॥ १३ ॥ ब्रह्म भान ॥ १३ ॥

अंत—अहो प्यारी को लकुटी आडो करे और कोन सके कहि वात ।

रस ही रस वस ह्वे गए मेरे सुफत भए सब गात हो ॥ २३ ॥ ब्रह्मभान ॥

अहो प्यारे जगत अनेक सुहायनी और वतरस वढयो व्योहार ॥

चतुरन मन दौऊ बने 'दाम' वलि वलि जाय हो ॥ २४ ॥

नंदराय लला घर जान दे ॥ २४ ॥

दान लीला संपूर्ण ॥ सं० १८४८ मि० आश्विन कृष्ण १४ लि० जीवन भट्ट स्पहाड मधे ॥

विषय—दधि बेचने जाती हुई गोपियों को रास्ते में रोककर श्रीकृष्ण द्वारा उनमें दधि दान माँगने का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ में पहले 'सामी के पद' और बाद में यह 'दान लीला' लिखी हुई है ।

संख्या ४०२ख. सामी कीर्तन, रचयिता—गो० श्री ब्रजभूषण जी, स्थान—काँकरोली, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—१०। × ५।। इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुष्टुप्)—८०, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७६५ से १८३३ के बीच, लिपिकाल—स० १९६०, प्राप्तस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० २५, पु० स० १ ।

आदि—॥ श्री गोपीजन बल्लभाय नमः ॥ अथ सामी लिखियतु हँ ॥

सुनहु कुंवर ब्रजभान की हम सब आई ब्रज नारि हो ॥

तुम नित जात फूल वीनन को पूजन सामी हेत ॥

आज सब ब्रज बनिता तुम संग चलिहँ कहो सकेत हो ॥ १ ॥

सुनत विहसि उठी कुवरि राधिका गई कीरति के पास ॥

आज सबे ब्रज नारि हमारें संग चलत इहि आस हो ॥ २ ॥

मध्य—पाई सुधि नंदनंदन गई ब्रज बनिता वीनन फूल ॥

आतुर, त्वे अकुलाय चले हरि कार्लिंदी के कूल हो ॥ ३० ॥

दुरि देखत लतान की रंघन अपनी वदन दुराय ॥

निरखि रूप ब्रजभान कुवरि को मन में अति सुख पाय हो ॥ ३१ ॥

पूरन हिमकर सम मुख प्यारी को देखत मन गयो मूलि ॥

त्रिया रूप धरि कर डलिया ले आपुन वीनत फूल हो ॥ ३२ ॥

अंत—ललिता निरखि परम सुख पायो उर आनंद न समाई ॥

देत असीस सदा यह जोरी सुख विलसो मन भाई हो ॥ ५३ ॥

लीला ललित स्याम स्यामा की बरनत बरनी न जाई ॥

श्री बल्लभ पद रज प्रताप तें ब्रजभूषण बछु गई हो ॥ ५४ ॥

इति सामी संपूर्ण ॥

विषय—राधाकृष्ण की सामी लीला का वर्णन ।

नीति विनोद भाषा, रचयिता—गो० श्री ब्रजभूषण जी महाराज, निवास स्थान—काँकरोली, कागज—देशी, पृष्ठ—३, आकार—१०। × ६। इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६६, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७६५ से १८३३ के बीच, प्राप्तस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या-विभाग, काँकरोली, हि० व० स०—३६, पु० स० १४।१० ।

आदि—॥ श्री द्वारकेशो जयति ॥ अथ श्री ब्रजभूषण जी महाराज बड़े तातजी कृत नीति विनोद भाषा में लिच्यते ॥

प्रथम तो वंद्याव होय सो अन्याश्रय न करें ।

धर्म करने सो मन प्रसन्न सो करने ॥ २ ॥ खविद को प्रसन्न राखे सो चाकर ॥ ३ ॥

समय में बुरि चले तो दुख लगभ्य कें कहे सों सावधर्मी ॥ ४ ॥ खाविंद प्रसन्न होय तब अरज करे तो लगे ॥ ५ ॥ सारा उठे पीछे तुरत अरज न करे ॥ ६ ॥ स्वाधिन खाविंद सबको भली चाहे ॥ ७ ॥

मध्य—सांच कुं आंच नहीं ॥८०॥ स्त्री स्नेह तो और भयते बस रहे ॥८१॥ यश प्रिय नहीं सो काहु काम को नहीं ॥८२॥ अपने नाम तें प्रसिद्ध सो उत्तमोत्तम ॥८३॥ पिता के नाम सुं प्रसिद्ध सोहु उत्तम ॥८४॥ माता के नाम सुं प्रसिद्ध सो मध्यम ॥८५॥ रित्र सुसर के नाम सें निकष्ट ॥८६॥ बड़ी मजलस को बैठन वारो दगा न खाय ॥८७॥ पतीव्रता सो अभागे पती को वेठें ॥८८॥

अंत—दुर्जन सनेह फुटे पीछे संघे नहीं ॥१४५॥ लोभ हे वहां और अंगुन को काहा काम हे ॥१४६॥ सत्य हे तो तपस्था को काहा काम हे ॥१४७॥ मन पवित्र न होय तो सर्व धर्म वृथा ॥१४८॥ सौजन्य सो अपने होय ॥१४९॥ महिमा हे तो गैना को काहा काम हे ॥१५०॥ उत्तम विद्या हे तो धन को काहा काम हे ॥१०१॥ अपजस हे सीई मृत्यु हे ॥१५२॥

विषय—नीति के १५२ वाक्य लिखे हैं ।

विशेष ज्ञातव्य—यह “धौल” की पुस्तक है । इसमें करीब ११-१२ पुस्तकें लिखी हुई हैं । १ से ३१ तक पृष्ठ सख्याएँ लगी है । बाद में पृष्ठ सख्या नहीं लगी है । पुस्तक जीर्ण और सिली हुई है ।

सख्या ४०३क. प्रभूपूर्ण पुरुषोत्तम को रूप तथा गुण नाम वर्णन, रचयिता—गो० श्री ब्रजभूपण जी दीक्षित, पत्र—२७, आकार—३१ × ५॥ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२. परिमाण (अनुष्टुप्)—२१८, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८३०, प्राप्तस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० ४२, पु० स० ७ ।

आदि—श्री वल्लभाधीश चरण कमलेभ्यो नमः ॥ अथ पुष्टि मार्ग स्थित प्रभु पूर्ण पुरुषोत्तम कोरूप तथा गुण तथा नाव वर्णन करत हे गोस्वामि श्री ब्रजा भर्ण दीक्षिते ख्या ख्यान ॥ रागुसारंग जे वसुदेव कीए पूरण तप वि तेईफल फलित श्री वल्लभ देव ॥१॥ पुष्टिमार्गीय भक्तन को प्रगट कीए भूमि विये । फल मृत्य प्राप्त के निमित्त जे कृष्ण भगवान् पूर्ण पर ब्रह्म श्री वसुदेव जी को तपपूर्ण कीए ॥

मध्य—पृ० २७ राग हमीर ।

प्रगटित सकल सृष्टि आधार ।

श्रीमद वल्लभ राजकुमार ॥ १ ॥

ध्येयं सदा पद अंबुज सार ॥

अगनित गुन मह माजू अपार ॥ २ ॥

श्रीकृष्ण प्रथम श्री वसुदेव ज् को वरदानार्थ प्रगट भए ।

तेई संपूर्ण सृष्टि के आधार ।

उत्पत्ति स्थिति प्रलय के कर्ता कृष्ण सदानंद फलरूप तेई अब प्रगट भए सो कहत हे ।

अंत—प्यारी जू को वदनु पान पन्यों जों अद्भुत नैन को इह आहार ॥

मकल पाक पीय प्यारी सिखए अमगन की परसार ॥ २ ॥ ३३ ॥

श्री ॥

इति कीर्तन अर्थ तथा पद संपूर्ण संवत् १८३० के पीस वदि २ बुधे प्रातः लिखितं विद्वल नायजी औरस्तु ॥

विषय—श्रीकृष्ण के चरित्र और गुण वर्णित हैं ।

विशेष ज्ञातव्य—इस पुस्तक में प्रथम 'नवरात के कीर्तन' और बाद में ये कीर्तन लिखे गए हैं ।

संख्या ४०३ख. बल्लभाख्यान सटीक, टीकाकार—ब्रजाभरण जी दीक्षित, कागज—देशी, पत्र—४८, आकार—७ × ५॥ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—७६२, रूप—साधारण, गद्य, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ४५६, पु० सं० १११ ।

आदि—॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ श्री बल्लभाचार्य चरण कमलेभ्यो नमः ॥ श्री गोविंद देव कृपया श्री विठ्ठल नाथ जी चरण कमलेभ्यो नमः । श्री गोविंद देव कृपया श्री ब्रजाभरण दीक्षितेन व्याख्या क्रियते ॥ तत्र एक समे श्री गुसाई जी श्री गोकुलतं राजनगर पधारे । तसमे असारुश्रामे भाइला कोठारी के घर पधारे । तहां भाइला कोठारी ने अपने जवाई गोपालदास रूप पुराके बासिको प्रसाद लेवेको बुलाये । तहां श्री गुसाई जी के दर्शन कीये । तब श्री गुसाई जी पूछे । यह कोन हे । तब भाइला कोठारी ने कह्यो जो गोमती को बर हे ।

मध्य—पृ० ४६ राग सामोरी । श्री विठ्ठल सुख कारि नामे निःपाप थाय नर नारि । दुर्गति सकल निवारो प्रगटथा ब्रजपतिराज विहारी ॥१॥ मायिक मत जेणो खंड्यो, भक्तिमार्ग बहुपेरे मंड्यो । उत्पथ जन सर्व दंड्यो, मुख हेतु कुशब्द वितंड्यो ॥२॥

टीका—श्री हरिः ॥ श्री लक्ष्मी सहित विठ्ठल नाथ जी सुख कर्ता भक्तन को निज के नामोच्चारण तें निःपाप नर नारि होत हे । दुर्गति सकल निवारण करे । ब्रजपति रास विहार कर्ता प्रगट भये सो कोन तहां कहता हैं ॥१॥ मायिकमत जिन खंड कीयो । भक्ति मार्ग जिन बहुत प्रकार सो मंडन भूषण रूप स्थापित कीयो । उत्पथ कहतें पाखंडी जनको दंड दीये । मुखेन के हेतु कहे निमित्त कुशब्दको वितंडा कहे । व्यवस्था रहित कहे ॥२॥

अंत—पुत्र पौत्र सुख केम कहू जो तू मुख माए करे । श्री विठ्ठल कल्पद्रुम फल्यो शाखा प्रसरी अनेक रे रसना ॥१४॥ इति श्री गोपालदास कृते बल्लभाख्याने कडुवा नवः समाप्ताः ।

टीका—पुत्र पौत्रादि सुख में कहा कहू मुख में एक और श्री विठ्ठलनाथ कल्पद्रुम फल्यो तार्की शाखा अनेक बहुत प्रसरी, फली यातें प्रागं बाणीहू को गम्य नहीं कृपा करे तो भक्त होई ॥१४॥ इति श्री ब्रजाभरण दीक्षित कृते बल्लभाख्याने बल्लभायां कडुवा नवमः ॥

विषय—श्री आचार्य जी महाप्रभू जी और श्री गुसाई जी के चरित्र का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—मूल ग्रथ गुजराती भाषा का है जिसकी प्रस्तुत टीका ब्रज भाषा में है ।

संख्या ४०४. नित्य सेवा विधि (आह्निक), रचयिता—गो० श्री ब्रजराय जी, निवासस्थान—अहमदाबाद, कागज—देशी, पृष्ठ—३७, आकार—५^३/_४ × ७^३/_४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६६६, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८५०, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ६१, पु० सं० ५ ।

आदि—॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ अथ नित्य सेवा विधि लिख्यते ॥ नत्वा श्री बल्लभाचार्यान् पुष्टिमार्गं प्रवर्तकान् । तदंगीकृत भक्तानां माह्निकं सु विचार्यते ॥१॥ श्री विठ्ठलेश पादाब्ज पारागान् भावयाम्यहम् । पुष्टिमार्गं प्रवृत्तानां भक्तानां बोध सिद्धये ॥२॥ अथ सूर्योदय तें पहिलें रात्रि घडी ६ अथवा ४ रहे तासमें सोबत तें उठि भगवन्नाम शरण मन्नादि लेत रात्रि

को वस्त्र बदलि हाय पाउ धोय कुल्ली ३ करि उत्तर मुख वेठि । नाम श्री आचार्य जी महाप्रभु को ले विज्ञप्ति सो दंडवत करिये ।

मध्य—पृ० १८

गुंजा माला हार के नीचे धराये । ततश्चन्द्रिकापरणम् ॥ मिलिनान्यो न्यांग कांति चारु चिक्य समं विभो । अंगी कुरुत्वोत्तमांगे केकि पिच्छमति प्रियं ॥१॥ चंद्रिका दाहिनी दिसि धरिये । ततो अंजन कुर्यात् । गोपरत्री दृक्कृतिमतं श्रीमत् शृंगारात्ममंजनं । शोभायं मात्म बदन मंगी कुरु व्रजाधिपः ॥६३॥ श्याम स्वरूप होय तो मीना के अलङ्कार धरिये । गौर स्वरूप होय तो काजर को अंजन करि झुव पर बिटुका करिये । ततः वेणु धारण ।

अंत—अरु एतन्मार्गीय के मुख सो श्रीमद्भागवत कथा ग्रंथादि श्रवण करिये । उपरांत अलौकिक तथा लौकिक कार्य होय तो करिये । पाछे इछा होय तो स्वस्त्री समाधान करिये । परतु विषयासक्ति विशेष न राखिये । उवतं सन्यास निराण्ये । विषयाक्रांत देहानां नावेशः सर्वदा हरेः । किंच । पाछे स्वच्छ होय चरणामृत ले निरोध लक्षण को पाठ करि सोइये । श्री मदाचार्य जी को श्री गुसाई जी को स्मरण बरि अंतकरण भगवद् लीला बिछे राखिये । निद्रा भावार्थ ततु सुखार्थ करिये । अरु चतुर्पटि अपराध तें नावधान रहिये । या भांति सर्वदा रहे । कृतार्थ होइ । किमधिकम् । श्री वल्लभाचार्य मते फलं तत् प्राकट्य मंत्रा व्यभिचार हेतुः । यमैव तस्मिन्नवधोक्त भक्ति स्तत्रोपयोगो जिल साधनानां ॥२०४॥ इति पुष्टिमार्गीयाह्निकम् । गोस्वामि श्री व्रजराज जी कृत संपूर्णम् ॥ श्री गोपीजन वल्लभाय नमः ।

विषय—पुष्टिमार्गीय वैष्णवो को प्रात काल से लेकर शयन पर्यंत किस प्रकार आह्निक कर्म और भगवत् सेवा करनी चाहिए प्रस्तुत पुस्तक मे उन सब बातो का वर्णन है ।

संख्या ४०५. भाषा ज्योतिष, रचयिता—“राव शंकर दास, कागज—देशी, पत्र—३३, आकार—८ १/२ × ५ ३/४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—८६५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १८६० वि०, प्राप्तिस्थान—प० शिवकुमार पाडेय, ग्राम—घाता, पो०—घाता, जिला फतेहपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री रामानुजाय नमः ॥ अथ भाषा जोतसलित्यते ॥

॥ दोहा ॥

समूह परत नहिं सं सत्रत जाकी जग मै साप ।
ताते जोतिक भेदु कछु वरनत भाषा भाप ।

॥ अथ दशकर्म निरूपते ॥

॥ कवित्तु ॥

रेवती और उत्तरा रोहिनी अगसे सिर मूल अनुराधा हस्त सुभ स्वाती उर आनिर्भ्रं । तुला वृष कन्या मिथुन गुन लग्न चारु सोमे बुध सुक्र गुरुवार सदा जानियं । मार्ग आषाढ़ माह फालगुन वैसाय जेठ परमाश्री दुतीया तीज पांच ठीक ठानियं । छठ श्री सात आठ ग्यारा श्री त्रौदस जान परम समेत विधि व्याह्रु की वपानियं ।

अंत—

॥ वय भाव ॥

नैव वहन बहु पीर होइ । राज समीपी तुल्य होइ ।
रिपु नाम सुचित्त मन तै न होइ । गुदा अंग अति पीड होइ ।
पचुवंत बहु विध वपान । वय भाव के तव हपर लिए जान ॥

इति श्री भाषा जोतिक । श्री रावसंकर दास कृतौ लग्न प्रकास द्वादस भाद । संपूर्ण । संबत् । १८६० पोष वदी १२ शुक्रे संपूर्ण समाप्त लिख्यते । लाला दलगंजन । भुमांग । मन भोज की गड धरिया गंज । श्री ॥

विषय—फलित ज्योतिष विषय वर्णित ।

सङ्ख्या ४०६. जोगरतन, रचयिता—शकरद्विज, कागज—देशी, पत्र—२, आकार— $११\frac{१}{४} \times ४\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिगृह्य) —६, परिमाण (अनुष्टुप्) —४६, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६०१ वि०, प्राप्तस्थान—प० सीताराम जी मिश्र, ग्राम—ग्रहरौली, पोस्ट—सलेमपुर, जिला—गोरखपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः. श्री शिद्धेश्वर्य्यै नमः ॥

गौरिगणेश सारदा शोभु श्वरोश्वति ।
सा ब्रह्मा कमलापति सहित वन्दो गुरु पद कज ॥
करहु कृपा मम उर वसि वुद्धि करहु प्रगास ।
“शकर द्विज” निज जानिके हृदय करहु नेवास ॥
वार वार शूमिरन करो कर जोरि करो प्रनाम ।
करहु कृपा मम नाथ तुम दुष्ट वुद्धि पुनि जाए ॥
वैठे रहो निजु भवनते चिहुकि उठे जीव माह ।
अस मन भै पुनि मन मे किछु अंपज करो उच्चार ॥
श्रीषधि इ सभ लिषी-विचारो.....
वत्सर इदु शून नद महि कन्या कृष्ण दि(व)स निज जान ।
अकवार वि उदयेते घटी नेत्र सुभ जान ॥
अस दिन शुभ शुदीन जानि के किन्हो ग्रथ प्रगास ।
“शकर” अस पुनि क(ह)तु है “जोगरतन” है नाम ।
तुह प्रताप गुण गाइहो वेद ग्रथ गुन पाइ ।
श्रीषधनाथ विचारिहौ सरस पुट पुनि हिम
कलक फाट अवलेह पुनि क्वाथ चूर्ण वटि....
:०: :०: :०:

अंत—

॥ अथ नाडी लछन ॥

स्त्रि वाम पुरुष कर दक्षिण अगुठा मूल नाडि कर जान ।
अति चंच नाडि पुनि चले । ताके पित बहुत बल करे ॥
:०: :०: :०:

अथवा

लवातिति अवर वटेर । धमनि चलं पित्त कर फेर ॥
गवरा मेहुक अवरी कुलेर । इन्हू कहव वाए कर फेर ॥
हंस कपोत चले पुनि जैसे । ताके कफ कहव पुनि तैसे ॥
सर्पाकार गमन करेव धमनि वाय पित्त कहत पुनि तैसे ॥
नाडि हंस पित्त चले पवना ददुल चाल वाए करे गमना ॥
तिनि अ.....
:०: :०: :०:

—अपूर्ण

विषय—आयुर्वेद विषय का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ के आरम्भ के केवल दो पत्रे मिले हैं । रचनाकाल सवत् १६०१ वि० है । लिपिकाल का पता नहीं ।

संख्या ४०७क. तत्त्वविवेक, रचयिता—शकराचार्य, कागज—देगी, पत्र—५, आकार—११ × ५ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—८०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस্থान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ तत्त्व विवेक लिख्यते संक्राचार्यं कृति श्री परमात्मने नमः ॥

श्री ब्रह्म एक शुद्ध चैतन्य दुसरि माया, ब्रह्म माया का जोगः ॥
जैसे ब्रह्म का छाया ब्रह्म छायासहित नहीं ॥
ब्रह्म बीन छाया नहीं ब्रह्म माया अंतो जोगः ॥
माया जड़ ब्रह्म चैतन्य ॥ माया उपर ब्रह्म ॥ ब्रह्म उपर कोई नाही ॥ एकारो करियते ब्रह्म ॥ तब माया इच्छाधरी ब्रह्म की सक्ति तीन ॥ इच्छा क्रिया ज्ञान ॥ माया की सक्ति तीन ॥ संसय ॥ मिथा ॥ द्विप्रीय ॥ माया का नाम पंच ॥ माया कहीये ॥ आकास कहिये ॥ सुनि कहिये ॥ प्रकृति कहिए ॥ सक्ति कहिए ॥

मध्य—

मन बुधि चित्त अहकार ॥ चित्त अग्नि को सरूप ॥
अहंकार वायु को सरूप ॥ मन तोय का सरूप ॥
बुधि पृथी का सरूप ॥ इति चतुष्ट अंतःकन ॥
सर्वद आकास का सरूप ॥ सपरस वायु का सरूप ॥
रूप अग्नि को सरूप रस पानी का सरूप ॥ गद्य प्रथी का सरूप ॥

इति पंच तनमात्रा कहिए ॥

अंत—पंच तत्व को विनमं ॥ नव तत्व को अवतरं ॥ दोइ सरीर का विधंस कांज ॥ तब पद पाप्ति होय ॥ उर मियहु सीत उस्न ॥ सुष दुष ॥ मान ॥ अपमान ॥ ऐछहु गर्व स्वछंद मुकभा ॥ वाचा च्यारि ॥ परां ॥ पसांती ॥ मधिमा ॥ वंपरी ॥ गंगाघोष ॥ प्रति वसते ॥ कहन हारा कूटा ॥ गंगा तीरे घोष ॥ प्रतिवसते ॥ कहन हारा साचा ॥ लोह चुंबक न्याय ॥ अरहट ॥ घटक न्याय ॥ अंतो ब्रह्म जज्ञास कर्यं ॥ सन्यास च्यारि ॥ बोध ॥ कुटी-चर ॥ हस परमहस ॥ परमहंस सन्यासी ॥

इति श्री संकराचार्य विरंचिते ब्रह्म जज्ञास उपनिषद् वेदात्त संपूर्ण ॥ तत्त्व विवेक ग्रंथ ॥

विषय—ब्रह्मज्ञान का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत हस्तलेख मे निम्नलिखित रचनाएँ सकलित हैं—

- | | |
|---------------------------|-----------------------|
| १. तत्त्व विवेक—शकराचार्य | पत्र सख्या ६-१० तक । |
| २. गोरख गणेश सवाद | पत्र सख्या १०-१३ तक । |
| ३. पंच सस्कार | पत्र सख्या १३-१४ तक । |
| ४. प्रश्नोत्तरी | पत्र सख्या १४-२१ तक । |

संख्या ४०७ख. गजा पुण्याजनि, रचयिता—“शकराचार्य” (?), कागज—देगी, पत्र—३, आकार—१० $\frac{३}{४}$ × ४ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस্থान—श्री १० अमरनाथ मिश्र, असवरनपुर, पो०—ओड़ना, जिला—जौनपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

सगरज तारिणि विश्व विलासिनि भाविनि देव सुरेंद्रनते ।

जल भवजन्म मुरारि हरा चितपाद सरोरुह हंसगते ॥

कलिं कृत कल्मष नाशिनि तारिणि भक्त जनेष्टद भावरते ।
 जय जय हे हर मौलि विलासिनि पाहि सुधामयि हसगते ॥ १ ॥
 हिम गिरि नदिनि नेत्र कटाक्ष दभंग सुलक्षित रोष परे ।
 जलमद रूप विलासिनि नीरज वीचि कराकर बल उपरे ॥
 क्षिति तल भूपणि सागर चारणि कारिणि वारि सुधामधुरे ॥
 जय जय हे हरमौलि विलासिनि पाहि सुधामयि हसगते ॥ २ ॥

अंत—तव तट वासि विलासित वामन योगि जनापित तौर वरे ।
 सुरवर कामिनि कुकुम चदन पुष्प फलाक्षित नीर धरे ॥
 कलि भवनाशिनि स्वक पोषणि दुष्ट जनेपि च मुक्त करे ॥
 जय जय हे हरमौलि विलासिनि पाहि सुधामयि हसगते ॥ ६ ॥

:०:

:०

:०:

भवे मोहावर्त्ते विषम विषयं पन्नग गणं प्रकीर्णं तापाना तृतीय जल धीमानि पतित ॥
 महामोहाघातं विगत गमने पाप जटित महामाये गगे चरण कमल देहि शरणम् ॥ १० ॥ श्रुती
 श्रंघा वद्धा गुरु वचन वाचामृत रस मुहुः पीत्वा गगे परमपदया नामिल्लपित ॥ शुचिः प्रात
 साय यदि पठति नित्य तव तटे सपुष्परकार्यैः स्तवन विधि यंजाति निलयम् ॥ ११ ॥

इति श्री मच्छंकराचार्यं विरचितं गंगापुष्पाब्जलि स्तोत्र समाप्तम् ॥

विषय—गंगा माहात्म्य वर्णन ।

सख्या ४०८. वृत्ताल पच्चीसी, रचयिता—शंभु, कागज—देशी, पत्र—१०४,
 आकार—६,३० × ६,३० इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमण (अनुपृष्ठ)—१३५२,
 अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकार—सद्वत् १८०६ वि०, प्राप्तिस्थान—
 श्रीरुत गोपालचंद्र सिंह जी एम० ए०, सिविल जज, सुगतानपुर (स्थायी पता—मोहला-
 नजीरावाद, कोठी न० ११७, लखनऊ) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

॥ दोहा ॥

छवि कदंब लधि श्रव के उमडतु मोद अषड ।
 कलरव करि करिवर वदन फेरत सुडादड ॥

॥ कवित्त ॥

एक समं गिरिराज की नदिनी आई अन्हान कहूँ सरसी ते ।
 भासुर भाल दियेँ दल कौल को आनन सो छवि की छवि जीते ।
 सो हठि लीबे को सुडि पसारो तहाँ गनना ऊ आइ अभीते ।
 चीन्हि कँ चोप सो दौरि मनो हरि लेत सुधा अहिराज ससी ते ॥ २ ॥

॥ छंद हरिगीतिका ॥

ध्रुव धरन षलदल मलन जिन अचरन कृत जुग के किए ।
 सनमान दान विधान जज्ञ विधान कँ जग जस लिये ॥
 सुरराज कुल बल कुमुद को मुद दानि पूरन इंद्रु भो ।
 निज बस वारिज को दिनेस तिलोक चद नरिदं भो ॥
 पुनि भयो आनद कंद पृथ्वीचंद नृप ताको तर्न ।
 भुज जोर सो जुरि जंग मे जमराज हू नहि जो गर्न ॥
 पुनि भयो ताको अजयचंद अरिद कुल दल जिन हने ।

जगमगत जाको जस अजीं सुर मुनि असुर जन गन भनै ॥ ४ ॥
 तिनके भयो पुनि देवराज प्रचंड रंया राज है ।
 रनरंग निरपत चटत जाकै चौगुनी चित चाउ है ॥
 पुनि भयो भरव ते उदंड-प्रचंड भरव दासु है ।
 हरि साहिबी अरिवरन की गिदरीन दीनो वासु है ॥ ५ ॥
 तिनके धराधुव धरन को नृप भयो ताराचंडु है ।
 जिन करि अकंटक भुव हरयो सब प्रजनि को दुप ददु है ॥
 सग्राम राज भयो वली सग्राम इलहु ताहि के ।
 अति धवल कवल समान जगजगि मगि रह्यो जसु जाहिके ॥ ६ ॥
 पुनि कनकसिंह नरिदं ग्रीपम भानु सो जिनके भयो ।
 जिनको समर भट भीर सो छन भरि न तन अगयो गयो ॥
 पुनि भयो पृथ्वीराज पृथ्वीराज पृथु कंसो कियो ।
 जम जूह जिन जग मे लियो वनवास वरिन को दियो ॥ ७ ॥
 तिनके पुरंदर सो प्रवल प्रगटयो पुरदरराज है ।
 जिनकी महाभय मानि कै नृप किहि न परथो पाउ है ॥
 करवाल जब कर लेहि तव रिपु काल कहि कहि कवि भनै ।
 रन होइ सन्मुख सुभट को जमराजहू नहिं जो गनै ॥ ८ ॥
 पुनि भयो अरि मदकदन भरदन सिंह रंया राज है ।
 जिन पाइ पति वसुमति हिंएँ दिन दिन बढ़यो चित चाउ है ॥
 कलिजुगन को पितु हूँ रह्यो तिहि छोस तेँ डरि डरन सो ।
 तजि दामु वृष मन मुदित हूँ फूल्यो फिर चहुँ चरन सो ॥ ९ ॥
 जगवद आन(?)द कद चक्र कुटुब को करव भयो ।
 रणधीर वीर गभीर निरमल सुजस जिन जग मे लयो ॥
 जरिजात तासु प्रताप पावक तेँ घनी अरिवर अनी ।
 तिनके भयो सुरनाथ सो रघुनाथ नृप वगिसर घनी ॥

॥ दोहा ॥

सना मध्य वेठे हुते एक रम रघुनाथ ।
 वीर धीर उदभट सुभट सुजन बहु लिये साथ ॥ ११ ॥
 कह्यो कृपा करि "संभु" सो जिय मे मानि सनेहु ।
 यह वेताल कथा हमे भाषा मे करि देहु ॥ १२ ॥
 नंद व्योम धृतिजानि कै संवतसर "कविसंभु" ।
 माघ अंध्यारी द्वैज को कीन्ही तव आरंभु ॥ १३ ॥
 प्रथम बैस वर वस के वरनि कहे सब भूप ।
 बोज पुंज गुनगननि सो सहास सील अनूप ॥ १४ ॥
 पर्चाविस वेताल मे कहत कथन को सार ।
 जाहि सुने तेँ चित्त मे होति चतुरता चार ॥ १५ ॥

अंत—सुन्यो नियाउ भूप सो जब । सरक्यो मृतकु काय ते तव ॥
 चलत पंथ मे लगी न वार । लग्यो दौरि कै वाहीं डार ॥

:०:

:०:

:०:

असन वसन दै रुचिर करि दैडारत कै पीस ।
 पूजत श्रीरहि छोडि मनु देह गेह को ईम ॥
 थिर संपति नहिं गेह की गृसे रहत तन मौत ।
 जो न भवें सुप कीजिए मुएँ कौन को होत ॥

पूजत लोग प्रेम सोँ गई । वाके पूतहि देत वराई ॥
हरगाडी कोँ अँचत जौन । जग मे पीरप करत न कौन ॥
:०: :०: :०:

—अपूर्णा

विषय—संस्कृत ग्रथ वैताल पच्चीसी का हिंदी पद्यानुवाद ।

रचनाकाल

नंद व्योम धृति जौनिकेँ सबत्सर कवि सभु ।
माघ अँध्यारी हँज कोँ कीन्हो तव आरभु ॥१३॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अत से खडित है । कुल १०४ पत्रे उपलब्ध हैं जो आरभ से क्रम-पूर्वक हैं ।

संख्या ४०६. शिवस्तोत्र, रचयिता—शभुनाथ कागज—आधुनिक, पत्र—४३,
आकार—७ १/१ × ६ ३/४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५१, पूर्ण,
रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६२६ वि०, शकाब्द १७६१, प्राप्ति-
स्थान—ददन सदन, पो०—अमेठी (इ० आइ० आर०), जिला—सुलतानपुर (अवध) ।

आदि—शिवः श्री गणेशायनमः ॥

शिव केहि शरण गए नहि पाला ।
गने न शरणागत कर ऐगुन सङ्कर दीनदयाला ।
परपूरुष सग रमित रैन दिन विन्दुग द्विज की वाला ॥
ताकह सिव निज गनमह गनिकेँ सुनते राग रसाला ॥
छिव छिव कहि प्रदोष ब्रत घोषहु रहि श्रीधर गोपाला ॥
गोपराज सिव कौन ताहि के पीत्र भए नँदलाला ।
जल बिलपत्र रिसाइ बहाई सोमनितिय सिव भाला ॥
देवी रूप वनाइ सभु तेहि दे निज पद अहिमाला ।
“महारानी किसुनाथ” कुअरि की सुत दे करहु निहाला ॥
सरणागति जानि “सभुनाथ” को दीजे सुर रूप बिसाला ॥ १ ॥

अत—प्रत्यगिरे मनगिर परिपालयेँ नोमनासि नाशय विभाशवचाशुकीर्तिम् ।

श्रीध्रविधेहि किशुनाथ कुअर्येँभोष्ट देहि स्वमाधव प्रतापनृपाय पुत्रम् ॥ ५ ॥

श्री सवत् १६२६ शाके १७६१ सन् १२७७ श्री रामः ।

विषय—शिव स्तुति की गई है ।

संख्या ४१०. सगीत दीपिका, रचयिता—शाशगधर (? शाङ्गधर), कागज—देशी,
पत्र—७, आकार—६ × ४ १/४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—१४८,
रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—कुँवर लक्ष्मण प्रताप सिंह जी, ग्राम—
साहीपुर नौलखा, पो०—हडिया, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—.....

॥ कवित्त ॥

जराधर गगाधर सीस शशिकला सीहै नीलकंठ द्विगयन कीन्है वर वेश को ।
कर्पूर गौर तन सेवें नंदी आदिगण मुंडमालाधरे अरु हार धरे शेष को ।

डमरु त्रिशूल कर शारंग को देत वर ओढे जग त्वचा ताकी कंसे अस्तुति के सको ।
भशम लगाये हरि ध्यान धरो सुभ करो "भैरव" सुरागी सुप देत देश देश को ॥ ५ ॥

॥ इति भैरव स्वरूपम् ॥

सुवरणगौरि सुंभ कुकुम लगाये अंगुप सग परिरभ सोभा अधिकानी है ।
कमल लुभाय जाके कमल से हाथ पाय चद्रमूखी कमल नंनो जो मनोजराणी है ।
चिबुक उठाय पिय चंचत है वार वार नारो नील शारी वोढि पहिचानि है ।
"भैरवी" प्रथम तिय पौडश शीगार किये पंती मध्यमादि "द्विज सारंग" वपानि है ॥ ६ ॥

॥ इति मध्यमादिस्वरूपम् ॥

:०:

:०:

:०:

अत—

॥ अथ चलुविधी ग्राहः ॥

ताल धरनु कहू ग्रह कही चारि भाति अहि जानु ।
सम अतीत सु अनागतौ विषम वजन्थोमानु ॥
ताल वरन एक सग जह कही समग्रहि सोइ ।
प्रथम ताल पुनि वरण सह सो अतीत ग्रह सोइ ॥
प्रथम वरन पुनि ताल जह नो अनगत ग्रह जानि ।
विषमग्रह कह ताल कछु वरणो "शारंगपानि" ॥२०॥

॥ अथ शिनुपोत्पन्नास्ताला ॥

द्वै गुरु लघु प्लुत को मिले चचलपुट को ताल ।
इति पच पुटोष्टमा ॥३॥

त्रिक भगन जुड्य मिलि वाव पुट शुने प्रवीन भुआला ॥३॥

॥ इति परामात्रिक स्नाचपुटः ॥

प्लत लघु द्वै गुरु लघु जहा पुनि पुजित अत जो होइ ।

नाम

:०:

:०:

:०:

॥ दोहा ॥

विधि हरि हर सस्वती भरतादिक रिपि मानि ।

गीत दीपिका ग्रथ एह कीन्हो "सारंग पाणि" ॥५१॥

विषय—राग रागिनी स्वरूप, मगीत के पाँच लक्षण और पचीस दोप तथा ताल आदि का वर्णन ।

ग्रथ प्रकाशो (अध्यायो) मे लिखा गया है । खडित होने के कारण प्राप्ताश मे दो ही अध्यायो की पुष्पिकाएँ रह गई हैं । पढ़ने मे राग रागिनियो का स्वरूप और दूसरे मे सगीत के पाँच लक्षणो और पचीस दोपो का वर्णन है । तीसरा अध्याय सभवत ताल विषय पर था जो अपूर्ण रह गया है । डम रचना मे विधि, हर, हरि, मरस्वती और भरत ऋषि के मतों को आधार माना है । विशेष ज्ञानव्य—ग्रथ खडित है । मख्या ४, ५, ७, ८, ९, १० और ११ के पत्रे उपलब्ध हैं ।

रचयिता का नाम अध्यायो की पुष्पिका के अनुमार सारंगधर विदित हुआ है । भैरवी के स्वरूप वाले कवित मे नाम के माय "द्विज" भी प्रयुक्त हुआ है, अत ये ब्राह्मण थे । पुष्पिका अग इम प्रकार है —

"इति श्री सारंगधर विरचिताया मगीत दीपिकाया रागाध्याय शारोद्वारे राग राग-रागिनी स्वरूप वर्णन द्वितीय प्रकाश ॥"

एक स्थान पर 'सारंगपानि' नाम भी मिलता है —

दोहा

विधि हरि हर सस्वन्ती भरतादिक रिधि मानि ।

गीत दीपिका गथ एह कीन्हो 'सारंग पारि' ॥५१॥

सख्या ४११ भावशतक, रचयिता—शारंगधर, वागज—बालपी का हाथ का ब
पत्र—८, आकार—१२ $\frac{1}{2}$ × ८ $\frac{1}{2}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—२,
पूर्ण, रूप—नवीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—म० १९६६ वि० (म० १९७२ की लि
प्रति की नकल), प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।

आदि—सारंगधर रचित भाव शतक

॥६०॥ श्री गणपतये नमः ॥ भावशतक दूहा लिप्यते ॥

प्रश्न :—नायक आतुर कामवस वसन उधारत वाम ।

मुग्धा मुख नम्रित कियो कहि सुजाण किहि काम ॥ १ ॥

अर्थ :—सुरत समर कारण इहा आयो आतुर कंत ।

मनु मुग्धा वृकत कुचनि जढह काज बलवंत ॥ २ ॥

प्रश्न :—विरह निसाम उसास अति विमुख चइन नहि धाम ।

चातक मनि आनंद तय कहि सुजाण किहि काम ॥ ३ ॥

अर्थ :—उरध अधिक उसास चढि भई धूम आकार ।

चातक जिय जान्यो सजल आए जलद अपार ॥ ४ ॥

प्रश्न :—शिशि किसोर समरहि कहा कहा तरुण तन ऐन ।

यह वृक्षो सोचहु कहा वेगि कहउ किनि वैन ॥ ५ ॥

अर्थ :—शिशि किसोर पायन समर तरुण भये तन ऐन ।

यहे परख्या जानिये तहाँ तहाँ चल ऐन ॥ ६ ॥

मध्य—

प्रश्न :—जुग उरोज उन्नत भए मदनराई के राज ।

नेरानि लीनी वक्रता कहि सुजान किहि काज ॥ ६६ ॥

अर्थ :—उच्च भए कुच जुग जवे भए वक्र स्यो नैन ।

मन मेले काजर भरे तेन सहे पर वेन ॥ ६७ ॥

प्रश्न :—वामे कर कोवण गहि दछिन सर संधान ।

वाण श्रवण रेकत भए कारण कीन सुजान ॥ ६८ ॥

अर्थ :—कानहि छुडत वाण रावण के दस सीह सहे ।

दीजइ सीख सुजान एकहि हनो कि दस हनो ॥ ६९ ॥

:०:

:०:

:०:

अंत—

प्रश्न :—तव समीपि रसनायकर नित प्रति पिय मुख पाइ ।

पुलकति बढत उरोज अति कहि सुजान किहि भाइ ॥ २२ ॥

अर्थ :—पिय तियके हियरे विदे ज्यो ज्यो कौयो प्रवेश ।

आसन तजि वाहिरि भए निरखि नैन वरवेस ॥ २३ ॥

प्रश्न :—होइ अजान सुजान बुनि रीक राज नमाज ।

सारंगधर बुनिभावशत भनहि खिलावत काज ॥ २४ ॥

अर्थ :—जाकउ मनरथ ते विरस सरस करण की आस ।

सारंगधर ता तोप कौ विरचित विविध खिलास ॥ २५ ॥

दुख गंजन रंजन हृदय भंजन नित चित ताप ।

सारंगधर बुनि भावशत विधि विवारनु आप ॥ २६ ॥

इति भाव शतक दूहा समाप्त । सवत् १९७२ श्रावण अदि १ पं० मोहनेनले

विषय—प्रश्नोत्तर के रूप में ऋग्वेद भावात्मक दोहों का संग्रह ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल, लिपिकाल उल्लिखित नहीं हैं । प्रस्तुत प्रति सवत् १६७२ में लिखी प्रति से श्री अग्रचन्द नाहटा द्वारा की गई नकल है । इसानिये इसका लिपिकाल वर्तमान काल ही नमभना चाहिए । प्रेमविलास—प्रेमलता कथा के आधार पर यह सवत् १६६६ के उधर उधर नकल हुई है ।

सत्या ४१२ उरवसी नाममाला या उर्वशी माला, रचयिता—शिरोमणि, कागज—देशी, पत्र—१५, आकार—७.५ × ४.६ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुपृष्ठांश)—२५५, खटित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८४६, प्राप्ति-स्थान—रामनिधि शुक्ल, ग्राम—लौहरपछिम, पोस्ट—ब्रधुवा कलाँ, जिला—मुलतानपुर (अवध) ।

आदि—.....

॥ कवित्त ॥

नैननि मे खंजन की देपियं चपलता सी भोहनि मे धनुष डिढाई सी वसति है ।
दंतनि मे हीरनि की सेतता सी सेतता है अघरनि विद्रुम ललाई सी लसति है ।
कंचन सी सोहनी सरीर बलवीर वाकी बंनी वाकी नागिनी सी लोगनि डसति है ।
सूरत निहारि चलि देपियं मुरारि जाके देये और देपन की भावना नसति है ॥७॥

॥ अथ लुप्तोपमा ॥

उपमेय उपमाघरम वाचक है जहाँ पाठ ।
इक विन द्वै विनु त्रिविनु सी लुप्तोपम विधि आठ ॥८॥

॥ अथ लुप्तोपमा उदाहरण ॥

चय ऋष रमि विधि रूप वदन धुनि सिततीर दृग कीर ।
अरुन विव सित कुंद से डसत सिजुत लपि भीर ॥९॥

:०:

:०:

:०:

॥ अन्योक्ति ॥

अन्योक्ति अरु काक है अरु प्रति जु है सजाति ।
अवतें तुहि नहि लाइयें मुहि सपि कहि मुसिकाति ॥३॥

॥ वार्ता ॥

अप्रस्तुत प्रसंसा अरु अन्योक्ति ग्रंथनि के मत एक ही है तहां इतनों भेद विजातीय प्रति बहें तहां अप्रस्तुत प्रसंसा कौ जानियें जैसे धन्य विहंगनिमें सतमि इंद्र न जाचत अन्य और जसैं कवि प्रसंसा से रहि कीर करोर कहाक ॥

:०:

:०:

:०:

॥ वीतरितालंकार ॥

साधन वाधक सिध कौति विवरीत सरसाहि ।
पठई मे पर इतियह चूक सु वारीमाही ॥२०६॥

॥ सुसिद्धांत लंकार ॥

सुमिधसाध.....

अंत—

॥ नाममाला ॥

..... दीश ॥ विद्यु 'उपेंद्र' पुरुषोत्तम' सु "हृषिकेश" अरु शीश ॥१०२॥
नारायण केशव पदमनाभ गौरि गोविंद ।
स्वभू - श्रधोक्षज चतुर्भुज अमुरशत्रु व्रजचंद ॥१०३॥

सामुदेव अरु देवकी नंदन माधव नाम ।
 कंस निपूदन गरुणध्वज पीतावर जगधाम ॥१४॥
 :०: :०: :०:

॥ कल्याण नाम ॥

मंगल कुशल कल्याण शुभ भद्र श्रेय शिव छेम ।
 श्वस्तेयस भावुक भविक भव्य जहाँ जगपेम ॥२५०॥
 वक्ता सुरगुरु सौ हुती श्रोता हो सुरराज ।
 तऊ शब्द पार न लह्यौ कहा और को काज ॥२५१॥

इति श्री शिरोमणि विरचिता उरवसी नाममाला संपूर्ण शुभ ॥ लिपिकृत आसानद
 कान्यकुब्जेन अर्गलपुरे जजनोस्थाने स० १८४६ माघ शुदि १ ।

विषय—अलकार और कोश विषयो का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख खडित है । केवल १५ पत्रे उपलब्ध है । इसमें दो रचनाएँ,
 है 'अलकार' और 'कोश' । कोश के अंत में रचयिता का नाम शिरोमणि दिया है और कोश का
 नाम 'उरवसी नाममाला' । जिन पत्रों में अलकारों का वर्णन है उनके कोनों में "उ० ना०"
 लिखा है और जिनमें कोश का विषय है उनमें "ना० मा०" लिखा है । अतः पता चलता है कि
 दोनों रचनाएँ एक ही रचयिता की हैं ।

सख्या ४१३. राधाकृष्ण, रचयिता—ठाकुर शिवटहल सिंह, कागज—देशी, पत्र—
 ७७, आकार—७ × ५ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०२१, अपूर्ण
 रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—ठाकुर देवी चरन सिंह, ग्राम—बहरीपुर,
 पो० जफराबाद (जीनपुर) ।

आदि—..... ।

मन मन भयो हर्ष अति भारी	तोहि मुक्ता बहु देहि मुरारि ॥
निजकर त्वहि भूषण सजवइहैं	हम सब दर्शन करि सुख पइहैं ।
किंतु सखी यक अचरज भारी	मोहि लखि दूग फेरे वनवारी ॥
हरि को नहि देख्यो सोभावा	मोतन लखि पुनि नयन फिरावा ॥
पीछे समाचार सब पाथो	सुबलहि हरि तव निकट पठायो ॥
मोती एक चरयो तव ठाई	तुम नहीन मोती तेहि राई ॥
अरु तेहि को उपहास करारै	करि निराश तेहि हीन फिरारै ॥
तेहि अभिमान श्याम मन कीन्हा	जशुमति पह मोती यक लोन्हा ॥
जमुना तीर किये तेहि रोपण	तुरत भयो तेहि मुक्त लतावन ॥
जमुना तीर किये तेहि रोपण	तुरत भयो तेहि मुक्त लतावन ॥
दूतहि फूल फल लाग्यो ताही	कौटिन भरत परत महि माहीं ।
तेहि लै गौवन साज करायो	सुनि प्यारी मन विस्मय पायो ॥

॥ दोहा ॥

हैं अवाक मुख वचन नहि मनही मन पछिताय ॥
 कहत सखी अरु मोहि पर निष्ठुर भयो कन्हाय ॥

॥ सोरठा ॥

हाय बुद्धि अम मोर सुबलहि में बंमुख कियो ॥
 प्रीति बियो हरि तोरि ताते नहि कछु त्यहि कह्यो ॥

श्रुत—

॥ चौपाई ॥

गर्ग वंश विख्यात जहाना जेहि जन्म्यो सुमत मतिमाना ॥
:०: :०: :०:

॥ दोहा ॥

राज सिंहासन पर जवाहि बैठेव श्रीरघुनाथ ।
तासु तनय मत्री कियो धरि सुमन्त को हाथ ॥

॥ सोरठा ॥

तेहि वंशज भवहि जानि नाम शिवदहल सिंह मम ।
हरि यश कह्यो बखानि बुधजन के आनंद हित ॥
आजू कालि सब लोग साधू सिंह कहै मोहिं ।
विष्णु प्रसाद सिंह शुचि साधू भागीरथ सिंह बुद्धि अगाधू ॥
हरि के परम भक्त दोऊ जन ।

ब्रह्मचर्य ब्रत रत अति सज्जन ॥

हमरे परम मखा हितकारी । हरिनाथा वृहु अधिक पिधारी ॥
मुक्तता बलिवंग भाप्यमहै देहि उभय दिखरायो हम यहै ॥

:०: :०: :०:

यहि विधि सब देवन शिरनाई बग भाप्य निज भाप्य बनाई
:०: :०: :०:

॥ दोहा ॥

अब यह पूर्ण कया भई यथा बुद्धि अनुसार ॥
पडित जन बुध जनन सो करत यही मनुहार ॥ १ ॥

विषय—राधाकृष्ण चरित्र वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अपूर्ण है । केवल मनहत्तर पत्रे उपलब्ध है । रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं ।

संख्या ४१४. दशकुमार चरित, रचयिता—शिवदत्त त्रिपाठी, कागज—देशी, पत्र—
१७, आकार— $११\frac{१}{४} \times ५\frac{१}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२,
अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—कुँवर तदभरण प्रताप सिंह, ग्राम—
साहिपुर (नांखा), पो०हटिया खास, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

॥ सर्वथा ॥

सुद्ध दयाकर के छवि देह सुपुस्तक कीन विराजत पानी ।
वाहन हंम लसे अवंतंस सुपावन कीरति देद बपानी ।
सेत सरोज के आसन पं वसि लोक के सोक सरोज हिमानी ।
सानि सनेह हिये "शिवदत्त" के वानी जु आइ वसे द्विद वानी ॥

:०: :०: :०:

॥ दोहा ॥

धरनी चक्र समस्त नै वनबधदेस अनूप ।
नीति रीति जुत भीतिबिनु विविध वसै तह भूप ॥
वनबधह भँ अति सुभग सोभित वेलपर देम ।
वसत लोक विनुसोक तंह धनते तुलित धनेस ॥ ३ ॥

:०: :०: :०:

तापति सुरपति के सरिस अद्भुत वीर चरित्र ।
मित्रजीत भूपति भये निजकुल सरसिज मित्र ॥
जगत प्रससा होत जेहि वंस विदित चौहान ।
वछ गोती विप्यात महि उड्डट उदित कृपान ॥
धीर सिंह ताके तनं भये प्रबल रणधीर ।
को नर सकं सराहि तेहि जंसी मति गभीर ॥

:०: .०: :०:
नीतिरीति बस करि सर्व उद्यत धीर नरेस ।
पटोपुर नृपपुर क्रियो मध्य सकल निजदेस ॥१०॥

:०: .०: :०:
धीरसिंह के सुत भये समरसिंह छितिपाल ।
नृपगुरा रचि विरचि बहु लिपे भाग्य जेहि भाल ॥

:०: .०: :०:
श्री समरेस नरेस के दो सुत भे अभिराम ।
अमरसिंह जबरेस यों धरे जथारथनाम ॥१७॥
सो "जबरेस" म्हैपमनि सगलमय सदकाल ।
राजत राजसमाज में भूरिभाग्य भरिभाल ॥

:०: .०: :०:
वार वार "सिवदत्त द्विज" इमि करि बुद्धि विचार ।
तेहि विनोद कारन रच्यो भाषा दसो कुमार ॥३॥

अंत—

॥ दोहा ॥

सोमदत्त प्रिय दास लहि परिहरि चितासाप ।
करमुकलित करि कहत निज सदिनय चित्त कलाप ।

इति सिवदत्त त्रिपाठी कृते दसकुमार चरिते द्विजोपकारको नाम द्वितीय उष्ट्वासः ॥

:०: .०: :०:
रच्छत इन्हे अनेक उपाई । अटत भूमि देसहि यह घाई ॥
इन्है भीष भोजननि.....

:०: .०: :०:

—अपूर्ण

विषय—संस्कृत ग्रंथ दशकुमार चरित का हिंदी अनुवाद ।

संख्या ४१५. देवी चरित्र (अनुमानत), रचयिता—शिवदास, (स्थान—राजपूताना),
कागज—देशी, पत्र—१६, आकार—६ १/४ × ५ १/४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण
(अनुष्टुप्)—१५४, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—वाणी नागरी-
प्रचारिणी सभा, वाराणसी (ग्रंथ दाता—कृष्णसेवक मिश्र, ग्राम—सहनुडीह, पो०—बरदह,
जिला—आजमगढ़) ।

आदि—.....

चली दैत्य बहू घण्यः अवतार धरता ॥३६॥

तेवसर्व कहं कथा मांडी वात । "शिवदास" ने सदा सुप आयो मात ॥३७॥

॥ कडवां ॥ ७ ॥ पद ॥ १६४ ॥

॥ राग पूर्व छाह्या ॥

कश्यप कुलावली ऊपना. दैत्य अदीतीने पैद्य ॥

शुभ निशंभ व्येह अवतरथा प्राक्रमे पूरानेत्य ॥ १ ॥

तेरों तपकरी ब्रह्मा वश्य करया विषम ग्रह्यं वरदानं ।
 सुर नर कीथी नव्य मरुं निरभे हूं राजान ॥ २ ॥
 एह धो वर आयी ब्रह्मा गया. पाया बल वाध्यूं धरूं ।
 श्री रांम जन शिवदास केहें कहूं प्राकम येते हतग्रूं ॥ ३ ॥

अत—

॥ राग धवल धन्याशी ॥

मारकंडे रुथ वांणी ऐम बोल्याः । शाभल्य जंमुन्य वात जी ।
 शुभराय एह वूं शाभलता कोध्ये चढचो उतपात जी ॥ १ ॥
 न्यारे रक्तबीज नें आयी आजाः संन्य चढो श्रव आज जी ।
 कोण शक्ति रडाए आवाः । युध करवानि काज जी ॥ २ ॥
 पछें छासटच कोटि राक्षस मोटा येतणो नहीं पार जी ।
 गज रथ अश्व सकल साथ्ये राय चढचो तेणी वार जी ॥ ३ ॥
 :०: :०: :०:
 फोरुट प्राण तजो का पापीः कें हें ज्यो आणी गर्व जी ।
 वचन न मानें जो प्रभुता हारु तो पछें मारु सर्व जी ॥ १० ॥
 एह वूं शाभली रुद्र जी गयारेः

विषय—देवी चरित्र वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख अपूर्ण है । आरंभ में पत्र सख्या ३० और अंत में पत्र सख्या ५२ है । इनके नीचे के सख्या ३७।३८।४१।४५ के पत्रे नहीं हैं । रचनाकाल और लिपिकाल भी अज्ञात हैं ।

संख्या ४१६. दिग्विजै चपू, रचयिता—शिवदास गदाधर, स्थान—ग्राम—समोगरा, बलरामपुर रियासत, अरवध, कागज—देशी, पत्र—८२, आकार—६३/६ × ५३ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुपट्टपु)—१७४८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १६१० वि०, सन् १२६१ फसली, लिपिकाल—सन् १२६३ फसली, प्राप्तस्थान—प० लक्ष्मीदेव जी द्विवेदी, मोहल्ला—अलीनगर, गोरखपुर, जिला—गोरखपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सूची पत्र दिग्विजै चपू शिवदास गदाधर कृत लिप्यते ॥

॥ दोहा ॥

वक्र तुंड गणनाथ के मंगल चरन वषानि ।
 कारन अथारभ को तव वरने सुष पानि ॥ १ ॥
 बल बुलिने जो वचन कहि तासु वेवरा वात ।
 उत्तर ताको तासु सो पुनि उत्तर सुषदात ॥ २ ॥
 करता ग्रंथ को आगमन भूप दिग्विजै पास ।
 विजलेस्वरि रोगावती वरने तेज प्रकास ॥ ३ ॥
 :०: :०: :०:

श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गुरु चरन कमल्येभ्यो नमः ॥ श्री सरस्वत्ये नमः ॥ अथ दिग्विजै चम्पू लिप्यते ॥

गजमुष मुष तें कहत ही द्रुप रिपु मुष मुरि जात ।
 सकल सुष्य मंगल महा देत गोरिसुत तात ॥ १४१ ॥
 भक्ति भाव चित सुध्य तें निस दिन रटे गनेस ।
 वाक्य वादनी ताही को छण मंह करत सुरेस ॥ १४२ ॥

उमा उमापति हूं सदा रह तापें अनुकूल ।
विद्याधन निरमल सुजस देत नित्य सुषमूल ॥१४३॥

:०:

:०:

:०:

निरपि चाटिका अजर सुभ चावुक सब्द चकोर ।
लग्यो तरारे फिरि भरन अस्व लेपनी मोर ॥१४६॥
कली तुल्य मूष बंद है सिसिरक देपो तात ।
यह वसत सुभ सम लपि विगसत कली प्रभात ॥
मंद गंध मकरंद जूत चलत पौन सुम भोर ।
चहचहात चात्रिक विपुल हरपित रहत चकोर ॥१४८॥
गुंजत मधुकर मद भरे गान करत सारंग ।
महकत लहकत द्रुमलता विगसित सुमन सुरग ॥१४९॥
हरित वसंती वसन को पहिरो विष्टनि अग ।
पुष्प हसत लपि डार छवि मुरछित होत अनंग ॥१५०॥

॥ दोहा ॥

चल्यो चाटिका त्यागि कै भूपनगर धिलगान ।
विमल देस रचना विविधि कह लो कहैं वपान ॥१७१॥
नप्र निकट पूरव दिसा येक कोस प्रधान ।
परम स्वातिकी अम्यका राजत अति अभिराम ॥१७२॥

॥ छंद ॥

सुभ ज्वलित ललित ललाम । विजलेस्वरी जां नाम ।
त्रिकोंड मैं है कुंड । पूजत असुर सुर मुंड ॥
नित देत है वरदान । वरदेव वाको वान ॥
अति सुंदरी मुसकात । है स्वछ निरमल गात ॥
तन वसन सत सोहाय । गलमाल मणि छवि छाय ॥

:०:

:०:

:०:

भूपप्रण

॥ दोहा ॥

कोहै तू केहि देस को का जांचत का काम ।
मागि लेहु जोहोय रुचि अरु कहु अपनो नाम ॥२४६॥

:०:

:०:

:०:

॥ अथ ग्रंथ करता को उत्तर ॥

॥ सौरठा ॥

सुधामई सुनि वैन भरि आये जल नैन सैं ।
कहैं विना नहिं चैन दोहुं दिस को विरतांत सब ॥२४८॥

॥ दोहा ॥

पावागढ़ गुजरात सैं आयो नृप जनवार ।
सुभट चीर वरिबंड बहु संघ मे सैन अपार ॥
सूबा अवध को जेर करि छीनि मुल्क सब लीन ।
तामह यह बलिरामपुर सुभग थली निजु कीन ॥

:०:

:०:

:०:

ताते श्रव संछेप करि कहत हौं मुनिये राज ।
नौ पीढी के वादि भे नेवल्सिंह महाराज ॥

:०: :०: :०:
ता नृप के जुग तनै भँ सिंह बहादुर वीर ।
अर्जुन सिंघ भे सिंह सम धीर वीर गम्भीर ॥२५७॥
ता अर्जुन भूपाल के भये उग्र द्वे वंस ।
जँ नारायन प्रथम भे हस वस अवतंस ॥२५८॥
हुजो सुत है आप प्रभु विदित तेज गुणधाम ।
पसु पछी सुर असुर नर गावत जाको नाम ॥

॥ चौपाई ॥

नेवल्सिंह परमपिता तुम्हारे । ता समीप पितु आय हमारे ॥
दीन कुलीन जानि विद्वाना । रामदीन अस नाम बषाना ॥

:०: :०: :०:
रामदीन को निज जन जानी । साँपे पुनह सकल रजधानी ॥
:०: :०: :०:

॥ दोहा ॥

धर्मपुत्र महाराज को ताको सुत मै तात ।
नाम गदाधर दास शिव प्रगट जगत विख्यात ॥२७६॥
:०: :०: :०:

अंत—ग्रंथ के पूर्णता की तिथि

० १ ६ १
नभ इंदु ग्रह चंद्र है सम्बत सुभ व्रतमान ।
५ ७ ७ १
वान दीप ररिपि ब्रह्म मो साका सुभग सुजान ॥१६६६॥
कार्तिक सुदि दसमी तिथी पूर्वं भाद्र गुरवार ।
१ ६ २ १
इंदु रस पछ चंद्र सन जोग है हरपण सार ॥१६६७॥
महा जोति शिवलिंग जहं नाम समग्र नाथ ।
गाम समोगरा मे भयो पूर्ण ग्रथ सुभगाथ ॥

॥ छंद ॥

नाम है यहि ग्रथ को दिगविजं चपू सुधुध ।
भोग जोग समाधि को है पानि उत्तम बुधुध ॥
जो वाचि कै अभ्याम विध सो करंगो नर कोय ।
सो मनुस तन मा भोग बहू करि अत मे सुर होय ॥

॥ दोहा ॥

गणपति कृपा तें ग्रथ यह मन्यो गदाधर दास ।
चपू नृप दिगविजं को पूरन भो सुपरास ॥

इतिश्री मन्महाराजाधिराज दिगविजं सिंह सरवार पति विरचितायां पूर्णाभिसेसी
गदाधर शिवदास कृते कलि समर्ग दोषादि प्राञ्चित मामान्य नित पूजा महिपमर्दनी तंत्रे अष्टमो-
पठ समाप्तोयं ग्रंथः ॥ मंगलंददातु ॥ सम्बत् १६१० साके १७७५ ॥ कार्तिक सुक्ल पक्ष दमम्या

तिथी ॥१०॥ द्यु-वासर पूर्व भाद्र नष्ठत्रे हरपण जोगे ॥ सन १२६१ ॥ साल फसला सुभ अस्थान
मुकाम समोगरा ॥ दसपत वंजनाय कायस्थ कं वसिदे प्रगने ॥

॥ दोहा ॥

रामपुरा बलिरामपुर तालुक वधिनी धाम ।

और समोगरा मे लिप्यी वंजनाय जा नाम ॥ १ ॥

मिति माघ वदि ६ सन १२६३ सार फ० ॥

१. प्रथम खड—राजकाज, माया, जग, प्रपचादिक भेद वर्णन	पत्र १-२६ तक
२ द्वितीय खड—उपदेश, दीक्षा निर्णय आदि वर्णन	पत्र २६-३३ तक
३ तृतीय खड—गधर्वतत्रे जोग ध्यान वर्णन	पत्र ३३-३७ तक
४. चतुर्थ खड—प्रात कीर्तन तथा आसन भेद	पत्र ३७-४४ तक
५ पचम खड—माला विधान	पत्र ४४-४६ तक
६ पष्ठ खड—जप विधान वर्णन	पत्र ४६-५७ तक
७ सप्तम खड—नाम स्मरण पूजादि फल	पत्र ५७-७० तक
८ अष्टम खड—कलि ससर्ग दोषादि फल वर्णन	पत्र ७०-८२ तक

कथा का साराश इसप्रकार है —

पावागढ, गुजरात से नृप जनवार ने अवध प्रात मे आकर बलरामपुर रियासत पर अधि-
कार किया । उनके नौ पीढी पश्चात् नवल सिंह राजा हुए जिनके बहादुर सिंह और अर्जुन सिंह
दो पुत्र थे । अर्जुन सिंह के भी दो सताने थी जिनके नाम क्रमश जै नारायन और दिग्विजय सिंह
थे । बहादुर सिंह के पश्चात् अर्जुन सिंह राजा हुआ और उनके परलोकगत होने पर जै नारायन
गद्दी पर बैठे । ये राजा राजनीति पटु न थे, अत थोडे ही दिनों मे राज्य पर शत्रुओं का अधिकार
हो गया । जै नारायन की मृत्यु हो गई और दिग्विजय सिंह जो बहुत ही छोटा था उत्तराधिकारी
के रूप मे रह गया । रामदीन नाम के एक विद्वान् नवल सिंह महाराज के मंत्री थे । जै नारायन
के राज्यकाल मे वे भिनगा नरेश (विसेन वशी) के यहाँ चले गए । उनके पुत्र गदाधर शिवदास
थे जो उन्हीं के सदृश बड़े विद्वान् और सहृदय राजनीतिज्ञ थे । अवध बालक राजकुमार
दिग्विजय सिंह ने इन्हीं से सहायता मांगी । इन्होंने अपनी राजनीति प्रतिभा का ऐसा चमत्कार
दिखाया कि थोडे ही समय मे शत्रुओं को परास्त कर राजकुमार को राजसिंहासनारूढ कर दिया ।
यद्यपि दिग्विजय सिंह निष्कटक राज्य करने लगे, पर कुचक्रियों ने गदाधर शिवदास का पिंड नहीं
छोडा । अवध के नवाब का प्रभुत्व था, अत वहाँ उनके विरुद्ध षड्यंत्र रचे गए । नेपाल को और
भी सीमा पर इन्हें लोहा लेना पडा । इन सबका फल यह हुआ कि दो वर्ष तो इन्हें बधन मे रहना
पडा और उसके बाद बहुत वर्षों तक बलरामपुर से बाहर ही विताना पडा । इस बीच इनकी
बुद्धिमत्ता का सर्वोत्तम परिचय इस प्रकार मिलता है कि इन्होंने गोडा के राजा और वही के रामदत्त
नामक ब्राह्मण विद्वान् के बीच की शत्रुता मिटाकर उनमे मंत्री करा दी । राजा उक्त ब्राह्मण के
रक्त का प्यासा हो गया था । यह घटना अत्यंत करुणोत्पादक है । अत मे इनकी प्रेरणा मे
ब्राह्मण को स्वतंत्र राज्य मिला जो अभी तक चल रहा है । पश्चात् बलरामपुर वापस जाने की
घटना काव्योपयुक्त ढंग से वर्णन की गई है । वह अत्यंत सरस, रोचक और मनोरंजक है ।

एक दिन वाटिका मे बैठे बैठे बसत निरीक्षण करते हुए एक बलबल (पक्षी) द्वारा उन्हें
कल्पित प्रेरणा मिली कि वे बलरामपुर के महाराज दिग्विजय सिंह के पाम जायें । फिर क्या था,
वे बलरामपुर की ओर चल पडे । बिना पूछे ही दरवार मे जा पहुँचे । दुर्भाग्यवश राजा इन्हें
भूल चुके थे, अत इन्हें अपना फिर से परिचय देना पडा । परतु राजा को पूर्ण नतोष नहीं हुआ ।
इस पर इन्हें बडा खेद हुआ और राजा की ओर से विरक्ति उत्पन्न हुई । इनके मूँह से कुछ मार्मिक

शब्द निकल पड़े और हताश होकर घर जाने के लिये राजा से विदा माँगने लगे । यह देखकर राजा से न रहा गया और उन्होंने क्षमा माँगकर अपने पुराने मित्र का समाधान किया । इसी सुश्रवसर पर राजा ने इनसे ऐसा ग्रथ रचने को कहा जो उनके यश को ससार में युग युग तक स्थिर रखे सके । अतः इसी अभिप्राय से प्रस्तुत ग्रथ की रचना हुई । उपर्युक्त वर्णन के पश्चात् ग्रथ में देव्यागमों के आधार पर उपदेश, दीक्षा, निर्णय, योग, ध्यान, आसन, जप-तप नियम, उपनियम, माला, नाम-स्मरण, पूजादि फल और कलि ससर्ग दोषों का वर्णन किया गया है । पुष्टि और प्रमाणों के लिये शैवागमों तथा वैदिक ग्रथों से उद्धरण भी दिए गए हैं ।

रचनाकाल

० १ ६ १
नभ इंदु ग्रह चंद्रु है संवत् सुभ व्रतमान ।
५ ७ ७ १
बान दीप रिषि ब्रह्म भो साका सुभग सुजान ॥
कार्तिक सुदि दसमी तिथी पूर्वभाद गुरवार ।
१ ६ २ १
इंदु रस पछ चंद सन जोग है हरषण सार ॥१६७६॥

संख्या ४१७क. कुडलिया, रचयिता—शिववक्स सिंह (स्थान—समोगरा, पो०—नैनी, जिला—इलाहाबाद), कागज—देशी, पत्र—७०, आकार—१० × ६ $\frac{3}{4}$ इंच, पक्ति (प्रति-पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—७३५, खडित, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६०३, प्राप्ति स्थान—ठा० रघुनाथ सिंह अतुर ठा० जगवहादुर सिंह, ग्राम—समोगरा, डाकघर—नैनी, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—॥ कुंडलिया ॥

राधा राधारमन के सुषदायक संवाद ।
बीच जानि अनुराग के ऊधो हरत विषाद ।
ऊधो हरत विषाद जाइ इत उत समुम्भावत ।
तजि अनभाव की रीति विनै करि प्रीति बढावत ।
विष्टुरत दुष सुष मिलत सुनत छूटत भव वाधा ।
नरपर छमते जानु जाहि पिअ हरि राधा ॥ १ ॥

आवत कुंजन ते चले हरि राधा एक साथ ।
घन दामिनि जनु तन परे गहँ हाथ ते हाथ ।
गहँ हाथ ते हाथ चलत ठमकत हरपाहि ।
को उपमा कहि सकँ सेस सारद सकुचाई ।
कर मुरली उर माल मृकुट कुंडल छवि छावत ।
ते समान को आन ध्यान जेहि के उर आवत ॥ २ ॥

जाके नाम अधार विधि प्रगट कीन संसार ।
जासु नाम वर नाव चडि नर पावहि भवपार ॥
नर पावहि भवपार जाहि बल महि सहसानन ।
धरे सीस पर भार सहित गिरि सागर कानन ॥
सो गोकुल अवतरे भेद को जानत ताके ।
नमो नमो ते देव चरित गावत श्रुति जाके ॥ ३ ॥

अंत—

छूटत दारुन मूढता उर आनत हरि ध्यान ।
कुमति मिटं जागं सुमति प्रगट होत परग्यान ॥
प्रगट होत परग्यान नेति रसभारग सूर्क ।
पर.....पदेस लइ आलोगति वूर्क ।
.....नर कहत सुनत किलविष.....

मन अस्थिर होइ जाइ प्रवल...धन छूटत ॥२५२॥

इति कुंडलिया छद सिवबकस सिघ सोम वसी विरचिते सर्वमुष मगल उपदेसदायेक ॥...

:०:

:०:

:०:

पंडित जन सो विनती मोरि टूट अछर लेव सब जोरि ।

सवत १६०३ के साल मीती भाघ सुदि ७ रोज सनीचर लीषा जुड़ावन काएस्थ ।

विषय—शृगार, उपदेश, भक्ति, नीति आदि विषयो पर कुडलियां रची गई हैं ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ के आदि, मध्य और अंत के कितने ही पत्रे नष्ट हो गए हैं । रचना-काल का पता नहीं, लिपिकाल सवत् १६०३ है ।

रचयिता का नाम शिववक्स सिंह है । ये ग्रथस्वामियों के पुरखे थे, देखिए “राधे हरी मिलन सतसई” का विवरण पत्र ।

सख्या ४१७ख. राधे हरिमिलन सतसई, रचयिता—शिववक्स सिंह सोमवसी, (स्थान—समोगरा, डाकघर—नैनी, जिला—इलाहाबाद), कागज—देशी, पत्र—२६, आकार— $८\frac{३}{४} \times ६$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—५६५, खंडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सवत् १८८०, लिपिकाल—सवत् १८८०, प्राप्ति-स्थान—ठा० रघुनाथ सिंह और ठा० जगवहादुर सिंह, ग्राम—समोगरा, डाकघर—नैनी, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशयानम्हः ॥

॥ दोहा ॥

एक रदन कुजर वदन जेहि सुमिरे सोधि होइ ।
बूधि जलाधिप सुभ मदन करहु अनुग्रह सोइ ॥ १ ॥
वदों गुरपद कमल रज धरि सीर चारहि वार ।
जेहि सुमिरत भय सौंधु ते वीनु लम होइ उबार ॥ २ ॥
सो रज द्रीग अंजन कीए सूक्ति परं सब कोइ ।
कीए तीलक सी रेनुका गुन समूह वसि होइ ॥ ३ ॥
मोह तमा कहं अछं रवि भवसागर जलजान ।
हरन मदादि वकार सब दाएक पद नीवान ॥ ४ ॥
बोमल वीलोचन हिंदं कं उघरत जागं ग्यान ।
वडी भाग ते उर बसहि सो रज अमी समान ॥ ५ ॥

अंत—

राधेवाचा:

नेति धार्म गुनग्यान गत छुए न लाज सकोच ।
लंपट करतब देखी कं सधि मेरे मन सोच ॥६३॥

॥ अथ बेसा वाचाः ॥

सोचन जोग न क्रीस्न जी सुनु राधे गुन धाम ।
सोचीव जेतै नरन को ताको सुनु अब नाम ॥६४॥

सोची भूसुर ग्यान गत नीगम कार्य ते हीन ।
जो नीज धर्म ही छाडि कै होत वीर्य तव लीन ॥६५॥
नेति हीन नर ईसहु प्रजा प्रन सम नाहि ।
पति वंचक आंगना तेहि सोची मन माहि ॥६६॥

:०:

:०:

:०:

हरि राधिका प्रसाद जुत ग्रंथन के मत आनि ।
फल के दायक सतसइ कहु "सिवकस" वषानि ॥१८२॥
चारिहुँ दिसि फल चारि है सबको प्रगट देषात ।
विनु प्रयास नर पाईही जो कहि सुनि हरषात ॥१८३॥
कहै सुनै सावर सदाँ ते न परे भवजाल ।
रहै ताहि पर दँहिनो राधे सहित गोपाल ॥१८४॥
सन अठारह सँ असी भादों सुवल वषानि ।
नंदा तिथि भ्रिगु नंदने भे पोस्तक सुषषानि ॥१८५॥

इति श्री राधे हरि मिलन वार्ननो सतसइ उत्तर प्राकारन संपूरनं सीउवकस सोमवंसी
विरंचितयं सुम मस्तु सिधि रस्तु संवत् १७८८० भादौ सुदि १ सुक्रवार ।

विषय—श्रीकृष्ण के मथुरा चले जाने और फिर वापस न आने पर राधा को बड़ा दुख
होता है । वह श्रीकृष्ण को धूर्त, लपट और पाखंडी समझती है । सखियाँ राधा को सान्त्वना
देती हैं और श्रीकृष्ण को निर्दोष बतलाती हैं । अतः मे राधा कृष्ण का मिलन होता है ।

रचनाकाल

सन अठारह सँ असी भादौ सुवल वषानि ।
नंदा तिथि भ्रिगु नंदने भे पोस्तक सुषषानि ॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित है । सख्या ५, ७, १८, २२ और २३ के पत्ते नहीं हैं ।
रचनाकाल संवत् १८८० है । दोहे में सन् है, पर पुष्पिका में संवत् लिखा है ।

सख्या ४१८. भक्ति जयमाल, रचयिता—शिवराम कायस्थ, निवासस्थान—कारो
(वलिया), कागज—देशी, पत्र—२४३, आकार—१२ $\frac{३}{४}$ X ८ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—
२२, परिमाण (अनुपुष्टुप)—१४०३३, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचना-
काल—स० १७८७, मुंशी हरप्रसाद लाल, ग्राम व पोस्ट—कारो, जिला—वलिया ।

आदि—पोथी भक्ति जैमाल गोसाईं सीवाराम कृत लिखते ।

श्री गणेशाय नमः ॥ श्लोक—पाथोज नील छवि शुभ्र प्रभा सरीरं वक्रैदुपूर्णं श्रीकुटी
धनुकाम भांती ॥

अथोखीहनी गयानी सरासनाए तूनीरललित इछ करणो राम ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

गनपति गौरी शारदा राधा रमा समेत ।
शिव विधि हरि रवि नाम जुत शीवा चरन रजलेत ॥

:०:

:०:

:०:

॥ दोहा ॥

शिवदभ्राल दाभ्रा करघो भएउ वुधि परगाश ।
तिनि वरन प्र जन्म भौ हरिजन शीवादास ॥
गुरु उत्तम दीज साधु शुचि लीन्ह हरिनाम सुनाउ ॥
शाधु शंग परताप ते राम प्रेम उर छाउ ॥

(७४६)

॥ चौपाई ॥

शारद कीन्ह श्रीपा जव जेही ॥ तव हरी जन भाखा जन तेहीं ॥
सम्बत सत्रह सैं सत्तासी ॥ माघ भासि तेरनि शुभ राशो ॥
श्रीशन पच्छ शुभ वासर चदा ॥ सीधि जोग वृष लग्न अनदा ॥
तेही दिन कथा जन्म कवि कीन्हा ॥ माश पच्छ तिथि दिन कही दोन्हा ॥
:०: / :०: :०:

॥ दोहा ॥

हरि चरित्र जस भाखा कलिमह सुकित नाव ।
विनु प्रयास भव निधि तरै सुजन जन पाव ॥

अंत—

॥ दोहा ॥

पांच कोटी दानव बली परम भुआवन भेख ।
कलकी ठाकुर करीहै ताही भारी अवशेष ॥

॥ चौपाई ॥

एही बीधो हरी चरीत्र अवगाहा ॥ श्रुती सारद नहीं पावहीं थाहा ॥
शवतक परम भक्ति तय देखी ॥ कहेउ कथा उपदेश विशोषो ॥

॥ दोहा ॥

एह प्रभु चरित सप्रेम कही हैं सुनि हैं सत जन ।
भुक्ती संप्रदा छेम पैहै शीवा सज्जन सहित ॥

:०:

:०:

:०:

हरद्विग व्योम अष्ट शशि सम्बत संख्या कीन्ह ॥
आशिन शुक्ला सप्तमी कथा समाप्त कीन्ह ॥

विषय—श्री रामचंद्र जी और अन्य अवतारों (२४ अवतारों) तथा भक्तों या वर्णों ।
विशेषतया राम-कृष्ण चरित्र वर्णन ।

रचनाकाल

१७

८७

सम्बत सत्रह सैं सत्तासी माघ भासि तेरनि शुभराशो ॥
श्रीशन पच्छ शुभवासर चंदा सीधि जोग वृष लग्न अनदा ॥
३ ० ८ १
हरद्विग व्योम अष्ट शशि सवत संख्या कीन्ह ॥
आशिन शुक्ला सप्तमी कथा समाप्त कीन्ह ॥

संख्या ४१६. रामायण माहात्म्य, रचयिता—शीतलदाम, कागज—घ्राष्टुनिक
पीला, पत्र—१८, आकार—८ × ६ ३/४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—
३०६ पुराण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—म० १६२६ वि०, निर्वाण—
स० १६३६ वि०, प्राप्तस्थान—हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ रामायण माहात्म्य लिख्यते ॥

॥ श्लोक ॥

ॐ वंदे रामायण श्रीमत्तुलसी कृत मानस ।
राम रूप प्रदातारं धर्म कामार्थ सिद्धिदम् ॥ १ ॥

:०:

:०:

:०:

॥ सोरठ ॥

जै जै श्री गणनाथ विघ्न हरण गजवदन प्रभु ।
तव पद नावउं माथउ सुफल मनोरथ होहि मम ॥ १ ॥

:०:

:०:

:०:

मम अभिलाष भयो जिय जानी । बरनी कछु हरिजस सुभपानी ॥
ताही समै चित चढ़ि आई । तुलसी कृत को महातम गाई ॥
कीन अरम्भ सुमिरि भगवाना । जस कछु सुनैउ सो करहु वषाना ॥
सम्बत बनइस सँ बनतीसा । मार्गशीर्ष एकादशि दीसा ॥
शुक्ल पक्ष मंगल सुभ वारा । रचौ महातम पर्म वदारा ॥

:०:

:०:

:०:

॥ दोहा ॥

सब विचारि मन ठीक दै देधि सकल परकास ।
संतन मुख माहात्म सुनि वरनत "सीतल दास" ॥

मध्य—

॥ चौपाई ॥

यह अरंभ महात्म कर लीन्हा । रामायण अरंभ जो कीन्हां ॥
प्रथम श्लोक पचीस बनावा । सातहु कांडन मां बरतावा ॥
ताको भाव संस्कृत बानी । ग्रंथ आदि दिए मंगल जानी ॥
पुनि सत्तासी सोरठ भाषा । सातहु कांडन मह धरि राषा ॥
छंद एक सौ और अठारह । सात काड विच है सब सारह ॥
ग्यारह सँ पचहत्तरि दोहा । सप्त काड विच ते सब सोहा ॥
नी हजार एक सँ चौपाई । अठसठि अधिक सो सकल बनाई ॥
ताकर फोर जानि अब लेह । सात कांड मा ह्य जित एह ॥
सप्त श्लोक वाल मह आदी । पैतिस सोरठ ह्य अति गादी ॥
यकसठि अधिक तीन सँ दोहा । वंतालिस छंदहु सुठि सोहा ॥
दुइ श्लोक श्री यकतिस दोहा । सोरठ तीन छद दुइ सोहा ॥
तीनि सँ दुइ चौपाई राषा । किसकिंधा विवेक में भाषा ॥
तीनि श्लोक श्री बासठि दोहा । तीनि छद दुइ सोरठ सोहा ॥
चौपाई सँ पांच बनाई । यक्यासी पुनि और मिलार्ह ॥
संदर कांड मांहि यह सामा । सरनागत जानव अभिरामा ॥
तीनि श्लोक छद सँतीसा । दोहा डेढसइक तह दीसा ॥
ग्यारह सय अरु बीस चौपाई । नी सोरठ लंका मह गाई ॥
उत्तरमह श्लोक है पाचा । सोरठ सत्रह जान्येहु साचा ॥
छाहै अधिक श्री दुइ सँ दोहा । चौदह छंद काम जिमि सोहा ॥
हैं पचाशदश सँ चौपाई । रामायण ऐतो सब गाई ॥
ऐ सब रामरूप करि गावा । पढे सुनें सो हरि पुर पावा ॥

॥ दोहा ॥

यह सब विरचि सुधारि कं काशिहि दियो पठाइ ।
जासै प्रगटं जक्त में पढे सुनें मन लाइ ॥

:०:

:०:

:०:

यह वरन्यो मै यथामति सुन्यहु ज्यु सतन पास ।
पढे सुनें जन प्रीति करि सेवक "सीतलदास" ॥ १ ॥

अवध पुरी की नैरतिपट जोजन परमान ।
“जन सीतल” द्विज वसत तहें प्रभुदाया अस्थान ॥

:०:

:०:

:०:

रामायण माहात्म्य रचि जग में कीन प्रकाश ।
जगन्नाथ जे नर पढ़ें श्रीपति पुरवं ग्राम ॥
श्री वर सीतलदास कृत वनो महातम ज्ञान ।
जगन्नाथ रघुनाथ यश परमतत्व करि जान ।
फाल्गुन कृष्णा पचिमी चंद्रवार करि गान ।
६ ३ ६ १

रसरु राम नव शशि निरपि सम्बत् करो प्रमान ॥
ममस्थान मसौली साधु द्विजन कर दास ।
नित प्रति गावत रामयश कुम्हरावाँ मे वास ॥
नहि कविता नहि साधुता लाम नाम जपि जोग ।
घाटि वाढि अक्षर परे क्षमा करो सब लोग ॥

इति श्री मंगलदायने सकल कलि कलुष विध्वंसिने श्री तुलसी कृत मानस माहात्म्य शीतल-
दास कृत सम्पूर्ण शुभमस्तु श्री सवत् १९३६ शाके १८०१ फाल्गुन मासे कृष्ण पक्षे तिथी पचम्यां
चंद्रवासरे ॥ राम राम राम

विषय—तुलसी कृत रामायण का माहात्म्य वर्णन किया गया है ।

रचनाकाल

१६

२६

सम्बत वनइस सं वनतीसा । मार्गशीर्ष एकादशि दीसा ॥
शुक्ल पक्ष मंगल सुभवारा । रचौं महातम पमं उदारा ॥

॥ दोहा ॥

फाल्गुन कृष्णा पचिमी चंद्रवार करि गान ।

६ ३ ६ १

रसरु राम नव शशि निरपि सम्बत करो प्रमान ॥

संख्या ४२०. पद, रचयिता—शीतलदीन, कागज—देशी, पत्र—१, आकार—
८ १/२ × ५ १/२ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२, अपूर्ण, रूप—प्राचीन
पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—श्रीयुत हरिनारायण जी मिश्र, ग्वाहन ब डाक घर—त्रिबेदरा,
जिला—इलाहाबाद ।

आदि—

हमारे घर मे कालि नागिनि दशी ।

...तू मेरी गोतिन कवन सगुन करि हस्ति ॥ १ ॥

आइ परी एह अन्ध भवन मे दीपक विनु अभिनसी ॥ २ ॥

दीपक लंकर दूहन निकरी कालिनि को वरदसी ॥ ३ ॥

“शीतल दीन” मलीन विना प्रभु कर मीजत घरदसी ॥ ४ ॥

मेरे मनमोहन से केह कोल डीरी ।

सुभग सुहृद सुन्दर सुरतिवर कौन कि हो रगरी ॥ १ ॥

काल कराल तुमं नियरानो आयो विपति घरी ॥ २ ॥

नगर निकारि करी क्षण भीतर त्वरित...दखरी ॥ ३ ॥
 "शीतल दीन" देखि गोपिन की नन्द ने को पकरी ॥ ४ ॥

राजित राधा सहित प्रभु ब्रज मे रास रचाई ।
 धाकिट धाकिट धाकिट धाकिट धुधुकिट द्वी ताल बजाई ॥
 मुख मुरली मन मोहन केरी सखि मन लेत चोराई ॥ १ ॥
 पग धूर्धरु की छनाछन सोभित मोहित सकल सुष पाई ।
 मुकुट धरे सिरहु पर...हसन नाचत प्रेम चितलाइ ॥ २ ॥
 सखिक...मोहन व्यति भावें हृदय हृदय लगाई ।
 लाडिली वृषभान की मनमान छोडाई ॥ ३ ॥
 "शीतलदीन".....सुन्दर देखि लाल सखि चपलाई ।
 इत गोपाल की शोभा देखि अमरगण आई ॥ ४ ॥

विषय—श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—पदों का केवल एक पत्र मिला है जिसके एक ही श्रीर तीन पद लिखे हैं ।
 ये तीनों पद विवरण पत्र में उद्धृत कर दिए गए हैं ।

सख्या ४२१. १ वियोग सागर, २ मोहनी, रचयिता—शेख अहमद, कागज—
 देगी, पत्र—५, आकार— $5\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२१, परिमाण (अनुष्टुप्)—
 १५७, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १७७८ वि०, प्राप्तिस्थान
 —हिंदुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद ।

आदि—ग्रंथ वियोगसागर सैप अहमद का कौया ॥

॥ दोहा ॥

विधना गति विधहीं लही और न विधि को जान ।
 जो विधि विधिना तुम सिरी ते विधि त्रिविधि समान ॥ १ ॥
 नवी नवी अहमद कहै जे जग विय विय होय ।
 गगन उदधि धरनी सकल श्री रसु विय नहीं कोइ ॥ २ ॥
 साहि मुहदी श्रीलिया सब कुतबनि सुलितान ।
 तिन सुत पीर जलाल मुहिदी विद्या गुन ग्यान ॥ ३ ॥
 भोर वयार सुसरम हितु सीतल बही सुवास ।
 लालन विनु लजि मंजरी होत उआस ॥ ४ ॥
 अभी किरन निसचद की विय ससि विनु मुष पीय ।
 फूलत बोल कमोदनी केक कुहक दुष दीय ॥ ५ ॥
 सदन परिमल सीर ससि तन लाये विनु लाल ।
 विरहु अगिन उर में जरी बोल परी कंठमाल ॥ ६ ॥
 तन तरफनि भीर्नाहि लई मन फुर्निगा गति लीय ।
 मेघ मद्या नैननि हरी जिय चातिग पीय पीय ॥

मध्य—

दुष विरहा दह दिस भयो कनहु दिसा न आहि ।
 प्राण दुरावन लाल विनु "अहमद" जिहि दिस हांहि ॥
 :::: :::: ::::
 मधुर वैन छवि नैन मय मधुर जु सब सरीर ।
 अरु लालन के गुन मधुर गरई विरह न पीर ॥५८॥

नैन नैन ते वैन कहि रसना वहे न जाहि ।
 डुरि मुसफानि हुलास छवि पल पल पेम लहराहि ॥५६॥
 रोम रोम जिय जिय मिले लह्यो जु पेम पियार ।
 कहै सु विहरन की बिया कराहं बियोग पुकारि पुकारि ॥६०॥
 इति बियोग सागर अहमद का संपूरन ॥
 मोहनी संप अहमद की करो ॥

॥ दोहा ॥

मंग गंग जल मोहनी हनत जु काम तरंग ।
 रीक्ति रह्यो मन मोन ज्यो देपत पानिप अग ॥ १ ॥
 बिया जोति निस स्याम की बोप पटी निलि सोहि ।
 चिहर लाल नगस्याम भय देपि रहे चपि मोहि ॥ २ ॥
 सार किनारी सीस पर मनहु धनुष घनरयाम ।
 कै किरनापल सूर की मग रग बिनराम ॥ ३ ॥
 भीरन ते अति स्याम अलि बिसहर तें विप केस ।
 उसहिन मंत्र मानहीं गाररी होहु किस सेस ॥ ४ ॥
 इ लावै अरु धंधरे नय सिप लीं लहराहि ।
 मनहु उड़निया भाग ज्यो देपत ही डंस जाहि ॥ ५ ॥
 :०: :०: :०:

अंत—नैन भौंह नही चंद के अरु लवे निरि वार ।
 “कहि अहमद” रे गुनि जनहु वदन जोति समि हार ॥३८॥
 कुंभ तार कचन कुलस खोफल बेल कहत ।
 उठत पिपोहर नारगी सो सोभा न लहत ॥७१॥
 लाली सेंदुर रत्न दे कुंदन कुंद भाइ ।
 काम जरयो हूँ मोहनी सो कज्जल सिर पाइ ॥७२॥
 तिहु तिलोक सजि मोहनी रचि कच काम सुजान ।
 सुर नर मुनिवर तपनि पी देपत रहे स्यान ॥

इति मोहनी संघ अहमद की बांधी संपूरन भई १७७८ आसाढ सुदी ३ सुकरवार ॥

विषय—बियोग सागर मे बियोग अगार का वर्णन किया गया है और मोहनी मे मोहनी के सिखनव का वर्णन है ।

सख्या ४२२. यूमुफ जुलेखा, रचयिता—शेख निमार, कागज—देशी, पत्र—१०५,
 आकार—६ $\frac{३}{४}$ × ६ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुपुष्प)—२६२२, पूर्ण,
 रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—फारसी, रचनाकाल—म० १८४७ वि०, लिपिकार—म०
 १६५६ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत गोपालचंद्र सिंह एम० ए०, निबिल जज, मुल्तानपुर
 (अवध) ।

आदि—बिसमिल्ला अल रहमान अलरहीम
 सुमिरों प्रथम सरूप तुहावा वो पेम धनिज तिन उपजावा
 प्रेम अगिन उतपत उपजावा वहुरि पवन जल उपवन छारा
 अगिन तें पवन पवन तें पानी पुनि पानी तें किय अबदानी
 इन चारो तें सब बिस्तार धरती सरग मूर सनि ताग

चारि तत्त तें सभ कुछ साजा पचवां सुझ अकास विराजा
 पुनि रिखि गन्धर्व इत वनाई जगम अस्थावर उपजाई
 मम (प्रेम) अगिन तह काहु न सम्हारा रचान कह बहुविध विस्तारा
 तह सुन पावह पेम का थाती दीपक माह धरा जस वाती
 यह वातीमंह आप समाये हुये परछन पुनि देह जराये
 प्रभुताई की तीजत कोतक कीन्ह निसार
 कहा सो उत्तम आस वह कीन्ह मुक्ति यह चार

:०: :०: :०:

आद जोत जाके रची तहं हैं सभ कुछ कीन्ह
 मोकह मुक्त कत पावई जो नाम "मुहम्मद" लीन्ह

:०: :०: :०:

आलम शाह हिन्द सुलताना तहं के राज यह कथा बखाना
 देहली राज करी अब नीता अपर वहाँ तेह कीन्ह अनीता
 नादिर खां सो अधम रहेला सदापराध कीन्ह बड़ पेला
 पातसाह कह अध जो कीन्हा सुत और नार सभे दुख दीन्हा
 कीन्ह अपत तँमूर धराना राजप्रताप अधम तह माना

:०: :०: :०:

शेख हवीबुल्ला सोहाये शेखपुर जिन्ह आन बसाए
 पातसाह अकबर सुलताना तहं के राज कर जगत बखाना
 ओ वह देस सूवा होई आई तीस वरस की रही सोहाई
 तहं के शेख मुहम्मद वारा रूपवन्त भू के अवतारा
 शेख गुलाम मुहम्मद नाऊं सो मम पिता ओ ताकर गाऊं

:०: :०: :०:

बंस मोलवी रोम की जह कर प्रेम गरन्थ हुई

सिद्ध पढ़ मसनवी पावे पेम की पन्थ

सात गरन्थ अनूप वनाई हिन्दी और पारसी सोहाई
 संसकिरत तुरकी मनभाई सभे प्रेम रस भरी सोहाई
 म्हरनकार के कह्यो कहानी रस मनोज रस कवित बखानी
 बार बीस मंह कथा वनाई म्हरनकार अनूप सोहाई
 रस मनोज रस कवित सोहावा सभे नायिका भेद बतावा
 यह सन जोहर पेम कहानी कहा मसनवी अनरत सानी
 कूठ जान सभते मन भागा अरव यह साच कथा चित लागा
 हिजरी सन वारह से पाँचा वरन्थो पेम कथा यह साँचा
 अठारह से संयतालीमा संवत विक्रम सेन नरेसा
 सतरह से वारह जत साका पीप मास पून्थो वस राका
 सतावन वरख बीते अरव तव उपज्यो यह कथा के चाव
 सात दिवसमंह समापत दुरमत नाम लह्यो यह संवत

धंत—देख जगत कर कोक तटवाला हुई सदामन दुषित बेहाला
 जान न परी बहुरि वह काहा जग मानिक उपज्यो तेह काहा
 देह दयाल मुक्त कत मोकह हरहु मोर सब पातक दोषहु
 पढ़े प्रेम के अछर कोई दई असीस मुक्ति जिन होई
 हम न रहव अछर रह जायह जो कोउ पढ़ भेद नर पायह
 अवगुन हो इतो लेहु छिपाई हम न रहव जो देव बताई

रहें वो भगत पेम अवज्ञाना धरम नीत सुभ कया बखाना
सात दिवस महू कया सुहई करि के दया समायत पाई
धर्म कर्म एको नहीं अधरम भरा जहाज
जनम दई के लाजकर राख दवो जगलाज
.....कि किहाव यूमुफ जुलेखा
चजवान भाया.....सन् १३१६ हिजरी

वियय—यूमुफ और जुलेखा की प्रेमकथा का वर्णन ।

रचनाकाल

अठारह से सयतालीसा ।
संवत् विक्रम सेन नरेसा ।

संख्या ४२३. भक्ति विधान, रचयिता—शोभाचद (जयमिह का नेचक ब्रह्म भाट गय
ताराचद सुत शोभा चद हैं), कागज—देगी, पत्र—३१, आकार—७।। X ४।। डच, पक्ति
(प्रतिपृष्ठ)—४३, परिमाण (अनूष्टुप्)—११३३, पूर्ण, रूप—माघान्ग्य, पद्य, लिपि—
नागरी, रचनाकाल—स० १६८१ आषाढ सु० ५ गुरी (ग्रथ के आधान पर), लिपिवाल—
स० १७४८ भाद्र कृ० ३ शुक्र (ग्रथ के आधान पर), प्राप्तस्थान—श्री नरन्वती भटार श्री विद्या
विभाग, काँकरोली, हि० व० स० ७१, पु० म० ४ ।

आदि—अथ श्री भक्तिविधान ग्रन्थ लिख्यते ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥

बंदू श्री बल्लभ चरन श्री विट्सेस रघुनाथ ।
अरु श्री देवकी नद जी सीसु पकति साय ॥ १ ॥
अरु बंदू श्री बल्लभ कुल चरन अरु बल्लभ कुल दास ।
अरु बंदू तिही भोमि कूं जहा बल्लभ कुलवास ॥ २ ॥
बंदू श्री शुक परीक्षित ब्रह्मा नारद व्यास ।
दुष्ट काल कलियुग विषे कीयो भागवत प्रकास ॥

मध्य—पृ० ३२

लछमी नरसिंह को जनम चौदस कृष्ण कुंभार ।
श्री बालकृष्ण के बालकनि को कहू जन्म प्रकार ॥४७६॥
द्वारकेस ब्रजनाथ जू ब्रजभवन को जन्म ।
माधव कातिक चेत सुदि पाचे नवमी नवम ॥४८०॥
पीताबर जी चेत वदि परिवा प्रगटे प्राय ।
पुरुषोत्तम आसूज सुदि चौथि भए सुखदाय ॥४८१॥

अंत—अरु जो वे यह ग्रंथ को सदा पढे चित लाय ।
ताहू को दीजे भगति भक्त बछलता पाय ॥६२६॥
मन वच क्रम ताते सदा पढीयो भक्ति विधान ।
बिना भजन गोपाल सो सो उपजे प्रेम प्रमान ॥६३०॥

१ ८ ६ १

संवतु शशि बसु रितु अलख सुकल पछ सुचिमास ॥.

गुरु पाचे यह ग्रंथ हुआ भक्तहेत परकान ॥६३१॥

इति श्री देवकी कुमार चरण शरण सोभा चदवृत्त भक्ति विधान संपूर्ण ॥ संवत् १६८१
आषाढ सुदि ५ गुरी ग्रंथोत्पत्ति । स० १७४८ वर्षे भाद्रपद मास वदि ३ शुक्र वारे तिथित बल्लभनाथ
सुत ।

विषय—प्रज्ञोत्तर रूप में पुष्टिमार्गीय मप्रदाय के मदिरों में सिद्धांत और सेवा मामगी उत्सव प्रकार का वर्णन किया गया है । ग्रथ में पुष्टिमार्गीय वैष्णवों के अर्थ नित्य नियम (आह्वान) भगवत्सेवा की आवश्यकता एवं उमकी विधि, उत्सवों का वर्णन, गोंस्वामी बालकों का सक्षिप्त परिचय, भक्ति, मत्संग, अनन्याश्रय, भाव भावना आदि सिद्धांतों का विशद विवेचन किया गया है । यह ग्रथ श्री आचार्य वत्सभाचार्य के ज्येष्ठ पुत्र श्री गोपीनाथ जी रचित 'साधन दीपिका' के आधार पर तैयार किया गया है ।

संख्या ४२४. गणित बोधनी (प्रथम भाग), रचयिता—शं.भाराय (महाराज), कागज—देगी, पत्र—१३, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुपुष्प)—१६५, पूर्ण, प्राचीन, गद्य तथा पद्य, निर्मा—नागरी, प्रान्तिम्बान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी-प्रचारिणी सभा (याज्ञिक मण्ड), काशी ।

आदि—श्री गुरु चरण कमलेभ्यो नमः ॥ अथ गणित बोधनी प्रथम भाग महाराज शोभाराम व्रत लिख्यते ॥ प्रथम गणेश जी की वदना ॥

॥ दोहा ॥

गिरिपति तनयापति तनय सिद्ध करो शुभ काम ।
गणित बोधनी रचत ही शोभाराम मम नाम ॥ १ ॥
श्री ब्रजेन्द्र जसवत को राज भरतपुर जान ।
तासु परगनो कामवन सबल गुणन खान ॥ २ ॥
तहाँ जुरे हेड़ा बसत हैं अति सुदुर्मा को धाम ।
पुस्तक आनंद लाल हित पथह शोभाराम ॥ ३ ॥ श्री श्री ॥

॥ नवैया ॥

साथी तीन व्योपार कियो मिल रुपिया सातसँ बीस लगाये ॥
पृथम से दोषम भागत्रितिय गुण या प्रकार दुम्को समझाये ॥
साथी दोनो को युक्ति कियो धन तासु समान त्रितिय ते आये ॥
सोभा कहत आनंद सुनो कह पृथक पृथक हमको जतलाये ॥ ४ ॥
उत्तर पहले का ६० दूसरे का २७० तीसरे का ३६० ॥

मध्य—

येक प्रश्न सभा में कह सुनो दिलदार । इम सवाल का तू दे जवाब धर जा रे ॥ टेक ॥
येक मछली का जिकर कहे सुन प्यारे । उसके धड़ से तर उसका दूना था रे ॥
उसके घड से थो आधी पूँछ जतला रे । कितने मन की वह भी न सही जतला रे ॥
न्यारे २ कह देना वैया वारे ॥ १ ॥

दरया में किस्ती चार वही जाती थी ।
था साहूकार का माल भर लाली थी ॥
थी वोक्लन किस्ती येक वह दहवाली थी ।
मलहाने किस्ती को देखा डिगमिगाली थी ।
मलहा किस्ती को थाम जधी ललवारे ॥ २ ॥
मलहा मलहो से कहे सुनो मेरी अरजी ।
मेरी डूबी जाय जहाज वही कहा करजी ।
लेगी माल जितना किस्तिर्या नुम्हारी भरजी ।
वच जायगा मेरा जहाज यहै है मरजी ।
टोंगा उमका वच गया माल दे डारे ॥ ३ ॥

श्रुत—

॥ दोहा ॥

येक मरुा के घेर फा कग्ता है ब्यांन ।
लडुके तीन पेलन लगे सोच कर दीने आन ॥

॥ कूलना ॥

चकर दीने आन तीन वा करता हु वैईयान ॥
तुम ती सची करे के जान येक ती आथ चक्र फोर आया है ।
दुजा लडका प्यारा जाने दम चकर पग धारा है ।
उती करे के सहैजई सारा उनने सहैज मे दुप पाया है ।
तीजा उठारां सके . जांती वार है दीने आके सेते; कहू तुजे जतलाके ।
ईसका फेरना बनलाया है । येक मुकामे चलाना ।
केते मे हो गये सुजाना ईहां ती उत्तर की हां सफाना
लाला क्या दील मे घबडाया है ॥ १ ॥ उत्तर :
ईसका लघुतम समप्रवर्त : ३५।१२।१० ।
विषय—इमंगे गणित पर छव प्रकाश टाला है ।

सख्या ४२५. द्वादशगणि-विचार, रचयिता—“श्यामराम” जगज—देवी, पद—३,
आकार—६३ x ३३ इंच, पारिक (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अष्टपृष्)— ८८, र रिति,
रुम—प्राचीन, पद्य, लिपि—नामगी, लिगिवाय—म० १=६३ दि०, प्राणिक-यान—श्री राम-
नरेश गिरि, ग्राम—हुरहुरी, पो०—केरालत, जिला—जानपुर ।

आदि—

जो धन कष्टन तें जीवें लोइ विण वृदा ते जीवें सोइ
सी १०० वर्ष आयुंदा ताके होइ ।
सावन मास शुक्ल पक्ष मे मरें नरनी एवादिनि ना टरें
रवि दिन दुपर मरें नर होइ ।
इति सिंघ रासि फले ॥

॥ अथ कन्या रासि ॥

कन्या रासि जा बालक होइ । उत्तमा नष्ट्र का जन्म जो होइ ॥
सी नर निश्चय धनवंता होइ । सोभाप्यवत जानी पुनि सोई ॥
मिष्टान्न भोग्य कौ भोग्या होई । चतुर विवेकी रहै सब कोई ॥
कष्ट दुष नर्ण पाच ५ मे होई ।
:०: :०: :०:

श्रुत—

॥ अथ मीन रासि फलम् ॥

मीन रासि जो बालक होई पूर्य भाद्र पद का जन्म जो होइ ॥
देव गुरु पूजि सभागा होइ जत मत्त पदु जाने सोइ ॥
:०: :०: :०:
माघ मास शुक्ल पक्ष मे मरें रोहिण नष्ट्र आटमी न टरें ॥
गुरुवात्तर सध्या काल में तजे सी प्राणी प्राइ ॥
जगत काल के वसि सब सुनियो चतुर तुजान ॥
जातक को मत जानिके “श्याम राम” घर पौन ॥
सोभा पार्व सभा में पढे चतुर प्रयोन ॥

इति श्री द्वादश रासि विचार जन्म पत्रि कपावली समाप्त ॥ शंक्त् १८६३ समं कुम्भा
वदी सतमी ७ सनीचर ।

विषय—द्वादश रासि विचार एव फल वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ खचित है । आरभ के दो पत्रे लुप्त हैं, केवल तीन पत्रे रह गए हैं ।

सख्या ४२६. कुड निर्माण वार्तिक, रचयिता—श्री कृष्ण गंगाधर, कागज—देशी,
पत्र—८, आकार— $८\frac{१}{४} \times ४\frac{१}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ, —६, परिमाण (अनुपट्टु) —१०८,
खंडित, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १७१६ वि०, लिपिकाल—स०
१७१६ वि०, प्राप्तस्थान—प० छोटे लाल जी मिश्र, ग्राम—हमराजपुर, पो०—होलागढ, जिला—
इलाहाबाद ।

आदि—.....

चतुरदश जे मध्य सूत्र तेहनो चौवीसमो भा.....

:०:

:०:

:०:

पूर्व आद्यने कुड तरारे उत्तराय योनि चोजे । योनि दक्षिराया साहेये रहे ॥

बाकी कुंड पांच ते पूर्वार्ध योनि कोजे ॥ पश्चिमे योनि रहे ॥ नवमु कुंड ईशान पूर्व
वजे तेहने योनि दक्षिणे रहे । उत्तराय कीजे ॥४७॥

क्षेत्रनो जे व्यास तेने जे अर्द्धतेनो जे बार सो अंश भाग १ अंगुल एक १ ए वा ६ नव भाग
तेनो विसमो अंश व वत्र राय ३ यु का ४ चार छाया लाय ६ तराय ३ एणे युक्त एवा अंगुल तराय
३।४।६।३ पूर्वनो पामा वधारीये येणे व्यासाद्धे वृत्त कीजे तिव्यास संपूर्ण अंगुल तीश ३० सात एक
न चार ए व्यास ना भाग ५ पाच अंगुल ६ यत्र १ युक्ता ३ लिक्षा ४ बालाय १ ए वा बीभरणे भागे
अंगुल १।२।७।०।२ ए व्यास ३०७ माघ तावी ये मेघ अंगुल १।४।२।४।४ ये प्रमाणे मंडल न
सूत्र पाच दीजे त्य वारे पचासी धाये । इन् भाग छठे शर अंगुल ३।०।१।६।० धोइय त्यवारे
पचास्ती धाये ॥५८॥ भूतनाशन कामनाये पचान्नि कंट वयुछे ॥

अत—

रत्नपुरनाराज्य अर्धय रामचंद्र नामे ॥ भरद्वाज मुनि कुल आसमुद्र चंमा ऋग्वेद पाठी
मालवी ब्राह्मण चतुर्वेदी नौदिकरो श्रीम ज्यराम दान चतुर्वेदी रत्नपुर थी आव्यो नैमिषारथ्य ने
वीपमालये ॥ भाइ ने परणावाणे ॥ आव्यो ते प्रेरो रामचंद्र नैमिष कुडनु निर्माण जाणवाने
अर्थे ॥७२॥

ग्रथ कीधानो प्रसंगः

चित्रमादित्य ने चर्षे रस ६ गगन शून्य ० तियि १५ पंदरा ए चर्षे ग्रथ थ्योछे । इश्वर न
सर्मापित कीधो छे । यज्ञ की धानु जे फल ते पाम वाने ॥ धोड्ये महादान वापी कृप लडाग यज्ञ
एहनु अंग छे ॥ संवत् १७१६ कार्तिक वदि ७ मन्त गुरु वासरे पुष्यक्षे भुक्तयोगे च वकरणे अस्मिन्
दिने श्री मन्मथर दोक्षिभूजरा वी हो रणेद पुस्तक लिखिन वीपाठी श्रीकृष्ण गंगाधर कृताया
वार्तिक पद्धति संपूर्ण मस्तु रामराजयेय वार्तिक पद्धतिः ॥ श्री रस्तु ॥ श्री कृष्णार्पणमस्तु ॥

विषय—यज्ञ कुट विधान वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ खचित है । आरभ के १५ पत्रे नहीं हैं ।

संख्या ४२७. दुर्गा भक्ति तरंगिणी, रचयिता—श्री कृष्ण भट्ट, कागज—देवी, पद्य—
८०, आकार—८३ × ५ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०८८,
अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—आयंभाषा पुस्तकालय (नामिक
संग्रह), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि—श्री महागरुपतए नमः ॥ ॐ नमश्चडिकार्ये ॥

॥ छंद चौपई ॥

सप्तसती पाठहिं पहिचानो । रिपि सु मारकडेय वपानो ॥
गायत्रीउ दिन कह अनुष्टुप । दद प्रचार करी चुपही चुप ॥ १ ॥
महा कालि महलछिय आनो । महामरसुतो दंढत मानो ॥
चामुंडा सक्ति सुतिहि जोग । भुक्तिभुक्ति मिधि जप विनियोग ॥ २ ॥
प्रथम चरित्रहि ब्रह्मा हे रिपि । गयत्री छद सुहिय तं निपि ॥
माहाकासि तिहिं दंढत जानी । श्रीर नद जा सक्ति वपानी ॥ ३ ॥
रक्तदत का बीज वतायी । अश्रुत्वे ताको मन भायी ॥

:०:

:०:

:०:

अंत—उपसर्ग समित सुठि होइ जात । ग्रह पीडा दारुन पुनि मिटात ॥
दुस्वप्नन न रनि देख्यो जु होइ । सुरवप्न होत ततकाल सोइ ॥ १६ ॥
जे बाल बाल ग्रह पराभूत । तिन यहै साति कारन भ्रूत ॥
संधात भेद पुनि नरनि सोइ । अति उत्तम सी

:०:

:०:

:०:

विषय—देवी माहात्म्य का भाषानुवाद । ग्रथ तरंगों में है । प्राप्त अग्र मे ग्याह तरंगे है ।

संख्या ४२८. सद्गुरु महिमा, रचयिता—श्री निवास, कागज—देवी, पत्र—१०,
आकार—६१ × ५ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६४, पूर्ण, रूप—
प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—५० विश्वनाथ विपाठी, ग्राम—नंदना, पॉन्ट-
वरहज बाजार, जिला—गौरखपुर ।

आदि—श्री जानकी वल्लभाय नमः ॥ श्री प्रशादाय नमः ॥ अथ श्रीसद्गुरु महिमा
लिष्यते ॥

॥ दोहा ॥

श्री गुरु चरन प्रनाम करि धरो ध्यान उर माहि ।
भति मलीन निरमल करो उदें भानु तम जाहि ॥ १ ॥
गुरु अंधी गुन आयतन प्रनमो मन तजि मान ।
श्री निवास सिकता सुमति ऋषया मेर समान ॥ २ ॥
गुरु सम दानी कौन जग दीन्हो अवचल दान ।
घटें लुटें छीजें नही दिन दिन दूनो जानि ॥ ३ ॥

॥ चौपाई ॥

गुरु मुख गुरु को शब्द विचारं । त्यागि हस्तार तार को धारं ॥
सतगुरु चरन मनायो भाई । जासो हुवध्या दुरमति जाई ॥ ४ ॥
दुरमति को मैं करुं विचारा । दुरमति कहिये कौन प्रबारा ॥
दुरमति कहिये तीन प्रकारा । इक नुठी हूं ताकी मारा ॥ ५ ॥
झूठी दुरमति या सौं कहिये । भाया मेरी प्रण तं चहिये ॥
या दुरमति सो हरि न मिलाई । सो गुरु चरन परन की जाई ॥ ६ ॥

साची दुःश्रुति गुरु समुझावै । जन निवास गुरु कृपा सु पावै ॥

श्रुत—या नारग को करे दिचारा । ते प्राणी पावै रस तारा ॥
 ग्यानी ध्यानी चतुर कहावै । या महिमा त्रिन रस नहि पावै ॥१६०॥
 सदगुरु महिमा कहि न सुनही । मूरुष नर कहै गुरु भुष हमही ॥
 सकल कविन को वदनि करिहौं । छिगा चूक मै पायन परिहौं ॥१६१॥
 मैं सठ कवि रस गम मो नाई । गुरु भुष सुनि कै लेहि बनाई ॥
 श्रीनिवास गुरु महिमा सो भनी । वरनि मिल्यो सिय वर सो धनी ॥१६२॥

॥ दोहा ॥

या महिमा समझै सुनै गावै प्रीत लगाय ।
 श्री निवास हरि रस मिलै भर्म कर्म दुप जाय ॥१६३॥
 मैं अभिमानी नीच मात कछु न जानौ भेव ।
 श्रीनिवास सदगुरु दया हरिगुरु ये कहि सेव ॥१६४॥
 भौसागर मै बूडतै सदगुरु पवारी बाहि ।
 श्रीनिवास विश्राम लै सदगुरु चरननु माहि ॥१६५॥
 ना सुष सुरपति नगर मै ना सुष सुष धन धाम ।
 श्री निवास सुष पाइयो सदगुरु सरनि युनाम ॥१६६॥

इति श्री सदगुरु महिमा श्री श्री निवास जी कृत प्रथमो रहस्य संपूर्ण ॥ श्री मद श्रवंतिका
 पूरी मधे लिपि कृत वैष्णव धेमदास ॥ श्री ॥ रस्तु ॥

विषय—गुरु के माहात्म्य का वर्णन किया गया है ।

सख्या ४२६. हनुमान पच्चीसी, रचयिता—श्री निवास, कागज—देगी, पत्र—२
 (खर्चाकार), आकार—२ फी० ३ $\frac{1}{2}$ × ५ $\frac{1}{2}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४६, परिमाण (अनु-
 ष्टु) —१३८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—ग्रार्थभाषा पुस्तकालय,
 (याज्ञिक मंत्रह), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ हनुमान पचीसी के कवित्त लिप्यते ॥

काहू कै तात अरु मात सुत आत जात पाति काहू क पाती परी गोरव सरीर की ।
 काहू कै सपति सुष सज्जन सनेही जा काहू कै कनिक कोस भरयो मनिहीर की ।
 काहू कै धरनीधर धर्मध्वजा दसो दिसा काहू कै नृपति नर नगरिन के सीर की ।
 कृपा "श्री निवान" कहै आस करो जो करो सुमिरै तै भरीसो जानि हनुमान वीर की ॥ १ ॥

श्रुत—

अनुलत वलधाम काम करी श्री राम को साहस सख्य काल छाप चरधारा की ।
 मंगल सुष चारिध विभारद सारद सो गजन जो दारिद यो सज्जन सभार की ।
 भारी दै निवास भक्त भीर परे आरापाम सीतापति दास घास गुप्त सो विहार की ।
 गावै श्रुति वार वार पावै नही पार तऊ उज्वल अपार जस पवनकुमार की ॥ ८ ॥

इनी श्री हनुमान पचीमी के कवित्त ममाप्तं २५ ॥

विषय—हनुमान् जी का यज्ञ वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञानत्रय—हनुमन्नेत्र खर्चाकार रूप में है । रचनाकाल, लिपिकाल अप्राप्त हैं ।

संख्या ४३०क. महाभारत (कर्ण पर्व), रचयिता—श्रीपति, निवासस्थान—मऊ, उहार देश (रीवा, वधेलखड), कागज—देगी, पत्र—११३, आकार—६३ × ६ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुच्छेद)—१६६५, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सवत्—१७१६ वि०, प्राप्तिस्थान—ठा० रघुनाथ सिंह, ठा० निववरन सिंह, ठा० जगवहादुर सिंह, ग्राम—समोसग, पोस्ट—नैनी, जिला—नाहावाड ।

श्रादि—श्री गणेशायै नमः पोथी लीप महाभारत कर्ण पर्वकी श्रीपती ॥

कवि कह प्रथमहि ताही मनावी । जाहि जपे नीर्मलि गति पावी ॥
जगत बढ जो कर्मक सीज्या । वारिज बधु दीन कर रज्या ॥
राती देवस जुग जेहि ते हीई । जेकरे तेजहि स्थान कोई ॥
जेकरे उदए आस्त के जामा । सीम नाइका कोन्ह प्रनामा ॥

:o:

:o:

:o:

कवि कर पिता धर्म कर धामा । धर्मदास अम ताकर नामा ॥
चारि पुत्र तेन्ह के भए तैसे । नाम त्रिमेप बहुत ही जंमे ॥
भे कवि गग प्रथम गुन आगर । पगं सेनि पुनि नुमति के सागर ॥
तामु अनुज दलपति अभिरामा । चौथे लीपति मोरइ नामा ॥
पंच अनुज अवहीते भायो नाम अनेत ।

पाचवान सम सुदर जेन्ह के गुन क न अंत ॥

सभा पर्व उतजोग सोहाई । भीष्म द्रोण भरि पितं वनाई ॥
विधि वस आगे वरनि कं रापा । तो सुनवे के मन अभिलापा ॥
तेन्ह कर तंत्य जानि मनमाही । कानं पारं मं रवेउ नीवाही ॥
व्यास महामुनि वरनि जो रापा । तेहिते मं वोन्ह पाढी न भापा ॥
कवि जन मानेहु मोर निहोरा । मन करी कवि आउक तोरा ॥
अंछर उपमा हीन जो हीई । श्री विहीन तुक बाढक सोइ ॥
करि आदर एह लीन्हेहु कैसे । अमर अमी उपरागक जैसे ॥
वास वंस श्री वृत जो आही । ताते प्रथमहि कहेउ निवाही ॥
तेहिते बहुरी इहां नहि भापा । छछेपाहि दीस्तर वदि रापा ॥
सवत सत्रह सैं वोनईसा । माघ मान दिन गयउ पचीसा ॥
कथा प्रकास कोन्ह तब सिध्य जोग अनुमानी ।
पडि फो कविआ करन कवि सास्नहि मति जानी ॥

अंत—

एहि भातीन्ह श्रीप आस्तुती कीन्हा । रथ चढि चलेउ रनाजित लीन्हा ॥
वात चीत चालत गए ताहा । जूके कानं पेत मह जाहा ॥
देषी सराचीत सकल सरीरा । सहित पुत्र रचिनदन वीरा ॥
परी रना नीर देह सोहाइ । पुण्डसोघ रनसोघ की नाइ ॥
वास छूट हीअ हर्ष जनावा । अय मं प्रीस्न राज पद पावा ॥
सचीता अथए नौसि नीसरानी । चली सीवर अय नारग पानी ॥
बहुरे देषी दुदीस्तील कानंही छाडी भसान ।
नीज नेवास मह वंसे गार्जत हनत नीसान ॥
ऐसन कानं केर संग्रामा । जे जन सुनिहो वरि मन बामा ॥

:o:

:o:

:o:

—अपूर्ण

विषय—महाभारत कर्ण पर्व का भाषानुवाद ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल मवत् १७१६ है । लिपिकाल ग्रथ के अत का पत्र लुप्त हो जाने के कारण अज्ञात है, पर ग्रथ धर्मदास कृत महाभारत के साथ एक जिल्द में है और उसका लिपिकाल म० १८८४-८८ है । अत इनका भी इसी के लगभग माना जाना उचित है ।

संख्या ४३०ख. कर्णपर्व, रचयिता—श्रीपति, रचनाकाल—स० १७१६ वि०, प्राप्ति-स्थान—श्रीयुत जनार्दन प्रसाद जी एम० ए०, एल० टी०, ग्राम—कठौली, पो०—मेजारोड, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—

कविवर पिता धर्म करनामा धर्मदास अम ताकर नामा ।
चारि पुत्र तेनके भं तंमे नाम वितेष कहत हौ जैसे ।
भं कवि गंग प्रथम गुन आगर परं सेनि पुनि सुमति के सागर ।
तासु अनुज दलपति ग्रभिराम्मा चौथे श्रीपति मोरं नामा ।

॥ दोहा ॥

पांच अनुज अबहो ते भापी नाम अनंत
पांचवान सम सुन्दर जेन्ह के गुन कर अंत
सभा पर्व उतजोग सुहाई भीषम द्रोण भरि पितं बनाई
विधि बस आगे बर्निक राषा सो सुनवे को मन अभिलाषा
तेन्हकर अंत जानि मन मांही कर्ण पर्व में रचो निवाही
व्यास महामुनि वरनि जे राषा तेहि ते में वोन्ह वाढि न भाषा
कवि जन मानेहु मोर निहोरा में न करी कवि आउक तोरा
अछर उपमा हीन जे होई श्री विहीन तुवक सब सोई
कं आदर एह लीन्हे कैसे अमर अमीउ पराग क जैसे
वास वंस श्री वृत जो आही ताते प्रथमहि कहा निवाही
तेहिते वहरि इहा नहि नाषा छंछेपहि बिस्तार वदि राषा
संवत् सत्रह सो बोनईसा माघ मास दिन गये पचीसा ॥

॥ दोहा ॥

कथा प्रकास कीन्ह तव सिध्य जोग अनुमानि
पढ़ि कै को कवि व्याकरण कवि सास्त्रहि मति जानि
अंत—अंसन कर्ण केर संग्रामा जे जन सुनिहं कै मन कामा
जेन्ह पुनि गया पिठ जनु दीन्हे तेन्ह भगवत भजन जनु कीन्हें
जग्य दान तप जप सब जेते ते जनु जन कं वंठे तेते
तेन्ह तीरथ जनु नव नहाये भारथ कथा वीत जेन्ह लाए
जीवनि मुक्ति रहे होइ अंमे ते निर्वाण पाइ पद वंमे
आन के कानं वाचं जोई दसौ अंस फल पावें सोई
अपने हेतु जेहि अघोर भाउ वाचं सो समग्र फल पाऊ

॥ दोहा ॥

जो अग्निनाथ जानि जिय सुनं सो पूजं आस
कर्ण पर्व एहि भांतिन वरनी श्रीपति दास
इति श्री महाभारते कर्ण पर्व कर्ण वधनोनाम अष्टादशो अध्याय ॥

संवत् १९५० मितो फागुन वदी ६ वार श्रंतवार मन १३०१ फमली वो सन १८६४
सवी हस्ताक्षर वृजमंगल सिंह ॥

विषय—महाभारत कर्णपर्व का भाषानुवाद ।

रचनाकाल

संवत् सत्रह सौ दोनईसा । माघ मान दिन गये पचीमा ॥

विशेष ज्ञातव्य—आरभ के दो पृष्ठ फट गए हैं ।

संख्या ४३१. श्रीपति के कवित्त, रचयिता—श्रीपति, निवासस्थान—नागी, कागज—
शी, पत्र—७, आकार—१० $\frac{3}{4}$ X ७ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (प्रतिपृष्ठ)—
१०८, पूर्ण रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आयश्यापुस्तकालय (याज्ञिक
ग्रह), नागरीप्रचारिणी सभा, कागी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

गग के कूल की गेल गहो जिनि आगे वि(रच) की गेल कटंगी ॥
नीर समीर लगंगो कहू तन आनन एक ते चच गढंगी ॥
श्रीपति पाठ पढे विधि सू जह दूगने और न पाठ पढंगी ॥
भाल में बाल तमीस लगाइ के ईस बनाय के सीम चढंगी ॥ १ ॥
जा जमुना में अह्लात जो प्रात ही विप्र बनाय बनी विगरंगी ॥
श्रीपति मरि दे है उडके पामरी चाए हिये की हरंगी ॥
माखन चोरि के र की चोरि के गोपी किशोर पुकार परंगी ॥
काछनी लाल (के) गुज की माल दे हाल दे तोहि गुपाल करंगी ॥ २ ॥

॥ कवित्त ॥

न सी दीपक सी खासी चपला सी चास चपकलता सी व्रजभान की विभासी हैं ।
ननि चकोरनि की सीचत सुधासी कलाधार की कला सी मुख सुखमा प्रकासी है ।
लिखि ललवानो रूप करत का बखान जन्यो श्रीपति सुजान कासी नगर निवासी है ॥
म कज नलिका सी जोति ज्वालिका सी बाल लाल मालिका सी हरतालिका की उपासी है ॥ ३ ॥

मध्य—

फूले आस पास कास अमल प्रकास भयो,
रही न नितानी कहू महि में गरद की ॥
राजत कमल दल ऊपर मधुप नन,
छाप सी दिखाई व्रज विरह फरद की ॥
श्रीपति सुजान कहू आली बनमाली विना,
कछु न सुहाय मेरे मन के दरद की ॥
हरद समान तन भयो है जरद अय,
करद सी लागे यह चादनी तरद की ॥ २ ॥
खंजन खरे खिजात मीन मन मुरकात,
लिखि के लजात लोने लाज भरे भीर के ॥
कारे कारे वारे अनियारे उजियारे रूप,
कारे हैं छुवन वारे कानन के छोर के ॥
पानिय पखारे सखि लोचन तिहारे बहू,
श्रीपति पुकारे प्यारे जसुवा बिहोर के ॥

रति के सहायक हैं महा सुखदायक है,
मेन के मुसाव हैं साहव हैं चकोर को ॥२३॥

अत—कीरति तिहारी वरनत रघुवीर धीर,
श्रीपति फणद की सुमति हहरति है ॥
छित पर हिमगिरि हिम हिरि (गिरि) पर गंगा
गंगा पर सरद घटा सी ठहरति है ॥
सरद घटा पै सुरपति के ग्रटा सी,
सुरपति के अटा पै चद निजु छटा छहरति है ॥
चंद की छटा पै ध्रुव धाम सी धवल बल
धुव धाम पर धरग धुजा सी फहरति है ॥५६॥
बिना कारे काजर सांगार तिय को फीका राग
बिना कारे केश देग लागत न प्यारे है ॥
कारे रग अनेम वद सुरभि सरस तामे
अगर के कारे धूप देवता सुखारे हैं ॥
कारे रंग सुरमाते अछिनु की जोति जागे
श्रीपति बखाने नैनन मैं रंग कारे हैं ॥
कोरे रंग माहतार कारे के निहायत कारे
रग वारे देव साहिव हमारे हैं ॥६०॥

कवित्त कान्ह के लिखे श्रीपति जी के साठि ।

विषय—विभिन्न विषयों के साठ कवित्त मयों का संग्रह ।

संख्या ४३२क भाषा चंद्रोदय (व्याकरण), रचयिता—प० श्रीलाल, कागज—
आधुनिक, पत्र—१००, आकार—६ $\frac{5}{8}$ × ५ $\frac{1}{8}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण
(अनुच्छुप्)—१५००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सन् १८६५
के लगभग, मुद्रण काल—सन् १८५६ ई०, प्राप्तस्थान—श्री नृसिंह नारायण शुक्ल, ग्राम—
मीरजहाँपुर, पो०—मिटारा, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—भाषा चंद्रोदय अर्थात् हिन्दी भाषा का व्याकरण ॥

१ पाठ

व्याकरण विद्या से लोगो को शुद्ध और अशुद्ध शब्दों की विवेचना और उनकी योजना
का ज्ञान होता है ।

शब्द मात्र वर्णों से बनते हैं इसलिये पहले शब्दों के मूल वर्णों का लिखना उचित है वर्ण
अर्थात् अक्षर वृद्धिमानों के बनाये हुए संकेत हैं । वे देश भेद से नाना प्रकार के हैं उनमें से देवनागरी
को वर्णमाला लिखते हैं ।

अंत—भाषा चंद्रोदय भयो जग के बीच अनूप ।
ता प्रकाश सूर्य परे छोटे मोटे रूप ॥
:०: :०: :०:
तनके सबहीं काम को धरु विद्या में ध्यान ।
विद्या तें नर जग लहें विशद कीर्ति धन धाम ॥

इति भाषा चंद्रोदय ।

विषय—व्याकरण विषय का वर्णन ।

संख्या ४३२ख. विद्याङ्कुर, रचयिता—प० श्रीमाल, कागज—देशी, पत्र—७८, आकार— $८\frac{३}{४} \times ५\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—११८०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—म०न् १८६० ई० के लगभग, मुद्रणकाल—सन् १८६० ई०, प्राप्तस्थान—श्री नृसिंह नारायण शुक्ल, ग्राम—मीरजङ्गपुर, पान्ट—मिडारा, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—विद्याङ्कुर पहिला भाग

१ पाठ

सृष्टि के विषय मे

किसी समय एक पंडित अपनी शाला मे बंठा हुआ दिद्यार्थियों को पटा रहा था उसी समय कोई मनुष्य एक जगली गंडा लिये उसी शाला के पास होकर निकला तो उस गंडे को देखकर लडको ने अपने मन मे बडा आश्चर्य करके गुरु से पूछा कि महाराज यह क्या है हमने ऐसा ज ज कभी पहिले कोई नहीं देखा ॥

॥ गुरु ॥

यह ईश्वर की अनंत सृष्टि है इसमे अनेक आश्चर्य के पदार्थ हैं उनका जानना दिद्या के बल और खोजने से होता है । तुम भी श्रम कर विद्या सीखोगे तो ईश्वर की रचना का भेद जानोगे ॥

अत—

८ पाठ

प्रकाश के विषय मे

शिष्य

आपने प्रकाश की शीघ्रगति के कारण गर्जना सुनने के पहिले दिजली वा देउना दर्शन किया परतु अब मैं यह जानना चाहता हूँ कि प्रकाश की कितने काल मे तितनी गति है ॥

विषय—सृष्टि और पशु, पक्षी, मनुष्य, कीट, पतंग, पेट, पंछे आदि विषयों का वर्णन ।

संख्या ४३३. अवधूत गीता भाषा टीका, रचयिता—मय्यानाथ (? मजानाथ), कागज—देशी, पत्र—६४, आकार— $६\frac{३}{४} \times ४\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपाठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५१२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी लिपिताल—स० १८५६ वि०, प्राप्तस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह) १०१५३ चम्ता), नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥ प्रथम अवधूत गीता लिषते ॥

कृपा करे ईश्वर सदा देवपुरिष तो जानि ।
 मोमें जाकी वासना ईछया करे हीत मानि ॥ १ ॥
 आत्मा मैं परमात्मा सवमें पूरन सोइ ।
 निराकार सो देविये सबते न्यारो जोइ ॥ २ ॥
 पंचभूत या देह मैं जगत आत्मा जानि ।
 अंतर है परमात्मा कमलपत्र जल मानि ॥ ३ ॥
 नवत कहोही कोन कु सवमें बृह्महि जोहि ।
 पूरन जो परमात्मा मेरे अंतर सोइ ॥ ३ ॥
 आत्मा केवल सर्व है भेद कछू नहि मानि ।
 आस निरासो बात है बिसमय कछू न जानि ॥ ४ ॥

००:

००:

००:

श्रुत—अष्ट प्रकरणं गीता जुही दत्त गुरु की भास ।
 सो “श्री सज्यानाथ” नें भाषा करी प्रकास ॥
 सिंहम व्रत्य वत्तं पठे तिनकी हरि सु नेत ।
 जाते यह भाषा करी कलिके जीवन हेत ॥२८॥

:०:

:०:

:०:

जग की चिन्ता छाडिदं अपनी चिन्ता देपि ।
 जो तेरी रछ्या करे ताही निन्न पेपि ॥२७॥

इति श्री दत्तात्रेय विरचित अवधूत गीता स्वात्मार्णवदेम अष्टम पूर्ण ॥ ८ ॥ मंदारमाला
 कुलिताल कायकपाल माला कृतमेसराय ।

दिव्य श्रवणचंद्रिग वरायणम निचायचन्मसिचाय ॥ १ ॥ एव सुध अरुधं वा मम देषो
 न दियते ॥ इति श्री नवत् १८५६ का साधे १७२० मासाना मासोत्तममासे पौषमासे सुभेष्टेण
 पक्षे तिथी मन्मनी ७ गुर धामरे घटि १५ पुस्तितग लिध्यत सुरोठ मध्ये मिसुर नथोलालिघायतं
 वंणय पुस्यालदान सुभ मस्तु कल्यानमरतु ॥ १ ॥

दत्तात्रेय की रनी ‘अवधूत गीता’ की भाषा टीका ।

सख्या ४३४. नाथी, रचयिता—गतदाम, कागज—देशी, पत्र—३५, आकार—
 ३३ × ५६, पत्र (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुपटुप्)—२१०, अर्पण, रूप—पुराना,
 वक्ष, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा (याज्ञिक
 मण्ड), काशी ।

आदि—अथ स्वामी जी संतदास जी की साप गुरुदेव की अग की ॥

सतगुरु वर पन्मारथी अंसी देइ वरगाइ ॥

धरौ पात्रलक छू दाइ करी ॥ अश्रर मूलक ले जाइ ॥१॥

चोंगम धरीया मूलक ॥ तामें सुरनर रहे समाइ ॥

अधर मूलक है रामनाम ॥ गाँहा जन पछच्या जाइ ॥ २ ॥

सतगुरु मिलीया सतदास ॥ कटी भरम की पासि ॥

जमकर भागा जीव का ॥ बसा राम कं वासि ॥ ३ ॥

भौ भागा जमत्रास का ॥ लागा सतगुरु वांण ॥

चौरासी का संतदास ॥ मिटि गया आवण जांण ॥ ४ ॥

गोला चलाया सबद का ॥ सतगुरु ने जरचा जीहि ॥

..... ॥

मध्य—रामगरीव नवाज कूं कोई रटें गरीवी माहि ॥ तो काम हटें कुलपन मिटें ॥
 याद विपमता जाइ ॥ याद विपमता जाइ ॥ सुरति समता नुप पावें ॥ तिसरा ताप सिराइ ॥
 पाप फल निकटि न आवें ॥ तातें भजीए भावसुं ॥ दिडि प्रतीति स सोचारं पगट दरसि हैं ॥
 जे रता सुमररा माहि ॥ जे रता सुमिरण माहि आंर आरंभ छ..... ॥

श्रुत—राजतेजधन जीवना मति बदी सम्हावो कोइ ॥ रावण बदी सम्हाइ करि ॥
 जो गयो गमुलो सोइ ॥ जो गयी गमुलो सोइ ॥ बदी को गुन्हो न छूटें ॥ अजहू न कल बणाइ-
 ताहि वस्त्यो घा कूटें ॥ लंक भनीपण कूं मिली ॥ रने की फल होइ ॥ राज तेज धन जीवना
 मनि बदी सम्हावो कोइ ॥२५॥

॥ नाथी ॥

प्रह्लाद प्रति लटका कह्यो ॥ जाकी सपि भागवत माहि ॥

मित्र कपट अतिसै बुरो ॥ कबहूँ कीजें नाहि ॥२६॥

विषय—साखियों और कुडलियों में रचनाकर धार्मिक उपदेश किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ जीर्णविस्था में है । आदि का एक पत्र है और बीच के ८ पत्रे सुप्त है । दसवें पत्र से ३१ पत्रों तक सख्याएँ पड़ी हुई हैं । बाद के २२ पत्रे बिना सख्या के हैं ।

संख्या ४३५. भवरगीत, रचयिता—सतदास या मतरनिक, कागज—देगी, पत्र—
५७, आकार—६ $\frac{३}{४}$ × ६ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुपुष्प)—१२३३, पूर्ण,
रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—म० १६२३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री नृसिंह
नारायण शुक्ल, ग्राम—मीरजहापुर, पो०—मिटारा, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गरुशाय नमः ॥

॥ रागजयत श्री ॥

गनपति गजसुप सुपसार ॥ १ ॥

आनंद कारन जग विघन हरन प्रन रिधि निधि वृध दातार ॥ २ ॥

अहिपुर नरपुर सुरपुर अजहरि हरपुर सुभ करतार ॥ ३ ॥

कलि जुग कवि जन कलपलना "कविसंत" विनायक चार ॥ ४ ॥

:०:

:०:

:०:

॥ राग श्री ॥

इत हरि उत व्रपसानजा जुगपद सिर नाइ ॥

ध्यान आन मन भावते जुग आयसु पाई ॥ ३ ॥

भवरगीत जुग प्रीत हित रुचि गीत बनाई ।

"संत रसिक" वरनै विमल संतन समुक्काई ॥ ४ ॥ ६ ॥

॥ राग विलावल ॥

येक दिना प्रभु वंछि सुयासन गोपिन को सुधि आन कही है ।

है ध्रग कथा प्रभुता सिगरी जौली ब्रज की सुधि नाहि जही है ॥ १ ॥

ऊधौ बेगि हकार कही ब्रजराव सया मम काज सही नही ।

गोपिन गोवन के धन जीवन प्रान अधार रहे हमही है ॥ २ ॥

जा दिन हौं ब्रज त्यागि कियो उन घेर लियो मग रीकि रही है ।

ता दिन ते सुधि लीनी न हौं उनके अय प्रेम बढी अत ही है ॥ ३ ॥

नद समेत सर्व ब्रज लोग त्रिया विरहानल ताप दही है ।

ज्ञान विहीन दुषी "कवि संत" स्व ईस्वर मं पहिचान नही है ॥ ४ ॥

अंत—

॥ राग पूलू ॥

मित वचन सुनि हरये कृपा निधान ।

मम प्रसन्न हूँ दोही सो वरदान ॥ १ ॥

मागी विदा चरन गहि हिय हरपान ।

भवन गये हराधर के उदब मुजान ॥ २ ॥

चरन परत जन देख्यौ भेट्यौ राम ।

पूछी कुसल कही सब गवने घाम ॥ ३ ॥

भृमरगीत इति गायौ "संत" ।

अनिन जगल चरन रति चाहहि नदा अछिन्न ॥ ४ ॥

नाथ कृपा कर दीजं लीजं जत भरि ।

"संत" समीपो कीजं नित रहहि हजूर ॥ ५ ॥ १५६ ॥

इति श्री भूमरगीत मत रमिक विरचितायां उद्ध (व) गृह प्रवेशो भाग समस्त ॥ संपूरनं ॥
भागं दृश्य ॥ १०॥ रवीं ॥ मंदत ॥ १६२३ ॥

विषय—उद्ध वा गोपियों को ज्ञानोपदेश करना ।

मंठ्या ४३६. विचारमाना की टीका, रचयिता—मदानंद, कागज—देशी, पत्र—४६,
आकार—३ $\frac{1}{2}$ × १ $\frac{1}{2}$ इंच, पन्कि (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुपट्टु) —८२२, पृष्ठों,
रूप—प्राचीन, गद्य पद्य, निधि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्रीयुत् गोपालचंद्र सिंह जी एम० ए०,
मिथिल जग, गुलतानपुर (अवध) ।

आदि—ओ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ दोहरा ॥

नमो तस्य मरवातमा टीका माल वीचार ।
आटारारथ पूरण करी विघन दूर करमार ॥ १ ॥
अथ विचार माला की टीका अधरारथ लिखते ॥ दो ॥
नमो नमो श्रीराम जू सत चित आनंद रूप ।
जिह जाने जग सुपनवत नासे भ्रम तम कूप ॥ १ ॥ टीका ॥

नममकार है नममकार है श्री राम जी कीं ॥ श्री जू है लक्ष्मी ज्ञान अर मकत रूप सो
तिगकर के संजुगत जो है राम वही रो रम्या दू वाम रव विषं जीव रूप करकं ॥ सो सत चंतन
अनंद है ॥ जिमके जाने ते जगत जोहै सुपने की बतवही रो न्याई सो नास हो जाता है तम कहोरो
अधेरा कूप ॥ १ ॥ मूल ॥

राम मया सत गुर दया साध संग जव होइ ।

तव प्राणी जाएँ कछु रह्यो विषं रस भोइ ॥ २ ॥ टीका ॥

सो अंमे श्रीराम की मया वही रो दयातें अर सतगुरो की दया तें संतो का संग जव होता
है ॥ तव प्राणी जानता है कछु इक जो रह्या हों मैं विषं रसो के भोगणे विषं ॥

अत—

॥ मूल ॥ सोगटा ॥

सबह सैं छवीस संमत माघव मास सुभ ।

भो मति जित वहुँ तीम तैतक धरन प्रगट करी ॥ ४२ ॥

॥ टीका ॥

मतारह सैं छवीम संमत अर माघ के महीने सुभ

विषं मेरी मति जैती कछु थी सो तेही इक वरनी है प्रगटि करिकं ॥ ४२ ॥ मूल ॥

गोना भाग्य को मनो ऐकादम की गत ॥ अष्टावकर वमिष्ट पुनि कछुक आपनी
उकति ॥ ४३ ॥ टीका ॥ भगवन गीता अर महा भाग्य का ऐकादम सिकंद की जगति ॥ तैसेही
अष्टवक्र अर दण्डि जी के मत को ले करिकं फेरि कछुक आपणी उकत भी कही है ॥ ४३ ॥

इति श्री विचार माना गटोक आत्मवान की स्थित व अष्टमो विश्राम ॥ ८ ॥

॥ दोहरा ॥

टीका मान विचार की अग्रगरथ रवीं सुपदानि ।

मदानंद गुर द्विपा नें तेन मुहाग्घो ज्ञान ॥ १ ॥

इति टीका समाप्तं ॥

विषय—अज्ञान दान एत विचारमाना की टीका ।

संख्या ४३७. अखंड प्रकाश, रचयिता—मदाराम, कागज—देगी, पत्र—११७,
 आकार—६^३/_४ × ४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१२८७, पूर्ण, रूप—
 प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—मवत् १६३०, प्राप्तिस्थान—१० ग्धुराज वैद्य
 त्रिपाठी, स्थान व पोस्ट—सुहोली, जिला—आजमगढ़ ।

आदि—ॐ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ दोहा ॥

एक रदन करि वदन जन विघ्नहरण गणराय ।
 शिवा शून सद्गुण सदन वंदी पद मिर नाय ॥ १ ॥
 हरिगुर गणपति सारदा वंदी पद सब केर ।
 करुणा करि उरय हरी हरहु विघन घनेर ॥ २ ॥
 मगल कीरति राम की मूरति संगल घाम ।
 सर्व क्रिया मगल मयी मगल राम सुनाम ॥ ३ ॥
 चित्रकूट चित्त मह बमौ लक्षिमन दिद निर्वेद ।
 आत्म विद्या जानकी रामात्म विन ॥ ४ ॥
 सर्व शक्ति सर्वात्मा सर्वेश्वर सुखधाम ।
 सदा राम हृदि वास कर रामचंद्र अनिराम ॥ ५ ॥
 अंत—द्वैत हनं दोहरा सोई राखं अद्वैत अनंत ।
 ता अद्वैत अनंत में सदाराम विहरत ॥ २८ ॥
 द्वैत हरं सो दोहरा राखं एक प्रकाश ।
 सदा राम ता एक में चिद्वत जन कर वास ॥ २९ ॥
 अष्टोत्तर दोहा अष्टशत करि कियो अखंड प्रकाश ।
 ता अखंड प्रकाश में सदा राम राम की वाम ॥ ३० ॥

॥ छंद ॥

सर्वथा सोरठा दोहा सहितहि जानि ।
 सह असंख्या सकल मिलि भए लेहु पहिचानि ॥ ३१ ॥

इति श्री सदा रामेण विरचित अखंड शिष्य वर्णन नाम सप्तमं खंडं संपुर्णम् श्री गुरु चरणे
 कमलेभ्यो नमः । श्री सं० १६३० भाद्र शु० ॥ ५ ॥ दस्तपत ॥ सिवदास पाडे ॥ शुभ स्थाने
 ग्राम वास हरदोपुर ॥ जादसी पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशी लिखित मया पुस्तक वाचा मंत्रादान महंय
 का स्थान सहीपुर ॥

विषय—आत्म ज्ञान विषय वर्णन ।

संख्या ४३८. बरवै पदभट्ट, रचयिता—मवलस्याम, कागज—देगी, पत्र—६,
 आकार—६^३/_४ × ३^३/_४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६०, अपूर्ण,
 रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काजी नागरीप्रचारिणी मभा, वाराणसी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

तपन तपं रितु ग्रीषम तोषन धाम ।
 ताकि तरुनि तन सीतल तोषं वाम ॥ १ ॥
 छाह सघन तरु भावं बालम साप ।
 की प्रिय परम सरोवर सीतल पाप ॥ २ ॥

यहै प्रबल अति दारुन असहन वात ।
 मांन नर्म मन भावं सर जलजात ॥ ३ ॥
 पिय संग नेज सोहावनि भवन उत्तीर ।
 भावं अंग वितोपन मुरभि समीर ॥ ४ ॥
 जेठ माम नपि सीतल वर कं छाह ।
 करई नोद सिग्हनवां पियकं वांह ॥ ५ ॥
 पिय कर परस सरस अति चंदन पंक ।
 भावनि रजनि सुहावनि दरस मयंक ॥ ६ ॥
 पिय मंग सीतल हीतल जो विधि देइ ।
 वजरिन क.....छोह पान बहु लेइ ॥ ७ ॥
 पुनि मोर मुपं जोवं पून तर श्रेक ।
 मिह मटा.....सोवं मृग दम एक ॥ ८ ॥
 पाटल चाम पटल वन भावं ताहि ।
 भूलेउ नाह.....र घर आवं ताहि ॥ ९ ॥
 "सबलस्याम" विनु ग्रीपम उपवन वाग ।
 तय सीतल अय हीतल जनु दव लाग ॥ १० ॥
 :०: :०: :०:

अंत—कुंज कुंज वन उपवन सरित समाज ।
 तनु मनु देपि दहतहै विनु ब्रजराज ॥ ४७ ॥
 भूलेउ भवर न एहि वन आवन फोन्ह ।
 कुमुमित बेलि कचनि सपि मन हरि लीन्ह ॥ ४८ ॥
 "सबलस्याम" संग एहि ब्रज सब सुप रास ।
 पवार कुअर विनु नहि सुप कातिक माम ॥ ४९ ॥
 मधुकर तुमहि दोष नहि स्यामहि लाग ।
 एहि ब्रज विरह विथा कर समय विभाग ॥ ५० ॥
 पहिरायउ मन मोहन नंद कुमार ।
 अय सपि हरत हेरि हिय मालति माल ॥ ५१ ॥
 हरत हेरि मन मधुकर सरद निहारि ।
 पैलेउ स्याम सया संग एहि रिनु सारि ॥ ५२ ॥
 वंरिनि मवति कचनि अति जेहि पिय लीन्ह ।
 मनमोहन मनु मोहेउ का पडि दीन्ह ॥ ५३ ॥
 गरिन जाउ सपि उपवन सवति अंकूर ।
 जो विधि करं न भावं वालम पूर ॥ ५४ ॥

इति सरद

—अपूर्ण

विषय—गोपियों का विरह वर्णन ।

विशेष ज्ञानव्य—रचना अपूर्ण है । प्रोगम, वर्ण और जरद का ही वर्णन है, अन्य अतुओं का वर्णन नहीं मिलता । दम्ननेत्र के प्रत्येक पत्र के एक ही और लिखा गया है । रचनाकाल और लिपिकार का कोई पता नहीं ।

संख्या ४३६. महिम्न स्तोत्र भाषा, रचयिता—महाराज ममर्गमह, कागज—देशी, पत्र—७, आकार—११ $\frac{१}{४}$ × ८ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—११०, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि, , नागरी, लिपिकान—म० १८८० वि०, प्राप्त स्थान—कुँवर लक्ष्मण प्रताप सिंह, ग्राम—माहीपुर (नालखा), पो०—दृष्टिया खाम, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—..... हाय जगत ॥ ५ ॥

इहा धीं को है कायधी कंसो उपाय कहा कंसो वंठकु पाव ।
कौन धीं सामा है जाहि लवै विधि कौनइ धीं विधि विश्व बनाव ।
यो विधि को जो अनेक विवेक विहीननि को बरजोर बकाव ।
तेरी अतवर्ष है सो प्रभुता मे कुतवर्ष कहा थिति पाव ॥ ५ ॥ ० ॥

अंत—

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्र मेतत्पठति परम भक्त्या शुद्ध चित्तः पुमान्य ।
स भवति मति पूर्णो रद्घ तुल्यः परात्मा प्रचुरतर धनायुः धनवान् पुत्रवाश्च ॥३७॥
जे दिन हीं दिन “श्री समरेस” के कौन कवित्त निचिन्न धरं जू ।
आनंद संज्जत ते शिवलोक मे द्वे शिवरूप सदा विहरं जू ।
या जग मे धन पुत्रनि मंडित, ह्वं चिरजीवित कीर्ती भरं जू ।
सुद्ध हिये दूढ भाव लिये पुनि जे जग मे जन पाठ करं जू ॥३७॥

:०:

:०:

:०:

जप तीरथ व्रतदान जो जाग जोग जग माह ।

तेसन यानुति की गने एक कला सम नाहि ॥४०॥

इति श्री मन्महाराज समरसिंह विरचित्त महिम्न सस्कृत व भाषा संपूर्ण शुभमस्तु ॥
कल्याणं करोतु मंगलं ददातु सवत् १८४० ॥ पौष शुक्लः १ ।

विषय—शिव स्तुति की गई है ।

संख्या ४४०क. ल० (लक्ष्मण शतक), रचयिता—समाधान, कागज—देशी, पत्र—१५, आकार—१० $\frac{३}{४}$ × ५ $\frac{१}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२३६, खडित, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—नागरी, प्रचारिण। तथा, यामी (दाता—श्रीयुत कन्हैयालाल केशरवानी, स्थान व पोस्ट—भारतगज, जिला—इलाहाबाद) ।

आदि—

:०:

:०:

:०:

बीर विधिनिको ग्यात अनरू को जत वाता राम आता महारन मं ॥ ५ ॥
ठाढो युद्ध भूमि में त्रिसुद्ध राम बंधु विजय हील कीर्त लेत कोटि रद्घ के अतक को ।
क्रुद्ध दग् दाहक दुन्नन दल दाहं लेत डाहं लेत मानो त्रिकूट गिरि वरु को ।
भनं “समाधान” दसज मुपन मरोरे लेत छोरे लेत बंदी सुर सिद्ध मुनि रक को ।
रन को ऋकोरे लेत सुभट लटोरे लेत सुजस बटोरे लेत टोरे लेत लंक को ॥ ६ ॥
आयो इंद्रजीत दसकध को निवध वध बोटयो राम दधु सो प्रबंध किरयान को ।
कोहै असुमालि कोहै काल विकराल मरे समुहें भये न रहै सान महेसान को ।
तूं तो सुकुमार यार लछन कुमार मेरी माखे समहार को सहैया घममान को ।
बीरन चितैया रन मडल रितैया काल फहर पितैया हो जितैया भयवान को ॥ ७ ॥
इतं रमानंद उतं रावन को नंद बडी मार यो विलंद ज्यो धनंजय निपाद की ।
बोहूं रनधीर बोहूं धनुष धरोन कान कुंडल कोदड चंड मंडली पिवाद की ।
भूप रन भूपर विसान विदिसान पर छाये सुरपंड घोर मडित निनाद की ।
जाना बलि व्योम गिर बाना बली थकी देवि बानाबली लछन कुमार भेषनाद की ॥ ८ ॥

:०:

:०:

:०:

मध्य—

कहूँ हृद्यियन पं हृद्यि कहूँ रथ्यियन पं रथ्यि कहूँ वथ्यियन पं वथ्यि कपि कौनप मिलान ।
 कहूँ मुडन पं मुंड कहूँ रुडन पं रुंड कहूँ तुडन पं तुंड परे लोटत धरान ।
 मच्चो जोर मफर जंग टट्टु फुट्टु तन भंग टिनन निन्न श्रंग अग भगे राछस जमान ।
 तहां तेज के निधान करि कोंप “समाधान” घोर लछन सुजान नुक न्कारे किरवान ॥
 रनजीत करं कहूँ रिछ मागामग जूहूँ भगवधर समुहूँ लपि वीर पिसियाव ।
 महाबनी मेघनाद गल गज्ज सत्तचनाद देदि ज्मके मनुजाद कियो माया को विधान ।
 बन्धो रात को प्रजार दगो दिता श्रंधकार गहौँ सूँझ निजकार काम लागे अकुलान ।
 तहां तेज के निधान करि कोंप “ममाधान” ॥०॥

उठे बारिद उमट घोर घटन घमट भका नूनन नूनउ धूर घुघर उडान ।
 भई घट कपि दृष्ट लागी होत शोन वृष्ट मन मूल खं सुस्ट हाड दत्त केस कान ।
 उठी डाकिनि अपार मिर टूरिन उदार भरं लोहूँ सी कपार करे काट कतलान ।
 तहां तेज के निधान ॥१३॥

बडघी जोर पारावार चहूँ श्रीर धारापार नहि जासु वागपार ग्रह ग्रह उछलान ।
 करं अमुर अतंज मिलं तभ सं निसऊ अनदेपे हक हक अन्न घालत श्रमान ।
 फिरं भूत प्रेत धार मुय बोलं मार मार कपि नीत असरार सार न्कार रेहुरान ।
 तहां तेज के निधान ॥२४॥

अत—इत घोर लछछन पितयी तछछन की सलछछन गरुजियं ।
 रनसीय अगद नील नल केगरी तज्जन तज्जिय ।
 वडे जामवंत बुरत दल हनुमत आदिक हुंकरे ।
 गिरि विटप ने भट प्रलय लपि जनु फनी फनधर फुंकरे ॥६६॥

॥ कद दोहा ॥

मगर दछछ लछछन पितयी उत रछछस बलवान ।
 उद्मट कौनप कपिन को मच्चो घोर घमसान ॥७॥

॥ छट वी ॥

इत लछमन बीरं पिति रनधीरं कुप्प गहोरं जुडू रच्यो ।
 उत दगमुय नंदन मुजट विलंदन उगर अनदन मनर नच्यो ।
 दोहूँ दल भट कोर्ष रन रम रोपे चिन चट चैपे उमा जगे ।
 जनु प्रलय आलोपे जम जग लोपे दड रन गोपे ताडन लगे ॥६७॥
 भट मकंठ धावें गिरिन चतार्यं अरिन.....

:०

:०:

:०:

—अपूर्व

विषय—नधमगु श्रीर मेघनाद की मचाई का वर्णन ।

विशेष ज्ञानव्य—रचनाज्ञान, निरपिज्ञान अज्ञान है । गम्या १।२।१।१।१।१।१।१।१।१।१।२० के पत्रे नहीं हैं और न० २३ के पत्रान् के पत्रे भी नुपन हो गए । यह जिनना बड़ा था कुछ पता नहीं ।

मंदा ४४० प. नधमगु जन, रचयिता—ममाधान ।

आदि—लधमगुजनन—ममाधान इत

राम रमा रागानुजहिं प्रनवीं पवनकुमार ।

श्रीगुरु गणपति चरण भजि शीमत शम्भु उदार ॥१॥

श्री वागेस्वर पद पदुम प्रणवो परम पद्विद्र ।
 मेघनाद के जुद्ध में वररणी लपन चरित्र ॥ २ ॥
 श्री रामानुज मनुज नहीं धरणी धारण धीर ।
 वदीं जन मन अछमन लक्ष लक्ष्मण वीर ॥ ३ ॥

॥ कवित्त ॥

प्यारी सीताराम को उजारी रघुवस को अग्यारी जन पंजकारी न्यारो करो रन को ।
 रवि कुल मडन प्रचंड वरिवड भुज दडन उदंडन सो पडन पलन को ।
 समाधान रक्षक अपक्ष पक्ष लक्षमन अक्षमन लक्षमन अक्ष दीन जन को ।
 सीधन को सर्व गर्भवतन को गर्भगज अर्भ अर्धधेश को मगर्भ स्तूहन को ॥ १ ॥
 भूप दसरथ को नवेलो अलवेलो रगरेलो रोप भेलो दल निचर निचर को ।
 समाधान कीरति उमडी वलवडी चडीपति सो घमडी कुलमडी दिनकर को ।
 इद्रमद गंजन को भंजन प्रभजन तनय को मनरंजन निरजन उभर को ।
 राम गुन जाता मन वाछित को दाता हरि भक्तन को दाता धन्य आता रघुवर को ॥ २ ॥

मध्य—

महाबाहु भूप दसरथ के कुमार मारहु ते सुकुमार जंतवार समरन को ।
 असरन सरन अमगल हरन भार धरनी धरन मजवत महामन को ।
 नंदन सुमिद्रा को निकदन अमित्रन को ध्यान जग बंद दडो यधु मद्रुहन को ।
 कंता उमिला को श्री निहतादुष्ट जीवन को हुता इद्रजीत को निहता पत्रगन को ॥
 ठाढी जुद्ध भूमि मे त्रिसुद्ध राम वधु विजय हीले कीले लेत कोटि रदके द्रव्याको ।
 क्रुद्ध दलवाहक द्रुवलदल दाहे लेत अढार्ये लेत मनहु त्रिकट गिरि दबा को ।
 रन को ऋकोरे लेत सुभद्र लटोरे लेत सुजस वटोरे लेत डीरे लेत लका को ।
 इतहु प्रचंड छोर दडन कठोर घोर धनुष टकोर छोर छोनि नुगगन मे ।
 भने समाधान अगदादिक समेत अोज उमग भपत की तयाधे छनपन मे ।
 काल ज्यो कराल कोप जले ज्वाल माल मानो होत हे अकाल प्रलय काल त्रिभुवन मे ।
 समर सघाता वीर विजित दिखाता अनर को जगदाता रामभगता वृत्तान मे ।
 उडाय मेघमाल को उताल रच्छपाल बाल पांग वान गदघाल पंग जाल दास्य ।
 यो न होत होयगो न ज्यो अमान इद्रजीत रामचंद्र वधु सो कराल जट रुचिय ॥११८॥
 दडत मकंटावली विचाल मरतावली सरावती चलाय रच्छतावली सदागिय ।
 निशक लंकनाथ नद इद्रवान पूरि भूरि अद्रि पूरि चूरि कं गरर गाज दारिय ॥
 परत वज्र देखि राम वधु ब्रह्म अत्र सोप रच्छ श्रोप गदकोप बड टोप धारिय ।
 जरंत जानुधान जान राघवाधिपति अति पार पति हित पासु पति अत्र पारिय ॥११९॥
 घलंत रुद्र वान कोटि रुद्र कुप्य मानदे दिसान मे दिसान मे वृदानुधार रुमिय ।
 रमेश वधु क्रुद्ध हूँ रमेसवान चोट घल्ला कोटि फारा रुद्र नग लीन कं उमानय ॥
 महा प्रलं कराल काल ज्वाल जाल लोका कं दिलोकि दोब योक मे द्विलोकि लोका उमिय ।
 विपच्छ पच्छ भच्छ भच्छ रच्छ कच्छ घच्छ रच्छ रच्छनंद को सो यच्छ फोर २ जमिय ॥१२०॥
 करोर रच्छ रोर वच्छ वच्छ फोर बाहु तोर घोर घोर कं भरोर भूपताल धानवान गो ।
 जहान मे अकंपमान कपमान कंपमान कं दिसान वे दिसान मे नुप्रपातमार भो ॥
 अखड चंड मारतंड मंडलं उमडि कं उदड ज्वालमाल नड जात यो प्रमान को ।
 अमान रामवान कोटि भानु को प्रमान कोटि बल्पक वृत्तानु ता तमान भासमान भो ॥१२०॥
 मची सुलंक हाय हाय जोर उवाल छाथ छाथ राम वान धाय धाय रच्छ वजं भजिये ।
 उडाय कुभ मस्त को प्रहस्त को निरस्त कं समस्त जोर जस्त जेर जस्त कं विलजिये ।

अरुणनादि वृंद मीम धीमत्राह गर्भं मीम कहि मेघनाद सीम पास आई अज्जियो ।
 प्रजोन वंधु गन को मुजो इंद्रजीन को अजीत इन्द्रजीत जीत नाम पाय गज्जियो ॥१२२॥
 इंद्रजीन मुट काटि रच्छ मारि मुट पाटि लक के कपाट फाटि डाटि जुन्यपावली ।
 मुगनकं पछारि कं नरानकं सघारि कं निकुभ कुभ मारिकं बिडारि रच्छसा वली ॥
 वंत मान जुद्ध गीति लछन लतत गर्भं गर्भं वत गजि कं गजत मकंटावली ।
 वजंत व्योम दुंभुभी जजत पुप वृष्टि सो जभृत दिव्य अस्तुती समस्त देवतावली ॥१३३॥

॥ छंद कमला ॥

गत्थन अरुत्थ समरत्थ सुत हत्थन तमत्थ दसमत्थ सुत मत्थ रन ।
 गद् घननद् हन नद् अनद्द वल सहस विरद् अनवद् जस गद् गन ॥
 मद् लन नद् नम नत्र नग रद् कर रद् दर हद् वल वद्दल मरुद्दलन ।
 धान समरच्छ जन अच्छ जन अच्छ मन दच्छ जय लच्छमन लच्छ जय लच्छमन ॥१२४॥

॥ छंद श्रमृत ध्वनि ॥

जय जय लक्षित लच्छमन लच्छन रच्छ सुपंड ।
 जीन्यो सुरपतिजीत वहें मडित प्रधनु प्रचड ॥
 मडित प्रधनु प्रचडित प्रति भट दंडित दुवन उदडित प्रति भय ।
 दंडदुन भुज दंड द्वय वल डंडकर वल वडकर छय ॥
 दंडत नर लखि गंडगाजि गिरि चंडनकुनप विहंडगा तर्रय ।
 दडित त्रिदम उदंडित प्रगट अण्ड ध्वनि अहमउ ज्जय जय ॥१२५॥

॥ दोहा ॥

जं जं धुनि छाव्याह गगन गावहिं मगल गान ।
 वरमावहिं सुर मुनि सुमन वर पावहिं रामधान ॥१२६॥

॥ छप्पय ॥

जं जं सुर उच्चर्गाह दृष्टि कुसुमावति मज्जहि ।
 जामवत हनुमत अगदादिक भट गज्जहि ।
 इन्द्रजीत कहें जीत चतयो तीमिली हितकरि ।
 यहि मीम दससोस नंद को ईन अग्र धरि ॥
 जुग जोरि पानि समधान वह मीम आनि पद पंक अहें ।
 करि जस गहीर रनधीर वर गिरयो आनि रनधीर यहें ॥१२७॥
 जय लछिमन रनधीर वीर वीराधि वीर वर ।
 जय उदंड भुज दंड चड फोदंड दंडधर ॥

प्रिय—नधमगा और मेघनाद के पुत्र का वर्णन ।

मंत्रा ४४१२. नरप्रनाथ भाषा, रचयिता—सरदार कवि, कागज—आधुनिक नीला,
 पत्र—१३३, आकार—७ ६/८ × ६ ६/८ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनु-
 स्तुप्)—२२७१, मर्तत, रूप—प्राचीन, गद्य, पद्य, निधि—नागरी, रचनाकार—म० १६०६,
 ति०, प्राप्तिस्थान—ददन मदन, पोस्ट—अमठी (२० आ०० आ००), जिगा—मुलतानपुर
 (अव ५) ।

भादि—.....

..... हृदयभा भाव ॥

॥ सोरठा ॥

ओ जह सिद्धी नाहि है सिपाई घियानही ।
तहा विशेष्यन छाह गयी विसेपन याही ते ॥७॥

॥ चार्ता ॥

ओ जहा सिद्धि नही है ओसिपाधि ईया को भी अभाव है तहा विसेप्य विशिष्ट अभाव के
अभावते विशेषण को भी अभाव जानिये ॥ ८ ॥

॥ दोहा ॥

जह सिपाधि इया रहै तहां सिद्धि श्रीराम ।
रहै कि अथवा ना रहै होत पक्षता श्याम ॥ ९ ॥

जहा सिसाध ईया रहै तहा सिद्धी रहै । एथि वो नारहे पक्षितामो होय है ॥ गिद्धी रहै
तो विशेषन निष्ट विशेष्याभाव ओ न रहे । तो विशेषन विसेप्याभाव ओ जहा सिद्धि रहै निमाघ-
ईया नरहै तहा पक्षता नाही ॥ काहे को सिसाधईया विरह विशिष्ट सिद्धि रहै ।

अत—

सगुन निधान हनुमान ऐसो नाम वृद्धि वृद्धि सुद्धि धाम कामतरु सो जुदानसूत ।
तेज मारतण्ड ते अखड दोइ दड भुज रजतमहारी भारी दल दल वाद वृत ।
कवि सरदार ते अनाथन को नाथ गाय श्रुति सुचिधारी करी करमषलाश्रुत ।
पंजन सो गंजन गनीमन के गंजह जो रामभनरंजन प्रभजन तिहारो पूत ।

॥ दोहा ॥

ग्रह रचि गगन वहोर ग्रह गनपतिदसन सुपास ।
कृष्ण जन्म तिथि को भयो पूरन तर्क प्रकास ॥१३॥
ईश्वर भूपति की भली कृपा कौर सुचि पाय ।
भाषा किय सरदार कवि तर्क प्रकास उपाय ॥१३॥

इति श्री सरदास कवि विरचिताया तर्कप्रकाश भाषा संपूर्णमस्तु ॥

विषय—न्यायशास्त्र का वर्णन । अथ मे सात अध्याय हैं ।

रचना काल

६ ० ६ १
ग्रह रचि गगन वहोर ग्रह गनपति दसन सुपास ।
कृष्ण जन्म तिथि को भयो पूरन तर्क प्रकास ॥१२॥

विशेष ज्ञातव्य—अथ के आरभ के १६१ पत्रे लुप्त हो गए हैं । रचनावाल सवत् १६०६
वि० है । लिपिकाल का उल्लेख नहीं है ।

संख्या ४४१ख. राम कथा कल्पद्रुम, रचयिता—सरदार कवि, निवासस्थान—त्रिनि-
पुर (भासी), कागज—आधुनिक, पत्र—५७, आकार— $८\frac{३}{४} \times ५$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—
१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०८३, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य लिपि—नागरी, लिपिराज—
सन् १८६२ ई०, प्राप्ति स्थान—ददन सदन, पो०—अमेठी, (६० आर्डे० आर०), जिन्ना—मुल्त-
तानपुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ कवि निबद्ध रामकथा कल्पद्रुम लिख्ये ॥

॥ सोरठा ॥

कासी कासीनाथ कासीयासी जन विमल ।
वृत्ति अकासी साथ जे कासी कासी जपत ॥१॥

निनपद पावन नाय माय हाय "मरदार" करि ।
 ऋत नाम गुन गाय कवि निरुद्ध कलि कल्प हरि ॥ २ ॥
 चंदी दानीराज श्री ईश्वरी प्रसाद वर ।
 गीतम पुन मिग्ताज उद्धितम गुत कलि करन ॥ ३ ॥

॥ चौपाई ॥

प्राग परमहित पर उपकारी । परम पुरान प्रगट गुन भारी ॥
 गम मद्धम रापन जन जाने । त्रिवरन नाम मनोहर ठाने ॥
 मुमन मुमन दं अरचन कीने । करत असोक चतुरभुष चीने ॥
 तांग्य इंद्रजीव वम फारी । मंजु घोष रचि गरस मिहारी ॥
 निन हिन चित्त न वृत्त पमारी । मकरपाय अति कुमति पियारी ॥

अंत—

गम रम रनिग रसीने राघो राग नंद भाव मिह जग भूप अति चित चाई के ।
 ताग पुत्र प्रगट भजानी भूर भाव जानी ताके जयांसह अग अमल उपाई के ।
 तामु मुत गात्रे हरिजन हरीजन भये ताके मरदार भूर भाजन भलाई के ।
 काशी के दिलागी नये अत्र मुछ राशी पाछे चासी ललितापुर प्रकाशी कवितार्थ के ॥

इनि श्री महाराजधिराज काशीराज श्रीमद् ईश्वरी प्रसाद नारायणरयाभ्याभिमानी
 ललितपुर निवासी हरिजन ववीरवरात्मजेन सरदारारथ ववीरवरेण विरचिते श्री रामकथा-
 वलपट्टमे प्रथम अरकंद समाप्तम् ॥ १ ॥ शुभमस्तु ॥

विषय—गमाथा वा वर्णन ।

संख्या ४४०. गुरु नग्न (मर्गांत), रचयिता—राजा मरदार मिह (मुलतान मिह
 गुन), भागज—देवी, पृष्ठ—३६, आकार—६ × ५ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण
 (अनुष्टुप्)—४७०, अपूर्ण, रूप—जीर्ण जीर्ण, पद्य, निधि—नागरी, प्राप्तस्थान—श्री
 मरुवती मठ, श्री विद्या विभाग, नांफरोली, हि० व० ८, पु० म० ४ ।

आदि—पृ० १६ ॥ ताल चौताली

मंजन मुगंध करि उजल बनायो वेप उजल सुमन माल पहरी अनदिनी ॥
 घनि घनमार रम चदन लगायो गात मुदित प्रभातहीं ते आजु जग वदनी ॥
 फरे निरवार हार मरदिन के आभूषन भूषे अजभूषन की गिरह निकंदनी ॥
 उजल पहरि चिर हमन रमावत सी नारदाम रूप धनी वृषभान नंदनी ॥६१॥

मध्य—पृ० ३८ ॥ अथ रागिनी ललित मरुप कथनं

॥ कवित्त ॥

चंपक वर्ण गोरे तन गरे फलमाल भूषन विमाल तन द्वादश अमोल की ॥
 मोगुनी मुघाने जानी वानं मुघ देनी तमी पठ मे दियन लोक लीलत तमोल की ॥
 वहे निरदार धनी मरिगम मुचान वान श्रीदो जान घेवत मदन मुनि चोल की ॥
 गावन वमन प्रान गुनी अरदान ह रागिनी ललित प्यारी ललित हिडोल की ॥

अंत—प्राप्त नहीं है ।

विषय—गग रागिनी का वर्णन ।

विशेष ज्ञान—यह पुस्तक अपूर्ण है । आदि के पृष्ठ मन्त्रा २ मे ५ तक चूड़े के बतरे
 हूँ । बाद मे पृ० १६ मे ५० तक ठीक है ।

संख्या ४४३. वैंत सरमद, रचयिता—मरमद, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—
६ × ४^३ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२५, पूर्ण, रूप—प्राचीन,
पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी मभा, वागवती (दाता—प०
हनुमानप्रसाद मिश्र, ग्राम—सोनई वडी, पो०—करछना, जिला—इटावावाद) ।

आदि—दया गुरु की ॥ लिख्यते ॥ वैंत सरमद ही ॥ दया गुरु ॥
नागाह मषकी गंज से इरफान का सोहरा हुआ ।
याने जिमी पैदा हुई श्रीर आममा वरपा हुआ ।
हम भी अदम से चौक उठे हसती का जब गीगा हुआ ।
किसमत का दफतर वा हुआ कोई गदा कोई साइ हुआ ॥
गर वो हुआ ती क्या हुआ गर वो हुआ ती क्या हुआ ॥ १ ॥
कोई ईसवी कोई मसवी कोई चिस्ती के हे दीन मे ।
कोई राफजी कोई पार जी कोई फुक्र वे आईन मे ।
हादी ने हमसे कहि दिआ पहिले यह गव तलकीन मे ।
नौरग का जलवा है नव इग आलमे रगीन मे ।
गर यो हुआ ती क्या हुआ गर वो हुआ तो क्या हुआ ॥

अत—इस आलमे रगीं सेती आजादगी उमेद कर ।
मुलहद मवाअल हो अगर उमकी तू मत तकलीद कर ।
तू इस फलक की तैर मे फिर पाक की उम्मेद कर ।
आजादगी मजर है काम कर तमामा दीद कर ।
गर यो हुआ ती ॥ ७ ॥

अव भाड दामन चल निकल उलझावे से फिर काम क्या ।
फिराऊँन औ रहाम् हुआ इस काम मे आराम क्या ।
मन से दुई जब दूर की फिर कुछ और इसलाम क्या ।
जब हक उजागर हो गया अल्लाह और फिर राम क्या ॥
गर यो हुआ ती क्या हुआ गर वो हुआ ती क्या हुआ ॥ ६ ॥

॥ समपूरन ॥

दया गुरु की

विषय—ससार के सब धर्मों की एकता का वर्णन ।

संख्या ४४४क.नई काव्य कथा (नैकाव्य कथा), रचयिता—मरवेस्वर दाम(कुरपा),
कागज—देशी, पत्र—११, आकार—८ × ३^३ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण
(अनुष्टुप्)—६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, रचनाकाल—मजल् १=७ वि०,
लिपिकाल—स० १६०७ वि०, प्राप्तस्थान—प० भागवत निचारी, ग्राम—मुग्घा, पो०—
पीरनगर (गोरावाजार), जिला—गाजीपुर ।

आदि—राम श्री गनेस आए नम्ह श्री खोरते नम्ह श्री सुभ देवता नम्ह हनम्ह
॥ दोहा ॥

करता राम करै सो होइ ॥ जुग जुग दुजा अवरन कोइ ॥
घर एक जो श्रीजनीहारा ॥ पतरे हरी जनी सो बनीजारा ॥

००:

००:

००:

तव उंकार मन्व धुनी बाजें ॥ नादं बौंद दुइ भाती धीराजें ॥
 नाद घट जीमी बेनु मुरचगा ॥ मूडुटी पर होइ तान तरगा ॥
 गग जमन दोउ गीरा नमाइ ॥ चद म्जुजें दोउ मेरी जाइ ॥
 आनुहि आनु परम परकाता ॥ रूप न रेव जीमी मुन्य प्रकाता ॥
 चेतन्य आनद होइ तन बौइ ॥ सोहें सोहें सोर ताहां होइ ॥
 एही चिधी जोग करं जन जवही ॥ माम्रा फद छुटें जग तवही ॥
 प्रंत—मपत बीचार पटें जन जोइ ॥ सर्व कामना पावें सोइ ॥
 साल अठारह सैं सतासी ॥ चइत मास ऐ ग्रंथ परगासी ॥
 जन मरवेस्वर कहैं बखानी ॥ जन मन फो सुप्रेम पहिचानी ॥
 ॥ दोहा ॥

राम नाम सत सार है ऋठी मम बेवहार ।

जन "मरवेस्वर" मुक्ति कैं उतरी गए भव पार ॥ चौपाई ॥

इती श्री सम्बत १६०७ मर्मनाम निती चइत सुदी पुरन वासी कैं नकाव्य कथा संपुरन सुभ
 मस्तु आगे जो प्रती देया सो लीटा मम दोम न दीश्रते आगे क्रीत सरवस्वरदास गोसाइ
 कैं सतनाथ दनपत चेत मनी भगत रक्षकन गन दउ पुरति काम हे ।

विषय—निर्गुण मतानुसार भक्ति श्रीर ज्ञानापदेश वर्णन ।

रचनाकाल

साल अठारह सैं सतासी ॥ चइत मास ऐ ग्रंथ परगासी ॥

संख्या ४४४४. नकाव्य कथा, रागिता—मरवेस्वर दाग, स्थान—कुरथा, (गाजीपुर),
 कागज—देगी, पत्र—८, आकार—६ १/२ × ६ उच्च, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण
 (अनुष्टुप्)—६०, पूर्ण, रूप—प्राचीन, लिपि—कैथी, लिपिकाल—स० १६१० वि०, प्राप्ति-
 स्थान—प० भागवत तिवारी, ग्राम—कुरथा, पो०—गीरनगर (गोरा बाजार), जिला—गाजीपुर ।

आदि—

॥ दोहा ॥

विषय हरन गनपती चरन करन मुसंगल मुल ।

वरनो वार वार प्रभु मोपर होइ अनकुल ॥

गुर पद पदम परग सिर सखीन्ही दे धरि ध्यान ।

कहो मपत दीन फो जया ग्यान बीचार बखान ॥

॥ चौपाई ॥

गुर वार के कीन्ह बीचारा ॥ गुर के सरन होइ भव पारा ॥

पहिले रहे एक करतारा ॥ रूप न रेव नहीं प्रकारा ॥

इच्छा रूपी प्रगटी नारी ॥ अस्त भुजा आउध कर धारी ॥

प्रणय मधद जय बोलत भएउ ॥ तीनउ गुन कर तव उतपति लएउ ॥

रज भ्रज मत हरी तमो महेगा ॥ तीनों गुन धारेव वैभेमा ॥

नौरंकार तव अंग्या दीन्हा ॥ तीनों देव थीस्टी तव कीन्हा ॥

पाच तन्व करि मम भवेमारा ॥ जीव चराचर बीबीधी परकारा ॥

पाचय भेटें भेटें गुन तीनी ॥ इच्छा नारी ग्रह्य होई लीनी ॥

तव रहै केवल आपुहि आपा ॥ जाहि भजत भेटत संतापा ॥

"मरवेस्वरदास" कहैं ममभाई ॥ राम भजन बीनु जरनी न जाइ ॥

प्रंत—कहैं मरवेस्वरदास आत्म तजो जगन फो गंगा तट कीतचाम गाजीपुर कुरथा निकट ॥

॥ दोहा ॥

राम नाम मम गन है ऋठी मम बेवहार ।

जन "मरवेस्वर" ममनी कैं उतरी गए भव पार ॥

इति श्री संवत् १६० वि० दस मंता मनी पुरा सुदी ११ के नद काव्य कथा मंपूरन मुभ
मस्तु केल्योन मस्तु आगे जो प्रति देखा ना लाखा भम दाम न दीअते आगे पुगतक ने मालीब ११
धावा ब्रह्मचारी गोसाई साकिन कुरथा परगने हेली इलाके गाजीपुर आगे दनघत चेतमनी भगत
सकीन कुरन पर के पुरा पर मोकाम राम राम ॥

विषय—निर्गुण मतानुसार ज्ञानापदेश और भक्ति वर्णन ।

संख्या ४४५. ज्योतिष, रचयिता—महर्षि, कागज—दांगी, पत्र—१०, छापा—
६५० × ६ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुच्छेद)—१८५, पूर्ण, रूप—पुगना
(जीर्ण), पद्य, लिपि—नागरा, प्राप्तस्थान—५० भोवनाव (नांगलान) ज्योतिषी, ग्राम—
धाता, पो०—धाता, जिला—फतेहपुर ।

आदि—अथ विवाह गणित

॥ दोहा ॥

मांश तीन वंमापते आगहन फागुण मांह ।
शौर मास मे जानिए इनमे उजित है व्याह ॥
दुहु ज्येष्ठ अरु ज्येष्ठ मे शुभ वाएक नहिं व्याह ।
ज्येष्ठ मंगल ज्येष्ठ मे हीत न सुख निरवाह ॥

॥ चौपाई ॥

पहिले वार चार कराव फिर पडित ते भेद गनाव ।
वरग वरन श्री नाडी जोन राशि भिलाइ पृत सो लोन ॥

॥ अथ वरग जानव ॥

आ इ उ ए गरुड़ विचार का छा ग घा है मंजार ।
चा छा जा का जाने सिंह टा ठा डा हा कूकर चीन्ह ।
ता था दा धा सफं विचार पा फा वा भा मूख सधार ।
या रा ला वा मृग है सही सा पा स हा मं ठा का ही ।
:०: .०: :०:

॥ अर्थ गन जानव ॥

अश्वनि पुष्य पुनर्वस रेवा मृग अनुराधा स्याती भाव ।
श्रवन हस्त जो जन्मे कोई देवता गन ताकर जो होई ।
तीनि उत्तरा पूर्वा तीनी भरनी रोहिनि आद्रा चीनी ।
ऐ नक्षत्र मानुष गन जानं "सहदेव पुषं नारद भानं" ।
मघा क्रितिका चित्र मूल अश्लेषा सतभीयो..... ।
सक्र धनिष्ट विसाष जान एते राक्षस गन पट्टिचान ।
:०: :०: :०:

अंत—

॥ अथ पाठ करु ॥

पंद्रह फार कोटा नव होई । रवि नक्षत्र ते धरिए सोई ।
गिन तीन मार्ग ते गुनं । राजा पूछे सहदेव भानं ।
लग्न नपत जो मार्ग परं । वेगि नास हुनी बुल बरं ।
पुरुब जानउ सुख के पान । धन धान्या होइ बल्यान ।
अग्नि कोन मे होत अनाग । दक्षिन परं ती भीषा भाग ।
ति पुत्र सुख सोभाग ॥ पश्चिम द्विषया होइ अनाग ।

विषय—रत्न, मूत्रं, सुभासुम विचार, रत्न वर्णं, रत्न, नाडी और दोषादि ज्योतिष-
विषय विचारों का वर्णन ।

संख्या ४४६. शांतिहोत्री (घोरान की बंदगर्द), रचयिता—सादिक, वागज—देशी,
पत्र—१५ आकार— $\frac{1}{2} \times \frac{1}{2}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७५,
अपूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, निधि—नागरी, निधिस्थान—सं० १=६६ वि०, प्राप्तिस्थान—
आयंभावा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी मंडल (याज्ञिक नगद) काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ गोरान की बंदगर्द सालोत्तरी लिप्यते ॥ चीनती
करिकं बौहोत तन्नाम करि के एव पोथी बनाएऊ ॥ साहिव की किरपा ते ॥ सावक सौदागर न
घोरन के श्रेत्र सदाय की ॥ सुभताछन की बदनछन की ॥ चावक असादार की सबही भांति की
पोथी कराय दीनां सो गही है ॥ बडे बडे मालोतरी से सही कराय लीनी है या पोथी सुघोरान के
लछन मालूम पडे ॥ अथ घोरान की रंग पहिचानयो ॥ एक ताल रंग की घोरा ॥ च्यारो पाव
सुपेद ॥ माथी टीका होय ॥ बाहुं पचत्तल्लन नहिंय ॥ हाथ पाव कारी होय तो बहोत कलेस
करं ॥ नाम घोरा के ॥ जम धाक कहियं ॥ गधा का रंग घोरा होय तो ॥ पीरी छोटा होय तो
अमुम है ॥ घोर सुपेद रंग कां होय तो ॥ दाग नही होय तो गुम है ॥ नाम जाकी नुकरा ॥

मध्य—॥ अथ घन्म की वचा ॥

नरनी की बरीया छह नेर ॥ पवर सेर गोन्स ले ॥ धरती मे दोनो कूं गाडि दे ॥
तीन रोज पाछं निकामं ॥ पुण्य को मूत्र पांन सेर ॥ मंत्र कूं मिलाय के तीन रोज फेरि गाडे ॥
ता पाछं निकासि के सोधा नोन दोष पेय भरि मिलायं पहल के रोज सेर भरि प्यायं ॥ जा उपरंत
पाव सेर रोज बटावें ॥ परन जाय ॥ घोरा मोटो होय ॥

अंत—॥ अथ बंध होय तो पुति जाय ॥

इसगंध नागरी सोवा के बीज ॥ माजी हरदी आध पा आध पाले गुगर पईसा चारि
भरयो ॥ माल कागरी ॥ वायधिरग अजमायन आध पा ले चूरन करिके साकि सकारं चारि चारि
पईसा भरि दे ॥ इति श्री घोरान की अवस्था मुभ अमुभ जानिये की ताकी पोथी मालोत्री श्रीपधी
की चिकित्सा संपूर्णम् ॥ सप्त १=६६ अक्षर कृष्ण पिथो ६ दुधवासरे संपूर्णम् ॥ शुभम् ॥
श्री रस्तू ॥ शुभम् भवत् ॥

विषय—उनमें घोड़ों के लक्षणों, नामों और उनकी चिकित्सा के सबंध में लिखा है ।

विशेष ज्ञातव्य—अथ के ३ और १३ मंत्रों के पद्ये लुप्त हैं । अथ के रचयिता घोड़ों के
व्यापारी थे । उनका अन्य वृत्त अज्ञात है ।

संख्या ४४७. ध्रुवचरित्र, रचयिता—सामान्य, पत्र—१ (अंतिम पत्र है), आकार—
६ × ५ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०, अपूर्ण, रूप—साधारण,
पद्य, निधि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री मन्मथनी भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि०
ब० ८२, पु० सं० १० ।

आदि—तप जब करो तब ही राजा पै आयो । अथ हम कह न जाहिये करो जतन जब
कोड । आसा करो न और की तजो न प्रभु की ओड । श्री० ॥ तब मत्री उठि आये ध्रुव बट्ट
बान न मानी । महा बठिन तप करो कहन राजा मुत बानी । राज काज माने नही कीयो जगति
का त्वाग । अति उदास बन मे बनाट उपज्या मन बंगग ॥ श्री० ॥ कीनी राज विवेक रची
इह यात विधाना ॥ भेटन कां सोऊ नाह कहा वपडे पित माना । जो कछु करे सो हरि के हमरे
बट्ट न हाय । अंत मोटे कछु होइगा जो भावी ब्रजनाथ । श्री० । बंद मूल आहार प्रथमे ध्रुव
वट्ट बन बीनी । बट्टो पवन आहार भक्त वत पैमां लीनी । पांच वयं कां बालका गृह तत्र भयो

उदास करि पछम पवन रोकियो तीन भवन को स्वाग । श्री० । तउही द्विभुवननाथ प्राय ठाउे
तिहु आगे । तउ भी अतर ध्यान भक्त तप को नहीं त्यागे । ध्यान छोट दर्शन करो आत्मा दई
दियाल । जो भागो सो देत हो टुक नैन उधारि निहाल ॥ श्री० ॥ तव ध्रुव छाउघो ध्यान
स्याम के दरसन लागे । पायो परम अनन्द भरम के बंधन भागे । बार बार बिनती कर्ने प्रसन्न मिले
गोपाल । जो भागो सो देत हो, वर दीजे गोविन्द जो दीनदयाल कृपाल ॥ श्री० ॥ गमगरीच
निवाज सुनो इक बिनती मेरी राखु दिवद की लाज सरन श्रायो जनु तेरो । नाघु वी भगन दमो
पांवी पद परवान । पार द्रष्ट प्ररन पुरप तुम देहु दया घर दान । श्री० । इति श्री मत्तजन
विरचितं ध्रुव चरित्र संपूरण ॥

विषय—ध्रुव चरित्र का वर्णन ।

संख्या ४४८. दिन मनि वशावली गुण कथन, रचयिता—निधु व वि "उदयान" "कान्त"
कागज—दर्शा, आकार—६॥ × ४॥ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, पन्निमात्र (अनुपम)—
२००, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री गणेशजी के नाम श्री
विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० ८२, पु० सं० २ ।

श्रादि—॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री एकलिंगाय नमः ॥ प्रथम सुमिरि गिरधरन प्रदत्त
भव भार वृ खहर । फेरि ध्याइ जगमगाइ पाइ गुन गाइ सुखकर । गननायक मन श्रान जानि निदि
सिद्धि निहर । डोर देव व्रजदेवि सेवि करि मांग दृष्टि वर ॥ दिनमनि दसहि बरि पटु श्रानद
भाषा सिधु व वि । बाढति सुमति नासति शुभाच ज्यो तम नासत देखि रवि ॥ १ ॥

मध्य—पृ० ६-७

जस गावत जित तित सदा दसो देस के ईस ।

श्रमर सिह मम श्रमर के कहै श्रापु जगदीश ॥३७॥

जग में श्रमर सिह श्रमर समान हे ।

नित प्रति दरस को सरस जु होत मन श्रानद हो जहागीर चाहै मननान हे ।

करत श्राधना को दयो हू नाह देखे फल कियो हे विरोध समुझाइ हू न मान हे ।

केऊ लाख फेज जोरि जाइके पकरि श्रानो मेरो ५ ह्यो मानो दष्ट दात परदान हे ।

प्रताप सिह तने तो नर कें न बस हांइ ॥२५॥

हरपति नरपति भूपतिन साहि तमान जू कीन्ह ।

राना करन खुमान जू तभे अभे पद दीन्ह ॥३६॥

श्रत—गज वर्णन ॥

राजत हँ हार राजसमान लसै गजराज पहार के दाई ।

राखत हे सुरराज छिपाइ के दे जिनि डारे यहै जिय टाई ।

कर्ण खुमान को श्री जगतसजिवी प्रभु श्रानद मे मरि ताई ।

ले ले गुनी घर जाहि दुभीनि के देत करी दवरीह के नारी ॥४०॥

इति दिनमनि वंशावली गुन कथनम् ॥ श्री रत्तु ॥

विषय—उदयपुर के सूर्य वगज महाराणाश्री की वंशावली, दादा श्रानद ने जगत सजिवी
जी तक की वर्णित है । उनके गुण भी वर्णित है । इन्हिान और वष चरित्र की पूर्ण में उक्त
उपादेय है ।

संख्या ४४९. वाज नामा, रचयिता—निवदर फिरगी नागज—दर्शा, पद—३८,
आकार—६३ × ६३ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२ पन्निमात्र (अनुपम)—६३३ पूर्ण,
रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिराल—१० १८०० वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभट्टा
पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), पानी ।

श्राद्ध—॥६०॥ श्री नगोजाय नमः ॥ अथ राजनामा लीपते ॥ आत्म गौर ने ह्रीम
 किन्दर किरंगी म निजाय मयन दमप ना ग्राह जादे आजम स्याह को भेजी हो ॥ राह पोलने
 की और तारीफ न तोषी नुप जिन देना लाया बफादार होय जो बहोत इस कहाँ सनाय कू जुदा न
 करे पान ही नये गदा और इन निजाय पे अमल करे जिन दिनी जरदालू फूर्न है तिन दिनी बाज
 पदनीरे हे उत्र यह अडा देव नय चर्न हे प्राणी तय वाज उर के वाँ ते उड जाय हे तत्र फिर विस जग
 नही जा हे रं ना मरे वा जान मे आप कोने यह उत्तूर हे जिम मींग निकार ते उरं फिर पास नहीं
 आवे वा दहमन मे भाजे हे वा जान म परे चोड पाय हे इम तरं करिके विस आजार उठं कं तो
 दन उठं कं देही काहिनी रहे ॥

मध्य—श्रीर इन तरं देय नी आठी भीरन पीपन इन दोनोनं कं घौड मे पूव जलाय कं यह
 घौड महीन ली नावे मे लगाय वं पुनावे आठी नीरले श्रीर जो कुरीज मे वही आछं कही बुरे पर
 लावे ती जिन पर कू तेल मे तर रोपे यहीं फायदा छौड मे है ।

अन—श्रीर नौरना बुनबुल का बपूर दोनों दोर बहोद्री मुमक मिमांड लींग जायफल
 एलुआ जावकी ईगायकी छोटी बुट भाफक टारं मिनाय कं राय छोड उरद भाफक फजर ही शोली
 देय कं मूट्टी म राय जोनी बंक होय और ईनकं कनकं दीय बहोम हूँ जाय ती तनक भापन देय
 पीछं कं और भाफन पानी गरम देय और रन देय मुवां हुवे लगावे ॥ तमाम हुवी यह वाजनामा
 सपूरुं ॥ आननगौर ने ह्रीम तिकंदर किरंगी से लियाय अपने दमपती स्याहजादे आजम
 स्याह का भेजी ही भीरां वत्रुल रमान बलीबपेटा निजामति पा को जिमीदार माहपुर की परता
 मिउनी ॥ :० ॥ निवतं नित्र महजगम जी स्वय पठनार्थ लाला लछीराम जी पुत्र रामसेवग
 फौजदार की धरि मध्ये संवत् १८२० शके १६८५ मार्गशिर मासे शुभे शुक्लपक्षे पुन्य तीथी ५
 भृगुवागरे शुभ भयतु श्री रामाय नमः ॥ श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

विषय—उम मय मे जिजारी परासो की पहचान, उनके रोग और निकिल्गा वर्णित है ।

विशेष जानकर—उम अथ ली भाषा गयी योनी हे जिगमं निम्नलिखित जैसे शब्द
 प्रयुक्त हुए है —

१ दिन उन, २ दिन उन, ३ जग जगार । गध का निपियाल म० १६००
 हे । प्रभु तन्निमित्त म मे निम्नलिखित दो गे हे —

- १ राजनामा—मिन्दर किरंगी
- २ बपूर निजाय का—हमन अवी खां

संख्या ४५०. वैराग्य मदीनी टीका, रनधिता—मिद्याराम (अनुमानत), कागज—
 रगी, पत्र—२५, आकार—१० १/२ × ६ १/२ इंच, पन्कि (प्रतिपुष्ट)—११, गरिमाण (अनुष्टुप्)
 —६६०, पूर्ण रत—प्राचीन, मय, विधि—जागरी, प्राक्निश्चाल—रागी नानरीप्रनागिणी
 मना, जागरी (काना—५० मन्त पाटे, ग्राम—बमुडा, पोस्ट—पिटी, जिला—गोरखपुर) ।

श्राद्ध—श्री गुरोदाय नमः ॥

मिद्वि जनन जनभाय नवि गणपति चरग दयाल ।
 भाग्य रूपा जाके तेहि बंदो हत जगजान ॥ १ ॥
 श्री ग्यधर जन मुग्धपद नाम योग्य निज वान ।
 जित् दीन्हा तेहि पद जुगत उर धरि मन चित मात्र ॥ २ ॥
 :०: :०: ०
 फरि प्रदान दानी चरग हरग बुद्धि ममाज ।
 'मोपागम' बुद्ध कहत पुनि माधु चारित मुगसाज ॥
 :०: :०: :०:

॥ चौपाई ॥

संत चरित रघुपति जस एका । कहत वेद कथि सहित चिन्हेका ॥
मिश्रित कहहु ययामति मोरि । जासु जगित तेहि कन्द निहारी ॥

:०:

:०:

:०:

अंत—

॥ दोहा ॥

धन्य धन्य माता पिता धन्य पुत्र वर सोय ।
तुलसी जो रामहि भर्ज जसहु कंसहु होय ॥ ३ ॥

श्री गोसाईं जू कहत हैं कि जो रामहि भर्ज तेकर माता धन्य है और पीता धन्य है श्री माता पीता के पुत्र धन्य हैं वर नाम श्रेष्ठ है जसहु कंसहु होय दुष्ट सुष्ट बन्धु रहे राम को भजन बने बोही श्रेष्ठ है प्र० कुलपदीत्रं जननी कृतायं वसुन्धरा भाग्यवती च धन्या । रघुपतिवता जे पितरान्न धन्या यस्मिन् कुले वन्द्यव नामधेयम् ॥

अवतो धन्य धन्य माता पीता माता तो प्रह्लाद की धन्य है जो कलेशु मे नान्द जू को उपदेश धारण कीयो है मानो प्रह्लाद जू सुख को स्थान ही मे प्रगट भए है धन्य धन्य पीता अमर को है मरण अवस्था के विषे राम जू को सीवि दिये धन्य पुत्र दशरथ जू को है वर श्रेष्ठ भग्न जू भए जिन्हके भक्तन के वीषे निज मुख ते श्रीराम जू सराहना कीये है जैसे वोह वीथन राम विषे गीन भये कंसहु होए नरक स्वर्ग सुख दुख इन्ह मो कंसहु नाम कोइ प्रकार ते गम को भर्ज मो धन्य है वर श्रेष्ठ है जाति विजाति कंसहु होए जो रामहि भजे तो जैमो राम है जैमो होइ जाय राम को साधु ते भेद नही है ऐसो जानि राम को भर्ज ॥ ३ सीताराम

विषय—वैराग्य सदीपनी पर गद्य टीका ।

संख्या ४५१क. सुंदर प्रबोध, रचयिता—सुंदर, वागज—देगी, आकार—८॥ X ५। इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—२००, पूरण, रूप—माधारण, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८८३, प्राप्तिस्थान—श्री गरुडनी भवन, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, हि० व० ७८, पु० स० २।२ ।

आदि—॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ श्री गुरुशाय नमः ॥ अथ सर्वथा लिख्यते ॥ प्रथम गुरुदेव को अग इदव छंद ॥

मौज करी गुरुदेव मयाकरि सद्द सुनाय गह्यो हरि नेरी ।
ज्यौं रवि कें प्रगट्यो निशि जाति सुदूरि कीयो भ्रम भाति छठेरी ।
काइक वाइक मानसहु करि है गुरुदेव ही धदन मेरी ।
सुंदरदास कहे कर जोरि जु दाइ दयाल को हूं नित चेरी ॥ १ ॥
पूरन अह्य विचार निरतर काम न प्रोधन लोभ न मोह ।
श्रोत्र त्वचा रसना अर प्राण सु देखि कष्ट बहु नैनन मोह ।
ज्ञान सरूप अनूप निरूपम जासु गिरा मुनि मोहन मोह ।
सुंदरदास कहे कर जोरि जु दाइ दयालहि मोहन मोह ॥ २ ॥

मध्य—पृ० ४८

आठो जाम जम नेम आठो जाम रहे पेग आठो जाम जोग जग्य शीयो बट दान जू ।
आठो जाम जप तप आठों जाम लीये इत आठो जाम तीरथ मे करत मनान जू ।
आठो जाम पूजा विधि आठो जाम अरनिहू आठो जाम इच्छत नमरन तजान जू ।
सुंदर कहत तिन कीयो सब आठो जाम सोई साधु जाक उर ऐक भगवान जू ॥ १७ ॥

माधु ही के संग तें सत्त्व ग्यान होत है ।

जैसे आग्नीको मूल काट कर निकलीधर मुद्य मे न फेर कोऊ ऊहै चाको पोत है ।

जैसे बंद नेन में गलाका मेनिह गुठ करे पनड गये तें जहा त्यो की त्यो ही जोत है ।

जैसे बाप दादर गियेन्य उजाय देत रवि तो अकाम माहि मदा ही उदोत है ।

मुदर बहुत अम टिन मे तिलाइ जाइ माधु ही के संग तें सत्त्व ग्यान होत है ॥१८॥

अंत—

जोगी यकं वहि जैन थकं वहि तापस थाकि रहै फल छातें ।

न्यायो यकं बनवागी थकं जू उदामी थकं बहु फेर फिरातें ।

शेष मुत्तायक और ऊ लायक थाकि रहै मन मे मुसक्यातें ।

मुदर मौन गती मिध माधक कोन कहै उनकी मुद्य बातें ॥१५॥३४॥५६०॥

टिनि श्री मुदरदान अर्चित मुदर प्रबोध नाम संपूर्णम् । संवत् १८८३ वर्षे मिति आसोज
मुदि १३ शुक्लान्तरे तिष्ठन्तं गुज्जी राजसीध । महीदोज हरजी जी तत् पुत्र कंवर किशन दास
वचनार्थ श्री द्वारिका पूरी काकरोली मन्वे । लेखक पाठक चिरजीव शुभ भूयात् ॥

विषय—ज्ञान वैराग्य विषय वर्णित है ।

संख्या ४५११। अद्भुत ग्रंथ, रचयिता—मुदर दाम, स्थान—द्योगा (जयपुर राज्य),
कागज—देगी, पत्र—८, आकार—७ १/२ × ५ १/२ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण
(अनुच्छेद)—६३, पूर्ण—रूप—प्राचीन, पद्य, निधि—नागरी, प्राप्तस्थान—श्रीयुक्त गोपाल-
चंद्र मिश्र जी एम० ए०, मिथिल जज, मुन्तानपुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ अद्भुत ग्रंथ सुदर दाम त्रित लिख्यते

॥ दोहरा ॥

मनिगुर पाइन परत हो ॥ मोहि दिपायो पंथ ॥
ताते सुदर कहित हों ॥ रचकर अदिभुत ग्रंथ ॥ १ ॥
परमात्म सुत आत्मा ॥ ताको सुत मन पूत ॥
मन को सुतरो पाचहैं ॥ पाचो भए कपूत ॥ २ ॥
गुन मान परमान्मां ॥ दरपन बुधं जानं ॥
तामे प्रतिवियन भयो ॥ जीवात्म पहिचान ॥ ३ ॥
दरपन को अभाम जो ॥ कंम पात्र में होइ ॥
त्यं आत्म प्रकाम मन ॥ देह मध है सोइ ॥ ४ ॥
कम पात्र को होइ पुन ॥ मदन मधि अभास ॥
त्यं मन तें इट्टी मरुत ॥ बहू विध करह परकास ॥ ५ ॥
परमात्म सायो रहे ॥ व्यापक मध घट माहि ॥
मदा अंघमित गुरुम ॥ निपे छिपे कछ नाहि ॥ ६ ॥
तायो भूने अतमा ॥ मनमुत म्यं हित दीन ॥
तारे मुय मुय पाचहों ॥ ताके दुप दुप कीन ॥ ७ ॥

अन—नव पाचो मनम्यं मिने ॥ मन आनमम्यं जाइ ॥

आनन परिमाना मिने ॥ जू जल जने नमाइ ॥ ५२ ॥

अने अपने तानम्यं विछरत होइ गये और ॥

मनपुर आप दया करी ले पहुचाए ठौर ॥ ५३ ॥

पसरेहू ऐसैकत मे ॥ सकौचं गिय होइ ॥
 सतगुर यहि उपदेसकार ॥ कीऐ वम तमं सोइ ॥५५॥
 जैसे ही उपजत भए ॥ तैसे ही लंनौन ॥
 सुंदर जव सतगुर मिले ॥ जो होते सो कोन ॥५५॥
 वाके सुनते परम सुष ॥ दुष न रहै तबलेम ॥
 सुंदर कह्यौ विचार चर ॥ अदभुत ग्रंथ उपदेस ॥५६॥

विषय—मत मतानुसार जानोपदेश ।

संख्या ४५२. वारहमासी, रचयिता—मुंदर कवि, पत्र—३ (१५ नं १८ तरु),
 आकार—८। × ६। इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुपृष्) —४७, पूर्ण, रूप—
 साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्ति स्थान—श्री मरम्बनी मठार, श्री विद्या विभाग,
 काँकरोली, हि० व० ५२, पु० सं० १।३ ।

आदि—वारहमासी ॥ गजल की चाल ॥ राग सोरठ ॥

पीया वीन जाता हे जोवना, सछि त्रय किम तरे रहना ॥
 चहुँदिस से घटा घनघोर, दाटर सब मोर कर रहे मोर ॥
 आगम आषाढ का आया, विरह तन मे जु मग्नाया ॥ १ ॥
 सखी सावन मे आवन का, इरादा था जो साजन का ॥
 भला फिर क्यों नहीं आए, किसी के माय दिलमाए ॥ २ ॥

मध्य—आहवो कार्तिक लगा धार जान जाती हे मेरी ।
 आसना मे आसना जावे वषा देटा तुझे हम ॥
 जानी तेरी तसवीर मेरे चस्मो मे फीरती खड़ी धार ।
 इश्क का ले तीर मारा आहें पारते हे टटे हम ॥ ५ ॥

अंत—देख तपता जेठ आसीक को छोरका गुग्गव ।
 मामुक को गले लगा कहने लगा सद्के तेरे हम ।
 मुख पर दीये रुमाल तीरछी नीगा से करती राज नाज ।
 सुंदर कहे सुन ऐ परीवे अब दाहा छोडे तुजे हम ॥१२॥

विषय—शृंगार रम पूर्ण वारह मासा का वर्णन ।

संख्या ४५३. रामरहस्य, रचयिता—मुंदर बुधरि, ळगज—वानी, पत्र—५६,
 आकार—५३ × १ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुपृष्) —५५३, अपूर्ण,
 रूप—भव्य, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभया पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी
 सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी ।

आदि—धीमते रामानुजाय नमः ॥ अथ राम रहसि ग्रंथ लिप्यते ॥

प्रथम कवि उत्क अस्तुत दोहा ॥

धी रघुपति गिय चरन कौं कवि निज मन में धारि ॥
 भक्ति सौं जस धरनन करत जो दायक पल चार ॥ १ ॥

॥ सर्वथा ॥

स्यांम स्वल्प अर्नपम अंग अर्नगह ती संम नाहि लदायो ॥
 सोहत है कच कुंचित औ द्रग पकल से धनुं मोरें सजायो ॥

जा गुंन गांन श्री ध्यांन करं नर सोई धरा महि धन्य कहायो ॥
 जीवन ताकी वृथा जग मे जा हिया महि नाह सिपावर आयो ॥ २ ॥
 सो दशरथ नरेन के धाम प्रभु प्रगटे निज चार धरं तन ॥
 योसिकु के मय रक्षिक हूं मियुला घर सीता रखी जनक पत ॥
 तान के सामन तं मिया माय लं लछमन श्री पुन राम वसे वन ॥
 बाधिकं निघु हत्यो दशकंध की श्राए धरं संग रोछ कपीगन ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

पाय राम के दरम कौ बाढ़यो सर्वाह उछाह ।
 करी तयारी तिलक की नांते सह नरनाह ॥ ४ ॥

॥ चौपाई ॥

देम देम के भूपति श्राये ॥ राम प्रेम गुंन रूप लुभाये ॥
 स्याम मरुप बिलाल बिलोचन ॥ देयं छवि मु काम मद मोचन ॥ ५ ॥

मध्य—

॥ दोहा ॥

बघन बंन मुनि मात जू सुता लई उर लाय ।
 लपि के टादन गन तहां लाउ कुंवर कौ गाव ॥६८॥
 कवित्त—गावं लाउ ढाढनिलटांवनि लडैती तहां
 मजलिम छावं रंग प्रेम की उमंग सौं ॥
 रीक रीक वारी परवारिनि प्रबोनी सर्व
 कुवरि निहारि वारि भूयन दै अग सौं ॥
 भावज मिहावं श्री गनावं फुरमाय पुनि
 भरम मुहाग इन नामें पिय सग सौं ॥
 गुरजन माहि दृग मोजे सकुचाहीं सिप
 झुकि मुप मोरं चित चोरं मुंह भंग सौं ॥६९॥

॥ दोहा ॥

चित चुरान सिय पे भंडे सर्व दृगन की भीर ।
 दिष्ट लगन नय मान तव बोली मात अघोर ॥३००॥

अंत—बहुरि बुलावन वेग कहि बहुरे अति हित लीन ।
 आप जुहारे नृपत सौं समाचार सब दीन ॥६२॥
 इत रघुवर स्वारी मयं डेरन उतरे आन ।
 सामग्री मय भोग की लहि बिलमे मुप सान ॥६३॥
 दुनिय दिवम ते पुनि चले मजल सुहावन चाल ॥
 विच विच बाग तटाग जिन मोभा लपन रमाल ॥६४॥
 स्वारी तहां उतारिकं मिय रघुवर बिलसंत ॥
 तानं मजल मुरुमा कौ पैद न लहत अतंत ॥६५॥
 केने भूप वि.....

विषय—श्री रामचंद्र जी के जनकपुर विदाग का वर्णन है ।

मध्या ४५४. गुण महिमा, रचयिता—गुणदेव (?), कागज—देगी, पत्र—२,
 आकार—५ ३/४ × ८ ३/४ उंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८, प्रागं, रूप—
 प्राचीन, पद्य, विधि—नागरी, प्राक्लिश्यान—आयें बापा पुम्नरानय, (याज्ञिक मन्त्र), नागरी-
 प्रचारिणी मभा, नाजी ।

आदि—अथ श्री गुरु म्हेमा लीपते ॥

अलप नीरजन नीराकार जिन प्याल बनाया ।

अगम पथ का राह बनाया ॥

गुरु समान दाता नहीं कोई । राम नाव जौन दीये मुनाई ॥

आवकारा सब सनकादिक कीया वीचारा । गुरु की म्हेमा अपरमपारा ॥

गुरु वीसंभर गुरु परम नीधान । गुरु बीनी कदे न होय कल्यान ॥

गुरु म्हेमाराजा गुरु देवन के देवा । गुरु कामधन गुरु कल्प द्रष्टी गुरुची ॥

:०:

:०:

:०:

गुरु सेव हरी आपही कीनी । यही लीप सुखदेव कु दीनी ॥

रोषी नारद मुन ऐसी कीनी । जाइ दीछा धीमर सू लीनी ॥

अंत—

गुरु की म्हेमा पठं अर गावा । जीनी संकट पदे न भावा ॥

गुरु की म्हेमा वरनी न जाइ । श्रीरी सुखदेव अपन मुख गाई ॥

इती गुरु म्हेमा संपूरन समापीता ॥ श्रीराम.....

वियय—गुरु महिमा का वर्णन ।

संख्या ४५५. पशुमर्दन भाषा, रचयिता—गुगानद नाथ, पत्र—०३, आचार—८१ × ६ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—७५६, पूर्ण. रूप—प्राचीन (ज.ग.), गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—१८६७ वि०, प्राप्तस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ तत् सत् ॥ परमदेवतायं ॥

हे कुल साधक सब लोगो तुमको परम कारणािक सदागिब ने प्रत्यक्ष अपना स्वरूप ब क कहै है तुम सभो के माहात्म्य को पृथिवी मे कोई जानने की सामर्थ्य नहीं है और तुम्हारे बने से पशु पाशवद्ध जो सब जीव वे मुक्त होते है कुलाणवे-कुलाचार प्रमत्ताना साधना मुकृतात्मनाम् साक्षात् शिव स्वरूपपारणाम प्रभावो वेत्ति को भूवि ॥ दृष्टवान्तु भैरवी च मम रपाः पद्मनाभान् मुच्यन्ते पशु पाशेभ्य कलि कल्पय दूयिता ॥ कुलाचतो तन्त्रे कौलिकोहि गुरु साक्षात् कौलिकः शिव एव सः इत्यादि ॥

श्रीर जीवो के निस्तार कर्ने के कारण तथा उन्होकी कर्त्तव्यावर्त्तव्य रूप उपदेश देने के अर्थ कौलिको का पृथिवी मण्डल मे विहार है ।

मध्य—श्रीर इच्छापूर्वक पशु के देखने से श्रीर उसके साथ घातलाप वा उन्की रपणं करने से तुमको प्रायश्चित्त कर्ने पडता है श्रीर पशु का संसर्ग कर्ने से घोर भी पशु होता है ।

पशोर्दर्शन मात्रेण कर्त्तव्यं संप्रदर्शनम् घालापातस्य ससर्गात् तक्षं श्री पादुकाजपेत् ॥ कुञ्चिका तन्त्रे पशुनासह संसर्गात् पशुदेव न सशयः २३ क्षान पूर्वक जा साधक एव बार भी पशु का अन्न भोजन करे सो नराधम है सहस्र मन्यन्तर व्यतीत होने से भी उरुकी निष्पत्ति अर्थात् उसका उद्धार नाह होता श्रीर लोभ यस से या मोह से वा भय से कदाचित् पशु का अन्न भोजन करने मे आवं तब लक्ष श्री पादुकात्मत्र का जप श्रीर पुनर्वा र अन्वियेक श्रीर श्री चक्र पूजन करने मे पाप से मुक्त होय नहीं तो निस्तार होता नहि ।

अंत—शैव धर्माश्रिताः कौलास्तीर्थं रपाः शिवात्मकाः ।

स्नेहेन श्रद्धया प्रेम्णा पूज्या मान्या परम्परम् ॥

यथा सभ्यातुर्यात्कचित् यो दधात् कुल योगिने ।

विशेष त्रिषु प्रीत्या तस्य पुत्र्यं न वर्णने ॥

कुल निष्ठान् परित्यज्य पञ्चान्वयस्मं प्रदीयते ।
निष्कल तन् भवेद्देवि दाता च नरक वजेत् ॥
यया ब्रह्मोपदेशेन विमुक्तः सर्वपातकः ।
गच्छन्नि ब्रह्म मायुज्य तव तव साधनात् ॥

शोधने हंम. शुचि पदित्याद एकमेवापर ब्रह्मेत्यादि राजं ब्रह्ममय भावयेत् ॥४२॥

इति श्री कुलाग्रधन श्री परमहम परिव्राजकाचार्य श्री हरिहरानन्दनाथ भारती कृत.पशु-
मर्दनाद्य संग्रहः समाप्तः ॥ ॐ ॥ सद्धत् १८६७ पाप शु-त तृतीयाया लेखः ॥ तत् सत् ॥

विषय—यह ग्रन्थ हरिहरानन्द भारती कृत पशुमर्दनाद्य का भाषानुवाद है । इसमें पशुओं के नाश किए गए व्यवहार का फलान्तर और उक्त ग्रन्थ का भाव आदि का वर्णन है ।

संख्या ४५६. पद्याङ्किका, रचयिता—मुच्यम कवि, पत्र—२५, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—
६, अक्षर—८५, पद्य—ब्रह्म, पद्य, निधि—नागरी, रचनास्थान—स० १७१०, प्राणिकस्थान—५०
दृग्गवन्तभ राजनगर तहसील, राज—छतरपुर ।

आदि—श्री गणेशु श्री सरस्वती जु ॥

अथा नरसिंह पचासया लिखते ॥

था रामदास गुर चरन की ध्यान धरी उर आन ॥

पुनि नरसिंह पचासका . . . कही बयान ॥ १ ॥

संवत नवरासे दन आदी विधि गुरवार ।

सात की पूरन सियो पचाम का अवतार ॥ २ ॥

मध्य—५० सं० २५

. पलकत्र लोचन जगत परजा गह ॥

ध्यावे नर सुर पुन श्रवन सुन सुन भगत बछल भगतन प्रतपालह ॥

पतिति पावन तरे पतिति अजामेर से गनका की सुप देके अनुरागह ॥

भयो है अनाथ कुल काहिथ मुचंमगाय वेग नरसिंह जु पुकार श्री न लागह ॥३६॥

अंत—५० सं० ४६

. पठत होय दुप दूर महाही ॥

यह नरसिंह जस पठत ग्याना उपजे मन माहि ॥

यह नरसिंह जस पठत सुप उपजे मन माही ॥

यह नरसिंह पचामका पढे बढे लखत लकरत ॥

करिये नरसिंह मया न बछु नह सुवस नरसिंह बल ॥

विषय—नरसिंह भगवान् का गुणगान विविध छंदों में किया गया है ।

संख्या ४५७. कवित्त, रचयिता—मुच्यम (मुच्यम), नागज—देशी, पत्र—१,
आकार—२३ x ३३ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुप) —२२, पृष्ठ,
रूप—प्राचीन, पद्य, निधि—नागरी, प्राणिकस्थान—५० जयपुर दुबे, अ.र.—म.र.स.या, पं० २—
तरकूना, जिना—गोरखपुर ।

आदि—

बबे पादचारी गज पालनी मवारी बबे बबे पाद परज महोप परगन है ।

बबे लावन को दोज बबे दोजि पान रोज बबे तंनु नरपोन बबे नप्रहि पिरत है ।

बबे लापह को मान बबे आपुहि वेमान नरै जानी विद्वान तबे दोप करमत है ।

जब को बगाय जम तप को तगह तम "मुच्यम" नदम विधि ईश्वर करत है ॥ १ ॥

सारी गज ग्राह गोघ गरिष्का ब्रजामिल को विपति विदागे जिन्ह ग्राह्या गुदामा को ।
 द्रौपदी को लाज काज रापो जिन्ह सभा मान् रापो जिन्ह टेक बलि हरिचंद नामा को ।
 गौतम की नारि पद रेनु तें विमान दान्हो पायो जिन्ह जटो पल भितानी मोदामा को ।
 अतनी सिपाई एह करो कवि "सुवरण" की दान हे रह। तुम न गधेपति न्यामा को ॥ २ ॥
 बोलति किम्कि नारि भीना नील अदर गृध मानो नालघटा मध्य तरपि जानि दामिनी ।
 थाकी बहु जतन सिपाये बहु भातिन्ह से मानति न नेको द्विधि वीनि नई जानिनी ।
 आली को न दोन सिमिरोल मरपोत गधे पाठ के परेह दिन् होदगी न नरिनी ।
 "सुवरण" सनेसो आरी कहिए नद नद यू (जू) ते मान के मह्यन चहि बनी आजु दामिनी ॥ ३ ॥
 लहाछेह चातुरी विलास रास वृ दावन दुःखदिशि रयान्ता व अतराल दामिनी ।
 मकराकृति कुण्डल गर माल वंजयंती आटे पीत अजर दग्न दुति दामिनी ।
 छूटव लाज काज गृह गुरजन को उरताई मोहनहि ताई दिन दिती जान जानिनी ।
 करे रिति प्रीति विपरिति रति "सुवरण जू" बलिहारी बनिहारी मोहन नचाविनी ॥ ४ ॥

अत—

जयतिपरासर	सूनः	रात्यदती	हृदय	नन्दनो	ध्यान ।
यस्यास्य	कमल	गलित	वाडमयममृत	जगन्पियनि ।	
द्वैपायनीष्ठपुटनि.सूतमप्रेमेय		पुष्यं	पवित्रमय	पापहर	निदध ।
यो भारत	समधिगच्छति	वाच्यमानं	कि	तरय	पुणार जलतरिभवेन ॥ २ ॥

चंद्र के चाव चकोर मरें निसू दीपकि ज्योति जखो पतंगी ।
 धन घोर के सोर के मोर मरें अरु मोन मरें विदुर जल रंगी ।
 स्वाति के बुद के चातक चाहत केतकि फूल के नीं भुअर्मा ।
 ए सभ चाहत श्री नही चाहत जारो मैं प्रीति कि रीति एका ॥ १ ॥

तब तो हमारी चित हित दे चोराइ लोन्हो अय ययी न प्यारे डोठ उठ न लाइए ।
 भिनती हमारिए विसारिए न प्यारे हम सालति विमारो तते हारि दान हारिए ।
 यो वनि आवैं तो लगाय लिजें अक अंक नातो नातो नैनरु फिरे तो निगारिए ।
 गाढी है गरज अरज अरज अलि मोहन दि यो वत दि यो त दरग दि यो चारिए ॥

विषय—वियोग शृंगार वरण ।

संख्या ४५८. रामरहारी (लवकुश काठ), रचरिता—रूपका नाम, पत्र—६६ पत्र ३
 —८ × ६ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (गुणपत्र)—२६. २५ गं (१२
 पृष्ठ सख्या २ नहीं), रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपि—१२९६ प्रिंटेड
 काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी (अथवाता—१० स्वामी नाथ द्वे द्वे म—२५
 पोस्त—पूरुद्ध, जिला—गोरखपुर) ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ श्री पोथी रामरहारी वृत्त मुरजदाग ॥

॥ श्लोक ॥

जत्रेव गंगा जमुना वीवेनी गोदावरी सिंधु सरस्वती च ।
 सर्वानि तीर्थानि वसति तत्र जत्रो च तोद्वार कथा प्रसंग ॥ १ ॥
 प्रनवो गनपति मन चित लाई । जेहि सुमिरे मैं गति मति पाई ॥
 प्रनवो मातु पिता गुर पाऊ । जेहि मोहि निमल ग्यान निदाऊ ॥
 सारद को मैं चरन मनावो । जेहि प्रनाद छेदर बुधि पावो ॥

राम नाम मन करहि पुकारा । मानहु दुजोक चाद नोहारा ॥
 राम विमान गगन लहि धावा । जनु तारागन सगं सोहावा ॥
 राम विमान उत्तरि पुनि तथा । सभ कुटुब मीतो आए जहाँ ॥
 उनरे राम सीमा श्री लछुमन । उतरे वानर भालु सब सगन ॥
 हर्नावंत वीर आगंद कुमारा । दइत विभीषन लक भुआरा ॥
 उतरे जान सकल दलवीरा । जामवंत उतरे रनधीरा ॥
 उतरे सेना सभ सपुदाई । तीन्हू को नाम कहै को गाई ॥
 देपि कुटुंबन्हू गहवर रामहि रहा न जाइ ।
 नर बनौठ... नन्हू पहले लागवे धाइ ॥

अंत—

॥ दोहा ॥

सगरी कटक जीआए सभ कोउ भा हरपंत ।
 सीता लेन पठाए लछुमन श्री हनिवंत ॥

॥ चौपाई ॥

लछुमन कहा चढहु रय आइ । रामचंद्र तोहि बोलि पठाइ ॥
 सीमा कहा सुनु लछुमन राई । दीन्हू बहुत दुप तोहरे भाई ॥
 धरती मेहु जो वेवर होई । जाउ रसातल लपे न कोई ॥
 लपन कहा तव राम गोसाइ । श्रव वोइ से बूइ बालक आई ॥
 बाहु पकरि तव रथहि चढावा । हाकि रथहि लं श्रवधहि आवा ॥
 पाछे पलटि जग्य पुनि कीन्हा । कोटि गाय विप्रन्हू के दीन्हा ॥
 हेम रतन श्री सहन भंडारा । सो सभ दीन्हा लागु न वारा ॥
 लव कुस चरित सुने मन लाई । ताकर पाप तुरित छे जाई ॥
 जाके सुनत पाप सब नासा । होए मोछ वंकुठ नेवामा ॥
 जाहि सुने सुप पावें रोधी । जंत पत्र फल पावें सीधी ॥

॥ दो० ॥

सीता मती सुतन्हू सग भुजन लागी राज ।
 कहत सुनत जे प्राणी होई महासीध काज ॥

इति श्री रामरहारी मंथन सुभ संवत १८१६ कागुन सुवल दशम्या सोमार गीरधारीवास
 भइल ॥

विषय—सीता का वनवास और रामान्वमेघ का वर्णन ।

संख्या ४५६. नगशिख, रचयिता—मूरत मिश्र (स्थान—आगरा), कागज—देशी
 वाकपी का, पत्र—=, आकार—११^६/_६ × ८^१/_६ उंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण
 (अनुष्टुप्)—२६०, पूर्ण, रूप—नया, पद्य, निधि—नागरी, प्राणस्थान—हिंदी साहित्य
 मंगलन, प्रयाग ।

आदि—मूरत मिश्र रचित नगशिख ॥

ॐ ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ नगशिख वर्णनम् ॥

चरन चतुर्भुज के चिह्न द्वे करत मेवा रमाके । मुखद ग्रह रूप मात हैं ।
 आनन द्वे विधिद रिमायो पे न बनी विधि "मूर्त" मुखवि दाने जग में विख्यात हैं ।
 मुनिये हो लान उहिवाल पग मम ताके दानी बहतेगी पेन अष्ट वारिजात हैं ।
 ऐसी कान जाने द्विय धीगज धीगइ चाने पाट वेग्रे काइ के न पाइ ठहरात हैं ॥ १ ॥
 पद नग चंद्र अनुहानि छीनी रवि की अगनताई जीने जोतिवंत मन्त्र रूप विलगत है ।
 मैनी जगनारि ते निहारि नारि नीची करे सबही के प्रतिविद्य तिन में समत हैं ।

“सूरत” श्री वृंदावन पनी की चरन संग पाइवे को विच आभावंत दरमत है ।
साची कहनावति इहा ई देखी लाल सब जगत के रूप जाके नख मे दमत है ॥ ३ ॥

॥ एडी वरुणं ॥

कोमल अमल रुचि राजति रजति रूप अति ही अरन होति भूमि के पद्म ते ।
मानो दरसत गति गजराज कुंज ते कुसंम जल मेतिभरं वदन सराते (? मरमते) ।
जिनकी उपमा की सूरति बखानी जाति कहा कहो आली बहि आदतु तरमत ।
ऐसो कोन चलि सके डगु भरि मगु पगु ब्रेडी सी परति तेरी एडी के दरमत ॥ ४ ॥

मध्य—

॥ वरुनी ॥

किधो दग सरोवर आस पास रयामताई त।ही के ए अशुर उलहि दुति वाढे बहे (? वाढे है) ।
किधो प्रेम प्रेम ब्यारी जुग ताके चहुघा रची है नील मनि सरनि पि बाज दुवन टाढे है ।
सूरत सुकवि तरुनी की वरुनी न होहि मेरे मन आए यो विचार चित गाढे है ।
जई जे निहारे मन तिनके पकरिबे की देखो इन नैननि हजार हाथ पाढे है ॥ ३५ ॥

॥ वेनीचरणम् ॥

त्रिभुवन पति के हरति दुख दूखतहि सहज सुवास सोमरस है ।
नंस सँ जुत्त पर समहाई सुख सगसँ वे तीनहू वरन कां प्रषटमुदरत है ।
सब दिन एक सो महातम है सूरत यो नागर सबल सुख सागर परम है ।
ऐरी भूग नैनी पिक वेनी सुख वेनी अति तेरी यह वेनी तिरवेनी तें भरस है ॥
॥ इति सूरत कृत नख शिख वरुणम् ॥

विषय—नायिका का नखशिख वरुण ।

विशेष ज्ञातव्य—१. प्रति परिचय—हमारे उभग जैन ग्रथागार मे डग ग्रथ की ५ पद्य की प्रति है जिसके प्रत्येक पृष्ठ मे १३ से १७ पत्तियाँ एव प्रत्येक पक्ति में ३५ में ४० अक्षर हैं । प्रति अठारहवीं शताब्दी की लिखित प्रतीत होती है ।

२. कवि परिचय—कवि सूरत मिश्र कनौजिये ग्राह्यण थे और आगरे मे निवान करने थे । इन्होंने हिंदी भाषा की बड़ी भारी सेवा की है । ये रमज कवि एव सफन टीरारार मे । इनके रचित अन्य ग्रथ ये हैं —

- १ अलकार माला स० १७६६ श्रावण शुक्ल ११ गु०
- २ रसरत्न स० १७६८ माघ २ (१७५२ नायिका भेद)
- ३ भक्ति विनोद
- ४ काव्य सिद्धांत स० १७७८ का० सु० ३ गा १५०
- ५ छंदसार स० १७६८ से पूर्व रचित
- ६ शृंगार सार स० १७८५ आपाढ शुक्ला १५ गु०
- ७ सरस रस स० १७६१ (१७६४ ?)
- ८ विहारी मतनई टीका स० १७६४ (अमर चंद्रिका)
९. रसिक प्रिया स० १८०० फा० सु० ७ गु० दीवाने (जोरादर भक्त)
१०. कविप्रिया टीका
- ११ बैताल पन्चीसी वार्ता
- १२ प्रबोध चंद्रोदय
- १३ राम चरित्र
१४. कृष्ण चरित्र
१५. भक्तमाल

- १६ रामधेनु
 १७ त्रि विद्यान
 १८ गन्तव्य दीक्षा न० १८०० आवरण
 १९ श्री नाग विद्यान (ग्रन्थ)
 २० नवविद्या

विषय—नागिन का नवविद्या वर्णन ।

संख्या ४६०. रचयिता, रचयिता—मूरदया, कागज—देशी, पत्र—३, आकार— $५\frac{3}{4} \times ६\frac{3}{4}$ इंच, पन्नि (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुच्छेद)—३३, उचित, रूप—प्राचीन, पत्र, निधि—नागरी प्राचिनमत—प्राचीनाना पुस्तकालय (शांति मंगल), नागरीप्रचारिणी मण्डल, राणी ।

आदि—..... विलासी ॥३१॥

टांगलन है नर लेपटल नहि यान कि नाथ विगोम दयो है ।

विषम दागम मान भयो पुनि हीनमती हरचद भयो है ।

पीचन को घन कंद माहा दल तांपति रिद्धि छाडि गयो है ।

“मूर्तिदया” नन नारि तजि हनुमान पमाव बल गोदलयो है ॥ ३ ॥

ठोर उठोर लिपन गदाजिब रापत है शिर उपरि गंगा । गौर स्रग्भुक्तिकरं । लघु सो कडि मोच परयो गनि रापि श्रुयंगा । संद अनुक रट्टि चिहूरा विचि चूसि चूसि हर्माडि करं अति जंगा ॥ “मूर्तिदया” कहै रद्र मुचित ममानि बहोय न चित चितन श्रंगो ॥३३॥

अत—राज्य वचित है गीत कर्मावर वंशक योतिप चित्र करेहैं ।

यंत्रक मंत्रक रतंभन मोहन नाटिक नृत्त अभ्यास करेहैं ।

गायन गीत पठंत दिव्य धन और अनेक बला जू बरे हैं ।

द्रव्य कला नवतें “दगागुरि” कहै धनवंत शिरं है ॥

कमलनाल आइयो राजन प्रीत रहू निपटाय षंड षंड करि डारियो ॥

विषय—जिब, धर्म आदि विपर्या पर कचित्त रचे गए हैं ।

विशेष ज्ञानव्य—अन के आदि और मध्य के कई पत्रे नहीं हैं । रचनाकाल और लिपिकार भी अज्ञान हैं ।

संख्या ४६१क मूर्त्ति, रचयिता—मूरदाम जी, स्थान—गिरिगज (मथुरा), पृष्ठ—७ (३१ नं ३५), आकार—७।। × ७ इंच, पन्नि (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुच्छेद)—१५, पूर्ण, रंग—श्रेष्ठ, पत्र, निधि—नागरी, रचनाकाल—स० १६४० के पूर्व, प्राचिनमत—श्री मन्मथी भट्टार, श्री विद्या विभाग, त्रिकुटी, हि० व० ८२, पु० म० १८ ।

आदि—श्री गोपीनन वरतनाथ नम ॥ अथ मूर गाडि लिखते ॥ श्री ॥ राग वैलावल ॥

दृश्य गुमरन तन पावन क्रिजे ।

जय लग जग गुपनी सो जिजे ॥ १ ॥

अथ उनाम मनन सब तेरे ।

सो निनिन भये आवत नेने ॥ २ ॥

मध्य—मनुष्य देह धरि अक्षय कयायो ।

ते तरुटे दृग दान्न आयो ॥५८॥

जैनन काज जिब बध जिने ।

रमना रग अमिग्न रम पीने ॥२६॥

सोतन छुटत प्रेम करि डारघो ।
प्रेत प्रेत कर नगर निकारघो ॥३०॥

अंत—श्री भगवान परम हेत कारी ॥
द्वारे रटत हरिके सुर भिखारी ॥५६॥
परम पतित शरण येह निजे ।
दि रज दान अमेता दिजे ॥६०॥

ईति श्री सुर साठि सुरदास कृत संपुर्न ॥

विषय—भक्ति और ज्ञान विषयक ६० पद्य है ।

संख्या ४६१ख. सुर रामायण रचयिता—सूरदास, कागज—प्राधानिक देशी, पत्र—
३६, आकार—१० × ७ १/४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुपृष्ठ)—३८३,
खंडित रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—हिंदी नाट्य मम्मन, प्रयाग ।

आदि—.....

...पूत बल बंड बज्र वषु काके हिये ममाइ ॥५॥
लयो बोलाइ मुदित चित ह्वं करि वछत मोर जो लेह ॥
ह्यायहू जाइ जनक तनया मुधि रघुपति वहुं सुख देह ॥६॥
पौरि पौरि प्रति फिरेह विलोकत गिरिपंदर गिरिगंह ॥
समय विचारि मुंद्रिका दीजे सुनहू मन्न सुन एह ॥७॥
लै तमोर माये घरचो हनुगत तियो चतुर्गन गात ।
चडि नग सिखर सद्ध एक उचरेव गगन उठयो आघात ॥८॥
कपित कमठ शेष वसुधानम रति रथभी उनपात ।
मानहु मेरु पांख ह्वं जाने उडेउ मकाशहि जात ॥९॥
घहरत सकल अचल सरितावन जन कीन्हो किलकार ।
तहाँ एक अद्भुत जो निशिचरि अति मुख नाख विस्तार ॥१०॥
पवनपूत उर पैठि पधारे तहू न लगी छिन धार ।
सूरदास स्वामी प्रताप बल उतरे जलनिधि पार ॥११॥

अंत— ॥ राग मारु ॥

कहत हनुमान सो रघुराइ ।
दोन गिरि पर जरी सजीवनी सायामग तू ल्याइ ॥१॥
वेगि जाउ लं धाउ उहाँति विलस न बरु अब भाय ।
जब लगि भानु उदं नहि होय तब लगि लो फिरि आय ॥२॥
लक्ष्मिन विथा जानि उर ताते फहत प्रबुलाइ ।
सूरदास प्रभु वचन सुनत ही हंनु चलयो उतलाइ ॥३॥६५॥
दोन गिरि हनुमान सिधायो ।
सजियन को कछु भेद न पायो तब सब तंत उठायो ।१॥
चितं रहे तेहि भरत देखिकं अबध निबट जब आयो ।
मन मे जानि उपद्रव भारी दान प्रवास कसायो ॥२॥
राम राम यह फहत पवनसुत भरत निबट जब आयो ।
पूछेव सूर कवन है पहि तू हनुमंत नार सुनायो ॥३॥६६॥

विषय—हनुमान् राग लाता जनाने मे नेतर नक्षत्र को जीवित करने के लिये सजीवनी
शोषधि नाने ना को रामकथा ना वर्णन ।

विशेष ज्ञानव्य—यव के आदि अन्त आ के अश गठित है । रचनावाल और लिपिकाल
दोनों अज्ञात है ।

संख्या ४६१७. मूरगागवनी रचयिता—मूरदास, कागज—देशी, पत्र—१३२,
आकार—१०^३/_४ × ६^३/_४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४०८,
गठित, रूप—पुगना (जीर्णगीर्ण), पद्य, लिपि—नागरी, पाठस्थान—ताशी नागरी-
प्रनागिणी मभा, वागगुमी (दाता-प० जिवमोहन तिवारी, ग्राम व पोस्ट—वरहद, जिला—
आजमगट) ।

आदि—

जा दिन कोमत्या अपने गृह वधु वधु करि मोहि बोलैंहे ।

जा दिन राम रावनहि मारिहैं कोप सहित दससीस नसैंहे ।

तवही मोक्ष होत मूरज प्रभु मो दारो की विपति छडैंहे ॥६०॥

००:

००:

००:

इति श्री मूरदाम महाकवि चिरचिताया मूरसारावत्या श्री राम चरित वर्णनं नाम प्रथम
पदसर्गं ॥ १ ॥

अही पति सो उपाव कछु कीर्ज ।

जेहि उपाव अपनोइ यह बालक रापि कंस ते लीज ॥

मनसा बाबा कहत कर्मना श्रीपति हियं न पतिजं ।

बुधि बल छल करि जतन युगुति बरु काढि अनतहि दीजं ॥

नाहिन हतोमाग जीहि इह सुप नीति लोचन पुट पीजं ।

मूरदास ऐसे सुत के गुन सुमीर सुमीर सुप जीजं ॥१॥

००:

००:

००:

अंत—

॥ राग गौरी ॥

वेहि अंतर हरि आय गये ।

मोर मुकुट पीतावर काछे अतिकोमल छवि अग भए ।

जननि योताय बाहरहि लीन्ही देपहु री मदमाती ।

इनहि को अपराध लगावति कहा किर्ति इतराति ।

मुनिहैं लोग मष्ट अवह करी तुमहि कहा की लाज ।

मूर स्याम मेरो मापन भोगी तुन आवति वेकाज ॥१५४॥

॥ राग गंगाधर ॥

अवही देपो नंद केसोर ।

घर आवत ही तनक भये है.....

—अपूर्णा

विषय—श्रीकृष्ण की ब्रजलीलाओं का वर्णन ।

संख्या ४६१७ मूर गद्यार्थ पद मग्रह और अर्थ, रचयिता—मूरदाम जी, टीकाकार—
बाबूदास (भावनगर), कागज—मार्वापुरी, पत्र—५३, आकार—६। × ७। इंच, पक्ति
(प्रतिपृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६८६, पुगं, रूप—माध्यागु, गद्य, पद्य, लिपि—
नागरी, प्रातिग्यान—श्री मन्वन्ती मन्त्र, श्री विद्या विभाग, सांख्योली, हि० व० ५, पु० सं० २।

श्रादि—॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ श्री गोपी जन बल्लभाय नमः ॥ अथ सूरदास जी कीर्तन को सग्रह करिबैं कों प्रथम मगलाचरण कहैत हों ॥

॥ दोहा ॥

श्री गोवर्द्धन धरन जय करत मरन जन मोद ।

ब्रंदावरक वदित सकल ब्रदा चिपुन विनोद ॥ १ ॥

श्री बल्लभ विह्वल पदलवदि विमद विचार ॥

बहत सुविद्या बुद्धि बल विनसत विकट विकार ॥ २ ॥

मध्य—पृष्ठ ५२

याको अर्थ—श्री कृष्णचंद्र नंदराय जी के ग्रह प्रगट होय के गवन को आनंद को अनुभव करावैं ॥ ताको वरनन वृक्षरूप करिके नंदराय जी गान करत हें ॥ दधिमुत जो ममूद्र ताकी सुत जहाँ सो उत्पन्न भयो ॥ सो मुक्ताफल सो जम्यो ॥ जैसी बीज भेते वृक्ष होय के फल ताई की अनुभव होत हें ॥ तेसे जम्यो इहा एसो प्रश्न आयो । जो व्रक्षरूप करिके वरनन करनो हतो । सो तो साक्षात् दधिमुत जो कल्प वृक्ष उचित समान धर्म ताको छोटिके मुक्ताफल जो वृक्ष अम भता को कीयो ॥

अंत—पृष्ठ १०६

पीन सानु जो ऊचो परत तद्वत् हे कुच जिनके तापर अहरीजो का चली ॥ सो बंचूरी राजत हे ॥ विहार करत ताकी तनी टूट रही हे ऐसे सूरदास प्रभु निरखि हरखि आनंद भयो अत्यंत प्रीति बढी ॥ ४ ॥

इति श्री सूरदास जी के गूढार्थपद सपूर्णम् ॥ ० ॥

विषय—सूरदास के भक्ति विषयक गूटपद अर्थ सहित लिखे गए हैं ।

संख्या ४६१३ सेवाफल, रचयिता—सूरदास जी, स्थान—गिरिगज (मयूरग), कागज—देशी, पत्र—२ (१० से १२ पृष्ठ तक), आकार—५।५ × ४।५ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुपुष्प)—३३, पूर्ण, रूप—नाधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनामान—१५५५ से १६४० के बीच, प्राप्तस्थान—श्री सरस्वती भटार, श्री दिवा विभाग वाराणसी, हि० व० सं० २३, पु० सं० ७ ।

श्रादि—॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ श्री ॥ अथ सेवा फल लिखने ॥

भजो गोपाल भुलि जन जाय ॥ मनुषा जन्म को येहि हेलाहो ॥

कृपा भई जव मन मे आई ॥ याहि देह सो समरो देवा ॥ २ ॥

सुनो सत सेवा की रीत ॥ करो कृपा राखो मन प्रीत ॥ ३ ॥

प्रात उठि श्री कृष्ण को धावे ॥ जो फल मागे सो फल पावे ॥ ४ ॥

हरि मंदिर मे करे ब्रह्महारि ॥ कबहु न नाखे जम की द्वारी ॥ ५ ॥

मध्य—जो ठाकुर को भोग धरावैं ॥ ताको फल तुरतहि पाये ॥ २२ ॥

जैसी पदवी जसोदा मात ॥ ता सुख की बछु कहिय न जात ॥ २३ ॥

ग्वाल मंडली सो गोपाल जिमावैं ॥ सो ठाकुर को मखा ब्रावे ॥ २४ ॥

जहा वैष्णव की मंडली होये ॥ ताकी सगति नित्य प्रति जोये ॥ २५ ॥

सेवा मे जो आलस करे ॥ कुकुर होए कें फिरि फिरि मरे ॥ २६ ॥

भनसा सूं जो सेवा आचरे ॥ तबहि सेवा पुरी परे ॥ २७ ॥

अंत—सेवा को फल कह्यो न जाय ॥

सुखे समरो श्री बल्लभराय ॥ ४२ ॥

मेवा दी फल मेवा पावे ॥
नूरदान के हृद समाये ॥४३॥

इति श्री मेवाफल संपूर्ण ॥

विषय—नगरम् मेवा वा फल वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत रचना चरण निह्व के साथ एक हस्तलेख मे है ।

संख्या ४६१च. मेवाफल, रत्नमिता—नूरदान जी, स्वान—गिरगज (मथुरा),
पत्र—१, आकार—१०।।। × १०।।। इंच, पत्रि (प्रतिपृष्ठ)—४६, परिमाण (अनुष्टुप्)—
३५, पूर्ण, रूप—नागरग, पद्य, विधि—नागर, रत्नमिता—म० १५६६ मे १६४० के बीच
में, प्राप्तिस्थान—श्री नरवती भटार, श्री दिवा दिनाग, त्रिवरानी, दि० व० १८, पु० सं० १ ।

श्रादि—सेवानी वंशी फल ॥ राग भंगव ॥

भजो गोपाल भूल मनि जाऊ ॥ मनुशा जन्म को एही लाऊ ॥

गुर मेवा वरि भक्ति कमाई ॥ वृषा भई तव मन मे श्राई ॥

मध्य—

जो ठाकुर को लगाये भांग ॥ नाको परमानंद निजोग ॥

पावे पदवां जसोदाभात ॥ ते सुख की कछु कही न जात ॥१२॥

पाल मंडली गोपान जिमाये ॥ सो ठाकुर को गछाजू कहाये ॥

जो ठाकुर को श्राव करावे ॥ सो ताको फल तवही पावे ॥१३॥

अंत—

सेवा कोहे अद्भुत रीती ॥ श्री विद्वगनाथ सो राखे प्रीती ॥

श्री आचार जी ने प्रगट बताई ॥ कृपा भई तीनके मन भाई ॥२३॥

मेवा को फल बहो न जाई ॥ सुख सुमरो श्री बलभराई ॥

सेवा को फल सेवा पावे ॥ नूरदान प्रभु हृदे समावे ॥२४॥

॥ इति मेवा फल. ॥

विषय—श्री ठाकुर जी की सेवा दिन रात्र करनी चाहिए श्रीर उगाता क्या फल होता है,
यह वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—दोनों तरफ लान स्याही में हाजिया छोड़े जाकर काली स्याही से पद
लिखे गए हैं ।

ग्रथ के साथ निम्ननिर्दिष्ट रत्नमार्ग भी है :—

१ श्री गुनार्ज जी के नात पुत्र के प्रागटय को विचार लिखिया है—यह बाधना वा ग्रथ
गद्य मे है । वर्ना का नाम नहीं है ।

२. "द्विदशमम स्वरूप को विचार"—अपूर्ण गद्य मे है ।

३. "हरिगय जी वृत्त शिक्षा" अपूर्ण ।

४ वाद मे—"निज वानी" के कुछ पत्र तथा फुटकर कीर्तन के पत्र है जिनपर पृष्ठ
संख्याएँ नहीं लगी है ।

संख्या ४६१छ. दानमिता, रत्नमिता—नूरदान, वागज—देशी, पत्र—१६, आकार—
६.५ × ६.५ इंच, पत्रि (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३००, रूप—प्राचीन,
पद्य, विधि—नागरी, लिपिता—म० १=४० दि० (?) प्राप्तिस्थान—श्री ठाकुर पतेह
बहादुर मिट्ट, क्षत्रिय पुर, पां०—मभगवां (जौनपुर) ।

श्रादि—श्री कृष्णाय नमः त्रय दान लीलामय जनन ॥

॥ राग बिलासल ॥

भक्तान के सुयदायक स्याम ॥ जुवनी पुरष गौहू बछू नाम ॥
सकट में जन जहा पुकारं ॥ तहा प्रगाटि तिनका उटारे ॥
जिय भीतर जिन सुमिरन कानां ॥ तिनका दरन तहा हृदि दोनी ॥
दुप सुप में जे हार को ध्यात्रं ॥ तिन को नर न हृदि दिमगय ॥
चित दै भज कानहू भाइ ॥ तायो तंभेइ त्रिभुवनगद ॥
कामातुर गोपी हरि ध्यावां ॥ मन घत्र नम हृदि ता चित्त नायां ॥

∴.

०

०

चंद्रवदन तन अति सुकुमारी ॥
अपने मन सब कृष्णहि ध्यानी ॥
देपि सदनि रीकें वनवारो ॥
तव मन में इक बुधि दिचारी ॥
त्रय दधिदान रचो इक लीला ॥
जुवतिनि सग करो रग प्रीला ॥
“सूरस्याम” मग गया बुलाए ॥
यह लीला कहि सुप उपजाए ॥

अत—

यह सुनि नद कुमार सपा दै लैन दलाए ॥
मना मनसुषा सबल सेन महराज जगाए ॥
नैन सेन दै सावरे रावें दुपनि दटाउ ॥
श्रीर गोप सब सग लै रोषि रहे मग जाए ॥

॥ कहत नद लाडलो ॥

एक सपानी सपी घेरि सब सपी दलाई ॥
या वन में इक वार लूटि हम तू दलाई ॥
तनक केरि फिरि जाइयं ददनै सुनि लीला ॥
यह मगरो सुनि होयगो गोबुल में उपजाए ॥

॥ बहति ब्रज नागरी ॥ ३ ॥

लडि चलौ सब ग्वारि वही कोड जान न पादं ॥
रोकि रहे मग ग्वाल श्राप कातनि दिमगयं ॥
सपा सुबल दो बोल धो तं नागनि हरि जोग ॥
काहे यात दटावई जाहि हंसं घज लोग ॥

विषय—श्रीकृष्ण का गोपियो ने दान देने का रसना । नागरी ३३ ३३ ।

विशेष ज्ञातव्य—गप खडित है । नामस्त उनीक पदे उपजाए । नागरी ३३ ३३ ।

है ।

संख्या ४६१७ दानलीला, रचयिता—भूगना जी मयल—ई तिथि १५ १५ ।
कागज—देनी, पत्र—५, आकार—२॥ × ५॥ रंग पत्रि (परिभाषा)—१६ १६ ।
(अनुष्टुप्)—६६, पूर्ण, रूप—नाथान्न पत्र तिथि—१५ १५ ।
से १६४० के बीच, प्राप्तिस्थान—भी गग्गदनी भवन श्री तिथि ३ ३ ३ ३ ।
३३, पु० सं० ४ ।

श्रादि—श्री टृण्णाय नम ॥ दान लीला लिखते ॥

मुन तमचुर को सोर घोड की वाग री ॥
नवमन साज मिगार चली नव नागरी ॥
नवमन साज सिगार हार पाटवर सोहे ॥
एक ते एक विचित्र देगि त्रिभूवन मन मोहे ॥
इंदा त्रिदा राधिका स्यामा कामा नारि ॥

मध्य—अनी वाने काहू कहत हममो काहेते ॥
चोरी छति छाछि नेन भरि लेत गहेते ॥
देत उगहनो रावरे वछ दावरी जोरि ॥
जब जसूधा ऊखल सो वाधे तब मे दोने छोरि ॥२०॥

श्रंत—अभरन दए मगाय कीयो गोपिन मन भायो ॥
हित मिल बढरो आनंदु माट हसि आप उठायो ॥
जुगल किसोर के वारने गई सकल वृजबाल ॥
कूज केल मन मे बसी गाई सूर विसाल ॥४५॥

विषय—दान लीला ।

संख्या ४६१क पंचाध्यायी गन लीला, रचयिता—सूरदास, कागज—देशी, पत्र—
१५, आकार—२१^० × ९१^३, टच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुपृष्ठ)—४२८,
गुण्टा, टा—प्राचीन, पद्य, निधि—नागरी, निषिक्ताल—स० १८४० वि०, प्राप्तिस्थान—श्री
ठाकुर फतेह मित्रहादुर मिह, अत्रिपुर, पो०—म.ग.गांव, जिला—जौनपुर ।

श्रादि—..... ।

नि कुडन धनि मृगमद चदन ॥
धनि राधिका धनि सुदरता धनि मोहन की जोरी ॥
ज्यो धन मध्य दामिनी की दुति यह उपमा कछु थोरी ॥
धनि मंडनी जुरी गोपिनि की ता विच नंदकुमार ॥
राधा मम मत्र गोप कुमारी त्रोटत राम बिहार ॥
पट दम सहम घोष सुकुमारी पट दन रहम गुपाल ॥
काहू सो कहूं अतर नाही करत परस्पर प्याल ॥
धनि यजवात आम सब पूर्न कसें होत हमारी ॥
सूर अमर ललना गुन गावत यकिन रही निज लोक विमारी ॥५३॥

॥ धनाश्री ॥ राम मंडल स्याम राधा ॥

अन—मंत्र शान्त्र को मार मार इतहास मर्व जो ॥
मव पुरान को मार मार जो मर्व श्रुतिनु की ॥
वेदनि विधि सो यो कहुंो दियो विधि रिपिनि बनाइ ॥
व्याम कहुंो वामन पुरान में सोई मूर कहुंो गाइ ॥१४८॥

इति श्री दशम्यधे त्रय त्रिंशत्तमोऽध्यायः ॥३३॥ इति पंचाध्यायी रास लीला सूरदास
रुन मंभूषण ॥ मधत् १८४० मिनी कुआर बदि त्रियोदगी ॥१३॥ ममाप्त ॥

∴

∴

∴

अथ विद्याधर आप मोचन ॥

नव नव गोपोगबाल ममेन ॥ गयी मरमुती के तट इक दिन गिवा अंबका पूजा हेत ॥

विषय—श्री कृष्ण की रामलीला का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रन्थ खंडित है । ममम्न पत्रह पत्रे उपलब्ध है । रचनाकार अज्ञान ।
लिपिकाल म० १८४० वि० है ।

संख्या ४६१७। वसी लीला, रचयिता—मूरदान (गिरिगज, मयूग) गणज—
देशी, पत्र—१, आकार—१० × ५।। इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४०, परिमाण (पत्राट्टा)—
२५, अपूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—म० १६४० के पूर्व, प्राप्ति-
स्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोती, हि० ब० ३६ पु० म० ८ ।

आदि—अथ वसी लीखी हें ।

राधे जू वसी दीजिये व्रज नारि ॥

काल्हि कुंज मे ठोर बासुरी भूलि बिसारी ले जू गई व्रज नारि सुनी हम बात निहारी ॥
तिहारे काज न आवही वंसी हमारी देहु । हम आतुरह्ये मागहीं तुम नाहि न नाहि रहो ॥ १ ॥
वसी दीजिये हो ॥

मध्य—बारी लाला हम सो कहत गवारि आपुनी करत बडाई माने गुतचा गान तो
बाबा की जाई ॥ वे दिन क्यो तुम भूलि गए घर घर मांगत छाटि । फाटी कमनियां बांधे पर अब
कहा कहत हो साछि ॥ ४ ॥ वंसी केसी हो व्रजनाथ ॥

राधे जू या वंसी को मरम कहा तुम खानिन जानो ।

हे त्रिभुवन प्रतिपाल ताहि मेरो मन मान्यो ॥

यह वसी खोजत फिरे शिव विरंचो मूनी सात ।

से दधि मटुकी सीस पें अब कहा नचावत हाय ॥ ५ ॥

अंत—प्राप्त नहीं ।

विषय—राधा ने श्रीकृष्ण की वशी छिपा दी श्री श्रीकृष्ण का गधा ने वर्णन प्राप्त करने
के लिये अनुनय विनय करना ।

संख्या ४६१८. गोवर्धन लीला, रचयिता—मूरदान (गिरिगज, मयूग) गणज—
माधोपुरी, पत्र—१६, आकार—६ × ५ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (पत्राट्टा)
—३६२, पूर्ण, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—म० १४६६ से १६४०
के बीच, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोती, हि० ब० ६ पु०
स० १ ।

आदि—॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ राज बीलाचल ॥

नंद ही कहत जसोधरानी ॥ सुरपती पुजा तुमे भुजानी

अह नही भली तुमारी बानी ॥ लोभ ही लोभ रहे हो मानी ॥

देव कारज की सुध बीसरानी ॥ महर बहत पुनी पुनी अह बानी ॥

पूजा को दिन पहचो आनी ॥ सुरदास जसुमनी की दानी ॥

नदही खीज खीज पछतानी ॥ १ ॥

मध्य—पृष्ठ १७

मोको नंदी परवत ही बंदत ॥ चारा रूपट छंपी उयो बंदत ॥

भरन काल एसी बुध होई ॥ कछु दछु कत वरु वरु जोई ॥

खेलत खात रहे बीज भीतर ॥ नाहाने लोग तनक धन इतर ॥

समे समे बरयो प्रतीपालो ॥ इनकी बुध इनको सब घालो ॥

मेरे भारत कोन राखे हे ॥ अहीरन के मन अहकाय हे ॥
जो मन जाहु ताई पानने ॥ दानी बल गात्रे आब फीउ पावे ॥

विषय—श्रीकृष्ण नगवान् के मोनद्वेन पवंत वारण करने की सीना का वर्णन ।

संख्या ४६२. वाग्द्वयी, रचयिता—गुरुदाम, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—
७ ३/४ × ५ ३/४ इंच, पक्ति (प्रतिपद्य)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२४०, पूर्ण, रूप—प्राचीन,
रस, विधि—नागरी, लिपि—नागरी—म० १८३६ वि०, प्राप्तिस्थान—हिंदी साहित्य सम्मेलन,
प्रयाग ।

आदि—॥ श्री गणेशाय नमः ॥

लीपते पहलाद की वारापरी ॥
क के बहु पहलाद किन्ही बहकाये ॥
हमरे दंगे कंठ तगाये ।
छाडो हर मुख भजो ना रामा ॥
इतनी वही हमारी माना ॥
पये पलक उपाड किगकी ॥
हिन्दे भगत वहे मे उसकी ॥
रा ग ममा पठ विचारा ॥
हर विन् कीन उतार पारा ॥
गगे गुरु हम कु बहकावे ॥
हीरनाकुम का नाम लीवावे ॥
हीरनाकुम वा नाम न धारा ॥
मारो संठी घोह पिटारा ॥

:०:

:०:

:०:

श्रंत—पहलाद उतर गये पाग ॥
दहीर न आवे यह संसारा ॥
राउे राउ मोरी बहुते सुप पावा ॥
दिप्र सुदामा हर गुन गावा ॥
वाग्द परी पहे चित लाई ॥
वहे गुर ठकुठे जाई ॥ श्री शुभमस्तु ॥

इती वारापरी पहलाद की संपूर्ण ॥ श्री राम जी महाय ॥ लीपतं पुरतगः सरब गुण
गुणन की : मदत १८३६ ॥ श्री नाके १७०१ सहस कासीपुर सुथान ॥ श्री ॥ भवानी ज
महाय ॥

विषय—पहलाद की भक्ति का वर्णन ।

संख्या ४६३ मोवात नागी, रचयिता—गुरुदाम, कागज—आधुनिक, पत्र—५,
आकार—७ × ५ ३/४ इंच पक्ति (प्रतिपद्य)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८, यदित,
रस—प्राचीन, रस, विधि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आजी नागरीप्रचारिणी मभा, वाराणसी ।

आदि—श्री मोनाराम जी महाय । श्री दानी जी महाय । श्री दुर्गा जी महाय ।
श्री महादेव जी महाय । श्री जोनात नागी लीप्यने ॥

:०:

:०:

:०:

सोने का परीका लगाइ जी ॥
 सोने की गटवा गंगाजल पानी ।
 अथमानही चरन पपारी जी ॥
 चरन पपारी चरनोदक लीन्हा ।
 एती बडी भागी हमारी जी ॥
 सभ सपीअन भीली देवन आए ।
 कइसे लालन बनी आए जी ॥
 सावर रूप कोमल दल लोचन ।
 श्रांपी बनी रतनारी जी ॥
 अस सुंकुआर देवकी के नंदन ।
 युकुमनी चदर टुलाये जी ॥
 जेवन वइसे श्रीसुन कर्षया ।
 देही सपी सभ गारी जी ॥

श्रंत—एक राती पुत्ता गइल गसुरारी ।
 सासुक कइल बडाइ जी ।
 तुमरी दोहाइ माता नंदबवा की ।
 अथ न जाइयो ससुरारी जी ॥
 हमके तोहके नदबवा जी के ।
 देही सपी सभ गारी जी ॥
 गारी के अनमप जनी करी पुत्ता ।
 गारी प्रेम पीअरारी जी ॥
 जुगु जुगु जीअ पुत्ता अमर होइके ।
 नीती उठी जा ससुरारी जी ॥
 नेगचार सभ आपन करही ।
 श्रीएन के होए चौठारी जी ॥
 कगन छोटी के मंगल करही ।
 दीन दीन करही अनदा जी ॥
 सुरदास प्रभु तुमरे दरस के ।
 जीन्ह एह गारी गाए जी ॥

इती श्री पोथी गोपाल गारी कथा समाप्त सपुरन भइल जो देया सो लीजा हमरे रीन
 मती दीजिएगा सो जानोगे ॥

विषय—श्रीकृष्ण के गसुराल जाने पर स्त्रियों का गाली देना ।

संख्या ४६४क. वारहमासी, रचयिता—सूरदास (भूगदास) गणक—देवी का—
 ३ (२२ से २४ तक), आकार—६। x ४। रच, पक्ति (गमक)—३४ परिमाण (छन्द)—
 २४, रूप—साधारण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—श्रीमन्मन्त्री भवन श्री विद्या विद्या
 कांकरोली, हि० ब० ७०, पृ० स० २।६ ।

आदि—वारेमासी ।

काति कीलित कने सब सखियां राधा जिता—रहे मन मेरे ।

भायो प्रिया की अग्न भीलासी नही तर पाव तपनी तप मेरे ।

हमको छोट बले रे देनीमाछो राधा विचार करे मन मेरे ॥ १ ॥

मध्य—

लाग्यो अगाड घुमट आये पदरा बीजली चमुके कारे बादर मे रे ।
चमक चमक चहँ और निहारी जेसे सोप रहे जल मे रे ।
हमको छांड चले रे देनी माघो राधा विचार करे मन मे रे ।

अंत—

बवार माम निरमल भये चंदा गोरी सोवे अपने आगन मे रे ।
सूर स्याम प्रभु आन मीलाये राधा खुसीय भई मन मे रे ।
हमको छांड चले बेनीमाघो० ॥

विषय—श्रीकृष्ण के वियोग मे राधा के वारह मास के विरह का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—यह ग्रथ कथे की स्याही से लिखा है । इसमें कुल १३ गद्य लिपे हैं ।—

१ वारहमासा कृष्ण का—ब्रजजीवन कृत, २ वारहमासा कृष्ण का—अज्ञात, ३. वारहमासा गम का—गुलमीदास जी कृत, ४ वारहमासा मारवाडी—तुरासीदास जी कृत, ५. वारहमासा—बनारसी कृत, ६ चौमासे के चार महिना—गुरतगिरि कृत, ७. वारहमासा गजल, ८. वारहमासी—सूरश्याम कृत, ९ वारहमासी—सूरश्याम कृत (दोनों पृथक् पृथक् हैं), १०. गजल फुटकर—, ११ वारहमासा—, १२ पहेलियाँ—, १३. चित्रवध काव्य भाषा ।

संख्या ४६४छ. बेनी माघो जी के वारहमासा, रचयिता—सूरदास, कागज—ग्राधुनिक पत्र—६, आकार—७ $\frac{१}{०}$ × ६ $\frac{३}{०}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—कैथी, लिपिकाल—स० १६४१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीमती चौराणा देवी, धर्मगन्नी—ग० रामशंकर पाठे, ग्राम—चाँडीहार (गुरसुतीपुर), पो०—अटरामपुर, जिला—उन्नाव ।

आदि—श्री गनेस जी सहाए ॥ श्री सीताराम जी सहाए ॥ श्री काली जी सहाए ॥ श्री दुरगा जी सहाए ॥ श्री पोथी बेनी माघव जी के वारहमासा ॥

॥ कालीक ॥

कालीक कौल घरे सब गपीआ राधा विचार करे मन मे रे ॥
माघो पीया को आनी मीलावो नाहीत प्रान तजो छन मे रे ॥
हमको छाडी चले बेनीमाघो राधा सोच करे मन मे रे ॥

॥ अगहन ॥

अगहन गेद बनाए मामरे जाए पेले टट जमून कीनारे ।
पंगत गेद गीरे जमना मे कालीनाग नये छन मे रे ॥
हमको छोटी चले देनी माघो राधा सोच करे मन मे रे ॥

॥ पुस ॥

पुसमान हमको छल कीनी आपु चले मइया मधुवन केरे ।
दुम गेदलाल जनम के कपटी हम मे कपट करे मन मे रे ॥

॥ माघ ॥

माघ माम मइया जाटा मरनु है नीट न आपे मेरे नैनन बेने ।
हमको परावानी करी देनी माघो घर घर अगध जगावन कोरे ॥
हमको छाडी चले बेनीमाघो राधा सोच करे मन मे रे ॥

अंत—

॥ कुआर ॥

बारहमास नीरमल भैं चंदा गौरी तो गोयं अपनो आगन मे रे ।
 “सुरदास सामी” आनी भीलाडो राधा गुयो होए मन मे रे ॥
 हमको छाटी चले वेनीमाधो राधा सांच करे मन मे रे ॥

॥ दोहा ॥

लीपा काएथ को भेटी सके बीधना लीपा न जाए ।
 जैसे फोहार के आया करीआ लाल बनी जाए ॥

॥ सपुरन ॥

श्री सीताराम जी के पत्र जो देपा सो लीपा ॥

विषय—श्रीकृष्ण के वियोग मे राधा और गोपियों का विरह दर्शन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल अज्ञात है । निपिकान सवत् १९८१ वि० शिवा ।
 विशेष के लिये देखिए, ‘भरथरी की कथा’ का विवरण पत्र ।

संख्या ४६५. कुवर सदैवच्छ सावलिंग्यारी की वार्ता, रचयिता—मूरमन, नाम—
 दे गो, पत्र—२३, आकार—१२ × ६ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनु-
 ष्टुप्)—१२७२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, पद्य, निधि—नागरी, प्राप्तिस्थान—नागरी-
 प्रचारिणी सभा (याज्ञिक सग्रह), वाराणसी ।

आदि—श्री रामाय नमः ॥ अथ कुवर सदै छिछ सावलिंग्यारी धारता लिपिते ॥
 राजा साल वाहरण अटक संहैर को राजा हुआ ॥ नीलापुर नदी जो ठं राजा राज पबरं ॥ जो
 राजा कं कुवर सात हुआ ॥ ज्यामं कुवर सदै छिछ दीय तु छोटी ॥ चपारि मु घटी ॥ कुवर
 जी की ऊमरि बरस ॥२१॥ की छं ॥ कुवर जी की सुरांत सुरज की सो चित्ति दिवं छं ॥
 कुवर जी सुरवीर छं ॥ जोकरं सात अरवीस ऊमराया का बेटा चौकी रहं ॥ थापण मदारं
 की चौकी चौकी करं छं ॥ ज्याकी ऊमरि बरस ॥२५॥ के तलं अर घोन के ऊपर ॥ धीर
 साबत सुरवीर छत्री करं रहं छं ॥ एक दिन भादवा को मनो छं ॥ दिन की अनेनी बपर जी
 गोवं विराज्या छ ॥ अर मेह की वुद पडं छी ॥ अर कुवर जी दोरी पह्यो ॥ दोहा—

भादवा मास सुहावणी ॥ बरपत मधुरी घुद ॥

पेलण दिन सिकार री ॥ देषण वाग नुगध ॥ १ ॥

मध्य—

॥ दोहा ॥

फासा तोय मनायस्या म्हारी चाह्यो साऊ ॥
 जी जीतुहु पीवतु तो परिज्यो पंद्रापाय ॥ ४ ॥
 जदि पद्राहो पड्यो जदि सावलिंग्या मन मं रानी दूई
 जदि भुपाल दोह्यो पट्यो ॥

॥ दोहा ॥

फासा हाथी दात का ॥ पडिज्यो पुरादन ॥
 वाजी साह कवार की ॥ मुनं प्रायं ऊर ॥ ५ ॥

जदि दसकोई पड्यो नही ॥ छं तोन बानी पटपा ॥ उरि मुपाल बहो पानी तो म्हावं
 कोई प्रावं नही ॥ जदिसुजाणी फासा हाथ मं कर दोहो बह्यो ॥

॥ दोहा ॥

नारि जगोल्हावाक हाथ छीं चतुर सुजाण ॥
जो जीनें सा दक वारिया तो पटिज्यो सत्रादाव ॥ ६ ॥

श्रंत—

राजा सांहि सब बँठिकर ॥ जुग में करी जगोत्त ॥
म्हाकौ थाकौ बस नहीं ॥ लिपी दीनी जगदीस ॥७६॥
परसपरा कवि सो कही ॥ कविन द्विचारि विचारि ॥
घाटि वाटि समझू नहीं ॥ लीजो सुधारि सुधारि ॥७७॥
रम की बात सुप्यारक ॥ रीकं चतुरही ॥
सजन पार्व सुपक ॥ कर्प सद्गुही ॥ सुरा हधीवात क सुघड़ जीय भावही ॥
परिहामिभि बँठे सब पासक ॥ रम ऊपजावही ॥७८॥

॥ चद्रायण ॥

पँहेला गुण सीछं सुणं ॥ साईं नर चतुर सुजाण ॥
सुरसंण गुण परघट कौयो ॥ पायो दान सनमान ॥७९॥

॥ दोहा ॥

वातिक अजाण ॥ क्षुद्र मूप कं न दीजं हाथ ॥ चेत के रापो वीर ॥ कागद
को काम है ॥ जल तेल दीपक तें ॥ कसारी को रापो उर ॥ रंनि छौंसि हियें माहि ॥ अंकुस
आठो जाम है ममन्नि सायि पटिवे को ॥ रच्यो है सिगाररस ॥ हासो कौन काम ॥ ईह लागं
ग्रय दाम है ॥ वाचिवे उतारिवे को ॥ कौजियें न नाही ॥ आट मन भारी पं विचारि लेहु ॥
जानं सीताराम है ॥

ईनी श्री नदंविष्ठ सायलिंग्या को वार्ता संपुरण शुभमस्तु समत १८२६ मितो थावण
वदी ११ मनिजासरे लिखित लाला सिरवार गिंध पठनार्थं शुभसमस ॥

विषय—इसमें कुंवर सदैवच्छ और मावलिंग्यारी की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—इस ग्रंथ के रचयिता का नाम सूरसेन है, पर उन्होंने अपना कोई परि-
चय नहीं दिया है ।

ग्रंथ बृहद् हस्तलेख में है जिसमें निम्नलिखित ग्रंथ मनलित हैं —

१. रमराणाट्ट शाहजादा व छवीनी भठियारी और विचित्र कुंवर का किस्सा ।
२. कुंवर नदयच्छ सायलिंग्यारी वार्ता—सूरसेन वृत ।
३. छत्र मुकुट तथा रानी चंद्र किंगन की कथा ।
४. चौर त्रिनामिणी—उदयवृत ।
५. प्रतीन परीक्षा—दानकृष्ण वृत ।
६. विग्द मंत्रगी—नददाम जी वृत ।
७. मनेह नीला—रमितराय वृत ।
८. दान नीला—रामकृष्ण वृत ।
९. अमरगीत—नदप्राम जी वृत ।

प्रस्तुत ग्रंथ में निर्दिष्ट म० १८२६ दिया है, पर अन्य ग्रंथ १९०५-१९०८ तक के
दिने हुए हैं । इस कारण म० १८२६ मभवत् उग मन प्रति का समय है, जिसकी यह स्वयं प्रति-
निधि है ।

संख्या ४६६. रामायण, रचयिता—मेघक मुष्कवि, नागज—देवी, पद—३१
आकार—६ × ५^३ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (घनपृष्ठ)—१६८. प्र
रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकान—म० १८६३ वि०, प्राप्तिस्थान—
पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह ११६।५५ वर्गता), काशी नागरीप्रचारिणी मण, बनारस ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ रामचंद्र जन्म लिप्यते ॥

॥ दोहा ॥

एक सम दसरथन गुर पुष्टं ग्रह घ्राई ।
कहि वात गुर सी यहै वीन सचतीन गुहाई ॥
गुर सनकादिक सी कहौ राज अमुद्रक जाई ।
सनकादिक नै या कही सींगी रोप ग्रह जाई ॥
गुर राजा फौ लं चलं कौमल्या लं माप ।
सींगी रोपकं ग्रह गये रोप आदर करी तय ॥ ३ ॥

मध्य—यही कथा श्रीकृष्ण सी कहै नाग फारि जोरी ।
यही कथा कहीवो करं सुर तेनीस करोरी ॥१२०॥
यही कथा जसवत सी "सेवक सुकवि" यपानी ।
यह संप्रत श्री भागवत यही वेद में घानी ॥१२१॥

अंत—इहि वीधी आप पधारए दुडुमी देव घजाई ।
मई लोक उछहै कीयो सेवक सुजस पदाई ॥
रामकथा वाचं चुनै हीरदं ध्यान जिय रादि ।
ताकी मैं ऐसं करो जाका धुवसे माषी ॥१८॥
यह रामाईनी के चुनै होत दुधी परधान ।
पल पल मैं सेवक सुफवी दुप दालीद्र वी नाम ॥१९॥
च्यारी वेद व्याकरण नव अमर करत प्ररमान ।
सचती है हीगे धनी धनी यपानीधान ॥२१॥

इति श्री रामायण संपूर्ण ॥ श्री सवत १८६३ मानी आषाढ वदी ३० दुधनामने गोप
गोर्वांदराम आप हेतु शुभमस्तु कल्यानमस्तु ।

विषय—रामायण की कथा सक्षेप में वर्णन की गई है ।

संख्या ४६७. वानी, रचयिता—सेवा (मेवादाग नभवन), ताग—देवी पद—३
आकार—७^३ × ४^३ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (घनपृष्ठ)—३८, प्र
रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी मण, बनारस ।

आदि—.....

जव जानेउ सदगुर की घानी । तय मय निपुहि गोपद जानी ॥
सयतें परे भरे सव माही । जिमि देपिय सिय की परदारी ॥
इच्छा जीव अंत है भाई । सापुहि साह गो सापु सपर ॥
सव तन धारि मिलेउ मानुप तन । नारि पिपारि सुधारि धाम धर ॥

॥ छंद ॥

धन धाम काम सुधारि करते दिपम निमि दू पारि ।
भव भ्रम विमोह पचउ ज्यपत ताग तापत सारि ।
कहूं देव पितर यकादती दत धमं तीरय मो करि ।
"सेवा" भइ सति हल जिय वी सप सारत निमि करि ॥

अंत—मं निज भाव पुकारे फहउ । जेहि प्रकार तें डोलत रहऊं ।
जंमे नीर नहज स्वर धारा । नीर उलटि तहं दीपक वारा ॥
तंमं दीप सव्य सव सोई । जन सेवा दूजो नहि कोई ॥
जिमि कंचन तन चहु चहु नामा । “जन सेवा”, प्रभु पूरणरामा ॥

॥ दोहा ॥

यह श्रव चरितहि सुजन जन सुनहु सहित अनुराग ।
जेहि विधि जनमेउ जीव जंहु तह तस कहउ सोभाग ॥
जयते जनमेउ आइकं तवते सव गुन सोप ।
सेवा अमित भाति जइ समुझेउ गुनेउ न दीप ॥

:०:

:०:

:०:

—अपूर्ण

विषय—निरगुन सिद्धातानुसार जानोपदेज ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अपूर्ण है । केवल तीन पत्रे उपलब्ध है । रचनाकाल और निपि-
काल अज्ञात है ।

संख्या ४६८क. रघुनाथ अलंकार, रचयिता—मेवादास, कागज—देशी, पत्र—५३,
आकार—३^३/_४ × ५^३/_४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—५६०, पूर्ण,
रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—म० १८४० वि०, निपिकाकाल—म० १८४५
वि०, प्राप्तिस্থान—आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक मंत्रह, ९१।५५ बस्ता), नागरीप्रचारिणी
महा, काशी ।

आदि—

श्री अलक्ष्मी लाल जुगल चरननि चितु धरिये ।
होतु बुधी प्रकाम चरित रघुवर को करिये ॥
मनुबंधीन फल देत सकल सतप—
नमवे ॥ केवल प्रभु को सुनानु किमदरि हेरत ।
रछ्या करत सेवदाम छवि मधुरि नैननि सो नाई ने हेरत ॥

॥ दोहा ॥

श्री अक्षयेने लाल के जुगल चरन करि पीत ।
“मेवदाम (? मेवादास)” बरननु करी अलंकार की रिति ॥ २ ॥
श्री रघुवर को नमयह जनकनुता धरि ध्यान ।
अलंकार जानिय मरम होइ हृदे में श्रान ॥ ३ ॥
अठारइ सं चलिम सो नवन मरम वधान ।
पीषानाम यदि मज्जम वार भोम मुन जान ॥ ४ ॥

:०:

:०:

:०:

कटि निरंग सुंदर धनप करन मनोहर तिर ।
सो मन यो पुरन ररी रामचंद रघुधिर ॥

अंत—

॥ मोरठा ॥

वाय ननय धनिमान मनन की रछ्या करन ।
करम निरंतर ध्यान मोनापति श्रीराम को ॥२००॥

॥ कवित्तु ॥

कचन सौ गात मानो उदित प्रभात भान अतिही चपन चाण सुधि के मुग्धीन है ।
पिंगासन नैन और लालही मुपारविद नलक लागुट वर उज्ज्वल मो हीन है ।
अतिही प्रचंड वेग मनहू सौ कोटि गुन अजनी मुमातु मुचि पीनामो मर्मन है ।
"सेवादास" राम की चरित जहा राजत है रछा ही परत हनुमन छरी वीर है ॥
इति श्री रघुनाथ अलंकार सपुरन सुध ॥

॥ टपय ॥

धनपवान असि चर्म कमल अगुरीन अगुठी ।
सारग सुधी कठिन कमठ सरद वर ललित अगुठी ।
हरित चद्र अति तेज फुलग असुनहि कचन नति ।
नययुग चुच कपोत धार स्याम ही मुज मो मुचि ।
पुगंगसग सीपरज हृदय वामे केमन्नगन ।
रहत सदा रघुवीर कर सेवादास तापि कं मगन ॥
रामदास पोथी लीपि मन भं अति सुपपाय ॥

विषय—अलंकारो का वर्णन ।

रचनाकाल

१८ ४०

अठारहसै चालीस सौ संवत सरस पयान ।
पौषामास वदि सप्तमं वार भौम सुभ जान ॥

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल स० १८४० है । लिपिकाल अन्य ग्रथ 'रत्न टपय' के प्रा. २२ पर, जो इस ग्रथ के साथ एक ही हरतलेख में है, स० १८४५ है ।

प्रस्तुत ग्रथ रचयिता के निम्नलिखित अन्य ग्रथो के साथ एक ही हस्तलेख में है —

- १ गीता माहात्म्य—सेवादास
- २ रघुनाथ अलंकार—सेवादास
- ३ अलवेले लाल जू को नखसाख—सेवादास
- ४ अलवेले लाल जू की छप्पय—सेवादास
- ५ विना नाम का एक ग्रथ—सेवादास
- ६ रसदर्पण—सेवादास

हस्तलेख अत्यंत अशुद्ध लिखा है ।

सख्या ४६८ख. अलवेलेलाल जी को नवमिष, रचयिता—सेवादास, पानव—सेवादास
पत्र—२१, आकार—७^३/_४ × ५^३/_४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१३, पिंगारा (पत्रांतरी)—
२२२, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिवाक्य—न० १८२५ दि०, प्रा. २५—
आर्यभाषा पुस्तकालय (याज्ञिक संग्रह, १९१५ वरता), नागरीप्रचारिणी मंडल, नागरी ।

आदि—श्री रामाय नमः ॥ ग्रथ अलवेले लाल जू की नवमिष धर्मेन ॥

॥ शय तरवा वरनन ॥

॥ कवित्तु ॥

सौनी सौ प्रकास कंधो उदित दिवाकर की किरन उजास ताम गालि ने मे के ।
मानिक मयूष कंधो मंगल सरप रप उज्जत कल्प कं सलाम हस जेने के ।
तामरस रूप इद्रवधु के वरन देषी सेवादास ध्यान धरि सुदर नदेने के ।
कोमल अमल लाल पल्लव रताल जाल छविनि के ताल ताल वरन हसदे (नि) के ॥ १ ॥

श्रुत—

॥ कवित्त श्रीर ॥

धरिये गुन सुंदर रूप महा लपिये छवि नैननि की भरिये ।
 भरिये प्रभनाम सदा मन मैं छिन मैं भवसागर की तरिये ।
 तरिये वर पावन प्रेम हिये निसिवासर नम मुदा करिये ।
 करिये सेवादास निरंतर सो श्रलबेले(को)ध्यान सदा धरिये ॥५२॥

इति श्री श्रलबेले लाल जू की नय रूप वर्ननं संपुरनं सुभम् ॥३४॥

विषय—श्रलबेले लाल जू के नयशिर का वर्णन ।

संत्या ४६६. नलपुराण या नल दमयती चरित, रचयिता—सेवाराभ, स्थान—वेरी
 नगर, वागज—देवी, पत्र—५७, आकार—७ १/२ × ५ ३/४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परि-
 माण (अनुष्टुप्)—१२१२, पूर्ण, रूप—नया, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिका—म० १८५३
 वि०, प्राप्तस्थान—आर्येभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह), काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ नल पुराण लिप्यते ॥ श्री कृष्ण उवाच—

॥ चौपाई ॥

हो नृप गणपति पूजन कीज	श्रिको जीति परम सुप लीज ।
सुनी एक अतिहास भुवपाला	है वन में तुमको सुप शाला ॥ १ ॥
मतयुग आदि नृपति नल भयो	जानं पौहांसी को सुप दयो ।
सुत समान छिति पालन कीनों	मन चाछित दीनन की दीनों ॥ २ ॥
हंस एक अति चतुर सयानों	मान सरोवर ते जु उडानों ।
पीत धरन फंचन सों लसै	श्रुति सुन्नति वानो उर वसै ॥ ३ ॥
छिति धारीनि के दरसन करै	निजु आनंद हिये मैं भरै ।
दछिन देस विचित्रपुर ग्राम	सिध घोप नृप नाम सुनांम ॥ ४ ॥
ता तनया दमयती जानों	सदल रूप की रास वषानी ।
दस सहस्र जवती संग रहै	मधुरे दचन मनोहर केहै ॥ ५ ॥
एक जुतिया की कनि जु पटी	दिन प्रति सुधि वृद्धि अति टटी ।
चिन्न स्वस्था नाम है जाकी	रहै ध्यान पढियै मैं ताकी ॥ ६ ॥
राजसुता की प्राण पियारी	छिनक एक निजु करै न न्यारी ।
एक सम दमयती वाला	छडी चिन्नसारी सुभ काला ॥ ७ ॥

मध्य—

संध्या करि पिय आवत देये	पूरण मिध लोक मैं पेये ।
निपट आइ रानी सी कही	कयो सुंदरि व्याकुल हूँ गई ॥८०॥
कहि कहि कहा गयो निजु तेरो	लपिये व्याकुल ताकी फेरी ।
अगुरो नय सो मही विदारघो	काकी ध्यान हिये मे धारघो ॥८१॥
गव मरीर की सुधि बिसराई	रुंधित कंठ कही जाई ।
छुटै केस अलक मुण रमें	नागिनि सी आनन पै घूमै ॥८२॥
सो हूँ सो निजु काहै समझाओ	कयो वन मान्क महा दुप पाओ ।
तुमता ही तिय चतुर सयानो	नल के राजा की निजु रानी ॥८३॥

॥ दमयती वा० ॥

सुनो कय अथ कहुँ न जाई छुछा नगी तामो न बगई ।
 दोनों भाग उदर धरि लीने पाटे कंध जानि मे कीने ॥८४॥

॥ दोहा ॥

तासों लज्जित हों भई नरवगीम मुनि नेहू ।
हमकों हिये विचारि के ब्राम जानि के देहू ॥८५॥

श्रंत—

ताकी ध्यान धरो तुम राई श्रंमे महा परम गुणदाई ।
माघ चतुर्थी संकट हरनी जानि महोपति वेदनि वरनी ॥४१॥
वृन् की तेज होइगी तन में अर्जुन मिले आइके वन में ।
राज हस्तनापुर की जितनों श्रंत परताप पाइहो नितनी ॥४२॥
गणपति कथा सुन सत सोई ताकी मन वाछित फल होई ।
वृत् के दिन मन साधन करं क्रिया महित निश्चै उर धरं ॥४३॥
ते जन सदां सदा सुष पावं निज गणपति के दान करावें ।
हंसदूत की काव्य लपि भाई सेवागम वहै गमनाई ॥४४॥
जो जन गुण गरुम के गामे नवनागर के दुःख नगामे ।
तितिकी उत्तिम जानीं श्रग जो गणपति के मुने प्रमन ॥४५॥

॥ दोहा ॥

वेरी नगर सुहामनी श्रोपति की विश्राम ।
सेवाराम रहै जहाँ जप गजानन नाम ॥४६॥

इति श्री गणेशखंडे श्री कृष्ण युद्धिष्ठिर तवादे कवि सेवागम धृते नल दमयंती चरिते
नाम पंचमोऽध्यायः ५ श्रीररतु कल्याणमस्तु ॥

विषय—इस ग्रथ में पांच अध्याय हैं जिनमें नल दमयंती चरित्र वर्णित है । अध्याय
इस प्रकार है —

प्रथम अध्याय	पत्र १-१०	छंद १२५
द्वितीय अध्याय	,, ११-२०	,, १३३
तृतीय अध्याय	,, २०-४४	,, २४६
चतुर्थ अध्याय	,, ४४-५३	,, १३४
पंचम अध्याय	,, ५३-५७	,, ३६

संख्या ४७०. रमनागर, रचयिता—संदपहार, वागज—देनी, पत्र—३१ पत्रा—
१०११ × ६१६ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८६६. पत्र—
प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—म० १६१२ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीराज नगरी—
दुबे, ग्राम—वीरपुर, पोस्ट—हडिया, जिला—हनाहा।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ ग्रथ संदपहार जंमो प्रति देवा तंती निधिर्न संद पट्टमर
सुत विरचिते ॥

ग्रथ जसद राम सोधन विधि

॥ चौपाई ॥

षाषर धातु कही सुधनी । जंसे रहिगे परिले मुनी ।
हीरा की मथि काटे माह । फिर सोरे सात दिन माह ॥
वालक पूतनाह सोटाये । सात दिवसनी अग्नि पत्रये ॥
सोनी रुपो तामो लोहा । सोधन भारी एक दिधि होहा ॥

श्रंत—

अथ मुनु देव दोष की वाता । कबहू सुष नही पावै गाता ॥

इति श्री संदपहार संद अहमद जा सुत विरचिते समाप्त. जैसी प्रति देवा तंसी सिवा भक्त
बहुत है अथ मे जिला फतेहपुर प्रगना हस्त ग्राम भोजे कासिमपूर अस्थान कटरा पुस्तक लिखि
बच्चालाल बनिया जियालाल यी वेटा कटरा के इति श्री माघ मासे सुषल पक्षे तिथि द्वितिया वार
शनिश्चर संघत् १९१२ ॥

विषय—धातु मारने की विधियों का वर्णन ।

संख्या ४७१क शृंगार विलास, रचयिता—सोमनाथ (शशिनाथ), नागज—देशी,
पत्र—२२, आकार—८ १/२ × ६ १/२ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—४६५
पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राकृतस्थान—प्रायं भा. पा पुस्तकालय (याज्ञिक सभण)
काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वागगमी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

उदय दिवाकर रग अग आभा वर धारिनि ।
त्रिनयनि चंद्र लिलार ईश अरधंग विहारिनि ।
सिध वाहनी सिद्धि चारि भुज आयुध मंडिनि ।
जुगिनि मंडल संग चड दानचदल ँरिनि ।
यह बुद्धि वृद्धि बरदाइनी मोहनि सुरनर मुनि मननि ।
हूजै सहाइ "सशिनाथ" चो जय जय सिधुरमुष जननि ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

सुमुष सिद्धिधर बुद्धिवर गुनमंदिर सुभदाइ ।
सोभनाथ को होउ अथ सिधुरवदन सहाइ ॥
कविनि बनाए अंथ यह रस के सहित हुलास ।
छाया बाधि सु हो रचतु यह सिंगार विलास ॥ ३ ॥
रस को मूल भाव पहिचानी । ताको लछन यह उर आनी ॥
चित्त वृत्ति ही लो ठहराई । भाव वासना रूप बताई ॥ ४ ॥

श्रंत—अथ मध्यमालछनं

हित अनहित जोकरै तिय पति की रीति समान ।
ताहि मध्यमा नारि कहि बरनत सकल गुजान ॥१८॥

॥ यथा ॥

धरमाने गात अंगरात उठि आए प्रात जोति मुष चद की प्रगट पतरानी री ।
बरि.....

॥ अर्थकच ॥

मान करिबे की तुम सोष मिषवति आनि वामो कहै मान कहि मान हरी काको छौंन ।
हो तो ए चचाउ कष्ट जानति न एको तुम अपनी टिटाई धरि रायो अपनेई भौंन ।
सोमनाथ प्यारे सो वियाग ही की बात बही दीमति मयानी ययो अयानी होति मही भौंन ।
छिन बिना देये हरि हरे सो गहन प्रात नोहनि मरोरिक घरी लो एठि बँट कोंन ॥१९॥

इति श्री अथ सोमनाथ विरचिते सिंगार विलासे ॥ संजोग सिंगारे मुग्धादि स्वाधीन-
पतिशरि नाइया वर्ननं नाम षष्टयोगनाम ॥ ६ ॥ ६ वृदि

त्रिषय—नायिका भेद वर्णन ।

ग्रथ में 'उल्लास' नाम से छह अध्याय हैं —

१ प्रथमोल्लास—मंगलाचरण, ग्रथ रचना का कारण, रम, भार, अनुभार आदि वर्णन—पत्र १ से ३ तक ।

२ द्वितीयोल्लास—रम लक्षण, उनके रस तथा ग्वामी आदि का वर्णन—पत्र ३ से ५ तक ।

३. तृतीयोल्लास—शृंगाररस वर्णन, उनके अनगन नायिका तथा ग्वामी, परकीया और सामान्या आदि उनके भेदों का वर्णन । स्वकीया के भेदोपभेदों के लक्षण और उदाहरण—पत्र ३ से ६ तक ।

४ चतुर्थोल्लास—परकीया तथा सामान्या के भेदोपभेद, लक्षण और उदाहरण—पत्र ६ से ११ तक ।

५ पंचमोल्लास—ग्रन्थ मर्मोंग दुःखिना, गविता और मानवती वर्णन—पत्र ११ से १२ तक ।

६ षष्ठोल्लास—स्वाधीन पत्तिकादि दश नायिका (स्वाधीन पतिना, गविता, कर्-हतरिता, विप्रलब्धा, उत्कठिता, वामकमज्जा, अभिगारिका, प्रोषित पतिना, प्रसन्नपतिना और आगमिष्यत्पत्तिका)—वर्णन—१२ से २२ तक ।

संख्या ४७१४. प्रेम पञ्चीमी, रचयिता—नामनाथ "गमिनाथ", वागज—देवी, पत्र—२, आकार—७ $\frac{३}{४}$ × १० $\frac{३}{४}$ इंच, पन्कि (प्रतिमूठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—आयभाषा पुस्तकालय (दार्जिलिंग सग्रह), काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—॥ श्री राम जी ॥

॥ दोहा ॥

मंगलमूरती बीघन हर सुंदर दिभूषन पाल ।
 पेट प्रेम समुद के जय जय श्री नंदलाल ॥ १ ॥
 क्या किति तकसोर तुसाडो नही मुपउ दिपलायं है ।
 राति दिहा विनु तडी चरचा मुकन और न भायं है ॥
 वेदरदी महवुव गोर दे बदी जरदगी करदा है ।
 "सोमनाथ" नेही सँ कंसा दील अदरदा परदा है ॥ २ ॥
 वे तुम सँ महवुव गोवोदे नंनो साठं उरन्ने है ।
 कोन सकं सुरन्नाय इन्होनु और सँ नही मुरनं है ॥
 वेदरदी पं है चाव दरदनु भला दीया तं अरदा है ।
 "सोमनाथ" नेही सँ कंसा दील अदरदा परदा है ॥ ३ ॥

अंत—तीरों से तिरों नंनोनु क्या यह प्याल सोपाया है ।
 नही मान दे आन हठीले मंडा चीत चुराया है ॥
 तुसी दरस के फदा मंनु नाही अमल उतरदा है ।
 "सोमनाथ" नेही सँ कंसा दील अदरदा परदा है ॥
 काम नही यह सयदा कोइ लि निरप्यगै टाटा है ।
 साहिव दे दरसन वा दरगन नही टो दा घाटा है ॥
 कहि "ससिनाथ" सुनो वेदाए नहं चं दिलदा माटा है ।
 नही किसोदा आठा तींभी इसक सेहदा बाटा है ॥ ६ ॥
 जे पासे महवुव तीन्होदी गतीयो बजोन सगद है ।
 कहै "ससिनाथ" अनोयो आयं देयं सहित उटाइ है ।

करदें अदा सदा ही आपना दरद प्रकाश नाही हे ।
बाहर वे परवाही दील मं दीलवर स गलवाही है ॥२७॥

॥ दोहा ॥

पञ्चीमा यह प्रेम को सुन सुप पाव मीत्र ।
"सोमनाथ" वदन रचो नंद बसोर नीमत्त ॥२८॥

इति श्री प्रेम पचीमा संपूर्ण ॥ लीपतं लाला सीरदार सी लीपत बीनाया घीत नं
संपेठ कं

विषय—श्रीकृष्ण-भक्ति वर्गान ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनावान नहीं दिया है । लिपिकान, कृत ग्रन्थ गय गुणपति मिश्र कृत
'दुर्गा भक्ति चद्रिका' के आधारे पर मन्त्र १८८० है । प्रस्तुत गय एक बड़े आकार के हस्तलेख में
है, जिसमें रामचन्द्रिका—नेत्रव कृत, विजय चितान—गणेश मिश्र कृत, दुर्गाभक्ति चद्रिका—
गुणपति मिश्र कृत है ।

संख्या ४७२. रामअक्षरी, रचयिता—श्यामीदाम, पत्र—३, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—
१७, पूर्ण, रूप—अच्छा, पद्य, विधि—नागरी, प्राप्तिस्थान—कु० हाकिम सिंह, ग्राम—राजुराहा,
तहसील—रामनगर, राज्य—छत्तरपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः अथ लिप्यते राम अक्षरी ।

॥ दोहा ॥

चरन गही गननाथ के विनय करी कर जोर ।
मोहों ते अनाथ कं तुक अछिर देव जोर ॥
श्री श्रीपत तुमरो तुम्हें मुमरो गुरु गनेस ।
राम अछरी उच्चरो पूजी देव महेस ॥

मध्य—काम परं वीरत तव मन मे पछताइ ॥
येये येक और सुनियत सवेरे रघुपति चरत अपार ।
कलप कलप की है कथा राम नाम निजसार ॥

अत—.....को सेना पत रघुवीर ।
हनुमत गये पताल को वे त्याये दोई धीर ॥

.....
.....
गम अक्षरी द्वज कही हू भगता श्यामीदाम ।
चित्र सुनं इक मुप्य की कष्ट न व्यापत ताम ॥

इति श्री राम अक्षरी ममाप्त मुभन्तु' मगल ददात ३५ ॥

विषय—श्रीकृष्ण-भक्ति वर्गान के अन्तर्गत अक्षर पर दोहा रचकर रामचरितमानस की संक्षिप्त
कथा का वर्णन किया गया है ।

संख्या ४७३. गण मर्माणं रागमाता, रचयिता—श्यामी कान्तिर, कागज—देही,
पत्र—४३, आकार—८ x ६ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अक्षर) —६०१,
पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, विधि—नागरी, विधिस्थान—म० १६२० वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीगुरु
५० तहसील राजनेगी, मनेजर, अमेठी ग०, मुनवानपुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

॥ दोहा ॥

धुनि विसेय सुर वरण सो होइ विनूषित देह ।
जनमन को मोहित करे वहै राग रम गेह ॥ १ ॥

॥ कुलपपा छद ॥

रागांग भाख्यं गती जे कृपाग इनको वही रूप चौथो उपाग ॥ २ ॥

॥ तम्य लक्षण दोहा ॥

रागछाह को अनुसरं सो ऋहियत रागाग ।
चित को चोरं मुनत ही है अनग को प्राग ॥ ३ ॥
करणा श्री अत्साह पुनि ताते उपजत प्राय ।
तासो कहत कृपाग पुनि सब कवि काविद नाय ॥ ४ ॥
कछुवो छाया अनुसरं ताहि उपाग विचारि ।
कहत सर्व काडारणा सो जिय में श्रवधारि ॥ ५ ॥
:०: :०: :०:

॥ राग सट्या दोहा ॥

बीस राग जे मुख्य है तिन गनि ताहु अनि ॥
पहिले श्री रागाह कहू इजे नए को मानि ॥ १२ ॥

अत—

॥ राग सावत दोहा ॥

नट केदारो कान्हूरो कामोदिनि सुरश्याम ॥
अंस न्यास ग्रह ये सर्व उपजं सावत नाम ॥ ११ ॥

॥ अथ ॥ सीमेस्वर हनुमत भरत इति त्रिविगत सावंत नाम इति श्री स्वामी पारसिक
विरचितायां राग सकीर्णरागमाला सपूर्णम् शुभ सवत् १६२० राम राम राम ॥

विषय—रागरागिनियो के भेद और उनके उदाहरणों का वर्णन । बंगाली, भारतीय
आदि प्रांत विशेष की रागिनियो का भी वर्णन दिया गया है ।

संख्या ४७४. पारासरी भाषा (उद्ददायप्रदीप). रचयिता—हनुमत त्रि-
देशी, पद—७, आकार—४४ × २४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (प्रति-
६८, पूर्ण, रूप—नया, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—१६३५ वि०, लिपि—
१६३५ वि०, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी मंडल (वाराणसी)
काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ पारासरी भाषा लीख्यते दोहा च छ ॥

॥ दोहा ॥

गुरु गणेश गौरी गिरा गोवर्द्धन गोपाल ॥
सुमर सुकवि हनुमत पद संकर दीनदयाल ॥ १ ॥
उपनीसद सिद्धांत में प्रतिपालक हृद सुदि ॥
अधर अरुण बीणा धरं सुमिरं दायनि वृदि ॥ २ ॥
प्रथम ग्रहन को कीजियं कारक मारव जान ॥
कहत सुकवि हनुमत है पारासरी प्रमाण ॥ ३ ॥
ताको आश्रय लेय के रच्यो ग्रंथ उद्ददाय ॥
ताकू भाषा में कहै कवि हनुमत बनार ॥ ४ ॥

तामु जीतनी कविन कूं हयं होय मन मांय ॥
 कृत मुग्धि हनुमत ह्य भोन परिधम नाय ॥ ५ ॥
 दमा जन्म नशत्र तं फल कह्य की रीत ॥
 यानु प्रथ में कृत हे जान लेह करि प्रीत ॥ ६ ॥
 भाजन को जु विचार फल अयर सास्त्र तं जान ॥
 कहि विनेन नंजा मुनो याके मत परवान ॥ ७ ॥

मन्त्र—जो वकील के नाय ते दमन जवन को ईस ॥
 करकही संबंध तो जान जोग अयनीस ॥३८॥
 दमन नवम के नाय में असबंध शुभ जेऊ ॥
 तिनके अतर में करे राज योग कछु तेऊ ॥३९॥
 काण्क तं संबंध युत पापी ग्रह हू कोय ॥
 तामे काण्क की दशा सोहू कारक होय ॥४०॥

अंन—प्रथ कठन अक्षर अरथ कठन अनेक प्रकार ॥
 कहन मुग्धि हनुमत सो लहत कवन विधि पार ॥८२॥
 यह विचार कविराज सो शमा करो अपराध ॥
 परमारथ पय जानके करीह प्रससा साध ॥८३॥
 इती श्री पारामरी मत उट्टदाय समग्र ॥
 वरना कवि हनुमत नं विप्र निवासी नग्र ॥८५॥
 संवत मतछर नाम है गुप्तोसं पंतीम ॥
 कागुण सुक्ला तीज रवि वामर कवि को ईस ॥८६॥

इति श्री पारामरी प्रथ सपूर्ण ॥

विषय—इह मन्त्र के पागमरी (फातिन ज्योतिष) का भाषानुवाद है। इसमें ग्रहदशा आदि का विचार किया गया है।

संख्या ४७५. नन्द लीलामृत पञ्चीमी (लावनी) रचयिता—हनूमहत कवि श्रीरामनाथयग (गमगुनाई, गुमाई गम श्रीर द्विज गम गुमाई), निवागस्थान—गमनारायण का गन्नाहुड (मन्त्र), जागज—देवी, पत्र—१५, आकार—१० × ६ १/२ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—३१६, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, निधि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आयंभापा पुस्तकालय (याज्ञिक नग्रह), नागरीप्रचारिणी मभा, काशी।

आदि—प्रथ मनेह लीलामृत प्रेम पञ्चीमी लिख्ये ॥ श्री राम जी ॥

॥ लामनी चाल सूधी ठडी रंगत ॥

पद मुमर मारदा जेप महेम मनाऊँ । गणनायक भव भय हरण सरण चित लाऊँ ॥
 श्री गुरु चरण कमल मारद नकल अघहारी । हे मजुल मंगल मूल पाप पग तारी ॥
 नय मन गण जोनि विचित्र विविध हितकारी । उर धरत ध्यान हुय ज्ञान कामना सारी ॥
 ताई रज की विगवाम धारना ध्याऊँ । गण नायक ॥
 निधि नागदादि मुरुदेव ध्यान मनकादी । कस्यप दुर्वासा गण मरीच अनादी ॥
 कवि वानमीय जे अपर ब्रह्म भगवादी । है वर्तमान हो गये होय जे जादी ॥

मध्य—

भनत मुग्धि "हनुमंत" ममामद भे प्रमन्न पूरण सुप तं ।
 गम गुमाई रहै यह कथा सुनत छूटै दुप तं ॥
 भय ममूद ह्य पार विना अम यह चरित्र जिनने रागी ।
 बुज बनतन को प्रेम बर जान ज्ञान पीको लागी ॥३१॥

बुज बासिन हो सबैत बुजनाय मया नं या प्रवार दिन बाहू कई ।
रुम रुम में गोपिका तानु गिफई देन कई ॥

विषय—उदय और गोपियों का मवाट वगिनत ।

संख्या ४७६क. शिखनख, रचयिता—हनुमान, नागरी—देवी ११—२, काव्य—
१०३ X ७ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—१२, मूल रूप—पुस्तक
पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (आर्य समाज), नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि—अथ कपोल गाठ वरणन

॥ कवित्त ॥

साल दूग मृगन फसाइवे की ओधी कंधी मान तान जगवीन प्राति मानमंड की ।
हनूमान रति के अजर आलवाल कंधी गेहि हेरि मोहि मति तुम कोट की ।
नाह मन चचल अचल करिये के ऐन दीटि गटो वाला नं गिरीग लि उहट की ।
मंद मुसवयात ती लजात प्रत वारिजात मोना वही जग ना रघो न कोर कर की ॥ १॥

मध्य—अथ विभी वरणन कवित्त

कर जोरे किन्नरी तिलोतमा तबोल लीहे और हनुमाननी परत टवि टकी है ।
छंन लं नछन पतिनीहू नचं रभा ठाढी मपर पताकी धारी परपलता की है ।
जमलाना राधिका सी कमला है "हनुमान" कौन है रचना पदेन है की व की है ।
तलातल वितल रसातल महातल की अतल कुतल कीनं परतल ताकी है ॥ १॥

इति हनुमान प्रेम भाये शोभा अंगी अगनाग भूपन धमन कुत विभी छादि छाटीन कृष्ण-
प्रिया के मति अनुरूप शिव नय सम्पूरणम् श्रुम भूयात ॥

विषय—राधा जी के शिष्य नय का दर्शन दिया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—अथ अपूर्ण है । आरभ के २३ छंद नहीं है । अन्ततान कोर निर-
काल अज्ञात है । अथ निम्नलिखित कुछ अन्य ग्रंथों के साथ एक सम्बन्ध में है ।

- १ शिखनख—हनुमान वृत्त
- २ द्रौपदी अष्टक—हनुमान वृत्त
- ३ प्रेम रत्नाकर—देवीदास वृत्त
- ४. राजनीति—देवीदास वृत्त ।

संख्या ४७६ख. द्रौपदी अष्टक, रचयिता—हनुमान, नागरी—देवी ११—२, काव्य—
—१०३ X ७ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप)—१२, मूल रूप—पुस्तक
पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (आर्य समाज), नागरी प्रचारिणी सभा, काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ द्रौपदी अष्टक लिखते ॥

॥ कवित्त ॥

मन कम बचन के देखो नाथ परधर हठगुन ले-नाउ परम परम की ।
हनूमान ततछन घाइ कं सहाइ कीःरी बनि दनि मेटे तं ही सादरे रणन की ।
शोषम करन द्रोन आदि सभा अपित है विसामन छाति छाति छांरी दाम की ।
उतरी उतारे नाहि उतरी दुगामन के पूनरी इच्छ कई दूःखी रणन की ॥ १॥
नगर सुसासन करन कछी द्रौपदी की दीन हूँ दुखारी इक्षण वृत्त लिखी है ।
सारी सारे बिरथ की समानी ताकी सारी मान हारी पुन संदत लगीको सम्यक गरी है ।

हनुमान गुर गुरपति श्रुति गाथो यज धिक् छायो ग्रंथमुत् मतिहारी को ।
तागे री लगेया त्रिपुरारी ताको तागे तव तारी को दिव्या कोन पच भरतारी को ॥२॥

मध्य—

द्रव द्रोन त्यागी ती ता कृपा कृष्ण हनुमान बधिरइ करन रनधीर भो ।
मर भग्ना की तन दीठि भग्ता को तन् वीलत न जाको तीछे उत समीर भो ।
अगला ही जानि पंचि वच त्यायो मभा मान दुमासन चाहे कहा नगम सरीर भो ।
चीर को हरन हार बलधीर रापिहे ती चीर को हरनहार कौन बलभीर को ॥८॥

द्वीपदी अष्टक मंजूरा ॥

विषय—द्वीपदी चीररग्ग का वर्णन ।

संख्या ४७७. विहारी मतनई (टीका), रचयिता—हरजू (जीनपुर), कागज—देशी,
पत्र—१, आकार—१० X ८ इंच. गणितानु (ग्रन्थ) —८३, गणित, रूप—प्राचीन, पद्य,
विधि—नागरी लिपितान—मवन् १६०३ धि०, प्राग्निस्थान—दाशी नागरीप्रचारिणी मभा,
वाग्यमयी ।

आदि—सिंहार ॥ अपने कर मोतिन गुह्यो भयो हरा हर हार ॥२२॥

सुरग मट्टार सीति पग निरपि रही अनपाइ ।

पिय अंगुरिन लाती लये पगी उठी लगि लाइ ॥२३॥

॥ स्वकीया स्वाधीन पतिव्या ॥

रह्यो गुह्यो बेनी लये गुह्ये को त्योनार ।

लागे नीर चुनान जे नीधि गुपाए वार ॥२४॥

॥ स्वकीया प्रोपित पतिव्या ॥

रह्यो ऐत्रि अत न लह्यो अयधि दुमानन वीर ।

आली बाहन विरह ज्यों पचाली को चीर ॥२७॥

हिय श्रीरं सी नई गई गुनत अयधि को नाम ।

दूजे कं टारी पगी वीरी वीरे आम ॥२८॥

॥ परकीया प्रोपित पतिव्या ॥

छनो नेह कागर हिये भई लपाइ न टाक ।

विरह तवे उघरघी गु अय मेहूँ केमो आंक ॥२९॥

अन—प्रनिर्वाचन जेमाहि दुनि दीपति दर्पन धाम ।

गज जग मोतिन को कियो काय बह मनो काम ॥७१२॥

घर घर नुरुकुनि हिदनी देन असीम सराहि ।

पतिनु रापि चादरि चुरी तं गयो जेमाहि ॥७१३॥

मामा मन ममाज की सर्व माहि के नाथ ।

बाहु बनी जेमाहि जू फने निहारे हाथ ॥७१३॥

हृदय पाठ जेमाहि को हरि राधिका प्रगाद ।

बरो विहारी मनगया भरी अनेक मवाद ॥७१५॥

जत्रपि हे मोना धनो मकृताहल में देपि ।

गहे छोर नी छोर ने नरि में होन विनेपि ॥७१६॥

धरो अद्वयम ग्रंथ री नायकादि ग्रन्थार ।

मरुन जीनपुर में बगन "हरजू मुकवि" विचार ॥७१७॥

तरजन द्रुपद ठठि हँ तजि फन फन मुगम ।
ज्यो सुकर रमनीय धन चहन मनान हुगम ॥३१८॥

॥ दोहा ॥

मकल वितिक्रम होइ अर्थ अति गौर ।
राम दत्त के हृकुम मों करो मग्न मय टौर ॥३१९॥

संवत् १६४३..... ।

:०: :०: :०:

विषय—विहारी मतमई की टीका ।

विशेष ज्ञातव्य—अथ अपूर्ण श्रीरघुदित । नमग्न चार पत्रे उपनग्न । स्वनामान
अज्ञात है । लिपिकाल म० २६४३ वि० है ।

संत्या ४७८. भगवत गीता (अनुवाद). रचयिता—हर्षदेव मिश्र निगारभट्ट—
दलीपपुर, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—१३ १/२ × ६ १/२ इंच, पत्र (प्रतिपृष्ठ)—११,
परिमाण (अनुपुष्प)—२२०, छिद्रित, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकार—म०
१६०१ वि०, लिपिकाल—म० १६०१ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीमती नागरीदेवार्जुनी मन्थ,
वाराणसी ।

आदि—

॥ सोरठा ॥

पांडु पुत्र की सयन देष अचारज भीर अति ।
रचो चमू जजयन द्रुपद पुत्र तव मिय अति ॥ ३ ॥

॥ चौपाई ॥

पांडव सयन वीर अति भारी । वड़े धनुधर धान में भारी ॥
अरजुन भीम सुख्य चलवाना । समर अयंभन बान ममाना ॥
सब कर नाम सुनो रिविराई । दूनों दल की अति रविराई ॥
युधुधानादिक जेते वीरा । द्रुपद विराट महारथ धीरा ॥
धृष्टकेतु चैकितानिक वीरा । कागीनाज परम धन वीरा ॥
पुरुजित कुत भोज सुनु भाई । मंथ्य राज नरपुंगु धनाई ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

युधामन्यु विक्रांत तो उन्मोज धनवीर ।
द्रुपदि सुभद्रा तनय जे महारथी बलवीर ॥ ६ ॥

॥ सोरठा ॥

मम सयना के वीर तारि जान् द्विजवर प्रथम ।
मम सयनापति धीर ज्ञान अर्थ ताको प्रथम ।

अंत—

॥ दोहा ॥

मम सयनापति धीर ज्ञान अर्थ ताको प्रथम ॥

अंत—

॥ दोहा ॥

हरि हर गुरु घर अचर जे बहि घरन मिर नाइ ।
भय दुस्तर हरदेव गिरि तेर इत्या मन नाइ ॥

राधाकृष्ण मरोज रज मन मल धोदु ह्योरि ।
शान्त्र रचन का वृद्धि मोहि नाय देह चिते चोरि ॥
पुरदनीप मह वाम वनि पक्ति विश्वेश्वर गेह ।
हृष्ण गीत भाषा रत्नी 'गिरि हृद्देव' करि नेह ॥

इति श्री भगवतगीता रूपनिघण्टु ग्रह विद्यायां योग सास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे हरदेव गिरि परम हंस कृत गीतार्थ भाषा मोक्ष सन्दास योगो नाम अष्टादशोऽध्यायः ॥१८॥

॥ दोहा ॥

चंद्र नभ नव ग्रह मिलि वर्ष मास वंशाप ।
कृष्ण पक्ष एकादशी कृष्ण गीत रचि शाप ॥

॥ दोहा ॥

श्री हनुमंत नृपति रच्यो मुरनरि तट पर ग्राम ।
टीका विद्यो हृद्देव गिरि लिषा दाम विश्राम ॥

सीताराम सीताराम.....

विषय—गीता का हिंदी में पद्यानुवाद ।

रचनाकाल

१ ० ६ १

चंद्र नभ नव ग्रह मिलि वर्ष मास वंशाप ।
कृष्ण पक्ष एकादशी कृष्ण गीत रचि शाप ॥

विशेष ज्ञातव्य—ग्रन्थ गठित है । दो से लेकर मात मर्या तक के श्रीर पंमठ एवं मरमठ मंदिरों के कुल आठ पत्रों उपरन्ध है । प्रस्तुत प्रणि मून प्रति जान पडती है । रचनाकाल श्रीर लिपिकाल दोनों मयन् १९०१ वि० है ।

मर्या ४७६ देवी विलास (दुर्गा-मवाद), रचयिता—हरि आनंद, निवासस्थान—टिवाड़, कागज—देशी, पत्र—४६, आकार—५ ३/४ x ५ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—८८०, अक्षरों, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८४६ वि०, लिपिकाल—स० १८६० तथा १८८७ वि०, प्राणितस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी मभा (याज्ञिक मग्रह), राशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

गनपति गवर्णिपुत्र दुष्ट मोचन ॥
एक रदन गजप्रदन सुलोचन ॥
विघ्न विनाशन मंगल दाइक ॥
संबोदर विघ्नेम विनाइक ॥
अमरण मरण हरण दुष दारिद ॥
ज्ञान वृष्टि कारन जिमि दारिद ॥
हरि आनंद को देयि दानता ॥
गिरिजा मुक्त करि गिरा धीनता ॥

॥ मंत्रया ॥

तू नितुका ते वनावन वय्र मो वय्र लं केरि करं तू न छोटी ॥
तोह को पागन सो करि देत तू पारम तोह हू तो अति पौटी ॥

सौकर में मत मिधु दिपाई चहं प्र मिधु मे मीरन टोटो ॥
तेरो करी जग है जगदंबिके जो धनु मो प्रो मुंदर मो मीरों ॥

मध्य—

॥ भूग प्रयान ॥

नमस्ते महादेवि हे देवि माये, गिमे गारुदं ते नम. मिधु जाये ॥
प्रकृत्ये नमो भद्ररूपे नमन्ते, महाएड रूपे नमन्ते नमन्ते ॥
नमो गोरि ब्रह्माणि नित्ये दुग्णे, नमस्त्वद्विषे चडिने चरुदे ॥
सुखार्थं नमस्तेस्तु करधान देते, नम. निट्टिदे दृष्टिदे भतिगते ॥
नमो भूधराणा प्रनार्थं निरुत्थं, नम नरजायं नमन्तेस्तु क्षिय ॥
नमस्तेस्तु दुर्गे नमो दुर्गपारे, नम पारणे वाप्यंरूपे मुगारे ॥
नम न्याति मूर्धं तथा कालिकार्थं, नमो धूर्जकार्यं जगत्प्रजापत्यं ॥
नमस्तेति सौभ्याति रुद्रादि मूर्धं, नमन्ते जगत्सृष्टि कर्त्यामर्धं ॥

श्रत—

॥ कवित्त ॥

पीकदान नाकी श्री पिनाकी गहे पानदान चरुचा पुगार की चिंचर रचिरो करं ॥
चौरी चार बाहु प सुगध गहे गधवाहु जल प्राटी विधि मो जनेम भविवा करं ॥
ससि गहे छत्र की दिनेश दिति मुषी रायं इतना मगरच रचिरो करं ॥
प्रबिका के द्वार प कुवेर की यही है पाम जाम जाम दीनु के दुग हरिरो करं ॥

इति श्री देवी विलासे कवि हरि प्रानद श्रुते मुख्य संशययोदर प्रदान तयोर्जगोपाम मन्म-
प्तोय प्रथः ॥

२ ६ ८ १

सयत दृग रस वसु सती मधु तम पाप गुवार ।
कुज हरि प्रानद मुकर यह तिचो प्रय करि प्यार ॥

श्रीमान भोपति राजती की पठनार्थं ॥ इति श्री दुर्गा मजदे मंपूर्ण समाप्त निरुच्य
भयानी दास कायस्थ कलि श्रिष्ट सादावाद शुभ स्थान १८७७ भिषी पामाजि मुदी पकरवा ॥१॥
गुरवासरे श्री बलदेव जी मे पूरण भई ॥ श्री बलदेव जी मदा म्हाय ॥

विषय—विभिन्न वृत्तो मे जगदविगा वा यम संगत है ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रथ मे कुल ६३ पत्रे है । परनु चीन में ४६ मे नेवन ३६ मरवा
तक के पत्रे अनुपलब्ध है ।

संख्या ४८०. रम महोदधि, रचयिता—हरिचरण दास ज्ञानानंद कान्ठ—देरी,
पत्र—१०६, आकार—१२ ३/४ × ६ ३/४ रच, पंक्ति (प्रतिपृ ८)—२६, पंक्तिसं (संपूर्ण)—
३७८६, पूरण, रूप—पुराना, पद्य, निधि—नागरी, रचनास्थान—म० १६०२ वि०, सि०कोम—
स० १६४१ वि०, प्राप्तस्थान—दायंभाषा पुस्तकालय (संजित नरह), नागरी, रचयिता—श्री
काशी ।

प्रादि—श्री गोपीवल्लभाय नम रीमदिगत्पिरो ज्यति ॥
॥ प्रथ मंगलापरन ॥

श्री श्री श्री गिरिधर धरन नाहि करो परताम ।
जे श्री बल्लभ मुकुट भनि जवो निररर नाम ॥
श्री माधन प्रिय साहिते श्री निरुत के प्राम ।
मधुरापति राजें सदा श्री गिरिधर गुरा प्राम ॥

श्री विष्णु भुज कटि धरे श्री गोविंद अंगार ।
 द्वारकेन भुज चार पुन वात हृष्ट अयतार ॥
 मोक्षुत्तवति गङ्गी गिरिधर नाग पर धार ।
 बल्लभ मोक्षुत्त नाथ जू मेप्रक जन मुजसार ॥

:०: :०: :०:

मोहि मरन मह अम कही श्री गङ्गिधर लाल ।
 मम चरित्र तू निगि नयं रनि डक ग्रय विनाल ॥११॥
 विनती करि कहें उ गन मं हा जानी नाथ ।
 मुण उगार मम मुण दियो मों कहें कियो सनाय ॥१२॥

मध्य—श्रीमत् गिरिधर लाग जन इहि दिधि पूरन हेत ।
 जिमि पिपीलिका मिधु मे पार इई दिन सेत ॥
 माला मनि कालीलया पाछि भनित सुमेर ।
 मत्र श्री गिरिधर नाम कहि कलिदुष सकल निचेर ॥
 जुगत जुगन अर वेद गुरु तद मिति ग्रथ प्रमान ।
 कहू हमार कहुँ निपक की चक न गर्नाह सुजान ॥

:०: :०: :०:

अंत—मम ऐगुना चित धरत श्री गुर कान विचार ।
 पटय गुनय चित लायक पावन जम विस्तार ॥२१७॥

इति श्रीमद् गिरिधर लालरय लीला रस महोदधे हरिकृष्ण दास विरचिते सप्तम तरंगे
 समाप्त ॥ शुभमस्तु ॥ मिद्धरस्तु ॥

॥ दोहा ॥

७ ० ६ १
 मिधु व्योम ग्रह इंदु कहि सवत यह निग्धार ।
 माम अमाट सु जानिये प्रीयम रितु रविदार ॥

॥ सोरठा ॥

अति नयान यह ग्रथ पढत सुगम समुजत कठिन ।
 श्री बल्लभ कुल पथ देणरायो इहि महें प्रगट ॥ २ ॥
 श्री मद् गिरिधर जू चरित वरन्यो कवि कृष्ण दास ।
 लिख्यो गोविंद प्रसाद करि गुर पद पदुम की आस ॥

:०: :०: :०:

ते ममे वाता जी नाम नमाह रय थायो वीन पार ।
 हरी कृष्ण कीम कहि सके जे अज्ञानंद अपार ॥ ७ ॥

इति श्रीमन् गौरधरायान संपूर्ण ॥ शुभम् । शुभमस्तु ॥ कव्यरामस्तु ॥ हरताक्ष
 नारायण बल्लभ वेद लेखक विजे दुर्गा का ॥ मिति कार्तिक शुद्ध १२वीवार शके १८०६ तार
 नाम संवसरे संवत् १६४१ ॥

विषय—बल्लभ मुन के गुमार्त श्री गिरिधर लाल जी का चरित्र वर्णन ।

रचनावान

७ ० ६ १
 मिधु व्योम ग्रह इंदु कहि मंत्रन् यद् निग्धार ।
 माम अमाट सु जानिये प्रीयम रितु रविदार ॥

संख्या ४८१. काग, रचयिता—द्विज हस्तिचरन, वागज—कामी, १२—१, छात्र—
१२३ १/२ × ४ ३/४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुपृष्ठ)—११, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी मंडल वाराणसी ।

श्रादि—

पिशा दूरि देश मति जाह चरनत निवगन्धे ने हो ।
पैलति रहीउ संग मरिषन के गहद देन कोरे बाने हो ।
पंश्रा में परि पिशा के मनाबो हो पिशा छ दि चने परदेगागन न ॥ १ ॥
तब तब प्रीति कीह लखिंश्रा अथ बश दले त्रिदेमो हो ।
फाटीय चोलिशा जोदन भव भारी हो पिशा यह दुप केने प हो हो ॥ २ ॥
कमकि नूलनी करत जयभी पद्यजनीश्रा नदगार हो ।
तकिशा तिनि तरफ मटगन बच उह छतन फली कमडोमि ॥ ३ ॥
उठो न कागा जाउ उह देणथा पिशा पदवि लं श्रादी हो ।
द्विज हरि चरन शरन शतगुर के हो मेरो वस्त दुरन छान ॥ ४ ॥
॥ काग नगर ॥

गज कामिनि मेज सवारि पिशा पद्यटा द्य के हो ।
पिशा पलटा पर मलत पयोधर हनि हनि ताहि छंडाछ हो ।
लसत लजात पिशा संग दिहमत हो नदनी के बान चाना ॥ १ ॥
चौर चौकसि कमकि हिया पर श्रुति मदनप लगार हो ।
श्रलवेली श्रलसात मदन वसि उहा हनि हनि ताहि छंड ॥ २ ॥
सुहासारी छम घाघरा तपन मरुति छए हो ।
कोण करत हो रज्ज मूल मे हो छदि छ के वृण सुरोरे ॥ ३ ॥
निपट नवान दरद न हरि के वसन छहाए हो ।
द्विज हरिचरन शरन शतगुर के हो । छ जागि के रन गवाए ॥ ४ ॥
दगा दे के पिशा श्राधिराति दिदेम मिछारी जरे हो ॥
—पूरा प्रनिर्वाप

विषय—वियोग शृंगार विषयक रचना ।

विशेष ज्ञातव्य—भजनों की संख्या दो हैं और दोनों की मूल रचना ही गई है । नागरी
श्रीर लिपिकाल अज्ञात है ।

संख्या ४८२ ब्रजलीला, रचयिता—हरिदान, वागज—कामी, १२—१, छात्र—
७ १/२ × ४ ३/४ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुपृष्ठ)—१८, पद्य, लिपि—
शीर्षा, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—प्रायभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी मंडल
(याज्ञिक सग्रह), काशी ।

श्रादि—

श्री हरी गुर को श्रया पाऊ ॥ कुछ बंदरु र बंधु के गह ॥
नंद मंहेरि नदीसुर राज ॥ तिनबं द, उह नाम रं राना ॥
यज में धन्य जसोमति रानी ॥ सुमिरत छे पुरान ददानी ॥
जिनके श्रागं बंधुपन नाथा ॥ मयन सोरं देते नाथा ॥
बंधुंठ म बंधु, राय तभरे ॥ राज पासीन के मग विरं ॥
चरिपरि गाय पतर चरि श्रां ॥ छान गान तो राम दुममं ॥
बाबा नंद विरक बुं श्रां ॥ जब गोपाल पीठे ते दार्य ॥

रञ्जन नील रनीया करि लीयो ॥ ताय मं हेरि गोवन मं दीयो ॥
 कट चादनि मोग हुमानं धरो ॥ दोऊ प्रमन अंती परी ॥
 पंति मोना राज धनी ॥ मय मुषनन की मोभा वनी ॥

मध्य—

जहा ते चली धंहे टोको घाट ॥ नदगाम की गंहे लई बाट ॥
 आटी हे मय नागानि जाई ॥ ये ती भंया फेरि दुहाई ॥
 लदन गाय जनी लटकीरी ॥ धोर, धुमर राति मलारी ॥
 रनभारी पानी पीस ॥ मोछी लेफ लगाय ॥
 गाय गाय के धुंगुरा । चलति वजाय वजाय ॥
 मरे लडखडी ईपटी म ॥ नरी सैनगी करहुला छई ॥
 दरवाजे दोऊ बने ॥ नच गिरी क ताल ॥
 पुजन की शोभा धनी ॥ देशो मं हे रग काल ॥

अंत—

गाठोली और और दरु जप ॥ गिती गिनी न जाय ॥
 वपारा धुवाये पुगरी ॥ मनहु कनिल फन ॥
 मय वजयानी रोरत नये ॥ चली गिर गोवधन की परिकमदन ॥
 द्रज नीना मुन नीयं और गाय ॥ तनको पाप रहन नहि पावे ॥
 भक्ति मुक्ति की कतिर आसा ॥ सदा रहे हरि तिनके पासा ॥
 हरि जो कुड वडी ठकुराई ॥ हरिदान ने लीला गाई ॥
 हरि जो कुड वडी ठकुराई ॥ हरिदास ने लीला गाई ॥

॥ देहा ॥

माम माम पिरद बनाय ॥ गंईया दीनी करि ॥
 हरिदास की मुनी बानती ॥ राधा वर की मया लेउ सम्भारि ॥

इती श्री प्रजलीला स्फुरणम् शुभमस्तु ॥

विषय—श्रीहरण ती प्रज लीलायां का वर्णन ।

मगधा १२३१ गौवर्द्धन लीला, रचयिना—हरिदास (हरिराय जी), कागज—,
 देनी पत्र—१, पत्रिका (प्रतिपत्र)—६२, परिमाण (अनुष्टुप्)—१७०, पूर्ण, रूप—पुराना,
 पत्र, विधि—गुलामी, रचनाकाल—सं १७४० के पूर्व, प्राप्तिस्थान—श्री मन्मथी भडार
 श्री गिजा विभाग, तीरगोवा, हि० प्र० ३६, पु० म० १७ ।

प्रादि—श्री गोपीजन अललाय नमः ॥ श्री द्वारकाधाराय नमः ॥ अथ श्री गोवर्धन
 लीला ॥

॥ राग गोरी ॥

गोवर्धन मोहन नद को तुम पूजो श्री गिरिराज हो ॥ टेका ॥

गोप सवे दीन दाहीने हो काम दिश ही अज नारी ॥

बोन भाती टाडे भये मो वरनत बचन उचारी ॥ १ ॥ हो लीलायत ० ॥

मध्य—

रूपे घेजरन के रना हो ल्यायत करी करी हेन ॥

अन मउन के अतन की हो पनने अनि मुग देत हो ॥ ६० ॥

उपनेदादिन की धर्ना हो मंदर कीनी पानी ॥

मुठी कपुर नारीन की हो जौनमे लोग मुहाती ॥ ६१ ॥

ता श्रागेँ श्रंदर मान की हो ठला पांती छवी देन ॥
ता ढीग पपची पाती की हो कान्ती हरेँ मन लेन ॥१८॥

श्रंत—

तव प्रसन्न हरी हाइकेँ इद्र पटायो देह ॥
जसुमति धाय उछंग लीयेँ मूज चांपनी करी नेह ॥१९॥
गोपी यह छवी देखी केँ हो प्रेम जू उमग्यो भ्रम ॥
पुलकीत गदगद होइ केँ श्रातोँगन मय भ्रम ॥१३५॥
गोवरधन लीला मरम हो पहा लगी बहुँ वनाई ॥
श्री बल्लभ चरन प्रताप तेँ मनि अनुनार ही गाई ॥१३५॥
श्री बल्लभ कृपा करी हो श्री विठ्ठल नीज नाथ ॥
हरी दास कृपाकरी केँ राखे चरनन नाथ हो ॥१३६॥ पूर्ण ॥

विषय—श्रीकृष्ण की गोवर्द्धन लीला का चरंग ।

संख्या ४८३छ. श्री गुगाई जी विठ्ठल नाथ जी की वनयात्रा (म० १६३८जी), मन-
यिता—हरिदास (हरिराय), कागज—देशी, पत्र—५, आकार—५ × ८^१/_४ इंच, पत्र (प्रति-
पृष्ठ)—२२, परिमाण (अनुष्टुप्)—६१, पूर्ण, रूप—माधारग, पत्र, निर्ण—नागरी,
प्राप्तिस्थान—श्री मरस्वती भजार, श्री विद्या विभाग, वाराणसी, हि० च० ३२, पु० म० १६ ।

आदि—॥ श्री मयुरेशो जयति ॥

॥ दोहा ॥

श्रीमद् बल्लभ राय के विठ्ठल नाथ मुनंद ॥
वन यात्रा कीनी सु इन मुनत मिटे कुत्र इंद्र ॥ १ ॥
श्री बल्लभ सु प्रताप तेँ होय संपूर्ण एह ॥
वन यात्रा विठ्ठलेश की गाऊ हिये धरि नेह ॥ २ ॥

॥ राग सोरठि ॥

सोरहसेँ चोतीसेँ संवत जब ॥ भादो यदि हाटमि दिन होतव ॥
शयनात्ताँ श्री गोकुल तेँ कीनी ॥ विजय पीयो मधुरा मुधि लीनी ॥
॥ डाल ॥

मध्य—राग रायसी ॥

भादो सुदि त्रितीया दिना मुन्देग देगेँ श्राय ॥
टेर दीए हे श्री जी जहाँ तहाँ हेँ छटोर मुहाय ॥ १ ॥
स्नान किये देह कुँट मे निरछे श्री बनदेय ॥
राजत हेँ जहाँ रेयती सुरनर करेँ जाकी नेव ॥ २ ॥

श्रंत—

भादो सुदि अष्टमी बघाए । प्रात श्री गोकुल प्रभु प्राए ॥ ८ ॥
वन उपवन भए चोवीस । ईहि विधि जीने अइस ॥ ९ ॥
हरीदास सोभा जब देखे । तव जन्म सुपत शनि तेरे ॥ १० ॥

ईति श्री विठ्ठल नाथ जी श्री गुताई जी या रीति मं वन यात्रा बीये की संपूर्ण ॥ गुदना-
पुर मध्ये काहाण्ड कुञ्ज प्रातीय विप्र भट काला मुत श्रंत जीए सोरठमे श्रीकृष्ण ॥ इत्यादि ॥
सुभं भवतु ॥ जे कोय पावे तेने श्रापारो दंड्यत वे ॥

विश्व—श्री गुरुः श्री गुरुः नाम नो मे म० १६३५ मे व्रज चौरागी कोन वी जो वनवाता
री उता ननं ।

मन्त्र ४८६, पर रचयिता—जन हरिदास, पत्र—७६, आकार—७ १/२ × ५ १/२ इंच,
पत्र (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुष्टुप्)—४०७, गति, रूप—पुगना, पद्य, निधि—
नागरी, प्राथि र रार—प्रारंभात् पुनरावत (याजिक मग्रह) २४६।४३ वस्ता), नागरीप्रना-
रिणी मना, तानी ।

आदि—.....जोग उरि धारे ।

जन हरिदास निरवामं भरम निरगुण जग विस्वारं ॥ ४ ॥ २६ ॥
राम नम पी मीठा रं श्रव पीया ही सुप होइ ॥ टेक ॥
मीठा एमे जाणिये पीये नारद सेत ।
रनि रनि पीये महेश ॥ १ ॥
सोनी गिय वन में पीव हरिदाम श्रमत् मार ।
मुन्देव पी निरमं भया तारुं जाण मय संमार ॥ २ ॥
गोपीनंद निरमल पीवं पीये हणवत घोर ।
जोगी पीवं मन्थरी जासु श्रमं भया सरीर ॥ ३ ॥
नाम पचीन निरि पीये हरिदाम चारुवार ।
जन हरिदास ज्या हरि भज्या त्या भागा भीभार ॥ २७ ॥

अंत—

गहर अंभान त्रिम्बा नदी नषिय है अनत आगे वहा मिति नांही ।
माघ आशाम में अटक उलटा नटवा प्राण मन सुरति आकाम मांही ॥
ममद ममार जल मुजल निरियो कटिन जन हरिदास निविनेस हरि भजन कीज ।
परम उदार करनार सत्रय धणी..... ॥

००:

००:

००:

—अपूर्ण

विषय—भक्ति तथा ज्ञानोपदेश वर्णन ।

विशेष ज्ञानव्य—अंत के आरंभ के १५ पत्रे नती है और अंत में वह ६१वें पत्र के पश्चात्
गति है । रचनाकार निरिदास अग्रज है ।

मन्त्रा १८५४ मन्त्रन (मन्त्रांतर), रचयिता—हरिद्वे, नागज—देशी, पत्र—११,
आकार—६ १/२ × ८ १/२ इंच पत्रि (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—१६८ पृष्ठां, रूप—
प्रा मीत, पद्य, निधि—नागरी रचनाकार—म० १८८६ वि०, निपिपान—म० १८६० वि०,
प्राथिभवा—प्रारंभात् पुनरावत, नागरीप्रचारिणी मना (याजिक मग्रह), काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ गुरुजन लिखये ॥

॥ दोहा ॥

गुरु पद पकर में वसी मो मन अलि वसु जाम ॥
जा प्रमाद बिन विश्व में मरे न कही काम ॥ १ ॥
गुरु कृपा मरु प्रिया हैं गिर नमान गुरु जान ॥
गुहरी पुगल कृप हैं नमो जोरि जग पानि ॥ २ ॥
मोहमन कनि विश्व में अमन तोरि शुभ दृष्ट ॥
तो नमि गुरु जिशा वचन श्रुम नरुं न क्यष्ट ॥ ३ ॥

मनुज देह नौका मरिम पाइ भवोदधि पाए ॥
 जाहु क्यों न रे मन अघम जहँ गुरु बेच्यट मार ॥ ४ ॥
 जिमि अनेक माघनहु ते विन पायक नहि पाए ॥
 त्यों गुरु पदरज ध्यान विन मुचि न होहि मन बाए ॥ ५ ॥

मध्य—

अंसं नित प्रति ही करं गुरु गुरुजन की नेत्र ॥
 शिष्य धर्म मार्ग अनिम मो जर्म गुरु भंव ॥ ४६ ॥
 उत्तम मध्यम और लघु अगम शिष्य ये स्वार्नि ॥
 यथा नाम लक्षण कहें श्रुति सिद्धान विचारि ॥ ४७ ॥
 उक्त चिह्न जामं मिर्न मो उत्तम शिष्य जान ॥
 भाव भक्ति आर्ग करं गुरु की रायं मान ॥ ४८ ॥
 गुरु जन विन गुरुदेव की अग्या पालं जोइ ॥
 मध्य शिष्य तासों पहुँ पुण्य पुरातन नोइ ॥ ४९ ॥
 जोलीं स्वार्थ की लुनं ती नगि रायं प्रीति ॥
 आग्या हू पालत रहें लघु शिष्यन की रीत ॥ ५० ॥

अंत—ताही की अवलव ले कियो मतक "हरिदेव" ॥

तजि छल छोह दया करी हू प्रमद हरिदेव ॥ ५१ ॥
 गुरु पद पकज की कृपा अचल रही यह प्रथ ॥
 पढि सुनि हरि चरणनि रमी तजी कुमनि की पंथ ॥ ५२ ॥
 अंक नाग यमु चंद्र युत संघत नियो प्रमान ॥
 सुदि पट्टी आसाद की रच्यो पंथ गुम धान ॥ ५३ ॥
 राम लछन सीता महित भरन गवहून भाइ ॥
 हनु विभीषण आदि दं कृपा करी गुप पाइ ॥ ५४ ॥

इति हरिदेव मिश्र कृत गुरुशतक संपूर्णम् ॥ मिति जेठ वदि ४ संवत् १८६० ॥

विषय—गुरु के माहात्म्य तथा प्रशंसा मे १०० दोहे तरे गये हैं ।

संख्या ४८५ख. रामायण (राम वैभव), रचयिता—हरिदेव, वागज—दोरी, पद्य—
 १०, आकार—६३ × ४ इंच, पंक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (पत्राद्वय)—१८०, पूर्ण.
 रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—स० १८६८ वि०, निर्माण—स० १८६४,
 वि० (दो दिन बाद), प्राणस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी मन्धा (मण्डिक
 सग्रह), काशी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

॥ कवित्त ॥

वे ही ये चरन सीया उर मे विराजि रहे वे ही हे निदान गुरुमरि मकरद के ॥
 वे ही ये चरन तारी नारी रिपिराय जू की ये ही ये चरन हैं हनन मजबूद के ॥
 वे ही ये चरन छोड़ केवट मुकति लीनी सरजू विहारी तापहारी सुनि बूद के ॥
 चाउ सों विराजो हरिदेव जू के बिल माहि बेरी चरन गंगागज रामबद के ॥ १ ॥
 गाई चतुरानन सुनाई रिदि नारद की नाद तं नौकं दानभीकि जी विचारी हैं ॥
 वालमीकि हू तं संत सुनि कं प्रभोद भरे सत्या मत कोंटि जाकी बेद निरपारी हैं ॥
 अंसं कथा एती सियाराम की की पादं पाए तातं हरिदेव हू बहू उर धारी हैं ॥
 मंगल की मूल जमदूतनि की सुल नौकी सुगति की बरुणसुत गुजन की भारी हैं ॥ २ ॥

॥ छप्प ॥

दबो दनुज के भार भूमि भजि गई ब्रह्मपुर ॥
 ब्रह्मो विनयि निज विपनि धारि मन लई ऊ सुरगुर ॥
 छोर मिथु के तीर जाय विनती तिहि ठानी ॥
 भये काम गये धाम सुनी तहि अवर वानी ॥
 रजिहंम माहि अन्नार धारि हूँ नूप लोला अनुसरो ॥
 हरिदेव त्रिप्र के प्रेम तं मरत काम पूरन करौ ॥

मध्य—

मारि परद्वारन उधारि वाति वानर की आपही पधारि कल भीलनी के पाये हं ॥
 सीया की त्रिगृ पाइ त्रिहो ली वन्त हाय वायसुन धाम पाय चडामनि लाये हं ॥
 नं के रघुराय सुग मान्यो हं गिताय की ली नागर के तीर सायामग लं सिधाये हं ॥
 देयि के अपार सोन कीयो मन माहि घनी नंस के उपाय वार दूर्ज तीर आये हं ॥२२॥
 महामदमत उनमत बलवंत वीर लक की प्ररुग राज साधत अनीति है ॥
 छारि के विभीषन विभीषन है भीषन की आयी रघुवीर जू के पाग अति प्रीति ॥
 आयन ही दिये अन्न दान एक दान ही में देयी है उदारता उदारन की रीति तं ॥
 संबाह विभीषन की दीनी दगजंघर की लंक दगजध की विभीषन की नीति तं ॥२३॥

अत—ताव भय की हृदय धरि दछुक दछो हरिदेव ॥
 निज वानी के सोध को हरिजन सुध करि सेव ॥३७॥
 राम चरित अतिही अगम नो करोर कहि जाय ॥
 वालमीक मनसादि निव अंत न पाव आय ॥३८॥
 पाप पुज में रमि रहे कलि के जीव मलीन ॥
 निनकी अवंबन नहीं रामचरित विन छीन ॥३९॥
 वेद अंक वसु चद्रमा सगत मितो पुनीत ॥
 आश्विन शुक्ला मप्तमी वार घरनि वुध मीत ॥४०॥

इति हरिदेव कृत रामायण संपूर्णम् संवत् १८६४ मिति आश्विन शुक्ला १० सुगतया ॥

विषय—प्रभुन अथ मे गमनागत वर्णित है ।

मंल्या ४८६क. मधुगष्ट की टीका, रचयिता—गो० श्री हरिराय जी (गोकुल),
 नागज—देवी, पृष्ठ—६, आकार—१० × १३ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४०, परिमाण
 (अनुष्टुप्)—१००, अक्षर, मय—साधारण, गद्य, विधि—नागरी, रचनाकाल—म० १७१०,
 के लक्ष्य, प्राणिस्यान—श्री मन्वन्ती अक्षर, श्री विद्या विभाग, कांकरानी, दि० व० ८५,
 पु० म० ११६ ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥ अथ श्री मधुगष्ट की टीका निरूपित है । तहाँ प्रथम
 श्री आचार्य जी में प्रायणा करत है । सो ज्ञानी ॥ नमामो विद्व पदांभोज र्गुण्यो यं निवेद-
 नान् । अस्मान् कुतं निरुक्ते श्री गणेशाय नमः ॥ १ ॥ याको अर्थ । अथ या ग्रंथ में
 श्री ठाकुर जी के मय अंग ग्यात्मिक हैं । ताको भाग हीन वर्णन करत हैं । तहाँ प्रथम श्री आचार्य
 श्री को नमस्कार करत हैं ताको तात्पर्य काटा सो देते हैं, जो या ग्रंथ में ग्यात्मिक भाव को वर्णन
 करतो है जामे अर्थन अगाध नम है सो श्री नाथ जी को स्तुति की अगम्य है ।

मय—पृ० २२ अथ मधुगष्ट के प्रथम अंश ॥ अथरं मधुर नयनं मधुरं हृमिर्न

मधुरं हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेर्गण्डिन मधुर ॥ १ ॥ अथ याको अर्थ ॥ इदं प्रथमं श्री गोकुल नाथ जी प्रथम अधर की वर्णन करने हैं सो अधर केने अरुण है सो बहू है जने दुपराग्या को पुष्पि अति आरक्ति होई तथा प्रात ज्ञान के मूर्ध मे अरुणमा होत है यवा वन हू अरुण परम हैं । सो व्रज भक्तन के मन को हरत हैं । और जय श्री नाथ जी भाजन कर बोहा आरोग्य है ता सने अधर अत्यत आरक्त होत हैं सो छवि तो देखेहो बने बहू मे नारी प्राये । सो जब कद मुसकाई के व्रज जूवतन की और देखत हैं तब सबकी मन हरि लेत है अथ तेन वी माधुर्यमा बहू है ।

अंत—श्लोक—वचन मधुरं चरित मधुरं यमनं मधुरं यलिन मधुरं चरिनं मधुरं कश्चिन मधुरं । मधुराधिपते रखिलमधुर ॥ याको अर्थ—अथ व हे वचन मधुर श्री ठाकुर जी के बचन केसे हैं अति ही मधुर हैं अति मीठी बतिया हैं जो सुने ताकी मन मोहिहू एने श्री ठाकुर जी के बचन हैं, और बचन मे बोहोत ही भेद हैं । काहे ते श्री जसोदा जी नद जी के आगे नूनगन बोवन रे सो जसोदा जी को नद जी को अत्यत हृदय कमल प्यारी लागत है और गगान प्रथ वचन रसोमी बानी बोल

विषय—श्री ठाकुर जी का माधुर्य रस वर्णित है । पुष्टिमागीय मिद्वानान्तर भगवान श्रीकृष्ण रस स्वरूप है । अत उनकी लीला और स्थान, स्वरूप, वस्तु एव परिग्रहदिग्धी मधुर है ।

संख्या ४८६४. चितन, रचयिता—गी० श्री हरिनाथ जी (नारदाय), वाक्य—देवी, पृष्ठ—७, आकार—८५ × ६॥ इन्, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—३८, परिमारा (अनुष्टुप्)—१२८, पूर्ण, पद्य, लिपि—नागरी, प्राकृतस्थान—श्री नरग्वनी मठान, श्री विद्या विभाग, काशीरानी, हि० व० सं० ५०, पु० सं० ५ ।

आदि—अथ चितन लिखते ।

नदनद सखि सुंदर बालो चितना करिये जी ।
त्रिविध ताप वामे सगारिलोक साजनवधग्ये ॥ १ ॥
श्री बद्धेन वृ दावन यमुना पुलिन कुमुम वन फूला जी ।
सुंदर कुंज बहे वन बंसी फूल भारे भऊ नना ॥ २ ॥

मध्य—पु० ३२

नेन कमल ते अतिरत भीना दीपं कमल ममाने जी ।
अति घुरखित अति लोहित परयो कि कि करे मनमान ॥ ४१ ॥
प्रेम समुद्र कृपा रस भीना सदैव चवपाय जी ।
सुंदर मोरलि सुधारत पुरे मधुरे मधुरे बजाई ॥ ४२ ॥
अग औरभता तुलसी नी माला नीला कमल फिराये जी ।
सौरभ रन्ना मोह्या अतिगन अति गुजोत सपटाये ॥ ४३ ॥

अंत—अष्टोत्तर सत नाम भक्षिते अनुदिन नृत ते फेरो जी ।
श्री राधामोहन गोवि सग श्रीठा अनुदिन हेरो ॥ १०७ ॥
श्री बल्लभ पद कमल कृपाभी आनंद पुताकित पाय जी ।
दास रत्तिक जाय बल हारि प्रेम हरख सो पाय ॥ १०८ ॥
इति श्री हरिराय जी कृत चितन संपूर्ण ॥

विषय—भगवद् भजन नवधी उपदेश वर्णन । पुष्टिमागीय पद्य के लक्षण पर भगवान् श्रीकृष्ण की लीलाओं का प्रात ज्ञान से लेकर जयन पर्यंत की मानसिक स्थिति का वर्णन और स्वरूप वर्णन किया गया है ।

मंत्रा ४८६घ. अष्टाक्षर मंत्र की टीका, रचयिता—श्री० श्री हरिदास जी (गोपुर),
शास्त्र—देवी, पृष्ठ—१५ अक्षर—१०, X VII २० पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—४८, परिमाण
(अनुपुष्टु)—३१५, पुष्प मन्—शास्त्र मन् विधि—नागरी, रामनाथान—म० १७१०
के मंत्र मन्, प्राग्निस्थान—श्री गणेशजी भवन, श्री विद्या विभाग, तांजोरी, दि० व० ८५,
पु० म० ११८।

आदि—श्री हृत्पाय नम ॥ अथ अष्टाक्षर मंत्र की टीका लिख्यते ॥

अथ श्री गुमाई जी कहत हैं । श्री आचार्य जी महाप्रभु आप भूमि के चिपे देवी जीवन
के उद्धारार्थ प्रगट भए हैं । सो श्री आचार्य जी महाप्रभु जी प्रगट होइ के विचारें । जो देवी जीव
तो श्री भगवान में विष्टरिक्त भूतन में प्रगट भए हैं । सो अपने जन्म तें या संसार में भटयन फिरत हैं
परंतु काह स्वार्थ होत नहीं हैं । और मायावादी आधुरी जीव को मंग करिकें देवी जीव अपने
स्वरूप भूत गए हैं । ता करिकें श्री भगवान तें विमुक्त होइ रहे हैं । तानें श्रीहृत्पाय की प्राप्ति
होत नहीं हैं ।

मन्त्र—प० ८६

यारी मंत्र को आश्रय छोड़नी नहीं, यारी ते श्री गुमाई जी कहत हैं, अष्टाक्षर मंत्र को
आश्रय छोड़नी नहीं । ताको भाव यह है, मदा मर्दा काल के विषे दुःख में सुख में वात कहत
में बैठन में उठन में प्रह कार्य में उच्चम ध्योहार में और अनेक कार्य करन में मारग चलत में भय
स्थान में यह मदा मंत्र में कहत रहनी 'श्री हृत्पाय शरणं मम' । यारी मंत्र को आश्रय छोड़नी
नहीं । सो कहिने । सो यह अष्टाक्षर मंत्र के मो है । सो मंत्र भय छुड़ावन धारो है, और मंत्र प्रति-
बंध डूनि करन धारो है ।

मंत्र—या मंत्र को भाव प्रगट कीयो है । और कथारित कोई कहे जो श्री हृत्पाय नाम को
महान्म तुमही कहत हो के कांड और हंडिकाने कहां हैं । तहा कहत हैं । वेद ह में कही हैं, और
नास्त्र में कही है, और पुनास में ह कही हैं, और श्री भगवान आपहू श्री मुण्डते कहे है, और श्री
आचार्य जी महाप्रभु कहे हैं, और हमहू कहत हैं, श्रीहृत्पाय शरणं मम । यह अष्टाक्षर मंत्र अति
श्रद्धापूर्वक अर्चनमें जप करे । या मंत्र तें मनन मनोरथ पूरण करेगे, यामे सदेह मति राखी,
यह हम निश्चय निदान प्रगट करत हैं ।

इति श्री विष्टनेश्वर चिरचिंतन अष्टाक्षर निरूपन ताकी टीका भाषा में संपूर्णम् ॥

विषय—गुटिनागीन अष्टाक्षर मंत्र की महिमा वर्णित है ।

सध्या ४८६घ. अष्टाक्षर मंत्र भाषा टीका, रचयिता—श्री गुमाई जी, अनुवादक—
श्री हरिदास जी, (गोपुर-गुमनोर), शास्त्र—देवी, पृष्ठ—१० (१८३ में १७० तक), आकार
—१०।।। X ।। २०. पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—५०, परिमाण (अनुपुष्टु)—३२५, पुष्प मन्—
शास्त्र मन् विधि—नागरी, रचयिता—म० १८६० में १८६० के भीतर, प्राग्निस्थान—
श्री गणेशजी भवन, श्री विद्या विभाग, तांजोरी, दि० व० १००, पु० म० ३१९० ।

आदि—अथ अष्टाक्षर की टीका भाषा में श्री गुमाई जी कृत ॥ श्री गुमाई जी कहत हैं ।
जो श्री आचार्य जी महाप्रभु आप भूतन के चिपे देवी जीवन के उद्धारार्थ प्रगट भए हैं । सो श्री
आचार्य जी महाप्रभु आधुरी प्रगट होइ के विचारें । जो देवी जीव तो श्री भगवान् में विष्टरिक्त
भूतन में प्रगट भए हैं । सो अपने जन्मने या संसार चिपे भटयन फिरत हैं । परंतु वही स्वरूप
होत नहीं है ।

मन्त्र—प० १४८

भाव महिन दिन जप करनी । अथ श्री गुमाई जी आपु कहे । जो श्री मुखेन कथ्यते
मन्त्रश्री अष्टाक्षर तन्व धारो भाव यह है । जो श्री गोपट्टन धरन धारन कर्ता आपु कृपा करिकें

अष्टाक्षर मंत्र अर्पुने श्री मुख तें कथ्यते नाम कहे । श्री स्वामिनो जी प्रति । जो शान्ति ३१ जन्म के मनोरथ पूर्ण कब होय । जो श्री स्वामिनो जा द्वारा अनेक भक्तन के मनोरथ पूर्ण कबना हे ।

अंत—श्रीर वदाचित् कोई कहे जो श्री कृष्णनाम का महाद्य गुणों वरुण हो के कोई श्रीर हू ठिकाने बह्यो हे तथा कहत हैं । जो वेद मे हू बह्यो हे श्रीर मांत्र मे हू बह्यो हे श्रीर श्री भगवान् आप्रहू श्री मुखते कहे हे श्रीर श्री आचार्य जो महाप्रभू हू आप्र श्री मुखते कहे हे । श्रीर हमहू कहत हे । जो श्रीकृष्णः शरण मम । यह अष्टाक्षर मंत्र प्रति अष्टाक्षर ध्यानित बयो । या मंत्र के जपने सकल मनोर्थ पूर्ण होयगे । यामे सदेह मनि राखो । यह हू मनि मंत्र प्रगट कियो हे । सो जानोगे ।

इति श्री विद्वत्शेखर विरचित श्री अष्टाक्षर मंत्र नाकी टीका मंत्रमं ॥

विषय—पुष्टिभाग्य वर्णव दीक्षा मंत्र "मंत्र अष्टाक्षर" या नाम प्रकृत प्रकृत श्रीर जप प्रकार का वर्णन किया गया हे । मूल ग्रंथ मन्त्र में, श्रीर उमरी प्रकृत टीका ॥

सत्या ४८६३. गोकुलाष्टक-की टीका, रचयिता—गो० श्री श्रीराम जी (गो०) कागज—देशी, पृष्ठ—१७ (१० मे २७), आकार—१० x ११ ॥ रचयिता (श्रीराम) —४२, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५०, रूप—माधुर्य, गद्य, विर—नामकी मंत्र प्रकृत—स० १८७१० के लगभग, प्राप्तिस्थान—श्री मन्त्रालय नगर, श्री विद्या विभाग, रचयिता—हि० व० ८५, पु० स० ११५ ।

श्रादि—॥श्री कृष्णाय नमः ॥ श्री गोपीजन बल्लभाय नमः ॥ अथ श्री गोकुलाष्टक की टीका लिखियत हैं । तथा प्रथम मंगलाचरन मे श्री आचार्य जी की बिनती बरत हे । ताको अर्थ यह हे । जो श्री गोकुल की माहात्म्य श्री आचार्य जी ने बरान कीयो । श्रीर कोई सो बरान नाहि कीयो जोई काहे ते जो श्री गोकुल श्री ठाबुर जी का प्रत्यत प्रिय हे । ताके श्री आचार्य जी कृपा करें तो श्री गोकुल की माहात्म्य हृदय मे आवे ॥

॥ श्लोक ॥

श्री महल्लभो रस भरा प्रीया सागर दीन हितू ॥
अहू बंदे चरण रेणू मस्तके मम मखंदा ॥

अर्थः ॥ याको अर्थ ॥ अब श्री गोकुल नाम जो श्री आचार्य जी मो दीनती बरत हे । जो श्री बल्लभाचार्य जी के से हे जो अनेक भाति के रस जिनके हृदय मे भरयो हे मो रस हृदय मे ते उमडे हे तब रस रूपी प्रथ श्री आचार्य जी ने प्रगट कीयो हे ।

मध्य—पृ० २१ अब चौथो श्लोक की अर्थः ॥

॥ श्लोक ॥

धीमद् गोकुल सौन्दर्यः श्री मङ्गलुल तापत ॥
धीमद् गोकुलगो प्राणः धीमङ्गलुल बागद ॥ ४ ॥

अब याको अर्थः—श्री गोकुल केसो सबल सौंदर्य की सीमा हे श्री गोकुल ते वने श्रीर सुंदरता नांही काहे ते सकल सौंदर्यता की निधि श्री ठाबुर जी हे । सो श्री गोकुल मे निवास हे । ताते जितने देवतान के लोक हे । अपवा बहुठ लोक परंत सो मन् श्री गोकुल की सौंदर्यता ही मोहित होत हे । ताते श्री गोकुल सौंदर्यता की मोरोमनि हे ।

अंत—एहि भाव श्री गोकुल को मेरे हृदय मे आवे जब तुम कृपा बरके बहास बरने मे बारवार याते बिनती करत हो जो श्री गोकुलाष्टक ते ही महा गंधीर मन्त्र मे एक पात्र की बरने प्रकार रस पांड, ताते तुमही अनुग्रह करो तो मेरे हृदय मे एहि सीता पते तो श्री गोकुल की सीमा आवे । अब एही सिद्धांत संपूर्ण भए ॥

इति श्री बल्लभाचार्य जी विरचित श्री गोकुलाष्टक संकलम् ॥ श्री ॥ श्री ॥

विष्णु—गोंडु। ता मानन्तर पौर उनी नान्त ता वरुन ।

संज्ञा ४६६ च पट्टादि तारागा, रचयिता—श्री हरिगय जी (गोंडुल), तागज—
लंगी, पृष्ठ—५ (२१ मे २२ नर) सतार—६॥ × ५ रच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६,
दर्शनाग (ननुदुर)—६०, पूर्ण, रूप—माधारण, गय, निधि—नागरी, रचनागत—स०
१००० के प्रमाण, प्राणिग्रहण—श्री नरग्वती भजार, श्री विद्या विभाग, कांगरोली, हि० व०
६१, पु० न० ११ ।

आदि—अथ श्री हरिगय जी कृत पट्टपट्टि अपराध लिखते ॥ जो श्री ठाकुर जी समीप
प्रीत करे तो तीन जन्म ताई मलेछ जानी पावे । नधे यह जो । अस्तान करि श्री थाकुर जी आगे
छो की दोषा करे तो ताको दोष नधे होय ॥ १ ॥ अनमारगी साथे बोले तो सत्त पीडा उपजे ।
जैगो तारा। नधे येहे जो श्री ठाकुर जी आगे अरत्रीजन सो काम दृष्टि देखे तो नीच जोनी पावे ।
अोर दनोद होय । अोर अस्त्री जन होये निर्भरु होय तीन जन्मताई । सो ताको निप्र येहे जो एक
मास ताई स्त्री को त्याग करे सग तब ताको दोष निवृत होए ॥ ३ ॥

मन्थ—प० ३६

अपराध के मुच ते वंशुण भागवत सुने तो काठ को धुन वे जीव सात जन्म ताई होई ।
मो श्री भागवत को दान करे तो दोस निवृत होई ॥१२॥ अवंशुण को छुआ जल आदि देके कछु
वस्तु मत्र अपनी मीना भये ता पाछे श्री ठाकुर जी की सेवा मे तथा आपु ले ते जलजंतु के जन्म पावे
मो उपशान करे अथवा भागवत श्रवण करे तब दोस निवृत होई ॥१३॥

अन—श्री ठाकुर जी की सेवा के मने चुके तो तीन जन्म घघा होय । सो श्री ठाकुर जी
को दोषे मे पैमा भार दूध सो अभिनेष करावनी ॥४१॥ धंतरणो नदी मे सो बरस ताई तीन
उपशान करे श्री ठाकुर जी को नयो मंदिर करवाये ॥४२॥

त्रिपय—गुंठिमार्गीय वण्णवां के अपराध और उनके निवृत्त होने के उपाय लिखे है ।

विशेष ज्ञानन्थ—उम ग्रथ के तर्ता गों श्री हरिगय जी है, पैमा वध मथ्या ६० मे पुस्तक
म० ११३, 'सतीम नःशरु' के पत्रमथ्या १०० मे लिखा है ।

मथ्या ४६६ छ नवरानि के रीतान, रचयिता—श्री हरिगय जी, (यमनीर, मेवाड),
तागज—लंगी, पृष्ठ—१०, आकार—३ । × ५॥ रच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण
(पण्डु)—३०, पूर्ण, रूप—माधारण, गय, निधि—नागरी, रचनागत—म० १७६७
के पू। प्राणिग्रहण—श्री नरग्वती भजार, श्री विद्या विभाग, कांगरोली, हि० व० म० ६२,
पु० न० १० ।

आदि—अथ कीर्तन नवरत्रि के लिखत है ।

॥ रागु विलावल ॥

आत्र अथिक शानंद यज जनमन पूरन काम भयो सब आजु ।
नवरनिगय वमुदेव वम वरिन के नदविधि भक्त सुजत गय राजु ॥ १ ॥

मन्थ—६० ११

घनी बनान देग मंदर हार कंचन ऋगमने ।
आठ मंदिर पूजे देवी लोग सिपरनि मृग मृगे ॥
ना मने प्रभु नू पघाटे कीटिक मनमय मोहही ।
निर्गय मारी जन कमल मुग मानों निग्धन पाई नही ॥

मंत्र जो उंठ ताके मंत्र की भेदे लमो जो गोविंद सो हे प्रिय जाको राजस में श्रीकृष्ण आप
मंत्र मंत्र होउ के यज्ञ पूजा इतरा कोने पाही ते ये यज्ञ कृत हैं । ताने ये यज्ञ भोक्ता प्रिय हे । कोई
रहेगी जो धोत मुस्तामस में डोहन है । तो ये भगव-वृत्ति को अनुकरन यज्ञादिक क्यो करत है
नष्टा कहत है इतरा नीला नमस्य ॥४२॥

श्रुत—श्री विद्वत् के पदःभोज को जो मकरंद को सेवन करता जो श्री रघुनाथ जी तिनकी
जो यह वृत्ति सो विनेम करने जयको बरत हे निरंतर यतुन ने भेदं कृपामा विद्वत् प्रभोततया तस्य
नमं देवनं नमं मन्त्रिनि ॥१॥ इति श्री रघुनाथो वृत्त राम नाम रत्न बिवरण संपूर्णम् ॥

विषय—गो० श्री रघुनाथ जी (श्री गुमाँ जी के पनम पुत्र) ने अपने पिनु चर्या, सप्र-
सात्र के मन्त्र प्रवर्त, गो० श्री विद्वत् नाथ जी की गुण नामावली वर्णित की है । जो मस्कृत में
नामरत्न स्तोत्र नाम में प्रसिद्ध है । प्रस्तुत यथ उगी की टीका है ।

नाम ४८६५। नित्य भावना (मेधा तथा स्वस्व तौ), रूपायना—हरिदास जी (?),
(नमनार भोग), नागर—देवी, पृष्ठ—२३३, आचार—५॥ x ८॥ उन, पक्ति (प्रति-
पृष्ठ)—३८, परिभाषा (अष्टपृष्ठ)—४१००, प्राणं, रूप—नाधारण, सप्र-पत्र, निधि—
नामरी रचनाकार—म० १९६० में १०४३, विविधान—म० १८५५ वि० के पूर्व, प्राप्तिस्थान
—श्री मन्त्रालय अथवा श्री विद्या विभाग, तांराली, डि० ५० ६३, पु० म० ५ ।

श्रादि—॥श्री गोपीजन चमलभाय नमः ॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ अथ नित्य की भावना
विशेष ॥ तव श्री जी कहीं जो मोमे रमलीता मनमथ की ही सो सब एषत्र करिकें तुममे राखी
तव के पद यह हैं । जो अमृत निचोई कीयो एक टोर तिहारे बदन सभारि मुटो करत वतें यीधनां
गवी न थोर ॥१॥ मुन राधे उपमा कहा दीजे स्याम मनोहर भए नकोर ।

मध्य—ग० ४६

पीतावर को अर्थ कहा जो पीति हो को वह अनु चमन हे पीत पात्र हे सो श्री जी की प्रीति
पात्र श्री स्वामिनी जी हैं । और कोऊ नाही और पीतावर तीन भाति को होत हे पीली रंग हरी
बुछ नामे भाई लाल सो मृग न को श्री अंग न० नागरी रंग की दर्याई सो श्री चंद्रायली जी की
स्वरूप हे त० नाल सो अति म्पा दंत पात्र को भाव ए तीन भाति को पीतावर हे ताके आधार सो
श्री जी रहत हैं । हरछो धरत हैं तो श्री यमुना जी को भाव हैं ।

अन—मोई श्री चंद्रायणी जी श्री जी को कहत हैं जो हम तीन जसो एक ही कलसो जाग
ये दुंगो तुम पद्यान्वो सो वसन में बुच की बनावन हैं । पीपी पुण्यन के भाव मेन हे सो श्री चंद्रायली
जी हे सो सब ताको अंगीकार करवावत हैं सो शुद्ध हृदे कृपायुक्त श्याम कचक पहिरे हैं सो श्री
यमुना जी हैं । श्री जी को भाव म्पुत्रक भयो हैं भगी सो भाव अगाद हैं सो श्याम दीमे मोइ जमु-
नापत्र में लिखे हे जो मुगमुग मूर्तिजने स्मर पिनु अथर्व विभर्तो । एमो श्री जी के भाव सो श्री
यमुना जी सनिन हैं ताई के लीये श्याम हैं । द्विविध भाव एहे ताई श्री कृष्ण

विषय—वृत्तमार्गीय मेधा विधि में नमस्कार्य और उनो नित्य सेवा ता अम निर्मा
विशेष विधान पर आर्गित है । उनरा स्वरूप उन प्रथ में बतवाया गया है । जिनमे वेगमत्र
मेधा को मेतर विद्या भाव न समझ कर उमे मानसिक भावना रूप में तरे और केवल भगवान्
में मान ले ।

विशेष अन्वय—मुस्ताम के प्राग्नित्र पत्र में "गो० श्री ब्रजनाथामत्र गोमुल नावम्पेद
मुस्ताम विद्या रत्न है । मुस्ताम के पृष्ठ मन्त्रां १ म ३८ और १ म ३३ पर तथा १ म ८० तक
अन्य अन्वय ली है ।

मध्य ४८६३. पुष्टि द्वाय, रचयिता—हरिनाथ जी (मनोरम, माध्याम) बन्धु—
देशी, पत्र—१०, आकार—१०। x ५।। डच, पक्ति (प्रतिपद्य) —१०, परिमाण (अक्षर) —
३३२, पूर्ण, रूप—नया, गद्य, निधि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री मन्मथी मठ न. विद्या
विभाग, कांकरगीरी, हि० व० न० ६२, पु० न० १।३ ।

श्राद्ध—॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ अथ पुष्टि द्वाय की वार्ता लिखी गयी है । जाहो पुष्टि
श्रीगीकार होइगी सो जानैगी जीव को उद्यम करनी । उत्तम भगवदीय की संगति मिलनी । अर
वाके करे को विश्वास राखनी जय विश्वास उपजे । तब जानिये श्री जीने हुवा करी ।

मध्य—पृ० ८

मन थिर राखे तो श्री जी मनोरम पूरे । तब तो थिर को जो तादृश बंधन को मग करे ।
जो वह अपने उपर रीक करे तो शिक्षा करी भावे । जो मेरे भवे को गहन है । तारी बंधन
दृढ होय ताको दृष्टात जानीये । जेमे दूध हे सो बंधन प्रते प्रत जो भाग्य है सो तादृश बंधन है ।
सो दोड एक ठोरे होय तो भीतर ते नवनीत उपजे । नही तो दूध मिगटे ।

अतः—अब फेरी पात्र को गुण लेने तथा द्वायत लेने सोने को पात्र है विद्य भगवो है तो
उत्तम पात्र जानि के लीजिये तो विनाश होये । अर माटी की ही ही उत्तम पात्रों भरी होय तो
लीजिये तो परम सुख होइ । ताते भीतर की गुण देखिके मग करनी ॥ इति पुष्टि द्वाय संपूर्ण
॥ श्रीः ॥

विवय—पुष्टि मप्रदाय के प्रणयों के विषय उद्देश्य पूर्ण वार्ता लिखी है ।

सख्या ४८६४. पुष्टि द्वाय की वार्ता, रचयिता—श्री० हरिनाथ जी, (माध्याम), बन्धु—
देशी, पत्र—१६, आकार—६।। x ५ डच, पक्ति (प्रतिपद्य) —२६, परिमाण (अक्षर) —
४७, पूर्ण, रूप—माध्याम, गद्य, निधि—नागरी, मन्मथी मठ—न० १०० के बंधन, प्राप्ति-
स्थान—श्री मन्मथी मठ, श्री विद्या विभाग, कांकरगीरी, हि० व० ६१ पु० न० १।३ ।

श्राद्ध—॥ श्री गोपीजन चत्तानाथ नमः ॥ अथ पुष्टि द्वाय की वार्ता लिखिते जाहो
पुष्टि श्रीगीकार होईगी सोई जानैगी । जीव को उद्यम करनी । उत्तम भगवदीय की संगति मिलनी ।
अर वाके कहे को विश्वास राखनी विश्वास उपजे तब जानिये । जो श्री जीने हुवा करी अपने
कीयो । उत्तम भगवदीय की संगतिते श्री ठाकुर जी प्रमत्त होइ । तब अपने धाम देहि । तब
स्वरूप नेष्टा उपजे । तब जानिये जो श्री जीने अपने धाम देयो । धारण तो मासी बहिने ।
जीव को विवेक विचार मिलनी । जीव चौरागी लख जीवि प्रगटे । नामे मनुपदेह नाम है ।

मध्य—पृ० ६०

श्री कृष्ण जी सो पुष्टि नाम है जो श्री दृष्टा जाय है । तो सो उपाय मग है ।
ताही तें श्री कहावत हैं । और कृष्ण तो दोय शहर को नाम हैं । श्री तथा माधे द्वाय है ।
इतने ही बंधन भगे । पाछे श्री बल्लभाचार्य जी ने एक प्रकाश काले कीयो । तब बंधन भयो ।
ताते बंधन एतो नाम हैं । सो भगवद नाम हैं । एहि इति सो दोहोमें सो मनुनेगी । बंधन
को बंधन परद्रोह न करनी । बंधन है तो सो भगवद नाम है । जो श्री ठाकुर जी को बंधन
कीयो होइ तो कदाचित् छूटिये । परि बंधन के पपराय तें गयो है न इति ।

अतः—भगवदीय तो श्रीनाथ की को मन पार है अर फेरिते पात्र है पात्र को मग लेनी ।
तहां द्वायत फलत हैं । जेसे सोने की पात्र है और लगे विद्य भगवो है । सो उपाय ताते जानिये
लीजिये तो विनाश होइ । और जो माटी ही की पात्र होइ । जोन जो उपाय मागी की पात्रो
होई सो लीजिये । तो परम सुख होइ । ताते भीतर की गुण देखिके संगति करनी । इति पुष्टि
संपूर्ण भयो ।

इति श्री पुष्टि द्वाय की वार्ता संपूर्णम् ॥

विद्यया—गतिमार्गी । विद्यार्थी के द्वारा तन्त्रियों के रत्नों का वर्णन किया गया है ।
रत्न (सर्वप्रथम) ही प्रथम विद्यया रत्न (१०) के नाम से विद्यया रत्न उपाधो का प्रथम रत्न
रत्न नाम, यो रत्न के रत्नो के, यदि का रत्न है ।

मन्त्र ४८६३. श्री उद्धार रत्न के पौडग विद्या (सवित्र), रत्नविद्या—श्री हरिराम
जी (नामदाय मन्त्रो), तन्त्र—३०, पृष्ठ—६ तन्त्र—५। × ५।। उपा, पक्ति (प्रति-
पृष्ठ)—३०, परिमाण (अनुपात)—५०, पूर्ण, रत्न—पुराणा, पञ्च, विधि—नागरी, रत्ना-
दान—म० १६१७ के पूर्व, प्राप्तिमान—श्री मन्त्रो भण्डार, श्री विद्या विभाग, तीर्थोली,
दि० व० २३, पु० न० ० ।

आदि—॥ श्री उद्धार नम ॥ तत्र श्री उद्धार जी के पौडग चिह्न लिख्यते ॥
॥ राग सांकेरी ॥

यस्य चरम रत्नोत्तम सुन्दर ॥ रत्नदेतन मन धन सुन्दकारी ॥
सौमल सुन्द सुन्दरा रानी ॥ द्विविध ताप घण्टीय दुःखहारी ॥ १ ॥
हारी सुन्दकारी रानी विद्यया विद्यया रानी ॥
विद्या सुन्दरी करे रानी मन्त्र अन्त घण्टी ॥ २ ॥

मन्त्र—

दक्षिण पद के चिह्न सन्दर रत्न सुन्द की राशि हैं ।
प्रताप श्री हरिराम जी को नामत वस्तुन वास हैं ॥ पद ॥ ३ ॥
सुन्द ॥ नाम ॥

याम चरम मिर घण्टी मन्त्र चिह्न के सुन्द उचारो ।
यह प्रताप जीय हारी, नम मन धन चरमनि पर घण्टी ॥ १ ॥ ठार ॥
गारी तन मन प्राण उद्धार भक्त जन मन लेन हैं ॥
दक्षिण पद कहे यह रत्नमें जूम छोले चिह्न हैं ॥ ३ ॥

धन—

पौडग चिह्न को हे महिमा प्रेम धरि अन्तन सुन्दे ॥
चार प्रकार्य पार्वति हरि चरन रति प्रति वन्दे ॥ ७ ॥
हीन मनि कण्ड वरनी प्राये जानी बुद्धी अन्तारे गांवाहि ॥
दान वस्तुन भक्त जन को चिह्न पौडग भावाहि ॥ ८ ॥ पद ॥ ५ ॥

रत्न श्री हरिराम जी तन रत्नचिह्न पौडग मन्त्रो ॥

विद्यया—श्री अन्तान् के रत्नो के पौडग चिह्नो का मन्त्र वर्णन ।

मन्त्र ४८६४ नम रत्न के उद्धार को नाम, रत्नविद्या—गां० श्री हरिराम जी (नामदाय), पत्र—६०, प्राप्ति—१३। × ८ टन, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—५०, परिमाण (अनु-
पात)—५००३०; पूर्ण, रत्न—पुराणा, पञ्च, विधि—नागरी, रत्नादान—म० १६१७
के १३५० पूर्व, प्राप्तिमान—१० १६५६, प्राप्तिमान—श्री मन्त्रो भण्डार, श्री विद्या विभाग,
तीर्थोली, दि० व० २८, पु० न० ११२ ।

आदि—॥ श्री उद्धार नम ॥ श्री गोपीजन अन्तभाय नम ॥ अथ चरम विद्या के
उद्धार को नाम लिख्यते ॥ अन्तपद कही ॥ अको पाप पिछोरा वस्तुन धरिये । याते जो अन्तराम
सुन्द है तन्त्र के पदने ही तथा मन्त्रो की अन्त वादको के संगता नांके रहे सो वस्तुन सुभ
को सुन्द है मन्त्रे अन्त भक्तन को अन्तराम रूप गोपी अन्त में कष्ट नामगी विशेष काहे है श्री यमोदा
जी की कृपा मे प्रभु है ।

मन्त्र—प० ६२

॥ श्री कृष्णाय नम ॥ श्री गोपीजन व... तव नम ॥ अथ य... काय...
लिटपते ॥ सो डोल में दो प्रकार के भाव हैं ॥ श्री न... व... काय...
भाव सों अपने पुत्र को डोल मुताबत है । भाव... पुत्र में... काय...
की तरहटो में तथा मदाई वसत रिनु हाय गी है । सुद... भाव...
ते उत्तम जल सोतल मधुरता काय बना द्रुम देवी प्रे... काय...
करिकें धरती सो नई के अपने मत जो नयमान है । तिनका नम... काय...
गोवर्द्धन श्री यमुना जी श्री गोकुल तदधी जिनकी प्रभु है तिन मयत के भावा... काय... ॥

अत—कढ़ी की विधि । १ मिन्च की । २ डेज की । ३... काय...
कचे पान की ५८ । करोंदा की ५६ । फूल की नारंगी की ६८ । ६८ । ६९ । ६९ ।
दाख की ६४ । सोठ की ६५ । लंग की ६६ । जायकत की ६७ । गु... काय...
६६ । तिल की ७० । छोकर की सेपर की ७१ ॥

इति श्री गोकुल नाथ जी कृत तथा श्री हरिनाथ जी... काय...
पुस्तक लिखी लिखिया पनानाल मनादय द्रुम... काय...
मडी में जो कोई वाचे तिनकी हमारी जी... काय...
१६५६ श्री बल्लभ कुलकी साष्टांग दण्डत ॥

विषय—भावना और सामग्री की विधि... काय...
से दिन किस प्रकार का शृंगार तथा सामग्री... काय...
स्तर वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—अथ में पढ़ने गो० श्री गानु... काय...
भावना" और पश्चात् विषय सूची दी गई है ।

सख्या ४८६ख. वमत होगी तथा जीव... काय...
(खमनीर, मेवाड), पत्र—६४, आकार—६ x ११... काय...
(अनुष्टुप्)—१४०८, पृष्ठां, रूप—साधारण, गण्य, तिथि—नाम... काय...
से १७४० तक, प्राप्तिस्थान—श्री गण... काय...
पु० सं० ३ ।

आदि—॥ श्रीकृष्णाय नम. ॥ अथ वसंत... काय...
प्रथम वसंत पंचमी के दिन काम को जन्म... काय...
मित्र है । जहां कामदेव मोहिये की बात... काय...
वसंत पंचमी तें खेल द्वारा काम को पा... काय...
को खेल दिन वस की होत है ।

मध्य—पृ० ६४

तब कीरत जी की ललिताने यसोदा जी... काय...
पाछे सामग्री कीरत जी धारोने । पाछे सेज... काय...
सो सोवत ही नौद आई गई । तब ललिताने... काय...
सो श्री नंदराज जी सो पहलो जो चली... काय...
वैठी । तब नंदराज जी श्री ठाकुर जी... काय...
चलि । तब श्री ठाकुर जी श्री नंदराज... काय...
नाना प्रकार के सधन लता है । पान... काय...
ताके भीतर निकुंज मंदिर है तथा नंदराज... काय...
सामग्री श्री ठाकुर जी श्री नंदराज जी... काय...

हे । तब श्रैष्ठ्याय जो का पुत्रों जो यत्को रोपित है । तब श्री ठाडुर जी कहे जो मंया को बहुत धम नयो हुनो सो मंया ही ठीर मानयो पानोवाट पाठ गेन करायो हे ।

अन—यह तोक अन्तर गोष्य है । ताने रजित जन हृदय मे विचार विचार के पान फल है । श्री शान्तार्थ जो श्री गुमाई जी के नररा को उड विस्वास होइ । इट छाश्रय होइ । तब या सोना को प्रनुभव होत । विना श्री शान्तार्थ जो को श्री गुमाई जी को कृपा या रस को अनुभव अन्वय दूर है । तात है रजित ही उनहे के चरखारि उड का छाश्रय करी ॥

उनि श्री हृग्गिय जो हृत होरी दो भावना संपुर्णम् ।

विषय—शुद्धिगामे मे समस्त सम्य पर तान जति उन्वय विगी भाग विज्ञेप को तेकर मन्ना जति है । प्रवेश उन्वय आनी ताक अन्वय आता उता है । होरी जोर दोसो मव विग आजायिमा प्रोर कविचित भावना को तेकर प्रचलित रुप है उता उम मय मे तर्णन है ।

मन्ना ६६६न चतु श्रैष्ठ्या टीता, रजिता—गो० श्री हृग्गिय जी (गोबुन), पत्र—६, आसार—१० × ६॥ उन, पति (प्रतिपठ)—१२, र्ग भाग (अनुष्टुप्)—१६०, अपूर्णा, रूप—साधारण, मय विधि—नागरी, रजिता—गो० १०७० ते उमम, प्राणियान—श्री मन्मती भजार, श्री विद्या विभा, दातराली, हि० व० ६५, पु० म० १११ ।

आदि— याहीते श्री भागवत कषडन रक्ष मे यहें हैं । जो नारद जी बंधुठ गये, सो देते ता भगवान् नाहीं हैं । याहीते सो श्री भगवान् श्री द्वारिका मे विराजत हुने । नारद ही सो भगवान् को भन स्वयं है । सो मन ता प्राण को छोडी के जुबो न रहें । ताहीं ते शोर श्रीताय मे श्री नारद जी बंधुठ होइ के पूरबी पर वाग वीयो नाहीं है । सो काहे ते जो पूररा स्वयं तो बंधुठ मे निराजत रहे हैं । श्री पूरबी मे अथ कता को अद्यतार रहो हैं । सो नारद जी याही को मे बंधुठ लोक छोडे ।

मध्य—पृ० ६

॥ श्लोक ॥

अत. महात्मना शश्वन् गोबुलेखत पादयोः ॥

स्मरण भजन नापि न त्यायमिति मे नति ॥४॥

याको अर्थ—अन अपनी दो आत्मा सो श्री ठाडुर जी की मन्परा करिओ श्री गोबुलेखर के चरखारिड को स्मरण भजन करनी । यह श्री शान्तार्थ जी के मन मे लि डाल हैं ॥

अन—शोर जो विन्यास हे सो भगवत भाव है । शोर अपने मन के श्री शान्तार्थ जी के चनन मे दूट विन्यास गगनो यह ब्रह्मण को धर्म है । ताते ब्रह्मण को विवेक समुद्र रहनी । पचे ब्रह्मण यह श्री गुमाई जी आहु बोधा बीए ताते ब्रह्मण तो आगे अथिच भाव गगनो ।

उनि चतु श्लोको टीता संपुर्ण ।

विषय—श्री ब्रह्मभारताने उन मन समान 'चतु श्लोको' मय ही मन्मूत टीता की विगां रती गो० श्री विद्वाराय जी है । प्रम्भुत द्विटी टीता है ।

मंया ६६६थ, कुन्न दाम की चाने (नोगामी उपरा उमण), रजिता—गो० श्री हृग्गिय जी (गोबुन), पत्र—३, आसार—५१ × ६॥ उन, पति (प्रतिपठ)—१००, र्ग भाग (अनुष्टुप्)—५० पुर्ण, रूप—साधारण, मय विधि—नागरी, रजिता—गो० १०५० ते उमम, प्राणियान—श्री मन्मती भजार, श्री विद्या विभा, दातराली, हि० व० ६९, पु० म० १११ ।

आदि—॥ श्री कृष्णाय नम ॥ श्री गोपीजन धन्वभाय नम ॥
 वार्ता लिखिते । श्री बल्लभाचार्य जी सा बुभनदास जी चतुर्भुज राय आदि दक्षिण दिशि १० पृष्ठे । श्री महाप्रभु जी हम कष्ट समजत नाही । तब श्री आचार्य जी दृष्टा करि १० । १० पृष्ठो सो कहु । तब वैष्णव की प्राग्या लेके कुभनदास श्री महाप्रभु जी सो पुष्टे को प्रणाम करि । स्वरूप को विघात कहो । जाते श्री ठाकुर जी निंबनता सा मंगीय । प्राकार सा या वरा देना काल कहो लीकिक विहवार कहो । तब श्री आचार्य भी त्रिषा करि कहि । सो पुष्टे को १० । परि आगे कलिकाल कठिन हूँ । तुम पुष्टोगे सो तुम करोगे । प्रागे करेगो नाहीं । प्रागे नाहीं । जाको श्री गिरिवासी लाल की दृष्टा होईगी सो पुष्टेगो प्र करेगो । लीकिक विहवार कहा ताई पुष्टेगे । अरु कहा ताई करेगे । अष्ट उपाध पहन्य जाई हूँ । प्रागे नाहीं के प्रागे पर्यंत चोरासी अपराध लगत हूँ । चोरामी अपराध के लक्षण कहो ।

मध्य—पृ० ३

जब जेसी रिज होई तब तेसो भोग धरनो । १२०। तथा यत्त दया मत करने । १२१। लेना बिना श्री जी को तिलक न करनो । १२२। सुंदर भोग धरनी । १२३। तथा प्रागरी कर्त्तनी । १२४। सेज्या के नीचे नित्य ब्रुहारनो । १२५। लीपनी सेज्या नित्य विद्यावनी । १२६। मांग्यागः नित्य । १२७। ब्रुहारनो फेर विछोना करनो । १२८।

श्रुत—सेज्या श्रकेली छोडनी नही । १२९। मंदिर के प्रागे ताता साकर माननी नाहीं । १३०। अन्य मार्गो वैष्णव सो गोष्ट कीरतन करनो नाही । १३१। ठाकुर पोई पाठे शोभनत करनी नाहीं । १३२। श्री श्री आचार्य जो कहत हूँ अरे वैष्णव ही जीरामी अपराध है । १३३।

विषय—गुप्तिमार्गीय गेवा पद्धति श्री गिद्वान के अनुमान अनुसार । १३४। (वार्ताश्री) का मकलन श्री हरिगय जी ने किया है । प्रस्तुत प्राग्य भी तनी प्राग्य सो विना वैष्णव को भगवत्सेवा में सावधानी रखने श्रीर सुटिया न हान देन सा उपाध विना नही ।

संख्या ४८६६. कीर्तन संग्रह, रचयिता—श्री हरिगय जी. (गोपुत्र, नागेश, धन-नोर), वागज—सफंद, पत्र—४४, आकार—६।१ X ३।२८, पक्ति (प्राप्त्युक्ति)—२०, परि-माण (अनुष्टुप्)—१४३०, पूर्ण, रूप—श्रेष्ठ, पद्य विधि—नवम, १०००, १००० के पूर्व, प्राप्तस्थान—श्री सन्वती भटार, श्री विद्या विभास, तालक ना, दि. १०/१०/१९५५ ।

आदि—॥ श्री गोकुलेंदु ॥ राग धंरव ॥

दीनो दरत सुपने मे प्राय ।
 छिनु एक सुख उपयो मेरे मन यद्यो वही हरि दिन्य दस ॥ १ ॥
 हाहा पाद परत हो तेरे यद्यो हूँ परि ह्यो मेरा दुःख ॥
 अब न परत मोपे न रह्यो छिनु बिनु भेटे छिय कति दस ॥ २ ॥
 यह दुख काहि बहो ताप तो दिनु मेरे ताहि दस ॥ ३ ॥
 कहा विनंबु करति जेबे को तोसो धरि सगि मोहे दस ॥ ४ ॥
 यह मूरति गरि रही हिये ने निदगत नही न हीर दस ॥
 उठि ए हे सुनि जिनती मेरी जसुमति सुत रविजन हो ॥ ५ ॥

मध्य—

अहो कबहू सुधि मेरी करत ॥
 अपनी ही दिति देखि नंद मत बट बननी मन मर ॥ १ ॥
 दीनी तारि दिनारि न्याम सब हो न जाने ने र ॥ २ ॥
 बिनु देखे छिनु मूरति मपुरी रह्यो न गो वे पतबी दस ॥ ३ ॥

पुनः पुनः जाना हो दिन की प्रानि पनी केने दारी टन्त ॥
रमिन गिनन सिनु नटे छनि । निरट जरी वही केने ठरत ॥ ३ ॥
सं—आरम पुन प्रगजो आनि ।

रमिन कता घर घर बज नारी राधा प्रगटीजानि ॥ १ ॥
धरं मेगन गात्र मधे ले महा महोछो मानि ।
प्राई घर बघमान गोप के श्रोपन मोहन पाएप ॥ २ ॥
पानि हुना बजन सिधु देओ सुंदर रूप बघानि ॥
नारत नारत है ररतारी होत न हरष छघानि ॥ ३ ॥
देत प्रमोम लोग चरननि छनि नदा रही मुण दानि ॥
रम की तिथि बज रमिक राई सो मरुत दुण हानि ॥ ४ ॥ पद ॥

विषय—सुन्दरमार्ति रमिने मे राम जानि वाने फुटकर विषय के वीतनो का सग्रह ।

संख्या ४८७ राजा नाम माधुरी रचरिवा—रमि बानग, वागज—देशी, पत्र—३,
प्रागर—३३ × ५१ टन, पदि (प्रतिपुठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८, दूगु, रूप—
प्रमीन, पत्र, तिथि—नागरी, तिथिमान—म० १८२४ वि०, प्रातिग्रथान—आर्यभाषा पुरत-
नारत (वार्तिन मरुत), नारी नागरी प्रचारिणी मना, वागएसी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः राधानाम माधुरी लीपति ॥
बंधायन वामन श्री राधा । भाहन मन मानो श्री राधा ॥
जय नान्य वीहारन श्री राधा । बज सुय विमार्गनि श्रीराधा ॥
निरत री बन्धा श्री राधा निवही वीध धन्धा श्री राधा ॥
सुदगम विनामन श्री राधा । निजकुंज वीलामन श्री राधा ॥
गोपी भवामानि श्री राधा । श्रीरुन उपामिन श्री राधा ॥

मध—

गुन रूप माला श्री राधा । श्री दाना अनुजा श्री राधा ॥
बदरिनी तनुजा श्री राधा । रमर की स्वामिन श्री राधा ॥
वरन निमीता मोन श्री राधा । बमोदट वातीनि श्री राधा ॥
नगीत प्रामिनी श्री राधा । रन रूप रही सुधि श्री राधा ॥
इति श्री राजा नाम माधुरी संपूरण ॥ मीनी धुवार वही ८ ववत् १८२४ ।

विषय—राजा नाम रत्न ।

विशेष ज्ञान—रचरिवा नाम का उल्लेख नहीं है । निरिवाण नवत् १८२४ है । ग्रथ
में अन्य कवी 'श्री राम पर्वत परीक्षा' (वागएसी टन) और 'वाग् मार्ग' (वनीमाधव
नर) के नाम का उल्लेख नहीं है ।

संख्या ४८८ रमि विनामन, रचरिवा—रमिबानग, वागज—देशी, पत्र—७८,
प्रागर—११३ × १३ टन, पदि (प्रतिपुठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०००,
गोपी म—दुगुण (मीने मीने), पत्र, तिथि—नागरी, प्रातिग्रथान—वार्थी नागरीप्रचा-
रिणी मना (मना—म० श्री राम मिथ्र एवोदिट, पंजाब) ।

आदि—

..... म कुंजिन तेज ह्यासन ।
पुन प्रवार अनेर रे दुगुणव धगपनि रंग विनामन ॥
बोत मही महीदेठ वई मुनि येम दिण मय लोक विनामन ॥

॥ अथ श्री रामचंद्रात्मनार ॥

॥ दोहा ॥

“हरि विलास” अथ नृपन लयि धरा धेनु द्यु धारि ।
विधि शिवादि सुर मग लं हरिते हरी पुगन ॥

॥ छंद सुंदर ॥

करुणाकर देव “विलास हरि” तव कौरति वेद पुगन व्रगामी ॥
अधमी क्षितिपाल भये सिंगरे पर निदक लपट श्री अभिगारी ॥
कमलेश जगेश कलेश हरी तिहि श्रीमत् मोद हर्ष नम पायी ॥
अवधेश निकेत स्वल्प धरी अमंगरि मित्राण करी निज पायी ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

हरि ‘विलास’ सुर हेत हरि तजि निज धाम सिंगर ।
कोशलेश के सदन भे लोह शाय अवनार ॥

:०: :०: :०:

॥ छन्द ॥

केवट हिसक जीव ताहि प्रभु कठ लगायो । शव पलभोगी गदा गीघ दंडुंड पडायो ॥
शवरी महा अपुत्र तासु फल हरपित पायो । फामी श्रीघी चपन बटक मरबट छपतायो ॥
तिहुं लोक दुखद निश्चर अमित रण निपानि पुनि गरि हई ।
भज “हरिविलास” रघुनाथ पद को कृपात करुणासई ॥१४॥
इति श्री हरिविलास विरचिते हरि विलासाख्ये ध्ये श्री राम चरित कर्ण ॥
अंत—॥ अथ श्री कृष्ण चरित्र लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

मंगल मूरति गणपती प्रथमहि ताहि मनार ।
“हरिविलास” श्रीकृष्ण जम कहत जयामति गाय ॥

:०: :०: :०:

भरिण कंचन धाम विचित्र बने रथ नाग सुरग रुने ममुदाई ।
चहुं श्रीर कुटी द्विज हेरि धरयो मन जासि परी हुउ रूप टासाई ।
सब भांति गिरापति वाम भयो दन वाम गई उत इच्छ न पाई ।
गृह जाल द्विजागम नारि लप्यो सविलास धरी तित दोसि पडाई ॥१५॥

:०: :०: :०:

—कृष्ण

विषय—राम और कृष्ण चरित्र वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ के आदि के ४ पत्रे श्रीराम नाम के अर्थ में लिखे गए हैं। ग्रंथ का नाम भी ठीक ठीक ज्ञात नहीं हुआ। अन्तर्गत में ‘हरिविलास’ लिख दिया है।

संख्य ४८६. दत्त गिवाण ना, नरिणत—... श्रीराम...
४५ आकार—६३ × ६३ इंच, पक्ति (पनिनाट)—...
अपूर्णा, रूप—प्राचीन, गद्य, निधि—नागरी, लिपि—...
आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी मंडल (दार्जिलिंग), बंगाली ।

कारि—न बांधें कि नाच नीचें मे जखें नी स्थाम तलक हरिगिज हाथ पर न लेवें जो निगत नोन होवे वान के टर्से उपर हाथ के लेवें ती टेट पहर गिति तक चिरागन दोमतावें कि वान पर है निगने वान नानि के पानत पर बांधें पहर पीटली रहै फिरि बाज ले तर्से उपर हाथ के लेवें नी दो नोनो दोन दोन रटने तत्र रगें कि बाज पर मोहोर डारि कर साफ होवें सेर चरि करि चिनगी रगानि उंठारें लो अडाई पहर होवें जोम तरं कि जिरुकि हूष्रा है ईम्हो तरं ह्मेतां अमल में तारं ॥

मद्य—श्रीर गदरदारी करे कि अटे सें जाना न होय तो जानवर वटत डारने के घ्राजिज न होवें राट देने पर मोहोरे ती सुगार वु और सुगार सेकु श्रीर चरग चरगे लेकु वटत सुयेंठ के घ्राभा ताग आउवाग देनं जो जानवर तर्हं पाली होई दोनो हाथो सं पकरि करि जैसे रयाक के तर्से परन्ते है पर मोहोंग अपने मोहो मी लेकरि तर करि विच हलक जानवर के डालें ॥

अन—मत्तो मारे हुए कुं तिनिया कारक तिनि रतो देवें ईलाज चांसी का वार आदमी के गिरजे जग करि राय बीगती आदमी के पेसाव में मिला करि नास देवें ईलाज श्रीर आजारो का माफत निरहित के है नि करि अमल परें तमाम ह्वावरतुर लोकार का दगाय हुआ हसन शलो वा वा गयत १८१९ मीनी बजार बदी १५ मुकरवार वार फारसी से होंदयो फीम ॥

विषय—उन ग्रय में जिजारी पक्षियों, उनके रोग श्रीर चिकित्सा के गवध में लिखा है ।

विशेष जानक्य—प्रस्तुत ग्रय के आदि ने पांच पवे नहीं हैं ।

सूत्र ४६०. गगा प्रथोय गीता, रगिता—ठिम्मति सिंह, कागज—देशी, पत्र—१७, आकार—११ $\frac{1}{2}$ × ७ $\frac{1}{2}$ उच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुदृप्)—५.१४, पुष्प, रग—शान्ति, पत्र, निपि—नागरी, रगनाकाल—स० १८२५ वि०, निगिवात—स० १८७८ वि०, प्रातिस्थान—तुवर नक्षत्र प्रताप सिंह, गाम—माहीपुर (नागरा), पौ० हृष्टिगा गान, निदा—अनामदा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

गननायक के मुँड अग्र सुर मिधु कमल छवि ।
हाथ न अकुम पात अर्म छर उदित उर्द रधि ।
द्विपनि द्यागय सव्य रदन कारन जगपोषन ।
भव मुत्रां विषहरन दीन दारिद ददा सोषन ।
ननि जूत मंदूर कुमनि समं हिमिकर भाल मयूषन ।
दुष हरन तूफ अटडव्य जिमि इदुर बाहन गजवदन ॥
:०: :०: :०:

॥ सप्तोया ॥

उज्ज्वल प्रियत उन कामद तरंग जागी दारिद चिदागिके को देवतरु माया मी ।
ताप को दुःखर नान देव लोह को वेदान जग कमतागन के त्रिमता पतावा गी ।
मनिमन माननर रटिन मरगन पानि बोधी भव भाषिनी की रचि अभिलाषा सी ।
दुद दुःख मार्गी कि मान शकदान छवि मंगा ज तिहारवारी वारि भागती की भया सी ॥ ४ ॥

८० :०: :०:
मंन—'ठिम्मति' रितवें दीन हं जेहि प्रकार मनि मोरि ।
मायो दुःख उन जन्ता चरन दादि कर जोरि ॥२७॥
:०: :०: :०:

५ २ ८ १

वान नयन वसु चंद जून मंघन् मे प्रवतार ।
ग्रंथ भयो आषाढ यदि छाठे मुन बुधवार ॥२६॥
श्रेय करन संकट हर्गन मुन नर करन पुनीन ।
नाम भयो यह प्रथ दो "गगा बोधित गीत" ॥

इति श्री हिम्मति सिंह धिरचित गगा प्रबोध गीता गमानं ॥ शुभमस्तु मंघन १८२८ ॥
विषय—गगा का माहात्म्य वर्णन ।

रचनाकाल

५ २ ८ १

वान नयन वसु चंद जून सयन मे प्रवतार ।
ग्रंथ भयो आषाढ यदि छाठे मुन बुधवार ॥२६॥

संख्या ४६१. वनिक प्रिया, रचयिता—नाना हीगानान (छत्रग), पत्र—२४,
पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२३, पूर्ण, रूप—नया, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—३० भाग-
प्रसाद अग्रवाल, हेड क्लर्क, पुलिस आफिस, राज्य छतरपुर ।

आदि—सिद्धि श्री गनेसायनम्हा :
श्री सरसुती देवी नम्हा ॥ श्री परम गुरभेन्महा ।
अथा ॥ श्री वनिक प्रिया । लिपते

॥ चौपही ॥

गुर गनेस कही सुषदेवा ॥
सरसुति सकल यनावहि भेवा ॥
वनिक प्रिया बनकन में छियो ॥
दिय उजवार हाय कं दियो ॥ १ ॥

मध्य—पृ० २३
कछू पावन ॥ वस्त बोध सब जात परत उपजं कम मांघन ॥२६५॥

॥ दोहा ॥

वस्त बंचिये जंठ में जहां जिवागी होट ॥
साम सहित पार्च गुनी गयो जानया तोट ॥२६६॥

अंत—पृ० ४६

विषय—वस्तुओं के प्रय विप्रय के मवध मे वर्णन किया गया है । सुखक वा दुःखक
से सबध है ।

संख्या ४६२. शालिहोत्र, रचयिता—रूनाग पाठर, जानक—देवी रूप—
आकार—६ × ४ १/२ रच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाता (छत्रग)—२३ पक्ति ३०—
प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—५० तिरहुतार बोधन "वस्तुमवध" १९२८
सभा प्रचारक, मंत्री), ग्राम—श्रीभीली, पोस्ट—बलरामगंज जयपुर, जिला—बलरामपुर ।

आदि— ॥ सौरठ ॥

स्यामरंग जो होई छी लान्द स्वामे परत ।
सामे सचयन बोई तायो धरि करं मारत ॥

एक प्रंट जो होइ कं पुनि तोनिउ देदिए ।
 ठो राणं एण होइ तीन घोर नहि लीजिए ॥
 घोने की घीवा तरे की गरदन पर देपु ।
 मम्मन निर पर हाउ लो तावो दोष विरेपु ॥
 इनि श्री नातिहोत्र हुलाग पाठक विरचिते अमरी रंग रूप प्रकाश समाप्तः ।

:०:

:०:

:०:

अंत—तिरहे बाप चौबहे शीव । पन्नुह रान गाठि की सोव ॥
 मनहे जीन अठरहे परे । हलक दोउ वीशी ए चुरे ॥
 मेर पान चहे रानिमो तेई । तेहीमान वाहनि मो छैई ॥
 सेर अडाई कटि सो लीजे । मेर एक तालू मो छाजे ॥

:०:

:०:

:०:

—अपूर्ण

विषय—मन्व के भेद और दोष गुण वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—यय में पत्र ७ पत्रे, सरया १० से लेकर १६ तक अम से है । अतः
 घटित है । गननाफल, निपिपान अज्ञान है ।

सख्या ४६३. गणेश नया, रनयिता—हुलाग दाम, वागज—देशी, पत्र—१८,
 आवार—६ × ६ × ४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—३२४,
 पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, निपि—नागरी, गवत् १८८७ वि०, प्राप्तिस्थान—१० देवनाथ उपा-
 ध्याय, ग्यान—गैतकुरी, पोन्ट—अम्मीर, जिना—सुनतानपुर (अवध) ।

आदि—॥ ६० ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ गणेश जी की कथा लिख्यते ॥
 संकट सरदन करी गीरी सुत गणेश ।
 विघ्नहरन अर सुभकरन फाटन साफल कलेश ॥
 सुमति देहु कुर्मतिहरन फाटन फटिन कलेश ।
 सुद नर मुनि मुमिरत री प्रथम नाम गणेश ॥ १ ॥
 मुमिरन करी गणेश की हरि चरनन चित सार्ह ।
 संकट चौथि महिमा सुनी कथा कही समुन्काई ॥
 :०: :०: :०:

अंत—

सुप सुगज महीपनि कान्हा । मन वाछित फल गणेशहि दीन्हा ॥
 रिद्धि मिद्धि धन धेनु अपारा । घरमी धाम सुत संपतिदारा ॥

॥ दोहा ॥

गणनायक कथा गह नमैषीती भद्र विलास ।
 जया बुद्धि भाषा रची जट मति "दाम हुनाम" ॥४२॥

इनि श्री गणेश जी की कथा संक्षेप चौथि अंत मद्रुर्णः ॥ श्री ॥ श्रीरन्तु ॥ शुभं भवतु ॥
 संवत् १८८७ ना फागुन मुर ११ जोमे श्रीभुज नगर मन्वे गिण तंत्रवादी धीमजी ॥

विषय—गणेश कथा का वर्णन ।

संख्या ४६४. गीरा वादन पविनी चौपाई, म्चारिता—दुर्गा, वामन—
 पत्र—१०, आकार—१२ १/२ x ८ ३/४, पक्ति (प्रतिपद्युक्त)—८८, वर्णमाला (अक्षर—)
 ६६०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, निधि—नागरी, रचनामान—१० १६४ दि. २ दि.
 स्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी मना (याज्ञिक मठ), बागी ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ इहा—

सुप सपति दायक सदा । मुधि बुधि महिन गरोज ॥
 विघ्न विदारण सुप करण । पाहलो वृन प्रण मेग ॥ १ ॥
 ब्रह्मा विस्न सिय समुपे । नित नमरु जम नाम ॥
 ते देवी सरसित तरो । पद युग पर प्रणाम ॥ २ ॥
 पदम राज वाचक प्रभृति ॥ प्रणामो निज मुद पाय ॥
 केल विसू साची कया कानन ब्राध दाय ॥ ३ ॥

नवरस दायेन वानवा सयण नमा मिरागार ॥
 कवियण मुपि करज्यो कृपा घदता वचन दिचार ॥ ४ ॥
 वीरा रस सिगार रत हामा रत हित हेज ॥
 साम धरम ते साभलो जिम होये तन तेज ॥ ५ ॥
 साच शील इहां भापीइ जनु प्रमाद मुप होइ ॥
 पदमणि नारि पालीयो सभलि ज्यो मङ्ग षोइ ॥ ६ ॥
 साम धरम जिम साचव्यो वीरारत सुप विरंष ॥
 सुभटां मां सोभा लही रापि पववटि रंष ॥ ७ ॥

माध्य—

सूर सरणाइ सिधु साद परघत माहि पटे परमाट ॥
 हठीयो आलम शाहु अभाग द्रुट जुरपा गरि जारो जग ॥ १ ॥
 रतन सैन पिए रोस चढयो दाठी आलम आवी पण्यो ॥
 शुभट सैन सज कीघा सङ्ग सबल वत वोले दिपसव बङ्ग ॥ २ ॥
 राणो जी पातिसाह ने दूत साधे फहायो साह भले वधुं कावे मही ॥
 नासिम जायो पिस जो रही नास ताप नरने पोद भूंडा वोधुं एरही जटोइ ॥ ३ ॥

अंत—

पद सरोज वाचक परधान..... ॥
इमि भणइ हेम रतन ननि हपे भरो ॥ १ ॥
 संवत् सोले सोले मे पद्मता..... ॥
 पुहवी पोठे घणू परग की सवल पुरी सोहे मादनी ॥ २ ॥
फ प्रताप तस मही सन्वटि निघा ॥
 कावेड्या कुल तिलक..... ॥
 ...शचिद्ध सणराह तस भाइ ताराचंद दतनी जारि ॥
व सङ्ग कीघा पाघरा तस आवेस ह्रीं मुभ ।
 साम धरम अति सोहायणी वीनारत मिरा (नार) ॥
 शोय र..... ॥
 सुप संपद मिल भणता भावठ दूरे टले..... ॥
 ॥
 बटसत षोडस गाथा बंध सुप्यो तिसी भाव्यो..... ॥
 वरो ॥ ७ ॥

मम धरम पालना मदा मगती श्रापे ॥

..... वरे ॥ ८ ॥

इति गौरा बाबल पदमणी नीपाई ॥

विषय—गौरा बाबा और पतिनी के तथा का वर्णन ।

सदया ४६५. बंन बर्नामो, रचयिता—हेमराज, (मदन हेमराज), कागज—देषी, पत्र—०, मास—०३, ४, ५, रचन तिथि (प्रतिपक्ष)—०, परिमाण (अनुष्टुप)—३१, पाठन, रच—पुराना, पद्य, विधि—नागरी, रचनाकाल—मवत् १८१६ वि०, प्राप्तस्थान—१० मुम्बई नौ शुकन, ग्राम व पोस्ट—पच्छिम तरींग जिला—इलाहाबाद ।

प्रादि—

पीर पराई न जानं धरो यह बरन बामुरी गैल परी है ॥ ७ ॥

श्रोतर मोतर छोग करेनि बसयोई करे विपनाद भरी है ।

श्रोन गुनं गुर सोम धुनं मुप मोन बहा थकि गोन धरी है ।

ताननि ताननि वेधत है नन मानन मं मन तेत हरी है ।

पीर पराई न जानं धरो यह बरन बामुरी गैल परी है ॥ ८ ॥

बंन न देत ह (? है) रंन दिना यजि मेन भई पढि मत्र पुकारे ।

पीर न जानं श्रधीर ॥

:०:

:०:

:०:

(? श्रय) रा रमलेत श्रघात नही निम बागर या रस में जुरली ।

श्रय तो चुपचाप रहे वज बरनि राम बिलारा निसा कुरली ।

भली नाच नचाई है गोप बघ तगि मोहन के मूष तं मुरली ॥१२॥

बंन न देत है एक धरी निम बागर सोस पे गाज तरी ।

गुन गोविंद के रस राव रही सो वही वज बाल निसा सतरी ।

यह लाज को दाम नही नहि नैक ग. ॥

:०:

:०:

:०:

..... म्याम करी हमके जु दुहागनि के दुप दीनी ।

सर्वस छीन लीयो तेह मारो दीयो नहि नैक कहा श्रय कीनी ।

कोनहि जन्म को बर हती वन घालनि तं ततकाल ही लीनी ।

या बरियां महि बरन बामुरी प्रीतम प्राण कियो जु श्रधीनी ॥

बंन को बंन बघायो श्रगे तू हने मप लागि भई जु सयानी ।

चेटक लाय लगाय के मंन री नंनन लाज लगी मन श्रानी ।

देम बिदेस बदीत भई भली नीत में श्राय श्रनीत ही ठानी ।

पीय नियो बनि प्रीन हयो भई दीनी उधारि धरी हती छानी ॥

मानन में किनबयोई करे निम बागर नाद गई न सरी ।

दुप दादन दे दुप दूर भई हरि प्रीनम प्यारो लियो हति री ।

करी बाबरी गोप बघ वज में तन सर्वस छीन लियो श्रमिरी कमरी ॥

जमुना तटि गोघन ग्याचनि मग बसी श्र.....

:०:

:०:

:०:

..... की ॥

भेद नियाचनि छेद करे पर वेदन जानत बंसी निया की ॥१६॥

मोन के कोन में कोनी ग्हे निन छोग व्हे गुग्गुद संतावे ।

जागत मोघन रंन दिना री बिना पिय प्यारे के नैक न भावे ।

बंसी निगोडी तू होड के वाजत वाजत बावरी लाज न छाई ।
तोहि सुहागिनि स्वाम करी तो इने पन चाम के दाम चनाच ॥२८॥
श्रीवरु आनि परं धुनि कानरी सग सर्व पति की तजि भाज ।
लाड भरो पिय पाय सुहाग पियी अघन मयन..... ॥
:०: .०: ०:

..... की भरी ।
इतने मधि पूरन प्रेम मे मोति अचानक चरन दगो चरी ॥२९॥
कानि परी धुनि आनि जवं घर के अगर्ना न हठावत है ।
अकुलाय हिये मधि हक उठे सुरताननि मे चित जायन है ।
घर काजहि भूलि श्री फूलि मनी रम भूलनि ऊपर भायन है ।
अगुरी दिये की लागि कानि रहे दजि चागुरी लाज गमायन है ॥३०॥
गारी दे हारी सवै इन दोति की बंम की गोत नजायन है ।
कोड कोरि कहो किन लाय फहो इनके जिय एव न. . ॥
:०: :०: ०:
..... चीन की ॥३०॥

॥ दोहा ॥

बंन वतीसी प्रेम सो सुनें चतुर चित आरि ।
ताके पद अरविद पर भवर "हेम" बलि जाहि ॥३१॥
अठारा सँ उगलीस का सयत जेट मुमान ।
शुकल पक्ष गुर द्वादसी बंन वतीस प्रकाश ॥३२॥

इति श्री मथेन हेमराज कृत बंन वतीसी सपूर्ण ॥ लिपत मथेन हरिचंद्र प्रकाश प्रकाशक ।
—पूर्ण प्रतिनिधि

विषय—शृंगार विषय की रचना है जिसमे वंशी के प्रति ग.दि.के दोष का उल्लेख किया गया है ।

रचनाकाल

१८ १९
अठारा सँ उगलीस का सयत जेट मुमान ।
शुकल पक्ष गुर द्वादसी बंन वतीस प्रकाश ॥३०॥

सख्या ४९६. अजामिल कथा काव्य—देवी, पद—२४ आंश—१५ × ३५
इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—९, परिमाण (अनुष्टुप्)—९६९ टां न म—प्रतिपद—३०
लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० छोटकधर द्विवेदी ग्राम—अहमदी पोस्ट—म.प्र. २३
जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥
निगमागम्य रूप यत् गोकुले बल्लवी सुत ॥ प्रेमगायं पररुच्य वटे गोदावरीनि ॥१॥
पुराय रूप वन दिखे नरहरि नाम रूप एक तिह विराजत है ॥ जाके नार ते अगम्य रूप की
भजत है ॥ विशेष ते उत्पन्न भये अरु अपनी मर्यादा दिये उनहीन साजय रति वेदरु री अरु
हे ॥ जिन मर्यादा को उल्लघन बियो ऐसे भक्त को रक्षण सी पेटल ॥ अगम्य रूप की रक्षा
अजामिल की रक्षा करी ॥ अरु देवतन बियो विशेष रूप य हारु की दण बती एसे हट हो ॥
करी ॥ अजामिल को भक्त ता बिपय दूता बही ॥ जिन दुख रनेट बरि कबेन ते अगम्य रूप

तोनों ॥ अर इन् भगवत्पुत्र है ॥ नाम मान करि श्री वाचन जू को सेवक है ॥ याते इद्र को देव को सेवक शक्त का रूप अर जोषन श्री भगवान के आधीन है ॥ तहा पहिले तीन अध्याय करि अज्ञानिन का कथा दर्शिन है ॥

अन—नादिन अरन्तिके श्रीहृषण को आश्रित ऐसे जन प्रति शक्ति सत्ते तिनको देवतहू उरपन है ॥३६॥

अनने से जन्म जातो एने प्रगन्त्य रिपीनर मतायानल पर्यंत विषे वेडे हरि की पूजा करत मने यह उक्तिन मोमो कहत मने ॥३७॥

॥ श्लोक ॥

कारुण्यवान् कर्मयोगनात्र रमाकलत्र शिशुगोपमित्रं ।
दीने कृपान घृत चन्वया न भजतु विष्णुं द्रज राज बाल ॥
इति श्री ब्रह्मसूत्र विदुषु मंत्रेय स्यादे चतु .

विषय—भागवतात्मन अज्ञानिन की कथा का द्विती गद्य में अनुवाद किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—अन के सत्ता २ में ५ तक के पत्ते नष्ट हो गए हैं । रचनावाल और विविधान अज्ञान १ ।

संख्या ४६७ अदधुन गीता (अनुमान में) कागज—देखी, पत्र—१०२, आकार— $८\frac{३}{४} \times १\frac{३}{४}$ इंच, पत्तिका (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुपृष्ठ)—२८२२, खडित, रूप—प्राचीन (जीम), गूदा, तिनि—नागरी, प्राप्तिस्थान—कुंवर लक्ष्मण प्रताप सिंह, ग्राम—गाहीपुर (मोताजी), पिन—२६१०, जिला—उत्तरप्रदेश ।

आदि—..... ही ॥ जो ध्रु ह मर त्याग कर बन को गया है ॥ तब राजा अगवानोया को आज्ञा करत भया ॥ जो द मही ध्रुह के निकट जाकर कहो जो त्रिपरा राज का लहू ॥ अर त्याग ना त्याग कर ध्रुह शरण करने इन बात के सो अचरज ॥ अर अचरज ना देता है ताने राज क्या करना है ॥ गौतम का दरमन करोगा ॥ बहुउ राजे कहा अरधराज देना हो तो भी न माना बहुउ कहा जो गारा राज देता हो ॥ तो भी ना माना ॥ बहुउ जमना के तीर पर आद कर न्यून करी ॥ अर तपशिया जागा करने ॥ अर इही निमचा कीया जो मकर दिनु विषे एन विगन आतम सत्प है ॥

अत—अर प्रारुह को कसे मुच करो ॥ तब वाशिष्ठ . . . योग विना जोग विषे जुटना कउन है ॥ तब अदधुन कहा जोग मेरा गुण तू कहे है ग्रामण कर अर में वही हो लवाइमान होइ कर मोदि रू मर तू कहे है जो प्रारुह को भक अर में तहो हों पवन को सुषे नही नीचे की छोटी । हे वृध वृध शतपी ऐसो जोग कर जो मभवही है ॥ जोग तेरा पट है जो मन की बाहर तै पेच अर अरनर नाग अर जोग मेरा अरपट है जो अरनर बाहर निव है ॥ तद वाशिष्ठ कहा :० :०—अपूर्ण

विषय—योग और ब्रह्म ज्ञान ना वरान किया गया है ।

संख्या ४६८ आनम प्रयानम, कागज—देखी, पत्र—२०, आकार— $८\frac{३}{४} \times ५$ इंच, पत्तिका (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुपृष्ठ)—१३७, पूर्ण, रूप—प्राचीन (जीमंजीमं), गूदा, तिनि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री गूनादे गान्धर्वपराम जी, मुठ्ठी—मठर्याव, टाकग्राम—उत्तरप्रदेश, जिला—आगरा ।

आदि—... आदि अदधुन अरन अचन ॥ परम मनोदर कदनाम कबीर सुरती शेर मताए न घनी अमदाग को दाया में सीया ते बानी आनम प्रयातम को ॥

॥ श्रीपाई ॥

इंगला पिंगला सुपमना ऐही वस्तु है नारी नीनी ग्रेर टरर जीनेगी मरणाही ।
 परे भ्रागतरे मजन कग्ही तीग्य इगत पिंगना सुपमानी । ।
 इंगला भ्रगीनी है । पिंगना पानी है ।
 सुपमनी पवन है । रही तीनी एक ठवर होत है ॥
 देही के बीचार करतु है । एही तीनी एक ठवर रत्न है ॥
 जाहा रभीता दभ्रा त्रियेनी मग में है । भ्रामन ना भ्रान पनी होना है ॥

भ्रंत—भ्रातमा वचन

तव भ्रातमा कहै की जत्र श्रीरटी भ्रनं करेगा ।
 तव जेते नरीर केते ज प्रनं करेगा ॥

प्र भ्रातमा वचन

तव प्र भ्रातमा कहै की जेते तेना नरीर के है ।
 तेज है पवन पानी भ्रगीनी है ।
 सो सभ पंड पौंड के प्रहोमंड बीप मे ले जान है ।
 तव नीर जन जोती मे ममा जात है ॥
 तव प्रहमट मेद जा बीलेगा ।
 तव एक नीरजन पीर बार है ।

सोसभ शीस्टी मभ्रथा के पाग नीरजन जाणा ॥
 सकल मे गुरु साम्रथा के गुरु साम्रथा शीना ।
 भ्राधीकारा एते वनवनी गुरु भ्रातमा प्रभ्रातमा पनी संघानी ॥

सत गेय कथीर साहेय के मान्हक गुरु रामपुरन ॥ एते वननी गुरु रामपुरन भुन भुना साहय
 सो बीनती गुरु सो वंदगी वंदन है ॥ टंडायत है भ्राछर मात लेय नद जोरी इटाव धन मास
 बार दासवत लीवा है हरीदास ह्यारक ॥

विषय—भ्रातमा श्रीर परमात्मा के मचाट के रूप में साहयार्थिता साहय प्रतीति
 गया है ।

संख्या ४६६. उजागर प्रगास, गगज—देगी, पत्र—८, प्रगास—३१६ × ६६, १०
 पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुष्टुप्)—६४ वृत्त—प्र, च, न, द, ग, नि, त—१०
 लिपिकाल—स० १६२३ वि०, प्राप्तिस्थान—श्रीगुरु भोजानाथ जी मठ, भोजपुर, उत्तरप्रदेश,
 ग्राम व पोस्ट—धाता, जिला—फतेहपुर ।

भ्रादि—श्री गनेस जी साहाइ नमः लीपते उजागर प्रगास ॥

धन गुरुदत्त धन गुरुधना देवस रूप ।
 उजागर प्रगास कहैउ धरनी सत मरु ॥
 नमो नमो गुरुदेव जी नमो छापी मत रूप ।
 तुम ध्यावत सय देवता तुम ध्यावत नद मंत्र ॥
 तुमहीअ दानव देव ही तुमने मरुद बनार ।
 तुमही सब धर रहत ही नीरमन रूप रूप ॥

भ्रंत—

भगती हर भगवान ही रत्न उरसो रूप ।

धधवार धस भ्रनसो म्हा दानव रूप ॥

भ्रोधवीद मन तरं गयो म्हा रूप ।

इती श्री उजागर प्रगास गरंभ म्हापुरन ।

विषय—जान और भक्ति वर्णन ।

संख्या ५०० उन्नत मातिका श्री विठ्ठलेश्वर राय जी के घर की, पत्र—६, आकार—
६ × १० १/२ इंच, पत्रिका (प्रतिष्ठा)—३६, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६३, पूर्ण, रूप—साधारण,
म.प. लिपि—नागरी, प्राणिमयान—श्री मन्वती भजार श्री निष्ठा विभाग, काँचरोनी, हि० व०
८६, पृ० न० १ ।

आदि—॥ श्री कृष्णाय नमः ॥ अथ उत्सव मातिका श्री विठ्ठलेश्वरराय जी के घर
की० ॥ मादपद द्वारा पक्षे प्रदमी श्री जम्गाटमी । प्रातः कात सप्तमी को बंध पल मात्र होय
तो उन्नत नीमी के दिन करना । प्रहर एक रात्रि पाछिली रहे तब उठनी । प्रभु की जगाय के
मंगल भोग धरनी । मंगला आर्त्तो पनी रात्रि को सिगार होय सो चउो करना पोरि पाठ के घोती
उपगना ओटाए पुंम की तिलक करि । पाछे पचामृत स्नान करावनी । श्री स्वामिनी जी को
पनामृत स्नान नांटी करावने ।

मध्य—प्रबोधनी के दिन रात्रि को भद्रा होइ तो, दिन मे उत्सव करना नाही । रात्रि
को उन्नत करना । तागी विधि । पहिले मंदिर मे सर्वथ तिचारो, अंगण में चोक कोठा मे नही ।
पाछे सोरठ गउरो को मध्य बनाइ बीच मांगा माचो धरि आस पास दीवा आठो विसि धरि दीप
प्रगट करि प्रभु को उहां पधराइ नमस्कार करिये पाछे यह मंत्र पढि तीन बेर प्रभु की सांगा माचो
उठाये मंत्र—उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गीर्वाद त्यज निद्रा जगत्पते ॥ त्यया चोत्थायमानेन उत्थितं भुवन-
त्रय ।

अ—आवली पूर्णमासी के दिना अश्वय पर्व की सामग्री गोपी बल्लभ मे सीखोरी इह
गामथी करेगे । माटी पिछोटा नए । कमुमल पाग कुलह पहिरावने, भद्रा न होइ ता समय
नित्य करि अद्यत लगाइ रागी बाधी, गुल पापडी सधानां भोग सर्वापये ॥ आर्त्तो नही ।

इति श्री उत्तममानिका श्री विठ्ठलेश्वर राय जी के घर की संपूर्ण ॥ शुभं भवतु ॥
वत्पारुमन्तु ॥

विषय—गुट्टिमागीय पद्धति के अनुनाय वर्ष भर के उत्सवों के निर्याय करने का वर्णन ।
मप्रदाय में गात परी की मेवा भावना के अनुनाय अलग अलग मेवा उत्सव का प्रकार प्रचलित है ।

संख्या ५०१. आंधवनी अरज, तागज—देशी, पत्र—५, आकार—६ × ५ १/२ इंच,
पत्रिका (प्रतिष्ठा)—३० परिमाण (अनुष्टुप्)—१००, पूर्ण, रूप—प्राचीन, पत्र, लिपि—
नागरी, प्राणिमयान—नागरी गार्थिन्य मम्मेलन, प्रयाग, डलाहावाद ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ आंधवनी अरज लयी छे ।

आंधव अरज अमारी मामलोरे ।
के जोहरने जई मोहन मुकीमन नो आमलोरे ॥ १ ॥
आधो मे अज्ञेय हीय अमतमगा मुरई नोहा लीऐरे ॥ २ ॥
रग्रे राधो रो मवलना वीज उपर मन वालीऐ रे ॥ ३ ॥
पाये नमार शीम दीचम घणानी छे ऐ वातरा रे ॥ ४ ॥
आरी रती छे होठ हई डेफ घण जाए धन रानडीरे ॥ ५ ॥
पया जई कीजे गोठ मनमान्या वीनानी माध वीरे ॥ ६ ॥
वानरनी के वाए पीरन जायो कौठ संननोरे ॥ ७ ॥
जोर असे अरताए अवनाना गावर वाएविये ॥ ८ ॥
गाणिये पोतानी दाम दोघ मुत्र ने मत्र शुं दग्गारुजि रे ॥ ९ ॥
जेतो पुगी आम जाजां रमता अमे मुरंगमारे ॥ १० ॥

कोर्पा ताते वने में पुष्पिता का वेग दिया है । उनमें म० १०४१ चिया है जो निषि-
कृत है । इस रूप में चिया को निषि-कृत को देखते हुए बहुत प्राचीन है । उनमें दो स्वरूप
पाने जाते हैं । एक को विषय वर्णन में तीन चिया पुष्पिता के लेग में । प्रथम गद्य वह भाषा है
जो पत्रों के पृष्ठों भाग में लिखी गयी इसमें चिया के चौर वंदी जाती है ।

जिम भाग को चिन्दाया करते हैं । इस भाषा में चिन्दा गये ओपधि एवं शशुन पर मिलने
की चिन्दादिगिन चिन्दाएँ मिली है पर चिन्दा नर मिलिरहित । चिन्दा पर मिलियाँ हैं भी तो बहुत
प्राचीन । प्रस्तुत चिन्दा में चिन्दा नरन प्राचीन पडी है । अत इगला गद्य भाषा चिन्दा की दृष्टि
में महत्वपूर्ण है । पुष्पिता के लेग में प्राचीन यदी योदी का पुट है जो महत्वपूर्ण है ।

संख्या ५०३ तथा चित्रगुप्त की, तागज—देवी, पत्र—४३, आकार—६३ × ४३ १/२
द्वारा, पत्रिक (प्रतिदृष्ट)—६, पर्य्याग (चित्रगुप्त)—१६३, चिन्दा, रूप—पुराना, पद्य, लिपि
—नागरी, प्राचिन्यास—१० महाराज दीन जी, गाय—जमुनीपुर, पौ०—हनुमानगज, जिला—
द्वारादारा ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ पोथी कथा चित्रगुप्त कं ॥

पद्म पुराण कहत है काएथ की उत्पत्त्य ।

चतुरानन चीता भए उपजे चीत्रगुप्त ॥

चीत्रगुप्त कं कथा पुनीता । जो नर शुनहि सो परम श्रजीता ॥

धन्य जनम तेहि नर कं अहर्द । पुजहि भाव शक्ति सुप सहही ॥

पद्म पुरान श्रगम चीत्रतारा । को पोर्जद को देपं पारा ॥

ताते कथा गुप्त यह रहई । प्रगट न जानं को अरा कहई ॥

तव भाषा मह कीन्ह उच्चार । गर्नं सभं सकल संसार ॥

सो पर श्रीपा नाथ जब कीन्हा । जगदवा इच्छित फल दीन्हा ॥

॥ दोहा ॥

मुमोरी देवी दुर्गा जं कल्यानी मातु ।

सष्टीमी आदी निरंजनी जं जं बोली श्रापु ॥

कथा चीत्रगुप्त कं पहत सूगत सुप देन ।

जानी पुरुष चीचारीहं जेहि सू सुप सर्वत्र लेन ॥ २ ॥

चित्रगुप्त कं कथा प्रगामा । मन वच श्रम मंभु कं आसा ॥

दाना भेहे चीचिम माही । आदी निरंजन श्रापु कहाही ॥

अन—

धर्म राज मुनी मन के वचना । चीत्रगुप्त सत बोले वंन ॥

गाय रहा सीवदान जो नाड । तारर करम मुना कीछु भाड ॥

मुनी नाथ में गम परभाड । पुजा मोर कीन्ह उन्ह राड ॥

मुम

:०:

:०:

:०:

—अपूर्ण

विषय—चित्रगुप्त की कथा का वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञापन—यस के तीन और आठ के पाने मिले हैं । स्नानादान और विषिकान
रचना है ।

मरगा ५०५. सिमान निवाही ना भगवा, तानज—देजी, पव—१ (सुर्गांतर),
 फातर—१२ x १३ इन पति (पतिभूट)—३५. परिभार (अनुभूट)—२५. पूरुं, रूप—
 प्राणि, पद, तिनि—नागरी प्राणिभयान—११. नागरीप्रनासि। सुभा मारासुसी (दाता—
 श्री मरुन उरुवरुगग प्राणी मान—११. पोस्ट—भाटपार रानी, जिना—सांरुपुर ।

श्रादि—श्री मूर्याय नमः ॥ विसान निवाही के नमरा ॥

प्रथम श्राउ उठि बोले सिमाना । देग विदेग हमही ना जाना ॥
 अपने कर उपगजो धाना । भोजन करिले माकू बिहाना ॥
 श्राउ मान पवारो नरना । दृष्टअनि घटि डोलावे दयना ॥
 भादो मेघ घटा घन गरजा । धरता पाव देत विभ्रा वरजी ॥
 तबे श्राउ उठि बोले सिपाही ।
 देग विदेग वी भागा पटो । नेताजी तुरकी पर चतो ॥
 पाव लवग कपूर के दांरा । पहिगे सुदर गनीना चीरा ॥
 पाव घोव जीगे ना जाना । तुमपर नांत उठि ताजो पराती ॥
 अयमो गाव जगाती ना पाजो । महिये घेरा तिनि बां श्रावी ॥
 तोहरे घेन के उणि तुरावां । ने नुजा तोहरे घर श्रावी ॥
 तोहरे रनिहा बोले अछोधाहू । दादा धइते पिमादा जाम ॥
 भादो रानि विम अलिशारी । बंलेन कीव भई तरशारी ॥
 लमपनंग गेहन के छोट । चारवादार पिछेके छोट ॥
 श्रागे चले फुटे जो मुंड । पाछे रहे वहावे कुर ॥
 श्रागे नदी पीछे नारा । कही श्रिपति कहिआ वी बदी ॥
 एतना बात सिमान निवाही । तबे श्राउ उठि बोले सिपाही ॥

अन—कातिरुमाम लंग भई गरदा । श्राधा गति चराव वरदा ॥
 हर जोते ना होएह श्रावर । मेरो बइठि निहारव वादर ॥
 भोजन करेके मरुम न जान । ना टाटक बासी पहिचान ॥
 दही मही के मठा पेरव । तब जिअना के जिअन कहाव ॥
 एतना बात सिपाही कही । तब सिमान मे महि ना गई ॥
 रे मिअ्रा समगेर सिपाही । फा ते बोलत बात मूटाही ॥
 बीम रुपया के तोर महीना । तेहिम पदह कटे मलीना ॥
 पाव मोदी के परना वीन्ह । जय मोदी के श्रिआ हिमाय ॥
 पिछे देप डोपटा फारि । मोच परत देग पर ग्राए ॥
 पीछे बनिआ दवरल आए ।
 तुरपट उरपटे अपना । बइअरि के मुह देपत मपना ॥
 पा चाउर चार हाट । कवही न मोअ परिने पाट ॥
 छुरी बेचि के पा पिमान । तब मोच पर बना सिमान ॥
 एतना बात सिमान निवाही । तबे श्राउ उठि बोले सिपाही ॥
 तुम मरुनो जोन घेत । नोहरे बइअरि दोण घेप ॥
 तोहरे घेन मे होए दाना । नोहरे तरफा करे वेमहना ॥
 चारह के तेरह घटनी । उरु कर मूह यपरा पाय ॥
 एतना बात जो बइअन कही । बनिअरुना के हुनो मनी ॥

—पूगं प्रतिनिधि

बिषय—सिमान और वृत्ति के सिपाही के अपने अपने व्यवसाय के मवध मे वादविवाद ।

विशेष ज्ञातव्य—रत्ननामाल श्रीर विनिर्माण नदी द्विः । प...
पता च नना है कि यह बहू पुगनी २, यथादि अश्रेजी राज्य २०१३...
२०) मिलता था उसका उमर उ... है । प...
ग्रामीण जान पडती है । माया भी ठेठ ग्रामीण ही है । छत्र र...
मिरना, जिला—डलाहाबाद ।

संख्या ५०६. कोक कलाधर, नागज—श्री पत्र—१५ अ...
पक्ति (पनिपूठ)—१७, परिमाण (अनूपट्ट)—१०१३ पु...
नागरी, निपिकाल—म० १६०७ वि०, प्राप्तिस्थान—१०...
मिरना, जिला—डलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ कोकयात्र भाषा टचनिका लिखी ॥
॥ सोरठा ॥
म जयति कृष्ण पुमान कामदेव शमनीय हृदि ।
अति मति रति भरनार रति धमत कांर मियत ॥ १ ॥
॥ वचनिका ॥

इहा श्रीकृष्ण जी के महाराज पुमान कामदेव ति...
को भोग चरनन करत है ॥ यह सनार प्रसार है ॥ धर्म प...
सराय में आन वमत है ॥ परमात ही चला जात है ॥

अत—श्रीर कहत हैं ये नायका तीन भाति ॥ श्री म...
स्वकीया श्रापकी क्याही कहिये ॥ परकीया पर र...
करं बेस्या फेरि ॥ स्वकीया तीन भाति कां मुग्धा ॥ ...
ग्यात जोचना ॥ अग्यात जोचना ॥ श्रीर परकीया ॥ ...
रस के ग्रथन में अनेक भाति है सो रमिक विचार लेत ॥ १४ ॥

इति श्री कोक कलाधर अथे चरती पुरम नायका शेष विज्ञान सीला दया ॥१६॥
भेद अस्त्री पुरसन को कोक सपूर्ण ॥१॥ निम्नत चलदेव साहायन नि...
यतं पा साव कुतुब अली धर्म मूर्ति धर्मात्मा ॥ मिति पति पु...
१६०७ का श्री ॥ श्री ॥ श्री ॥

विषय—वामघात्र का विषय दग्गन ।

संख्या ५०७. गभंगीता, नागज—श्री पत्र—३ अ...
(प्रतिपूठ)—७, परिमाण (अनूपट्ट)—३६, अ...
प्राप्तिस्थान—कामी नागरीप्रधानिणी गना, दागा...
दुधीली, पोस्ट—गुपुदू, जिला—गोरखपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥
जय जय उचारो । धिदिभन परी ॥
मजो मन्वे बारी । भजो धान परी ॥
माहाराज राजा । भनीमात्र गाता ॥
जयं गभं घान्त । शियो गभत काता ॥
यने माय हाथा । धर्म धीतिरथा ॥
सगे पेट घोटा । उतरति गाय सीता ॥
रक्त मासु हृदि । मया रोमे कदि ॥
तनी आतलेजा । पुकुस्ता बरेजा ॥

रियो दमो द्वारा । ताहा प्रानप्यारा ॥
 मूँ मउ कॅरा । धांगनि धात्त पोरा ॥
 यना छट्ट गाना । अथमुण नुन्तता ॥
 भयो गट्ट भारा । कहूता पुकारी ॥
 नरक त नीसारा । हो धदा तिहारो ॥
 करा भग्ना ऐसी । फहे काहु जंसी ॥
 चरन नित लाधो । न काहु दुपावो ॥
 दत्रा कय दत्राला । ज्हा त नाकाला ॥
 :०: :०: :०:

अन्न—धरा के वजाये मुनुनी जिय न आवे ।
 हराधन दौराना दनन लाल गात्रे ॥
 महा मत्त होए रुठमाना कहावे ।
 कर तायो नान्दा नगीचे न आवे ॥
 धौलीके सन्धारा मनहो मन सीसारा ।
 जगत जोर गारा जो धन्धन हुमारा ॥
 करत कलादेया ऐसो वांचारा ।
 तगो दुत मे विपल गेय न्जाना ॥
 कते धएद बढे कर श्रोपदाइ ।
 कते दो करे आपु संसे श्रोक्काइ ॥
 कते जय ताबीज लोपे लोपावे ।
 कते भगुन सावे कारावे पुकाने ॥
 कहे आज ऐसो भीले जो जायावी ।
 वगवर क आभारमो नैसो पावे ॥
 जयहु गुनुती जगदीन ऐसी वनाई ।
 तहु राम के नान निश्चेन आई ॥
 परी मुनी एह दाव तगो न मायो ।
 पजाना रपया सुनइअ जाहाही ॥
 र्हो मुदरी सो जहाही तहाही ।
 कमई गनुकि अन्त आवे रोआई ॥
 गए जन्न ऐसो भक्ति होए न आई ।
 चनाये चह्यो जाहा जगदीन रउया ॥
 नउआ गह्यो तातो दो रपवइअ ।
 दइ गीन जाना दिआ सो वृत्ताना ।
 दगो रीन गीरी श्री धाना नीमाना ॥
 पजाना पत्राना पुकारत लोगु ।
 रो अन्ते कजीना परे भुउ सोगु ॥
 जना चागी आण उहाने उठाण ।
 यन्नी से नगाण नदी मो वहाण ॥
 सर्व एउ कन पीडीपादे गहाण ॥
 गो देवाना साहेव मनामनी कहाण ॥
 प्रयोधो

:०: :०: :०:

विषय—जन्म मे लेकर मृत्यु पर्यंत अज्ञानी मनुष्यों की भाँति वे अज्ञान ही में जीते रहते हैं।
किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—रचना के वे प्रथम आरण्य के नीचे ही की गई हैं । १९६० ई. में
तथा लिपिकान् अत्रापत्त है । रचना का नाम पत्र के ऊपर ही लिखा है ।

संख्या ५०८. गीता भाषा, नागज—देगी, पत्र—६१, आगार—१३, १३ ई. में
पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२८, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८३८, मूलिन मन्—अज्ञानी मनुष्यों की भाँति
नागरी, लिपिकाल—ग० १८४४ वि०, प्राप्तिस्थान—श्री १० मन्मथि जी मन्मथि जी
वदलापुर, जिला—जीनपुर ।

आदि—..... ।

श्री कृष्ण भगवान् जी अरजुन का नय दोनों मना के बीच से पटा दीया ॥ अज्ञान मनु-
दोनचार्य के सनमुख अर उनके चाहिने ॥ चाहिने डोर डोर भी जोधा दे ॥ तव भी कृष्ण भग-
वान् जी ॥ अरजुन कौं बोलत भया ॥ हे अरजुन तेरा नय मुन दोनों मना के मध्य से पटा दीया
हैं सो तू इनको देव ॥ तव अरजुन कौंरो की मना के जो जोधा देवे ॥ कौन भीन देत ॥ दिया
देवे अर दादा देवे ॥ अर आचार्य देवे ॥

:०: :०: :०:

संज्ञेय उवाच ॥ संज्ञेय धृत राष्ट्र को कहते हैं ॥ बि हे राजा जी अज्ञान मनुष्य
कहकर धन्य अर वान हत तें डार दीया ॥ नाग के ममूद्र विषे भगन मुर्छा को पाद धार गिरता ॥
इति श्री भगवद्गीता सुपनिषत्सु ब्रह्म विद्याया योगशास्त्रे श्री कृष्णार्जुन संवादे अज्ञान
विषादो नाम प्रथमोऽध्याय ॥

अंत—..... ।

अब हे राजा जी मेरी बात निश्चय करे मुन जिम अज्ञान जो मनुष्यों के ही अज्ञान
भगवान् सच्चिदानन्द पुरुष श्री ब्राह्मण हैं अर जिम अज्ञान गाड़ीय धन्य अर अज्ञानता को ही
अरजुन भक्त तिसी अज्ञान लक्ष्मी ही अर तिसी अज्ञान जेहे मेरी वृत्ति विषय विषय है व चाहे मु भी
अपने मन विषे य. बात जान डोडक्यावात जिनके माये पर भी कृष्ण भगवान् जी पाद धार
ब्राह्मण हैं ऐसे जो हैं वदभागी पाठय तिनकी जं होयगी अर तेरे पुत्र अज्ञानों हायें म मन धर
कुछ सवेह नाहीं ? इति श्री भगवद्गीता..... अज्ञान समाप्तः ॥ अज्ञान
सर्व जगत । सवत् १८४४ आषाढ शुक्ल १५ मन्मथिगरे.....

विषय—गीता का भाषानुवाद ।

संख्या ५०९. गीतानार, नागज—देगी, पत्र—६१, आगार—१३, १३ ई. में
पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—७, परिमाण (अनुष्टुप्)—३६६, मूलिन मन्—अज्ञानी मनुष्यों की भाँति
नागरी, लिपिकाल—स० १८५६ वि०, प्राप्तिस्थान—१० मन्मथिगरे, मन्मथिगरे
पुरा, पोस्ट—जपूर, जिला—जीनपुर ।

आदि—..... अज्ञान मनुष्यों की भाँति ॥ अज्ञान मनुष्यों की भाँति ॥

तिसको गुरु की कृपा वृत्ति भई ॥ मुन तवे का मुन वनसे का पत्र होयता ॥ अज्ञान
के उपकार वास्ते गुरु बुद्धि है ॥ अज्ञानों विषे ऐत गुरु ॥ गुरु विना इन्द्र को कौन ॥ अर अर
बिना विष्णु शिव भी नाहीं ॥ १६ ॥ हेत भारत वनसे अर वनसे ॥ हे अज्ञानों के कौन है ॥ अज्ञान
करके जिनोने गुरु का चरनामृत पीया ते अज्ञान होत ॥ अज्ञानों के कौन है अज्ञानों ॥
मुक्त गुरु करते हैं ॥ अज्ञानों विषे गुरु को वा कोनी है । अज्ञानों के अज्ञानों अज्ञानों है ॥ १६ ॥

हेने मनि करुने हे शिरो या मया ही कोटी घर गिरुनु ते गाव संकर बरमत जो है ॥ सो भी
रुने हे ॥१६॥ जो को मान जाये । सो मन गुर धिना जाना नही ॥ भावे जगु बरे भावे दानु
रुने ॥ नर ते वृत्त कर ॥ जगु रने नीरुष कर ॥ एह सूत्रा मनुष जो है ॥ गुर तत को नही
गमन ॥ नर, मूत्र गत शिवा कान्ता हे ॥१७॥

अ—श्री शरणाग्र प्राप्त है ॥ संता गीता शायत्री गुरु गोविंद एह पाचो रागु बरे ।
सो पुत्रजन्म को न पावे ॥ दो कोई ममार गीता का यथा विधि श्रव्यान करन आसो सो पाठ साधु
करे ॥ सो भी शिरा के विदमान जाई प्राप्ति होय । उम ते बहता यथा वही ॥

इति श्री महादत्तेनामुपनिषत्सु यज्ञ विज्ञाया योग शास्त्रे श्री गुरुणाजनेन संवादे गीतासार
संग्रहः ॥

शिरष—गीता या मतिमन शिरो अनुवाद ।

विशेष उक्तम्—अथ अर्थः । प्रारभते ७ पत्रे नती है । आठवांपत्र भी फट कर आगा
रु गया । अतः आठवा पत्रान् । विविधान् मतिमन् सर्वत्र ते आधार पर मन् १८७६ ? ।
ते दोना मन् निम्न निम्न अन्वय रजे ते गाव रुत रुत देरा के है --

१ मतिमन् सर्वत्र (मन्त्र), २ भावर मत्र, ३ वेद गोरगनाथ जी वा—गोरगनाथ-
पुत्र, ४ गोरगनाथ—गोरगनाथ पुत्र ।

मन्त्रा ११० गीतासार ही तथा, तागज—देवी, पत्र—० (चर्याकार), आकार—
११ x ६० पन्कि (प्रतिपुष्ट)—६०, परिमाण (अनुष्टुप्)—७५, पठित, रूप—प्राचीन,
कट, विधि—तामरी विविधान—म० १८६ / वि० (मभवत), प्राग्निस्थान—प० सीताराम
जी गाम—मानपुर पोस्ट—वाग, जिला—उन्नाववाद ।

आदि—श्री गणेशायनम ॥

चवन कीरी सोपनी जन संग करावा ।

नाथ घोष बँडे गोपीचंद राजा ॥

गाय थीन कठनत मोतिदत माना ।

देव मगावती मूर्तनी इह राजा नपठी लगाई ।

न कोई अरुनी न कोई बदानी बरमत बूद बहामे आठ ॥

ध्यान धरुने रक्षयो भला कला तेरी मखावती भाई ॥

गोट बगाला धूम धाम चमया मेरे नगर बीच दुपीया नही कोई ।

पात्र गहरे दन दे कपडे चलमलां गुरत उठाइ ।

एव धरा नधिधा दोषग नधिधा मन मलम मखावतिमाइ ।

मन दिना वानां धोन दे गया मजलग तेरे मन आठ ।

रे अया मेरी मूरत तेरी मेरे बाप की ।

गोदीचंद नाम जय दन हो गरी भ्रमम की हेरी ।

गोपीचंद नाम शान जगाम मम किरी गो० ।

मनु नगर न आठ लान नमम की हेरी जी गो० ॥

मन—
चनी नगर मेरे गोपीचंद नाम राज करो पठी बुनाये मखावती माई ।
नगर करेभ जग रूप (? जीण) दिवादिवा जोग रुत कृ धरुणम आठ ॥
दोना मं रानी रे गोपीचंद गोप करेगी कोण करेयमी वाता ।
दरुम कठना धोन करेगी रुतन करेगी वाता दि म० ॥

कहाँ ज मिटत मादिये काँहा ज कँये मोला में रागि रे मो० ।
 क्या ब्रज्या मटिन मादिये धैला छोटि मोला में रागिरे मे० ॥
 कहा ज कँये लान पलम टिरे (? पलम) देग रे मो० बाह ल कँमे म मुसाई रे मो० मार ।
 धरतिमाता मेरि लान पलमटिरे (? पलम देग) म० पावनमार्गि मरम मुसाई म० मार ।
 कहा ज कँये रे गोपीचद मोला में रागि कहा ज कँये मारमार्गि माय ।
 क्या ब्रछा सोलसं रागि मख० मा.....

—प्रश्न—

विषय—राजा गोपीचद की मया या उर्जान ।

विशेष ज्ञातव्य—रचना में चरनीय पदों में किसी पद ' । प्रथम चरण, चरने मने के
 लगभग २॥ "छोटा है और उमकी रगनी और १० पदों में और चरनी है । यह पदों में चरनी
 अज्ञात है ।

संख्या ५११. चरगाबिह्न, रागा—रगनी, पाठ—० रागा—६॥ ५४ २१ पद
 (प्रतिपृष्ठ)—२४, परिमाण (अनुष्टुप्)—२०, पूर्ण, रा—मा मरग पद गिः—मरग,
 लिपिकाल—स० १=४१ काति रागा ७ नृगी, प्राणिमग—भी चरनी मरग, भी चरनी
 विभाग, काँकरोली, हि० ब० ७६, पु० म० १॥१ ।

श्रादि—॥ श्री गोपीजन बलभाय नमः ॥ शय चरण चिन्ह ॥ दोहा ॥
 चरण चिन्ह हरि के चिहं उद्यन चिह्न प्रहार ॥
 भक्तन के भ्रग भग के लगत मु चिह्न खाबार ॥ १ ॥
 चिरह प्रथम उपजे मनहि जोरत उरगत मार ॥
 तपनि रहे भ्रग भ्रग प्रति चिह्न चरन संगत ॥ २ ॥
 शक्तन के तन चिरह लमि उपरयो जिय के मग ।
 मया गहाय हरि के चरन प्रगट परत भग भग ॥ ३ ॥

मध्य—पृ० ५

नेना मे की पूरती चपल मीन के भाय ।
 हरि चरनन परमी जगे नृगी मरोवर जाइ ॥६०॥
 हरि पद मे भ्रग भी लगे भाग मे मने कू बाय ।
 ब्रज वाला मन गेन की कन्यो अनुपम धाम ॥६१॥
 मीन मनोहर देखिये कहुं न चिह्न हरगय ।
 फलकक हरि पद मे रहे उरह दिवा इन जग ॥६२॥
 हरि के चरन हूँ नपल रगि निय के तन मुदाय ।
 इन उनके हूँ मरुट गिनि खोलत लक्ष्मण भाय ॥६३॥
 पिय द्रष्टि चरनन गहँ ललन मीन जिय लय ।
 त्रिय इग रपी मर गहँ निरन को नृगी पाय ॥६४॥
 मोह धनुष को परनि के धनुष रपण इन होय ।
 नृत्य मने इक पद मे मन प्रकटि लम होय ॥६५॥
 मोह चरार्ह मीन लय लय देत ललनय ।
 पिय चरनन धरि यो लगी जीति लयम मुसाय ॥६६॥

संत—चरन चिह्न हरि के चिहं धरे मर दन खाय ।
 मडित सुन्दर देखिये मुनकम दिखी ललनय ॥६७॥

तद् विदुः सितं सृष्टिं धरे भक्तं श्रंगं तम भाव ।
 तासो रज्जुं धीं करो हरिं पदं नदा महाप ॥५६॥
 हरिं उग्ननं गच्छ श्रमं नो दुःखं मिलि तरत नयान ॥
 चंदनं नोपिन नो रम्यो मूर्ध्नी भई गुमान ॥६०॥
 मनेपरं हरिं के चरन मे तीरथ चहूं समान ।
 भक्तहितं श्रमं नन मे गयो जुडर श्रयान ॥६१॥
 चरनं निद्रुं चिननं कणे भक्तं श्रमं के भाव ।
 दुःखं दग्धिं विपरीतं तें तरसो प्रेम को नाव ॥६२॥

इति श्री मन्मथ चर्यान्विद चर्यण निद्रुं भक्त जन अनुराग उदित संपूरणः ॥
 मद्यन् १६४१ कानिनं कृष्ण ७ मूर्ध्नी चिनिन मोहन दानेन ॥ तापी पुणे ॥

त्रिषय—श्रव मे श्री भक्तजन के चर्यण निद्रुं वा दर्शन किया है और किय-विग निद्रुं
 के ध्यान करने में श्रावों के तन मन्मथय मिले हैं। उन्ना भी चर्यण है ।

मरया ५१०. चार चरीचरों की चार लिंगयते ॥ चार पवीश्वर कमाय के घर एम
 १० x ॥ उन पति (पतिपुत्र) — ०० परिमाण (अनुपुत्र) — ०००, पुर्ण, रूप—गुराना,
 मय, निधि—नामगी निधिपान—म० १६०, प्राणस्थान—श्री मरुवती भजार, श्री विद्या
 विभाग, त्रिचरोती, त्रि० व० ५० पु० म० ० ।

आदि—अथ चार चरीचरों की बात लिखते ॥ चार पवीश्वर कमाय के घर एम
 कुशल में आए तब अपनी अपनी स्त्री जल की का (री) लेके घर के चौक में चौकी बिछाय के
 आपने पति के पाव धोय के घर में ले गए तब राय का घर में गयो तब बाकी स्त्री चौकी बिछाय
 आपने पति को पाव धुके नो धोयो फेर नाल की स्त्री बोली जो दूसरो पाव नीचो धरो तो धोऊं तब
 राय बोल्हो जो तुम भी इनकु आय के पाव धोय जाओ, तब राय की स्त्री ने बोल मारघो सो एसो
 तुमने दान दिल्ली के पानमाह सो कहा मरगो मन कहा करवाय के लाए हो । सो पीछाडि
 पुत्र पुत्रादिक कहा घायगे, वेमें निर्वाह करने सोमे दूसरो पाव धोऊं ।

मद्य—५० ६

तब पानमाह ने फेर हजम त्रियो जो इननु, मराए चहिये मुकर चोर हे ये बड़े बड़े भले
 धामामी की उज्ज लेते हैं । अदर की बात उसो की त्यो कहते हैं मुकर मारे हि चाहिये, ये जने जने
 बा पग्दा उधाहत है इननु मरु मारोहि चहिये, जब फेर बीरबल नोग्यो जाहापना मुकर चोहे
 चार दिन ताई आपके पान रहे । अत्र दो दिन सोकु हजूर बयमिये ।

अत्र—फेर चारो जन कमाय के अन्कुं आए तब राय की वह ने दूसरो पांय दूध सो धोय
 के आपने पति के ऊपर नोछात्रि रम्या ५००) लेगाद करके आपने घर में ले जाय आछी भांत
 भामन मोहन चर्याण, फेर रात कुं गुत्र केनि करके चौपट सोलन मए । पाछे वार्ता संपुण भई ॥
 सांपर्त श्री गोत्रामि श्री सोकुत्र नाशानमज पुण्योत्तम जी जो बाचे ताकु ज श्री कृष्ण । संयत्-
 १६०१ त्र्ये० मु० ११ की संपुर्ण ।

त्रिषय—चार चरीचर चर्यण के त्रियो मय नो श्रीश्वर के हाग वादजाट के पान पठेवे ।
 वे मरुवती के वन में प्रसो के उरर चिनो मे अगवर उंन थै । चार मे वादजाट ने चारों को
 चार चार मरया श्रंग पति, ताकी प्रद्वि पाग्निोपिन देकर विदा किया ।

मरया ५१३. चर्याण चर्यण—देशी, पत्र—३, आचार—६३ x ३३५, इच,
 पति (पतिपुत्र) — परिमाण (अनुपुत्र) — ००, पुर्ण, रूप—गुराना, पत्र, निधि—
 नामगी, प्राणस्थान—श्री मरुवती भजार, श्री विद्या विभाग, त्रिचरोती, त्रि० व० ५० पु० म० ० ।

प्रादि— :०: :०: :०: :०:
.....उर गगन मन्दिरे ।

नित गत गंगनि कन्धे । भय भय गगन मन्दिरे ॥

इन्द्रवज्रा-उरेन्द्रवज्रा उ०

ततज गुण द्वै प्रा मे गगन मुमुक्षु ।

जतज श्रन मे दोय गुण पद्मेन्द्र मुमुक्षु ॥

इन्द्रवज्र उ० ॥

॥ छंद ॥

गोवर्षद गोवान हरे मुगरी । श्री राम प्रतापिण दुर्गतापी ॥

भक्तानुकषान्वित वृत्त धारी । लकेत नानाद तमो धनारी ॥

अत--सुभग छंद ल०

॥ मात्रा ४० विश्रामा ४। दम दम के ॥

॥ दोहा ॥

सुभगमल चालीम दम दम परि विरति अमर ।

कवि कोविद यामो परत सुभग छंद सुभ शर ॥

॥ छंद ॥

जब चलत वसरतय गुत राम गमरतय पुण्य भिनि ह्यि मर मन शर ॥

वर सुडि फुवकार धुवकार धौ गहि धुनि धनुष दवान दूबार गारन ॥

रथ चक्रधर हरनि धर पधरा हरनि दर द्यजि पुन देह सुटि मुर दयन ॥

सटपटत लंकेस श्रटपटत दिग्गज बल पटन यति वेद पन शर ॥

:०:

:०:

:०:

—दूरदा

विवय—छंदगाम्त्र का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ के विवरण ३ पाने (१०० वा १११ पृ० श्री १२२) उपरोक्त ३ । रचनाकाल और लिपिकाल ग्रथ अज्ञित होने के कारण अज्ञात है ।

संख्या ५१४. छन्द भोगामय त्रिवि भाग—श्री वृत्त— १११ × ३ ।

द्वय, पक्ति (प्रतिपद्युष्ट)—२०, परिमाण (अनुष्टुभु)—१५०, पंक्त—१५०, पंक्त—१५०, पंक्त—१५० ।

लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६४० ई पू, पंक्ति—१५०, पंक्ति—१५०, पंक्ति—१५० ।

विभाग, कार्यकारी, हि० व० १०००, पु० स० १००० ।

प्रादि—॥ श्री मते वृत्तयः पारशर्याय नमः ॥ अथ पारशर्य भोग ही विधि लिख्यते ॥

प्रथम प्राछोदिना दिवाया के जा प्रसु मे पुष्प ल दान होये होय ता कानु मे अथ शरीरय कर्ता ।

अथ मूर्त निते तारु पहिने दस पद्म दिना ध्यायेता ताई की मूर्त देवद शरीर कट इहे क कर्ता

विना अथ धरत्र सिद्ध कराइये । ताही विधि । श्री गुरु गुरु ही के अथ अथो १५० ही विधि

कोर की सुपेय ॥

मध्य—प० ३

ता पाछे सप्ते होय तब भोग करनाये । भोग से तबन कर्ता कर्ता ही कर्ता ता क

सब ठोर आचमन मुख धरत्र कराइये । बीटा बीटा देव नथ होय ताईये ता कर्ता ही कर्ता कर्ता

की फेदा बांधी राखी होय सी का ही कर्ता कर्ता कर्ता कर्ता कर्ता कर्ता कर्ता

सोही होय कोर बीटा १० धी टाकर जी के अथ अथ ॥

कंस—ना पाछे माय मुं जगदीश के नाम ताई मय से, हे, चायवे कं जाय ता पाछे माय के प्रम में मय होय को भुंगार यजे करि आभररा वरत मय छि गने धरी ताता मंगल करिके बाहर पाउये । ना पाछे मेन भोग को महा प्रमाद मय घेटने अजय ले ही ।

इति छापन भोग को उक्तय को विधि संपूर्ण भई ॥

विषय—शक्तिमार्गीय मन्त्राग के प्रकरण ही आनि विशेष नाम उना पर होने योगे छान्त भोग ना प्रमाद विना ५, ३ ।

मन्त्र ५१५७ उक्त नमार्गीय नाम—देवी, पद—११ आकार—७१ × ६९, ह्य, पक्ति (प्रतिपद्युक्त)—११ परिमाण (पद—३५)—१००, गुरु, ह्य—प्राचीन (जीर्ण धीर्ण), पद्य, विरि—देवी प्राणिकथान—तत्त्वज्ञानके प्रकृतिमी रक्षा (सुश्रुता—३१) देवीनाम उक्तयान, याम व दोष—सामान्य विना—मात्र ५२ ।

आदि—... ..

मीन मछी का परम दया ॥
मीन मछी के परम पाउ ॥ करक मनि के जदह राउ ॥
मीन छाये देह शर्माना ॥ के अघ जन्म भुमुते सोइरा ॥

॥ मायी ॥

छत्री जो दुग देत है ॥ चहु दीम टाट पधध ॥
वीना जग ना दाची है ॥ हत्या परम जवध ॥

॥ चौपाई ॥

जग बीना नहीं प्रम बडाइ ॥ न रगन बीना लोक ना जाई ॥
:०: :०: :०:
जग माय के मंउप छयो ॥ राए दुहीभईत जग फंलायो ॥
:०: :०: :०:

॥ साटी ॥

एही बीधी जग सुधारह ॥ मानह दुहीदील राए ॥
हत्या परम जय मीठे ॥ जम्हपुर धरो न पांदी ॥
:०: :०: :०:

॥ चौपाई ॥

बडो नंदन मुनो बाहा हामान ॥ मनगुर मेग न श्राए ज्येनारा ॥
मंत बीना नहीं घटा वाजा ॥
मन गुर मेग जो श्रावणे कोइ ॥ बाजए घट मांग जग होइ ॥
:०: :०: :०:
मंत लोक के मुपच धामी ॥ उरके सदा मन परगामा ॥
मुपन संत मुपनी के मुना ॥ मान कोट इनके नहीं तुना ॥
:०: :०: :०:

कंस—

॥ मायी ॥

जय माय जय हो गये ॥ बाजे घंट अदाग ॥
मुनी मंथन मन श्राए ॥ जे जे होये परगाम ॥

॥ चौपाई ॥

सात वाग घटा घुनी भंड ॥ फात जजात ते मयं मज्जुम
थी क्रोस्व ववारीका आणे ॥ गणे दुध्यायेंत मन्वज नः ॥
घुनी गध्रप मुनी मने लीधःए ॥ ननान मीतीअरुं अमनपत्त ॥
भगत सुदरमन प्रथमे गणेंड ॥ हृग्य आनर गजा म अंईड ॥

इतीह्री जग सनाधी कथा जो पत्री देजा मो निष्ठा

विषय—राजा युधिष्ठिर के पुत्र अर्जुन युध्द कर रहे थे।

विशेष ज्ञानव्य—अथ प्रथमः । समस्त व्यास उवाच ॥ १६ ॥

स्वयिता, रचनाकाल श्रीग विष्णुवन्द आदि का कुछ पना जो है।

मन्त्रा १११३ ज्ञानमार्ग, लज्ज—रा. पत्र—१६, १७— १४

पक्ति (प्रतिबृष्ट)—१६, परिभाषा (अनुष्टुप्)—२०४, पू. १३—

नागरी, लिपिकान—म० १६११ वि०, प्रा. वि. मान—मृत काले २०

पोस्ट-हदिया, जिना-उत्ताहावाद ।

आदि—अज अर्चित पु. . . यधिर ॥ ली० ॥ अथ जगमार्ग ॥

पापउ धर्म केर मभ नाजा । लुभित नाम मरु जम था ॥

॥ यापि ॥

मनमम वाचा परमना नाम भर्ज जोप्र जानी ।

नाम नुधारण पीयं मत मरु पक्तिगारि ॥

भत्री किय्या पट्य जग गापी ।

सही द्रोखी . . . अनर्दनी टडी ॥

अत नम भारत्य पर भगुज ।

पटु नदन भपने प्रीही गयेड ॥

तहना कीतुक देवा राता ।

गए हुदीस्टिल प्रीतन दे पागा ।

डडयत प्रनाम कीया कुरा ।

वेडे पट्य होत हरी देवा ॥

॥ दोहरा ॥

वीन देआत वालीद टुप हनं भी मोदीर ।

राये हुदीग्टील भापेवेड कए कीपी धर्म मज्जु ॥

अंत—गुपच भक्त अत भावही भी मारा हुनी ॥

मुक्ती भेद नहीं तोहरे मो हम भक्त स दे ॥

॥ श्री प्रीतीवाच ॥

सुश्रुतो निर्गुन भक्त ही कही महात्म सुत ।

वीगुन वीगुन रूप हम दाही हमरं मदे ॥

॥ गुपचीवाच ॥

मासा पटी की कृम पटी की पटी मज्जु ॥

सभते मेरा साहेब पला जोरु जीतरा वीरु लज्ज ॥

येती जग महात्म सपुत्रनों जो देवा सा लीला ममो लीक म पीरने ।

हांत श्री हुदीग्टील जिता राज मज्जु मज्जुणं भी मज्जु १६१६ ॥ (मं. ८०० मज्जु)

कृष्ण पक्ष सप्तमा तिथी महास परोदासरे नामना श्री राम ॥

तिर—मन्मथारं नृपति तं तम ता र्गणं ।

विश्वं प्रकृतं—सत्त्वगुण र्गणं तं तं तं । विविक्तान् मन् १६१५ वि० है ।

मन्मथ ५१६ मन्मथारं नृपति तं तम ता र्गणं । पत्र—१२, यासार—= X ३३, टन, पत्रि । प्रनिपूठ) —= प्रनिपूठ (प्रनिपूठ) —१६२ मन्, रण—गुणा, पत्र विधि—नागरी, विविक्तान्—मन्मथ १६१५ वि० प्रनिपूठ तं—=२० मन्मथारं जी पाठि मन्मथ—वनेरी, पौ०—पूत-पुत्र, विना—मन्मथारं ।

आदि—श्री गणेशाय नम ॥

॥ दोहा ॥

हस्ता करता जगन के धरता हे हर ईस ।
मुग्ध नृपति वदित जिहरे तिरहे नदावन शीश ॥ १ ॥
मन्मथ जीवत लो जीव हे तव प्राणन को प्राण ।
मन्मथ विधिरा की वृध्य दु मन्मथ जानन को जान ॥ २ ॥
गोवि प्रमुग्ध मुर नाग नर नाहू लप्यो न जाय ।
पारवती पनि प्रगठ जनकरि मे दियो चत्ताय ॥ ३ ॥

॥ सो० ॥

अथ ही भाषा करत ह्यो सतगुर के परताप ।
मयें मिध्य जो जो वरें हरें त्रय गुनि ताप ॥ ४ ॥

अन—वाग नृपतिन जीव विधि वान्न मरे न काज ।
अमृत वेरा मुर उरें मयें मिद्धि मे राज ॥ १३१ ॥
श्रीर शान्ध जो ना पटं एक मुरोई होइ ।
निर्भे ताजो राजु हे विप्रता करें जो होइ ॥ १३२ ॥

हनि श्री उमा मन्मथारं नदावे जाल मुरोई समाप्त । वृदेनखट मध्ये परनानगर्या मध्ये युगुन विमोर्गि नमोवे द्रु पुनन नुयमा राध्या लिपितम् मन्मथ १६४५ शाकाब्द १७१० फाल्गुण मासे शुक्ल पक्षे द्वितीया शुक्ल चतुर्थे उद समाप्तः ॥

विषय—मन्मथारं नृपतिन तं तम ता र्गणं ।

मन्मथ ५१० मन्मथारं नृपतिन तं तम ता र्गणं । पत्र—१२, यासार—= X ३३, टन, पत्रि । प्रनिपूठ) —= प्रनिपूठ (प्रनिपूठ) —१६२ मन्, रण—गुणा, पत्र विधि—नागरी, विविक्तान्—मन्मथ १६१५ वि० प्रनिपूठ तं—=२० मन्मथारं जी पाठि मन्मथ—वनेरी, पौ०—पूत-पुत्र, विना—मन्मथारं ।

आदि—॥ श्री ठाणुर जी श्री गणेश जी श्री गोपीनाथ जी मतः । अथ श्री त्रैलोक नाथ जी श्री त्रैलोक नाथिजी नृपति तं तम ता र्गणं । श्री वृष्ण विद्यते दो घटी पाठनी गन रहे तव श्री ताल नाथिजे नृपति जगति नृपति श्री श्री त्रैलोक नाथी श्री चपलता श्री श्रीवाजु आदि देके मन्मथ मन्मथो श्री मन्मथ मन्मथो श्री मन्मथ मन्मथो, श्री मन्मथ मन्मथो, श्री आदिदेके मन्मथ मन्मथो ।

मन्मथ—पृ० २६-२७

मन्मथ मन्मथो श्री मन्मथो तव, मन्मथो कल शशीष मन्मथारं, दास्य चारोली श्रीर अनेक प्रकृत श्री मन्मथो मन्मथो श्रीवाजु ताठनी नृपति श्रीवाजुदेके मन्मथ मन्मथो मन्मथ मन्मथो श्री मन्मथ मन्मथो ।

श्रंत—भाद्र पद मासे इन्द्र पुजा नंदीमर ग्राम श्रानोज माने बुद्ध पुजा बीठर दरे काश्चि
मासे दीप यात्रा श्री गोवर्द्धन मागसीर माने नृसिंह पुजा नदमर ग्रामे माघ मासे श्रीमदात्मने
ग्रामे—फागुन माने वसंत पुजा श्री वृंदायने प्रति श्री टकुगनी की से मल जग जगन मा पुजा
विधान । समत १७८२ वर्ष मागसर नुदी ६ नवी श्री उदपुर शरणा श्री श्री श्री श्री शरार
बिहारी दास जी वाचनार्थ चौरणजीवी श्री श्री कीरपा राम जी ग्नी पुर्वी समर पुत्र दार प्रा-
नातु लीखत वसनु पुत्री जगीसा वाई वाचे जगो यो ज श्री गुरमर—

विषय—शक्ति मप्रदायातगत श्री हिन हृदिम मप्रदाय की मेवा पूजा से श्री शक्तिजी
जी श्री राविका जी की मेवा का प्रम वर्णित है ।

सख्या ५१८. दाता कर्ण, कागज—डेणी, पत्र—१०, आना—१/६ X ६ इंच.
पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—२६, अक्षर मय—श्रानोत (श्रानोत)
पद्य, लिपि—देवी, प्राप्तस्थान—राणी नागरीप्रचारिणी मन्त्रा शरानोत ।

श्रादि— । जेही ते होत वन सुधी प्रपान
जेही सुमिरे दुख डुरी पराइ तेही सुमिरे से मन बीत ताड
ऐक वात मोरे मन आया ताते म प्रम पद नीर माया
नाम अपार मोरी मत्ती थोरी धीनती करो हुनो कर डोरी
॥ दोहा ॥

जासु नाम सुमोरत मुलमान मेठ नकता दुड शार
बरनी "करन" कथा पट्टु जेही जानत मनगार
॥ चौपाई ॥

करन कथा सुनो मन लाइ जेही ते नाम समट मोटी जाट
धोसपाएन कहै सुनो हो राजा माहाभारथ कथा सुनो रघुनाथ
एक दिन हरी चीनता करइ देखी करन दानी वन अट्टी
जे जी मार्ग करन देइ सोइ करन नमान दानी मही होइ
:०: :०: :०:

॥ दोहा ॥

करन छलन के गएउ प्रम मरमो न जानन मोट
करन नोकट प्रभु पहुँचे बुढा दाभन होट
अत—फीरी राजा खोजन के गएउ
पुत्र आपन देखत भएउ

बडा हरष होए राजा तँ आएउ दाभन के प्रनाम करगुंउ
तव दाभन दीए आसीसा जीअ सुन तुम लाइ बरोगत
जो ऐह कथा सुचीत मन लावै छही ध्यान देबैट मोषाव
जो ऐह कथा के फौदा करीहै तीन् के तीनी प्रम नरप मे परीहै
अथ ऐह कथा समपुरन है सुनत सबन चँत मार
अपने अपने धाम यो घोडा होइ फरमाए
अबोर ऐक धीनती सुनी जो हमरे मन मारो
मोरो नाम धीपति जीतुराम है मुइ के बुन मारो
धाम अषानो हम तीब्रने जगत सबन नमकार
बायो के पुरय गजबी के धार गावो के नाम है मर पुनाम . . . ।

विषय—राजा राजा के राज की परीक्षा का पहलें ।

एक राजा नवजाते राजकुमार का जन्म हर कर्मों के राजद्वार पर जाग्रत पुत्रार नमाई ।
समस्त कर्मों उत्तीर्ण करके । राजा ने तब । भक्त पुत्र को प्राप्त माना तो मुँह भाँषा जन
के । राजा ने ही राजा का । राजा के राजकी रत्न में । पुत्र प्रभुनिम्नार नर "मान" जग
के राजा का राजा । राजा का राजा पुत्र 'पुत्रोत्पु' का मान पहारर की: मुझे दे तो मे
को राजा का राजा । मेरा भाग मत्तत पीठिन है । नर राजा को उत्तर दीजिए, कैलाट जाऊँ ।

राजा राजा कीजिए । राजा पधारती मे नव दाने ली । प्रथम तो राजा ने पुत्र-
विधि: राजा मे प्रभुता शिखरी । परतु राजा के नामगानि-प्रभावे पर तीकार हो गया ।
राजा का राजा पुत्र, राजा पर नव नमान गुनाया । राजपुत्र भी राजा पिता का पुत्र था ।
राजा राजा । राजा के राजा प्रभुत्त । राजा राजा का वधान दिया और पुत्र विर
विधि का राजा ।

विशेष आकर—राजा राजा । प्रथम दो पाठे लुप्त है । समस्त १२ पाठे है ।

मन्त्र ५१६ । ब्रह्मविभाषा, राजा—देवी, पृष्ठ—२८ (१६ मे ४६ तक), आकार—
१०१ X ५११ डब, परि (प्रतिपृष्ठ)—४०, परिमाण (अनुपुत्र)—४५, पूर्ण, रूप—साधा-
रण, नर, विधि—नागरी, प्राणिकान—श्री भगवती भजार, श्री विद्या विभाग, काँकरोनी,
दि० २० २२, पु० २० २ ।

आदि—॥ श्री हृत्वाय नमः ॥ भगवन्नेवाम भूत जो द्रव्य शुद्धि सो भाषा मे तिष्ठियत
हे । यथ शुद्ध रजस्वला चंडालः । महापातकी । सूतेका । नवगपशाः शाचा शीची । कूफर ।
चित्ताधर । निरा राट । वेद द्रव्योपजीवी । गाम माजक । सोम द्विजथी । मद्य । मद्य भाट ।
मन्त्र मनुप्रायि । एतेन के छोले मर्चल स्नान करनी ।

मन्त्र—पु० ४१ । राज पुत्र मन्त्रि रहत है । गृह को बृहार्थि तीर्षाये तत्र शुद्ध होइ यह
विधि की गृह पुत्र अधकार इनके । पूरि कर । भीती को गोधर मोलीये चूना सो धोने धोवे सो
शुद्ध होइ । तत्र यथा मन्त्र गुण ह की । जाघर मे मनुय गयो होइ तो घर मे मृत्तिका पात्र
राधो अत्र दंडि डारिये । गोधर सो लीये पीछे बरुग को फिराउये । पीछे वेद पात्र ब्राह्मण
वेद मद्य सो गुह्यो जन कुशोक्त सो प्रोक्षण करे तत्र शुद्ध एसे ही प्रसूति होइ तत्र जानिये ।

अंश—याने आत्म मोधनायं नक्ति प्रभृति नदंशा कर्तव्या । यह भाषा में शुद्धि विधेक
विधायो है । तो याने मजय होइ प्रमाण वृत्ति न उपजे मन्तुत ग्रंथ प्रमाणपुर नर है सो देखनी ।
श्री हृत्वा मन्त्रं सर्वेषां समस्तु मण्ड विशेषणाभय. म वृद्धिदाता च सर्ववध्व ॥ इति पूर्ण ॥

विषय—मनुयायुत विचार ।

भाषा ५२० । अन्तर्नि भवना, राजा—देवी, पृष्ठ—६, आकार—१०१ X ६ डब,
परि (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुपुत्र)—११२, अनुपूर्ण, रूप—साधारण, मद्य,—निगि
ताली प्रतिपृष्ठ—ते नगरनी भजार, श्री विद्या विभाग, काँकरोनी, दि० २० १०७, पु०
२० २ ।

आदि—पाठ नीर दंडि १ ते धनुर्नाम मान्त है सो दृशरारण्य कात्यायनी अत्र कीयो है
सो का मर्चल पुष्टि भगत सो अर्षोभार करयो है सो आरते जनन ए अनी कुमार ऋषीश्वर है
सो मन्त्रा करत है, रामाप्रकार मे कारपट मे उंढकारध्व श्री राम जो बनयाम कीये हैं तहाँ
नीता ली अंश मे देखाय के समन करत है ।

मन्त्र—१० ३

बंभू जिगो धीम पीरियेज क्हायं ।
देह अतिर धनि धरं ज्ञान करि मयं ह्मयं ॥
मदिर जिगये वनर ये होत है जे जे कार ।
ते ईच्छा करि आदरी जे ईच्छा करि देह ॥

मध्य—

देह पलट कर मिले धन्य तु पुत्र हमारा ।
धन तेरी कीतामाय देह जम करी उधारा ॥
गिपी तपनी वंले मत्र शश वाज धुनि होय ।
मोजन पाये शपा करि जम मुफल फल होय ॥
गुनो गुनधर्म जो ॥४२॥

धमं चन्द्रि पढं मुनं जम निकट न आवं ।
जमकी गिहं बलेम जाम वंकुठ न (?) पावं ॥
धमं नमाधि वही मुनो मोर मन को काज ।
जग में जाहर होत है जो गायत है बाल ॥४३॥

इति श्री धर्म सवाद मपूर्णं ॥

विषय—धर्म और गुणधर्म मवाद वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत रचना एक गुटका में है जिसमें निम्नलिखित ग्रंथ और है —

१ चौरंगग—उदय जन, २ बाग्द ग्यडी—दत्तलाल, ३ हृदिनाम माला—
(मन्त्र), ४ उपा चन्द्रि—गुज, ५ एत इनाली रामायण और भागवत (मन्त्र), ६,
चोमैम अनागे रो गज—गोपाल जन, ७ हृदिगुन नाम गितामणि—गोपाल कृत, ८ बाग्द
ग्यडी (मुदामा)—गोपाल जन ९ श्याम मगाई—नददास, १०. खानिनी भगरो—माधो
दास, ११ दाननीता (रेयना भाग)—रामकृष्ण, १२ अमर गीत—नददास, १३ शनि-
स्वर तथा—अर्धगम (मितामन वत्तीनी), १४ बाग्दग्यडी—विष्णुदास ।

संख्या ५२३. नामदेव चन्द्रि, कागज—देशी, पत्र—८, आकार—६ × ३ १/२ इंच,
पत्रि (प्रतिपुष्ट)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—१८८, स्थित, रूप—पुराना, निधि—
नामगी, प्राप्तिस्थान—५० राम अरु जी त्रिपाठी, ग्राम—दरवेशपुर, पो०—भगवारी, जिला—
दतारामाद ।

श्रादि—नामदेव श्री रामाई जाना ।

.....
पिता व प्रनुनिन पूजा करई । तेह का नेम कवहुं ना टरई ।
करि अन्तान जेय वहु श्रावं । बान भोग निन दूध टढावं ।
एमे परत बहन दिन वीते । दिन दिन अधिक प्रीति सो जीते ।
एक दिवन कहु गावं चगळ । पुत्र बोलाई कहत अग भयळ ।
पुत्र एव प्रनु है नित मोरं । गावं चण्यो भगेमे तोरे ॥
शुनो में वहे वरुड तुम सोई । एहि सो बान बान ना होई ।
गज क दूध श्रीदि जत्र जाई । एव वटोरा घरेठ जुघाई ।
करि अन्तान पटी र्निन पावी । वंछि मरंन गम को ध्यावी ।
तेदि पीछे तुम भोजन पावी । अग कति पिता गाउ वी चलेउ ।
.....

दूध घट्टे न बट्टे नाहि नाई । नहा नामदेव यह टट्टे नहाई ।
पियाहि राम ना नामा टट्टे । धोनि त्रिवाणि धमका कट्टे ।

.....

॥ दोहा ॥

श्रंतरजामी प्रापु हरि मिते प्रानि जट्ट जानि ।
रूप चक्रमुज वेधधरि, दूध पिपी हिन मानि ।

श्रंत--

भय जेवनार सो भोग लगावा ।
नामदेव चरनन धिनु नावा ।
भय अघुराने राम पुनि पाए ।
गऊ रूप धरि छाना पाए ।

नामा की बतही गरियार्थ । न छानो यह मंदा पाई ।
नामदेव कह रघुवर आही । सुप करि रानी सोर पाठ नाही ।
ते वे राम पुनि द्वारे श्रया । उठ नामदेव जावे कंवा ।
यैचि यैचि पर श्रागे टारा । नामदेव धरि जाय पयाग ।
श्रैचि श्रैचि घर श्रागे धरसी । कहू नामा नं पा पा कर्णी ।
प्रभु मुख वाइ ममकति कोन्हा । तावे बट्टव दीन मे दीन ।
कहा राम तं फंमे जाना । चरन लभत मं ही नरनाना ।
मागु नामदेव देउ ही तोही । चरन कमल तर गये कपी ।
नित प्रभु मोहि दरसन दीजे । जन ते पाई सो धारनि पीजे ।
फेरि नाम देव पीडे...

--छन्दः ।

विषय--भक्त नामदेव का चरित्र वर्णन ।

मद्य ५२४ निद्रा विनाग, तागत--देवी ५१--१११ ५१५--११५ ५१५ ५१५
पक्ति (प्रतिपृष्ठ)--१२, परिमाण (धनदत्त)--११५ ५१५ ५१५ ५१५ ५१५
नागरी, लिपिकाल--म० १=४५ वि० प्राणिनाग--५० अना ममका कट्टे ५१५ ५१५
वरा, पी०--अटरामगुन, जिना--उला, तवाः ।

प्रादि--श्री गणेशाय नम ॥

बंदो गुर पद रेनु कृपा सिधु जग जान निधि ।
महा मोह छलान टपन हनन रत गुन कवि ।
बंदो दोउ कर जोरि शानमोह नर श्याम मुनि ।
करिय कृपा करि मोहि जग निधय निधि मन्दा मुनि ॥

॥ दोहा ॥

माहवमती विमल घर देवा । मह उगु डेग उरारत मनेका ॥
एक समय गुण मदिर जाई । सुने सेज सोर नर नर ॥
बोलेऊ रूप बचन सेह नयो । मोर जगि टिकन नर कर्ण ॥
रानी मदन कुरारि मुनि धारी । दोरी उरन डेग रत नर ॥
सुनहु कथा इतिहास कनूपा । ती विर सोर डेग नर कन ॥

कहेउ भूप दु प्रिया मदाती । जानति विमल वधा दहू रानी ॥
मुनर भूप मम सम जो पाली । नाम भवेती मुनिनि प्रिये केती ॥
कहेउ रसा मोद विधि रसागा । मुनन तीद जति नहिपाला ॥

॥ दोहा ॥

कहेउ भूप मुनियो प्रिया मुनर गोलाद ताहि ।
काहे रसा हानराम तीरि नीर ज जित्त न माहि ॥
कहेउ कमेती मुनिर प्रभु रसा विमल रम रसाय ।
मेर मुलाव पुलाग ताहि मुता मिधु नधाइ ॥

॥ चौ ॥

कोतापुर एक नगर सोहाता । नाम भूप सुप्रति सुजग रम छाया ॥
तामु नाम भूप भंगल धामा । महिषी भावु मुलाचनि नामा ॥
तनय अठारह तेन जग जाए । बहु आनंद मगल पुर छाए ॥
निश को नाम रम जग भयड । दोहा वि मुनि सुतेन तहां गण्ड ॥
प्रथम मुनि मुय मगल धामा । विमल विरि मगर रसागा ॥
अन दग काभिन करवाग । दून रहु मगल मरागा ॥
कावन कगन मुनभ मुनतागा । मरतपुर यहु लोक मुजाना ॥

अंत--

॥ दोहा ॥

तवहि मुलाव कुलाव मग मुना मिधु अतिराज ।
प्रथम कुमारी मग मेर गर गरि मुन विविध रसाज ॥

॥ छंद ॥

कोन्हो विविध रम रम भूपनि मरत विध मुग सागरी ।
करि नीति नूप बहू नीति बहु विविध धन बनि मुनभागरी ॥
रानी विमल कीरनि वदानी भूप भगल मात की ।
दोन्हो विविध बहू दान भगल भूप द्विज नामान की ॥
तत्र मिधुजा अर नामरन्या विमल मुन युग जाउये ।
वेहि भानि कीरति विविध म नूप मगल जग जग छाउये ॥

द्वितीयो विद्वान् विद्वान् चतुर्थां विद्वान्, समाप्तं भवत् १८४७ त्तोय विद्वान् प्रथम अ-याये
दोहा ॥१०॥ द्वितीये ॥१६॥ तृतीये ॥२॥ चतुर्थे ॥२१॥ अष्टौ ८००६५ (१४६५) छंद ६ ।
कथी २१ ॥

विमल--साहित्यिकी के राजा प्रेम प्रताप की एक राज नींद कती माई । उमरी रानी
मदन कुमारी ने दामो, चमेती की साजा की वि नर पुलाव विद्वान् की तथा मरतार राजा का
मनोरजन करे विमल उन्नी नींद या जाय । दामो ने तथा उन प्रीति मारभ की --

सातापुर के राजा का नाम मदन था और रानी का नाम मुलाचनि । उन्नी मधुम
पुत्र के विमल मरतु मार मेर, मगलानु और कीर था । राजा की उमराव री कि सातापुरी का
विद्वान् उन राजा के कती विमल जग विमली अठारह तनयां ही । उन्नी सातापुर मगर के मीन-
मगल राजा और उन्नी रानी के अठारह तनयां थी । अर दोनी और ने विद्वान् मगध नय
रसा । सागत तनय मगल सातापुर मार मार री रसा के विमल मरती मर रर मगा । उमरी
कथारी के मगल विद्वान् नीति मगर री । सागत साते मगर साते मे अठारह न वागा की मर
रिया । उन्नी राजा मगल ने सातापुर मार मे । साता मरतु मर री मर और मेक तो उमरी

तत्त्ववयं असी वाणी जघं पहिचानिये ।
कठिन सो वय दोष कारण परम पव किमि मानिये ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

पसुवा लोक अर वेद के मोह अघ मनार ।
वह लार्दे खेदे आपकों येह अपनी चहन उचार ॥ १ ॥

॥ अन्नमय कोम बरनन ॥

॥ चौकड़ी ॥

अन्नमय कोस का सुनु विस्तार । वेह अरदल आधम दामदार ॥
चिन्ह अचार प्रलता नित्त । दया दान अदम्या इन ॥ १ ॥
साधन श्रवण सुनन को जान । मुक्ति नालोक धिमा ॥
दीक्षा कोह विषयानद । अक्षर आचार देव प्रिय नद ॥ २ ॥

अंत—नांना मत निज वरप वरि पदा नर्च बनाय ।
शोक ताहि बनायई रवामी आय पहाय ॥ १ ॥
बिनु गुर पारप के लहे काल जान न नपाय ।
बिना लये यह जाल के मकले गिय बहाय ॥ १ ॥
बंदीयाना काल के परे विधिघ मो जीय ।
येकहि येक पुकारे मोहनवे पीय पीठ ॥ २ ॥
सुप को लोभ देवाट के जीय हिनय धुनाय ।
बंदीछोर बिनु फोन है जीवहि नेय छुनाय ॥ २ ॥

इति विज्ञानमय कोस महित पचकोम नपूर्णा ॥

विषय—अध्यात्म विषयक कोषो का बगन ।

विशेष ज्ञातव्य—लिपिकान गयत् १८८८ ई । गाना अथवा विषयक । अथवा
रहस्य दाम कृत "रिख विलास" के साथ एक अन्तर्लेख मे ।

संख्या ५२८. पछी चीतनी, कागज—डेरी, पत्र—१० पारा—८५६५५
(प्रतिपृष्ठ)—१२, परिभाषा (अनुष्टुप्)—८०, पृष्ठा. १५—प्रथम पत्र लि.—१००
प्राप्तिस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी मंडल (पारि. मंडली) म. नं. ।

आदि—श्री राम जी ॥

रूप १

हस सरपी साधरी सुरति निरनि के रंजन ॥
सहेज सुभाइन छाड के मिति राध मरोवर रंजन ॥ १ ॥
मोर २

मोर मुकट जहा सीम पर लखट दिवह है रंजन ॥
सुंदर मोमा राजही देवि लखन है रंजन ॥ २ ॥
मोर ३

बकई जिहुरति रंनि को रंजन बरप रंनि ॥
है वपुरी बाली बही विठ विठ रंनि रंनि ॥ ३ ॥
मोर ४

पीठ पीठ परिण मति करे रंनि रंनि रंनि ॥
प्रोति प्रीया मो पीठ बी हू पीठ रंनि रंनि ॥ ४ ॥

म ८—

विलसिता १७

हरि संग तेज्य रघिना दर्व लेति है पाइ ॥
जमे जग मे मन की विलसिता लेत उठाइ ॥१७॥

पं १८

विन्ही प्रीति तपाउ सं गापु न गपु हरि रंग ॥
विलसन छोटी गोविदा भई विरह तन पंग ॥१८॥

हृग्ति १९

हरिन पन की पालही तुहमी धरं न पाइ ॥
पन पत्र प्रीति बराउ कं हरि रहे द्वारिदा छाइ ॥१९॥

घा—

घृ घृ २६

हरि शाप जानंद नरा तपते तन के पाम ॥
घृ कनि बंठाहिही घर श्राप घनसयाम ॥२६॥

पतंग ३०

प्रीत पनग घनी करी श्रम दीयी गव जारि ॥
तात चपट तरन्यो नहीं देखी चित्त विचारि ॥३०॥

अलनपप ३१

श्रमल पप के चंदूपा मिले जाइ आकास ॥
पटं कुन वाचं गमुनि उपजं वुधि प्रकास ॥३१॥

इति श्री पछी चीतनी मपूर्ण ॥

प्रिय—उक्तं विहित परिशो पत्र ३१ दोहे रचे गए हे जिनके उनके सुशो वा वर्णन करने पर नामों की समझा की गई है ।

संग ५२६ पं प्रीतिवती यापछी चरित, रामज—देखी, पत्र—६, श्रावार—७ × ३
५ जग, पति (पतिपुत्र)—१७, परिमाण (अनुष्टुप)—४२, पुरां, रूप—पुगना, पछ,
विति—ताकी त ही मिश्रित, प्राणियान—द्विती माटिय समेशन, प्रयाग, उलाहावाद ।

आदि—श्री गनेम जी मण्ड शीपने पंछी चरीत्र चीताऊ ॥

सोय	विश्वम	वगुना	वाज
सोरा	सूजा	फागु	पविहा
चोमीन	नितुग	मारग	मटमरा
सुनाग	खान	सोरा	हारीलू
गोव	मारग	चिरावा	मटमरा
परादा	कोकीना	पजन	विरगम
हम	सोना	फागु	चकहि
धुना	सोना	हारीन	विदा
मिन तिन	सोरा	सूजा	कीन्ति
पजनु	पपीदा	मनमरा	पोचक
अरसी	रसू	रगु	ठंठु
होी	वगुल	तोनुरा	हारीन
सोरोन	जान	चीनय	सोरा
टं	परेजा	पजनु	फागु
पराग	धुनाग	नीनुग	गुग्रा
विचरित	मारग	हंग	हारीनु

किल किल	भगत	मोंग	रुद्र
मुराग	पीनक	तागा	रुद्र
हसू	लान	दीया	रुद्र
परैवा	मटमरा	चोतुग	रुद्र

मध्य—

॥ दोहा ॥

जब जटज देखी गन (? गन) नु भगीपंथ प्रकीर्त ।
 भगत जन गघुनाथ नु मुगुन गीध ही हीन ॥ १ ॥
 अही निगा पत्र होयगी जग शीपगत के गन ।
 नही मना को सुनो नही बन गन गन ॥ २ ॥
 सावन नही सुहानी मत भगन हीन गी ।
 बीराहा हुकागत म उठ घोन नि गन गी ॥ ३ ॥
 मान तजो भूपन मजी उठो चतुगी दीनगन ।
 तुही तुही पीअ रदत है गीना की उतरन ॥ ४ ॥
 धीरी घोन गुगवे पछु नये मगन नर मान ।
 वरजी मयी पयोहिरे पाउ पीउ कनत पुकरन ॥ ५ ॥

अंत—प्रीतम को भोजन ननिय छो गीन नर नरन ॥
 घोल लाग नौ तीतुरा बहे गीन गीन नु पान ॥ ६ ॥
 देपत ही मनु ल गई नरन वीगी घीन मरी ।
 जीती लछ गतिहंग की दिहगन गी नुकरन ॥ ७ ॥
 चराज्य जग मारी मरी गीन दन ।
 वतन हरीलु है पीया गन नघन गीन ॥ ८ ॥

इती श्री पछी चेतवनी भगुनन गुगम नु गनन दंग ॥

विषय—विग्रह शृंगार ता गगन । गगन गीन गीन गीन गीन गीन गीन नामोत्तरेय है ।

विशेष ज्ञातव्य—रत्नराता पौ. विविध गगन । गगन गीन गीन गीन गीन गीन है । यह दोहो में रची गई है । पौन गीन गीन गीन गीन गीन गीन गीन गीन गीन भी रवान रिया जाता । गीन गीन गीन गीन गीन गीन गीन गीन गीन प्राचीन कवि विशेष रूप से जगरी मोर गीन गीन गीन गीन गीन गीन गीन किया, जिन्हे राजरान लोग नृत्य गीन गीन गीन गीन गीन गीन गीन गीन

लाल, मटमरा, निगा गीन गीन गीन गीन गीन गीन गीन गीन गीन

घेद है कि पनुा प्रि गीन गीन गीन गीन गीन गीन गीन गीन गीन

सत्या ५३०. पान विग्रह गीन गीन गीन गीन गीन गीन गीन गीन गीन

६३० दन. पलि (प्रतिपत्त) — १६ गीन गीन गीन गीन गीन गीन गीन गीन

लिवि—जागरी गीन गीन गीन गीन गीन गीन गीन गीन गीन

ग्राम—दवेनर, गीन गीन गीन गीन गीन गीन गीन गीन गीन

आदि—..... मा शरीर निम्नादिन को फेर गरि सूर्य चरु चल छ ॥
 दिन शरीर प्रमाणात् प्रजापति शरीर जन्मा पाय पनि मं हुन छ ॥ तस्ते तन्वृते अहो रात्रि को
 मात्त गरि हु छ ॥६०॥ उम्मेत्त जन्मे इत्ता निम्ना पायपति रिक्त छ ए हटेन निम्नि मुक्ति फलानि
 ॥६०॥ .. इत्तानि न्यत्र वा आया शरीर पनि पाये नव पोरिछ ॥६३॥ तस्मान् पन्नेको
 दिन देवी विनाश गर्ने घटिया प्रिया तर्क विनाश गर्ने ॥ नृपल पश दामहू छ कुट्टण पश, दाहिनु
 हु छ सो विनाशिनू नव करको निम्नव शक्ति जोगी उन जन्मान गछेन ॥६४॥ परैवा को दिन
 देवि विनाश गर्ने नष्ट वे उदय भयो सूर्य जन्म भयो त न्यत्र उदय भयो तव ठिह्वत् ॥६५॥ रात्रिमा
 नष्ट दवान्न दिन मा सूर्य दवादन जन्मा न ताम ले जो गर् सो पूर्ण हो भनि जान ॥६६॥ सूर्य
 ले सूर्य जोगीन् चरु ले चंद्रो यान् पस्तो तृषा जानोःत निर्म लोकरना गुण रंछात वीपरीते
 विरनं च ॥६५॥

मन—स्वप्न ज्ञान देवि अत्र ज्ञान छनू पूर्ण छ तपनि विना तन्त्र ले सिद्धि छैन सूर्य नाडि
 चंद्र नाडि जन्मा योगि नव नाडा फल तत् ॥ २०३ ॥ इति श्री गिरीमा संवादीवतं नवप्रकारा-
 चिन पवन विष्णु नव ज्ञान ज्ञान विधीप्रोपाद ॥२॥

श्री महादेव प्रति पार्वति विनित गछेन ॥ हे प्रभु महेश्वर ज्ञान जो छत्र पुरका त्रिकाल
 विषये जो छमो शीन हो आजा न.... ननि विनि गन्याम. ॥२०४॥ श्री महादेव जी आजा
 गछेन ॥ हे देवी तिमिने उठिया भन्थी अत्र नात्त दृष्ट भयो ॥ ईति को शुभ अशुभ विचार गर्नु
 ए तन्त्राल विषये हो ॥१०५॥ हे मुंदरी तत्व ले गरि शुभ अशुभ हु छ तत्व ले पराजय हुंछ ॥
 तनेले तुक्कान्न विषये जान्या पनि हु छ ॥२०६॥ फेरि पार्वति विनि गछिन ॥ हे प्रभु मनुष्य लाई
 मर्न काय को भाषना गर्ने शीन भिन छ भनि विनि गछेन ॥ महादेव आजा गछेनू ॥२०७॥ प्राण
 जो छ सो भिन मुप भन् पमि प्राण छ हे वगल्ने ॥ प्राण तुय भाई पनि छे ननु ॥२०८॥ फेरि
 पार्वति विनी गछेन ॥ हे प्रभु योगि जन हरने त्यो तन्त्र की तार हल जा.....

विषय—स्वर्गदेव विष्णु वगन् ।

विशेष ज्ञानव्य—प्रथम गृहिते । देवल ५ पत्रे भिने हे जिनती सख्याएँ प्रमशः १०,
 १३, १४, १८ और १९ हे । रचनानान और विपिकान अज्ञान हे ।

यद्य गद्य मे हे जिनरी भाषा मन्त्रनाट्य नेपाली हे । उम दृष्टि मे रचना महन्वपूर्ण हे ।
 मन्त्रन वद्वर जाने मे वर नेपाली भाषा अत्र भाषा भाषियों की समझ मे नही आ गवती हे । जो
 योगि विधी मे मन्त्रन मिथ्रम ले प्रतिपत्त हे और शरवी पाण्नी मिथ्रम के अनुकृत्त हे, उनको
 रचना ज्ञान सग्नवित सिद्धि नव ज्ञान चरु ज्ञाना ।

तन्त्रा ५३१व पातान मर, ताना—देवी, पत्र —१३, आचार—८×५ हुन
 पनि (प्रतिपृष्ठ)—१३, परिमाण (अनुष्टुप्)—२८६, अर्चनं, रूप—प्राचीन (जीमं जीमं),
 पद, विनि—वैषी, विनितात—म० १०६३ वि०, प्रातिस्वान—५० योग्य पाठ्य, आम-
 मन्त्री, सं०गणना विना—सार्वाङ्ग ।

आदि—

जेही मुमिने पद मे दुगी मुमिने मकर देव तीषुरी
 जेही मुमिने दाना गेट इमरी..... ।

मुमिने राम तपन हुट नट राम नेन पनय्य शमी जइ

असे मेवही सेवना सुधीही तोही चींग नः
करहु कपि मुरमनी जिन्ह पर होह मः
तो पुनी सुसीरी मोन मड छोः अन्ध पावरी को नः
वन से रम तति लं आए अन्ध नम्र अनी पः
:०: .०. :०.

धवरहर पर चटी कं देउती नम नवीवम
अइसी महल मह पुजी गभवी काम
सीत परी कउसील के पाउ धामनीम घर अइव नः
रोदन कहि जो दुनी रनी भीरं चोरी नननः के धनी

अत—

श्रीसुल की वेर बछी कं उतरं परा अरन मरन गती गोती गता मोर मंजरा
ठड अनेग जे नुरु अरी तोरी रहु नेतन्यनी मोर मनीमो
कल कलीय जो तोरी पवर टीली मनी दही कं लतं पर
छोडे गउ इह के नउ देउउ अइमन के पउ
एती श्री पतल गउ सुपुना कय
सवत १७६३ वि० समं नम कृमन धरी

विषय—सीता जी के पातान जाने का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—अथ प्रतिज्ञा । धीरे से पढ़ें परं सुनी । अन्ध का अन्ध ही
केवल सीतालीन पत्रे उपलब्ध हैं । रचनाकाल अज्ञात । विद्वान्महोदयों के विचारों से

संख्या ५३१५ पातान गउ, कागज—देगी, पत्र—१०—६१ ५ ३ १ ५
पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुदुर्)—११०, पत्र—प्रति (. . . .)
पद्य, लिपि—कंधी, निष्कान—म० १८०० वि०, प्राणित तत—
पो०—जयसिंहपुर, जिला—मुजफ्फरपुर (अन्ध) ।

प्रादि—

फतहु देखेहु सीतही ॥ अन्ध सीत लंती चरी ॥
नीचवत एहें बूमर ॥ एनीर दार नम मन लरी ॥
तपसीनी एक देउउ ऐही भोग ॥ एन लत सेनी रमन मः ॥
वरी परम हम कं दोनू ॥ तः अनेर ले तन ली म डी ॥
अमृत भोजन दीनू चरु ॥ लरी सेनी र ई इनीपन ॥
सीत नम सुनत ऐर ॥ चरु लीती सेनी रन लत ॥
चहै जीती से सीत पीसरी ॥ नेअरी सेन कुन डी मनी ॥
सुनतही हयं भए लीमन ॥

अंत—प्रेम लंन गती लररी ॥

धीतन मोर कसर
पहु अना ने जो नर धरी तो ररी ॥
सीत रदनी मोर रीत डीर ॥
एली असीउ जो लीरी पडर ॥
दली मनी के लीरं लर ॥
एनी लतेर मनी लरनी ॥
देउउ लमन के पड ॥

धीरी सवत १८०२ समं नम फतल छड ही पोधी लहरन लंटा

विषय—सौम्यी के पञ्चाशत्तम अध्याय की ११ वां या १२ वीं ।

विशेष ज्ञापक—यह शक्ति है । तब ही यह वही उपलब्ध है । स्वभावज्ञान मज्जा है ।
निर्दिष्टान १० १=०२ वि० है ।

महत्वा ५३२. विषयज्ञान की कथा (शक्ति) तावज—देशी, पत्र—५. आहार—
६॥ X ६॥ उन पक्ति (प्रतिपुष्ट) — १५, परिमाण (मनुष्टु) — ६: पूर्ण रूप—माधारण,
पद विधि—नागरी, प्राणिकथान—श्री भक्तकी मन्त्र श्री विद्या विभाग श्रीरौली, वि० १०
५३, पु० म० २ ।

आदि—अथ प्रसंग पौगण विद्यो ॥ राजा दास्य ॥ चोपाई ।
राजा चद्रसेन उच्यते, के मे सितप्रमनसो उरही ।
एतो वातगद सुनभाइ, मो कंयो भोको समजाइ ॥ १ ॥

॥ मदीं वास्य ॥

मत्री कहे सुनो हो राय, सौपवृषमदो कहु उपाय ॥ २ ॥

मध्य—पु० ५ ॥ चोपाई ॥
कहे वमनक एक वृध उपाऊ । हीन प्रजात वृषभ पे जाऊ ।
करि नेद बोउन उरपाउ । छिन एक मे विरोध कराऊ ॥ २६ ॥

॥ दोहरा ॥

कही वृषभ नु जायके सुन तीजे पसुपाल ।
आज गिध तोह मारही आयो तेरो कात ॥ ३० ॥

॥ चोपाई ॥

मुनत धचन रट्यो मिर नाई । सो गत भई उट की ताई ।

अंत— ॥ सोरठा ॥

मत्री को यह रीत गाम दाम दीव कु राहे ।
पलमे करे जो प्रीत छत चल के पग मे ग्रहे ॥ ५२ ॥
मुनो राय यह बात पचोपाख्यात मे रही ।
सुम मन लीनी जान, मत्री की एसी कही ॥ ५३ ॥

पौगल घेन की कथा सपुरां ।

विषय—पञ्चाशत्तम में मे विपल नामक निर्य और धैर्य की कहानी हिंदी पद्य मे वर्णित
है । चौबीस चित्र भी दिए हैं ।

सह्या ५३३. पुष्प स्त्री की परीक्षा या सामग्रि की टीका, तावज—देशी, पत्र—३ /,
आहार—५ ३ X ५ उन पक्ति (प्रतिपुष्ट) — ६, परिमाण (मनुष्टु) — ३०६, पूर्ण रूप—
प्राचीन, गज, विधि—नागरी, निर्दिष्टान—म० १=६५ वि०, प्राणिकथान—प्रायःभाषा पुष्प-
नाम, ना० प्र० मना, ताजी (यह ग्रन्थ स्वर्गीय श्री नरहरिगम जी महारा, वंदी निवासो के पुष्प-
वाच्य में उनके भाजे श्री गम जीवन द्वारा मना हो प्राप्त हुआ) ।

आदि—श्री गलेन जो मरा माही छ श्री मरुत्पती माना जो मदा माहो छ. अथ. पुष्पमत्री
की परीक्षा सामोदन की टीका चर्चने पुष्प के जीमर्गी तरफ चरण (?) नक्षत्र) देगजे: मदीं
(? मत्री) के एयो तरफ चरण देवजे अथ. पुष्प कावन दीग्ध देवना नारदम् देवणा: भय
मुदमा देवने: छ नरग उवा देवने. मान गना देवने: नीन गंभीर उए देवने. नीन विमयीए
पौना देवने ॥

देव दइत नर सकही न मारी ॥ रात दिवन नही चीनु तुम्हारी ॥
 नही तुम्ह मरव अकाम पताला ॥ बाहुर भीतर ही न जान ॥
 जो एक शरीर परं मही माही ॥ बतीकी हर्गनाशन होइ जानी ॥
 जस बर भागेमी तम बर पाएमी ॥ गर्ववंत होइ नाम नजानी ॥
 :o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

लागे करन उपद्रव भा मन मह हंदाग ॥
 श्रवको मारी मक मोही श्रम की है बरदाग ॥

॥ चौपाई ॥

अनरीती रीती बोइ सर्म चलाया ॥ सत्यधर्म मन मोटी सदाग ॥
 नेम अचार कर जो कोई ॥ मारी टाडी वं नज मोइ ॥
 :o: :o: :o:

॥ दोहा ॥

राम नाम लं लगी अती नीगुदिन छाठीं जाम ॥
 श्रवरी चेटोए जो रहे सर्म पदवा गम ॥

अंत—

॥ दोहा ॥

खंभा फोरी कं नीकरे अपने जन के बाज ॥
 धनी धनी भगतबछल प्रभु राखा जन की भाज ॥

॥ भो: ॥

चुंबी चाटी प्रभु जन यह लीगा ।
 तव प्रह्लाद जो घिनती बीगा ।
 महाराज सतगु रछ पावक
 दुख भी भंजन दुष्टगु पावक ।

:o: :o: :o:

प्रह्लाहाही अपने सग लेऊ । बेगो जाइ हनुमान डू ।

॥ दोहा ॥

तब इहया से उठे के मुनत गीती छी गार ।
 बरहो बाजन बाजही रइ होए प्रह्लाद ॥

॥ चौपाई ॥

अग्या प्रभु कं सीर पर लीगा । प्रह्लाद ही हनुमान ॥
 ॥

विषय—प्रह्लाद चरित्र वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—अप अग्रगं है । नेत्र पत्रे उपपन्न है । मन्त्र पत्रे उपपन्न है ।
 होता है ।

संख्या ५३६७. प्रह्लाद चरित्र, नाटक—दोहा, ५७—६७ अक्षर—५७ अक्षर
 पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८. परिभाषा (प्रमुख) —३३ अक्षर—३३ अक्षर
 नागरी, प्राप्तिस्थान—५० पत्र उपाचार, धर्म—५० अक्षर—५० अक्षर

सावि— :०: :०: :०: :०:

मोर रत्न कुम वरु सुन मोरु । जो सुम जातो घापन जोरु ॥
 नपुंन नर न नर हमान । सुम जानी प्रथ राम सुमाग ॥
 तनी मती सुपुन पुनाए । मी प्रववा के मने न घाए ॥
 राम नाम राम पटा नीगु दीन पाठो जाम ।
 सोरे नीपीमा नी रत्न श्रुही पटायो राम ॥
 राम नाम नर पटीवन नीपा । पाटीन भरी भरी राम ही नीपा ॥
 देवि देवि सो सुम रीमान । तडीन ठान प्रह्लादे ठाना ॥
 नामा जो सुम मोरे रामा ।
 राम नाम हे प्रान मजाना ।
 :०: :०: :०:

अ—इष्ट ते तान ममुद्र वरु जाए त श्रया कीन्ह ।
 उंठ मीने वृत्त ले ताजु मे मारे लीन्ह ॥
 रीती नार नरा आइ हुनाथा । इद्र ही ते वहुते कमुभावा ॥
 रीती मुनी मारे म दीया । राषी बदी करी बीशेपा ॥
 एही दीर्घा मधत पापुत होई । आधीनती जव बीती गई ॥
 तव प्रभु श्रापुही श्राए वीप्र के भेश ।
 ज्ञाए राती के मुनी वरु तन भए कलिस ॥
 प्रह्लाद चरीत्र मुने मन लाई । बाटे धरम पाप छे जाई ॥
 जो नर पठे गुरु मन चीत ताइ । सो नर पारब्रह्म बीली जाइ ॥

इती श्री योगी प्रह्लाद चरीत्र संपुरन समापते ॥

विषय—प्रह्लाद चरित्र वा वर्णन ।

विशेष ज्ञान्य—अथ ते मारभ वा पद नही हे । रचनामान, विपिकान भी अजात हे ।

संख्या ३३७. प्रह्लादाग्नि, कावज—देवी, पत्र—२४, आकार—७ × ५. उक्त,
 पत्र (प्रतिपुठ)—१२, परिमाण (अनादृष्ट)—३/२, पृष्ठा, रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—
 नागरी लिपिमात्र—म० १६४२ वि०, प्रातिरथान—म० १० पत्रनाथ जी दुये, ग्राम—गजहटा,
 पेश्वर—मुमरापुर, लिपि—कावज ।

आदि—श्री मरुताय नमः ॥ अथ श्री प्रह्लाद चरित्र लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥ १ ॥

मनमगिन बानी जिनन गौरि वही हरपाई ।
 भगवातेन शान्त प्रभु कहि सिधि प्रगटं आई ॥

चौ० ॥ निबोधाय ॥

मं श्री रगत वही ममुनाई । मादर मुनह उमा चीत लाई ॥
 तव दार मनादि मुनीमा । गये वैकुंठ जहा जगदीमा ॥
 पुरी पुरीन न जाई ब्यानी । जहा बमत श्रीमारंगपानी ॥
 पाप पदुम नोजन विनयाग । नोजनमह्य उत्तंग श्रगारा ॥

॥ दोहा ॥

मेनपत्ता दशरथिमा उनर रिगी मृगंग ।
 तपुनाद मे कोरुनद पीरत मयुर रगभग ॥ २ ॥

:०: :०: :०:

अंत—

प्रथमही मैं हरिजन गुण गाये । मति अनरूप अनूप सोसाए ॥
कनककल्प्य अरु हाटक दोऊ । रावण कुभकरण मैं सोऊ ॥
दंतवक्र औरी सिसपाला । दीये परम गति सोउ हृत्यो गोपाला ॥

॥ दोहा ॥

नारायण के पारषद जय अरु विजये सुजान ।

भए महामुनि आप ते तेहिते कियो वपान ॥४६॥

इति श्री प्रह्लाद चंद्र (? चरित्र) नरसिंघ पुराने सपुरने समाप्त ॥ समत १६४२
आसूज्य सूक्लपक्षे षष्ठ्यं बुध वासरे कुबेर दुवे लीप्यते आत्मार्थ ॥

विषय—नृसिंह पुराण के आधार पर प्रह्लाद चरित्र वर्णन किया गया है ।

संख्या ५३८. प्रेमापरा भक्ति, कागज—देशी, पत्र—१०, आकार—६ × ४ $\frac{१}{४}$, इंच,
पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुटुप्)—२०६, खडित, रूप—पुराना. गद्य, लिपि—
नागरी, लिपिकाल—स० १८७६ वि०, प्राप्तिस्थान—आग्नी नागरीप्रचारिणी मभा (दाता—
लल्लू पंडित, ग्राम—शमसावाद, पो०—सुजातपुर, जिला—डलाहावाद), बाराणसी ।

आदि—..... सना काड अथवा ब्रह्म निरूपन धर्म विधि । ब्रह्म निरूपन करते
हैं धर्म विधि से, एक अधर्म विधि से ब्रह्म निरूपन है अरु येक धर्म विधि ब्रह्म निरूपन है एक कहते
हैं कि अपर ब्रह्म कहा है यह ससारे ब्रह्म है यह जगत को करता कोई नहीं है आप्रुही ते जगत उतपति
होत है मनुष्य ते मनुष्य पसु ते पसु पक्षी ते पक्षी तरु ते तरु अन्न ते अन्न इत्यादिक चराचर काल
काल मे उपजत है पालते हैं मारते हैं यह परपरा अनादि काल ते चरी आवत है जैसे जल मे लहरि
स्वाभाविक उठती है पुनी बनी रहती है परि आदि अत मधि एक जल ही है ।

अंत—अरु श्री रामचंद्र के स्वरूप को विरह प्रेमा पराभक्ति मे आरट्ट है एक रस जिनकी
दशा अलक्षित है ताको तीव्रतम वेंराग्य कही एह दोहा सातह काड के अर्थ को सूचित करतु है ताते
अमित अर्थ है मे अपना मति अनुसारे कहेउ है मकर के सममे सब मुनि प्रयागहि जाहि समाज
होइ ॥ सपूर्ण सुभमस्तु सुभम् भूयात् जे देवा सो लिपा मम दोष नाहि स० १८७६ फाल्गुन सुदी
पुनवासी वृहस्पति ॥

विषय—रामायण के एक दोहे के आधार पर प्रेमापराभक्ति का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—पुस्तक पत्राकार रूप मे है । इसका प्रथम पत्र नष्ट हो गया है ।
रचनाकाल दिया नहीं । लिपिकाल सवत् १८७६ वि० है । रचयिता का नाम भी अज्ञात है ।
पुस्तक गद्य मे है ॥ अत महत्वपूर्ण है । इसकी रचना रामचरितमानस के एक दोहे
के आधार पर हुई जान पडती है । भभवत वह आरभ के पत्र मे दिया रहा होगा । जो
नष्ट हो गया है ।

सख्या ५३६ प्राकृत पचाट्यान (भाषा पञ्चनत्र), कागज—देशी, पत्र—१४०, आकार
—१० × ६। इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुटुप्)—२१७७, पूर्ण, रूप—
साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८२५, प्राप्तिस्थान—श्री मरस्वती भटार,
श्री विद्या विभाग, काँकरोली, पह० व० ८६, पु० स० २ ।

आदि—॥ श्री द्वारिकेशो जयति ॥ अथप्राकृत पचाट्यान लिख्यते ॥

॥ श्लोक ॥

वदे सरस्वतीं नित्य वाङ्मनः काय कर्मभिः ॥
वाक् समुद्रो मया नद्धो दुस्तरस्त्रिदशंरपि ॥ १ ॥

मन्त्रों को नमस्कार करने पर नीतिशास्त्र को करत हूँ कैसे जो बाना मनमा और
मन्त्रों को करत हूँ उर मन्त्रों के ही हूँ ।

॥ श्लोक ॥

ननु वेदात्मनो मन्त्राय परात्मनाय मनुनाय चारुनाय च त्रिदुषे नमोस्तु सर्वशास्त्रे कर्तव्यम् ॥ २ ॥

मन्त्र ब्रह्मन्ति, मन्त्रानामयं, परात्मना, वेदव्याम, चारुनाय, इतने जो नीतिशास्त्र के कर्ता
नितने हूँ नमस्कार करे नीतिशास्त्र रहत है ॥

मन्त्र—पृ० १०७

॥ श्लोक ॥

अहो उद्यमे पुनामन्व जन्म कृतं फलं ॥

गुमानुम नमन्वेति विधिना मनियोजितं ॥

उद्यम किये जिना जो वस्तु प्राप्ति होय बाको एगो जानिये जो गत जन्म को करघो
पुण्य । गुम अथवा अनुम जो जो पूर्ण करघो होय सोई फल पाईये ।

॥ श्लोक ॥

यस्मिन् देने न जाने च यथा यादृशेन च ।

हृत् गुमानुम कार्यं तत्तथैवोपगुज्यते ॥

जा दिवम के दिगो जा काल के दिगो जा दय के दिगो । जो कर्म करघो होय, सोई भोग
भोगये । जो अन्वयन धन शुभ करके प्राय मिल्यो होय वह धन अन्वयन परच न करनी । ताते
यह माग को में युक्त करके पाऊ । जो भोको दोहोत दिनन लो पाह्ये । ताते प्रथम लो धनुष्य
की प्रयत्ना काटि पाऊं ॥

अन—राजा ने पुत्रन को देखिने परम संतोष पावत भयो । विरगु शर्मा को बोहत
रुष्ट देख मनोष कीनी । ताने यह पञ्चोपाख्यान नामे ग्रथ जो कोई मनुष्य पढे लो परम चतुर
विचिन्तक होय । यामे संपूर्ण चानुयं और नीति और लौकिक व्यवहार वर्णन कीनी हे ।

इति श्री पञ्चोपाख्यान पंडित विष्णु शर्मा विरचिते अपरोक्षित करनीय नाम पंचतत्र सपू-
र्णम् ॥ पादश पुत्रन द्रष्टा नादश लिपित मया । यदि शुद्धं अशुद्धं वा मस दोषो न विद्यते ॥१॥
सवत् १८२५ मिनी मार्गशीर्ष शुक्ल १० चंद्रवागरे । प्रथम संपूर्ण भयो ॥

विषय—विष्णु शर्मा ने राजा के पुत्रों को नीतिशास्त्र का उपदेश दिया वह नीतिशास्त्र
पञ्चोपाख्यान रूप में लिखा है ।

सख्या ५४०क. पून, पाण्ड—देवी, पत्र—५, आहार—१३ × ३३ उन, पक्ति
(प्रतिपद्य)—८, परिमाण (अनष्टम्)—३०, पुर्ण. रूप—प्राचीन, पद्य, लिपि—नागरी,
प्रातिष्ठा—आरंभाय पुत्राणाय (दागि सशर), नागरी प्रचारिणी नभा, काशी ।

आदि—श्रीकृष्णाय नम ॥ दोहा ॥

पञ्चवाग पिय लाइयो पूछन सोई जुवाव ॥

मे हंसि के श्रेमे कृपे नोको फल गुनाव ॥ १ ॥

प्रीनम श्रेमी प्रीनि मे भयो जु मद प्रकाम ॥

नपा की बेंदी दई जहां कमल को वाम ॥ २ ॥

वाग दिगावन पिय गये जहां गुजे को फल ॥

कनन मे कन्पी मनो गुण है तेरो मन ॥ ३ ॥

मंगी मन्त्रे नाय है वान कह ममनाय ॥

पून केवदी आनि दे चिन मे रगो न जाद ॥ ४ ॥

गावन के बदना उठे माये दियो कृनेन ॥

चोनर दोन्यो मे पीया वाम करे अनियेन ॥ ५ ॥

मध्य—

बाग दिखावन पिय गये साथ चली वह बाल ॥
 वुही नहीं हमको दई सिंगार हार की माल ॥१५॥
 जाकी सोभा हँ भली देवत होय आनद ॥
 फूल एक मे मागियो जाको नाम मचकुद ॥१५॥
 चैत मास चित चोरि कँ प्रीतम लाये वाम ॥
 फूलन वाली को सखी देखे उपजे काम ॥१६॥

अत—

प्रीतम असे हेत करि रोम रोम आनद ॥
 पियरेखें यो फूलियो कमोदिनी चद ॥२६॥
 बालम सों मे यह कहो वन फूल मगाय ॥
 सुरज मुख तन रहत हँ सुरजमुखी बुलाइ ॥३०॥
 आजु गई में बाग मे अपने सहज सुभाइ ॥
 फूल केतकी देखिकें वास रही महकाय ॥३१॥
 वारी हो रे बालमा बडी होन दे मोइ ॥
 ज्यों बगुला निगले माछरी ज्यो निमलोगी तोइ ॥३२॥

विषय—इसमे फूलो पर ३२ दोहे हैं ।

संख्या ५४०ख फूल चेतावनी, कागज—देशी, पत्र—३, आकार—५ $\frac{३}{४}$ × ४ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३७, पूर्ण, रूप—पुगना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १८६२ वि०, प्राप्तस्थान—५० देवनाथ चौके, ग्राम—पाँडर अलवारा पो०—पश्चिम सरीरा, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ फूल चेतावनी ॥

आजु कला कछु मागिहौ मन मोहन प्रतिपाल ।
 हरषत आये हेतु कँ पहिरे माल गुलाब ॥ १ ॥
 कुदन फूल सुहावनौ सोभा वरनि न जाइ ।
 बार बार बिनती करौ प्रीतम देहु मगाइ ॥ २ ॥
 घर आये का पहरिहौ प्रीत अग सुमाल ।
 चरन विराजं हे सषी ज्यों पूझी की लाल ॥ ३ ॥
 करवत भयो सु केवरो विपि सी लागे वास ।
 सेज लगै पावै नहीं प्यारे पियके पास ॥ ४ ॥
 का आवै प्रीतम मोह कँ का पडित पूछें बात ।
 फूलन भावै बेल का पिय बिलसत मो पास ॥ ५ ॥
 रोम रोम मेरे लगी निसरि गये दुपसूल ।
 आये अचानक वे सषी घर साहेव चमेली को फूल ॥ ६ ॥
 कला चतुर इनकी बनी फुलि महासुप चैन ।
 जूही फूल मंगाइये मौ हित प्रगटत मन ॥ ७ ॥
 अरी सषी यह बात की सदा रहै जिय आस ।
 रतन मंजरि गूथि कँ पिय ल्याये मो पास ॥ ८ ॥
 रितु औरै आई सषी हन्यो मोहि सोहाइ ।
 टेसू केरे फूल मो लाली मा चितु जाइ ॥ ९ ॥
 प्रीतम आये धाम मो सषी सयानी साथ ।
 बातें पूछें प्रेम सो सो फूल सुदरसन हाथ ॥ १० ॥

बागम मोमा या रहेउ केक वात गुनु आइ ।
विदावन के बाग म मदा वसत मोहाइ ॥११॥
मनमा मन मे यह नई मोमो पही न जाइ ।
मोना चक्कर बुभुमरग मो पिय दहू मगाइ ॥१२॥
मन की वात म का रहा नुनों मगो मो तूल ।
आजु पिया मोहि दीजिय रागेभुर का फूल ॥१३॥
बाग देवान मे नयो नयो मदा मो बाव ।
उहा पिया मोहि दीजिय गिबान्हाम की माल ॥१४॥
प्रीतम महा प्रीति करन नयो मदन परराम ।
चंदे की चोटी रहे नहा करन का अग ॥१५॥
संत माम चिन जाइ । अति प्रीतम नयो धान ।
नेह निरति यलगा नयो प्रसद हल है काम ॥१६॥
वत काम की केनि क पोत काम गुग आइ ।
पेर फूल मे माहा मो पाउर देहू मगाइ ॥१७॥
बही रहा म दा मा दाई बाग अनूप ।
बोमर दान्नी मा पिदा कहि हेतु पूरा निरुर ॥१८॥
वाग वाग गुठी पिया दरो धरत मे मोदु ।
रमन नैन के बाहर बनल नियो मो मोद ॥१९॥
बगुजर बाग मो पिया का मगी चतुर तै पिय ।
फूल अनूप मुतादनी महामानता देव ॥२०॥
वाल विवाहन रहि मगी मोरे मत आनन ।
पिमी त्रिभु मोमा मगी अय वासोदनी चद ॥२१॥
प्रीतम न्याये मोह दरि बागवान हे नाथ ।
मोमो की गुधि के रियो हार मो हाव ॥२२॥
रहनि वासिनी काम मो माधन वत की जागु ।
पिय नाये मुव वाग्ने मो चये की वाग ॥२३॥
मन मन विना अति प्रीतम जिय मे रही न पाज ।
मोमति दंशरी मोमरा पिय न्याये मो वाज ॥२४॥
मेरे मन के भाजते प्यारी पीय गुजान ।
अजहरी फूल मगाये सुनन हुनी मे वान ॥२५॥
मोमो मेरे नाज गो दोगन के हे हेद ।
नारो बनी वन्यर की मन रानी तन मेत ॥२६॥
आज गरी मे बाग मे प्रीतम रहे मगाइ ।
मगुली के फूल की मोमा वरनि न जाइ ॥२७॥
मोमति देरी बाग मे बहा बरी त्रिभुजर ।
गुधनि मेरनी मेरनी गुधनि ही हार ॥२८॥
बन हमारे मोमले रियो मगी विगार ।
अति मंगल आर्य मगी रजना की अनियाग ॥२९॥
जिय जिय मरत निरल हे जिय विा निरल मगाइ ।

इति फूल चैतावनी संपूर्ण ॥ अस्वनि वदि ४ गुरो संवत् १८६२ श्री गं.विंदाय नमो
नमः श्री काशी विश्वनाथ जी मे ॥

पूर्ण प्रति लिपि
विषय—प्रत्येक दोहे में एक फूल का उल्लेख कर श्रुगार विषय का वर्णन किया गया है ।

संख्या ५४१. बड़े छप्पन भोग को क्रम कागज—देशी, पृष्ठ—५, आकार—१०। x ६
इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुष्टुप्)—८१, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—
नागरी, लिपिकाल—स० १८५० के पूर्व, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग,
काँकरोली, हि० व० १०७, पु० स० २१ ।

आदि—॥ श्रीकृष्णाय नम ॥ बड़ो उत्सव छप्पन भोग ताको तात्पर्य श्री स्वामिनी जू
सबके प्रत्येक आपने घर पधाराइवे को आर्त्त होइ प्रिय सबघ दिन रह्यो न जाइ । तातं यह मनोरथ
करि श्री ब्रजराज जी को सब कुटव भोजनार्थ शयन भोग पर्यंत दिवा सुखानुभव करि गुप्त तासो
सब समझ करिवे को निमन्न करत हूँ ।

मध्य—१० ३

सब पाछे नमस्कार करिये । चौकी तीसरी पर श्री रोहिणी जू तिनकी गेद मे
श्री बलदेव जू एसी भावना करि पधराइ पहले चोली समर्पिये । पाछे साडीं समर्पिये ।
गोद मे श्री बलदेव जी को श्रोढनी उढाइ पाछे माला पहराइ चोवा चंदन लगाइ झवीर छिरकी पाछे
नमस्कार करिये । पाछे चौथी चौकी मुख्य स्वामिनी जू की भावना करि पधराइये ।

अत—पाछे ठाकुर की शय्या पास बीडा गडुवा सब ठिकाने धरि ठाकुर को पोढाइये ।
सर्व ताले मंगल करि प्रसाद सब लेइ बाहिर आइये । पाछे वह प्रसाद योग्य देखि बीडा माला
वस्त्र वाटि बीजिये । आपु राखिये प्रसाद लीजिये । अथ मनोरथ पूर्णो भाग्यभाजा नृणा
भवेत् । करिष्यति प्रसपूर्ण निजाचार्यान्वयेश्वर । श्रीरस्तु ॥ शुभभवतु ॥ कल्याण-
मस्तु ॥

विषय—पुष्टिमार्गीय संप्रदाय मे अन्नकूट के समान विशेष आयोजन पर भगवान् के लिये
छप्पन भोग तैयार किये जाते हैं उसका प्रस्तुत पुस्तक मे वर्णन है ।

विशेष ज्ञातव्य—पुस्तक खुले पत्तो की है । ऊपर “गोस्वामी श्री ब्रजनाथात्मज श्री विठ्ठल-
नाथस्येद” लिखा है । इनका समय संवत् १८११ से १८५० तक है ।

संख्या ५४२. वादशाही राज्यकाल का परगना आदि विवरण (वर्ष, मास, दिन, घड़ी
सहित), कागज—देशी, पत्र—३, आकार—७। x ६। इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६,
परिमाण (अनुष्टुप्)—७८, अपूर्ण, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री
सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, काँकरोली, हि० व० १०३, पु० स० १ ।

आदि—पातसाही कारखाने ३६ छत्तीस के नाम ।

सुमदल खाना, पालकी खाना, सले खाने, तोप खाना, फरास खाना, नौबत खाना, तालीम
खाना, खसवाइ खाना, वाईद खाना, हुमें खाना, दिवान खाना, अदालत न्याय खाना ।

मध्य—पृ० ३—खेत पड्या मुगल जीत्या, पातसाही मुगलानी हुई, संवत् १७५२ वेसाए
सुद ५ तीर्थंकर तखत बेगः

पातसाह तीमर लिंग मुगल	वर्ष	मास	दिन	घ०
१. पातसाह तीमर लिंग	०	०	१	०

ररं बुवरी टेक बीहुनी । थाभा वाज वीन यकं न थुनी ॥
कोरी कह ठाटनी साजा । तुम वीनु कत न साजन साजा ॥

॥ दोहा ॥

परबत समुद मेघ ससी दीनी अर..... ।
सही न सकै..... ॥

०:: :: ०:: ०::

—अपूर्ण

विषय—विरह शृंगार का वर्णन । यह जायसी कृत 'पद्मावत' का अंश (नागमती विरह विषयक बारहमासा) है ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ मे प्रथम और अंत के पत्रे अप्राप्त है । उपलब्ध अंश मे स० २ से लेकर ११ तक के पत्रे हैं । रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात है ।

संख्या ५४४. बालबोधनी, कागज—देशी, पत्र—४३, आकार—४ $\frac{२}{६}$ × ११ $\frac{२}{६}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुपृष्ट) —१४१६, खडित, रूप—प्राचीन, गद्य, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—बलभद्र मिश्र, ग्राम—सिरजम, पो०—गौरी बाजार, जि०—गोरखपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः श्री दुर्गाय नमः ॥

॥ दोहा ॥

शिवसुत मैं प्रनवी सदा रिद्धि शिद्धि निद्धि देहि ।
कुमति विनाशन शुभतिकर मंगल मुदित कर गेह ॥
श्रीगुर चरन मनाये काली तुम परशुद ।
भाषा लिषो चिकित्सा शारद होहु शहाय्य ॥
काल गननाथ कह मन वच क्रम शीर नाय ।
शभु उमा उर आस धरि शभ विधि होहि शहाय्य ॥
गुरु पद पंकज शीश धरि शुफल होत शभ काम ।
सूक्ष्म चिकित्सा शर्वमत बाल बोधनी नाम ॥
भाषा कहो बनाय के देषि ग्रथ मत शोध ।
नाशा लक्षण व्याध के जेहि जानत शुद्धि होइ ॥
अर्थ कहो शभ व्याधि के पठत शुगम सभ ठाम ।
आवहोत गद होतहहि पीत कफ बात नाम ॥

०:: ०:: ०::

अंत—॥ परबटि वायुगोला को ॥

ताड के सिरिका पका बालु धाय . . . तव विपिके सिरिका पिये बाइ वावगोला जाइ ॥
है जामे उवांत तम्भे के ॥ नरिअर के जटा जारि लेव टांक २ चित्रि पुरानटा २ ए . . . चत्र देव पानिवर . . . उवात थंभे ॥

इति वैद्यशास्त्रे बालबोधनि नाम्ने सर्वौषधाध्यायः ॥ मकरस्थ शितितरे पक्षे त्रियो-
दश्यां दवि वाशरे हि नागाष्टइन्दुश्च गते पिमंचविद्यते विलिख्य काशीरामेन पुर ॥

विषय—रोगपरीक्षा, रोगनाम और औषधो का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ के बीच के कई पत्रे लुप्त हो गए हैं । लिपिकाल और रचनायान अज्ञात हैं । ग्रथ अत्यंत जीर्णविस्था मे है ।

ब्राह्मण वाचते पोथीआ मोलना वाचे कीताव ।
 नाम तो नीकला राजा भयरी रुम तो निकला जोग ॥
 जन्मे रानी के कोप म पुत्रही दोप लगाए ॥
 बोले माता रानी रूपदेइ सुन पंडीत मोरी बात ।
 हाथी देंऊगी श्री पालकी घोडा देऊगी पचास ॥
 लरीका के नाम पंडीत फेरी देहु जीनमे जोगी न होए ।
 बोले पंडीत कासी का सुन रानी मेरी बात ॥
 नाम फेरे से ना जोग घटेगा जो कुछ लीपा लीलार ।
 लीपनहारा तो लीप गआ मेटन हारा जो कोड न ॥

अत—एतना वचन रानी सुनती है तन से उठत आग ।
 राजा नीकले जोगी वनके छुट गआ संग साथ ॥

॥ दोहा ॥

तुलसी एही जग झाइके सभसे मीलीए धाए ।
 ना जानी कौने रूप से नाराएन मीली जाइ ॥
 तुलसी परघर जाइके नींदा कहीए रोए ।
 आपन भ्रम गवाइके वांटी ना लेइहै कोइ ॥

॥ सपुरन ॥

इति श्री पोथी भयरी कथा जो देया सो लीपा मम दोप न दीअते संमत १६४१ मीती
 कातीक सुदी १ को लीषा है दसषत हनुमान पाठे साकीन कलकता नीमतला घाट चुना पंटी बाबु
 बुलाकी साँघ के मकान मे पाटकल के पीछे लीषते है से जानव ॥

विषय—भयरी की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल अज्ञात है । निपिकाल सवत् १६४१ है ।

प्रस्तुत ग्रथ के साथ एक हस्तलेख मे निम्नलिखित ग्रथ भी है —

रामजन्म—सूरदास कृत, रामजी का वारहमासा—भवानी कृत, वारहमास वेनी माघी
 जी का—सूरदास, काली जी की अस्तुति—पल्लूदास ।

संख्या ५४७. भूगोल कथा, कागज—देशी, पत्र—५, आकार—६^३/_४ × ४^३/_४ इच,
 पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—७७, पूर्ण, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—
 नागरी, लिपिकाल—स० १८४८ वि०, प्राप्ति स्थान—धर्मशास्त्री प० राजाराम जी मिश्र,
 ग्राम—रामसाला, पो०—सगडी, जिला—आजमगढ ।

प्रादि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ भूगोल कथा लिप्यते ॥

पचास कोटि जोजन प्रिथ्वी है पृथ्वी के मध्य सुमेर है तोरह सहस्र जोजन भूमि मध्ये
 गडित है चौराशी लछ जोजन पृथ्वी ते ऊंच है वीस सहस्र जोजन चकराइ है सूर्य के लंकार सुमेर
 है : अष्ट शृंग है हेम १ लिस २ श्वेत ३ अंठ शृंग ४ मालियंत ५ गए मदन ६ महाशृंग ७ सो एक
 एक शृंग लक्ष जोजन के अतर है सुमेर सुवर्नमय है कलसात है वंडूर्यादि मणि बोधित है गन गंधर्व
 मुनि पारिजात कं है मौलि विनु राजा विराजत है वं कुठ मही पुन्य प्रदाइक है तेहि सुमेर के दक्षिण
 जमुनी तथा आम्ब को वृक्ष है ।

अंत—

एक लक्ष जोजन ध्रुव लोक व्यापक बीस्तार विरग लोक है । देवतन्ह कह दुर्लभ है धर्म
 बोलियत है पाप मारि काटियत है तिस ऊपर सून्याकार है तिस ऊपर पुन्याकार है तेज पूंज परम

पुरुष नारायण तथा वंश है सोदर्य के पत्न्य पर सोअत है अपनो चरनांगुष्ट चूहत है पवन स्वरूप वीर्यु हरी इनि नूगोत पुरारणे जो प्रथम सपूरा सुभ मस्तु सुभमवेत् ॥ सवत् १८४१ ॥ साके १७०६ मम्ये चंत्रे माने सुको पछे पचम्य भृगुनागरे पुस्तकी लीप्यते दश्रा तीवारी जो देपा सो लीपा मम दोपो न दीयते ॥

विषय—भूगोल श्रीर गगोल का वर्णन ।

संख्या ५४८. भूगोल प्रमाण गद्य, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—७ × ३ $\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुपृष्ठा)—८०, पूर्ण, रूप—साधारण, गद्य, लिपि—नागरी, निष्कारण—म० १६६१, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भंडार, श्री विद्या विभाग, कांकरोली, द्वि० व० ११८, पु० म० ११ ।

आदि—ॐ श्री गणेशाय नमः ॥ पृथिव्या भोगता शब्दयुक्ता पृथ्व्यक्तस्य श्रि द्रह्याडा लिलायां सा ग्रह्या आदि विष्णु ने ॐ पातयो रता । अदागले वायु उत्पन्न वायु ते तेज उत्पन्ना तेज ते उत्पन्नो पानि । पानि ते दंभ उत्पन्व्यो । पानि मध्ये द्रह्याड उत्पनो वायु ते द्रह्याड फुटि टुक टुक भयो । तहि जलमाई विष्णु रहे । परमेश्वर की नाभि कमल ब्रह्मा रहे ।

मध्य—पृ० ४-५

सेस नाग के फन एक महान है, कुड़ सहल नेत्र है, पन्द्रह कोटि जोजन एक एक फन विस्तार है । महासेस नाग के मस्तक ऊपर महा चाराह की दाढ ऊपर पृथि है । पृथ्वी ऊपर परवत है । अष्ट पर्वत है । कौन कौन पर्वत है । हेमाद्रय ।१। रतणचल ।२। विध्याचल ।३। उदयाचल ।४। अस्ताचल ।५। मत्स्यागिरि ।६। द्रोणा गिरि ।७। पहेक पर्वत ॥८॥ एवं विधि पर्वत पृथ्वी ऊपर है ।

अंत—तस्मात् उपरि सन्याकार है । तेघकलातः श्रिनारायण पीडे है । सोने कपाल कि ऊपर अपने पाउके अगुठा अग्रे चसत है । सो ब्रह्म सो बहु बालगोविंद सरुपि है विस्तु । देवताते अपर्शन है । नयं कला संपूर्ण है । गंगा जल सुक्षयत है । कलि मध्ये प्रभु आदित ॥

इति भोगल प्रमाण गस्य प्रचरण समाप्तः ॥ यथा प्रति जथा लिखि तं ॥ संवत् १६६१ वर्षे पोप सुद १ दीने लखतं भटनंद जी सुभ भवतु श्री नारायणमस्तु ॥

विषय—पौराणिक ढग पर भौगोलिक वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—ऊपर “गिर्यगंगा” लिखा है ।

संख्या ५४९. महादेव सरोदय, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—६ $\frac{३}{४}$ × ४ $\frac{१}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुपृष्ठा)—६३, अपूर्ण, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—प० मुन्नी चाँव, ग्राम—हुन्मुजपुर, पो०—सादात, जिला—गाजीपुर ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री महादेव सरोदय लिपते ॥

कंताम मियर पर दंठे जाय महादेव बचन सुनी सपी पारवती या अग्न्याय है । सो तुम सो कहन हो सुन पाछे त्रिकाल न्य होइए है हे पारवती गुप्त वात की तत्व सार है सपदे की वानी है सपदेव को पिता तनमार है सो तुमसो कहतु है । हे पारवती आ अस्यूल कहता धनी है अरु सुछम कहता मारग क्लीनी है गुन की दधु है पठित जिनकी गाव है श्रीर लोक संसार में अचरज है अनेक गाम्भ्र मं तत्व नार है जो जानैगा मो सरोदय सो बना रहेगा हे पारवती मरव सास्त्र को अग्न्यास करे है सो देवता को मंग्या मं प्रापति होउहे ॥

अंत—अहमपनि वापे तन्व चलं मुन अग्नि तत्व चलं आदित प्रथी तत्व चलं सनीचर जल तन्व चलं हे पारवती मयए गुनान कहन हो मैप सनान्त पत प्रथी तत्व वर्त ती समयो आछो होय

आनंद होए अति बल कारी होए राजा प्रजा सुयी होए मेय सन्तान्त वाये तत्व मै पंठे तो आछी समयो होए पवन धरती वाजे मेय सन्तान्त तेज तत्व मै पंठे तो काल परं राजा विध्यसन होए मेय संक्रात वाये तत्व मै वंठे तो दुर्भंछ परंअपूर्णा ।

विषय—तत्व स्वरोदय एव ग्रहो के फल का वर्णन ।

संख्या ५५०. महाभारत (विराट पर्व), कागज—देशी, पत्र—४, आकार—६१^३/_४ × ४^३/_४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१२, परिमाण (अनुष्टुप्)—४२, खदित, रूप—पुगना, (जीर्ण शीर्ण), पद्य, लिपि—कैथी, प्राप्तस्थान—काशा नागरीप्रचारिणी मभा, वाराणसी ।

आदि—

रूपा न होइ तिमोर कर फुटी ।
चंद सुरज कै क्रीनीन फुटी ॥
इहही अत्र सभ रयी तव वंठे राज दुआर ।
तबही अत्र सभ लेवै जीव होइही नीस्तार ॥
राए डुडुस्टील राषा कवल ।
कोटी परग धारू जत्र फाज बल ॥
भीमा गदा लेइ ब्रीछी चाढावा ।
पन पन गदा उतारी हीअ लावा ॥
जेही कर गहो सहै को करान ।
इहइ गद जीरजोधन हरन ॥
भीमा परीहरइ नाही तामा ।
जैसे कीरीपीनो न छडै दामा ।
भीमी सेनी बोल अनरागी ।
इहइ गदा जीरजोधन लागी ॥
अरजुन धनक वान हीअ लावा ।
गुना कवराव औ सील डोलावा ॥

अंत—रथ सै उत्तर भंअ भीम सहोदर भाइ ।
जाइ वंराट वहोरहु कोउ जीअत न जाइ ॥
रथ ते उत्तरी लीन्ह तर तोरी ।
पंठे हाक देइ जघउ प्ररोरी ॥
बाए हाथ अत्र नेवारा ।
वहीने हर हयी रथ मारा ॥
गदा सवारी मन भए बौराउ ।
नही गदा एही अत्र ठाऊ ॥
हथीही हथीही अमेर देइ ।
कवनउ हथी कध कै लेइ ॥

—अपूर्णा

विषय—महाभारत विराटपर्व की कथा का वर्णन । अथ वी भाषा प्राचीन है ।

संख्या ५५१ युगल विहार, कागज—आधुनिक, पत्र—७, आकार—१० × ७ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५०, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग ।

आदि—श्री मनगुरु चरणेभ्यो नम ॥ अथ ॥ जीव पीव युगल विहार वहार अष्टेत्त-
रीय दोहावली ॥

॥ प्रारभ ॥

श्री गुरु पद कज रज रजहरन घिय ध्याय ।
श्री साता वर प्राप्ति कर रहस अलौकिक पाय ॥ १ ॥
श्री हनुमत सुसत पद यदि अनेकन वार ।
जैहि करना आनद पर मिलत सुनित्य विहार ॥ २ ॥
श्री साकेताधीश प्रभु था सत्स पद पक्ष ।
वदी वार अनेवहा शिव मन्-शक्ति-ररा सदा ॥ ३ ॥
नमन नलिन पद श्री भरत भरत प्रेम हिय रीति ।
नीति निरत प्रभु प्राप्ति प्रद हरन महा भय भीति ॥ ४ ॥
श्री लछिमन पद कमल नम प्रभ लच्छन दातार ।
रहै हमेशे लच्छमन वरै नाम प्रभ प्यार ॥ ५ ॥
:०: :०: :०:

एक समय पन्धाम मदि श्री श्री साताराम ।
दुहै दिमि परिकर सेवहीं सेदा लहि अगिराम ॥ १ ॥
:०: :०: :०:
बोले मृदु मनुकाय कै सुनहु मटा मग जीव ।
माया मम अति बलवती रचना कीय कमनीय ॥ १४ ॥

मध्य—

शोक शोक अयलौकि के धिमरी चुधि परलोक ।
यह निज जिय निश्च करी हम रहैहं यह लोक ॥
धूमि धूमि देख्यो सयरा अक्षत गई वीराय ।
असल नकल लखि नकल मे असल वद्वि ठहराय ॥ ३ ॥
संग सिपाहिन से बहत यह यह हम लेव ।
यह यह तुम लइहीं जहाँ उत्तर का देव ॥
:०: :०: :०:

प्रीतम पद विलोकि प्रिय अधिक कही अकुलाय ।
कृपावती तव आइकं बहु विधि वह समुन्नाय ॥ ४४ ॥
धन्य धन्य प्रीतम पिया धन्य दीन अनुबंध ।
जीव पीव प्रभु मिलन को कहीं सुनी सुप्रबंध ॥ ४५ ॥
चलो परात्पर धाम ते श्री नतगर बसु धारि ।
भव अगाधि निधि बीचते कर गहि लेहु निदारि ॥ ४६ ॥
:०: :०: :०:

वन कदंब दम्पति रमत सम्पति रूम कदम्ब ।
श्री मानमिर्नदिनि मुतट गनिक स्तेन प्रबलव ॥
वन अनंग मु विदेहजा अलि रघुनंदन संग ।
विलमत विह्वलत अंग अंग वारिय अमित अनंग ॥
विपिन नागकेसरि न सरि युगल चिनाम प्रकाम ।
द्वादम वन मन रमन कर नहु मद द्वादम मात ॥

विषय—गुरु द्वाग जीव अंग उचर रा मिनन वर्गन किया गया है ।

एा समय उचर ने आने परितरों में कहा, "मरी अनंक कृतियों में मैं पृथ्वी अत्यंत रम-

शुकी है। तुम लोग जाकर देख लो। परतु वहाँ की किमी वस्तु को न तो छूना और न लाना ही, केवल देख भर लेना।”

जीव अगुआ था और उसके साथ जप, तप, सधम, नियम, व्रत, श्रम, दम, ज्ञान, विज्ञान, विरति, सुरति आदि अनुचरों की सेना थी। जब वह पृथ्वी पर आया और उनकी सेवा तथा मन को लुभाने वाले उसके भाँति भाँति के पदार्थों को देखा तब उसे वापस जानने की इच्छा नहीं हुई।

साथियों ने बहुत नमसाया, परन्तु व्यर्थ। अतः वे सब जीव को छोड़कर लौट गए और परमात्मा से उसकी सब बातें कहीं। परमात्मा को इस में बड़ा दुःख हुआ। अतः वे तृपावती की सहायता से परात्पर धाम में श्री गुरु का अवतार हुआ जिम्मे अपने ननुपदेज द्वारा पृथ्वी में जीव का उद्धार कर परमात्मा में उसका मिलन कराया।

रचनाकाल, लिपिकाल अज्ञात है। रचयिता का नाम भी अज्ञात है। एक स्थान पर एक दोहा इस प्रकार है —

‘राम बल्लभा शरन गुरु’ किणो सुगुण प्रभु ‘सीतेस’ ।
सन्मुख ही निस दिन रहे श्री सतगुरु कुरुक्षेत्र ॥

हो सकता है, उपर्युक्त वाक्यों में रचयिता एवं गुरु के नाम हों, परन्तु तब भी कुछ निश्चय नहीं होता।

रचनाभक्ति विषय की दृष्टि से सुन्दर है। राम और सीता के विहार में अयोध्या के रामानुजाययी वैष्णवों ने अपने को शृणुन्यर्थ, वैष्णवों से पीछे नहीं रखा।

सख्या ५५२ योग रत्नमाला, कागज—देशी, पत्र—१३, आकार—११ $\frac{1}{2}$ × ३ $\frac{1}{2}$ इंच, पक्ति (प्रति वृष्ठ)—८, परिमाण (अनुष्टुप्)—१०४, पूरा, रंग—प्राचीन, गंध, लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—निरजनी अखाड़ा, स्थान—आदराटह, पास्ट—भाटा, पिला—इलाहाबाद।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ श्री भन्नारायणाय नमः ॥ अथ योगरत्न मत्ता लिख्येते ॥

॥ श्री गोरपी वाच ॥

अथ गुरु सिद्ध को जप मंत्र होय सो गुरु भेवीये जाकि बुधि निमल होय जाकि बुधि सूर्य कि बराबरी होय सूर्य के उदय करि बहु कला विकास होये तसे गुरु सेविये विनो तो येहि सास्त्र की बुधि प्राप्ति होय गुरु के मते ६ सर्वशास्त्र का सार समुद्र मयि काहा है ॥ तोइ सास्त्र का नाव योग रत्नमाला राखा है ॥ पात्साह को तमासे दिखाये हय ॥ यह सास्त्र सूर्य की योति समान है। नागार्जुन आपने गुरु से देखि के अजमाये है ॥

इति गुरु प्रसादः ॥

अंत—तिल का तेल घमरो टकन पार ॥ जाय के पातरस ॥ सब दार तेल सीधि जे पाछे लिंग लेप कीजे तो स्थूल होय ॥ आसग का मूल ॥ जेही मघ सम भाग तीर्जे ॥ अमली के रस में बल कीजे पाछे सो सो चर नोन सहत सो पाय ॥ दिन २१ वीर्य होय चली न तर्र सं जोजन जाय व पुष्ट होय केश सपेद न होय हारे नाहीं ॥ अथ ॥ अपामार्ग का बीज सेर पचीस ॥ २५ ॥ निर्गुंडी का जड सेर ॥ ५ ॥ एही दोनुहु का तेल पालयत्र से काडिये तो तेल अंग मर्दन करे तो इद्री वस्य होय ॥

इति योग रत्नमाला संपूर्ण शुभ भवतु श्री ॥

विषय—ओषधि निर्माण करने, धातु आदि मारने और सोना बनाने की विधि का वर्णन।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल और लिपिकाल अज्ञात हैं। रचयिता का नाम भी अज्ञात है। अथ ‘श्री गोरपीवाच’ से आरंभ होता है। नागार्जुन का भी नाम आता है। अथ में वर्तित

विषयो ते मन्त्रध मे कृता गया हे नि ये मन्त्र नागार्जुन ने गुरु को देख के आजनाए है । सपूर्ण रचना गद्य मे है ।

मट्या ५५३. राग रागिनियो का वर्णन, कागज—देसी, पत्र—१, आकार—१२, १० × ६, ९, ८, उन्न, पक्ति (प्रतिपद्य)—१२, परिमाण (अनुपद्युप्)—१४, उडित, रूप—पुराना, पद्य, निधि—नागरी, प्राप्तिम्यान—श्रीयुक्त हिनारायण मिश्र, म्यान व पोस्ट—सिकदगा, जिला—जनातागद ।

आदि... ..नमः ॥

सुख को दाता राग है, राग रूप को भोग ।
याही ते सब कहत हैं राग रोग संयोग ॥ ६ ॥
राग... .. राग चहे रस भोग ।
विरहिनी करे वयरग को उपजे महा वियोग ॥ १० ॥

॥ अथ राग नाम ॥

भैरव की धन भैरवी बंगाली बरारि ।
मध मायो अरु भिन्धवी पाचो विरही नार ॥ ११ ॥
गनकली चुंभावती मन (?) कर्य ।
मालकोज की रागिनी भावती अति दुर्लभ ॥ १२ ॥
रामकली पटमजरी और फही देशाय ।
ये नारी हिण्डोल की ललित विलावर राख ॥ १३ ॥
देखी नट अरु कानरा केदारा कोमोद ।
दीपक की प्यारी मंत्र महाप्रेम परमोद ॥ १४ ॥

अंत—

॥ अथ रागिनी रूप ॥

शिवपूजत कैलास पर दोऊ कर मे ताल ।
सेत चोर अगिया अरण... .. ॥
भम्म पेटानी कर गहे हाथ लिए तिरसूल ।
बंगाली आकुल भई गई सर्व सुधि भूलि ॥ ३२ ॥
... .. या कर करुन शृंगार ।
शोम देत सोहत छुटे सेत वसन बरार ॥ ३३ ॥
कंचन तन लोचन... ..

विषय—राग-रागिनियो का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—अथ का केवल प्रथम पत्र उपलब्ध है । रचनाकाल और लिपिकाल ज्ञान नहीं ।

सट्या ५५४. गजा विन्म की वार्ता, कागज—देसी, पत्र—६, आकार—१ × ६, ९ उन्न, पक्ति (प्रतिपद्य)—३०, परिमाण (अनुपद्युप्)—७६५, पूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य, पद्य, निधि—नागरी, निर्गतान—म० १६०७ प्राप्तिम्यान—आर्यभाषा पुस्तकालय, नागरी प्रचारिणी मंडल (काशी नगर), नागी ।

आदि—॥ यात राजा विन्म की ॥ पाडलीते ॥ किमना राना वे ते लिखि के लाये सो वार्ता ॥

गजमुय नुबदाता जगन दुय दाहक गणईम ।
पूरत अभिलाषा करो शंभुमुत जगदीश ॥

राजा वीर विक्रमाजीत अर्जुन नगरी का था ॥
शोर उसके राज में कोई दूषी न था ॥

क्यों जो राजा पर दुष भंजन हार है ॥ सो अपने सहर में नित गस्त दीयो करतो सो ॥
एक दिन राति मेगस्त देते मे राजा ने एक मकान मे विश्राम कियो सो ॥ वहाँ कहा सुनो जो
कोई बातें करें हें जो इकलो कहीं न जानो ॥ शोर कहीं जानो तो दो जने जानो ॥ तब राजा ने
बाइस में ये बिचारी जो आज ते इकले कबी न निकसंगे ॥ शोर कल ही एक यार करना चहीयें
जो अपनी सी सूरत मूरत को भाग्यशील होय सो करना चहीयें ॥

मध्य—सोइ इनने घोडा मारे सो जाय के देखें तो एक बड की पेड हें वहाँ कूआ बावड़ी
तो कोइ हें नहीं तब कही जो पानी नाहें तो छाया मे एक घडी विश्राम तो करि लेऊं ॥ सो घोडा
सुं उतरि घासीया बिछाय २ दोनो सोए ॥ सो राजा ने देख्यो जो वर पे ते वूंद पानी की टपकें
हें सोई राजा ने कही भाई कटोरा धरो सो भर जाई तब पीने ये वर सरजीवन है ॥ सो कटोरा
धरि दीनो ॥ सो टपक २ भर गयो सो बापेंड पें १ मेना १ तोता रहें सो फहने लगे आपस मे सो
मेना बोली जो ॥

॥ दोहा ॥

सुन सुआ मेंना कहें मेरो कहा चारो ।
मरते २ सरफ ने काहू भले कुबर को मारो ॥३७॥

अंत—

रात की बात परभात पछी सपीयो ने कही कही कैसे रैन गुजारी ॥
पड़ी थी अवरवस परी थी जवरवस पकरि के डंड दे पछारी ॥
फक फक हीरा गिरा गिरें फक फक लोही गिरे मरी रे मरी रे मे पुकारी ।
जैसे राम की धमक से लंक टूटी तैसे पीऊ की धमक मेंने समारी ॥ १ ॥

कार कू देऊ सो वाने कबूल कीनी सो वो रानी जो साहकार लायो वाकी शोर कमलता
की भामर तो राजा क परी शोर मोती की बेंटी की भामर ईकदार सू परी फेर वहाँ कुछ दिन रहे
फेर बिदा भये सो कोई दिन में नगर ऊर्जन मे पोहोचे ॥ नगर हु मे अगनद कुमार वरती मे आये ॥
जिन देखे भरि नैन लेन काया सुषर्पनि ॥८१॥ शोर गाजा बाजा सुं दोनो कुमर बहु ले ले के घर
में लीयें नोछावर होने लगी बधाई वजने लगी नोबत वजने लगी अंसी सबकी फिरें ॥

विषय—इसमे राजा विक्रमादित्य और उसके मित्र की कथा का वर्णन है । कथा संक्षेप
मे निम्नलिखित प्रकार से है —

राजा विक्रमादित्य अपने नगर का समाचार जानने के हेतु रात के समय बराबर नगर मे
घूमा करते थे । एक रात को वे किसी घर मे ठहर गए । वहाँ दो आदमियों को बातें करते सुना ।
वे कह रहे थे कि अकेला कही नहीं जाना चाहिए । हमारे आदमी को साथ लेकर जाना चाहिए ।
इसी पर राजा ने निश्चय किया कि अब वे भी रात्रि के समय अपने साथ एक और आदमी रथा
क रेंगे । दूसरे दिन से उन्होंने वसा ही किया । कई घटनाओं के अंत मे दोनों की एक जगह नादी
ही जाती है और दोनो अपने घर चले आते हैं ।

संख्या ५५५. राम जी का नहछू, कागज—देशी, पत्र—५. आकार—७ X ५^३/_४ उच्च,
पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—३५. पूर्ण, रूप—प्राचीन, पद्य, निधि—
नागरी, प्राप्तस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वागएनी ।

आदि—श्री सीताराम जी सहाए ॥ श्री गंगा जी सहाए ॥ श्री महादेव जी सहाए ॥
श्री पोथी राम जी का नहछूआ लीट्यते ॥

राम नाम रघनवन भरव भुवाल है ।
 दमरव के कुननंदन करन तोहार है ।
 धेनुप पन्ही जनकपुर कोइ न तोरनीहार है ।
 देग तेम के भूप तब ठाड मुप जोहो ।
 दो चीत नदने राजा जनक जी परन नाही छुटही ।
 श्रव सीया भइली कुयारी जनक बीधी पोहोही ।
 जो मए (? में) जनीतो धेनुप नाही टुटोही परन नाही ठानीतो ।
 जनक उठे अकुलाइ परग बीधी खोहोही ।
 बोली उठे बाव लछमन सुनो भाइ राम है ।
 गय्या देहू मीही के धेनुप हम तोरहै ।
 बोली उठे अंगाम जी रानी भाइ लछमन है ।
 गुर अग्या जव होइहै धेनुप हम तोरवें ॥

अत—जे एट पंगरा पनावल घट वनावही ।

केकर भरेला कंहार ।

तोकेइ नहवावही ॥

राजा दमरव पोपरा पनावल घाट वनावही ।

कोसीला के भरेला कंहार तो राम नहवावही ॥

के देला बिडकी सुनरीया त के देला रूप है ।

केकइ देती चीउफी सुनरीया सुमीला देली रूप है ।

कोमोल्या देगी रतन पदारथ भरी भरी रूप है ।

:०:

:०:

:०:

होने लागी नहवावरी गोलीनी अतो हरपही ।

एन नावन के मुंद सामघट अपही ।

गम बीप्राही घरे अइहै तो लेवो मे घोट है ॥

इति श्री श्री गणपत गंगुन्न अटल ॥

विषय—गम अंग गीता के विवाह के समय के नहछु पुत्य का वर्णन ।

विशेष ज्ञानकर—रचनाकार, निष्कान ज्ञान नहीं । रचना का साहित्यिक दृष्टि में कोई महत्त्व नहीं । परन्तु गम गीता की दृष्टि में यह महत्त्वपूर्ण है । इसकी प्राचीनता मी-उट सी वी में अधिक की नहीं । उन्में लछमन के विषे "बाव लछमन" कहा गया है । "बाव" शब्द अर्थों के समझ गते । प्रस्तुत रचना निम्नलिखित अन्य रचनाओं के साथ एक हस्तलेख में है ।—

१ दामोदर—श्रीगणेशाय नमः

२ रामायण—श्रीगणेशाय नमः

३ गोसाव जगै—गणेशाय (?)

४ नागविना—गणेशाय (?)

प्रस्तुत रचना की तप्य पूर्वा अर्थही है । गमवन उमी आगमगट उपप्रात के किमी समीप विधि की रचना है ।

संख्या ५५६. गणपत गीता का ३, गमज—देगी पत्र—५, आकार—६ × ४
 उच वर्ण (प्रतिपत्र)—६ परिमाण (गुणानुसू) —६०, अग्रणी, पठित, रूप—प्राचीन,
 (गोसाव जगै) गणेशाय—गणेशाय प्रतिपत्र—५० गणेशाय दूधे, प्राग—प्रगदिया, पी०—
 गणेशाय गीता, विधा—गणेशाय (अर्थ) ।

आदि—

वीर सधीर तीर कपीश तरणहि तारह
(१५६) नत शोक शागर अगम डूवत जगम तुम्हइ निहारह

॥ सोरठा ॥

जांववत एह भापि कही न कछु पवमान सुत ।
अगद पति अभिलापि विकल सकल मरकट कटक ॥

इ श्री प्राचत्रे भावेस क पा प्रम बिल ज्ञान भ प्र य उः म श्व स दे तुर्ण सद्र त रे चि नो म
शमरं सोः १ दोः १३ चौः १०४ छः १ दोहा

एकादशे तरगमह कहो कथा श्रव सोई ।
जामवत हनमत वर जन्म कर्म कह जोई ॥ १ ॥

॥ चौपाई ॥

कपि सब हनुमान कइ बोरहि । विकल विलोकहि विधिहि निहोरहि ॥
जौ एह सिधु पार नहि जाही । ती निज मरण अन्यथा नाहीं ॥
वहु भातिन्ह कपि कटक दुषारी । करत अनेक तर्क भय भारी ॥
(१५७) जांववत जानेउ सब काह । दहत दीप शोकानल दाह ॥
तव बहोरि हनमतहि निहारो । तात रिछ कपि कष्ट विचारो ॥
मख दुति रहित विकल कपि वीरा । बोलहु किमि न धरावहु घीरा ॥
बद्धिवत विक्रम जशवंता । करणी सकल श्रेष्ठ अति संता ॥
वायु पुत्र बल बायु समाना । गुनसागर अरु तेजनिधाना ॥

॥ दोहा ॥

राम सुकंठहि परम प्रिय जेहि जानत ससार ।
जेइ मिलाइ मितत्व करि कीश ईश अधिकार ॥

॥ चौपाई ॥

तुम्ह इहवां सुग्रीव समाना । को करु तुम्ह बिन कारज आना ॥
तुम्हहि न कछु एह शागर दूरी । तव भुज बल जानत हजं भूरी ॥
खगपति अहि अवलोकि अहारु । जात दीप पारहि बहु चारु ॥
तेहि पर भुज अपार बल तोही । काह विचारि रहेहु जिय जोही ॥
करि व्यवसाय सु कपिन्ह वंचावहु । निज बल बर तिहुं पुर दरशावहु ॥
राम काम लागि जनम तुम्हारा । सो न ह्रिदय किमि करहु विचारा ॥
निज बल तुम्ह कह अहइ भुलाना । कहिहो हो प्रसंग सब जाना ॥
अगद सुनहु कथा मन लाई । अति पावन प्रथमहि मुनि गाई ॥

॥ दोहा ॥ (१५८)

भक्ति भानसर मो भगन जिय न जान कछु आन ।
ताते पुनि कारण श्पर निज बल विपुल भुलान ॥ ३ ॥

॥ चौपाई ॥

अस कहि पुनि हनुमानहि देषा । सुनहु तात निज जन्म वितेषा ॥
पूर्वहि अपसरशा छवि धामा । पुजिवस्थला ताकर नामा ॥

शाप विषम कपि कुंजर केरी । नइ भामिनि भावी बश हेरी ॥
नाम अंजनो तामु कुमारी । जात भई दानरि तनु धारी ॥
सुता दीव जय मउय मयानो । तव कपि कुंजर मन अनुमानी ॥
व्याह विहित जन द्विधि जह चाही । तत्त परि दोग्ह केशरिहि द्याही ॥
सो प्रनिद्ध नव लोचह माही । पटतर वहें दुतीय त्रिय नाहीं ॥
शाप भोग जब गयउ विहाई । तव सोइ शुभ दिधि ला ॥

अंत—(पत्र १६१)

तव तुम्ह एक गिरि शृंग उपारी । गज समेत सुरनार्थाह मारी ॥
परा विकल करि महित सुरेशा । बहुत बेर दहु सहैसि क्लेशा ॥
पुनि मुरछा जागे सुरराई । तुम्हाहि वच्य स हतेसि रिताई ॥
सो सरगत जोजन रहिहचा । गिरिपर परेहु कुतिश कर कचा ॥

॥ दोहा ॥

दूरि पतन तर धराधर, तुम्हाहि न कछुक द्विपाद ।
वाम भाग हनु गिपर घर तव वता वहु मरजाद ॥ ७ ॥

॥ चौपाई ॥

सुनि ब्रह्मादि त्रिवाटिक आए । करि दिनती वहु रविहि छुडाए ॥
दोन्ह सुरन्ह वहु विधि वरदाना । सो सब को करि मकं दपाना ॥
वाम भाग हनु शील विशाला । ताते विधि विचारि शरभाला ॥
हनुमान तव रायेउ नामा । सकल तेज बल बुद्धि सुधामा ॥
इहिते तव बल प्रति शधिकारा । बाल पराक्रम करत विचारा ॥
अब प्रति जुवा नमय सुभ आई । तव बल महिमा को सकु गाई ॥
उठहु ।

(१६३)

. जानी राज काज तबहुं भाति दोहा . . . सोइन करी कि
(पठित)

॥ चौपाई ॥

सब कपि विनय करीह . . . । विमपि न काल जाल तें छोरी ॥
अनवट विक्रम दाऊन्ह पाई । विमि न लेहु जस जगहि देपाई ॥
मिय मुधि विन बीते दहु जाला । त्याइ लहहु तुम्ह सुपद ठिगाला ॥
जह गति पवनहुं केरि न होई । तह तुम्हाणि जानत सब कोई ॥
सबनोदधि एह मयाहि अपारा । तुम्हाहि न दुर्गम ह्रिदय विचारा ॥
फोनन्ह केर कट अललोकी । निमि, नहि देगहि करहु विश की ॥
नमरय त्रयविक्रम ममतूना । नवहु मिधु विनासहु शूला ॥
रिछराज चूधप कपि जूहा । करत भये सब विनय समूहा ॥

॥ छंद ॥

नवहीं तमोउहु विनय पुनि सुनि पवन ।
. अरपूर्णा ॥

विषय—रामायण किष्किधा कांड के अतर्गत हनुमत् उत्पत्ति और उनके वन विप्रम का वर्णन तथा सीता की खोज करना ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ अपूर्ण हैं । नमस्त पाच पत्रे (एक मां छप्पन, सत्तावन, अट्टायन, एक सौ तिरसठ और इकसठ) उपलब्ध हैं ।

सख्या ५५७. रामायण नाटक, कागज—देशी, पत्र—८५, आकार—६ X ६^३/_४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुगुण्य)—२०८०, खडित, रूप—पुराना (जाँट औराण) पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८८५ वि०, प्राप्तिस्थान—ठाकुर रघुनाथ सिंह, ठा० जगवहादुर सिंह, ग्राम—समोहरा, पोस्ट—नैनी, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—.....

...न के साव्व वाली अकुलाना । सका भँ आचाय कर जाना ॥
 मत्रीन सो अस कहै वाचारी । साव्व अघात भएउ का भारी ॥
 हाथ जोरि मत्री अस कहई । बड़ि वीपरीत वात एह अहई ॥
 लछिमन राम जे दुनो भाइ । बोन्ह कीन्है सुग्रीव सहाई ॥
 लेइ सुग्रीव देपाएउ तारा । मारउ राम वान भए पारा ॥
 एह सुना वाली क्रोध चीत धरा । वरत हुतासन जन घ्रात पारा ॥
 नोसरैउ वाली क्रोध कँ रन कह कीन्ह पश्रान ।
 एक चीत भँ हीदै मह कीन्हैउ हरी कर ध्यान ॥
 ह्रीदै मे कहेउ सात्या जो रामा । तौ होइ हमन पुरन कामा ॥
 जो सीअ सती अहहु नम कन्य । वाली मारि प्रभ जीतइ तएना ॥
 तौ विधि कर इकत सउ भेटा । परवस दुष जाइ सब नेटा ॥
 आएउ वाली महाबल भारी । रामचद सो कहेसी पुकारी ॥
 सुनहु राम छात्री रनधीरा । हम हही वारी इद्रसुत वीरा ॥
 वल हमार तुम सुना न काना । सनमुष आइ कीहेहु आधाना ॥

मध्य—

जब रघुनाथ देष हनुमाना । आइ रीतु दसत जनु जाना ॥
 प्रफुलित भए सब वानर सएन । तव रघनाथ बोल कछ बएना ॥
 अहइ जीअत मम प्रेम पीअारी । देपेउ आपिन्ह जनकडुलारी ॥
 सीता जीअत अहइ रघुनाथा । मैं परसेउ चरनन पर माथा ॥
 कहही राम तन देषेउ षीना । आनद रूप की चीत मलीना ॥
 कहही पवनसुत अति दुति षीना । जोति हीन श्री बसन मलीना ॥
 राम कहही से प्रान पिअारी । करत अहहीं कोछ सुंधि हमारी ॥
 तव कपि कहे षीन तन वामा । वल सभारि बइ बोलही रामा ॥
 सुनतै वचन राम मन माना । तव कपि बाढि दीन्ह सहिदाना ॥
 भए सहिदानी राघव पाए । उपजे प्रेम नएन जल छाए ।
 सीता बीरह ह्रीदय मह मानी दीन्ह कपी हाथ ।
 करनी बूझि पवनसुत मीलन कहे रघनाथ ॥

:०:

:०:

:०:

अंत—

भाषत अहउ वचन परवाना । हे कपी तोही दीन्है जीउ दाना ॥

एह कही दइत नीरुट चली आउ । कीहेसो आइ जे कपो उर घाउ ॥
दानव करइ घाउ जव भारी । तव तेही का कपो धरे गभारी ॥
होदए लाइक भुजवल चापा । आठो अग दइत कर कांपा ॥
पाजर टूटि सोम बीगराना । तेही पन दानव तजा पराना ॥

:०:

:०:

:०:

कीचकांदा हइ देम हमार । तहा के राजा सुग्रीव भुआरा ॥
लंछन राम दोउ जे भाइ... । ॥

आगे कथा नही अहे जो देपा सो लीपा दोम न दीअते प्रती नाटक रमाएन लीपा लीउबफत
सोमवसो संवत १८८५ के साल मीती पुन सुधी ७ पार मगल ॥

विषय—गमायगा की कथा का वर्णन किया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—आरंभ के ४२ पत्रे आरं पत्र सख्या ४५ नष्ट हो गए हैं ।

लिपिज्ञान सवत् १८८५ है । लिपिज्ञान ने अत मे "आगे कथा नही है" लिखा है । डमगे
स्पष्ट है कि जिम प्रति मे प्रस्तुत प्रति निम्नी गई है उनमे भी आगे की कथा नही रही ।

सख्या ५५८. राव हमीर मां गढ, कागज—देशी, पत्र—४४, आकार—६३ × ४१
इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुपृष्)—६६०, अपूर्ण, रूप—प्राचीन, गद्य,
लिपि—नागरी, प्राप्तस्थान—आयभापा पुस्तकालय, नागरीप्रचारिणी सभा (याज्ञिक संग्रह),
वागी ।

आदि—तीस. अमी गजराज अमाने. सुखीस अरवस सिंहम तैगमाहु मीन मान ईतीहसम रण
यंभ गढ: ईती रावणधीरमग हुत वचनई मं उचरं. हजरत हटमतमुरो हमीरसु. फेरपार्तास्याह
हुत सुवचन मे है ताहे राव हमीर प्रीनोत सावत मे समचार मोहो राज मंसानीत सुमरता है:
ये समचार हमीर मेमेहो: मद्यमास जाहा . . टर्ज: हरप हरप मवर मीर्ज वागनी
वाजन्ही होय मयाहर मोजाहा सुनज्यं रोजा वगनी वाजे. मृराण मुलुमार्ही. मुसलमान
मानाव. स्याहाये मऊ नही सुनीर्ज:

मध्य—यह ओलीपा मोई आयो. अचरज दुवो हमारे तरिजगट पं आयो : रावचाहुही
सचाहो : सोच मुरी सेप बुनायो : मुग्ज पौलीया घरपठ : भयो राव चंत भग : मुहे मीर : अंसे
ओलीया : मीते स्याहा मेसग: मंहे माम्पारावहमीर मुर्ग होता है :

अंत—पोहोचे राव हमीर: स्याहा मुग्ज सवही आसादेवल ओरमव. प्रंहे मास्या. हरमीर:
मीते सवें मुर लोम मे हजरती हुम हमीर. मोल रावपतीस्याह. पीरटयो न रस माये: ज्यो पारस
मूपर से: ओर वजरे मच न होय जाय अलादीन पतास्याहा सो हुयो.ह। अरव होय मुची मंहे माम
यही मऊचरं: वास भी सत मुग्पुर वस्यो: ईती श्री राव हमीर सां गढ ॥

विषय—प्रस्तुत ग्रंथ टिगन भाषा मे रचा गया है । इनमे अनाउठीन आरं हमीर की
सहाई का वर्णन है ।

संख्या ५५६. वागगुमी विज्ञान, कागज—देशी, पत्र—११, आकार—६॥ × ५॥
चंइ, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२०, परिमाण (अनुपृष्)—१५०७, पूर्ण, रूप—आध्यात्म, पद्य,
लिपि—नागरी, रचनासाल—म० १८८८, लिपिकाल—म० १८११, प्राप्तस्थान—श्री
नरन्वती भटान, श्री विद्या विभाग, कांगोली, दि० व० ३३, पु० म० ३४ ।

आदि—सिद्धि श्री गणेश जी प्रसादात् ॥ श्री काशी विश्वनाथ जी प्रसादात् । श्री चण्डाल-
रसीविनास लीढप्रते ॥ बुद्धा ॥

वीन्याएरु वरदेत है गवरोरनद सिरचद । द्वालो दुष्ट भजणो सुडालो सुरवद ॥ १ ॥
समह माता सारदा भूषण चोर अनूप । हस चढी हाजर सदा बरदाता अतिरूप ॥ २ ॥
ढुडराजराज रिध पुरे अनपूरणा आस । कोटवाल भेरु ईहा कासो विने कहलाम ॥ ३ ॥

मध्य—पृ० ७—८

सदा वरत देहे सदा ऊजलरीत अनूप । दंडीविप्र योप्यके पावे सकल सद्रुप ॥ ३६ ॥
कासीजी मे पुन्य है कीरत देस विदेस । महाराणा कायम रहो घणा वरस जगतेस ॥ ३७ ॥
फिर आंगे पांड घाट हे केदारसुर गौरी कुड । राम लछमन जानको हनुमान तीये भुड ॥ ३८ ॥
असी संगम आद्यके सगमेंसुर सिर नाथ । अकरर घाट देख के लोत्तारक के आद्य ॥ ३९ ॥
फिर आए मणिकणिका ब्रह्मादीसी चलेह । बीरेसर जु घाट हे उभहरचद हे श्रेह ॥ ४० ॥

अत—वानारस महिमा अधिक काहु पे कहीं न जाय ।

चत्राई चालो कीया ध्यान रहे मन माय ॥ १०७ ॥

संमत सतरे अठान्ने दिन कवदे त्रिहुमास ॥ नरदेही चुफल भई वसे चण्डारसचाम ॥ १०८ ॥
इति श्री वाणारसी विज्ञास सपूर्ण ॥ श्रीरस्तु ॥ माघ कृष्ण दशम्या सपूर्ण सवत् १८११
लेखक पाठकयोः शभमस्तु ॥ ॥

त्रिपय—'काशी खड' मे वर्णित काशी के तीर्थों का पौराणिक वर्णन ।

संख्या ५६०क. वास्तु प्रदीप, कागज—देगी, पत्र—२१, आकार—११ × ४^१/_२ च,
पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुष्टुप्)—६३०, पूर्ण, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—
नागरी, लिपिकाल—स० १९२२ वि०, प्राप्तिस्थान—प० रामस्वरूप उपाध्याय, ग्राम—मुदि-
पुरा (नारडीह), पोस्ट—फूलपुर, जिला—उलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

॥ भाषा ॥

अपनी जन्म की राशि तें जेहि गाँउ की राशि दुसरे २ नवमे ६ पंचमे ५ एग्यारहे ११ दशमे १०
होइ तब गाँउ शुभ जानव और अपनी जन्म की राशि तें जेहि गाँउ की राशि एक १ तीनरे ३ सतए ७
चौथे ४ होइ तब गाँउ मध्यम जानव और अपनी जन्म की राशि तें जेहि गाँउ की राशि छटयें
अठ्ये ८ बारहे १२ होई तबन गाँउ निविद्ध जानव ओहि गाँउ न बस ब ।

अंत—जौ एको बाकी रहे तौ प्राण कर नाश कहव और अग्नि कर बास स्वर्ग विषं पट्टव
औ बुइ बाकी रहै तौ अर्थ कर नाश कहव और अग्नि कर बास पाताल विषे जानव, और जें केउ वृत्त्य
पक्ष विषे कृष्ण पक्ष की परिचाते गिनत है सो युक्ति अग्नि के बास कें नाही नोक है एवं गुलने
सगहं प्रविश्य वितान पुष्य श्रुति घोष यत्तम् शिल्पज्ञ दंडवत् पौरा नाजच्छेये शूमि हिरण्य वस्त्रे १ ॥

इति श्री वास्तु प्रदीपे गृह प्रवेश विधानं समाप्तम् शभमस्तु । सम्बत् १९२२ ॥

विषय—वास्तुशास्त्र का वर्णन । यह मूल सन्कृत ग्रंथ का अनुवाद है ।

संख्या ५६०ख. वास्तु प्रदीप, कागज—देगी, पत्र—२१, आकार—१०^३/_४ × ४^१/_२
इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुष्टुप्)—४४८, पूर्ण, रूप—पुराना, गद्य लिपि—
नागरी, लिपिकाल—स० १९३५ वि०, प्राप्तिस्थान—श्यांभापा पुस्तकालय, काशी नागरी-

पंचांगगी नना, वाराणसी (दाता—श्रीधर पाटे, ग्राम—पाडेपुरा, पोस्ट व तहसील—फूलपुर, जिला—ब्राजमगट) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ गृह प्रकरणम् ॥

अपनी जन्मराति ते जेहि गाऊ के राशि दूसरे २ नवये ६, पचमे ५ इगरहे ११ दश १० होइ तवन गाऊ शुभ जानी । श्री अपनी जन्म की राशि ते जेहि गाऊ के राशि जन्मे १ तिसरे ३ मतये ७ चौथे ४ हाइ तवन गाऊ मध्यम जानव ॥ श्री छठये ६ अठये ८ बरहे १२ होइ तवन गाऊ निषिद्ध जानव ॥

अंत—पिशापा विषे प्रवेश करे तो स्त्री के नाश होइ ॥ कृतिका विषे करे तो गृह के नाश होइ ॥ भरणी तीनी उत्रा पूर्वा ३ मघा विषे गृह प्रवेश करे तो गृहेश कर नाश होइ ॥ श्रीर मेघ कर्क. तुला: मकरे लग्न: श्रीर चंद्र माम. ऋक्त तिथि श्री मंगलवार. श्री रात्रि के: श्री अधिमास: विषे गृह प्रवेश न करव ॥

प्रवेश लग्न की अठये पचये दुसरे इगरहे के उपर पांच लग्न लेहि सूर्य्य होही तो गृह प्रवेश शुभ जानव ॥

इति श्री वास्तु प्रदीप समाप्तम् ॥ शुभमस्तु ॥ सन्वत् १६३५ मास पीप पक्ष शुक्ल तिथि चौथि वा शुक के समाप्त ॥ राम राम राम

विषय—ग्राम और गृह निर्माण के विषय मे शुभाशुभ फल वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—निषिक्ताल सन्वत् १६३५ है । मूल रचना सस्कृत मे है जिसका प्रस्तुत गद्य अनुवाद है ।

सख्या ५६० ग वाम्नु प्रदीप, कागज—द्विशी, पत्र—३८, आकार— $६\frac{३}{४} \times ४\frac{६}{८}$ इच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—८, परिमाण (अनुदुब्)—५३२, पूर्ण, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—१० रामनिधि शाल, गाम—गौहर पछिम, पोस्ट—बधुवा, जिला—मुलतान-पुर (अवध) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ गृह प्रकरणम् ॥ वारु प्रदीप लिप्यते ॥

॥ तत्रादी ग्राम मंत्र विचार ॥

अपनी जन्म की राति ते जेहि गाव के रासि दूसरी ॥२॥ नवए ॥६॥ पचए ॥५॥ ऐगरहे ॥११॥ दनए ॥१०॥ होई तवन गाऊ सुन जानव ॥ श्री अपनी जन्म की रासि ते जेहि गाऊ के रासि एक तिसरे ॥३॥ नतए ॥७॥ चौथे ॥४॥ तवन गाऊ मध्यम जानव ॥ अपनी जन्म की राति ते ॥ जेहि गाऊ के रासि छठए ॥६॥ अठए ॥८॥ बरहे ॥१२॥ होई तवन निषिद्ध जानव ॥

अंत—जो एक वाणी ती अर्थ कर नान कहव ॥ श्री अग्नि कर वान पाताल विषे जानव ॥ श्री जे केऊ केऊ कृष्ण पछ की परिवा आदि दे के जगेन ना करत है ते युक्ति नहीं नीक है ॥

∴

∴

∴

तज्ज्ञानन महिता गणित कृत मन्यो यह नू नू जातकी लंकृति वेद वाच्य विलस छुद्धि गच्छता मणि ॥

इति श्री मई कन्यान्त मुत दंग्य राम अद विरचिते महंत चिंता अर्णो ग्रह प्रवेश प्रकरणम् तन. श्री वाम्नु प्रदीप ग्रह प्रवेश विधानो भाषा धरयम राम पटित कृत्र समाप्त शुभ मस्तु संवत् . . .

विषय—वास्तुविद्या का वर्णन ।

विशेष दातव्य—ग्रथ पूर्ण तो है पर रचनाकाल, निष्पिण्ड और अनुवादकर्ता आदि का पता नहीं । पुष्पिका में “भाषा धस्यम राम पडित् क्रम” से पता चलता है कि कोई राम पडित् अनुवादकर्ता हैं ।

ग्रथ अवधी गद्य में लिखा गया है ।

संख्या ५६१ विक्रम वत्तीमी, कागज—देशी, पत्र—३, आकार— $7\frac{1}{2} \times 9\frac{1}{2}$ इंच, पक्ति (अतिपृष्ठ)—१७, परिमाण (अनुष्टुप्)—४५, खडित, रूप—प्राचीन, गद्य, निष्पि—नागरी, प्राप्तस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, चाराणमी । (गद्यदाता—प० शिवमोहन तिवारी, ग्राम व पोस्ट—वरदह, जिला—आजमगढ़) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ विक्रम वत्तीसी पोथी ॥

॥ दोहा ॥

गुर गनपति सिव सारदा मागत हो बर जोरि ।

मन क्रम बचन रामपद सदा सुमति मति मोरि ॥

का जानी केहि मह भइ आई । एकहि आपु अनेक कहाई ॥
जिनहि होइ परिच की जानी । तेहि परगट तू सारगपानी ॥
मुनि बैरागजोग ज(प) तप साधा । अपने पथ काम दुष दाधा ॥
जो धोज तौ काहि न पावै । मन सुभिरत तेहि सज्ज देवावै ॥
सहज कहै ग्यान की वाता । बिरस न रसै मन राता ॥
जो मन अपने मो कल स्नाइव । भाया मोह भ्रम ते नि छुटाइव ॥

॥ दोहा ॥

पाव नै सबे भलपना कोटि माह जन कोइ ।

का जानी सो कह बसै केहि सिर टीका होइ ॥

मध्य—

उठि बनिआ हिय हर्ष करि: गौ राजा के पास ।

माथ न यके विनयसि: गौ चरेगो प्रतिहास ॥

स्वामी दरस राय सो पावो । चरन चूमि कर जोरि मनावो ।
तब अस बचन कहै प्रतिहारो । अंतहपुर गे अहै भुआरो ॥
तब बनिआ रोवन क कहई । अति बड़ काम देव मो अहई ॥
बरहै चौक उपर बंसारा । जाना सात सगुद्र के पारो ॥
काल्हि प्रात व्याह की धरी । बड असक यह मो कह पत्नी ॥
गय प्रतिहार राय सो कहा । खाकी वात धर्म की आहा ॥
—अपूर्ण

विषय—संस्कृत ग्रथ “विक्रम ट्टिविशति” का अनुवाद ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ खडितावस्था में है । केवल ३ पत्रे मत्प्रा १, १० और ६१ के प्राप्त हैं । अंतिम पत्रसंख्या से पता चलता है कि ग्रथ काफी बड़ा था । रचनाकाल प्राचीन काल अज्ञात है । रचयिता का नाम भी विदित नहीं ।

संख्या ५६२, विष्णु पुराण, कागज—देशी, पत्र—३२, आकार— $5\frac{1}{2} \times 8\frac{1}{2}$ इंच,

पक्ति (प्रतिपद्य) — ६, परिमाण (अनुच्छेद) — ७६०, पूर्ण रूप — प्राचीन, पद्य, लिपि —
नागरी प्राक्लिप्तान — नागरीप्रचारिणी मन्त्र, काशी ।

आदि—श्री गनेमाए नमह श्री काया वीश्न पुरान लीखते ॥ राम
ब्रह्मो गनपति श्री गनेमा । जीन्ह भोहि वीद्या दीन्ह उपदेसा ॥
जग्न पुरारी लोक तोन्ह दं आ । पुनी बंदो देवी कर पैआ ॥
सुग्रवा ऐरु तुह अनुर सघारी । सीध वाहनी आदी कुमारी ॥
तुअ सुमारन सुधी बुधी होती । अछर मप्त रहे तब मोही ॥
वाक वादनी जालपा माड । वीपुरारी सीध होहु सहाइ ॥
ग्यान ग्यं नीती जपी तोही । तुअ चरन कही होछा मोही ॥

॥ दोहा ॥

ऐही नीसी चन मनावो देवी होहु सहाए ।
जग्त जननी जग्त धारनी अछर आनी मेराए ॥

:०:

:०:

:०:

॥ दोहा ॥

(पत्र ३)

गन गधर्व नहीं एकी सुरनर मनी नहीं देव ।
प्रम जीती प्रमेस्वर जीन्ह स्त्रीजा सभकोए ॥

:०:

:०:

:०:

(पत्र ६)

जनमजाए के व्यामदेव कही सो सब ममभाए ।
वीधरूप श्री जुग अवरों कहीं समुझाइ ॥
श्री वामुदेव वाचा ॥

अंत—श्री वामदेव वाचा

जब गेही कोज्नु रुहरी प्रवाता । तब उघो नीम्बं कं जाना ॥
तुह्नु श्रीजहु तुह्नु मेटाबहु । तुही जारहु तुही पलटाबहु ॥
तुही कर्ना तुही धरना गोमाइ । अंमे चरीत्र तुह चलाइ ॥
तुह अन मानो को अम कहइ । व्याधा होए बंकुंठ ही तगइ ॥
मोछ मुकुनी तुह नीर होइ । तुह अम चरीत्र करे नहीं पारा ॥
तुही मानहु तुही ताग्नी हाग । तुम्ह वीन जग्त करे को पारा ॥

॥ दोहा ॥

तुही तागहु तुही योरहु तुही वेहु कल्याम ।
तुही पुनी नरु भुंजाबहु तुही देहु कवीलाम ॥

इनि श्री हरी चरीत्रे वनम नशंघे श्री भागवते वीज्जपुरान व्याधा बंकुंठनो नाम उघो
नंवाच नीने नाम अत्राय ६ ॥ ६ ॥ इती श्री वीज्ज पुरान मपुग्न मयापन ।

विषय—	दशावतार और भक्ति का वर्णन ।
प्रथम अध्याय—	दस अवतार वर्णन ।
द्वितीय ,,	—हरिष्चन्द्र-सत्य वर्णन ।
तृतीय ,,	—राम दुख-सुख वर्णन ।
चतुर्थ ,,	—पांडव वर्णन ।
पंचम ,,	—चारो युगों का महत्व
षष्ठम ,,	—यदुवशी श्राप ।
सप्तम ,,	—यदुवशी श्राप ।
अष्टम ,,	—वसुदेव-देवकी वर्णन ।
नवम ,,	—व्याधा वैकुण्ठ वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ पूर्ण है । समस्त तैत्तिरीय पत्रे हैं । बीच का चौथा पत्र लुप्त है । इस प्रकार समस्त वत्तीस पत्रे उपलब्ध हैं । ग्रथ पूर्ण होते हुए भी, रचयिता, रचनाकाल और लिपि-काल के विषय में कोई पता नहीं चलता । ग्रथ प्राचीन प्रतीत होता है ।

समस्त ग्रथ दोहे चौपाइयों में लिखा गया है और नौ अध्यायों में समाप्त है । प्रत्येक अध्याय का विषय पृथक् पृथक् है । भाषा अवधी है ।

संख्या ५६३. विष्णु पुराण, कागज—देशी, पत्र—४८, आकार—७ ५ इंच, पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१९, परिमाण (अनुष्टुप्)—६८४, खडित, रूप—प्राचीन (जीर्ण शीर्ष), पद्य, लिपि—नागरी, और कंथी मिश्रित, प्राप्तस्थान, —काशी नागरीप्रचारिणी सभा, वाराणसी ।

आदि—.....

उतरे शर्व जो बांदर वीरा । रथ अनेग उतरे शव घीरा ॥
जामवंत सुग्रीव भुन्नारा । राइ भभीछन दएन अपारा ॥
हनोमान ओ अंगद कुमारा । अनंत जोधा नन को पारा ॥
नग्न नग्न के महावली वीरा । उतरै वीरा जो रन के घीरा ॥
देवी कुटम तव राम हुलाशा । जानो इद्रपुरी देपा बबीलाशा ॥

देवी कुटम हरषीत भं राम रहा नहीं जाइ ।
गुरु वशीस्ट के चनन्ह राम धरे सपटाइ ॥

गुरु वशीस्ट शो आशीष पाइ । पाछे कं शाम दही शव भाइ ॥
अथ चन्नगन पाव तर परई । राम उठाइ गही अंग मो धरई ॥
अथ चन्नगन शमदे श्रीराम । जानहु क्रीपीनी पाए नीज दाम ॥
पीता की अग्या राम वन लीन्हा । इन्ह तजो राजा घरही वन कीन्हा ॥

होई हर्ष भं भीले तव नन चंन बीतपाइ ।
भाइ अथ मोरे है ओर न दुशर भाइ ॥

भाइ शमदी र्षं तव कीन्हा । ती प्रुण्हे काह अशीष दीन्ह ॥
जाहु लग देवन्ह के राजा । पुहमी नाहीन तुम्हरो काजा ॥
तुम्ह प्रताप जो पुष भो मोही । अय भं आग्या देत हो तोही ॥
चले पुहुप जब आग्या पाई । पाव लागी कं चन मानाई ॥
पुहुपा चले देव अस्थान । पाछे कं शमदही पारघान ॥

चले देव हृषित भे गए शरग अस्थान ।
पाछे कं तव शमेदे वीरधीर प्रधान ॥

:०:

:०:

:०:

श्रंत—

कहै राजा शनहु रे भाइ । एकमास रह श्रव आइ ॥
एक मास तुम्ह चली फीरी आवहु । तव पोलहु जो दरशन पावहु ॥
नीहर्च पोलहु ब्रान होइ । हमरे कहा फरहु रे भाई ॥
इन्द्र द्रोन तवही कहू ग्याना । इन्ह पापीन्ह श्रव घालेउ प्राना ॥
मोरे ऐता न अम न होइ । श्रपनी पशी जो पोले कोइ ॥
तवहीन जोगीन्ह पोले केवारा । शर्व देह जग्रनाथ संवारा ॥
पाहुच नाही बौधाना मवारा । दोष परे जो जोगीन्ह केरा ॥

दोष भए जोगीन्ह काहा पाप पशीर अपार ।
देहु अर्पवर भगतन्ह कहा क्रीती चलै शंशार ॥

इति श्री वीष्ण पुरान की काथा । आगे जं जं जादोश नाथा ॥
वीष्णपुरान शनं मनलाइ । वाढे ध्रम पाप छै जाइ ॥
जो फल गन्ना अन्नान के कोन्हा । शो फल भुपेही भोजन दीन्हा ॥

आगे वीष्ण पुरान की काथा शपुरन आगे जो देवा शो लीपा लीपनेहार का दोश न देना घटा बडा अक्षर जोरी के लेना हमके दोश न देना आगे जो देवा शो लीपा लीपारहा जग जगमेटी शर्क न कोइ आगे जो पंडीत जाने पढे श्रो गने तेही पंडीत के प्रनाम कर जोरी आगे शंमत अठारह शंइ १८३८ गर्म तम शमतसरे भीती कातीक वदी दुइजी के पोयी शंपूरन चार वीहफे के रोज पोयी संपूरन आगे शम ॥

विषय—विष्णु पुगण के आधार पर रामचंद्र के अयोध्या में प्रत्यागमन से लेकर अश्व-
मेघ यज्ञ तक एव अद्भुतगियों के नष्ट होने तक की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल और लिपिकाल का कोई पता नहीं । ग्रथ आदि, अत और बीच में जहाँ तहाँ उद्धृत है । रचयिता का नाम भी अज्ञात है । ग्रथ की भाषा प्राचीन जान पड़ती है । प्रति कहीं लिपि में लिखी होने के कारण शुद्धाशुद्ध का कोई ध्यान नहीं रखा गया है । त्रिवरणपत्र में जहाँ तक हो सका शुद्ध करके लिखा गया है । यदि मूल के अनुसार ही लिखा जाता तो उभना आशय समझना ही कठिन हो जाता ।

संख्या ५६४ त्रिगुण पुगण (गोपाल चरित्र), कागज—देशी, पत्र—४८, आकार—
७ X ६ १/४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—११, परिमाण (अनुच्छेप)—३६६, पूर्ण, रूप—प्राचीन पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकार—म० १६३४ वि०, प्राप्तिस्थान—काशी नागरीप्रचारिणीमभा, वाराणसी । (ग्रन्थदाता—प० स्वामीनाथ दुबे ग्राम—दुवांगी, पोस्ट—गुखुदू, जिला—गोरखपुर) ।

आदि—श्री गणेशधन्यः ॥ श्री पोयी विष्णुपुरान ॥

॥ चौथाई ॥

वन्नो गुरगोविंद गनेमा । वन्नो ब्रह्मा वीष्ण महेश ॥
वन्नो देव नंसीमो कोरी । माघु संत मो वीनती मोरी ॥
वन्नो बानसीरु श्रो व्यामा । जाकी कौन्ती जग प्रगामा ॥
संमयिन् जीन्ह फीन्ह प्रगामा । ताकी छाया जीन्ह मन ग्रामा ॥

॥ दोहा ॥

चारो जग की महीमा ओ पुनो दस अवतार ।
जेही जूगमे जस बीता सो सभ सुनो भुआर ॥

॥ चीपाई ॥

कथा एक रीषो कहा बुझाई । सुनत ही सकल पाप छं जाइ ॥
कैसे सतजुग त्रेता भंड । कैसे कलजुग द्वार भंड ॥
कैसे दसो जन्म अवतारा । कैसे महि कर भार उतारा ॥
कैसे सीरीजा सकल सतारा । कैसे पवन पानी अनुसारा ॥
कैसे कलीजुग की पैसारी । काहा गए दह देव मुरारी ॥
सो मोही रीषे कहो समुझाई । काहा गए कवरो त्वभाई ॥

:०:

:०:

:०;

अंत—

इंद्रवदन असनुती अनुसारी । जं जं जगनाथ जगतारा ॥
नवतन अंग चढे प्रभु भोगा । लेही प्रसाद देव मुनी लोगा ॥
भात के भर्म करं जो कोइ । भर्म करं कुट्टी सो होई ॥
ब्राह्मन सुद खाही एक साथ । एकाकार कोन्ह जगनाथा ॥

॥ दोहा ॥

अलख नीरंजन करता सोइ वउध अवतार ।
जीन्ह जीन्ह दसन पावल से से उतरल पार ॥

इति श्री हरि चरित्रं दसम स्कंधे विस्नपुर्न (? विष्णु पुराण) जगनाथ श्रीतार वरननो
नाम षष्टमो अध्या दसम सर्कंधमे ॥ सपुरन समत १९३४ समे नाम कार्ति मासे सूक्ल पक्षे ॥८॥
लीखा लाल जीवलाल ग्राम नाम राजतपार अमेठी आतये डोड प्रगने सलेमपुर मन्वली जीले
गोरखपुर ॥ पंडीत जन सो मीनती मोर टटल अक्षर वाचव जोरी जो देखा सो लीखा मम दोष
न दीजीयो राधाकृष्ण गोपाल ग्रीधारी बनवारी ॥

विषय—भगवान् के दशावतारो की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—प्रस्तुत ग्रंथ रामकृष्ण कृत 'लक्ष्मीचरित्र' के साथ एक हस्तलेख मे है ।
रचनाकाल नहीं दिया है । लिपिकाल सवत् १९३४ है ।

रचयिता का नाम अज्ञात है । रचना पौराणिक है और कथा वार्ता की दृष्टि मे लिखी
जान पडती है ।

संख्या ५६५. वासन सहार (? वेमन सिंघार), कागज—देरी, पत्र—१३, आगार—
५३, ४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुपट्टन)—९३, अपूर्ण, रूप—पुनाना,
पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—सं० १८५६, प्राप्तस्थान—आर्यभाषा पुस्तकालय (सांस्कृतिक
संग्रह), काशी नागरी प्रचारिणी सभा ।

आदि—... गणेशाय नम ॥ अ... देसन सिंघार लिप्य.....

॥ दोहा ॥

जं उनमून नेजा फरहरं धनहद घुरं नितारण ।
सही भौमीयां ऊपरं चढ़ीया सवद दिवारण ॥ १ ॥

नाम रूपति की फौज का कोटा करं बपाए ।
एक एक सू आगला जी... ..वाए ॥२॥

:०:

:०:

:०:

नाची कला ज ग्यान की जग जुथीयो जस लाम ।
नाम रूपति परताप में परती भैरवी आप ॥ ६ ॥

मध्य—

जाइ सतीर्ष रूपटीयो क्रोध ऊपरं पग ।
कम... ..कंध तजि उडि गयी पग ॥४२॥
में वास्यां की फौज कौ भना दिपाया हस्थ ।
सबहीनि हंला ऊनरचा नाव... .. ॥

विषय—नोभ और मोह के नाथ जीव, सतीर्ष, ज्ञान और विवेक की लड़ाई का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रंथ खंडित है । रचनाकाल अप्राप्त है । लिपिकाल भाषाभूषणके आधार पर म० १=१६ है । दोनों ग्रंथ एक हस्तलेख में हैं । रचयिता का नाम अज्ञात है ।

रचना आध्यात्मिक टन की है । ग्रंथ के अक्षरों की म्याही उच्छेद गई है जिन्स के पटने में नहीं आते ।

ग्रंथ कुछ अन्य ग्रंथों के साथ एक ही हस्तलेख में है । अन्य ग्रंथ ये हैं —

- ३ भाषाभूषण—जगवत मिह दृत
- ० विरह अंग—वाजिद दृत
३. प्रेम पञ्चामी—मोगनाथ दृत

सदया ५६६. शृंगार तिनक, कागज—देवी, पत्र—१०, आगर—६ ४ इंच,
पक्ति (प्रतिवृष्ट)—३, पन्नाग (अनुष्टुप्)—१०४, पूर्ण, रूप—गुराना; गद्य, लिपि—
नागरी, लिपिकाल—म० १=६०, प्राप्तिस्थान—१० दृष्टादेव पाटेल, ग्राम—गुजरपार, पोंड—
मुवारकपुर, जिना—आजमगट ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥

वाहू द्वी च मृगालमस्य कमलं लावण्य लीला जलं,
श्रीरणी तीर्य शिला च नेत्र मफर धम्मिल्ल शैवानकम् ॥
कान्ताया स्तन चक्रवाक युगल कंदर्प वाणनलं-
हृग्धानामवगाहनाय विधिना रम्य मरो निम्मितम् ॥ १ ॥
वाहूमृगाल सरोज सो ध्यानन चारि धनी तन सुदरताई ।
श्रीरणी शिला तट घाट रची मफरी दृग शंवल केश सोहाई ।
कामिनि को कुच कोक दोऊ विधि ने रचि रम्य तउग बनाई ।
काम शरानल दाह हरे अवगाहृत के जन को सुखदाई ॥ १ ॥

अंत—

एतन्पयोधर युगं पतितं निरीक्ष्य खेदं वृथा वहमि पकिं हृत्स्नायताक्षि ।
स्तवधो विवेकरहितो जनतापकारी यम्योन्नतः प्रयन्ततीति किमत्र चित्रम् ॥२४॥
देवि उरोज नतानन मानिनि दोड वृथा जिय होहु दुपारी ।
तू चतुरा गुण रूप उजगरि नागरि शोन मुभास ते भारी ।
ताध उतुद्ध विवेक विवाञ्जित जो जन है पर को अरकारी ।
सोअध को पतवेइ करं यह चित्र कहा हिय देपु विचारी ॥२४॥

कस्तूरी को तिलक सखि ना कुह कचहीं भाल ।

समुक्ति साङ्ग हरिणाङ्ग हिय असिहैं राहु कराल ॥२५॥

इति श्री कालिदास कृत शृङ्गार तिलक समाप्तम् ॥ सम्बत् ॥ १८६० ॥

विषय—कालिदास कृत शृङ्गार विषयक पच्चीस श्लोकों का हिंदी पद्यानुवाद ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल नहीं दिया है । निषिवाक्य सम्बत् १८६० है ।

मूल रचना संस्कृत में है और महाकवि कालिदास कृत है । हिंदी पद्यानुवादकर्ता का पना नहीं चलता । अनुवाद सरस हुआ है जिससे अनुवादकर्ता अंग्रेजों के विद्वान् पदार्थ हैं ।

संख्या ५६७ श्री गोवर्द्धनधर को वर्ष भर को शृङ्गार (सं० १८५७ बंगाल में प्रारंभ), कागज—देशी, पत्र—३२, आकार—६।५ × ५।५।। डच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८१६, अक्षर, रूप—माधारण, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८५८, लिपिकाल—सं० १८५८, प्राप्तिस्थान—श्री सरस्वती भटार, श्री विद्या विभाग, बॉम्बे रोड, हिं० व० ६१, पु० सं० ३ ।

आदि—॥श्री कृष्णाय नमः॥ श्री गोवर्द्धन धर को शृङ्गार । वंशाख्ये ११ गद्वार संवत् १८५७ श्री आचार्य जी महाशय जी को उत्सव सिगारी श्री गिरिधारी जी शयन । कुट्ट-वागा सूत्रन पिछवाई केसरी । वागा दाकदार । ठाढे वस्त्र सुपेद बूँडेदार । चौंटा मोती को आभूषण हीरा पना मानिक मोती को भारी सिगार जोड ते हरी ।

मध्य—पृ० १५

१ मंगल अक्षरकूट । काल्ह के शृङ्गार तें गोकर्ण पीतावर अधिक धरे । २ बुधवार भाई चीज श्रीगिरिधारी जी अभयग । चौरा सुनहरी, वागा सूत्रन लाल कीमखाप को वागा धेरदार ठाढे वस्त्र सुपेद । पिछवाई गोवर्द्धन उपर बरखा नीचे नद जतोदा ब्रज भक्त गायगोप आभूषण हीरा पना मानिक मोती ।

अंत—५ गुरु श्री बल्लभ जी पाग पिछोडा पिछवाई लाखी रंग लान टाढे वस्त्र सुपेद आभूषण हीरा पना मानिक मोती के । ६ शुक्रे श्री विठ्ठलराय जी श्री गोविंदराय जी के लगत मोती के सेहरा पिछोडा उपरना नींबूवा ठाढे वस्त्र सुपेद पिछवाई गाय ग्याल की । आभूषण हीरा पना मानिक मोती ।

विषय—पुष्टिमार्गीय सेवा में श्री गोवर्द्धनधर, श्रीनाथ जी के वर्ष भर के उत्सवों का साधारण दिनो में होने वाले शृङ्गारों का नित्य क्रम वर्णित है ।

संख्या ५६८, संगीत ग्रंथ, कागज—देशी, पत्र—६, आकार—७ × ५१/२ डच पक्ति (प्रति पृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—१५२, अक्षर, रूप—पुराना, गद्य, लिपि—नागरी, रचनाकाल—सं० १८६४ वि०, लिपिकाल—सं० १८६४ वि०, प्राप्तिस्थान—राजी रामनी-प्रचारिणी सभा, वाराणसी । (ग्रंथदाता—प० कृष्णनेवक मिश्र, ग्राम—नहरीह पो०—बनार, जिला—आजमगढ़) ।

आदि—.....से मिला है शकराभरण केदार विलावत से मिला है गंधार सिधुला असावरी गौरी देवगौरी भंडो से मिला है पहरीवस्त सूची श्री श्याम गौरी से मिला है पदमंजरी मारु धवला धनाश्री बंधारी से मिला है देव साख्य शंकराभरण श्री शुक मनलार वरुण से मिला है विलावली विलावत गौर सारंग से मिला है कामोदी सौराष्ट्र गौरी से मिला है नाग-वहन मलार केदारा सुहो से मिला है अभीरी कल्याण दीसकार गुजरी श्याम से मिला है देगी पट

राग से मिला है देवगिरी पूर्वी सारंग श्रद्ध से मिला है कोलाहल विहाग राग कल्याण कांधारा से मिला है कुकवी विलावल पूर्वी केदारा देवगिरि माधो से मिला है देवाली पंभारी मालश्री सरस्वती से मिला है गूजरी ललिता रामकली से मिला है मगल गूजरी रामकली श्यामगंधार मंगलाष्टक से मिला है तरुण दीसकार गीरी पूर्वो से मिला है बाजे पूर्वो के जगह ललित कहत है बाजे विभास कहत हैं श्रीराग विधमटक गीरी ने मिला है केदारा कुकवी पूर्वी विलावल से मिला है ।

अंत—बाबा रामदास वंरागी मीरजा जलालुदी अकबर पातसाह के वपत मे थे मुसकी के विद्या मे बडा दक्ष थे गो मूरदाम बाबा रामदाम के बेटवा ध्रुवपद पिआवल विष्णु पद बहुत चनाया है बाज बहादुर मालवा का गावने मे बटा दक्ष था सुरज पा चांद पा दुई भाई मुसकी के विद्या में बडा दक्ष थे । अकबर साह की संहति मे रहते थे श्रीह की अवलादि नवहार की जाति है नवदात पाँव वीन बजावने मे दक्ष था अकबर पादसाह के वपत मे उसके बराबर कोई न था उसकी अवलाद पटारे की जाति है तानसेन कलावंत राजाराम बघेले का दोस्त था ध्रुवपद गावने मो मुसकी के विद्या मे बडे दक्ष थे कह रागिनीं बनाइके अकबर पादसाह किहा आए अकबर पादसाह बडा मनमान करिके रापा ।

:o:

:o:

:o:

पलाम पा तानसेन के बेटे है तिसके दमाद लाला पां गावने मे बडे दक्ष थे श्रीह का जाति टागुअर है अकके श्रीमतादो के कम लिपा यद्यपि ससार ओसताद से खाली न है पं हम अपने बुद्धि माफीक इस जमाने श्रीमतादो का नाम जानते थे सो लिखा ॥ सपूर्णम् सं० १८६४ कातिक सुबो २ मंगलवार ॥

विषय—मगीत विद्या और मगीताचार्यों का वर्णन । विषय इस प्रकार है —

- १ रागो का वर्णन ।
- २ वाद्य यंत्रों का वर्णन ।
- ३ ताल का वर्णन ।
- ४ छंद प्रबधों का वर्णन ।
- ५ प्राचीन और नवीन मगीत आचार्यों (मगीताचार्यों) के नाम ।

विशेष ज्ञातव्य—हस्तलेख अपूर्ण है । आरभ के ६ पत्रे गुप्त हैं । रचनाकाल और लिपिकाल एक ही मवत् १=६४ जान पड़ता है ।

रचयिता का नाम अज्ञान है । ग्रंथ खड़ी बोली गद्य मे है जिसमे फारसी के शब्दों का भी मिश्रण है । पर विषय और भाषा की दृष्टि मे महत्वपूर्ण है । इसमे मवमे महत्वपूर्ण अथ मगीताचार्यों के नामो का वर्णन है । उनमे उस्तादों के नाम और आश्रयदाता, महागजाओ एव वादशाहों के मवध मे बहत कुछ ज्ञान होना है । जिन आचार्यों के नाम दिए हैं, वे उस प्रकार हैं :—

प्राचीन आचार्य

गभीर, भरथ, हनुमान, नारद, कलनाथ, रावण, अर्जुन, पावंती, मग्बती, दुर्गा ।

मध्यकाल

- १ अमीर गूगरो (दिर्नी) ।
- २ नायक गोपाल (गूगरो के समय में) ।
- ३ नरम नानिवन ।
- ४ मुदतान हुमेन मररी (पानगाह जवनपुर) ।
- ५ नायर बँजू (मुदतान बहादुर गूजगत के आश्रित) ।

६. राजा मान (ग्वालियर) ।
७. नायक बकसु (राजा मान के आश्रित) ।
८. बाबा रामदास वैरागी (अकबर के समय में) ।
९. सूरदास (रामदास वैरागी के पुत्र) ।
१०. वाज बहादुर (मालवा) ।
११. सूरज खाँ (अकबर के यहाँ रहते थे) ।
१२. चाँद खाँ
१३. नववात खाँ (अकबर के यहाँ रहते थे) ।
१४. तानसेन (अकबर के आश्रित । राजाराम बघेले का दोगत) ।
१५. पलास खा (तानसेन के पुत्र)
१६. सुरत सेनि
१७. तानतरग खाँ
१८. चौर सेनि
१९. सुजान खाँ (तानसेन के सगी) ।
२०. नायक हरजू (ग्वालियर)
२१. सरकी आन खाँ "
२२. मदन राय "
२३. मया चद "
२४. नायक धृष्टु (,, तथा तानसेन के समय के थे) ।
२५. लवल प्रकास
२६. लाल खाँ (पलास खाँ के दामाद) ।

इनके विषय में केवल इतना ही दिया है कि ये कहाँ के रहनेवाले थे । आंर किन दिन के आश्रित थे ।

अथ सभा के लिये प्राप्त हो गया है ।

संख्या ५६६. सप्त बंध्या लक्षण, कागज—देशी, पत्र—४, आकार— $६\frac{१}{४} \times ४\frac{३}{४}$ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—६, परिमाण (अनुष्टुप्)—७२, पूर्ण, रूप—पुराना, गद्य लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १६१६, प्राप्तस्थान—प० भोलानाथ (भोरेलाल) योनिपी, ग्राम व डाकघर—घाता, जिला—फतेहपुर ।

आदि—श्री गणेशायै नमः ॥ अथ सप्त बंध्या लक्षण प्रयोजन ॥ युवती को सप्त दोषो भवति: इन्ह दोष सो पुत्र नहि होई । अथ प्रथम श्वेत बंध्या । इस्त्रि को ऋतु देत । इस्त्रि को माथा दुषै तब जानीये कमल फीरा है । ताते बीजं नहि राहै । तत्र औषध बर्नादा फास्टदा भुरगी का पिता मिलाइ तँलुगे होइ: तब योनि भीतर औषधि लगावै । जँ दिन तय ऋतु देत पुत्र होइ ।

मध्य—

इदं पोस्तकं लिखितं गीरीधरी परसद जोतकी । सप्त बंध्या लक्षण समपत । जेट मने कृष्ण पक्षे तियौ नज्म्यं बृहस्पत वसरे संवत् १६१६ । सके १७८१ ।

जंत्र ज्ञान

४	८	२	८	४	८	०
६	५	२	४	११	२	०
४	४	५	३	६	२	०

अंन—श्री गणेशाय नमः श्री गुरुवे नमः ।

महर्षि मंत्र उत्कीर्णान् । मंत्र जप्ते रोज उत्तर म्युप करिके पुजा करके धिउ गुरु सेहोम करिये
रोजा निम्नलिखित जयिता पचान अमरफो देइ नयेन करत विस्न रामा देइ ॥ मंत्र हीर ति प्रियो
रवाहा ह्जार वा जुन रोज क जाप संख्या ॥ ३०००

विषय—गणत वज्या लक्ष्मण श्रीन श्रीपद्मा तथा यत्रो का वर्णन ।

संख्या ५७०. माठा, कागज—देशी, पत्र—१४, आकार—६ × ५ इंच, पक्ति (प्रति-
पृष्ठ)—११, पन्निगाम (अनुष्टुप्)—२६०, गठित, रूप—गुगना, गद्य, लिपि—नागरी,
निगिनाल—ग० १=६६, प्राग्निस्थान—काशी नागरीप्रचान्गिरी तथा, वाराणसी । (ग्रथ-
दाना—५० जिजमोहन तिवारी, ग्राम व पोस्त—वरदह, जिना—ग्राजमगट) ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ माठा लिप्यते ॥

॥ पञ्चगनाम संवत्सरे फलं ॥

मनो दुर्भिक्ष होइ । चंद्र वंसाप मध्यम होय । ज्येष्ठ आषाढ महर्षी । श्रावन मेघ
श्राप । भादो मधिम । आश्विन आमावस्या की वर्षा । कार्तिक मे उत्तरपड टीडी श्राव हाट
पटन उदाम होइ । अति वाउ वाजं । उत्तर पंड मध्ये पढान उपद्री होइ । गुजरात मध्ये राज
उत्पात होइ । अन्न फलं माम ३ माघ फाल्गुण कष्ट ॥

अंन—॥ इति प्रभव नाम संवत्फलं ॥ ५६ ॥

समो गजल निपज रोगपीडा घनो रुउ मुंड होइ चंद्र मरी वंसाप वाउ वाजं आषाढ वर्षा
श्राव फलं अन्न महर्षी गर्व दीर्घ होइ मार्गशीर्ष पीप कष्ट चंवल देस होइ सुपार्थी भवे नृपा मलेक्ष
पुरीउ वंगल होइ माघ फाल्गुन वर्षा पाडी वाजं ॥ इति यो प्रभव नाम संवत्फलं ॥ ६० ॥

इति विष्णु बीमी इति साठा संपूर्णम् संवत् १८८६ चंद्र मासे १३ ।

विषय—माठ मवलनरी का फल वर्णन ।

दिग्गेष ज्ञानव्य—अथ गद्य मे द्वे जिग ही भाषा पच्छिमी हिंदी (खटी बोली) हे ।

संख्या ५७१ गति पत्नी, कागज—आधुनिक गफेद, पत्र—६६, आकार—७ १/४ ×
५ ३/४ इंच पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१४, परिमाण (अनुष्टुप्)—६३५, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य,
लिपि—कौशी, निगिनाल—मन् १६३८, मन् १८८१, प्राग्निस्थान—श्री गमनरेण जी दुर्वे,
गाम—गजद्वारा, पोस्ट—मुबारकपुर, जिना—ग्राजमगट ।

आदि—श्री गनेन जी नहाए नम । श्री सरमनी जी सहाए नम । श्री हनोमान जी सहाए
नम । श्री पोथी सीतपतल सीपते ॥

॥ चीउपड ॥

प्रथमे सुगौरी श्री गोपान । जन्ह हमार कीन्ह प्रतीपाल ॥
सुगौरे केमरा आदि अनंत तोही । तीमरे दूमरे अवर नहीं सोही ॥
सुगौरे मुरमनी अस्त्रीत दानो । जेन्ह एह काश्या ही नहीं मन जानी ॥
सुगौरे गौडरी अदरौ महिम । जेही सुगौरे ग्यान होए प्रगम ॥
सुगौरे अह्या दुइ कर जोरी । जेही सुगौरे पाप हीए दूरी ॥
सुगौरे नंधरदेव त्रौपुरारी । जेही सुगौरे गती होए हमारी ॥

तव पुनी सुमीरो सीता माई । छाडे अरघ पाताल ही जाई ॥
बन से राम सीता लेड आये । अरघ नगर मे आनी पहुचाये ॥

अंत—

छाआनगर जोर तरशारा । रहे संतोष मोर पीशारा ॥
तर गएड एही कर नाड । परउ आइ मात के पाड ॥
सीत के बात सुने मन लाइ । सो प्राणी वकुंठही जाइ ॥
लछमन राम सीत एक ठाइ । सभ लोगन्ह के पातप जाइ ॥
जो नर सुने मन लाई । वडे धरम पाप छंए जाइ ॥

इति श्री पोथी संपुदन अएल जो पतर देवा सो लीपा मम दोस न दीजे पडेत जन ते भीनती
टुट अंछीं लेव सभ जोरी ॥ सन् १८८१ महीन कुशार वदी चउदस वार दीर्घ भोकाम समल के
बहर ॥

विषय—सीता के कलक की कथा का वर्णन ।

कथा मे विशेष बात यह है कि केरुई द्वारा सीता पर कलक लगाया गया है ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनाकाल नहीं दिया है । निपिकाल सवत् १६३८ है । रचना
साधारण कोटि की है । यह रचना तुलसीदास कृत 'राम जन्म' के साथ एक हस्तलेख में है ।
ग्रथ के नाम मे अशुद्धि जान पडती है ।

संख्या ५७२. सीता चरित्र, कागज—देशी, पत्र—५३, आकार—८ X ६ ३/४ इंच,
पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१६, परिमाण (अनुपुष्प)—५८३, यडित, रूप—पुराना, पद्य, निपि—
नागरी, प्राप्तस्थान—काशी नागरीप्रचारिणी सभा, चाराणसी ।

आदि—..... ॥

केकई के मन कीछुवो न भावा ॥
दछीना दान सब कहं लं दीन्हा ।
बहुली भाति कर आदर कीन्हा ॥
भगत जन के दालीदार तोरा ।
आपन कुल परिवार बटोरा ॥

॥ दोहा ॥

साथ विप्र श्री मंत्री पाएक श्री परधान ।
केकइ के चरन बंदी के पार बइठी वेहु दान ॥

अंत—

जोरी पानी तव कहै हनुमाना ।
एक चचन पायो भगवाना ॥
कही तो काल ही सायर बीरो ।
हार पाजर जंम्हकातर तोरो ॥
सीता कहा फहु इइ फारा ।
करी दरवाजा रंय संचारा ॥

॥ दोहा ॥

जंसा श्रीपति भाषह तंसा करी मं काम ।
कोटीन्ह काल बीधंसब करी राम के काम ॥

॥ चौपाई ॥

पवनमुत सुनहु हनुमंता ।
 मूल उपारि के फेकु तुरता ॥
 हनुमत सुनत काम कस कीन्हा ।
 बजर के काथा सीर प्र दोन्हा ॥
 चहु दीम फुटीरुं अरगाइ ।
 मही मीलीरुं पाताल चली जाइ ॥
 —अपूर्ण

विषय—आध्यात्मिक रूपक वाँधकर सीता की कथा का वर्णन किया गया है । रचना मत मत की दृष्टि में निम्नी गई जान पत्ती है । कथा का सार इस प्रकार है —

हमारे वनवान में सीता के वापस गा जाने पर अयोध्या में बड़ा उत्सव मनाया गया । केकई को वह अच्छा न लगा । उसने राम से कहा कि सीता में पूछा जाय कि कुश किमका पुत्र है । राम ने इस विषय में केकई को ऋषियों से पूछने के लिये कहा । पर बात सीता तक जा पहुँची । उन्हें इस वचन में अत्यंत ग्लानि हुई और पृथ्वी में फट जाने के लिये प्रार्थना की जिसमें वह उसमें समा जाय । पृथ्वी फटी और सीता उसमें समा गई । अयोध्या में फिर हाहाकार मच गया । सारा रनिवाग रो उठा । राम सीता की वियोगाग्नि में फिर तड़पने लगे । एक दिन उन्होंने स्वप्न देखा कि सीता राम की लहरों में बही जा रही है । बड़े-बड़े जराजतु चारों ओर में उमकी रक्षा कर रहे हैं । कुछ दिन पश्चात् वह किनारे लगी और आश्रय पाने की इच्छा में उधर उधर घूमती हुई एक फुलवागी में जा पहुँची जहाँ उमकी भेंट मालिन में हुई । सीता का नाम सुनकर मालिन की ज्ञान प्राप्त हुआ और उसने अत्यंत भक्तिभाव में उमका सत्कार किया । पूछने पर सीता को ज्ञात हुआ कि यहाँ के राजा का नाम हम और रानी का नाम हमिनी है । उसने मालिन से कहा कि वह राजा के पास जाकर उमके लिये थोड़ी सी भूमि माँगे जिसमें वह अपना निवास-स्थान बना सके । मालिन राजा के पास गई और उनमें सीता का वदना कहा । सीता का नाम सुनकर राजा जो पूर्व जन्म का ज्ञान प्राप्त हुआ । उसने अपनी रानी से भी वृत्तात कहा जिसको सुनकर उसे भी ज्ञान प्राप्त हुआ । राजारानी, दोनों कुटुंब परिवार तथा मन्त्रियों सहित सीता में मिले और भक्तिपूर्वक आतिथ्य सत्कार कर उसे अपनी पुत्री के यहाँ टिकाया । सीता ने हमिनी में अपना जन्म वृत्तात उस प्रकार कहा —

एक पर्वत के ऊपर मेरा स्थान है । यहाँ एक ऋषिगज तपस्या करते हैं । दूध और फल के अतिरिक्त उनका कोई भोजन नहीं । एक दिन उनके दूध में एक गर्भ जा घुसा । यह देखकर एक मेघनी उमके ऊपर तैरने लगी । थोड़ी देर पश्चात् वह मर गई । जब ऋषि तपस्या से उठे और उन्होंने दूध पीने को माँगा तो देगने पर दूध पीने योग्य न निकला । ऋषि ने दूध को दूध के ऊपर छोटवाया जिसमें दूध जल गई और एक भजन दूध में से निकला । ऋषि ने मेघनी को जीवन दान दिया जिसमें वह एक रूपवान कन्या हो गई । उनका नाम मदीदरी पडा । कन्या ऋषि ने यहाँ रहने लगी । एक दिन ऋषि को कुछ बिलार उत्पन्न हुआ जिसमें उनका वीर्य स्थित हुआ । उन्होंने घोनी मदीदरी को धोने के लिये दे दी । वीर्य के दाग निरन्तर न देख मदीदरी ने उसे दौनो से छुड़ाया । परन्तु वह गाय रहने में कुछ वीर्य उमने पेट में चला गया जिसमें उमको गर्भ रह गया । ऋषि को जब यह ज्ञान हुआ तो उन्होंने रावण से उमका विवाह कर दिया । मदीदरी को ऋषि ने एक मंत्र भी बतलाया जिसमें रावण की गर्जना करने पर जब उमका गर्भपात हो तो वह भूमि में समा जाय और गैर उमका पना न पा सके । पश्चात् ऐसा ही हुआ । वह गर्भ भूमि में अदर गया और उममें मेरा जन्म हुआ । कुछ समयोपरान्त राजा जनक के हाथ लगी ।

श्रीर सीता नाम से विख्यात हुई। आगे की कथा प्रसिद्ध ही है। ये जन्म दुःखिनी हैं। मुझे कभी भी सुख से बैठने को नहीं मिला।

यह स्वप्न देखकर राम रंते लगे। उन्हें इनका निश्चय हुआ कि मीता जनकपुर में है। वे तपस्वियों का रूप धारण कर लक्ष्मण के साथ जनकपुर गए। जनकपुर में लक्ष्मण की स्त्री ने लक्ष्मण को क्रोध के कारण मरवा दिया और राम को उनके हत्यारे के रूप में बन में ले जाकर मरवाने का आदेश दिया। परंतु राम किसी प्रकार बच गए। लक्ष्मण का बिराग उन्हें मीता में भी अधिक असह्य हुआ। स्मरण करने पर हनुमान उनके पास गए, जिसमें उनके चित्त का कुछ शांति मिली। गोंदावरी तट पर लक्ष्मण का दाह संस्कार किया गया। जो हृदयवाची उनकी माला बनाकर राम ने गले में धारण कर ली। हनुमान ने पातान में जाकर सीता की खोज की और राम को उसे मिलाया। सीता ने अपने सतात्व के वन पर लक्ष्मण की जीवित किया। जिससे सब आनंदित हुए। राजा इस और रानी हस्तिनी राम में मिले जिसमें उनकी मनोवांछित अलौकिक शांति प्राप्त हुई। सारा राज्य राम का भक्त हो गया। हम ने अपनी कन्या चंद्रज्योति का विवाह लक्ष्मण से कर दिया। राम कुछ दिन हम के राज्य में रहकर पश्चात् मीता, हनुमान, लक्ष्मण, चंद्रज्योति के साथ अयोध्या को चल गए। मार्ग में महाकाल ने भेट हुई। उनके पश्चान् ग्रथ खंडित है, परंतु अनुमान से जान पड़ता है कि महाकाल को भी हनुमान के सामने हार ग्यानी पडी होगी और राम सकुशल अयोध्या लौटे होंगे।

कथा को पढ़ने से पता चलता है कि हनुमान जो ब्रह्मात्मक है, सीता ब्रह्म विद्या और हनुमान शक्ति तथा राम साक्षात् ईश्वर। लक्ष्मण ईश्वर का पुत्र विरक्त जीव है।

विशेष ज्ञातव्य—ग्रथ आदि और अत में खंडित है। रचनाकाल और लिपिबान अज्ञात है।

रचयिता के नाम का भी कोई पता नहीं मिलता। रचना मत्त मन में नवध ग्यती है इसकी भाषा पूर्वी अवधी है, जिसमें भोजपुरी के शब्द भी मिश्रित हैं —

‘दुखल भयल तोहरी पया।’

‘तब सीता अस ठानल भयाना।’

ग्रथ के आदि में ५ और अत में ५६ के पश्चात् के पत्रे नहीं हैं।

संख्या ५७३. सुदामा चरित, कागज—देशी, पत्र—२, आकार—१५, १/४ × ६ २/३ च. पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१५, परिमाण (अनुच्छेद)—८६, अक्षर, रूप—पुराना, पद्य, निपि—नागरी, प्राप्तिस्थान—श्री गणेशधर दुबे, ग्राम—वीरपुर, पोस्ट—हडिया, जिला—नाहावाड।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सुदामा की भजन दिनता ॥

अस कहत सुदामा की नारि दीन के बधु हरे ॥ टेक ॥
हे स्वामी निसी वासर गये बीति कहा देवस गवाये ।

मन मलीन तन छीन सदा दालिद्रै छायै ॥

दुख की राजे भुजते बीति गये पन चारि सुद कवहु न पाया ॥ १ ॥

तीया दुचारी नारि स्वारथ आपन पं जानी ।

जो पतिव्रता होहु तोच जिय काहे आनी ॥

दान पुन्य दीन्हो नही आपन दोहा पं होये ।

सुख परारा देवि कं तीया काहे मरो तुम रोये ॥ २ ॥

हे स्वामी बीनु धन धर्म न होइ बेद बीनु जज्ञ धचारा ।

सजन कुंडुम परिवार बीना धन कस बेवहारा ॥

बोनु धन धोरज न रहे बोनु धोरज सत जाये ।
कहे न कत पग धारो हरि से कहीं बनाये ॥३॥

शत—

जबं त्रीया हसी कही ठगरीो तुम्ह कछु पाये ।
भुले भवना सोच फिरी का बदन छपाये ॥
अपने भवन पग डारहु भुजहु अचल सुपराजि ।
उठि कं देयी भवन आपना कृपा कीन जदुनाथ ॥२४॥

इति पूर्ण ॥

विषय—गुदामा की कथा का वर्णन ।

विशेष ज्ञातव्य—रचनामान और निषिक्तान उल्लिखित नहीं है । रचयिता का नाम भी अज्ञात है । रचना नाट्यिक है ।

संख्या ५७४. मुद्राचनना गन, कागज—द्वेजी, पत्र—३, आकार—८^३/_४ × ६ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१८, परिमाण (अनुष्टुप्)—५८, गणित, रूप—गुणना (जीर्ण जीर्ण), पद्य, निधि—कैथी, प्राणिस्थान—५० गम अनद जी निवारी, नाम—दरवेशपुर, टाकघर—भरवारी, जिला—उलाहावाद ।

आदि—श्री गनेसए नमः ॥

मेघनाद लछमन बड जोध । भीरे प्रसपर करी शती क्रोध ॥
मेघनाद अगन भुज परेउ । बन वेधी सोनीत सो भरेउ ॥
महीपती भुज परे तेही भती । मनहु तकल सुर तर करती ॥
हेम सीहामन सोभीत बल । सेवही धती वीध्येगमल ॥
प्रेम सुमठ धुरुधुकी धकी । सुभग अलुभ वहीने भुज फरकी ॥
सुनत सपीन के मुख के बन । तजी संघामन उठी सोतेन ॥
मही मन करुन भुयन सोइ । मह वीटक सभनन होइ ॥
हीन महनी खन हीरा मही । वीरी धुरी मोर पीउ तमही ॥

शत—

सुत बधु जरी सनही जवही । मुरछति नगीप धनी पर तवहीं ॥
हसत सचती अये करी । कं वील पद सकध पुचरी ॥
भुनी पुलस्तीक भ कुल नम । रवी ससी अइ कहु प्रगसा ॥
छुटी हैइ बंदी सुन गन केरी । नीजु नीजु पुरन दोहइ फेरी ॥
गगन सलील नीरमल जल आजु । मुखन वसी ही
सती सुलोचन जरी कय के साथ । जुम्ही प्रगम कीन्ही द्रममाय ॥
एतो सीलोचन मत समपती सुभमस्तु ॥

विषय—मेघनाद बध तथा मुद्राचनना का गती होना ।

विशेष ज्ञातव्य—अथ गणित है । केवल तीन पत्रे उपनद्ध है । रचनाकाल और निषिक्तान उल्लिखित नहीं ।

रचयिता का नाम भी अज्ञात है । निधि कैथी है जो अत्यंत अष्ट है । रचना प्राचीन ज्ञात होती है ।

संख्या ५७५. मेवारदेग, निवेदन विचार, कागज—मात्रोदुर्ग, पत्र—४, आकार—५ × ६^३/_४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—२६, परिमाण (अनुष्टुप्)—८५, पूर्ण, रूप—गुणना,

गंध; पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—स० १८४४, प्राप्तस्थान—श्री गरम्बती मजार, श्री विधा त्रिभाग, कांकरौली, हि० व० २०, पु० स० ५ ।

आदि—गोकुलेश भजनाधिकार रूपावात् ॥ यथा द्विजस्य वैदिक कर्मणि गायत्र्य-पदेशज सस्कारवत् ॥ याते निवेदन आवश्यक है । याते जो अशावतार के भजन में तो सबको अधिकार है । तथा चवन । सर्वधिकारिणी ह्यत्र विष्णु भक्ती नराधिप । तथा श्री भागवत मे कहे हे जो । देवोसुरो मनुष्यो वा यज्ञो गंधर्व एव च । अभजन्मुकुंदचरणं स्थस्तिमान् स्याद्यथा वयं ॥१॥ इत्यादि वाक्यते ॥ परंतु पूर्ण पुरुषोत्तम के भजन मे तो निवेदन मंत्र पाछे ही सेवा को अधिकार है ।

मध्य—एसे ही नवधा मे जानिये । चेतन्मत्प्रवण सेवा यह आत्म निवेदन ॥ स्वस्तिम्न जानी प्रपश्यती ॥ यह आत्मनिवेदन संबंधी दर्शन । कृष्णमेव विचिंतयेत् ॥ यह विचिंतन रूप आत्म निवेदनांग प्रेम ॥ याते पहिले दोय मत्र अवश्य अपेक्षित है । शरण मत्र ते हूँ हृदय शुद्ध मयो । तथा श्रवण ते प्रारभ वास्य पर्यते ॥७॥ भक्ति भई ॥

अंत—तहा सेवा दोय प्रकार की । नित्यकृत । तथा उत्सव कृत्य । ये दोऊ लिखे हे ता प्रकार सेवा करनी । न करिये तो भक्तिमार्गीय प्रत्यवाय होय । श्रौर लीला रस की प्राप्ति न होय । यह दुर्लभ पदार्थ अवश्य करनी । श्रौर अंगीकार भगवान किये जब जानिये जो धन्या-श्वय तथा असमापित छुटि जाय । मार्ग मे रुचि होय । कलिकाल हे बहकावन हार बोहत हे । ताते काहू के कहे बहकिये नहीं । या प्रकार ते बढता राखिये सदा सर्वदा या प्रकार की श्री मदा-चार्य जी त० श्री गुसाई जी की आग्या हे ॥ इती ग्रथ सपूर्ण संवत १८४४ श्रावण वदी ५ तापी-पुर में लिख्यो हे ।

विषय—श्री शुद्धाद्वैत पुष्टि सप्रदाय के सेवा विषय, भक्ति विषय, निवेदन मत्र विचार आदि सप्रमाण लिखे गए हे ।

संख्या ५७६. सनेह सागर चतुर्थ तरंग, कागज—देशी, पत्र—४, आकार—११ १/२ × ४ १/४ इंच, पक्ति (प्रतिपृष्ठ)—१०, परिमाण (अनुद्वुष्ट)—१५५, पूर्ण, रूप—पुराना, पद्य, लिपि—नागरी, लिपिकाल—संवत् १९३५ वि०, प्राप्तस्थान—श्रीयुक्त गणेशधर दुवे, ग्राम-बीरपुर, डाकघर—हडिया, जिला—इलाहाबाद ।

आदि—श्री गणेशाय नमः ॥ अथ सनेह सागर चतुर्थ तरंग राधा जी की विवाह ॥

जिहि दिन ते देवे भरि अषियन्ह राधा कुवर कन्हई ।
तिहि दिन ते घरहि अरु बाहिर छिनु भरि कछु न सोहई ॥
आवत जात पलक नहि ठहरं इतं उतं चकरी सी ।
टोलन टोलन भुलाइ गइ हम गइ ताज जकरी सी ॥
गोरस के भित्ति नंदगांव मे आवत संग सहेली ।
कबहुंक पांच सात जुरी चलती कबहुंक प्राप अकेली ॥
धरे शशि गोरस की मटुकी घर घर डोलन्ह डोल ।
भूठेही इत उत फिरि आवइ नंद बरोठे बोल ॥ २ ॥
हे कोऊ गाहक गोरस को या बटारी के माही ।
होत अबेर लेउ जी लेने की घर को फिरि जाई ॥ ३ ॥

अंत—

जाति पाति कुल ऊच नीच सब लोक बेद बंधहारा ।
पानि ग्रहन प्रेम को एहि बिधि समुक्त समुभनहारा ॥
श्री ब्रह्मान कुमारि स्याम सौं व्याह भयो एहि भाति ।
लागी लगन दुहे बिशि गाढी बाढ़ी दिन दिन प्रीती ॥

(६१८)

इति जनेह सागर चतुर्थं तरग समाप्तम् संस्वत् १६३५ ॥ शाके १८०० माघ मासे
शुक्ल पक्षे त्रिनिघाया ३ भीम चाशरे लीषा प्रागदत्त दुर्वे पण्डित लक्ष्मिय पुत्र पाठार्थम् ॥ इति
श्री राधा कृष्ण जी का विवाह समाप्तम् शुभम् ॥

विषय—राधाकृष्ण का स्नेह एव विवाह वर्णन ।

वित्तोप जातव्य—रत्ननाकाल प्रज्ञात है । लिपिकाल सवत् १६३५ वि० दिया है ।

ग्रंथों की अनुक्रमणिका

परि० १, २, ३

सन् १९४४ (सवत् २००१)



ग्रंथों की अनुक्रमणिका

ग्रंथों के आगे दिए हुए अंक परिशिष्ट १, २ और ३ में आई क्रम संख्याएँ हैं।

अग्द पंज	२३	आठ प्रहर मूलचेत प्रसंग भाग एक, दो	१३२
अग्दपंज	३७३ क	आत्म प्र आत्म	४६८
अग्द रावण सवाद	२१३	आत्म प्रकाश	१३
अजीरा रास (धामी पथ का ग्रंथ)	२१६	आत्मवाँघ टीका	२०१ व
अजुल पुराण	३०	आनंद लहरी	३०७ व
अकार के कवित्त	१८ ग	आनदाण्टक	१७४ घ
अखड प्रकाश	४३७	आनदविलास	१५ क
अजामिल कथा	४६६	आभास रामायण	२२२ क, घ
अठारह नाते	४	इन्द्रावती	१६८
अठारह नाते को चोढाल्यो	३८१	इशकगतक	२२८
अद्भुत ग्रंथ	४५१ ख	उजागरप्रकाश	४६६
अद्भुत रामायण	२३६	उडुदाय प्रदीप	२००, ४७४
अद्भुत विलास (वशीकरण विधि)	१४० क	उत्तम सवदाग्रथ	१२६ ज ^१
अष्टात्म रामायण (बाल तथा अयोध्या		उत्सव के प्रकार	६५
कांड	२८४	उत्सव निर्णय भाषा	२०७ ट
अनभि प्रकास	२२६	उत्सवमालिका भाषा	२०७ व
अनुराग लता	१७४ क	उत्सवमालिका श्री विठ्ठलेश्वर राय	
अनुरागविवर्द्धक रामायण	२३० क	जी के घर की	५००
अरदसेर पातिसाह की कथा	१२६ ए	उत्सवमेवा प्रणाली उत्सव निर्णय	
अरिल्ल	१०६	सहित	२०७ व
अर्जुन गीता	१४	उपखाने सहित दशम की लीला	११६ व
अर्जुन गीता	३५०	उरवशीमाला या उरवसी नाममाला	६१०
अलकार ग्रंथ	२४	उरवमी नाममाला	६१०
अलकार दर्पण	१६३ घ	ऊषा चरित्र	३०१ व
अलकनावा	१२६ ह	ऋतुराज भजरी	२६
अलबेले लाल जी को नखशिख	४६८ ख	एकादशी माहात्म्य	७
अवतार गीता या विर्ज अवतार गीता	१८० क, घ	एकादनि कथा	१२०
अवधूत गीता	४६७	शोधवनी अरज	५०१
अवधूत गीता भाषा टीका	४३३	श्रीपथि तथा मत्र श्रीर नगुनातो	५००
अशौच विचार भाषा तथा मुडन		श्रीपथी मंत्रह वल्य वल्ली	३३६
नखच्छेद निर्णय	३८३	कठाभरन टीका	२६८
अश्वमेध (भारत)	३६५	काद्रप वल्लोल	१०६ ग ^१
अष्टकाल की लीला	१४७	कवलावती की पया	१२६ क
अष्टाक्षर मंत्र की टीका	४८६ ग, घ	कवहरा	१६०
		कवावली	१३ ग
		कजानाना	१६४

कथा चित्रगुप्त की	५०३	केशव विनोद भाषा निघट्ट	६०
कनकावती की कथा	१२६ र	कोक कलाधर	५०६
कबीर और निरजन ज्ञानगुप्ति और मन्त्र, मंगल, रंजता तथा देहला	३२ ख	कोकशास्त्र	१६ क, ७४, २०४
कबीर रंदास मवाद	३६६	कोकमार	१६ ख
कबीर नागर	३२ क	कांतूहल की कथा	१२६ ल
कन्नूतर नावा	१२६ घ ^१	काशिल्या की बारहमासी	२५६ ख
कलदर की कथा	१२६ प	खिजर खाँ शाहजादेव द्वरादे की कथा	१२६ य
कलावती की कथा	१२६ ट	राम पञ्चीसी (हनुमान चरित्र)	६४
कनिचगिरि	३२६	गंगा जी का व्यावला	२४६
कनिजुग के कवित्त	६६	गंगा जी को भूलना	३२०
कल्लोल केलि	३०७ ख	गंगा पुरान	२६५
कविकुल तिलक प्रकाश	२८२	गंगा पुष्पाजलि	४०७ ख
कवितावनी भक्त बिलास	३८५	गंगा प्रबोध गीता	४६०
कविता संग्रह	१८ ख	गंगा माहात्म	१
कवित्त ५६, ६१, ६४, ११७, १८८, २०३ ट, च, २१४, ३१७, ३४१, ३८३, ४५७, ४६०, ५०४		गंगाष्टक (गंगाजी को भूलना)	३२०
कवित्त चतु शती	१८ क	गङ्गपथना रासा (पथना रासा)	१०६
कवित्त-सर्वथा संग्रह	३७६	गणित बोधनी (प्रथम भाग)	४२४
कवि विनोद	२६० ख	गणेश पुराण	३०६ क, ख
कहरनामा (ककहरनामा)	१८४	गणेश कथा	४६३
कामरानी व पीतमदाम की कथा	१२६ त	गणक ब्राह्मणदिका	३५८ क, ख
कामलता की कथा	१२६ भ	गनगौर के ख्याल (गीत)	२७८
कान्ति-माहात्म्य	३३१ क	गरवावली गमायण (वात्मीकि रामा- यण के अनुसार)	२२२ ग
काशी वर्णन	३८६ क	गर्भगीता	५०७
किमान मिपाही का भगरा	५०५	गिरवर सर्मा	३६४
कीर्तन संग्रह ६८ ग, ११२ ख, ग, ३२८ क, ४८६ द		गीतर्गाविद भाषा (पद्यानुवाद)	२७१
कीर्तन मसूह	३२८ ख	गीता	२६२ क
कुडनिर्माण वाक्त्रिक	४२६	गीता ग्रथसार	२३२
कुडनिवा	४१७ क	गीताभाषा	१४६, ५०८
कुंभनदास की बातों (चौरामी अपराध वर्णन)	४८६ ख	गीताभाषा टीका	४३, ५४
कुलवती की कथा	१२६ म	गीता माहात्म्य	२५१
कुँवर मदेव-छ मवली ग्यारी बातों	४६५	गीतामार	५०६
कृष्ण ध्यानाष्टक	३५४ ख	गुरु अष्टक	३
कृष्णनाम चद्रिका	१४६ क	गुरुभक्ति चद्रिका	६२ ख
कृष्ण विनाय	४७	गुरु महिमा	४५४
कृष्ण वृत्त चंद्रावली	२१७ क	गुरु मत	४८५ क
कृष्ण नागर	५०	गुरु हरिभक्ति प्रकाश	६२ क
कृष्ण मुष्ठा	३८६	गूढ ग्रंथ	१२६ ड ^१
		गैद लीला	२२१ ग
		गोकुलाष्टक की टीका	४८६ ट
		गोदीहन लीला	६६
		गोपाल गारी	४६३
		गोपाल चरित्र	५६४

गोपीचंद की कथा	५१०	छदशाम्त्र	४१०
गोरख कुडली	१०० घ	छपन भोगोत्सव विधि	४१४
गोरख ग्रथ (?)	१०० ख	छर्प रामायण	३३०
गोरख वीध	१०० ग	छवि सागर की कथा	१०६ ज
गारा बादल पद्मिनी चौपाई	४६४	छाता की कथा	१२६ ज
गोरावादल रणजय	३७६	जगत रग रजन	१०१
गवर्द्धन चरित्र	६१	जगन वत्तीसी	१००
गवर्द्धन नाथ जी की वार्ता (प्राकटय मे)	८८ छ	जगसमाधि	४१४ द, ग
गवर्द्धन लीला ६५, १६२ क, ३४७ क, ख, ग, ४६१ ट, ४८३ क		जप का प्रकार	८८ घ
गवर्द्धन सतसीया को सार	३६	जफरनामा नागिरवाँ का	१०६ ङ
गाविद स्तुति	२६७	जुगल विनाम	३४०
गाविद स्वामी के पद	६८ ख	जैली जवाहिर	३००
ग्रथ देसावली	१२६ च ^१	जमुनिकथा	४८
ग्रथ पद्मगम	१२६ छ	जंग रतन	६०६
ग्रथ रमकाय	१२६ छ ^१	ज्ञान कयहरा	३१४
ग्रथ सुधामिप	१ ६प	ज्ञान कथा कर्म निर्णय	६८ ग
ग्वारिनी भगडा (दानलीला)	३३८	ज्ञानकथा रहस्य	६८ ग
ग्वाल पहेली	३१६ क	ज्ञान चद्रिमा (नागकेत पुगण)	१३१
धूँघट नावाँ	१२६ ह	ज्ञान चेटक	१२
धारान की बँदगई	४४३	ज्ञान प्रनाम	११८ ख
धद्रसन राजा सील निधान की कथा	१२६ ङ	ज्ञान वारामासा	१०३ ग
चद्रावली लीला (अजविलास)	३६४ ग	ज्ञान नागर	३६ ग
चक्रव्यूह	२६०	ज्ञान स्वरोदय	४१६
कर्तुविध पत्नी	३६८	ज्ञानोपदेश	३६६
चतु श्लोकी टीका	२३६ ग, ४८६ त	ज्योतिष	४६५
चरण चिह्न	५११	ज्योतिष और गोगाध्याय (टीका)	१३०
चरण चिह्न की भावना	८८ च	ज्वराकुश	१३४ ग १, ८
चरणपतिका पत्रिका	११३ क	भूतना	३००
चानक	३५८ ग	डंगवे पुरान	३४८
चार कवीश्वरो की वार्ता	५१२	डाडियादान	१३३
चितन	४८६ ख	तत सामूद्रिक	३११
चितामणि या हरिनाम गुरुनाम चिता- मणि	२७२ क	तत्व उपदेश या पोपी जान गोष्ठी	१३६
चितामनि	३२ घ	तत्व चितामणि	३०४
चित्तबध काव्य	१५३	तत्ववोध टीका	३०१ ख
चिरई चेतनी	२२६	तत्व विवेक	४०० -
चेतननामा	१२६ प	तमीम अनारी की रफा	१०६ न
चेतावनी	१७० क	तर्क प्रकाश भाषा	१०१ ग
चीवीस प्रवतार को जस	२७२ ख	तियि प्रवध	३० -
चीवीस तीर्थकर की चिनती	१७७	तुलसी भूषण	३०३
चीरासी अपराध वर्णन	४८६ घ	तुलसी नतनई	१११ न
चीरासी बँणव की वार्ता	८८ ड	विविध भावना भाषा	८८ ग
चीर्य लीला	६७	वलोक नाप श्री लान लालिनी दू जी चौसठ पदी को शृंगार	५१७

दक्षिण प्रत्युत्तर	१३५	नल चरित	३०४ क
दत्तात्रेय लीला	३०८	नल दमयती की कथा	१२६ घ
दधि लीला	३३, २१९	नलदमयती चरित	४६६
दयाराम मतमई (टीका सहित)	१४६ ख	नलपुराण या नलदमयती चरित	४६६
दरमनावा	१२६ ह, १२६ क ^१	नलोपाख्यान	२५५
दशरुमां चरित	२३१, ४१८	नवग्रह आकार (नवग्रह पूजनप्रकार)	४८६ ज
दशम श्कध मधोप लीला	२८६ ख	नवग्रह पूजन प्रकार	४८६ ज
दम्पूरा शिमार का	४८६	नवनागरी के पद	३६१
दाना कर्ण	५१८	नवनीत नवमई	१८२
दाता कर्ण	५१८	नवरत्न कवित्त	२७
दान लीला ३३८, ४४ क, ख, २८७,		नवरत्न के कीर्तन	४८६ छ
३२७, ३८२, ४०२ क, ४६१ छ, ज		नवलनेह	१०१
दामोदर लीला	२५	नहुप नाटक	७७
दिविज चपू	४१६	नागरीदान जी के कवित्त संग्रह	१८५
दिनमणि वंशावली (गुरु कथन)	४८८	नागलीला	११४, ३३१ ख
दीपारामायण	२८७	नाम कुमुदमाला	१६३
दुर्गाभक्ति तरंगिणी	४२७	नामदेव चरित	५२३
दुर्गा जतक	३६०	नाममाला अनेकार्थ	१२६ क ^१
दुर्गा सवाद	४७६	नाम रत्न स्तंभ विवरण भाषा	४८६ झ
दृष्टिकूट के पद (भाषा टीका)	२३७	नागायण लीला	१३०, २८६ ग
देवकी चरित्र	३७८	नामकेत पुराण	१३१, ३४६ख, २२१ ड
देवी चरित्र	४१५	नासिकेतीपाख्यान	३१६
देवी विलास (दुर्गा सवाद)	४७६	निघट मदनोद (ग्रथ बँधक)	२७६
देहला	३२ ख	नित्य भावना (सेवा तथा स्वरूप की)	४८६ झ
दोहावली	७० ख	नित्य सेवा विधि	४०४
दोहा नायी	११६ ख	नित्य सेवा शृंगार की भावना	८८ झ
द्रव्य शुद्धि भाषा	२०७ ख, ५१६	निद्रा विलास	५२४
द्रोपदी अष्टक	४७६ ख	निरमल की कथा	१२६ फ
द्रोपदी की स्तुति	३१६ ख	निर्गुन नहछुर	१६१
द्रोपदी स्वयंवर	३१२	निर्गुन लीला	१७० घ
द्वादश रात्रि विचार	४२५	नीति के दोहें	५२५
द्वात्रिंशदान की बानी	१६७	नीतिमजरी	२१२ घ
धनुर्मान बानना	५२०	नीति रत्नाकर	१५८
धनुर्वेद	५०१	नीति विनोद भाषा	४०२ ग
धर्मनामा	१७१	नीति विलास	२७०
धर्म सवाद	५२२	नीलकण्ठ स्तोत्र	२४१
ध्रुव चरित्र	४८७	नैकाव्य कथा	४४४ क, ग
नैकाव्य कथा (नैकाव्य कथा)	४८८ क	नोमंगवा के दाम्तान	५२६
नमोऽस्तु	६६, ११६, ४४६	पत्र कोश	५२७
नजीर की रत्नमाला पुस्तक	१७६	पंचरत्नी गेद लीला	२२१ घ
नर्गमर पद्यावली	४५६		
नरसी मेनानीमाता	१७६		

पंचाध्यायी रासलीला	४६१ अ	प्रेम सागर (प्रेम सागर)	१२६ ट
पचायत का न्याय पत्र	२२५	प्रेमनामा (प्रेम नामा)	१२६ प
पछी चरित्र	५२६	पोथी ज्ञानगोष्ठी	१३८
पछी चीतनी	५२८	पोथी मैनमत के उत्तर	७१
पछी चेतवनी या पछी चरित्र	५२६	प्रबोध चन्द्रोदय नाटक	१३३
पथ पारख्या	१५६	प्रयाग शतक भाषा	२४८
पदनामा लुकमान का	१२६ थ	प्रह्लाद चरित्र १५६ क, ग, ग, २१८,	
पाडेलीला	२६३	२५२ छ, ५३६ क, ग, ५३७	
पिंगल	२६८, ३३७ क	प्रह्लाद लीला	१०४
पिंगल नामार्णव	३१८	प्राकृत पंचाध्यान (भाषा पचनत्र)	५३६
पिंगल वैल की कथा (सचित्र)	५३२	प्रेम पञ्चमी	४७१ ग
पद ? ६, ६८ क, २०३ क, ख, ग, घ,		प्रेम प्रकाश	२१० ङ
४२०, ४८४		प्रेमरमान	८५
पद गुटका	३६७	प्रेमलता	१७४ ग
पद स्वयंवर के	१२६	प्रेमलीला	१२७
पदावली	३४६ ग, ३६६	प्रेमविलास प्रेमलता कथा	१२४
पद्मपुराण (रामचंद्र अश्वमेध)	३५२	प्रेमसागर	२२१ ग
पद्मिनी चरित्र (गोरा बादल रणजय)		प्रेमपरा भक्ति	५३८
	३७६	फागु	४८१
पर्यनारासो	१०६	फूल	४४० ङ ग
परख विलास	३५८	फूल चैतावनी	४४० ग, न
परचरी पीपाजी की	६	फूल मंजरी	३१० क
परमानदसागर	२०२ क, ख, ग, घ	फूल मजरी पहीप मजरी	२०६
पवन विजय स्वरोदर	५३०	वसी लीला	४६१ ज
पशुमर्दन भाषा	४५५	वडे छप्पन भोग को क्रम	४५१
पहीप प्रकाश (पुष्प प्रकाश)	१६६	वत्तीम लक्षण (भगवदीय वैष्णवों के	
पहीप मजरी	२०६	लक्षण)	८८ ट
पातालखड	५३१ क, ख	वनिक प्रिया	४६१
पाराशरी जातक या उडुदाय प्रदीप		वरवा	१०६ छ
	२००, ४७४	वरव पदच्छतु	४३८
पाहन परीछथा	१२६ थ	वलदेवपटक	३२०
पुरुष स्त्री की परीक्षा या सामुद्रिक की टीका		बलुकिया विरही की कथा	१०६ छ
	५३३	बहु ला कथा	३८०
पुष्प प्रकाश	१६६	बहुला लीला	३६
पुष्टि दृढाव	४८६ ट	वादीनावा	१०६ ग
पुष्टिदृढाव की वार्ता	४८६ ठ	वाजनामा	१०६ प, ४१६
पुष्टि भगवदीय गुणमणिमाल	५३४	वादशाही राज्यज्ञान वा पद्मनाभा	
पुहुप बरिखा की कथा	१२६ ड	विवरण (वर्ष, मान, दिन,	
पूजा विधि (रामानुजी सप्रदाय की)	५३५	पडी महित)	४५०
पूर्ण पुरुषोत्तम को रूप तथा गुण		वारहखडी	२१५, ४०१ ग ४६०
नाम दर्शन	४०३ क	वारहवाट छटाना वंटे	२३५
		वारहमाना १२६ छ १०६ ग, ३६८ ४४६	

वारहमानी १४३ ख, २६५, २६६, ३०२, ३०६ ख, ४५२, ४६४ क	भागवत विनासिका	३५८ घ
वागपदी ३०५, ३२१	भाव कल्लोल	१२६ त
वाचस्पति २८०	भावचंद्रिका	३०६
वानवाधनी ५४४	भावशतक	४११
वाहविनाम ३३३	भावसत	१२६ द
विहारी नतगई (टीका)	भाषा कवणानंद	३३०
विहारी नतगई (गोवर्द्धन मतमैया को मार)	भाषा कोश (हिंदी संस्कृत में)	२८६
बुद्धिदार १२६ म	भाषा चंद्रोदय (व्याकरण)	४३२ क
बुद्धि दीप १२६ स	भाषा ज्योतिष	४०५
बुद्धिनाग या मधुकर मालती की कथा	भाषा पंचतंत्र	५३६
१२३ ङ	भाषा भक्त चंद्रिका	३६७
बूढागणो १०७	भाषा महावाक्यविवरण	३८६
बेनी माधव जी के वारहमानी ४६४ ख	भाषा लीलावती	१०८
बेलग (श्रीकृष्ण देव हविमणी बेलि) २११	भाषा मग्नह	१११
बैत मरमद ४४३, २७६	भास्वति भाषा टीका (ज्योतिष)	३११
बैताल पन्चामी २२३, २७३ क, ग, ४०८	भूगोल कथा	५४७
बोधरत्न २४६	भूगोल पुरान	२६२ ख
बोवार चरित्र १६०	भूगोल प्रमाण गद्य	५४८
ब्रह्मांड लीला ८३	भूपण महाकवि के कुछ नवीन छंद	२६३
ब्रह्मानंद द्वार २३० ग	भोज प्रबंधकार	२२७
भक्तगीत ४३५	भ्रमरगीत	१४४
भक्तानुत्रिता ४०१ ग	भ्रमरगीत (मजरी)	२६७
भक्ति जयमान ४१८	मगल	३२ ख
भक्ति प्रकानिता टीका ३८२	मगल शास्त्रोच्चार	३३७ घ
भक्तिविधान ३२४	मधुकर मालती की कथा	१२६ ङ
भगवत् गीता ४१, ४७८, ५४५, ३५६	मधुमालती कथा (मंचित)	११०
भगवदीय वेदगुर्वो के लक्षण ८८ ट	मधुगाटक की टीका	४८६ क
भक्त्याटक १७४ घ	मनमोहन लीला	२२१ क
भट्टनी ग्रान्थि (टीका) २५४	मनोरथ मुक्तावली	१८१
भरतमिथ्या या भक्तविलाप २१ क, ख, ग, घ, १४३ घ, ट, च	महादेव मरौदय	५४६
भरतरी कथा ५४६	महाप्रलं	११८ क
भरत विनाय २१ द, ख, ग, घ घ, ट, च	महाभारत (उद्योग, भीष्म और द्रौण- पर्व)	१७२ क, ख, ग, घ
भरतगीत ४३५	महाभारत (कूर्म पर्व)	४३० क, ख
भविष्यदल गद्या १६६	महाभारत (त्रिगट पर्व)	५५०
भांग्यन ४६, ८६, ३७७ द, ख	महाभारत (शल्य पर्व)	६५
भांग्यन भांग्यन मंत्र ३५५	महाभारत (नभापर्व, वनपर्व और उद्योग पर्व)	१७२ ख
भांग्यन भांग्यन मंत्र ३०३	महाभारत (स्वर्गरोहण पर्व)	६०, ०३८८
भांग्यन भांग्यन (दशम स्कंध) ३५३	महाभारत (महाभारत)	१६
	महिम्नगोत्र भाषा	४३६
	मात्रा मुक्तावली	२३० ग

माधव विलास (माधवानल काम- कदला)	२६१	रसरामि पञ्चीमी	३२३
माधवमुयश प्रकाश (जयपुर का)	११५	रसनागर	८३०
माधवानल कामकदला १८ ड, च, छ, ज, झ, ञ, २६१		रसनारिणी	२८३ व, ग
मानवत्तीसी	३७४	रमचिदु	२८१ व, ग
मानविनोद	१२६ घ	रस हीरावली	१७८ व
माया को अंग	१६४	रसानदलीला	१७८ छ
मुडन नखच्छेद निर्णय	३८३	रमिक पञ्चीमी	३२३
मुक्तिविलास (हठप्रदीपिका)	१४० ख	रसिक मोहन	३१३
मुमोक्ष शास्त्र	६७	रागनिर्णय	१५४
मुरली की लीला	२८६ क	रागप्रकाश	२६० क
मूल ग्यान	३२ च	रागमाता	१०२
मूलवानी	३२ छ	राग रत्नाकर	३३४
मृगकपोत की लीला	११२ क	राग रागिनियों का वर्णन	४५३
मेघमाला	३००	राग मकीर्ण रागमाता	८३३
मोहनहुलास	३०७ ग	राजनीति के दोहा	१४५
मोहनी	४२१	राजपोरिया लीला	३७२
मोहनी की कथा कविजान कृत	१२६ ड	राजाविक्रम की वार्ता	५५४
यमकाल कार सतसैया या वृ द विनोद	३६६	राधाकृष्ण	४१३
यमुना नवरत्न	२१०	राधाकृष्ण रूप युगन विनाग (मचित्र)	८
यमुना लहरी	१०५	राधा नाम गाथरी	६८७
यमुनाष्टक की टीका	२३६ क, ख	राधाविनाग	३४७ घ
यमुनाष्टक की टीका भाषा मे	२३६ क	राधे हरि मिलन गतगई	४१७ घ
युगल विहार	५५१	राम अक्षरी	४७२
युगल सुधा या कृष्ण सुधा	३८६	रामकथा कलाद्रुम	४४१ ग
यूसुफ जुलेखा	४२२	रामगीतामृत	२८३ घ, ङ
योगरत्नमाला	५५२	रामचंद्र जी रो रामरामो	२८८
रगमजरी	३१० च	रामचरित्र	३०४ ग
रघुनाथ अलकारे	४६८ क	रामचरित्र रामार्णव (वान श्रीर मुदर कांड)	१३४ ग
रत्नमजरी	१२६ ग	रामचरित्र रामार्णव (द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ और पंचमार्णव)	१३६ क
रत्नसागर ज्योतिष या बृहस्पति कांड	१४२ ग	रामजन्म	१६३ ग
रत्नावती	१२६ क	रामजी का नहछू	५५५
रमलसार	२५०	राम जी के बारहमाना	२५६ क
रसकोष ग्रथ	१२६ छ	रामतीतीनी	३६२
रसतरंगनी	१२६ ड	रामनाम गुणनागर	२३८
रसधमार	१०	रामरघुनाथ स्तोत्र	२६
रसमजरी	१७५ छ	रामरहस्य	४५३
रसमजरी (हिंदी पद्यानुवाद)	३१४	रामरहस्य	४६८
रसमहोदधि	४८०	रामरहस्य (नवतुल कांड)	३७
रसरत्नाकर	१६५	रामविवाह (?)	१८७
		रामविनार	
		राम नतन या नूननी नतन	१६१ घ

गमगावित्रो	२४६	विचित्रालकार (द्विधार्थ वचित्त)	३६८
गमहोरी गृह्य	३४८	विजयाष्टक	६०
गमायण ८५ क, १/१ क, ख, ग, घ, ङ, ४६६		विर्ज अक्षरतार गीता	१८० क
गमायण (रामवैभव)	४८५ ख	विज्ञान मुक्तावली	२३० घ
रामायण तिक्तिका कांड	५५६	विदग्ध माधव	३६५
रामायण नाटक	५५७	विद्याकुर	४३२ ख
रामायण माना	२८३ ग	विद्रुभदेस (? रुविमणी विवाह)	५१
रामायण माहात्म्य	२४०, ४१६	विनय के पद	४०१ क
रामाश्वमेध	१६१, १६२, ३५२	विनय विहारी रूप उत्सवाष्टक	२६६
गव हमीर मो गढ	५५८	विने पच्चीसी	३३६
गान पचाध्यायी	११, ५२, ३२६ क	वियोगमालती	४२
रुक्मिणी मंगल ८०, ३३१ ग, २५० क, २७७		वियोगसागर	४२१, १२६ उ
रुक्मिणी व्याह	३४५	विरह अंग	३८४
रूपमजरी	१७५ क, ३६३, १२६ ठ	विरह के पद	२०२ ड
रेग्रता	३२ ख	विरह सत	१२६ द
रेग्रता तथा कीर्तन	२३४	विरही की मनोरथ	१२६ न
लक्ष्मण शतक	४४० क, ख	विशदावली	४६
लक्ष्मी चरित	३६६ क, ख, ३४०	विवाह टेल	५६
लालदाम की कथा	१३६	विवेक कली	२३३
लीला प्रकाश	१८३	विवेक दीपिका	५८
लैलै मजनु	१२६ ख	विश्वकारन	४५ ख
वनयात्रा	२०७ ग	विपिपक्षय तथा स्फुट रसायन	२०६
वन विहार माधुरी	२६१	विष्णु पुराण ५६२, ५६३, ५६४	
वरन चरित्र	२७४	वृ द विनोद	३६६
वरच नायिका भेद (ब० वा०)	२६६	वृ दावन वर्णन	४००
वमरदिन के उत्सव को भाव	४८६ ङ	वृहत्सहिता भाषापर्य	२५३
वर्णनावा	१२६ घ	वृहस्पति कांड	१४२ ग
वल्लभकुल कल्पवृक्ष (वल्लभीय वण वृक्ष)	३३४	वेद गोरखनाथ का	१०० क
वरनभाष्यान मटीक	४०३ ख	वेद सामुद्रिक	३४४ ग
यवुर वाहन	५३	वेमन सिघार	५६५
वमतगत	४० क, घ	वैद्यक (नानक जी ग्रथ का मत)	१८६ ख
वमीन्ट बोध	३० ङ	वैद्यक ज्ञान लीला	१७४ ङ
वम्बुवृंद नाम दीपिका	१८६ ङ	वैद्यक नतपद नावा	१२६ झ
वानी १८२ क, ख, २०५, ४६७		वैद्य जीवन	१०३
बा० भू०	२२४	वैन वत्तीमी	४६५
वारानसी विनाम	१६६, ५५६	वैराग्य मंजरी	२१२ ग
वान्नु प्रदीप	५६० ङ, ग, ग	वैराग्य शतक (विवेक दीपिका)	५८
विश्वन वनीमी	५६१	वैराग्य मदीपनी टीका	४५०
विनागमाना की टीका	४३६	वैराग्य लक्षण ग्रथ	८८ ङ
		वैष्णवों के नित्यकर्म गावर्द्धन लीला	६५
		व्यजन प्रचार (पहला भाग)	१२५
		व्यजन महार (? वेमन सिघार)	५६५

ब्रँज की बाल लीला	३६३	श्री द्वारिकाधीश के विचित्र विनाम	२१७ छ
ब्रजमहात्म चद्रिका	१५५	श्री द्वारिकाधीश के शृंगार मं०	१८६ क
ब्रजलीला	१७४ ज, ४८२	श्री द्वारिकानाथ जी के घर की	२०७ घ
ब्रजविलास	३६४ क, म	उत्सवमालिका (रीति)	७६ क
ब्रजविहार (द्वितीय सोपान)	२८४	श्रीनाथ जी की सवाविधि	६३
ब्रज विहार (ब्रज वविलास)	३६४ ख	श्रीनाथ जी के शृंगार के वस्त्रन के नागम	६८ घ
शकुनावली	७६	श्रीगति के कवित	६३१
शांक्त प्रभाकर या अद्भुत रामायण	८७ क	श्रीमद्भागवतानुक्रमणिका भाषा	१४६ ग
शब्दवश कुठार	१२८	श्री महाप्रभु जी के स्वरूप चितन की	१६७
शब्द	३२ ख, ८१	पद	१६७
शब्द या बानी	६६	श्री महाप्रभु जी श्री गुनाई जी की	८८ ग
शब्द लीला	१५१ क	स्वरूप बचनार	८८ ग
शब्द (विष्णु पद)	६६	श्री यमुनाप्टक की टीका भाषा में	२३६ ग
शरदर्निशा	५५	श्रीराम गीत माला	६३
शालिहोत्र १३८ क, ख, ८४ क, ख, ३४,		श्री बल्लभाचार्य की बगावली तथा	
४६२		स्वरूप वर्णन	११६ ग
शालिहोत्र प्रकाश	७२	श्लेषार्थ विज्ञति	३१
शालिहोत्र (घोरान की वैदगई)	४४६	पद्मशुभार्णव	३२५
शिखनख	४७६ क	पद्मशुभार्णव	१२६ छ
शिव अत्रिका स्तोत्र	२०	पद्मपण्डि अपराधा	६८६ च
शिव स्तोत्र	४०६	सगीत ग्रथ	५६८
शृंगार तिलक	५६६	सगीत दीपिका	४१०
शृंगार मजरी	२१२ ड	सत विलास	३६०
शृंगार रससिंधु	२४५	सतान कल्पलतिका	६६६
शृंगार विलास	४७१ क	सयोंग वत्तीसी	२६८ ग
शृंगार सत	१२६ द	मगुनांटी	७५
शोक विनास	८७ ख	सतकविकुलदीपिका	२५७
श्री आचार्य जी की वशावली	५७	सतवनी की कथा	१८६ घ
श्री आचार्य जी महाप्रभु जी की (प्राकट्य)		सतनावा	१०६ छ
वार्ता द्वादशकुजभवन	८८ ग	सत्यवती कथा	८८
श्रीकृष्ण अनन्य चद्रिका	१५६ घ	सद्गुरु महिमा	४८८
श्रीकृष्ण चरित	३७१	ननेह लीलामृत पञ्चासी	६७५
श्रीकृष्णदेव रुक्मिणी वेलि	२११	सप्तवध्या लघण	४६६
श्री गिरधर लाल जी के वचनमृत	६२	सबदी	११३ छ
	७६ च	सभागीत	३४६ ज, घ
श्री गुसाई जी की ब्रज चौरासी कोस		नमरनार	२६६
की वनयात्रा १६०० की	८८ ज	समर्पण श्लोक गद्यार्थ की टीका	६८
श्री गुसाई जी विठ्ठलनाथ जी की		समर्पण मेवा गत नने की भाषना	१८७
वनयात्रा	४८३ च	मग्न रत्न	३६७
श्री गोवर्द्धनधर को वर्षभर को शृंगार		सवांग पीर मोचन	१८६ घ
सं० १८५७ वैशाख से प्रारभ	५६७	सर्वोत्तम स्तोत्र की मन्त्रन टीका का	
श्री ठाकुर जी के षोडश चिह्न			

सलोक महानो	१८६ क	सूरजमल की कृपाएँ	१४८
सर्वथा या भूलना	१२६ छ	सूर रामायण	४६१ ख
साभो कीर्तन	४०२ घ	सूरसाठि	४६१ क
सावो	१५१ घ, २७५, ४३४	सूरसारावली	४६१ ग
साठ	५७०	सूर्य कांड	१५७
सान स्वरूप को कीर्तन	१६८	सवाफल	४६१ ड, च
नामद्विक की टीका	५३३	मवापक्ष निवेदन विचार	५७५
मारभधर वैद्यक	१७८	साना लाहावाद	२४३
निगार निलक	१२६ ट	नामवध का वधानली	१६५
निहामन वतीमी	२, २०८	सादर्य लहरा (टीका)	३७५
सिप ग्रथ	१२६ प	स्तुति	२६० ख
निप नागर पदनावा	१२६ भ	स्नह विहार	२१२ घ
मीतपत्तली	५७१	स्नह सागर चतुर्थतरंग	५७६
सीताचरित्र	५७२	स्याम भगई	१७५ ग
सीलवती की कथा	१२६ भ	स्वरादय (पट्ट प्रकाश)	२८
सुंदर कांड	१२३	स्वामिनी जी का व्याह	१६२ घ
सुंदर प्रबोध	४५१ क	हनुमत पंज	३७३ ख
सुकृत ध्यान	३२ ज	हनुमत वाद्य	३२ भ
सुखदेव लीला	३०१ ख	हनुमत वीर रक्षा	१६३ क
सुखभाग्य पुगाण	१५०	हनुमताष्टक	६०
सुदामा चरित्र	१७, १८ घ, १५२, १७६, ५७३	हनुमान चरित्र	६४
सुदामा जी के सर्वथा	३५	हनुमान जयति	३५४ क
सुमटराड की कथा	१२६ व	हनुमान पञ्चासी	४२६
सुमन प्रकाश	२६४	हरभूषण मुक्तावली	५
सुरतरंग (सगीत)	४८२	हरिचरित्र	३७०
सुलोचनामत	५७८	हरितालिका व्रत कथा	१६६
सुवृहत्तर	७३	हरिनाथ विनोद	३८
सुवृहत्तर (? सुवृत्त हार)	७३	हरिनाम गुहनाम चित्तमनि	२७२ क
सुमिद्वानोत्तम रामयड (किष्किंधा, उत्तरकांड)	३६१	हरिलीला सोलहकला	२५६
सूक्तवेद	१०० ड	हरिविद्यामाध्य	४८८
सूरगुणार्थ पद संग्रह श्रीर ग्रथ	४६१ घ	हिननिगार लीला	१७४ छ
		होरी तथा टोल की भावना तथा तदात्मवर्णन	४८६ ए

ग्रंथकारों के नामों की अनुक्रमणिका

परि० १,२

सन् १९४४-४६ (सं० २००१-२००३)

ग्रंथकारों के नामों की अनुक्रमणिका

ग्रंथकारों के आगे लिखे हुए अंक रिपोर्ट के परिशिष्ट १ और २ में दी हुई क्रम संख्याएँ हैं।

अखैराम	१	करताराम	३४
अखैराम	२	कल्याणदाम	३५
अग्रस्वामी	३	कल्याणदाम	३६
अचलकीर्ति	४	कवि वृष्ट	३६३
अजगरनाथ	५	काकराम	३७
अनंतदास	६	कान्ह	३९
अमरदास	७	कान्ह कवि (नघु कान्ह)	३८
अमरेश कुमार	८	कान्ह और व्यास	३९
अयोध्या गिरि	९	कालिदाम	४०
अली मुहिव खाँ "प्रीतम"	१०	कामीगिरि	४१
अली रंगीली	११	किसनलाल	४२
अहलाददास	१२	किमोरदास	४३
आत्माराम	१३	कुभनदास	४४
आनंद (कृष्णानंद या गगाराम)	१४	कुदरतीदाम या कुदरती साहव	४५
आनंद	४४८	कृपाराम	४६
आनंद कवि	१५	कृष्ण कवि	३३५
आनंद कवि	१६	कृष्णचंद्र अग्रवाल	४७
आनंददास	१७	कृष्णदाम	४८
आलम और शोख	१८	कृष्णदाम	४९
इद्रावती	२१६	(हरिकृष्णदास) कृष्णदास	४८०
इसरदास या ईश्वरदास	२१	कृष्णदास (अष्टछाप)	४९
ईश कवि या कवि व्यक्तेश	१६	कृष्णदास जाडा	५१
ईश	२०	कृष्णदास कायस्थ	५२
ईश्वरदास (इसरदास)	२१	कृष्णदेव	५३
ईश्वरदास	२२	कृष्णराम मतोपिया चप्रवर्ती	५४
ईश्वरदास	२३	कृष्णानंद	५५
ईश्वर कवि	२४	कृष्णावई	५६
उदय या उदयराम	२५	केवल लीन "द्विज"	५७
उदय	२६	केशव किशोर	५८
उमादास	२७	केशवदाम	५९
ऋषिकेश	२८	केशवदास नारायण	६०
ऋषिकेश	२९	केशवप्रसाद शर्मा	६१
कनाय साहव	३०	केशोराम	६२
कन्हैया लाल भट्ट "कान्ह"	३१	धेमकरण	६३
कबीर	३२	ग्रैम कवि	६४
करताराम	३३	गंग या गंगाराम	६५

गग कवि	६६	चद गुसाई	१०६
गगनग्न	६७	चद परतिप	१०७
गगागिरि	६८	चरुपाणि	१०८
गगादान	६९	चतुरराय	१०९
गगादान या जग गगा	७०	चतुर्भुजदास कायस्थ	११०
गगाराम	१४	चतुर्भुज मिश्र	१११
गगाराम	७१	चतुर्भुज दास (अष्टछाप)	११२
गजननिह कायस्थ	७२	चरपटनाय	११३
गजराज	७३	चूडामणि	११४
गजेंद्र	७४	चेतनचद	१३८
गणगम ऋषि	७५	चेतनिचद	१३८
गगीव जू	३४१	चैन	१५३
गिग्धर	७६	छविनाथ	११५
गिग्धर दाम	७७	छितिपाल	११६
गिग्धर जी	७८	छैल	११७
गिरिधर लाल जी	७९	जगजीवनदाम	११८
गो० श्री गिरिधर लाल जी	८०	जगतानद	११९
गिरिवर दाम	८१	जगदीशजन	१२०
गुमान कवि	८२	जगदीश	१२१
गुरु गोविंद	८३	जगतकवि	१२२
गुरुदीन कवि पाटे	८४	जगन्नाथ	१२३
गुनाम मुहम्मद	८५	जटमल नाहर	१२४
गोकुल कवि	८६	जयशंकर (महल अरवदीच)	१२५
गोकुल कायस्थ	८७	जान कवि	१२६
गोकुलनाथ (गोस्वामी)	८८	जान (मिरजामुहम्मद)	१२७
गोपालजन	८९	जानकी दाम	१२८
गोपाल जन	९०	जीराम	१२९
गोपालदान (स्वर्णशार)	९१	जीवनदाम	१३०
गोपालदाम	९२	जीवनराम	१३१
गोपिनारायण	३२८	जगतानद	१३२
गोपिनारायण जी	९३	जंक्रुष्णदाम	१३३
गोविंद या गोविंददान	९४	भामदान	१३४
गोविंद	९५	टांडरमल कायस्थ	१३५
गोविंददान	९६	डूंगरमी माधु	१३६
गोविंद पटिन (कागमीरी)	९७	तामसेन माह्व	१३७
गोविंद स्वामी (अष्टछाप)	९८	ताराचद (चेतनचद या चेतनिचद)	१३८
गोविंदगान	९९	तागाचंद	१३९
गोग्गनाथ	१००	ताहिर (ताहिर)	१४०
घनदेव शम्भुकुच्छ (वीणव)	१०१	तुलसीदाम गोस्वामी	१४१
घनशराम (चतुर्भुज मिश्रभज)	१०२	तुलसीदाम	१४२
घनशराम टिज	१०३	तुलसीदाम	१४३
घनशराम दा म्भानदान	१०४	तेजनवि	१४४
घनशरामदाम	१०५	त्रिलोकमिह	१४५

धेघनाथ या धेघू	१४६	नागरीदाम	१=५
दक्षसखि	१४७	नागरीदाम हित	१=६
दत्तकवि	१४८	नाथ कवि	१=७
दयाराम भाई	१४९	कविनाथ	१=८
दयालदास	१५०	नानक	१=९
दरिया साहब	१५१	नामदेव	१९०
दलजीत	१५२	नारायणदाम	१५१
दादू (? सभवत चैन)	१५३	नारायणदास ब्रजवाग्विया	१९०
दास	१५४	नारायण सिंह नृप	१९३
दास	१५५	नित्यानंद	१९४
दास	१५६	निर्मल कवि	१९५
दासराम	१५७	निर्मलदाम	१९६
दिग्विजय सिंह	१५८	निश्चयदाम	१९७
दुखहरणजन	१५९	नूरमुहम्मद	१९८
दुखीराम बरनवाल	१६०	नैन कवि	१९९
दूलनदास	१६१	पचौली देवकर्ण	१९९
देवकर्ण पचौली	१६२	पंडित	१९०
देवकृष्ण	१६३	परमसुख देवज	२००
देवीदत्त शुक्ल उपनाम पंडित श्रीर धीर	१६४	परमानंद	२०१
देवीदास	१६५	परमानंददाम (अष्टछाप)	२०२
देवीदास	१६६	परमन विप्र या परमन द्विज	२०३
देवेश्वर माथुर	१६७	परमन	२०४
द्वारिकादास	१६८	पलट्टदाम	२०५
द्वारिकेश जी गोस्वामी	१६९	पुरुषोत्तम	२०६
द्विजराम	३३७	पुरुषोत्तम	२०७
द्विजलाल	३७५	पुरुषोत्तमदास	२०८
धनपाल	१६९	पुरुषोत्तम	२०९
धरनीदास	१७०	पूरन कवि	२१०
धरमादास	१७१	पृथ्वीराज	२११
धर्मदास	१७२	प्रतापनिह जी (नवा)	२१२
धीर	१६३	प्रधान	२१३
धौकल मिश्र	१७३	प्रधान	२१४
ध्रुवदास हित	१७४	प्रभुलाल	२१५
नददास	१७५	प्रमादान	२१६
नजीर	१७६	प्रवीन कवि	२१७
नथमल	१७७	प्रवीन कवि	२१८
नयनसुख या नैन कवि	१७८	प्राणानंद चौहान	२१९
नरसी मेहता	१७९	प्राणनाथ (नारायणी धीर मरामती)	२२०
नरहरिदास वारहट	१८०	प्राणनाथ मोती	२२०
नवनीत कवि	१८१	प्रीनम (छलीमहीय घा)	२२१
नवनीतराय मुशी	१८२	प्रेमदान	२२२
नवरगदाम स्वामी	१८३	प्रेमरस	२२३
नवलदास	१८४	फरीद सिंह	२२४

फगि नृपति	२२४	भूपण	२६३
फगात्र मिश्र	२२५	भोलानाथ	२६४
फरद्विज	२२६	मडन	२६५
वशीधर (पंडित)	२२७	मगन जी	२६६
वद्यतनिह (राजा)	२२८	मट्टकमनि	२६७
वदतीदाम	२२९	मट्टूजी महाराज	३२८
वनादाम	२३०	मतिराम	२६८
वनदेव कवि	२३१	मतिराम	२६९
वनरामदाम	२३२	मथुरादास कवि	२७०
वनिगम	२३३	मथुरानाथ भारद्वाज	२७१
वन्नभ जी	२३४	मनमाराम	२७२
वत्तम रमिक	२३५	मनिकठमनि	२७३
वहंगन द्विज	२३६	मनोहरदास	२७४
वानकृष्ण वैष्णव	२३७	मलूकदास	२७५
विदुलदाम	२३८	महम्मद श्रीलिया	२७६
विदुलनाथ गोस्वामी	२३९	महरचंद द्विज	२७७
विहारी रमणेश	२४०	महादास	२७८
वोजनाय	२४१	महमति	२१९
वोधदाम, वोधादास या वोधीदास	२४२	महाराज कवि	२७९
वोधलाल	२४३	महावदास	२८०
वोधदाम	२४२	महावदास वैष्णव	२८१
वोधीदाम	२४२	महीपति या महीप	२८२
ब्रह्म ज्ञानेंद्र	२४४	मातादीन शुक्ल	२८३
भगवतदाम	२४५	माधवदास	२८४
भगवतदाम	२४६	माधवदास	२८५
भगवतदाम	२४६	माधवदास	२८६
भगवतदाम	२४७	माधवदाम	२८७
भगवतदाम	२४८	माधवदास चारण	२८८
भगवानदाम	२४९	माधवदाम भट्ट	२८९
भगवानदाम निरजनी	२५०	माधवमिह राजा	२९०
भगवान (भगवान हित रामराय)	२५१	माधुरीदास कपूर	२९१
भट्टीपन	२५२	मानकवि या मुनिमान	२९२
भट्टनी	२५४	मानिक	२९३
भग्नी मिश्र रामनाथ पंडित	२५५	मिरजा मुहम्मद (जान)	१२७
भवानी	२५६	मिहिर या छत्रपति चौहान	२९४
भार्यनाहि या भार्यनिह	२५७	मुकुद या शिवमुकुद	२९५
भार्यनिह या भार्यसाहि	२५७	मुकुद या रूपदेव्या	२९६
भीम	२५८	मुकुददाम, जनमुकुद या नददास	२९७
भीमौ	२५९	मुकुदनाथ	२९८
भीमनेन	२६०	मुन्ना	२९९
भीम	२६१	मेशराज मुनि	३००
भ्रान्त	२६२		

मुरलीदास	३०१	रामकृष्ण	३४०
मुरलीदास	३०२	रामगरीब चौबे 'गरीब जू'	३४१
मुरलीधर कविराई	३०३	रामगुलाम	३४२
मुरलीधर	३०४	रामचंद्र	३४३
मोकमदास	३०५	रामदया	३४४
मोतीलाल	३०६	रामदाम	३४५
मोहन	३०७	रामदास	३४६
मोहनदास	३०८	रामदाम वरसानिया	३४७
मोहनदास मिश्र	३०९	रामनाथ प्रधान	३४८
मोहनलाल	३१०	रामनारायण	३४९
यशोधर	३११	रामनारायण श्रीर हनुमत कवि	३५०
रघुनंदन	३१२	रामप्रकाश गिरि	३५१
रघुनाथ वदीजन	३१३	रामप्रसाद	३५२
रघुनाथ कवि	३१४	रामफल	३५३
रघुनाथदास रामसनेही	३१५	रामवक्त्र	३५४
रघुवर	३१६	रामवठ या कवि वठ	३५५
रज्जव जी	३१७	रामरतन लघुदान	३५६
रणधीर सिंह राजा	३१८	रामरामिक	३५७
रनजीत	३१९	रामरहम्यदाम	३५८
रमत्ताराम	३२०	रामसिंह राजा	३५९
रमयोज	३२१	रामहित सिंह (जन)	३६०
रसनिधि	३२२	रामानुजदाम	३६१
रसरसि (रामनारायण)	३२३	रामावतारदास	३६२
रसरूप	३२४	रुद्रप्रताप सिंह (राजा)	३६३
रससिधु (श्रीकृष्ण लाला जी)	३२५	रूप	३६४
रसानंद	३२६	रूप	३६५
रसिक	३२७	रूपराम	३६६
रसिकदास	४८६	रूप सनातन	३६७
रसिकदास (गोपिकालकार या मट्टू जी महाराज)	३२८	रूदास	३६८
रसिक प्रीतम	४८६	लक्ष्मीदास	३६९
रसिकराय	४८६	लखनसेनि	३७०
रसिकराय जी	३२९	लखननेनि	३७१
रसिकलाल या रसिकसुजान	३३०	लखनमेनि	३७२
राघवदास या राघोदास	३३१	लघुनाथ	३७३
राजमती	३३२	लछिमनदाम	३७४
राजसिंह महाराणा	३३३	लघोदय	३७५
राजाराम (गगाराम सुत)	३३४	लनितकि गोरी	३७६
राधाकृष्ण या कृष्ण कवि	३३५	लालकवि	३७७
राधाकृष्ण द्विवेदी	३३६	लालकवि	३७८
रामकवि या द्विजराम	३३७	लाल (निज)	३७९
रामकृष्ण	३३८	लालचंद या लघोदय	३८०
रामकृष्ण	३३९	लालचदास या जन लाल	३८१
		लालसाराम बाबा	३८२

लानू भट्ट 'प्रवीन'	३७६	शिवाराम बाबा	४१८
लोना	३८०	शीतलदास	४१६
लॉहट (जैन)	३८१	शीतलदीन	४२०
वर्णाश्र	३८२	शेख अहमद	४२१
वन्नाभट्ट	३८३	शेख और आलम	१८
वाजिद	३८४	शेख निसार	४२२
वामुदव गुन्न	३८५	शोभाचद	४२३
विद्यागुप्त तीर्थ 'देव'	३८६	शोभाराम (महाराज)	४२४
विश्वनाथ सिंह	३८७	श्यामराम	४२५
विष्णु कवि (विष्णु दान)	३८८	श्रीकृष्ण गगाधर	४२६
विष्णुदत्त	३८९	श्रीकृष्ण भट्ट	४२७
विष्णुदत्त महापात्र	३९०	श्रीकृष्ण लालाजी	३२५
विष्णुदास (विष्णु कवि)	३९०	श्रीनिवाम	४२८
विष्णुदास	३९१	श्रीनिवाम	४२९
विष्णुपुरी	३९२	श्रीपति	४३०
वीरभगत	३९३	श्रीपति	४३१
वीरभद्र	३९४	श्रीलाल पंडित	४३२
वीरमान चौहान	३९५	मज्यानाथ	४३३
वृ दगवि	३९६	सतदान	४३४
वृजनाथ (त्रिविक्रमगुप्त)	३९७	सतदान या सतरसिक	४३५
वंकटेश (दशकवि)	१९	सतरसिक या सतदास	४३५
वेणीमाधव भट्ट 'प्रवीन कवि'	३९८	सदानद	४३६
वैकुंठजन	३९९	सदाराम	४३७
व्यास और कान्ह	३९	गवलण्णयाम	४३८
व्यासजी	४००	ममरसिंह महाराज	४३९
ब्रजदूलह	४०१	समाधान	४४०
ब्रजभूषण जी गोस्वामी	४०२	सरदार कवि	४४१
ब्रजाभरणजी दीक्षित	४०३	सरदार सिंह (सुलतान सिंह सुत)	४४२
ब्रजराय जी	४०४	सरमद	२७६, ४४३
नन्दराम (राव)	४०५	सर्वेश्वरदास	४४४
प्रकृगद्विज	४०६	महदेव	४४५
प्रकराचार्य	४०७	सादिक	४४६
प्रभुनाथ त्रिपाठी	४०८	नाथुजन	४४७
प्रभुनाथ	४०९	सिद्धकवि (आनंद)	४४८
प्रारमधर	४१०	निकदर फिरगी	४४९
प्रारमधर	४११	मियाराम	४५०
प्रिनीमणि	४१२	मंदरदाम	४५१
प्रियदत्त सिंह ठाकुर	४१३	मुंदरकवि	४५२
प्रियदत्त त्रिपाठी	४१४	मुंदर कुँवरि	४५३
प्रियदास	४१०	सुखदेव	४५४
प्रियदास गदाधर	४१६	सुखानंद	४५५
प्रियदत्त सिंह सोमवर्मा	४१७	सुवंन कवि	४५६
प्रियदत्त	२६५	सुवरण	४५७

सूरजदास	४५८	हरजू सुकवि	४३५
सूरतमिश्र	४५९	हरदेव गिरि	४३८
सूरदया	४६०	हरि आनंद	४८८
सूरदास	४६१	हरिकृष्ण दाम या कृष्णदान	४८०
सूरदास	४६२	हरिचरण द्विज	४८१
सूरदास	४६३	हरिदास	४८२
सूरदास	४६४	हरिदास	४८३
सूरदास	४६५	हरिदाम जन	४८४
सूरसैन	४६६	हरिदेव	४८५
सेवक सुकवि	४६७	हरिराय उपनाम रमिकदाम, रमिकराय,	
सेवादास स्वामी	४६८	रसिक प्रीतम	४८६
सेवादास	४६९	हरिवल्लभ	४८७
सेवाराम	४७०	हरिविलाम	४८८
सैदपहाड	४७०	हसन अली खाँ	४८९
सैदपहाड	४७१	हिम्मति सिंह	४९०
सोमनाथ या शशिनाथ	१०४	हीरालाल लाला	४९१
स्यामिदास	४७२	हुलाम पाठक	४९२
स्यामीदास	४७३	हुलासदास	४९३
स्वामी कार्तिक	४७४	हुंमरतन	४९४
हनुमत कवि	४७५	हेमराज मथेन	४९५
हनुमत कवि श्रीर रामनारायण	४७६		
हनुमान			

परिशिष्ट ४(क)

प्रस्तुत खोज में मिले नवीन रचयिताओं की सूची

(म० २००१—२००३ वि० तक)

श्र.म.	रचयिताओं के नाम	विवरणिका	शताब्दी	ग्रंथों की	विशेष
		संख्या		संख्या	
१.	अखंड राम	१	१६वीं	१	
२.	अचल कीर्ति	४	.	१	
३.	अजगर नाथ	५	२०वीं	१	
४.	अमरदास	७	१६वीं	१	
५.	अमरेश कुमार	८	२०वीं	१	
६.	अयोध्या गिरि	९	.	१	
७.	अली रंगीली	११	.	१	
८.	आत्माराम	१३	..	१	
९.	आनंद कवि	१५	..	२	
१०.	आनंददास	१७	..	१	
११.	ईश	२०	..	१	
१२.	ईश्वरदास	२२	.	१	
१३.	उदय	२६	.	१	
१४.	उमादास	२७	१६वीं	१	
१५.	ऋषिकेश	२९	.	१	
१६.	कन्हैया लाल भट्ट "कान्हू"	३१	.	१	
१७.	कल्याणदास	३६	..	१	
१८.	काकराम	३७	..	१	
१९.	कान्हू या लघुकान्हू	३९	२०वीं	१	
२०.	कान्हू श्रीर व्यास	३९	...	१	
२१.	कामिदान	४०	...	१	
२२.	किसनलाल	४२	..	१	
२३.	किमोरदास	४३	...	१	
२४.	कुभनदान	४४	...	१	
२५.	कुदरतीदान या कुदरती माह्व	४५	..	२	
२६.	कृष्णचंद्र अग्रवाल	४७	१८वीं	१	
२७.	कृष्णदास	४८	१८वीं	१	
२८.	कृष्णदास	४९	...	१	
२९.	कृष्णदास जाड़ा	५१	...	१	
३०.	कृष्णदास रादन्य	५२	...	३	
३१.	कृष्णदेव	५३	...	१	
३२.	कृष्णराम मतोपिदा चक्रवर्ती	५४	...	१	

क्र.स	रचयिताओं के नाम	विवरणिका	शताब्दी	ग्रंथ सख्या	विशेष
३३	कृष्णावाई	५५	...	१	
३४	केवललीन द्विज	५६	. .	१	
३५	केशव किशोर	५७	.	१	
३६	केशवदास नारायण	५९	.	१	
३७	केशोराम	६१	. .	१	
३८	क्षेमकररण	६२	...	१	
३९	केसोराम	६३	...	१	
४०	खेमकवि	६४	...	१	
४१	ग ग कवि	६६	..	१	
४२	ग गसरन	६७	.	१	
४३	ग गादास	६९	. .	१	
४४	ग गादास (जन)	७०	. .	२	
४५	ग गाराम	७१	.	१	
४६	गजेंद्र	७४	. .	१	
४७	ग गाराम ऋषि	७५	...	१	
४८	गिरिधर	७६	...	१	
४९	गिरिधर जी	७८	..	१	
५०	गिरिधर लाल जी	७९	२०वी	२	
५१	गो० श्री गिरिधारी लाल	८०	...	१	
५२	गुमान कवि	८२	...	१	
५३	गुरु गोविंद	८३	...	१	
५४	गुरुदीन कवि पाडे	८४	...	१	
५५	गुलाम मुहमद	८५	...	१	
५६	गोकुल कवि	८६	...	१	
५७	गोपालजन	९०	. .	२	
५८	गोपालदास	९१	...	१	
५९	गोपालदास	९२	...	२	
६०	गोपिकालकार जी गो०	९३	...	१	
६१	गोविंद या गोविंददास	९४	...	१	
६२	गोविंद	९५	. .	२	
६३	गोविंद	९६	...	१	
६३	गोविंददास	९६	...	१	
६४	गोविंद पंडित काश्मीरी	९७	..	१	
६५	घनदेव कान्यकुब्ज (वैष्णव)	१०१	१९वी	१	
६६	घनश्याम (चतुर्भुजमिश्रात्मज)	१०२	१७वी	१	
६६	घनश्याम (चतुर्भुजमिश्रात्मज)	१०३	२०वी	१	
६७	घनश्याम द्विज	१०४	...	१	
६८	घनश्याम या स्यामदास	१०५	...	१	
६९	घनश्याम दास	१०७	...	१	
७०	चदपरतिष	१०८	...	१	
७१	चरुपाणि	१०९	...	१	
७२	चतुरराय	१११	...	१	
७३	चतुर्भुज मिश्र	११४	...	१	
७४	चूडामणि				

क्र. सं.	रचयिताओं के नाम	विवरणिका संख्या	शताब्दी	ग्रंथ संख्या	विशेष
७५	छविनाथ	११५	१६वीं	१	
८६.	छितिपाल	११६	...	१	
७७	छल	११७	...	१	
७८	जगदीशजन	१२०	...	१	
७९.	जगत कवि	१२२	...	१	
८०.	जगन्नाथ	१२३	..	१	
८१	जयशंकर गहल अरवदीच	१२५	..	१	
८२	जान ववि	१२६	१७वीं	६९	
८३.	जान (मिरजा मुहमद)	१२७	..	१	
८४.	जानकीदाम	१२८	.	१	
८५	जीराम	१२९	.	१	
८६	जीवनदाम	१३०	..	१	
८७	जीवनराम	१३१	..	१	
८८.	जैवृष्ण	१३३	..	१	
८९	टोटरमल कायस्थ	१३५	१९वीं	१	
९०	टूंगरसी माधु	१३६	...	१	
९१	ताममन माहव	१३७	.	१	
९२	ताराचद	१३९	...	१	
९३.	तुलसीदाम	१४३	...	३	
९४	धेघनाथ या धेघू	१४६	१६वीं	१	
९५	दक्षमणी	१४७	१८वीं	१	
९६	दत्त कवि	१४८		१	
९७	दयाराम भाई	१४९	१९वीं	५	
९८.	दयालदास	१५०	..	१	
९९	दलजीत	१५२	.	१	
१००	दाहू	१५३	.	१	
१०१.	दाम	१५४	.	१	
१०२	दाम	१५५	.	१	
१०३	दाम	१५६	..	१	
१०४	दानराम	१५७	..	१	
१०५	दुखीराम बरनवाल	१६०	१९वीं	१	
१०६	देववृष्ण	१६२	१९वीं	१	
१०७	देवीदत्त शुकल "पडित" और "धीर"	१६३	२०वीं	२	
१०८	देवीदाम	१६४	.	१	
१०९.	देवेश्वर मायूर	१६६	१९वीं	१	
११०.	द्वारिकादान	१६७	..	१	
१११.	धनपाल	१६९	१०वीं	१	
११२	धनदादान	१७१	...	१	
११३	नयमन	१७३	...	१	
११४	नरमी मेहना	१७९	...	१	

क्र.स.	रचयिताओं के नाम	विवरणिका सं०	शताब्दी	ग्रंथ सख्या	विशेष
११५	नवनीत कवि	१८१	. .	१	
११६	मुंशी नवनीतराय	१८२	१६वीं	१	
११७	नवरगदास स्वामी	१८३		१	
११८	नागरीदास	१८५		१	
११९	कविनाथ	१८८	..	१	
१२०.	नारायण दास	१९१	१८वीं	१	
१२१.	नारायणदास ब्रजवासिया	१९२	.	२	
१२२	नारायण सिंह नृप	१९३	१८वीं	१	
१२३	नित्यानंद	१९४		१	
१२४	निर्मल कवि	१९५	१८वीं	१	
१२५	निर्मलदास	१९६	१९वीं	१	
१२६	निश्चयदास	१९७	.	१	
१२७	पचीली देवकर्ण	१९९	१९वीं	१	
१२८	परमसुख दैवज्ञ	२००	१९वीं	१	
१२९	परमानंद	२०१		२	
१३०.	परसन चिप्र	२०३	१९वीं	१	
१३१	पर्वल	२०४	.	१	
१३२.	पुरुषोत्तम	२०६	. .	१	
१३३	पुरुषोत्तम	२०७	...	०	
१३४	पुरुषोत्तम दास	२०८	..	१	
१३५	पुरुषोत्तम	२०९	. .	१	
१३६	पूरन कवि	२१०	..	१	
१३७	प्रधान	२१४		१	
१३८.	प्रभुलाल	२१५		१	
१३९	प्रमादास	२१६	.	२	
१४०	प्रवीन कवि	२१७	.	१	
१४१	प्राणनाथ सोती	२२०	. .	१	
१४२	फणि नृपति	२२४		१	
१४३.	फणींद्र मिश्र	२२५	१८वीं	१	
१४४.	फंक द्विज	२२६	.	१	
१४५	वशीधर पंडित	२२७		१	
१४६.	बखत सिंह राजा	२२८		१	
१४७	बदलीदास	२२९	..	१	
१४८	बलदेव कवि	२३१	..	१	
१४९.	बलराम दास	२३२	.	१	
१५०.	बलराम	२३३	...	१	
१५१	गो० श्री बल्लभजी	२३४	...	१	
१५२	बहोरन द्विज	२३६	. .	१	
१५३.	बिठूल दास	२३८		१	
१५४	बिहारी रमणेश	२४०	.	१	
१५५	बैजनाथ	२४१	...	१	
१५६.	बोधलाल	२४३	..	१	

क्र.सं.	रचयिताओं के नाम	विवरणिका सं०	शताब्दी	ग्रंथ सं०	विशेष
१५७	भगवानदास	२४५	१८वीं	१	
१५८	भगवतदान	२४७	.	१	
१५९	भगवतदान	२४८	..	१	
१६०	भरमो मिश्र रामनाथ पंडित	२५५	. .	१	
१६१	भारथ सिंह या भारथ राहि	२५६	..	१	
१६२	भीम	२५९	१६वीं	१	
१६३	भीमसेन	२६०	.	१	
१६४	भोगम	२५१	१८वीं	१	
१६५	मगनजी	२६६	...	१	
१६६	मटुकमनि	२५७	...	१	
१६७	मथुरा राम कवि	२७०	.	१	
१६८	मथुरा नाथ भागद्वज	२७१	.	१	
१६९	मनगा राम	२७२	.	२	
१७०.	महम्मद आलिया	२७६	.	१	
१७१	महचद द्विज	२७७	१८वीं	१	
१७२.	महादास	२७८	...	१	
१७३.	महाराज कवि	२७९	...	१	
१७४.	महावदाम	२८०	...	१	
१७५.	महावदाम वैष्णव	२८१	. .	१	
१७६.	महीपति या महीप	२८२	१८वीं	१	
१७७	माधवदास	२८५	...	१	
१७८.	माधवदास दानलीला	२८७	...	१	
१७९	माधवदास भट्ट	२८९	...	१	
१८०.	मानिक	२९३	...	१	
१९१.	मिहिर या छत्रपति चौहान	२९४	...	१	
१८२	मुकुद	२९५	...	१	
१८३	मुकुद या रूपदेव्या	२९६	२०वीं	१	
१८४	मुकुदलाल	२९८	...	१	
१८५	मुग्लीदाम	३०२	...	१	
१८६	मुग्लीधर कविगई	३०३	...	१	
१८७	मोकमदान	३०५	१९वीं	१	
१८८.	मोहनदाम	३०८	. .	१	
१८९	रघुवर	३१६	...	२	
१९०.	रनजीत	३१९	...	१	
१९१.	रमनागम	३२०	...	१	
१९२	रमनिधु (श्रीरूप लालाजी)	३०५	२०वीं	१	
१९३.	रमिक	३२७	. .	१	
१९४.	रमिकदाम (गोपिनाथकार)	३२८	...	१	
१९५.	रमिकराज जी	३२७	...	१	
१९६	राजमनी	३३२	...	१	
१९७.	राजागम	३३४	१८वीं	१	
१९८	राधाशरण द्विवेदी	३३६	...	१	

क्र.सं.	रचयिताओं के नाम	विवरणिकाच सं०	शताब्दी	ग्रंथ सं०	विशेष
१६६	रामकवि या द्विजराम .	३३७	...	२	
२००	रामकृष्ण	३३६	..	१	
२०१	रामगरीब चौबे (गरीब जू)	३४१	...	१	
२०२	रामचंद्र	३४३	...	१	
२०३	रामदास बरसानिया	३४७	.	२	
२०४	रामप्रगाश गिरि	३४५	१६वी	३	
२०५	रामप्रसाद	३५०	२०वी	१	
२०६.	रामपुल	३५१		१	
२०७	रामवछ या कवि वछ	३५३	१६वी	१	
२०८	राम रतन लघुदास	३५४	..	२	
२०९	राम रहस्य दास	३५६	...	१	
२१०	रामानुजदास	३५६	.	१	
२११	रामावतारदमस	३६०	२०वी	१	
२१२.	रूप	३६२	..	१	
२१३.	रूप	३६३	२०वी	१	
२१४.	रूपराम	३६४	...	१	
२१५.	लक्ष्मीदास	३६७	२०वी	१	
२१६	लखनसेनि	३६९	.	१	
२१७	लछिमनदास	३७१	१६वी	१	
२१८	ललित किशोरी	३७२	..	१	
२१९	लाल कवि	३७४	.	१	
२२०	(द्विज) लाल	३७५	..	१	
२२१	लालसाराम बाबा	३७८	..	१	
२२२	लालू भट्ट (प्रवीन)	३७९	...	१	
२२३	लोना	३८०	...	१	
२२४.	लोहट	३८१	...	१	
२२५	वशीधर	३८२	..	१	
२२६.	वत्साभट्ट	३८३	...	१	
२२७	वासदेव शुक्ल	३८५	...	१	
२२८	विष्णुदत्त	३८६	...	१	
२२९	विष्णुदास . . .	३८१	...	१	
२३०	विष्णुपुरी . . .	३८२	..	१	
२३१	वीरभगत . . .	३८३	...	१	
२३२	वीरभान चौहान	३८४	..	१	
२३३	वजनाथ त्रिविक्रमसूत	३८६	.	१	
२३४	वेणीमाधव भट्ट 'प्रवीन कवि'	३८७	१८वी	१	
२३५	वंकुठजन	३८९	...	१	
२३६.	ब्रजभूषण जी गो० .	४०२	...	१	
२३७	ब्रजाभरण जी दीक्षित	४०३	...	१	
२३८.	श्री ब्रजराय जी गो०	४०४	...	१	
२३९.	शंकरद्विज	४०६	२०वी	१	
२४०.	शंकराचार्य . . .	४०७	...	१	

क्र.सं.	रचयिताओं के नाम	विवरणिका सं०	शताब्दी	ग्रंथ सं०	विशेष
२८१	शङ्खनाथ	४०६	...	१	
२८२.	शारंगधर	४१०	. .	१	
२८३.	शारंगधर	४११	. .	१	
२८४	शिवदहल सिंह	४१२	..	१	
२८५	शिवदत्त त्रिपाठी	४१३	...	१	
२८६	शिवदत्त त्रिपाठी	४१४	.	१	
२८७	शिवदास	४१५	.	१	
२८८	शिवदाम गदाधर	४१६	२०वी	१	
२८९	शिववक्त्र गिह सोमवसी	४१७		२	
२९०	श्रीतलदाम	४१९	२०वी	१	
२९१	श्रीतलदीन	४२०	.	१	
२९२	श्रेय ग्रहमद	४२१	...	२	
२९३	श्रेय निमार	४२२	१६वी	१	
२९४	शोभाव द	४२३	१७वी	१	
२९५	शोभाराम (महाराज)	४२४	.	१	
२९६	श्यामराम	४२५	.	१	
२९७	श्रीकृष्ण गगाधर	४२६	१८वी	१	
२९८	श्रीकृष्ण भट्ट	४२७	.	१	
२९९	श्रीनिवाम	४२८	.	१	
३००	हनुमान पच्चीसी	४२९	.	१	
३०१	श्रीपति	४३१	.	१	
३०२	श्रीमान पट्टि	४३२	२०वी	२	
३०३	मज्जानाथ	४३३	...	१	
३०४	मतदास या मत रसिक	४३५	.	१	
३०५	मदानद	४३६	. .	१	
३०६	समरसिंह महाराज	४३९	३२	१	
३०७	ममाधान	४४०	...	१	
३०८	मरदार सिंह (मुलतान सिंह सुत)	४४२	. .	१	
३०९	सरमद	४४३	. .	१	
३१०	सर्वेश्वर दाम	४४४	२०वी	१	
३११	सहदेव	४४५	...	१	
३१२.	सादिक	४४६	...	१	
३१३	साधुजन	४४७	...	१	
३१४	मिश्रकवि (आनंद)	४४८	...	१	
३१५.	मिनदर फिरीगी	४४९	.	१	
३१६	मुंदर कवि	४५२	...	१	से
३१७	मुचदेव	४५४	...	१	
३१८	मुघानद	४५५	...	१	
३१९	मुवंगल	४५७	...	१	
३२०	मुरजदान	४५८	...	१	
३२१.	मुरदया	४६०	...	१	
३२२.	मुरदास	४६२	...	१	

क्र स	रचयिताओं के नाम	विवरणिका	शताब्दी	ग्रथ न०	विशेष
२८३	सूरदास	४६३		१	
२८४	सूरदास	४६४	. .	१	
२८५	सूरसैन	४६५	. .	१	
२८६	संवक सुकवि	४६६	.	१	
२८७	सेवादास (स्वामी)	४६७		१	
२८८	स्वामीदास	४७२	.	१	
२८९	स्वामी कार्तिक	४७३		१	
२९०	हनुमत कवि	४७३	२०वीं	१	
२९१	हनुमत कवि और राम नारायण	४७५		१	
२९२	हरि आनंद	४७६	१९वीं	१	
२९३	हरिकृष्णदास या कृष्णदास	४८०	२०वीं	१	
२९४	हरिचरण द्विज	४८१	.	१	
२९५	हरिदास	४८२	.	१	
२९६	हरिदास जन	४८४		१	
२९७	हसन अली खाँ	४८६	.	१	
२९८	हिम्मति सिंह	४९०	१९वीं	१	
२९९	हीरालाल (लाला)	४९१	.	१	
३००	हुलास दास	४९३		१	
३०१	हैमरतन	४९४	१८वीं	१	
३०२	हैमराज मथेन	४९५	१९वीं	१	



परिशिष्ट (४) ख

खोज में मिली नवीन रचनाओं की सूची

क्रम संख्याएँ	ग्रंथों का नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	दिनेय
१	अगद पंज	.	१८०६ वि०	२३	
२	अगद पंज	३७३	
३	अगद रावण सवाद	.	.	२१३	
४	अकार के कवित्त	१८ ग	
५	अठारह नाते	४	
६.	अठारह नाते को चोढाल्यो	३८१	
७.	अद्भुत ग्रथ	४५१ छ	
८.	अद्भुत रामायण	२३६	
९.	अद्भुत विलास	१६५५ वि०	..	१४० क	
१०.	अध्यात्म रामायण	..	.	२८४	
११	अनभी प्रकास	..	१६५० वि०	२२६	
१२.	अनु राग विद्वर्द्धक रामायण	.	.	२३० क	
१३.	अरदसेर पादसाह की कथा	१६६० वि०	१७८४ वि०	१२६ ख	
१४	अर्जुन गीता	.	१८३५ वि०	१४	
१५	अर्जुन गीता	१६१२ वि०	१६१३ वि०	३५०	
१६.	अलकार दर्पण	१६१० वि०	१०१६ वि०	१६३ छ	
१७	अलकनावा	..	१७७७ वि०	१२६ ह	
१८.	अवधूत गीता भाषा टीका	..	१८५६ वि०	४३३	
१९	अशीच विचार भाषा तथा मुडन नखच्छेद निर्णय	३८३	
२०.	अश्वमेध (भारत)	३६५	
२१	अष्टकाल की लीला	१८३८ वि०	..	१४७	
२२.	अष्टाक्षर मंत्र की टीका	..	.	४८६ म. न	
२३	आठ प्रहर मूलचेत प्रसंग भाग एक, दो	१३२	
२४	आत्मप्रकाश	..	१६३५ वि०	१३	
२५	आत्मबोध टीका	७०१ न	
२६	आनंद लहरी	..	१७८६ वि	३०७ म	
२७	आनंदविलास	५५	
२८	इशक शतक	२५७	
२९	उत्तम सबदा ग्रथ	१८६ न	
३०.	उत्सव के प्रकार	६३	
३१.	उत्सव निर्णय भाषा	२२६ न	
३२	उत्सव मालिका भाषा	२५६ न	

क्रम संख्या	ग्रंथों का नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विज्ञाप
३३	उत्नाव मेवा प्रणाली उत्सव निर्णय महित	२०७ च	
३४	ऊषाचरित्र	..	१८८८ वि०	३०१ क	
३५	ऋतुराज मजरी	२६	
३६	एकादशी माहात्म्य	१८१५ वि०	१८६६ वि०	७	
३७	एकादशी कथा	..	१८४६ वि०	१२०	
३८	श्रीपद्मी संग्रह कल्पवल्ली	..	१८६० वि०	३३६	
३९	कथाभरन टीका	२६८	
४०.	कद्रप कल्लोल	१२६ वण	
४१	कवनावनी की कथा	१६७० वि०	१७७८ वि०	१२६ च	
४२	कनहरा	१६०	
४३	काकावनी	१५ ख	
४४	काजानामा	..	१८२३ वि०	१६४	
४५	कानकावली की कथा	१६७५ वि०	१७७८ वि०	१२६ र	
४६	कवीर और निरजन जात गुप्ति	..	१७३३ वि०	३२ ख	
४७	कवीर रंदास सवाद	३६६	
४८.	कवीर भागर	..	१७२३ वि०	३२ क	
४९	कवूतरनावा	..	१७७७ वि०	१२६ घ	
५०.	कलदर की कथा	१७०२ वि०	..	१२६ प	
५१.	कानावती की कथा	१६७० वि०	१७७८ वि०	१२६ ट	
५२	कनि चरित्र	३२६	
५३	कविकुन तिनक प्रकाश	१७६६ वि०	..	२८२	
५४	कविनावनी भक्त विलास	..	१६५२ वि०	३८५	
५५	कविना संग्रह	१८ ख	
५६	कवित्त	५६	
५७	कवित्त	६१	
५८	कवित्त	६४	
५९	कवित्त	११७	
६०.	कवित्त	१८८	
६१	कवित्त	२१४	
६२	कवित्त	३१७	
६३.	कवित्त	..	१६१७ वि०	३४१	
६४.	कवित्त	३४३	
६५.	कवित्त	४५७	
६६	कवित्त	४६०	
६७	कवित्त चतुष्पत्ती	१८ क	
६८.	कवित्त सर्वथा संग्रह	३७६	
६९.	कवि विनोद	१७४५ वि०	..	२६२ ख	
७०	रहगनामा (कवहग नामा)	..	१६२३ वि०	१८४	
७१	गमगानी व पीतमदान की कथा	१६६१ वि०	१७८३ वि०	१२६ त	
७२.	वामना की कथा	१६७८ वि०	१७७८ वि०	१२५ ऋ	

क्रम संख्या	ग्रंथों का नाम	रचनाकाल	निर्गमकाल	विषयसूची	विशेष
७३	कार्तिक महात्म्य	१८४८ वि०		३३१ रु	
७४	काशी वर्णन	.		३४२ रु	
७५	कीर्तन संग्रह	..	१८६३ वि०	६८ ग	
७६.	कीर्तन संग्रह	..	१६१५ वि०	३२८ रु	
७७	कीर्तन संग्रह			४८६ द	
७८	कुड निर्माण वार्तिक	१७१६ वि०		८२६	
७९	कुडलिया		१६०३ वि०	४१८ क	
८०	कुभन दास की वार्ता (चौरासी ग्रन्थराघ वर्णन)			४८६ थ	
८१	कु नवती की कथा	१६६३ वि०	१७७७ वि०	१२६ म	
८२	कुंभर मर्दवन्द्य मवलीग्यारी वार्ता	.	.	४६५	
८३.	कृष्ण छयानाष्टक			३५४ ग	
८४.	कृष्णनाम चन्द्रिका	१८७० वि०		१८६ क	
८५.	कृष्ण विलास	१७६४ वि	१८०४ वि०	८७	
८६	कृष्ण वृत्त चद्रावली			२१७	
८७	कृष्ण सागर			५०	
८८	केशव विनोद भाषा निघट्ट	१८६७ वि०	१६०३ वि०	मुद्रण ६०	
८९	कोकशाम्त्र	.	.	७४	
९०	कोकशास्त्र			२०४	
९१	कौतूहल की कथा	१६७५ वि०	१७७८ वि०	१२६ म	
९२	खिजर खाँ गाहजादे व देवलदे की कथा	१६६४ वि०	१८७८ वि०	१२६ म	
९३	खेम पञ्चीसी (हनुमान चरित)			६४	
९४	गंगा पुरान	.		२६५	
९५	गंगा पुष्पाजलि			४०७ ग	
९६.	गंगा प्रबोध गीता	१८२५ वि०	१८५८ वि०	४६०	
९७	गंगा महात्म्य	१८३३ वि०	१८४० वि०	१	
९८	गगाष्टक (गगाजी की झूलना)	.	.	३००	
९९.	गढपर्यना रासो (पर्यना रासो)	.	.	१०६	
१००	गणित बोधनी			४२४	
१०१.	गणेश कथा	.	१८८७ वि०	३६४	
१०२.	गनगौर के ख्याल (गीत)		१६२३ वि०	२०८	
१०३	गिरवर समो	.		३६४	
१०४	गीतगोविंद भाषा (पद्यानुवाद)	.	१८२५ वि	२७१	
१०५.	गीता ग्रंथसार	.		२३०	
१०६.	गीता भाषा	१५५७ वि०	१७२७ वि०	११६	
१०७	गीता भाषा टीका		१६२२ वि०	६४	
१०८	गीता भाषा टीका	.		४३	
१०९	गुरु अष्टक	..	.	३	
११०	गुरु भक्ति चन्द्रिका	..	.	२० ग	

क्रम संख्या	ग्रंथों के नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
१११	गुरु महिमा	..	१८५७ वि०	४५४	
११२	गुरु हरि भक्ति प्रकाश	.	.	६२ क	
११३.	गूढ ग्रंथ	..	१७७७ वि०	१२६ ड ^१	
११४.	गौकुलाष्टक की टीका	४८६ ड	
११५	गोदोहन लीला	६६	
११६	गोपाल मारी	.	.	४६३	
११७	गोम्व कुटली	..	१८५५ वि०	१०० घ	
११८	गोम्व ग्रंथ (१)	१४१३ वि०	..	१०० घ	
११९	गोरख वंश	.	१८५६ वि०	१०० ग	
१२०.	गोदा बादल पत्त्रिनी चौपाई	१७६० वि०	..	४६४	
१२१	गोवर्द्धन चरित्र	.	.	६१	
१२२	गोवर्द्धन नाथ जी की वार्ता (प्रागट्य में)	..	.	८८ छ	
१२३	गोवर्द्धन लीला	..	.	६५	
१२४	" "	..	१८२८ वि०	१६२ क	
१२५	" "	..	१८२८ वि०	१६२ क	
१२५	" "	.	१८२७ वि०	३४७ क	
१२६	" "	.	..	४८३ क	
१२७	गोविंद स्तुति	२६७	
१२८	ग्रंथ देमावली	..	१७७७ वि०	१२६ च ^१	
१२९	ग्रंथ पवगम	..	१७७८ वि०	१२६ छ	
१३०	ग्रंथमुघामिप	१२६ प	
१३१	ग्वाल पहेली	..	१८६० वि०	३१६ क	
१३२	धूपट नावाँ	..	१७७७ वि०	१२६ ह	
१३३	चंद्रमैन राजा सीलनिधान की कथा	१६६१ वि०	१७८४ वि०	१२६ ट	
१३४.	चन्द्रव्यूह	..	१६०७ वि०	२६०	
१३५	चतुर्विध पत्नी	१७५० वि०	१७६८ वि.	३६८	
१३६	चतु श्लोकी टीका	.	..	२३६ ग	
१३७.	" "	४८६ त	
१३८	चरण चिह्न की भावना	..	१६६४ वि०	८८ च	
१३९.	चरपटिना पत्रिका	.	१६३० वि०	११३ क	
१४०	चामर	..	१६१६ वि०	३५८ ग	
१४१	चितन	..	.	४८६ घ	
१४२.	चिनामणि या हरिनाम गुरु- नाम चिनामणि	२७२ क	
१४३.	चिनामनि	.	१८८४ वि०	३२ घ	
१४४.	चित्रवंश नाथ्य	१५४	
१४५.	चिस्टी चेतनी	२२६	
१४६	चेतनामा	१२६ प	
१४७.	चेतारनी	..	१८४१ वि०	१७० क	

क्रम संख्या	ग्रंथों के नाम	रचनाकाल	निर्णयकाल	विद्यमान संख्या	संख्या
१४८	चाँचीस अवतार को जस	.	.	२७२	४
१४९	चाँचीस तीर्थंकर की चिन्तनी	..	.	१७८	
१५०	चौरामी वैशेषिक की वार्ता	.	..	८८	५
१५१.	चाँय शीला	.	.	६७	
१५२	छप्पै रामायण	.	.	३३२	
१५३	छवि मागर की कथा	१७०६ वि०	१७७८ वि०	१२६	५
१५४.	छीता की कथा	१६९३ वि०	१७८८ वि०	१२६	१
१५५	जगन्वत्तीसी	.	.	१२२	
१५६	जपको प्रकार	.	१९६४ वि०	८८	४
१५७	जफरनामा नाँसेरवाँका	१७२१ वि०	१७७७ वि०	१०६	१
१५८	जेहलीजवाहिर	.	१७६० वि०	२२०	
१५९	जैमुनि कथा	१६२८ वि०	१८६७ वि०	४८	
१६०	जाँगरतन	१६०१ वि०	.	४०६	
१६१	ज्ञान ककहरा	.	१६२० वि०	३१५	
१६२	ज्ञान कथा कर्म निर्णय	..	१६३४ वि०	६८	४
१६३	ज्ञानकथा रहस्य	..	१६३८ वि०	६८	४
१६४	ज्ञान चद्रिका (नासकेत पुराण)	.	.	१३१	
१६५	ज्ञानचेटक	१७२८ वि०	१६१६ वि०	१२	
१६६	ज्ञान प्रमान	.	१६२३ वि०	११८	४
१६७.	ज्ञान वाराभासा	.	.	१४३	४
१६८	ज्ञान सागर	.	.	३२	४
१६९	ज्ञानोपदेश	.	.	३६०	
१७०	ज्योतिष	.	.	६४४	
१७१.	ज्योतिष और गोलाध्याय (टीका)	.	मुद्रणकाल १८७६ वि०	१३०	
१७२	डगवे पुरान	१५५० वि०	१७७७ वि०	२५८	
१७३	ढाडियादान	..	.	१३३	
१७४	तत्र सामुद्रिक	.	१६१७ वि०	३५१	
१७५	तत्व उपदेश या पोथी ज्ञानगोष्ठी	.	१८१२ वि०	१३६	
१७६	तत्वचिन्तामणि	८८५	
१७७	तत्वबोध टीका	४०७	४
१७८	तत्व विवेक	..	.	१०६	४
१७९	तमीम अक्षतारी की कथा	१७०२ वि०	१७७७ वि०	४११	४
१८०	तर्क प्रकाश भाषा	१६०८ वि०	.	५०	४
१८१	तिथि प्रवध	८८	४
१८२	त्रिविध भावनाभाषा	..	.	१०५	
१८३	दपति प्रत्युत्तर	१६६७ वि०	.	३०८	
१८४	दत्तात्रेय लीला	..	१८५३ वि०	३३	
१८५	दधि लीला	२५६	
१८६	दधि लीला	१३६	
१८७.	दयाराम सतसई (टीकासहित)	१७८२ वि०	१८६६ वि०	१३६	४

क्रम संख्या	ग्रंथों का नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
१८८	दरसनावा	.	१७७७ वि०	१२६ ह	
१८९	दरसनावा	.	.	१२६ का	
१९०.	दशकुमार चरित	.	.	२३१	
१९१	दशकुमार चरित	.	.	४१४	
१९२	दशम स्कंध मक्षेप लीला	.	.	२८६ ख	
१९३	दम्नर शिकार का	.	१८१९ वि०	४८९	
१९४	दानलीला	.	१९१८ वि०	४४ क	
१९५	दानलीला	.	.	२८७	
१९६	दानलीला	.	१८८८ वि	३२७	
१९७	दानलीला	.	.	३८२	
१९८	दानलीला	.	१८४८ वि०	४०२ क	
१९९	दामोदर लीला	१८५२ वि०	.	२५	
२००	द्विग्वर्ज चपू	१९१० वि०	.	४१६	
२०१	दिनमणि वजावली (गुण कथव)	..	.	४४८	
२०२	दीपरासायण	..	१८९९ वि०	२४७	
२०३	दुर्गाभक्ति तरंगिणी	.	.	४२७	
२०४	दृष्टिकट के पद (भाषा टीका)	.	.	२३७	
२०५	देवकी चरित्र	.	.	३७८	
२०६	देवी चरित्र	.	.	४१५	
२०७	देवी त्रिलास (दुर्गा सवाद)	१८४९ वि०	१८७७ वि०	४७९	
२०८	दोहावली	.	.	७० घ	
२०९	दोहा माखी	.	१९१४ वि०	११९ ख	
२१०	द्रव्यशुद्धि भाषा	.	१८४१ वि०	२०७ घ	
२११	द्रोपदी अष्टक	.	.	४७६ ख	
२१२	द्रोपदी की स्तुति	.	१८९० वि०	३१६ घ	
२१३	द्रोपदी म्ययवर	१९८० वि०	१९८० वि०	३१२	
२१४.	द्वादश राशि विचार	.	१८९३ वि०	४२५	
२१५.	द्वारिकादास की बानी	.	.	१९७	
२१६	धरमीनामा	.	..	१७१	
२१७	ध्रुवचरित्र	.	..	४४७	
२१८	नयजिग	..	.	८६	
२१९	नयजिग	..	.	११९	
२२०	नजीर की रचनाएँ फुटार	.	.	१७९	
२२१	नर्मिह पचानना	१७१० वि०	.	४५९	
२२२	नग्मी मेतानीमाना	.	१८९३ वि०	१७९	
२२३	नन्दमयती की कथा	१०७२ वि०	१७७८ वि०	१२६ घ	
२२४	नन पुराण या नन्दमयती चरित्र	..	१८५३ वि०	४९९	
२२५.	नलोपादान	..	.	२५५	
२२६.	ननग्रह आशार	४८६ ज !	
२२७	नवनागरी के पद	३९१	

क्रम संख्या	ग्रंथों के नाम	रचनाकाल	निषिक्तकाल	विप्रेरणा मन्त्रा	दिनांक
२२८	नवनीत नवसई	१८७७ वि०		१८२	
२२९	नवरत्न कवित्त		१८८८ वि०		
२३०	नवरात्रि के कीर्तन			१८६ छ	
२३१	नवलनेह	१८५४ वि०		१०१	
२३२	नहुष नाटक		१९२३ वि०		
२३३	नागरीदास जी के कवित्त मग्नह		१८७३ वि०	१८५	
२३४	नागलीला		१८९० वि०	१११	
२३५	नागलीला		१८५३ वि०	३३१ म	
२३६	नाम कुसुममाला	१७२० वि०		१९३	
२३७	नाममाला अनेकार्थ			१८२ फ	
२३८	नामरत्न स्तोत्र विवरण भाषा			४८६ म	
२३९	नारायण लीला			१३०	
२४०	नासकेत पुराण	१८८३ वि०	१८८३ वि०	३८९	
२४१	नासिकेत, पाछान			३१९	
२४२	निघट मदनार्द (बंशक)		१९०२ वि०	३०९	
२४३	नित्यभावना (सवा तथा स्वरूप की)		१८५५ वि०	८८६ म	
२४४	नित्यसेवा शृंगार की भावना		१९५९ वि०	८८८ म	
२४५	निरमल की कथा	१७०४ वि०		१८६ फ	
२४६	निगून लीला		१९१० वि०	१७० म	
२४७	नीति रत्नाकर	१९२० वि०		१४८	
२४८	नीति विनोद भाषा			८०२ म	
२४९	नीतिविलास		१९२९ वि०	२८०	
२५०	नीलकण्ठ स्तोत्र			३९१	
२५१	नैकाव्य कथा	१९०७ वि०	१९१० वि०	४१४ म	
२५२	पचायत का न्यायपत्र	१७०१ वि०	१७०१ वि०	२०५	
२५३	पथपारख्या			१४६	
२५४	पदनामा लुकमान	१७२१ वि०		१२९ म	
२५५	पाडे लीला		१७११ वि०	२९३	
२५६	पिंगल		..	२९८	
२५७	पिंगल		..	३३७ म	
२५८	पद (?)		..	९	
२५९	पद		१८९० वि०	३०३ म	
२६०	पद		..	१३०	
२६१	पद		..	४८३	
२६२	पद गुटका	१९०५ वि०		३९०	
२६३	पद स्वयंवर के	१२९	
२६४	पदावली	३१९ म	
२६५	पद्मपुराण (रामचंद्र अथमेध)	..	१८३३ वि०	३५८	
२६६	परख विलास	..	१८७८ वि०	३३९	
२६७	परमानंद सागर	२०२ म	

क्रम संख्या	ग्रंथों का नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
२६८	पशु मर्दन भाषा	.	१८६७ वि०	४५५	
२६९	पहोप प्रकाश (पुष्प प्रकाश)	१८३९ वि०	१८३९ वि०	१६६	
२७०	पाराशरी जातक या (उड्डुदाय प्रदीप)	१८६८ वि०	१९०१ वि०	२००	
२७१	पाराशरी जातक या उड्डुदाय प्रदीप	१९२५ वि०		४७४	
२७२	पाहन परिच्छया	.	१७८४ वि०	१२६ थ	
२७३	पुष्टिद्वारा की चार्ता		..	४८६ ठ	
२७४	पुहुपवरिछा की कथा	१६८५ वि०	१७७८ वि०	१२६ ड	
२७५	पूर्ण पुरुषोत्तम को रूप तथा गुण नाम वर्णन	.	१८३० वि०	४०३ क	
२७६	प्रेमसागर (प्रेमसागर)	१६९४ वि०	१७७९ वि०	१२६ ट ^१	
२७७	प्रेमनामा (प्रेमनामा)	१६७५ वि०		१२६ ट ^१	
२७८	पार्थी मंत्रमत के उत्तर		१८३२ वि०	७१	
२७९	प्रबोध चंद्रोदय नाटक	..		१७३	
२८०	प्रयाग जतक भाषा	.	१९१९ वि०	२४८	
२८१	प्रह्लाद चरित्र		१९३४ वि०	१५९ क	
२८२	प्रह्लाद चरित्र		१८८० वि०	२१८	
२८३	प्रह्लाद चरित्र	.	१८४८ वि०	२५२ ख	
२८४	प्रह्लाद लीला		१८०२ वि०	१०४	
२८५	प्रेमपञ्चीसी			४७१ ख	
२८६	प्रेम प्रकाश	१८४८ वि०		२१२ क	
२८७	प्रेम रत्नान	.		८५	
२८८	प्रेमविलास प्रेमलता कथा	१६९३ वि०	१९९९ वि०	१२४	
२८९	फागु	.		४८१	
२९०	फूलमंजरी	१८४५ वि०		३१० क	
२९१	फूल मंजरी या पहोप मंजरी		.	२०६	
२९२	वर्नीम लक्षण (भगवदीय वैष्णवों के लक्षण)	.	..	८८ ह	
२९३	वनिक प्रिया	..	.	४९१	
२९४	वर्ष पट्टनु	.	..	४३८	
२९५	वर्ष पट्टक		..	३२२	
२९६	वल्गुनिया चिन्ही की कथा	१०४४ हि०	१७७७ वि०	१२६ घ	
२९७	वहला कथा	..	१७०३ वि०	३८०	
२९८	वहला लीला	.	१८४८ वि०	३६	
२९९	बाँदी नावा	१२६ ग ^१	
३००	बाजनामा	१२६ घ ^१	
३०१	बाजनामा	..	१८२० वि०	३४९	
३०२	बाग्गुडी	२१५	
३०३	बाग्गुडी	..	१९२६ वि०	४०१ ख	
३०४	बाग्गुडी	..	१८३६ वि०	४६२	

क्रम संख्या	ग्रंथों का नाम	रचनाकाल	निर्णयकाल	विषय-सूची	दिनांक
३०५	वारहमासा	..	१७७८ वि०	१२६ छ	
३०६	वारहमासा	.	.	१०६ क	
३०७	वारहमासी	..	.	२६५	
३०८	वारहमासी	..	.	०६६	
३०९	वारहमासी	..	.	३०२	
३१०	वारहमासी	३०६ ग	
३११	वारहमासी	.	.	४५०	
३१२	वारहमासी	.	१६८१ वि०	४६४ क	
३१३	वाराहखंडी	१८३५ वि०	१८६० वि०	३०५	
३१४	वाराहखंडी	..	.	३०१	
३१५	वालचरित्र	.	.	३८०	
३१६	विहारी सतसई (गोवर्द्धन सतसईया की सार)	..	१७८७ वि०	३६	
३१७	बुद्धिदाइक	१२६ ग	
३१८	बुद्धिदीप	.	.	१०६ ग	
३१९	बूढा रासी	१८३२ वि०	१९१४ वि०	१०७	
३२०	वैतसमरद	.	.	४४३	
३२१	वैतसमरद	.	.	२७६	
३२२	बोलार चरित्र	१८५३ वि०	१८५३ वि०	१६०	
३२३	ब्रह्मांड लीला	..	.	८३	
३२४	भैरवगीत	.	१९२३ वि०	४३५	
३२५	भक्तिप्रकाशिका टीका	.	.	३६०	
३२६	भक्ति विधान	१६८१ वि०	१७४८ वि०	३०३	
३२७	भगवत्गीता	.	१९३४ वि०	३५६	
३२८	भडुली ज्योतिष (टीका)	२५४	
३२९	भरतमिलाप या भरतविलाप	.	.	१४३	
३३०	भविष्यदत्त कथा	१००० वि० (लगभग)	.	१६६	
३३१	भागवत	.	१९०७ वि०	८६	
३३२	भागवत (एकादश स्कंध)	.	१८४० वि०	३५५	
३३३	भागवत भाषा (पंचम स्कंध)	.	.	३०३	
३३४	भागवत भाषा (दशम स्कंध)	१८६१ वि०	१८७० वि०	३५३	
३३५	भागवत विलासिका	१८८१ वि०	१८८३ वि०	३५८ प्र	
३३६	भाव कल्लोल	१७१३ वि०	.	१०६ ग	
३३७	भाव घटक	.	१९६६ वि०	१११	
३३८	भावसत	१६७१ वि०	१७७७ वि०	१०६ ग	
३३९	भाषा कोश (हिंदी संस्कृत में)	३८६	
३४०	भाषा चंद्रोदय (व्याकरण)	१९२२ वि०	१९२० वि०	४३० क	
३४१	भाषा भक्ति चंद्रिका	१८६४ वि०	१९०५ वि०	३८७	
३४२	भाषा महावाक्य विवरण	..	.	३८६	
३४३	भाषा लीलावती	१०८	

क्रम	ग्रंथों का नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका	विशेष
	मठ्या			सख्या	
३४८.	भाषा मगध	१८४७ वि०	१९०३ वि०	१११	
३४५	भास्त्रति भाषा टीका (ज्योतिष)	.	.	३११	
३४६	भूगोलपुराण	..	१८६२ वि०	२६२ ख	
३४७	भूपण महाकवि के कुछ नवीन छंद	..	.	२६३	
३४८.	भोज प्रवचन मार	..	१९३४ वि०	२२७	
३४९	मंगल शार्ङ्गिञ्चार	.	.	३३७ ख	
३५०	मधुकर माननी की कथा	१६९१ वि०	१७७८ वि०	१२६ श	
३५१	मधुराट्टन की टीका	.	.	४८६ क	
३५२.	मनारथ मुन्नावली	.	.	१८१	
३५३	महाप्रथ	.	१९२३ वि०	११८ क	
३५४.	महाभारत (गत्य पर्व)	.	.	६५	
३५५	महाभारत (स्वर्गारोहण पर्व)	..	१८३२ वि०	६२	
३५६	महिम्न स्तोत्र भाषा	..	१८४० वि०	४५९	
३५७.	माधव विलान (माधवानल कामकदला)	१८०० वि०	..	२६१	
३५८.	माधव मुयशप्रकाश (जयपुर का)	१८२५ वि०	..	११५	
३५९	मान वत्तीमी	३७४	
३६०	मान विनोद	..	१७७८ वि०	१२६ घ ^१	
३६१	माया की अग	.	१८६९ वि०	१६४	
३६२	मुक्तिविनाम (हठ प्रदीपिका)	१६५५ वि०	.	१४० घ	
३६३	मुमीक्ष शास्त्र	.	१९२२ वि०	६७	
३६४.	मुग्ली की लीला	..	.	२८६ क	
३६५	मूल ज्ञान	३२ ख	
३६६	मूल बानी	३२ छ	
३६७	महाकपोत की लीला	.	१८८८ वि०	११२ क	
३६८.	मोहनहुनाम	..	.	३०७ ग	
३६९	मोहनी	.	.	४२१	
३७०	मोहनी की तथा	१९९४ वि०	१७८४ वि०	१२६ ड	
३७१	मनमानकार मतमैया या वृ द दिनोद	१७६३ वि०	.	३९६	
३७२	यमुना नवग्न	..	.	२१०	
३७३.	यमुना नदरी	.	.	१०५	
३७४	यमुफ जूलेखी	१८४७ वि०	१९५९ वि०	४०२	
३७५.	रामजरी	१८३३ वि०	.	३१० घ	
३७६.	रत्नमजरी	१९८७ वि०	१७७८ वि०	१२६ ग	
३७७	रत्नावनी	१९९१ वि०	१७८४ वि०	१२६ क	
३७८	रत्नकोश ग्रथ	१७६६ वि०	१७७७ वि०	१२६ छ ^१	
३७९	रत्नरगनी	१७११ वि०	१७७८ वि०	१२६ ड ^१	
३८०.	रत्नमार्	१७९७ वि०	१८०० वि०	१०	

क्रम संख्या	ग्रंथो का नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणवा मन्त्रा मिति
३८१	रसमहोदधि	१६०७ वि०	१६४१ वि०	४८०
३८२	रस रत्नाकर	१७७३ वि०	.	१६५
३८३.	रसरसि पञ्चीसी	..	.	३२३
३८४	रससिंधु	..	१८३५ वि०	२८१ क
३८५.	राग निर्णय	..	१८३५ वि०	१५४
३८६.	राग प्रकाश	१६१५ वि०	..	२६० क
३८७	रागमाला	१७०० वि०	.	१०२
३८८.	रागसकीर्ण रागमाला	.	१६२० वि०	४७३
३८९.	राजपीरिया लीला	.	.	३७२
३९०.	राधाकृष्ण	.	..	४१३
३९१.	राधाकृष्ण रूप युगल विलास (सचित्र)	१६३३ वि०	..	=
३९२	राधाविलास	..	.	३४७ घ
३९३	राधे हरिमिलन सतसई	..	१८८० वि०	४१७ छ
३९४.	रामश्रक्षरी	..	.	४७२
३९५.	रामजन्म	..	१६२७ वि०	१६३ ग
३९६	रामतृतीसी	..	१८८३ वि०	३४२
३९७.	रामनाम गुण सागर	..	१७६५ वि०	२३८
३९८	रामरघुनाथ स्तोत्र	..	.	२६
३९९.	रामरहारी (लवकुश कांड)	..	१८१६ वि०	४५८
४००	रामविवाह		१७६६ वि०	३७
४०१	रामविहार	१८६८ वि०		१८७
४०२	रामायण			४५ क
४०३.	रामायण		१८६३ वि०	४६६
४०४	रामायण (राम वैभव)	१८६४ वि०	१८६३ वि०	४८५ छ
४०५	रामायण माहात्म्य		१६३८ वि०	२८०
४०६.	रामायण माहात्म्य	१६२६ वि०	१६३६ वि०	४१६
४०७	रामाश्वमेध	१७३६ वि०	१६१५ वि०	१६१
४०८.	रामाश्वमेध	१८२८ वि०	.	१६२
४०९	रासपंचाध्यायी			११
४१०.	रास पंचाध्यायी	५२
४११	रासपंचाध्यायी	१८८६ वि०	.	३८६ ग
४१२.	रुक्मिणी मंगल	.	..	८३
४१३	रुक्मिणी मंगल	२५८ क
४१४	रुक्मिणी मंगल	१७१६ वि०	.	२६३
४१५	रुक्मिणी व्याह	.		३४१
४१६	रूपमंजरी	१६०८ वि०	१६२८ वि०	३६३
४१७	रूप मजरी	१६८५ वि०	१७८४ वि०	१८६ ट
४१८	रेखता तथा कीर्तन	..	.	२३६
४१९	लक्ष्मण शतक	.	..	४४० ड
४२०.	लक्ष्मी चरित	..	१६३५ वि०	३६६ ए
४२१.	लालदास की कथा	..	१६५५ वि०	१३६

क्रम	ग्रंथों का नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका	विशेष
संख्या				संख्या	
४२२.	लीला प्रकाश	१८३	
४२३.	लंलंमजनु	१६६१ वि०	१७८४ वि०	१२६ ख	
४२४	वनयात्रा	..	१६१६ वि०	२०७ ग	
४२५	वनविहार माधुरी	२६१	
४२६	वरन चरित्र	..	१६३५ वि०	२७४	
४२७	वरम दिन के उत्सव को भाव	..	१६३६ वि०	४८६ ठ	
४२८	वर्णनावा	१६६३ वि०	१७७७ वि०	१२६ ख ^१	
४२९.	वल्लभकुल कल्पवृक्ष (वल्ल- भीय भीमवश वृक्ष)	१७७६ वि०	१७७६ वि०	३३४	
४३०.	वल्लभाट्यान मटीक	४३० ख	
४३१.	ववुरवाहन	..	१८६७ वि०	५३	
४३२	वसंतराज	४० क	
४३३	वमिष्ट बोध	३२ ड	
४३४	वस्तु वृ दनाम दीपिका	१८७४ वि०	१८६५ वि०	१४६ ड	
४३५.	वानी	४६७	
४३६	वा० भू०	२२४	
४३७	वाराणसी विलास	१८०७ वि०	१८०८ वि०	१६६	
४३८	विचारमाला की टीका	४३६	
४३९	विचित्रालकार (द्वैतार्थ कवित्त)	१७५० वि०	१७६८ वि०	३६८	
४४०	विजयाष्टक	..	१८६५ वि०	६०	
४४१	विदग्ध माधव	३६५	
४४२.	विद्याकुर	१६१७ वि०	१६१७ वि०	४३२ ख	
४४३	विद्रुम देस (रुद्रिमणी विवाह)	५१	
४४४.	विनय के पद	४०१ क	
४४५.	विनय विहारी रूप उत्सवाष्टक	१६०८ वि०	१६०८ वि०	२६६	
४४६	वि नै पञ्चीसी	३३६	
४४७	वियोग मालती	४२	
४४८	वियोग नागर	..	१७७८ वि०	४२१	
४४९.	वियोग नागर	१०६६ फ०	१७८४ वि०	१२६ ट ^१	
४५०.	विहर के पद	२०२ झ	
४५१	विहरी नत	१६७१ वि०	१७७७ वि०	१२६ द	
४५२	विरह की मनोरथ	१६६४ वि०	१७७८ वि०	१२६ न ^१	
४५३	विश्रदावनी	४६	
४५४.	विवाह खेल	५६	
४५५	विवेकाली	२३३	
४५६	विजयारन	१६०८ वि०	..	४५ छ	
४५७	विपिणय नया स्फुट रनायन	२०६	
४५८.	वृंदावन वर्णन	..	१७८१ वि०	४००	
४५९.	वृंदावनविना भाषायें	..	१८४८ वि०	२५३	
४६०	वेद गोंग्यनाथ ना]	..	१८५६ वि०	१०० क	
४६१.	वैद्यक मन पंदनावा	१६६५ वि०	१७७७ वि०	१३६ ज ^१	

क्रम संख्या	ग्रंथो के नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विपरीतगुणा मध्या	विपरीत
४६२	वैद्य जीवन	१६१४ वि०	१६१७ वि०	१०३	
४६३.	वैन वत्सी	१८१६ वि०	..	४२५	
४६४	वैराग्य शतक (विवेक दीपिका)	५८	
४६५	वैराग्य सदीपनी (टीका)	४५०	
४६६	वैष्णव लक्षण ग्रंथ	८८ अ	
४६७	व्यजन प्रकार (पहला भाग)	..	१६२५ वि०	१०५	
४६८	व्रज की बाललीला	..	मुद्रणकाल		
४६९	व्रजमहात्म चन्द्रिका	..	१८४८ वि०	३६३	
४७०	व्रजलीला	..	१८०५ वि०	१५५	
४७१	व्रजविलास	४८२	
४७२	व्रजविहार (द्वितीय सोपान)	..	१८४४ वि०	३६८ अ	
४७३	शकुनावली	७६	
४७४	शक्ति प्रभाकर या अद्भुत रामायण	१६१३ वि०	१६३६ वि०	८७ अ	
४७५	शत्रुवश कुठार	..	१६०८ वि०	१२८	
४७६	शब्द	..	१६१६ वि०	८१	
४७७	शब्दयावानी	६६	
४७८	शब्द लीला	१५१ अ	
४७९	शब्द विष्णुपद	६६	
४८०	शरदनिसा	५५	
४८१	शालिहोत्र	८४ अ	
४८२	शालिहोत्री (घोराल की वैदगई)	..	१८६६ वि०	४४६	
४८३	शिव अत्रिका स्तोत्र	२०	
४८४	शिवस्तोत्र	४०६	
४८५	शृंगार मंजरी	१८५२ वि०	..	२१८ अ	
४८६	शृंगार रससिंधु	१७७० वि०	१७७२ वि०	२४५	
४८७	शृंगार विलास	४७१ अ	
४८८	शृंगार शत	१६७१ वि०	१७७७ वि०	१२६ अ	
४८९	शोक विनाश	१६१२ वि०	१६३३ वि०	८७ अ	
४९०.	श्री आचार्य जी की वशावली	६५	
४९१	श्री आचार्य जी महाप्रभु की (प्रागटघवार्ता द्वादश कुंज भवन)	८८ अ	
४९२.	श्रीकृष्ण अनन्य चन्द्रिका	१८७० वि०	..	१३६ अ	
४९३.	श्रीकृष्ण चरित्र	१८६४ वि०	१८७६ वि०	३०१	
४९४	श्री गिरधर लाल जी के वचनमृत ६२	१६३३ वि०	..	९६ अ	
४९५	श्री गुसाई जी की व्रज चोरासी कोस की वनयात्रा १६०० की	..	१८१३ वि०	८८ अ	

क्रम संख्या	ग्रंथों का नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	चिह्नरङ्गिका संख्या	विशेष
४९६	श्री गुसाईं विठ्ठलनाथ जी की वनयात्रा	..	.	४८३ ख	
४९७	श्री ठाकुर जी के पोडण चिह्न सचित्र	.	..	४८६ ड	
४९८	श्री द्वारिकाधीश के विचित्र विलास	१८१७ वि०		२१७ ख	
४९९	श्री द्वारिकाधीश के शृंगार मवत् १८९४ के	..	१८९५ वि०	२०७ घ	
५००	श्री द्वारिकाधीश जी के घर की उत्सव मालिका (रीति)	१९३३ वि०	..	७९ क	
५०१	श्रीनाथ जी की सेवाविधि	.	..	९३	
५०२	श्रीनाथ जी के शृंगार के वस्त्रम के नंतरग	.	१९३५ वि०	९८ घ	
५०३	श्रीपति के कवित्त		.	४३१	
५०४	श्री महाप्रभु जी के स्वरूप के चित्रन का पद	..	.	१९७	
५०५	श्री महाप्रभु जी गुमाई जी स्वरूप विचार	.	.	८८ ख	
५०६	श्रीराम गीतमाला	.	..	६३	
५०७	श्री बलभाचार्य की वशावली तथा स्वरूप वर्णन	..	१७८१ वि०	११९ ग	
५०८	श्लेषार्थ विज्ञाति	.	..	३१	
५०९	पद्मस्तु मार्तण्ड	१८३० वि०	..	३२५	
५१०	पद्मस्तु वराह	.	१७७८ वि०	१२६ छ	
५११	पद्मपट्टि अवरदाघा	..	.	४८६ च	
५१२	नगीत दीपिका	४१०	
५१३	सत विलास	१९२५ वि०	१९२८ वि०	३६०	
५१४	सगुनोटी	..	१९२० वि०	७५	
५१५	सतनवि कुलदीपिका	.	१८९७ वि०	२५७	
५१६	नतवती की कथा	१९७८ वि०	१७७७ वि०	१२६ व	
५१७	सतनावा	१९९३ वि०	१७७७ वि०	१२६ ख ^१	
५१८	नत्यवती कथा	..	.	२२	
५१९	नद्गुरु महिमा	..	.	४२८	
५२०	मनेह लीनामृत पञ्चीमी	४७५	
५२१	नन्नदी	.	.	११३ घ	
५२२	नन्नरसार	..	१९१२ वि०	२९४	
५२३	नमोराग ग्लोक गद्यार्थ की टीका	७८	
५२४	नमय प्रबध सेवा नात नमय की भावना	..	१८९३ वि०	१८६	
५२५	सन्मन्त्र	३९७	
५२६	सर्वांग परिमोनन	१४१ छ	

क्रम संख्या	ग्रंथों के नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणात् मन्दा	दिनांक
५२७	सर्वोत्तम स्तोत्र की सस्कृत टीका का हिंदी पद्यों में अनुवाद	८०	
५२८	सलोक महलानो			१०६७	
५२९	सर्वथा या भूलना		१७७८ वि०	१०६८	
५३०	मांभी कीर्तन		१६६० वि०	१०६९	
५३१	सात स्वरूप के कीर्तन	..		१०६८	
५३२	सारगधर बंधक		१०६३ वि०	१०६९	
५३३	सिंहार निलक	१७०६ वि०	१७८८ वि०	१०६८	
५३४	सिंहासन वत्तीसी			१०६८	
५३५	मिषग्रथ			१०६८	
५३६	सिख मागर पदनावा	१६६५ वि०	१७८७ वि०	१०६८	
५३७	सीनवती की कथा	१६८४ वि०	१७७७ वि०	१०६८	
५३८	सुंदर कांड			१०६८	
५३९	सुंदर प्रबंध		१०८३ वि०	१०६८	
५४०	सुकृत ध्यान	..		१०६८	
५४१	सुखदेव लीला			१०६८	
५४२	सुखसागर पुराण			१०६८	
५४३	सुदामा चरित्र	..		१०६८	
५४४	सुदामा चरित्र		१६१८ वि०	१०६८	
५४५	सुदामा चरित्र			१०६८	
५४६	सुभट्टराई की कथा	१७२० वि०	१७८५ वि०	१०६८	
५४७	सुरतरंग (संगीत)	..		१०६८	
५४८	सुद्धासितोत्तम (रामखंड)			१०६८	
५४९	सूक्ष्मवेद	..	१०३७ वि०	१०६८	
५५०	सूरजमल की कृपाण	..		१०६८	
५५१	सूर्यकांड		१६११ वि०	१०६८	
५५२	सोनालोहा वाद			१०६८	
५५३	सोमवश की वशावली		१०३१ वि०	१०६८	
५५४	सौंदर्य लहरी (टीका)		..	१०६८	
५५५	स्तुति	१०६८	
५५६	स्वामिनी जी को व्याह			१०६८	
५५७	हनुमत बोध	१०६८	
५५८	हनुमत बीर रक्षा	१६०४ वि०	१६०४ वि०	१०६८	
५५९	हनुमताष्टक	..	१०६५ वि०	१०६८	
५६०	हनुमान जयति	१०६८	
५६१	हनुमान पञ्चीसी	१०६८	
५६२	हरसू ब्रह्म मुक्तावली	१६०४ वि०	..	१०६८	
५६३	हरितालिका प्रतारणा	१०३८ वि०	१०३८ वि०	१०६८	
५६४	हरिनाथ विनोद	१६१६ वि०	..	१०६८	
५६५	हरिलीला सोलह कला	१५४१ वि०	१७८६ वि०	१०६८	

क्रम संख्या	ग्रन्थों का नाम	रचनाकाल	लिपिकाल	विवरणिका संख्या	विशेष
५६६.	हरिविनासाख्य	४८८	
५६७.	होरी तथा डोल की तथा तदात्मक चरणेन	४८६ ए	

परिशिष्ट-(ग)

प्रस्तुत खोज के संग्रह ग्रंथो मे आए कवियों की सूची
(सवत् २००१-२००३ वि०)

क्र स	कवियों के नाम	विशेषता	क्र स.	कवियों के नाम	विशेषता
१	अकबर		३३.	चतुर्भुज	
२	अचल दास		३४	चतुर भट्ट	
३	अफजल		३५	चतुर्भुज (गम)	
४.	अलख निरजन		३६	छीतुगम	
५.	अरजुन		३७	छांटाना	
६.	आरीदास		३८.	जगतगाय	
७	इंद्र कवि		३९	जगदीश पाटेल	
८.	उमराउ		४०	जगन्नाथ वविराट	
९.	कल्याण प्रभु		४१	जगन्नाथ धनजीवन माधो	
१०.	कवि नाइक		४२	जन किशोर	
११	कवि प्रेम		४३	जन गग च्यान	
१२.	कवि मकरंद		४४.	जन गोविंद	
१३	कवि रत्न		४५	जन तिलोक	
१४.	कवि सेखर		४६.	जन माधो	
१५	कस्यप		४७	जन विचित्र	
१६.	कान्ह गुआल		४८	जन हरि	
१७.	कुवलय		४९	जमीर	
१८.	कृपालाल		५०.	जानी	
१९.	कृष्ण सनेही		५१	जं गोपाल	
२०.	केशव कृपा		५२.	जंवलनभ	
२१	केसो 'जन'		५३.	भीमन	
२२.	गगाबाई		५४.	दूर कवि	
२३.	गगाबाई		५५	सान नरग	
२४	गुत्यानद		५६.	त्रिविजम	
२५	गुरु सहाय		५७	दयानिधि	
२६	गुदर		५८.	दनपति	
२७.	गोकुल		५९.	दान गुपाल	
२८	गोकुल बिहारी		६०.	दानानुदान	
२९	गो० गोपालजी		६१	देवीनाथ	
३०.	घासीराम तिवारी		६२	धीरज	
३१	चंद्रप्रभु		६३.	नदन मरवि	
३२.	चंद्रभाल		६४.	नरोत्तम	
			६५.	नारानी	

क्रम	कवियों के नाम	विशेषता	क्र.सं	कवियों के नाम	विशेषता
६६	निज जू		१०६	रतनपाल	
६७	पर्शी		११०	रसाल भट्ट	
६८	पीयदयाल		१११	रसिक गापाल	
६९	पीय विहारी		११२	रसिक प्रीतम	
७०	पुरुषोत्तम जी		११३	रसिक रसाल	
७१.	पुरोहित ब्रजलाल		११४	रसिक सखि	
७२	प्यारे गुपाल		११५	राजवहादुर	
७३	प्रवीन अली		११६.	रामचन्द्र	
७४.	बछ कवि		११७	रामराड प्रभु	
७५	वनचारी दाम		११८	राम सनेही	
७६	वलदेव जी		११९	रिसीकेस	
७८	वनभद्र		१२०	रूप मदन	
७९	बहोवन दाग		१२१	रोमन जमीर मिरजा	
८०	ब्रजनाथ		१२२	लघु गोपाल	
८१.	बालक		१२३	लघुदाम	
८२	बालकृष्ण		१२४	लघु मोहन	
८३	बालन		१२५	लछमी	
८४	बाम		१२६	लाल उत्तमचन्द सभाती	
८५	बिट्टल गिरिधरन		१२७	लाल मकरद	
८६.	बिगाहिम		१२८	वनजू	
८७	बिहारी दाम		१२९	वल्लभ	
८८.	बुल्लादास		१३०	वल्लभदास	
८९.	बुहमी		१३१.	वल्लभ राज	
९०.	भगवानप्रभु		१३२.	विर्ज राम	
९१	भामा गुजराती		१३३	विप्र	
९२	भूधर		१३४.	विश्राम	
९३	भागीनाल		१३५.	वीरन	
९४	मधु		१३६.	व्यास स्वामिनी	
९५	मस्तान		१३७	ब्रजभूषण	
९६	महर गोपाल		१३८.	ब्रजराय जी	
९७	माथुर वृन्द-मुकुन्द चन्द		१३९	ब्रज सुदरी	
९८	माधुरी		१४०.	ब्रह्मदास	
९९	मानिक		१४१	शुभपाणि	
१००	मानिक चन्द		१४२	श्री गोपाल	
१०१	मिरजा नियाँ		१४३	श्री पुरुषोत्तम	
१०२	मीन		१४४	श्रीभट्ट	
१०३	मन्नी		१४५	श्री बिट्टल	
१०४	मोहनमून (?)		१४६	श्री बिट्टल गिरिधरन	
१०५	मोहन बिहारी		१४७.	श्री बिट्टल	
१०६	मदननाथ		१४८	नगुनदाम	
१०७	मदनमदन		१४९.	नगुन दाम	
१०८.	मधुवीर राड		१५०	सदारंग	

क्र.स.	कवियों के नाम	विशेषता	क्रम	कवियों के नाम	रिसेपना
१५१	सरमस्त		१६१	हरजू	
१५२	स्यामकवि		१६२	हरिनारायन	
१५३	स्यामदास जन		१६३	हरिनारायन स्यामदास	
१५४	साहेब राम		१६४	हरिराय जी	
१५५	सिंहराव		१६५	हामिद	
१५६	सुंदर सबलस्याम		१६६	हित अनूप	
१५७	सुकवि करीम		१६७	हित जुलकरग	
१५८	सेठ लालभाई		१६८	हित ध्रुव	
१५९	हर किसीर		१६९	हीरादान	
१६०	हरखजू		१७०	हेम कवि	

परिशिष्ट-५

ग्रंथकार और उनके आश्रयदाताओं की सूची

(मंवत् २००१-२०० वि)

क्रम स०	रिपोर्ट स०	ग्रंथकार का नाम	आश्रयदाता का नाम	विशेष
१.	२४	ईश्वर कवि	महाराज नरेन्द्र सिंह, पटियाला नरेश और धौलपुर नरेश भगवत मिह	
१	३१	कन्हैयालाल भट्ट	मिरदार नरेश (?)	
२	४२	फ़िम्नलाल	राजाराम सिंह (?)	
३.	५८	केशवदास (महाकवि)	राजा इन्द्रजीत सिंह आँडछा	
४.	११५	छविनाथ	राजा माधवसिंह, जयपुर	स० १८२५ वि० के लगभग
५.	११७	छैल	१. राजाराम कायस्थ २. शूख मुहम्मद या फतेह मुहम्मद	सभवत जौनपुर के निवासी
६.	१२१	जगदीश	गवाई जगतसिंह, जयपुर	१८६२ वि० के लगभग
७	१३५	टोटरमल कायस्थ	" " "	१८६७ वि० के लगभग
८	१४६	धेघनाथ या धेघू	भानकुँवर, " गोपाचल (ग्वालियर) ।	ये तत्कालीन राजा मानसिंह के वंश में थे । पिता का नाम कीरतसिंह था ।
९	१६३	देवीदत्त शुक्ल (पंडित, धीर)	मेहरवान सिंह और उनके पुत्र शिवप्रसन्न मिह । होलागढ (प्रयाग) के राजा	संवत् १६०४-१६१० वि० के लगभग ।
१०	१६५	देवीदास	राजा रतनपाल, कराँली नरेश (मेवाड़) ।	
११	१६६	देवेश्वर भायूर	राजा पहाँप मिह, वँली- गढ (भरतपुर) ।	मंवत् १८३६ वि० के लगभग । महाराज वदन मिह के पुत्र महाराज प्रताप मिह के पौत्र और महाराज बहादुर मिह के पुत्र थे ।
१२.	१७३	श्रीरत्न मिश्र	महाराज तेजसिंह, भरत- पुर नरेश	मंवत् १८५६ के लगभग

क्रम सं०	रिपोर्ट सं०	ग्रंथकार का नाम	आश्रयदाता का नाम	दिनांक
१३	१८०	नरहरिदास वारहट	जोधपुर नरेश महागज सूर्गगह, गजनिहू और जगवत्तमिह ।	नरेशजी गजादी के उत्तरार्द्ध में १०वीं के प्रारंभ में प्रकाशित ।
१४.	१९९	पचौली देवकर्ण	मेवाड़ के राणा जगत- सिंह (द्वि०) के दीवान	सं० १८०७ में प्रकाशित ।
१५	२१९	प्राणनाथ (स्वामी)	महाराजा छत्रनाथ, पता- नरेश	
१६	२३१	बलदेव कवि	राजा विक्रमगार्हियेय, देवरानगढ़ (?)	
१७	२३२	वगारामदास	राजा जगन्नाथ, गीतगिरि, उड़ीसा ।	
१८	२६१	भीष्म	राजा गोविन्दचन्द, पुष्पा- वती (?)	
१९	२६३	भूपण (महाकवि)	छत्रपति महागज तियाजी	मिठनी गोंड के शासन पर
२०.	२६४	भोलानाथ	नरहरिसिंह राजा, भग्न- पुर	
२१	२६५	मडन	राजा मगददेव, बरेलली	
२२	२६६	मतिराम	श्रीरगजेय, बरेलली भाऊमिह, श्रोतदानेश महाराज स्वर्णपति श्रीर कुर्माजेश्वर राजा ज्ञानचन्द	मिठनी गोंड के शासन पर
२३.	२७३	मनिकठ	राजा फकीरसिंह, उगरा- नगर, गाजीपुर ।	सं० १७८२ में प्रकाशित
२४.	३०३	मुरलीधर कविराई	राजा नरसिंह, भग्न- पुर । ये मृजानसिंह महाराज के पुत्र थे ।	सं० १८१८ में प्रकाशित
२५.	३०७	मोहन	जहांगीर बादशाह	
२६	३१३	रघुनाथ वदीजन	राजा परियवट सिंह, रागी नरेश	
२७.	३२३	रसरामि (रामनारायण)	नवाब अहमदसिंह, जयपुरनरेश	
२८	३३५	राधाकृष्ण (कृष्णकवि)	राजराज भीमसिंह, जयपुर	सं० १८३३ में प्रकाशित
२९.	३८६	विद्याराज्य तीर्थदेव	बाबू रामचन्द्र सिंह, काशीनरेश के प्रेसदाता ।	सं० १८८८ में प्रकाशित
३०.	२८८	विष्णुकवि (विष्णुदान)	राजा जोगसिंह, गोरख- चन्द (नवाबसिंह)	सं० १८६० ई. में प्रकाशित
३१	३९६	वृद्धकवि	महाराज गालसिंह, हृदयनरेश ।	

क्रम सं.	रिपोर्ट सं.	ग्रथकार का नाम	आश्रयदाता का नाम	विशेष
३२.	८०८	शङ्कराचार्य त्रिपाठी	राजा रघुनाथसिंह, कृष्णागड नरेश । वगसर (?) ।	स० १८०३ में वर्तमान 'वगसर' सभक्त दौरियाछेडा (अवध) के अंतर्गत है ।
३३	४१२	गिरोमणि	शाहजहाँ बादशाह	
३४.	४१४	शिवदत्त त्रिपाठी	राजा जवरेणसिंह, पाटीपुर, वनछधदेश (?)	
३५	४१६	शिवदान गदाधर	दिविजयसिंह, बलराम- पुर रियामत (गोंडा, अवध) ।	स० १६१० के लगभग
३६	८८८	विद्युत्कवि (आनंद)	महाराजा जगतसिंह, उदयपुर	स० १८६८ के लगभग
३७	४४६	मिर्जादर फिर्गी	आलमगीर बादशाह ।	
क्रम सं.	रिपोर्ट सं.	ग्रथकार का नाम	आश्रयदाता का नाम	विशेष
३८.	४५६	सूरत मिश्र	जमवतसिंह, जोधपुर- नरेश के शिक्षक ।	
३९	४६६	मेवाराम	राजा रामपाल (?)	
४०	४७१	मोमनाथ या शशिनाथ	महागजकुमारप्रतापसिंह, भरतपुरनरेश	
४१	४७७	हरजू मुकुवि	रामदत्त (?) जोधपुर)	

